Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection, Jammu

❀ ॐ नमः शिवाय ❀

सम्पूर्ण

श्री शिवमहापुराण-सचित्र

ग्यारह-खण्ड

जिसमें—

शिवमहिम्न स्तोत्र, रुद्राष्टक, स्तुतियां, आरतियां,
शिव चालीसा, भजन, कवित्त तथा छंदादि
दिये हैं तथा अनेक भावोत्पादक तिरंगे]
व एक रंगे चित्र भी छापे गए हैं—

सम्पादक—

आचार्य शिवनाथ राय

प्रकाशक :

रतन एण्ड को०

१६ दरियागंज, नई दिल्ली २

बम्बईया अक्षरों में मुद्रित

मूल्य ६१ ६०

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रतन एण्ड को० बुकसेलर्स

मुद्रक :
विनोद क० एण्ड प्रिंटिंग प्रेस,
बी २१/८ शिवाजी रोड, धौंडा,
दिल्ली-११००५३

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha.

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

श्री शिव-महापुराण

की

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
आरती उमा महेश की,	
श्री शिव चालीसा, शिव स्तुति	८-२८
श्री शिवाष्टक, आदि	

माहात्म्य

१—शिवमहापुराण का वर्णन	२९
२—शिवमहापुराण की कथा का माहात्म्य	३१
३—चंचुला की कथा	३४
४—चंचुला का शिवलोक जाना	३७
५—पिशाच विन्दुग को मोक्ष	४१
६—शिवपुराण के सुनने तथा पूजन की विधि	४६
७—कथा सुनने का फल तथा उद्यापन की विधि	५०

(१) विद्येश्वर संहिता

१—प्रयाग में मुनियों की सभा का वर्णन	५४
२—सूतजी का शिव महिमा तथा पुराण वर्णन	५७
३—साधना के नियमों का वर्णन	६०
४—श्रवण, कीर्तन तथा मनन का वर्णन	६३
५—लिंग पूजन का रहस्य	६४
६—ब्रह्मा विष्णु युद्ध	६६
७—शिवजी का युद्ध का निर्णय करना	६७
८—ब्रह्माजी का अभिमान भंग	६९
९—शिवजी का ब्रह्मा तथा विष्णु को उपदेश देना	७१
१०—बेर तथा स्तम्भ के पूजन का उपदेश देना	७३
११—मन्त्रों द्वारा शिवलोक की प्राप्ति	७५
१२—शिव क्षेत्रों का वर्णन	७८
१३—सूतजी का धर्म-अधर्म का वर्णन करना	८०
१४—यज्ञों का वर्णन	८३
१५—दान का वर्णन	८६
१६—कार्तिक मास में पूजन का फल	८८
१७—प्रणव एवं षडलिंग माहात्म्य	९२
१८—बन्धन एवं मोक्ष का रहस्य	९५
१९—पूजा का महत्व—	९८
२०—पार्थिव पूजन की विधियां	१००
२१—शिवलिंग की संख्या	१०२
२२—शिव नैवेद्य और विल्व माहात्म्य	१०३
२३—शिव नाम महिमा	१०८
२४—भस्म व त्रिपुण्ड महिमा	११०
२५—रुद्राक्ष माहात्म्य	११४

(२) रुद्र संहिता

१—ऋषियों की जिज्ञासा	११९
२—नारद की काम विजय	१२१
३—नारद का गर्व खण्डन	१२४
४—नारद का विष्णु को श्राप देना	१२७
५—नारद का ब्रह्मा से ज्ञान प्राप्त करना	१२९
६—सूक्ष्म व स्थूल पदार्थोत्पत्ति का वर्णन	१३०
७—ब्रह्मा जन्म	१३३
८—ब्रह्मा व विष्णु को ज्ञान की प्राप्ति	१३४
९—शंकरजी का ब्रह्मा व विष्णु को उपदेश देना	१३७
१०—ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र की आयु	१३९
११—शिव पूजन विधि	१४१
१२—देवताओं को उपदेश	१४३
१३—ब्रह्मा द्वारा नारद को शिव पूजन की विधि बताना	१४४
१४—पुष्पों द्वारा शिव पूजन की विधि	१४६
१५—सृष्टि की रचना करना	१४९
१६—शतरूपा व चराचर जगत की सृष्टि वर्णन	१५२
१७—गुणनिधि की कथा	१५४
१८—गुणनिधि का उद्धार	१५६
१९—गुणनिधि को कुबेर पद की प्राप्ति	१५८
२०—गुणनिधि का कैलाश पर्वत पर तप करना	१५९

रुद्र संहिता (सती खंड)

१—सती व शंकर विवाह	१६१
२—ब्रह्मा का नारद को शिव पार्वती चरित्र सुनाना	१६३
३—ब्रह्मा-कामदेव संवाद	१६५
४—काम-रति विवाह वर्णन	१६७
५—संध्या को तप का उपदेश देना	१६८
६—शिव का संध्या को वरदान देना	१७०
७—संध्या चरित्र	१७१
८—वसन्त उत्पत्ति	१७२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विषय	पृष्ठ
९—ब्रह्मा कामदेव संवाद	१७५
१०—ब्रह्मा विष्णु संवाद	१७६
११—काली आख्यान	१७८
१२—दक्ष द्वारा देवी की आराधना	१८९
१३—दक्ष द्वारा नारद को श्राप देना	१८०
१४—सती का शिव की आराधना व तप करना	१८१
१५—दक्ष को कन्या की प्राप्ति	१८१
१६—शिवजी से विवाह की प्रार्थना	१८२
१७—सती को वर की प्राप्ति	१८३
१८—सती का शिवजी से विवाह	१८५
१९—ब्रह्माजी पर शिवजी का कोप	१८६
२०—ब्रह्म वीर्य से बादलों की उत्पत्ति	१८८
२१—शिव-सती विहार	१८९
२२—शिव सती का हिमाचल गमन	१९०
२३—शास्त्रों के मोक्षादि का वर्णन	१९१
२४—सती-शंका	१९२
२५—शिवजी का सती से वियोग	१९५
२६—दक्ष का शिव से विरोध	१९९
२७—दक्ष का यज्ञ करना	२००
२८—सती का दक्ष यज्ञ में आना	२०२
२९—सती का अपमान	२०३
३०—सती का देह त्याग	२०५
३१—आकाशवाणी होना	२०६
३२—वीरभद्र व महाकाली की उत्पत्ति	२०६
३३—युद्ध में जाना	२०८
३४—दक्ष का विष्णु की शरण में जाना	२०९
३५—विष्णु का दक्ष को शिवोपदेश देना	२०९
३६—वीरभद्र का इन्द्र से युद्ध	२११
३७—दक्ष का शिर छेदन	२१२
३८—महामृत्युञ्ज महत्व	२१४
३९—दधीचि का विष्णु को श्राप देना	२१६
४०—ब्रह्मा व विष्णु का शिव की स्तुति करना	२१८
४१—दक्ष का पुनः जीवित होना	२२०
४२—दक्ष को ज्ञान कराना	२२१

रुद्र संहिता (पार्वती खंड)

१—हिमालय का विवाह	२२४
२—पूर्व कथा	२२५
३—उमा की स्तुति	२२७
४—उमा का दर्शन व आश्वासन देना	२२९
५—मैना को वर की प्राप्ति	२३०
६—पार्वती जन्म	२३२
७—नारदजी का उपदेश	२३२
८—हिमालय का पार्वती को तप का आदेश देना	२३४
९—भौम जन्म	२३५
१०—शिव हिमालय संवाद	२३६
११—शिव पार्वती सम्वाद	२३८
१२—वज्रांग जन्म	२४०
१३—तारकासुर जन्म	२४३
१४—तारकासुर का स्वर्ग त्यागना	२४५
१५—कामदेव का शिवजी के पास जाना	२४६
१६—काम द्वारा प्रयत्न करना	२४७
१७—कामदेव का भस्म होना	२४९
१८—शिव क्रोधाग्नि की शान्ति	२५१
१९—पार्वती को नारद का उपदेश	२५२
२०—पार्वती की तपस्या	२५३
२१—देवताओं का शिवजी के पास जाना	२५५
२२—शंकर जी की स्वीकृति	२५७
२३—पार्वती की ऋषियों द्वारा परीक्षा	२५९
२४—शिवजी द्वारा पार्वती की परीक्षा	२६१
२५—शिव पार्वती संवाद	२६३
२६—पार्वती जी को शिव दर्शन	२६४
२७—शिव पार्वती संवाद	२६६
२८—शिवजी द्वारा पार्वती याचना	२६६
२९—शिव माया वर्णन	२६८
३०—सप्त ऋषियों का आगमन	२७०
३१—सप्त ऋषियों तथा अरुन्धती का समझाना	२७२
३२—अरण्य राजा की कथा	२७५
३३—पद्मा पिपलाद की कथा	२७७
३४—पार्वती जी को आशीर्वाद देना	२८०
३५—लगन पत्री भेजना	२८१
३६—मण्डप रचना	२८२
३७—शिवजी का वेदों को निमन्त्रण देना	२८५
३८—वर यात्रा	२८७
३९—मण्डप वर्णन	२८८
४०—देवों तथा पर्वतों का मिलन	२९०
४१—शिव की अनुपम लीला	३९१
४२—मैना को समझाना	२९३
४३—शिव का स्वरूप वर्णन	२९६
४४—वर आगमन वर्णन	२९८
४५—हिमाचल के घर में प्रवेश	३००
४६—हिमाचल द्वारा कन्यादान	३०१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विषय	पृष्ठ
४७—बाल-खिल्य ऋषियों का जन्म	३०३
४८—शिवजी से हंसी	३०४
४९—शिव द्वारा काम को जीवन दान	३०६
५०—बढ़हार तथा शिव शयन	३०८
५१—वापिस जाने की तैयारी करना	३०८
५२—पतिव्रत धर्म वर्णन	३१०
५३—पार्वती विदा	३१३

रुद्र संहिता (कुमार खण्ड)

१—देवताओं का शंकर जी की स्तुति करना	३१५
२—स्वामी कार्तिकेय का जन्म	३१६
३—बालक का संस्कार करवाना	३१९
४ कार्तिकेय की खोज	३२१
५—कुमाराभिषेक	३२३
६—कुमार का चरित्र	३२५
७—युद्धारम्भ वर्णन	३२६
८—देवासुर युद्ध	३२७
९—तारकासुर का देवताओं को पराजित करना	३२८
१०—तारकासुर वध	३३०
११—बाणासुर व प्रलम्बासुर संहार	३३१
१२—कार्तिकेय चरित्र	३३२
१३—गणेश चरित्र	३३३
१४—गणों से गणेशजी का विवाद	३३५
१५—गणों से गणेश जी का युद्ध	३३७
१६—गणेश शिरोच्छेदन	३३८
१७—गणेश जीवन	३३९
१८—गणेश गौरव	३४२
१९—गणेश विवाह का उपक्रम	३४३
२०—गणेशजी का विवाह	३४५

रुद्र संहिता (युद्ध खण्ड)

१—त्रिपुरासुर वध की कथा	३४७
२—देवताओं द्वारा स्तुति	३४९
३—देवताओं का विष्णु शरण में जाना	३४९
४—नास्तिक शास्त्र का प्रादुर्भाव	३५२
५—नास्तिक धर्म का प्रचार	३५४
६—शिव का युद्ध के लिए प्रस्थान	३५६
७—शिव द्वारा पुत्र मोह में युद्ध त्याग	३५८
८—शिव रथ का निर्माण	३५९
९—शिव यात्रा	३६०
१०—तारकासुर वध	३६१
११—देवताओं का वरदान	३६२
१२—मय दानव को मुक्ति प्रदान करना	३६३

विषय	पृष्ठ
१३—इन्द्र को जीवन-दान	३६४
१४—जलंधर की उत्पत्ति	३६५
१५—देव जलन्धर युद्ध	३६७
१६—विष्णु जलन्धर युद्ध	३७०
१७—जलन्धर को वरदान देना	३७१
१८—नारद का कपट जाल	३७३
१९—दूत सम्वाद	३७५
२०—शिवगणों का असुरों का युद्ध	३७६
२१—द्वन्द्व युद्ध	३७८
२२—शिव जलन्धर युद्ध	३७९
२३—वृन्दा का पतिव्रत भंग	३८१
२४—जलन्धर वध	३८४
२५—देवों द्वारा स्तुति	३८५
२६—तुलसी का आविर्भाव	३८५
२७—शंखचूड़ उत्पत्ति	३८७
२८—शंखचूड़ विवाह	३८८
२९—शंखचूड़ राज्य प्रशंसा	३९०
३०—देवगणों का प्रस्थान	३९१
३१—शिवजी द्वारा आश्वासन	३९१
३२—पुष्पदन्त-शंखचूड़ वार्ता	३९३
३३—शंकर की युद्ध यात्रा	३९३
३४—शंखचूड़ की युद्ध यात्रा	३९४
३५—शंखचूड़ का दूत भेजना	३९५
३६—देव दानव युद्ध	३९६
३७—शंखचूड़ का युद्ध	३९७
३८—भद्रकाली का युद्ध	३९८
३९—शंखचूड़ की सेना संहार	४००
४०—शंखचूड़ वध	४०१
४१—तुलसी शाप वर्णन	४०२
४२—हिरण्याक्ष वध	४०४
४३—हिरण्यकशिपु दानव का प्रसिद्धि प्राप्त करना	४०७
४४—अन्धक का तप करना	४०९
४५—युद्धारम्भ	४११
४६—अन्धक युद्ध समाप्ति	४१३
४७—शुक्राचार्य का निगला जाना	४१५
४८—शुक्र को मुक्त करना	४१६
४९—अन्धक का गणपति वृत्तान्त	४१७
५०—शुक्र को मृत संजीवनी विद्या प्राप्ति	४१८
५१—बाणासुर आख्यान	४२०
५२—ऊषा चरित्र वर्णन	४२२
५३—बाणासुर का श्रीकृष्ण के साथ युद्ध	४२४

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विषय	पृष्ठ
५४—शिव एवं विष्णु का भीषण युद्ध	४२५
५५—बाणासुर भुजा खण्डन	४२७
५६—बाणासुर को गाणपत्य पद प्राप्ति	४२८
५७—गजासुर जन्म व वध	४२८
५८—निर्हृदि वध	४२९
५९—विदल उत्पल दैत्यों का विनाश	४३०
(३) शतरुद्र संहिता	
१—शिव के पांच अवतार	४३२
२—शिव के आठ रूपों का वर्णन	४३४
३—अर्द्धनारीश्वर शिव की कथा	४३५
४—मन्वन्तरों का वर्णन	४३६
५—शिव अवतारों का पूर्ण विवरण	४३८
६—नन्दिकेश्वर अवतार	४३९
७—नन्दीश्वर के तैतालीस जन्मों का उल्लेख	४४१
८—भैरव अवतार	४४३
९—भैरव कथा का माहात्म्य	४४६
१०—नृसिंह लीला वर्णन	४४८
११—नृसिंह का शिव की शरण में जाना	४४९
१२—नृसिंह के चर्म तथा मुख को मुडमाला में मिलाना	४५१
१३—विश्वानर को वरदान	४५२
१४—गृहपति अवतार	४५४
१५—गृहपति को मृत्युञ्जय वर की प्राप्ति	४५५
१६—ऋषीश्वर अवतार	४५७
१७—शिव दशावतार	४५८
१८—एकादश केन्द्रों की उत्पत्ति	४५९
१९—दुर्वासा चरित्र	४६१
२०—हनुमान अवतार	४६३
२१—भैरव शाप	४६५
२२—समुद्र मंथन	४६५
२३—शिव द्वारा वृषभ रूप धारण करना	४६८
२४—पिप्पलाद जन्म	४६९
२५—पिप्पलाद विवाह	४७१
२६—वैश्वनाथ अवतार	४७२
२७—द्विज का अवतार	४७४
२८—मति और हंस अवतार	४७७
२९—दर्शन कृष्ण अवतार	४७९
३०—अवधूतेश्वर अवतार	४८१
३१—भिक्षु वर्य शिव अवतार	४८२
३२—उपमन्यु का शिवपद प्राप्त करना	४८४
३३—ब्रह्मचारी अवतार	४८६

विषय	पृष्ठ
३४—सुनट नर्तक अवतार	४८९
३५—शिवजी का द्विज अवतार वर्णन	४९१
३६—अश्वत्थामा अवतार वर्णन	४९३
३७—पांडवों को व्यासजी का उपदेश	४९४
३८—शिवजी का किरात अवतार	४९६
३९—मूल दैत्य वध	४९८
४०—किरात अर्जुन विवाद	५००
४१—किरातेश्वर महादेव की कथा	५०१
४२—द्वादश ज्योतिर्लिंग कथा	५०२
(४) कोटि रुद्र संहिता	
१—ज्योतिर्लिंग एवं उपलिंग वर्णन	५०५
२—पूर्व दिशा के शिवलिंग	५०७
३—अनुसुइया तथा अत्रि का तप	५०९
४—अत्रिश्वर महिमा वर्णन	५१०
५—नन्दीकेश्वर लिंग की महिमा	५१२
६—ब्राह्मणी सद्गति	५१४
७—नन्दीकेश्वर महिमा	५१७
८—महासिद्धेश्वर लिंग की महिमा	५१८
९—चाण्डाली की मुक्ति	५१९
१०—महाबल शिव माहात्म्य वर्णन	५२१
११—पशुपतिनाथ माहात्म्य	५२३
१२—लिंगरूप का कारण	५२४
१३—बटुकनाथ की उत्पति	५२६
१४—सोमेश्वरनाथ की उत्पत्ति	५२८
१५—मल्लिकार्जुन की उत्पत्ति	५३०
१६—महाकालेश्वर उत्पत्ति	५३१
१७—महाकाल महिमा	५३५
१८—विन्ध्या का अभिमान तोड़ना	५३७
१९—केदारेश्वर महिमा	५३९
२०—भीम उपद्रव वर्णन	५४०
२१—भीम कामरूप युद्ध	५४३
२२—काशीपुरी में शिवागमन	५४५
२३—काशीनाथ जी का माहात्म्य	५४७
२४—गौतम प्रभाव	५५१
२५—गौतम को गौ हत्या दोष	५५३
२६ गौतमी गंगा का प्रकटीकरण	५५६
२७—अम्बकेश्वर महिमा	५५७
२८—रावण का तप करना	५५९
२९—दारुक का वृत्तांत	५६२
३०—नागेश्वर की उत्पत्ति	५६४
३१—रामेश्वर महिमा	५६६

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विषय	पृष्ठ
३२—सुदेहा की कथा	५६८
३३—घुश्मेश शिवजी उत्पत्ति	५७१
३४—विष्णु को सुदर्शन प्राप्ति	५७४
३५—शिव सहस्रनाम	५७६
३६—सहस्रनाम की महिमा	५८८
३७—महाराजा सुद्युम्न की कथा	५८९
३८—शिव रात्रि व्रत विधान	५९१
३९—उद्यापन विधि	५९५
४०—निषाद चरित्र	५९७
४१—भक्ति एवं ज्ञान का वर्णन	६०१
४२—सगुण निर्गुण भेद वर्णन	६०३
४३—ज्ञान निरूपण	६०५
(५) उमा संहिता	
१—कृष्ण उपमन्यु संवाद	६०९
२—शिव भक्तों का आख्यान	६१२
३—उपमन्यु का श्री कृष्ण को दीक्षा देना	६१३
४—शिव माया वर्णन	६१७
५—महान पातकियों का वर्णन	६१९
६—पाप पुंज का वर्णन	६२१
७—नरक स्वरूप	६२३
८—नरक स्वरूप	६२६
९—नरक वर्णन	६२७
१०—नरक भोग वर्णन	६२९
११—अन्नदान महिमा	६३१
१२—जलदान तथा तप महिमा	६३३
१३—पुराण माहात्म्य	६३५
१४—दानों का वर्णन	६३६
१५—पाताल लोक वर्णन	६३७
१६—मुक्ति के उपाय	६३८
१७—जम्बू द्वीप का वर्णन	६४१
१८—सातों द्वीपों का वर्णन	६४३
१९—राशि एवं लोक वर्णन	६४६
२०—तप से मुक्ति के उपाय	६४८
२१—युद्ध धर्म वर्णन	६५१
२२—देह एवं वैराग्य वर्णन	६५२
२३—बाल अवस्था के दुःख	६५४
२४—स्त्री स्वभाव वर्णन	६५६
२५—काल का ज्ञान वर्णन	६५८
२६—काल चक्र से बचने के उपाय	६६०
२७—शिव प्राप्ति	६६२
२८—छाया पुरुष का वर्णन	६६४
२९—आदि सृष्टि का वर्णन	६६५

विषय	पृष्ठ
३०—सृष्टि रचना क्रम	६६७
३१—सृष्टि वर्णन	६६९
३२—कश्यप वंश का वर्णन	६७१
३३—वैवस्वान सृष्टि का वर्णन	६७३
३४—मन्वन्तर उत्पत्ति	६७४
३५—वैवस्वत मन्वन्तर	६७५
३६—मनु पुत्रों का कुल वर्णन	६७७
३७—मनु वंश वर्णन	६८०
३८—सत्यव्रत कथा	६८२
३९—वैवस्वत वंश के राजाओं का वर्णन	६८४
४०—श्राद्ध कल्प प्रभाव	६८५
४१—सात व्याध पुत्र	६८७
४२—पितरों का प्रभाव	६८९
४३—आचार्य पूजन का नियम	६९०
४४—व्यासजी का जन्म	६९०
४५—मधु कैटभ वध, महाकाली वर्णन	६९४
४६—महामाया अवतार	६९६
४७—चन्ड मुण्ड आदि राक्षसों का वध	६९८
४८—शुम्भ निशुम्भ वध	७०१
४९—देवताओं का उमा की स्तुति करना	७०३
५०—दुर्गम वध	७०४
५१—क्रियायोग वर्णन	७०६
(६) कैलाश संहिता	
१—व्यासजी से शौनकादि की वार्ता	७११
२—पार्वती का प्रणव प्रश्न	७१३
३—प्रणव पद्धति	७१५
४—सन्यास आचार	७१७
५—सन्यास मण्डल की विधि	७१८
६—सन्यास पद्धति का न्यास	७१९
७—शिवजी का ध्यान व पूजन	७२०
८—वरण पूजा	७२१
९—प्रणव व पद्धति	७२३
१०—सूतोपदेश वर्णन	७२४
११—वामदेव द्वारा ब्रह्म निरूपण	७२६
१२—सन्यास की विधि	७२८
१३—प्रणव का अर्थ	७३०
१४—शिवरूप वर्णन	७३१
१५—उपासना मूर्ति	७३२
१६—शिव तत्व विवेचन	७३४
१७—सृष्टि क्रम वर्णन	७३६
१८—शिष्य करने की विधि	७३७
१९—गुरु उपदेश	७३९

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विषय	पृष्ठ
२०—क्षौर स्नानादि विधि	७३९
२१—मोक्ष का सरल उपाय	७४१
२२—पिण्ड दान करने की विधि	७४३
२३—गुरु पूजन की विधि	७४४
(७) वायवीय संहिता	
१—विद्यावतार का कथन वर्णन	७४८
२—ब्रह्माजी से प्रश्न	७५१
३—नैमिषारण्य की कथा	७५१
४—वायु का आगमन	७५४
५—शिव तत्व वर्णन	७५५
६—शिव तत्व ज्ञान	७५७
७—काल महिमा	७६०
८—तीनों देवों की आयु	७६१
९—प्रलय कर्ता का वर्णन	७६३
१०—सृष्टि रचना क्रम	७६५
११—सृष्टि आदि का क्रम	७६७
१२—सृष्टि वर्णन	७६९
१३—ब्रह्मा विष्णु को वरदान मिलना	७७२
१४—रुद्र की उत्पत्ति	७७४
१५—शिव शिवा की स्तुति	७७५
१६—मैथुनी सृष्टि	७७५
१७—मनु की सृष्टि	७७७
१८—दक्ष को शिव शाप	७८०
१९—वीरगण का यज्ञ में जाना	७८३
२०—दक्ष यज्ञ का वर्णन	७८५
२१—देवदण्ड वर्णन	७८६
२२—देवों का शिव कृपा	७८८
२३—मन्दराचल पर निवास	७९१
२४—कौशिकी शक्ति की उत्पत्ति	७९४
२५—सिंह पर दया	७९७
२६—श्री गौरी मिलाप	७९८
२७—सोम, अग्नि ज्ञान	७९९
२८—छः मार्गों का वर्णन	८००
२९—सगुण निर्गुण भेद	८०३
३०—ज्ञानोपदेश	८०५
३१—अनुष्ठान का विधान	८०८
३२—अनुष्ठान का विधान	८०८
३३—पाशुपत व्रत की विधि	८१०
३४—उपमन्यु की भक्ति	८१२
३५—उपमन्यु की कथा	८१५
वायवीय संहिता	
१—श्री कृष्ण को पुत्र प्राप्ति	८१८

विषय	पृष्ठ
२—शिव गुणों का वर्णन	८१९
३—अष्ट मूर्ति वर्णन	८२०
४—गौरी शंकर की विभूति	८२२
५—पशुपतित्व ज्ञानयोग	८२४
६—शिव तत्व दर्शन	८२५
७—शिव तत्व व्याख्या	८२६
८—शिव पूजा व पूजा के अधिकारी	८२७
९—योगाचार्यों का वर्णन	८२९
१०—शिवोपासना रहस्य	८२९
११—ब्राह्मण-कर्म-निरूपण	८३१
१२—पंचाक्षर मन्त्र की महिमा	८३२
१३—कलि नाशक मन्त्र	८३३
१४—मन्त्र दीक्षा विधि	८३५
१५—शिव संस्कार का वर्णन	८३७
१६—शिव भक्ति वर्णन	८३८
१७—शिव दीक्षा विधि	८३९
१८—षडध्व शुद्धि निरूपण	८४१
१९—साधन भेद निरूपण	८४२
२०—अभिषेक प्रकार	८४३
२१—नैमित्तिक कर्म निरूपण	८४३
२२—पूजन-न्यास वर्णन	८४४
२३—मानसिक पूजन विधि	८४५
२४—पूजन विधान	८४६
२५—नित्य कृत्य निरूपण	८४७
२६—सांयोगपांग-अर्चन विधि	८४८
२७—अग्नि कृत्य विधान	८४९
२८—नैमित्तिक पूजन विधि	८५०
२९—काम्य कर्म निरूपण	८५२
३०—आवरण का पूजन विधान	८५३
३१—शिव स्तोत्र	८५५
३२—कर्म निरूपण	८५६
३३—परलोक में सुख पहुंचाने की विधियां बतलाना	८५७
३४—लिंग रहस्य	८५८
३५—ब्रह्मा विष्णु मोह	८६०
३६—लिंग प्रतिष्ठा विधान	८६२
३७—योग निरूपण	८६५
३८—योग गति में विघ्न	८६७
३९—योग वर्णन	८६८
४०—नैमिषारण्य से गमन	८७०
४१—मुनियों का मोक्ष	८७२

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

आरती उमा महेश की

झांकी उमा महेश की आठों पहर किया करूं।
नैनों के पात्र में सुधा भर-भर के मैं पिया करूं॥
वाराणसी का वास हो और न कोई पास हो।
गिरिजापति के नाम का सुमिरन मैं किया करूं॥
जयति जय उमेश हे जयति नन्दी केशवे।
जयति जय उमेश हे प्रेम से मैं जपा करूं॥
अम्बा कहीं श्रमित न हो सेवा का भार मुझको दो।
जी भरके तुम पिया करो घोट के मैं दिया करूं॥
जी में तुम्हारी है लगन खेंचते हैं उधर व्यसन।
हरदम चलायमान मन इसका उपाय क्या करूं॥
भिक्षा हे नाथ दीजिए अपनी शरण में लीजिए।
ऐसा प्रबन्ध कीजिए सेवा में मैं नित रहा करूं॥
तुम तो जगत के नाथ हो सब पर दया का हाथ हो।
मैं ही निराश हो प्रभु द्वारे से क्यों फिरा करूं॥
बेकल हूं नाथ रात दिन चैन नहीं त्रिपुरारि बिन।
दास तो सब्र कर भी ले दिल का इलाज क्या करूं॥

श्री शिव चालीसा

दोहा—जै गणेश गिरजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देऊ अभय वरदान॥
जै गिरिजापति दीन दयाला, सदा करत संतन प्रतिपाला।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके, कानन कुण्डल नाग फनी के।
अंग गौर शिर गंग बहाये, मुण्ड माल तन छार लगाये।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहै, छवि को देख नाग मुनि मोहै।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मैना मातु की ह्वै दुलारी, वाम अंग सोहत छवि भारी।
कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी, करत सदा शत्रुन क्षयकारी।
नंदीगण सोहत हैं कैसे, सागर मध्य कमल हैं जैसे।
कार्तिक स्याम और गण राऊ, या छवि को कहि जात न काऊ।
देवन जब ही जाय पुकारा, तब ही दुःख प्रभु आप निबारा।
कियो उपद्रव तारक भारी, देवन सब मिल तुमहिं जुहारी।
तुरत षडानन आप पठायउ, लव निमेष महँ मारिगिरायउ।
आप जलधंर असुर संहारा, सुयस तुम्हारा विदित संसारा।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई, तबहिं कृपा करि लीन्ह बचाई।
किया तपहिं भागीरथ भारी, करी तपस्या सफल पुरारी।
दानिनमहँ तुम समकोउ नाहीं, सेवक स्तुति करत सदा ही।
वेद नाम महिमा तब गाई, अकथ अनादि भेद नहिं पाई।
प्रगटे उदधि मंथन में ज्वाला, जरत सुरासर भये विहाला।
कीन्हा दया तहँ करी सहाई, नील कण्ठ तब नाम कहाई।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा, जीत के लंक विभीषण दीन्हा।
सहस कमल में हो रहे धारी, कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई, कमल नयन पूजन चह सोई।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर, भये प्रसन्न दिया इच्छित वर।
जयजय जय अनन्तअविनाशी, करत कृपा सब के घट वासी।
दुष्ट सकल नित मोहिं सतावैं, भ्रमत रहे मोहि चैन न आवैं।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारौ, यहि अवसर मोहि आन उबारौ।
ले त्रिशूल शत्रुन को मारौ, संकट में मोहि आन उबारौ।
मात पिता भ्राता सब कोई, संकट में पूछत नहिं कोई।
स्वामी एक है आस तुम्हारी, आय हरहु अब संकट भारी।
धन निर्धन को देत सदा ही, जो कोई जांचे तो फल पाही।
स्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी, क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।
शंकर हो संकट के नाशन, विघ्न विनाशक मंगल कारन।
योगी यती मुनि ध्यान लगावैं, शारद नारद शीश नवावैं।
नमो नमो जय नमः शिवाये, सुरब्रह्मादिक पार न पाये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जो यह पाठ करे मन लाई, तापर होत हैं शम्भु सहाई।
ऋनियां जो कोईहोअधिकारी, पाठ करै सो पावन हारी।
पुत्रहीन कर इच्छा कोई, निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।
पण्डित त्रयोदशी को लावै, ध्यान पूर्वक होम करावै।
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा, तन नहिं ताके रहे कलेशा।
शंकर सन्मुख पाठ सुनावै, मन क्रम वचन जो ध्यान लगावै।
जन्म जन्म के पाप नशावै, अन्त वास शिवपुर में पावै।
कहै अयोध्या आस तुम्हारी, जानि सकल दुःख हरहु हमारी।

दोहा—नित नेम करि प्रातः ही, जो पाठ करे चालीसा।
तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करहि जगदीशा॥
मगसर छठि हेमंत ऋतु, संवत चौसठ आन।
अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्याण॥

शिव स्तुति

दोहा—श्री गिरिजापति वंदिकर, चरण मध्य शिर नाय।
कहत अयोध्यादास तुम, मोपर होहु सहाय।

कवित्त—नन्दी की सवारी नाग अंगीकारी धारी
नित संत सुखकारी नीलकंठ त्रिपुरारी हैं।
गले मुँडमाला भारी सिर सोहै जटाधारी
वाम अंग में बिहारी गिराज सुतवारी हैं॥
दानी देख भारी शेष शारदा पुकारी
काशीपति मदनारी त्रिशूल चक्रधारी हैं।
कला उजियारी लख देव सा निहारौ,
यश गावें वैदचारी सो हमारी रखवारी हैं॥१॥
शम्भु बैठे हैं विशाला, भंग पीवै सो विशाला
नित रहै मतवाला अहि अंग पै चढ़ाये हैं।
गले सोहे मुण्डमाला कर लिए डमरू विशाला
अरु ओढ़े मृगछाला भस्म अंग में लगाए हैं॥
संगसुर भी सुतमाला करै जग प्रतिपाला
मृत्यु हरें अकाला शीश जटा को बढ़ाए हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कहैं रामलाल मोहि करो तुम निहाल,
अब गिरजापति कैलाश जैसे काम को जलाए हैं ॥२॥
मारा है जलचर और त्रिपुर को संहारा
जिन जारा है काम जाके शीश गंगधारा है।
धारा है अपार जासु महिमा है तीन लोक
भाल में है इन्दु जाके सुख वाको सारा है॥
सारा है बात सब खायो हलाहल जानि
भक्त के आधार जाहि वेदन उचारा है।
चारों हैं भाग जाके द्वार है गिरीश कन्या
कहत अयोध्यावास सोई मालिक हमारा है॥३॥
अष्टगुरु ज्ञानी जाके मुख वेदबानी,
शुभ भवन में भवानी सुख सम्पति लहा करैं।
मुण्डन की माला जाके चन्द्रमा ललाट सोहै
दासन के दास जाके दरिद्र दहा करैं॥
चारों द्वार बन्दी जाके द्वारपाल
नंदी कहत कवि अनन्दी नाहक रहा करैं।
जगत रिसाय यमराज को कहा बसाय
शंकर सहाय तो भयंकर कहा करैं॥४॥

सवैया—गौर शरीर में गौरी विराजत मौर जटा सिर सोहत जाके।
नाग़न को उपवीत लसै कहै अयोध्या शशि भाल में वाके॥
दान करै पलमें पल चारि और टारत अंक लिखे विधना के।
शंकर नाम निशंक सदा ही भरोसे रहैं निसिवासर ताके॥

दोहा—मगसर मास हेमन्तऋतु, छठ दिन है शुभ बुद्ध।
कहत अयोध्या पाहि तुम, शिव के विनय समुद्र॥

श्री शिवाष्टक

आदि अनादि अनन्त अखंड अभेद अखेद सुवेद बतावैं।
अलख अगोचररूप महेश कौ जोगि जती-मुनि ध्यान न पावैं॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आगम-निगम-पुरान सबै इतिहास सदा जिनके गुन गावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं॥
सृजन-सुपालन-लय-लीलाहित जो विधि-हरि-हररूप बनावैं।
एकहि आप विचित्र अनेक सुबेस बनाईकैं लीला रचावैं॥
सुन्दर सृष्टि सुपालन करि जग पुनि बन काल जुखाय पचावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥
अगुन अनीह अनामय अज अविकार सहज निज रूप धरावैं।
परम सुरम्य बसन-आभूषन सजि मुनि-मोसन रूप करावैं॥
ललित ललाट बाल बिधु विलसै रतन-हार उरपै लहरावैं।
बड़ भागी नर नारि सोई जो सांव-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥
अंग विभूति रमाय मसान की विषयम भुजगनि को लपटावैं।
नर-कपाल कर, मुंडमाल गल, भालु चरम सब अंग उढ़ावैं॥
घोर दिगम्बर, सोचन तीन भयानक देखि कै सब थर्रावैं।
बड़ भागी नर नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥
सुनतहि दीन की दीन पुकार दयानिधि आप उबारन आवैं।
पहुँच तहां अविलम्ब सुदारुन मृत्यु को मर्म बिदारि भगावैं॥
मुनि मृकंडु-सुत की गाथा सुचि अजहुं विज्ञजन गाई सुनावैं।
बड़ भागी नर नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥
चाउर चारि जो फूल धतूरे कै, बेल के पात औ पानि चढ़ावैं।
गाल बजाय कै बोल जो 'हर हर महादेव' धुनि जोर लगावैं॥
तिनहिं महाफल देय सदाशिव सहजहि भुक्ति-मुक्ति सो पावैं।
बड़ भागी नर नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥
बिन सिदोर दुःख दुरित दैन्य दारिद्रयनित्य सुख-शांति मिलावैं।
आसुतोष हर पाप-ताप सब निरमल बुद्धि-चित्त बकसावैं॥
असरन-सरन काटि भव बंधन भव निज भवन भव्य बुलावैं।
बड़ भागी नर नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥
औढरदानी, उदार अपार जु नैकु-सी सेवा ते ढुरि जावैं।
दमन अशांति, समन संकट, विरद विचार जनहिं अपनावैं॥
ऐसे कृपालु कृपारम देव के क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं।
बड़ भागी नर नारि सोई जो साँब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

एक रूप में चार रूप

आधे अंग में कृष्ण लक्ष्मी आधे में शिव पार्वती।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करे यती ॥
एक समय मैंने भक्ति कर कहा हरिहर से भाई।
एक अंग में मुझे तुम चार रूप देव दिखलाई ॥
शिव के बायें गौर दाहिनो श्री लक्ष्मी यदुराई।
भक्त के वश हैं प्रभु यह महिमा वेदों ने गाई ॥
ऐसाही रूप दिखाया मुझको लक्ष्मीधर और गवरपती।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥
श्रीकृष्ण के मोर मुकुट शिवका जूड़ा बँध रहा विशाल।
गौर को सोहे हार फूलों के रमा रमा के मुक्त माल ॥
शिव धारें भस्मी माथे पर श्रीकृष्ण के केसर भाल।
रमा को सोहें वह भूषण दिव्य गवरके लपटे व्याल ॥
चार वेद चारों की अस्तुति करें न पावै पाव रती।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥
श्रीकृष्ण के शंख हाथ में शिवजी कर में लिए कपाल।
रमा बजावें वो चुटकी गौरा दो कर से दें ताल ॥
मनमोहन की मुरली बाजे शिव का डमरू बजे धमाल।
गौर के माथे पै चन्दन रक्त रमा के बिन्दी लाल ॥
शिवयोगी हरिब्रह्मचारी लक्ष्मी कुँवारी औरगौरसती।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥
श्रीकृष्ण के चक्र सुदर्शन शिवजी कर में लिए त्रिशूल।
पार्वती के हाथ में खंग रमा के कमल का फूल ॥
देवीसिंह ने कहा ख्याल यह वेद पुराणों के अनुकूल।
बनारसी के छन्द में कभी न हरगिज निकले भूल ॥
जो इस पदको सुने औगावे उनकी होजाय तुर्त गती।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ॥

शिवताण्डव स्तोत्र

ओ पुण्यकण्ठ गंगा से शोभित जटा-विपिन, ओ रम्यरूप, धारे भुजंग माला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किया उसने ध्यान तुम्हारा हरी। तभी ले बराती जा गिरजा वरी॥
भण्डारी कुठारी किया वह हरी। जो भक्ति तुम्हारी करी थी कुँवरी॥
जो रावण असुर तेरी पूजा करी। दशों शीश काटे चढ़ाई बली॥
खुश होकर उसको दिया था वरो। असुर राज्य लंका में जाकर करो॥
रावण रघुवर की सीता हरी। तभी हो दुःखी राम ने सेना करी॥
हनुमान हो उनको रक्षा करो। तेरा नाम तब से रामेश्वर पड़ो॥
समन्दर मथन लागे दानव और देव। निकाल रत्न चौदह करें तेरी सेव॥
जो निकालो गरल देख भागे सुरो। गरल खाके खुद देव निर्भय करो॥
पुष्पदन्त था एक गन्धर्वराज। हुआ शाप उसको गया सब समाज॥
हो दीन भी उसने स्तुति करी। सब आपत उसकी तुमने हरी॥
कल्पवृक्ष काई समन्दर दवात। सकल गिरि स्वाही जमीन कागजात॥
हो के जर स्वामी हिमालयेश्वरो। जो जमीन वेश भीमा शंकरो॥
जो काशी पुरी लिंग विश्वेश्वरो। नदी गोमती लिंग त्रिबक्सरो॥
चारों युग ऋषीश्वर तपेश्वर मुनि। गुणगान करते न थकते कभी॥
मैं कलियुग का अजिज गुनहगार हूँ। न कविते कोई शिकवा कैसे कहूँ॥
तू कैलाश वासी मैं अजिज जमीं। तू है जात आला मैं अदना तरीं॥
महादेव शंकर विश्वम्भर हरो। मेरे हाल पर रहम क्यों न करो॥
सदाशिव सदाशिव सकल दुःख हरो। मेरी बार क्यों देर इतनी करो॥

शिवमहिम्नःस्तोत्र

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्ना-स्त्वयि गिरः। अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन् ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥ १॥

जानत न रावरी अनंत महिमा कौ अंत, याते अनुचित जो महेस! गुन गाइबो, हम तौ अग्यानी तो मैं ग्यानी ब्रह्म आदि हू की, बानी को लखात चूकि मूक बनि जायबो। मति अनुरूप रूप गुन के निरूपन मैं होत जो न काहू पै कलंक अंक लाइबो, दोस आसुतोस! तो न मानिये हमारो आज गुन गाइबे को यों कमर कसि आइबो॥ १॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्या यं चकित-मभिधत्ते श्रुतिरपि। स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥ २॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पथ सौं अतीत मन बानी के महत्त्व तव, स्रुतिहू चकित नेति नेति जो बदति है;
कौन गुन गावै, है कितेक गुन वारो वह, काकी उतै अलख अगोचर लौं गति है।
भगत उधारन कौं धारन करौ जो रूप विविध अनूप जाहि जोइ रही मति है,
काकी मन वाकौं सदा ध्याइबो चहत नायँ काकी गिरा नायँ गुन गाइबो चहति है ॥ २ ॥

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुर-गुरोर्विस्मयपदम् । मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

मधु के बरस दिव्य सरस सुधा सौं सनी बानी वेदमय निज मुख ते बखानी है,
तव मन रंजन निरंजन ! करैगी कहा देवगुरुहू की गुरुता सौं भरी बानी है।
प्रभु गुन गान कौ महान पुन्य पाइ आज पावन बनैगी गिरा मेरी यह जानी है,
गुन अवगाहिबे की महिमा सराहिबे की याही ते पुरारि जू ! सुमति उर आनी है ॥ ३ ॥

तवैश्वर्यं यत् तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु । अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥ ४ ॥

विदित विभूति भूतनाथ तव संसृति कौ सृजन भरन तैसें हरन करति है,
वेद ते भनित गुन भेद ते विभिन्न बपु तीनि देव—बिधि हरि हर मैं लसति है।
ताहू की महत्ता और सत्ता खंडिबे के हेतु निंदा जगती मैं करैं केते जडमति हैं,
प्रीति होति जा मैं नाहिं पंडित प्रबीनन की, मंगल बिहीनन की होति वा मैं रति है ॥ ४ ॥

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च । अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥

कैसी करै ईहा, कैसी मन मैं समीहा करै, कैसौ वाको तन, कैसौ करत जतन है,
कौन ठायँ बैठि कै बिधाता तीन लोकन कौ कौन उपादान लेकैं सारत सृजन है।
कुतरक ऐसे रख मूरख लरत केते मोह मैं परत ओह ! जन गन मन है,
वैभव अतवर्य नाथ ! साथ सब सक्ति, कहाँ रावरे मैं बावरे तरक कौ सरन है ॥ ५ ॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति । अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

अमित अनूप रूप रंग अंग बारे, तऊ एते सब लोक क्यौं रे जन्म न धरत हैं,
कै धौं या प्रपंच कौ न सिरजनहार कोऊ बिन करतार सृष्टि कारज सरत है ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सिरजनहार जौपै ईस छाँड़ि आन कोऊ, सोऊ कौन साधन लै सृजन करत है। कारन कहा जो देव ! बारन तिहारो करि बार बार संसय मैं मूरख परत हैं ॥ ६ ॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च। रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

तीन बेद, सांख्य. जोग सैव बैष्नवादि मत भिन्न भिन्न मारग अनेक कहियतु है, योई बड़ो, वोई बड़ो, यासों लाभ, वासों लाभ, सब रुचि भेद सों सराहि चहियतु है। केते गहैं सूधे, केते मारग असूधे गहैं, अंत सबही कौ एक आप लहियतु हैं, सरित प्रवाह बहै सूधी कै असूधी राह, सतत अथाह सिंधु ही तौ गहियतु है ॥ ७ ॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतियत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

रूढ़ौ बूढ़ौ बैल, पायौ खाटकौ, कुठार, चाम, भस्म, ब्याल, कर मैं कपाल छवि पावैं हैं, बरद ! तिहारे ढिग कुल के भरन हित एतेक बरन उपकरन लखावै है। तौहू तव भृकुटि बिलासही ते देव सबै पास रिद्धि सिद्धि कौ सुपास सदा पावै है, आतम सरूप मैं जो मन कौं रमावै सदा, विषय मरीचिका न ताहि भरमावै है ॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये। समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ ९ ॥

कोऊ कहै सारो यह जगको पसारो नित्य, कोऊ बिस्व अखिल अनित्य बतरावै है, कोऊ या सकल जग बीच भनै दोऊ भाव, नित्य और अनित्य या मैं पृथक् लखावै है। सुनि गुनि बात एती चित्त है चकित होत, या ते गुन गावत न दास ये लजावै है, बोलिबे को आदि हौं, सुभाव बकबादीपन, सोई त्रिपुरारि ! आज लाज बिसरावै है ॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरञ्चिर्हरिरधः परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः। ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयंतस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥

तेज पुंजमय तव प्रकट हुतौ जो रूप, वाको महिमा की थाह पाइबे जतन सौं, नीचे गयौ हरि बिधि ऊरध गमन कीन्हौं पार नहीं पायौ, भयौ अपार स्रम तन सौं। हारि थकि रावरे करन गुन गान लागे स्रद्धा सौं गिरीस भूरि भक्ति भरे मन सौं; स्राय कैं तरस दियौ आप ही दरस आप, आवत न हाथ कहा नाथ के भजन सौं ॥ १० ॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डू-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

परवशान् । शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रि-पुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥

कंटक बिहीन तीन लोक कौ अखंड राज पायौ जो अधीन बिन जतन पसारे पै, बारौं जो सुदृढ़ बससीस ईस बीस भुजा जुद्ध काज खाज जाकौ जाय ना निवारे पै । लोऊ लखि परत पुरारी ! एक रावरेई भारी भक्ति भावको प्रभाव निरधारे पै, करि उपहार धरयौ कमल समान निज मस्तक अमल पद कमल तिहारे पै ॥ ११ ॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः । अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्या-सीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥

रावरौ भजन सब काल दसभाल करि पायौ जो बिसाल बाहु बिपिन सबल है, रावरेई बास कयलास के उठायबे मैं ताहि कौं लगायौ, प्रगटायौ निज बल है । त्यौं ही आप नैसुक अँगूठाकौ हिलायौ सिरौ नीचे लख्यौ नीच ना पताल हू में थल है । साँची यह बात, रिद्धि सिद्धि अधिकात लखि फूल्यौ ना समात, मोहि जात सदा खल है ॥१२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेय-त्रिभुवनः । न तच्चित्रं सम्यग्वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

ऊँची सुरपति की समूची जो समृद्धि ताहि नीची करि राखी रिद्धि सिद्धि अधिकाए ते, परिजन सरिस प्रजा कौं तीन लोकनकी कीन्हीं जो अधीन बलिसुत बल पाए ते । एहो बरदानी ! वा मैं बात है बिचित्र कहा, रावरे चरन के भजन मन लाये ते, बढ़त न को है, ऊँचे चढ़त न सोहै कौन सामुहै तिहारे नाथ ! माथके नवाये ते ॥ १३ ॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपाविधेयस्यासीद् यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः । स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥ १४ ॥

अन्त ब्रह्मांड कौ अकाण्ड में ई ह्वे है हंत सोचत ससंक यौं सुरासुर कौ गन है; पेखि ह्वे अधीन करुना के तीनलोचन जू पान करि कीन्हौं बिष संकट समन है । याते नीलकंठ ! नील कंठ जो तिहारे अंक सोहत सदाई बनि कंठ अभरन है, वाको है बिकारहू सराहिबे के जोग जाकौ भव भय भारन बिदारन व्यसन है ॥ १४ ॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः । स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥ १५ ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देवन बनुज मैं, मनुज हू मैं जग बीच जाके पंच सायक न रंच कबौं हारे हैं; साधे बिनु काज पग आधेहू सुरत नायँ, तुरत अधीन तीनौं लोक करि डारे हैं। सोऊ ईस ! मानि आन देव के समान तोहि काम नाम सेस ह्वै अनंग गति धारे है, बस करि राखै जो अतंद्र मन इन्द्रिन कौं तिन अपमान मान हितहू बिगारे है ॥ १५ ॥

महीं पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् । मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

तांडव अकांड मैं धमक पाय पाँयन की डगमग धाम ह्वै धरा कौ धसकत है; घूमत परिघ सी भुजान के अघात लागें गात ग्रह गन के गगन कसकत हैं। छूटे जटाजूटन के झोकन ते बार बार ताड़ित द्युलोक ओक हूँ ते खसकत है; एते पै कहत जग राखिबे को नाचो आप, साँचोई प्रभुत्व बाम ह्वै कै बिलसत है ॥ १६ ॥

वियद्व्यापि तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते । जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥

जाते प्रगटत पय फेन को प्रकास दिव्य धारा में मिलित तारागन सौं गुनित होत, जाते सिंधु संबृत अखंड महीमंडलहू द्वीपरूप ह्वै कै है लखात औ भनित होत। सोई ब्योमब्यापी बारिबृंद को प्रबाह नाथ ! माथ पै तिहारे लघु बिंदु ज्यौं लसित होत, याही ते महेश जू ! अनूप रूप रावरे की दिव्यता महत्ता जानी जात अनुमित होत ॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथांगे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति । दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥ १८ ॥

रथ बसुधा कौ, चाकौ सूर औ सुधाकर कौं सारथि कौ पद पद्मासन कौ दीन्हौं है, आपही रथी ह्वै चाप लीन्हौ मेरु मंदर कौ अनुज पुरंदर कौ बानरूप कीन्हौं है। तृन से त्रिपुरकौं जराइबेके काज कैसौ साज यों अडंबर कौ साज साथ लीन्हौं है, खेलति बिधेयन सौं मति परमेसर की परम स्वतंत्र है, न काहूँ बस कीन्हौ है ॥१८॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् । गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

सहस सरोजन उपायन लै रोज रोज पाँयन मैं रावरे चढ़ायो हरि नेम सौं, ऊन लखि एक एक दिन दुख दूनौ मानि निज नैन कंजहू निकासि धरयौ प्रेम सौं,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वा ई भक्ति भूरि फरी कर में सुदर्शन ह्वै, दीपै जो समीपै सदा श्रीपति के हेम सौं,
सोक हरिबे कौं, भरिबे कौं तीन लोकन कौं सोई त्रिपुरारि चक्र जागै सदा छेम सौं ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते । अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा कृतपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

सौवैं जग्य दान, तऊ आप जजमानन कौं नित फल देन काज जागत रहत हैं,
साधन कहाँ है छोड़ पुरुष अराधन कौं बीते कर्महू को फल जाते प्रगटत है।
देखत सबैई फल दीबे हेतु जग्यन मैं स्वामी समरथ आप जामिन बनत हैं,
यातें धरि आस विश्वास वेदबादन पै कर्म करिबे मैं लोग चाब सौं लगत हैं ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः । क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

जजमान दच्छ हैं क्रिया में अति दच्छ जहाँ, अखिल अधीस जिन्हैं जानैं प्रजाजन हैं;
एहो सरनागत कौ पालन करनहार! ऋषिबृंद ऋत्विज, सदस्य सुरगन हैं।
हाथ सों तिहारे नाथ जग्य कौ बिनास तहाँ, जाहि जग्य फल के बिधान को व्यसन है,
साँची यह बात होति हानि जजमान ही की, जानि जो करत बिन श्रद्धा कौ जजन है ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा । धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसन्तंतेऽद्यापित्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

बस मैं अनंग के ह्वै निज तनुजा के संग धायो विधि करन प्रसंग बरजोरी सौं,
ताहीं घरी लाज सौं गरी सी हरिनी ह्वै भगी, ह्वै कै प्रजानाथहू हरिन चल्यौ चोरी सौं।
पेखि यह पाप आप चाप कौं चढ़ायो, छूटि बेध्यौ मृग ब्याध ज्यौं सपंख सर, डोरी सौं,
नाकहूं गए पै डरिना कहूं तजै है अबौं, बान सो पिनाक पानि जू कौ खरौ खोरी सौं ॥२२॥●

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत् पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि । यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

अपनी लुनाई के भरोसे गिरिजा ने लख्यौ चाप गहें दाप सी कुसुम धनु वारौ है,
संजम निरत पुरभंजन! भयौ सो तहाँ सामु हैं तिनूका सौ तुरत जरि छारौ है।

● यहाँ ऊषा और सूर्यदेव के प्रातःकालिक संयोग का रुचिर रूपक द्वारा वर्णन किया गया है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ताहू पै तिहारे तन आधे मैं निवास पाय दास तिय कौ जो तुम्हैं करति बिचारो है, चारौ कहा, बरद ! बिचारौ एती गूढ़ बात मूढ़ जुवतीन की जमात निरधारो है ॥२३॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः । अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि ॥२४॥

भेष अड़बंग लै अनंग अंगहारी आप नाचत मसान मैं पिसाच सहचारी हैं, भासत चिता कौ लग्यौ भसम निराला तन माला नरमुंडन के झुंडन की भारी है । मिलित अमंगल सौं सील यौं लखायौ करै, भायौ करै विपरीत रीति त्यौं तिहारी है, तौहू जे तिहारे पद सुमिरनहारे तिन्हैं बरद ! सहारे आप अति सुभकारी हैं ॥२४॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः । यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ॥२५॥

अंतरमुखी कै मन, थापि चित्त चेतना मैं सब विधिही सौं प्रानायाम मैं निरत हैं, जोगी अवदात जाहि देखि पुलकित गात आनंद सलिल स्रोत नैन ते झरत हैं । जाको ध्याइ भरत उमंग भूरि मानस मैं सर मैं सुधा के मनो मज्जन करत हैं, आप ही सो अकथ अनूप रूप वस्तु, जाहि अंतर मैं संजमी निरन्तर धरत हैं ॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च । परिच्छन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

आप ही प्रभाकर, त्यौं आकर कलाके आप, आप ही अनिल, तैसे आप ही अनल हैं, आसमान ह्वै कै आप ही तौ भासमान होत, आतमाहू आप, आप भूमि और जल हैं । या बिधि असीमहू कौ सीमित बतायौ करैं मनुज प्रबीन मीन मति के सकल मैं, हम तौ न जानैं, या अखिल जड चेतन मैं, ऐसौ कौन तत्त्व, जो न आप अबिकल हैं ॥२६॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकारद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति । तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥२७॥

तीनहू अवस्था, तीन वेद की बिवस्था कहै, तीनहू भुवन, तीन देवन लखावै है; बरन अकार सौं उकार सौं मकारहू सौं रावरेई रूप के प्रकार बतरावै है । तीन ते परे जो हीनविकृति तुरीय धाम, ताकौं अर्धमात्र सूक्ष्म ध्वनि सौं जतावै है; एक ह्वै कै एक, त्यों अनेक ह्वै अनेकरूप सरनद ! आप कौं प्रनवपद गावै है ॥२७॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहांस्तथा भीमेशानाविति यदविधा-नाष्टकमिदम् । अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

भव; शर्व, रुद्र, पसुपति, महादेव, उग्र,भीम औ ईसान–ये जो आठ दिव्य नाम हैं, एहो देव ! बेद इन मैं ते एक एकहू कौं बोलिबे के हेतु बरनत आठो जाम हैं। प्रानहू ते प्यारे मेरे परम अधार आप आप कौ सरूप दिब्य ललित ललाम है; याते हम भक्ति अनुरक्ति भरे अंतर मैं आप कौं निरंतर ही करत प्रनाम हैं ॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः । नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः ॥२९

एहो बन वीथिन मैं बिहरन वारे ! अति निकट हमारे भगवान कौं प्रनाम है; अति दूरवारे कौं प्रनाम मदनारे ! त्योंही लघुतर परम महान कौं प्रनाम है। तीन नैनवारे प्रभो ! अतिवय बूढ़हू कौं नव वय रूढ़ त्यों जवान कौं प्रनाम है; सब मैं तुम्हीं हौ, सब रूप मैं तुम्हीं हौ देव ! 'यह,' 'वह' सकल जहान कौं प्रनाम है ॥२९॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः । जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रै-गुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

बिस्व बिरचैबे कौ रजोगुन अधिक जाको भव के प्रभव भवरूप को नमन है; तम के बढ़े पै जान समय संहारहू कौ हर ह्वै हरत, हर रूप कौं नमन है। सुद्ध सत्व बृद्धि को सुजोग पाय लोगन कौं सुख दैनवारे मृडरूप कौं नमन है; त्रिगुन रहित हित परम प्रकासमय पद मैं लसित सिवरूप कौं नमन है ॥३०॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः । इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद् वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥

मेरो यह चित्त कहाँ चेरो है कलेसन को सुधबुध कलप अलप अति पायो है, सीमाहीन रावरी सनातन समृद्धि कहाँ लाँघि गुन सीमाके परेई दरसायो है। याते लखि चकित जकित मोहि भक्ति तव बरद ! बलात गुन गान मैं लगायो है, रुचि अनुसार यह बचन सुमन हार रावरे चरन उपहार लै चढ़ायो है ॥३१॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्र-मुर्वी । लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कारे गिरिराज तुल्य काजर कौं घोरि घोरि स्याही करि राखै, महासिंधु मसिदानी है, भाषा लिखिबे को साखा सुरतरु लेखनी है, कागद की कूरी त्योंही पूरी बसुधानी है। लै कै सब साधन अराधन मैं लीन सदा लिखति महेस गुन गन की कहानी है। हारै थकि हाथ, गुन गाथ कौं तिहारे नाथ! तदपि न पावै पार सारदा सयानी है ॥३२॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य। सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेत चचकार ॥३३॥

पूजत जिनहि सुर असुर मुनींद्र बृन्द, भाल जिनकेई बाल इंदु छबि पायौ है। गुन ते रहित हितरूप वे महेश, जिन गुन महिमा कौं इतै बरनि सुनायौ है। खास उनकेई दास गन मैं महान एक, नामवंत ह्वै जो पुष्पदन्त कहलायो है; वानेई अलघु मृदु छंद बंद बारो यह वंदन के काज अभिनंदन बनायो है ॥३३॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः। स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥

मानस मैं भारी भूरि भक्ति अनुरक्ति भरे नित्त जो मनुज शुद्धचित्त ह्वै रहत है, स्तवन बिसेस या महेस महिमा कौ मंजु रोज रोज बदन सरोज सौं कहत है। तजि सो असिव लोक सजि सिवलोक जाय, सिव भगवान की समानता गहत है, त्योंही इतै संपदा अनंत, आयु दीरघ लै सुतहू की रति औ सुकीरति लहत है ॥३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः। अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥

देव न दूजो महेस्वर के सिवा, है जो कहीं तौ समत्व न कोई; त्यौं ही समीप महिम्न के हैं स्तुति और की राखे महत्त्व न कोई। मंत्र अघोर ते और बड़ो नहीं, औरन कौ इतै सत्त्व न कोई, श्रीगुरु ही त्यों महान जहान मैं, है गुरु सौं बड़ो तत्त्व न कोई ॥३५॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः। महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥

दीक्षा, दान, सुतीर्थ, तप, जग्य आदि कृति ग्यान। होत न महिमन पाठ की षोडस कला समान ॥३६॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः। स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषाद् स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जिन के भाल बिसाल बाल बिधु सोभा पावत जो देवन के देव, देव जिन्ह सीस नवावत।
तिन कोई इक दास पास रहि बिजन डुलावत पुष्पदंत गंधर्वराज जग बीच कहावत॥
निज प्रभु केई कोप ते निज महिमा सौं जो गिरयो।
वाने स्तवन महिम्न को दिव्य दिव्यतर यह करयो॥३७॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः। व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्त प्रणीतम्॥३८॥

सुर नर मुनि सब पढ़ैं, करैं याको आराधन स्वर्ग और अपबर्गहु को यह एकै साधन।
पुष्पदंत को रचित स्तोत्र अनुपम गुनवारो आराधन को यह अचूक फल साधन हारो॥
जोरिजुगलकरपढ़तनरयदिइकचितनितप्रातहै।किंनरगनसौंगुनसुनतसिवसमीपवहजातहै॥३८॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्। अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥३९॥

स्तवन रचितगंधर्वको परिपूरनयह जान।सिव बरननमय मनहरन अनुपमसुचिकल्यान॥३९॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः। अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥४०॥

बचन रचनमय अर्चना यह अरपित सिव पाद। सदा सदासिव देवबर मोपर करैं प्रसाद॥४०॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर। यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥४१॥

तत्व न जानौं ईस तव, कस तुम महिमा धाम।महादेव जाबिध जहाँ ताबिध तुम्हें प्रनाम॥४१॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते॥४२॥

एक, दोय,तीनों समय पढ़त जोनर अभिराम।सबपापन ते मुक्तसो बसत,सदा सिवधाम॥४२॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण। कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥४३॥

पुष्पदंत मुख कंज ते प्रगटयो स्तोत्र उदार। रासि रासि अघ हरत है, हर को परम पियार॥
कंठ किए याके पढ़ें, करिबे ते नित ध्यान। होत प्रसन्न महेस बर भूतनाथ भगवान॥४३॥

आरती शिवशंकर की

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा।१। ॐ हर हर महादेव।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।२। ॐ हर हर महादेव।
दो भुज चारु चतुर्भुज दस भुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहै।३। ॐ हर हर महादेव।
अक्ष माला बन माला रुण्ड माला धारी।
चन्दन मृगमद लेपन भाले शुभकारी।४। ॐ हर हर महादेव।
पार्वती पर्वत में बसती शिवजी कैलाशा।
आक धतूरे का भोजन भंग में बासी हैं।५। ॐ हर हर महादेव।
शिवजी के हाथों में कंगन कानों में कुण्डल।
गल मोतियन माला जटा में गंग विराजे। ओढ़े शीश मृगछाला।
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक, ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे।६। ॐ हर हर महादेव।
कर मध्ये कमण्डल-चक्र त्रिशूल-धारी।
जगकर्ता जग भर्ता जग-पालनकारी।७। ॐ हर हर महादेव।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ध्यावत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों हो एका।८। ॐ हर हर महादेव।
काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दा ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत महिमा अति भारी।९। ॐ हर हर महादेव।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई गावै।
भजत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै।१०। ॐ हर हर महादेव।

शंकर उपासना

धन-धन भोले नाथ सदा-शिव कमी नहीं खजाने में।
तीन लोक बस्ती में बसा शिव आप बसे बीराने में।
जटाजूट सर गंगा शंकरजी गले में रुण्डन की माला।
माथे चन्दा छोटा रे सागर, कृपाले का है प्याला।
जिसको देख ले भय व्यापे गले में नागन की माला।
तीसरे नेत्र में है तुम्हारे तीन लोक का उजियाला।
पीने को हर वक्त भंग सदा शिव आक धतूरा खाने में।
तीन लोक बस्ती में बसा शिव आप बसे बीराने में।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu -

नाम आपके अनेक शंकरजी सब से उत्तम है नंगा।
यही तो आपकी माया शिवजी जटा बीच में है गंगा।
भूत प्रेत बेताल नाथ जी यह लश्कर सबसे चंगा।
तीन लोक हर के विधाता आप बने हो भिखमंगा।
हमें यही समझाओ नाथ, क्या मिलता अलख जगाने में।
तीन लोक बस्ती में बसा शिव आप बसे बीराने में।
बम महादेव! बम महादेव!! बम महादेव!!!

जय गौरी शंकर उमापते

जय गौरी शंकर उमापते, कैलाशपते जय शिव जय शिव।
जय महादेव जय चन्द्रमौलि, जय श्री शंकर जय शिव जय शिव।
जय मृत्युञ्जय जय भोलेश्वर, जय योगेश्वर जय शिव जय शिव।
जय पार्वती पति परमेश्वर, जय कामारि जय शिव जय शिव।
जय गंगाधर त्रिपुरारि विभो, जय भवहारा जय शिव जय शिव।
जय आसुतोष जय महाकाल, कालुहुके काल जय शिव जय शिव।
जय ओंकारेश्वर रामेश्वर, जय बैजनाथ जय शिव जय शिव।
जय २ अविनाशी जय शम्भो, जय विश्वनाथ जय शिव जय शिव।
जय त्रिगुणातीत महेश्वर जय, जय निर्विकार जय शिव जय शिव।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ श्री शंकराय नमः ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

माहात्म्य

पहला अध्याय

महर्षि शौनकादि मुनिश्वरों ने भगवान श्री वेद व्यास के परम पौराणिक शिष्य श्री सूतजी ने विनम्र शब्दों में हाथ जोड़कर प्रार्थना की—प्रभो! आप सब पुराणों के ज्ञाता हैं और सभी पुराणों के सिद्धान्तों से भली प्रकार परिचित हैं और पुराणों के मर्मज्ञ हैं। आपने कहा कि श्रीशिव महापुराण समस्त वेदों तथा पुराणों का सर्वोत्तम सार है। सो हम इस समय आप से श्रीशिव महापुराण का माहात्म्य सुनना चाहते हैं।

शौनकादि ऋषि तथा अन्य मुनिजनों के वचनों को सुनकर श्री सूतजी बड़े प्रसन्न हुए और बार-बार भगवान श्री सदाशिव के चरणकमलों का ध्यान करते हुए बोले—हे ब्राह्मणो! आप सब प्रशंसा के पात्र ही नहीं बल्कि धन्यवाद के भी योग्य हैं, जो कि आप लोगों ने संसार के कल्याण की बात पूछी है। मैं आपकी उत्कण्ठा को देखकर आपको शिव महापुराण के परम पुनीत माहात्म्य का वर्णन करता हूं। जो कि देवताओं को भी दुर्लभ है और समस्त फलों का देने वाला है। इसके श्रवण से भगवान सदाशिव के चरणों की भक्ति होती है और भगवान सदाशिव प्रसन्न होकर अपने उस उपासक को अपनी शरण में ले लेते हैं। शौनक आदि महर्षियो! इस महा शिवपुराण की कथा सबसे पहले भगवान श्री सदाशिव ने श्री सनतकुमार जी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को सुनाई थी। तभी से इस पुराण का नाम "श्रीशिव महा-पुराण" प्रसिद्ध है। उसके पश्चात श्री सनतकुमार जी ने यह पवित्र व पावन कथा भगवान श्री वेदव्यास जी को सुनाई थी और उसके पश्चात भगवान वेदव्यास जी ने लोगों का कल्याण करने के लिए यह कथा संक्षेप में मुझे सुनाई। यह परम पुनीत शिव महापुराण दूषित मन वाले मनुष्यों के मन को पवित्र करने का सर्वोत्तम साधन है। इसके सुनने, पढ़ने तथा मनन करने से कलियुग के प्राणियों का हृदय शुद्ध होता है। वह सत्य पर आरूढ़ होकर भगवान सदाशिव की भक्ति प्राप्त करते हैं। राजसूय अग्निष्ठानों आदि यज्ञों के करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल मनुष्यों को केवल इस महापुराण के श्रवणमात्र से ही मिल जाता है। इसके सुनने वाले सब शिवभक्त होते हैं। मोक्ष चाहने वालों को सदाशिव महापुराण सुनना चाहिए।

यदि मनुष्य के पास समय का अभाव हो, तो उसे जितना भी समय मिल सके उसमें इसका पाठ श्रवण करे। इससे श्रोता तथा वाचक के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। मैं इसके श्रवण आदि के बारे में अधिक क्या कहूं? बस इतना कहना ही पर्याप्त है कि इस शिव महापुराण का पाठ और भगवान श्री सदाशिव के नाम का कीर्तन दोनों कल्पवृक्ष के समान फल देने वाले हैं। पतित तथा दूषित स्वभाव वालों के लिए तो यह शिव महा-पुराण साक्षात अमृत पाठ के समान है। जिस तरह अमृत का पान करके प्राणी अमर हो जाता है, उसी प्रकार इस महा-पुराण का सुनने वाला अपने व अपने परिवार के सदस्यों के सब पाप-ताप नष्ट करके, सुखों को प्राप्त करता है और अन्त में कर्मबन्धन से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इस महापुराण की सात संहितायें हैं, इन सात संहिताओं में चौबीस हजार श्लोक हैं। यह सात संहितायें इस प्रकार हैं— विशेश्वर संहिता, रुद्र संहिता, शरुद्री संहिता, कोटरुद्र संहिता, उमा संहिता, कैलाश संहिता तथा वायवीय संहिता। इन सातों संहिताओं वाला शिव महापुराण जो मनुष्य न तो पढ़ता ही है और न सुनता ही है, वह इस संसार में अज्ञानवश घूमता हुआ थपेड़े खाता रहता है। अन्य पुराणों के सुनने से इतना लाभ नहीं होता जितना कि शिव महापुराण के सुनने से होता है। यह पुराण मोक्ष का देने वाला है। जिस स्थान पर इसकी कथा होती रहती है वह स्थान तीर्थ हो जाता है। अश्वमेध वाजपेय यज्ञ, गंगादि पवित्र नदियां, अयोध्यादि सप्तपुरी और गया क्षेत्र आदि तीर्थों का जो फल होता है वह इस पुराण के फल के सम्मुख हेय है। जो मनुष्य नित्य इसके दो-चार अध्यायों को पढ़ता है वह भाग्यशाली सीधा शिवलोक को प्राप्त करता है। इसमें कोई संशय नहीं है। जो शिवोपासक इस महापुराण को रेशम के वस्त्र में लपेटकर रखता है और नित्य धूप दीप आदि से इसका पूजन करता है वह इस संसार के सभी सुख भोगकर अन्त में शिवलोक को प्राप्त करता है। यह महापुराण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का देने वाला है। यह ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं को प्राणों से बढ़कर प्रिय है। मैं नित्य इस पुराण को प्रणाम करता रहता हूं। भगवान मेरा प्रेम भगवान सदाशिव के चरणों में बनाए रक्खे।

दूसरा अध्याय

शिव महापुराण की कथा का माहात्म्य

देवराज नामक एक महान पापी ब्राह्मण का एक वेश्या पर आसक्त होना। अब वेश्या के लिए अपने घर वालों की हत्या कर डालना। घर का सब रुपया पैसा अब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वेश्या को दे डालना। बीमार पड़कर एक शिवालय में ठहरना और भगवान शंकर की पवित्र व पावन कथा का श्रवण करना। कथा श्रवण करने के पश्चात् देवराज की मृत्यु। शिव दूतों का उसको शिवलोक में ले जाना। शिव कथा के श्रवण मात्र से एक महापापी को शिवधाम का प्राप्त होना।

श्री सूत जी के वचनों को सुनकर श्री शौनक जी ने कहा—"हे महा भाग सूत जी! आपने जो कुछ भी शिव महा पुराण के विषय में कहा है वह महान हर्ष को देने वाला है। यह बड़ी अद्भुत और दिव्य कथा है। संसार में इससे बढ़कर कल्याण करने वाली दूसरी और कोई कथा नहीं है। देव आप कृपा करके हमें यह बतलाइये कि कलयुग में इसके सुनने से किन-किन पापियों के पाप नष्ट हो जाते हैं?"

श्री सूत जी बोले—"हे शौनक आदि ऋषियो! इस महा पुराण के सुनने से दुराचारी, कामी और दुष्ट पुरुष सभी पाप रहित हो जाते हैं। लोभी, झूठ बोलने वाले, माता-पिता को दुःखी करने वाले, दम्भी, पाखण्डी, हिंसा परायण, सभी पापियों के तारने के लिए यह महा पुराण अपने अन्दर शक्ति रखता है। इस विषय में एक प्राचीन इतिहास है। जिसके सुनने मात्र से कलियुग के प्राणियों के समस्त पाप-ताप नष्ट होकर उनको सद्गति प्राप्त होती है। प्राचीन काल में किरात नगर में एक दुर्बल, दुराचारी और दरिद्र ब्राह्मण रहता था। वह वैदिक धर्म से विमुख था। उसका नाम देवराज था। उसने अधर्म द्वारा बहुत सा धन संचय कर लिया था। वह एक दिन स्नान के लिए तालाब पर गया तो वहां पर एक शोभावती वेश्या को देखकर उस पर मुग्ध हो गया। शोभावती भी एक धन कुबेर ब्राह्मण को अपने जाल में देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। तालाब पर ही उन दोनों की प्रेम लीला प्रारम्भ हो गयी। काम कला में निपुण शोभावती ने जिस तरह भी बन पड़ा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देवराज को अपने जाल में फंसा लिया। फिर क्या था, वह उसी का हो लिया। बस फिर क्या था, देवराज दिन-रात उस वेश्या के कोठे पर पड़ा रहने लगा। देवराज के माता-पिता तथा उसकी पत्नी ने और उसके मित्रों ने उसे उस वेश्या के जाल से छुड़ाने के अनेक प्रयास किये किन्तु वह न माना। वह महा पापी माता-पिता तथा पत्नी के बार-बार समझाने पर बुरा मान गया और एक रात उसने उन तीनों को मार डाला ताकि उसका मार्ग उसके लिये साफ हो जाये। घर में जो भी गहने-जेवर, रुपया-पैसा था, वह सब ले जाकर उसने शोभावती को दे दिया। एक दिन देवराज घूमता-घामता प्रतिष्ठानपुर आया। वहां उसने एक शिवाला देखा, जिसमें कोई कथावाचक भगवान सदा शिव की कथा कर रहे थे। देवराज उसी शिवाले में ठहरा और दैवयोग से सख्त बीमार पड़ गया। अब वह चारपाई पर पड़ा-पड़ा प्रतिदिन भगवान सदा-शिव की पावन व पवित्र कथा सुनता रहता। एक मास तक ज्वर से पीड़ित रहने के पश्चात उसकी मृत्यु हो गई। उसके लेने के लिये यमपुरी से यमदूत आ गये। उधर से शिव कथा सुनने के प्रभाव से शिवगण भी आन पहुंचे और उसे यमदूतों से छुड़ाकर शिव लोक ले गये। यमदूत यमलोक को वापिस लौट गये। यमदूतों का कोलाहल सुनकर धर्मराज अपने भवन से बाहर आये और अपने दूतों के मुख से सारा हाल सुना। उन्होंने शिवगणों को देवराज को शिवलोक ले जाते हुए देखा उन्होंने अपने यमदूतों से कुछ नहीं कहा। वह शिव कथा का प्रभाव समझ गये। जान गये कि देवराज को शिव महा पुराण की कथा के श्रवण मात्र से ही शिवलोक की प्राप्ति हुई है। उन्होंने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शिवदूतों की पूजा की। शिवदूतों ने देवराज को शिवलोक में ले जाकर भगवान सदा शिव के हाथों में दे दिया। सो हे मुनिश्वरो! इस प्रकार एक महान पापी ब्राह्मण केवल शंकर भगवान की कथा सुनकर ही शिवलोक को प्राप्त हो गया।

तीसरा अध्याय

वाष्फल ग्राम के रहने वाले विन्दुग नामक ब्राह्मण का अपनी पत्नी चंचुला को त्याग देना। कामवेग को न सह सकने के कारण चंचुला का कुमार्ग पर चलना। विन्दुग का अपनी पत्नी को किसी परपुरुष के साथ रमण करते हुए देखकर उसको पीटना। पत्नी का शरीर बेच-बेच कर अपना व अपने पति का पेट पालना। विन्दुग की मृत्यु। चंचुला का एक मन्दिर में भगवान सदाशिव की पुनीत व पावन कथा सुनना और कथा वाचक ब्राह्मण से अपने उद्धार का उपाय पूछना।

देवराज की मोक्ष प्राप्ति की कथा सुनने के पश्चात श्री शौनक जी ने सूत जी से कहा—"हे महाभाग सूत जी! अब आप कृपा करके शिव महा पुराण में वर्णित अन्य इतिहास को वर्णन कीजिये।"

श्री सूतजी बोले—"हे शौनक जी! आप भक्तराज हैं, और वेदों के ज्ञाता हैं। अब मैं आपके सामने एक गोपनीय वार्ता का वर्णन करूंगा! आप ध्यान पूर्वक सुनिये। प्राचीन काल में सागर तट पर, वाष्फल नामक एक ग्राम था। उस ग्राम के रहने वाले दुराचारी और दरिद्र थे। धर्म से विमुख थे। उनको न तो देवताओं पर ही विश्वास था और न ही भाग्य पर। वह खेती बाड़ी करते थे और अपने पास घातक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र रखते थे। वाष्फल ग्राम के निवासियों की पत्नियां भी अपने पतियों जैसी ही दुष्टा थीं। वह सब-की-सब सद् व्यवहार और सदाचार से शून्य महान पापिष्ठाएं थीं। उसी ग्राम में विन्दुग नामक एक अधम ब्राह्मण रहता था। जो कि दुरात्मा और महान पापी था। उसने अपनी पत्नी चंचुला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का त्याग कर दिया था। बस उस ग्राम में चंचुला ही धर्म पर चलने वाली साध्वी स्त्री थी। स्वामी के त्याग देने पर, चंचुला पहले कुछ दिनों तक अपने धर्म से विचलित नहीं हुई। किन्तु अधिक दिन व्यतीत हो गये और वह काम का वेग सहन न कर सकी तो उसने अपना धर्म छोड़ दिया। वह कुमार्ग पर चल निकली और अपने पति से छिप-छिपकर, अन्य पुरुषों के साथ रमण करके अपनी काम-वासना को शान्त करने लगी। एक दिन विन्दुग ने अपनी पत्नी को किसी अन्य पुरुष के साथ रमण करते देखा। यह देखकर उसके क्रोध का पारावार न रहा। वह पुरुष तो वहां से भाग गया। विन्दुग ने चंचुला को बहुत पीटा। पति द्वारा पीटने पर चंचुला को भी क्रोध आ गया। उसने निर्भय होकर विन्दुग से कहा—"तुम मूर्ख हो! तुम सोचो तो सही कि तुम मुझ जैसी पतिव्रता स्त्री को त्याग कर गली-गली जूठी पत्तलें चाटते फिरते हो। जो रूपवती युवती काम से व्याकुल और पति का साथ प्राप्त न हो तो तुम ही बतलाओ उसकी क्या गति होगी? जब मुझे तुम्हारा संग प्राप्त नहीं है तो मैं काम को किस प्रकार सहन करूं?"

इस पर उस निर्लज्ज ने चंचुला से कहा—"तुम्हारा मन काम के शर से व्यथित है। यह मैं मानता हूं। देख! मैं तुझे अब पर पुरुषों के साथ सहवास से नहीं रोकता। तू अब भय को त्याग कर, जोरों के साथ पर पुरुषों के साथ सहवास किया कर। अपने शरीर को बेचकर उनसे धन भी लिया कर। इस प्रकार जो धन प्राप्त होगा उसका हम दोनों उपभोग किया करेंगे। उस दुष्ट पति की बात सुनकर चंचुला अब धन के बदले में अपना शरीर बेचने लगी। वह खुल कर व्यभिचार में रत हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गई। पैसा भी खूब आने लगा और दोनों के दिन चैन से कटने लगे। फिर एक दिन ऐसा आया कि वह अधम ब्राह्मण मर गया। मृत्यु उपरान्त वह नाना क्लेश सहन करके विन्ध्याचल पर्वत पर भयंकर पिशाच होकर निवास करने लगा।

विन्दुग की मृत्यु के पश्चात चंचुला अपने पुत्रों के साथ घर में ही बन्द हो गई। फिर एक दिन वह अपने पुत्रों के साथ गोकर्ण क्षेत्र में आ गई। उस तीर्थ में जब उसने बहुत से लोगों को स्नान करते देखा तो उसने भी स्नान किया और भ्रमण करती हुई एक देव मन्दिर में गई। वहां एक बिद्वान शिव भक्त ब्राह्मण भगवान शंकर की पुनीत व पावन कथा कह रहे थे। वह भी श्रोताओं में बैठ गई और मन लगाकर कथा सुनने लगी। कथा के बीच में पण्डित जी ने कहा कि जो स्त्री व्यभिचार करती है उसे यमदूत नाना प्रकार की पीड़ाएं देते हैं। उसको व्यभिचारिणी जानकर, लोहे की सलाइयां आग में लाल करके, उसकी योनि में डालते हैं।

यह प्रसंग सुनकर चंचुला मारे भय के कांप उठी। कथा समाप्त होने पर सभी श्रोता अपने-अपने घरों को चले गये, किन्नु चंचुला अपने स्थान पर बैठी रही। जब श्रोता मन्दिर से बाहर निकल गये तो वह कथा वाचक पण्डित के पास पहुंची और रो रोकर उनसे कहने लगी—

"ब्राह्मण! मैं धर्म को न जानती थी। मेरा जन्म व्यभिचार और दुराचार में व्यतीत हुआ है। अनजाने में मैं अपने हाथों से अपना धर्म नष्ट कर चुकी हूं। यौवन के मद में अन्धी होकर, धन के बदले में, मैं पर पुरुषों के हाथों अपना शरीर बेचती रही हूं। अब मेरी कौन रक्षा करेगा? नरक में मैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नारकीय यातनाओं को भला कैसे सह सकूंगी। स्वामी! आज आपकी इस परम पुनीत कथा को सुनकर मेरे अन्दर ज्ञान उत्पन्न हुआ है। मैं कहां जाऊं? किसकी शरण लूं? नरक के समुद्र में से भला मुझे कौन निकालेगा? व्यभिचार करने के कारण मैंने क्षणिक सुख प्राप्त किये हैं उनके लिये परलोक में मेरी बहुत बुरी गति होगी। हे ब्राह्मण! मैं दीन अनाथ हूं। मेरा उद्धार कीजिये! यह मेरा निश्चय है कि आपके सदुपदेश से ही मेरा उद्धार होगा।"

चौथा अध्याय

(चंचुला का शिवलोक जाना। कथावाचक ब्राह्मण का शिव महापुराण के फलों का वर्णन करना।)

शिव भक्त श्री सूत जी ने कहा—हे ऋषियो! वह पापिष्ठा चंचुला जब रोती हुई, बार-बार कथा वाचक ब्राह्मण के चरणों में अपना सिर पटकने लगी, तो वह ब्राह्मण थोड़ी देर तक भगवान शंकर के चरणों का ध्यान करता रहा। वह उस पापिष्ठा को भगवान शिव के चरणों में आया देखकर अतीव प्रसन्न हुआ। वह मुस्करा कर कहने लगा—"हे देवी! इस तरह रोने से कोई लाभ नहीं है। शंकर भगवान की तुझ पर बहुत कृपा है, जो कि उन्होंने तुझे यथा समय ज्ञान प्रदान किया है। तू घबड़ा बिल्कुल नहीं और ध्यान पूर्वक जो मैं कहता हूं वह सुन।"

ब्राह्मण की बात सुनकर चंचुला की कुछ ढाढस बंधी और वह शान्तिपूर्वक ब्राह्मण की बात सुनने के लिए तैयार हो गई और बड़े ध्यान से उस की ओर देखने लगी कि वह ब्राह्मण अब क्या कहता है?

ब्राह्मण ने कहा—"हे देवी! शंकर भगवान की कीर्ति का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

क्या कहना ? उनके पावन नाम के केवल सुनने मात्र से महा-पापियों के सभी पाप मिट जाते हैं। बस, तू शुद्ध व पवित्र मन से उनकी चरण-शरण में आ और उनका आश्रय ग्रहण कर। हे सुभगे उनकी निर्मल कथा सुनकर ही तेरे पापी मन में परि-वर्तन हो आया है और तेरे अन्दर इस सत्य ज्ञान का प्रकाश हुआ है। उनकी निर्मल कथा से ही तेरी पापमय बुद्धि नष्ट हो गई है। अब तू महा शिव पुराण की पावन कथा श्रवण कर! तेरे जन्म-जन्मान्तरों के पाप नष्ट हो जायेंगे। बस, यही एक उपाय है तेरे कल्याण का।"

शंकर भगवान द्वारा कथित इस महा पुराण की कथा के श्रवण के फलों को मनुष्य तो क्या देवता भी वर्णन नहीं कर सकते। इसके केवल श्रवण मात्र से ही मन निर्मल हो जाता है। पाप जड़-मूल से नष्ट हो जाते हैं। अपने आप आशुतोष भगवान के चरणों से प्रीति हो जाती है। महादेव की इस पावन कथा को श्रवण करने वाले के हृदय में भगवान सदा शिव पार्वती सहित आन बिराजते हैं। और उसको इन्द्र लोक के समस्त सुखों की प्राप्ति हो जाती है। और उसे मृत्यु के उप-रान्त भगवान शंकर के लोक की प्राप्ति होती है। इस जन्म-जन्मान्तरों के पापों को नष्ट करने वाली कथा के केवल सुनने से ही महान पापी अपने पापों से छुटकारा पाकर भगवान आशुतोष के लोक को प्राप्त कर चुके हैं। हे द्विजे! तू मेरी बात का विश्वास कर और अपने मन को भगवान सदा शिव के चरणों में लगा दे और अपने जन्म-जमान्तरों के पापों को नष्ट करने के लिए इस महा पुराण की पावन तथा पवित्र कथा को सुन!

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

"हे देवी ! भगवान सदा शिव इस समस्त सृष्टि के आधार तथा सभी जीवों के सृजनहार, पालक तथा हन्ता हैं। यह तो उनकी माया है कि जिसके वश में होकर, जीव जीवन भर भटकता हुआ संसार सागर में थपेड़े खाता रहता है। और जो प्राणी संसार की मोह-माया में फंस जाता है हे महाभागे ! तुम उसे पशु के समान जानो। और वह प्राणी जो कि अपनी इंद्रियों का निग्रह करके, अपने आपको भगवान सदा शिव की भक्ति में लगा देता है वह संसार सागर के थपेड़ों से छुटकारा पाकर, मोक्ष को प्राप्त करता है। उसके सारे पाप-ताप अपने आप मिट जाते हैं और वह मुक्त होकर भगवान सदा शिव के लोक को प्राप्त करता है।"

इस प्रकार उस पापिष्ठा चंचुला को शिव महापुराण की कथा का माहात्म्य सुना व समझा कर वह कथा वाचक ब्राह्मण चुप हो गया। उसके मुख से अपनी मुक्ति का सहज व सरल उपाय सुनकर वह पापिष्ठा ब्राह्मणी अत्यन्त प्रसन्न हुई। मारे प्रसन्नता के उसके नेत्र गीले हो गए, उसने उस, दूसरों का हित चाहने वाले विद्वान ब्राह्मण के चरणों को स्पर्श किया। वह अत्यन्त प्रसन्न थी। उसने बड़े ही मीठे शब्दों में उस कथा-वाचक ब्राह्मण से कहा—"हे ब्राह्मण ! आप पर भगवान सदाशिव की अपार कृपा है। आप धन्य हैं। यह भगवान शंकर की कृपा ही तो है जो आपके अन्दर इतना ज्ञान भरा हुआ है। आपके इन थोड़े से शब्दों से ही सच पूछिये तो मेरा कल्याण हो गया है। आप से भगवान श्री महादेव की पावन कथा का माहात्म्य सुनकर मैं कृतार्थ हो गई हूं। मेरे पापी मन में आपने ज्ञान भर दिया है। अब मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे शिव महा पुराण की कथा सुनायें।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

श्री सूत जी बोले—हे मुनिश्वरो! इतना कहकर वह पापिष्ठा ब्राह्मणी भगवान सदा शिव की समस्त पापों को दूर करने वाली कथा सुनने के लिए भगवान शंकर के उस अनन्य भक्त, कथा वाचक ब्राह्मण के पास उसी शिवालय में रहने लगी और दिन-रात उस पवित्र आत्मा ब्राह्मण की सेवा करने लगी। अब वह पवित्र आत्मा ब्राह्मण उस पापिष्ठा के कल्याण के लिए उसे नित्य भगवान शंकर की निर्मल कथा कहने लगा। भगवान शंकर की पावन कथा सुनकर उस ब्राह्मणी के समस्त पाप स्वतः नष्ट हो गए। उसकी पापमय बुद्धि का विनाश हो गया। वह अब नित्य भगवान शंकर का ध्यान करने लगी। उसकी जिह्वा पर प्रत्येक समय भगवान सदा शिव का नाम रहता। उसने अब अपनी जटायें बढ़ा लीं। बल्कल वस्त्र धारण कर लिये। शरीर पर भस्म रमा ली और रुद्राक्ष की माला ली। इस स्वरूप को धारण कर वह एक लम्बी अवधि तक व्रत धारण किया और उपवास किया। नित्य ही शिव महिमा का पाठ किया। और इस प्रकार उस शिव-भक्त देवी ने भगवान श्री सदाशिव को संतुष्ट कर लिया।

बस, इस प्रकार उस देवी ने अपने चित्त को भगवान शिव की भक्ति में लगा दिया और संसार के मोह जाल से सदा-सदैव के लिये मुक्त हो गई। उसके समस्त पाप स्वतः नष्ट हो गये। समय आने पर उसने अपने शरीर को त्याग दिया। उस पवित्र आत्मा को लेने के लिये शिवलोक से भगवान शंकर के गण आये। उसने अपनी भक्ति के प्रताप से अपने शरीर त्याग के साथ ही दिव्य शरीर की प्राप्ति की। दिव्य वस्त्रों तथा आभूषणों को धारण किया और वह शिवगणों के साथ विमान में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बैठकर शिवलोक में पहुंची। जहां पर कि उसको श्री आशुतोष भगवान के साक्षात् दर्शनों की प्राप्ति हुई। उसने देखा कि शिवलोक में भगवान श्री आशुतोष की सेवा में श्री ब्रह्मा, भगवान विष्णु तथा अनेक देवता विराजमान हैं। भगवान श्री आशुतोष करोड़ों सूर्यों के प्रभाव से आच्छादित हैं। गणेश, वीरभद्र, नन्दीश्वर आदि उनकी स्तुति कर रहे हैं। भगवान उनको अपने विभिन्न रूपों से दर्शन दे रहे हैं। भगवान के वामांग में माता श्री पार्वती जी विराजमान हैं। भगवान शंकर के दर्शन करके शिव भक्त चंचुला बड़ी प्रसन्न हुई और उसकी भक्ति, श्रद्धा तथा प्रेम को देखकर भगवान तथा परम तेजस्विनी माता पार्वती ने उसको अपने पास आसन दिया। अब चंचुला शिव धाम में रहती हुई श्री पार्वती जी की सखी के रूप में काम करने लगी और इस प्रकार हे मुनश्विरो! चंचुला ने अपनी भक्ति के प्रताप से वह स्थान प्राप्त किया जो कि देवताओं को भी दुर्लभ है।

पांचवां अध्याय

(विन्दुग नामक ब्राह्मण का अपने पातकों के कारण महा नरक भोगना और उसके पश्चात पिशाच योनि भोगना। तम्बरू नामक गंधर्व का माता पार्वती के आदेश से उसको शिवपुराण की कथा सुनाना और उसका मोक्ष प्राप्त करना।)

इस कथा को सुनने के बाद श्री शौनक जी ने कहा—"हे सूत जी! अब आप इससे आगे की परम पुनीत कथा कहिये कि शिव भक्त चंचुला ने शिवलोक की प्राप्ति के बाद क्या किया और उसने अपने पति विन्दुग को किस प्रकार पिशाच योनि से मुक्ति दिलवाई?"

श्री सूतजी—ऋषिराज! माता पार्वती की सखी के रूप में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

काम करती हुई चंचुला ने एक दिन उनसे हाथ जोड़कर कहा—"माता जी! आप जगजननी हैं। आप परम प्रतापी स्कन्द की माता हैं। आप सब प्रकार के सुखों को देने वाली हैं। आप दिव्य स्वरूपा हैं। आप सच्चिदानन्द स्वरूपा हैं। आप सभी देवताओं द्वारा सेवित हैं। आप आदि शक्ति हैं। आप प्रलय लाने वाली तथा समस्त असुरों की संहारक हैं। आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश की परम प्रतिष्ठा करने वाली हैं।

चंचुला कितनी ही देर तक इस प्रकार माता पार्वती की स्तुति करती रही और प्रेमाश्रु बहाती रही। जब उसने अपनी स्तुति समाप्त की तो उन्होंने कहा—

"हे देवी! मैं तेरी भक्ति तथा तेरे प्रेम से बहुत प्रसन्न हूं अब तू अपनी इच्छानुसार जो भी वर चाहे मांग ले। तू अपनी इच्छा की पूर्ति के हेतु जो भी वर मांगेगी मैं तुझे सहर्ष दूंगी।"

इस पर चंचुला ने माता पार्वती के चरणों में सिर नवा कर कहा—"माता! आपकी कृपा से अब मेरी कोई कामना शेष नहीं रही है। फिर भी मैं अपने पति के विषय में चिन्तित हूं। मेरा पति मेरे समान ही पापिष्ठ था और उसकी मृत्यु बहुत पहले हो गई थी। माता जी! मुझे यह ज्ञात नहीं है कि अपने पापों के कारण वह किस गति को प्राप्त हुआ है?"

चंचुला की बात सुनकर जगजननी माता श्री पार्वती जी ने कहा—"हे चंचुले! अपने पापों के कारण तेरा पति इस समय पिशाच होकर विंध्याचल पर्वत पर पिशाच योनि भोग रहा है। वह इस समय अत्यन्त दुःखी है। उसके कष्ट का वार-पार नहीं है।"

जगजननी माता पार्वती की यह बात सुनकर चंचुला को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बड़ा भारी आघात पहुंचा। वह बहुत दुःखी हो गई। उसने विचार किया कि माता की कृपा से उसके पति की मुक्ति हो सकती है। यह विचार करके उसने श्री पार्वती जी से कहा—"माता जी! मेरे पापिष्ठ पति जो कि इस समय पिशाच योनि भोग रहा है, का आप उद्धार कीजिये। आप मुझे बतलाइये कि उसको मैं नरक से निकालने के लिये क्या उपाय करूं?"

मां जगजननी श्री पार्वती ने कहा—"देवी! यदि तेरा पति शिव महा पुराण की अमृतमयी कथा श्रवण करे तो उसका उद्धार हो जायेगा और वह इस महा नारकीय पिशाच योनि से मुक्ति प्राप्त कर सकेगा।"

इस पर चंचुला ने श्री पार्वती जी से प्रार्थना की कि वह उसके पिशाच योनि में पड़े हुए पति के उद्धार के लिए उसको श्री शिव महा पुराण की कथा सुनवाने का प्रबन्ध कर देवें। जिससे उसका उद्धार हो जावे।

उसके वचन सुनकर पार्वती जी ने तुरन्त ही तम्बरू नामक गन्धर्व को बुलाया और उससे कहा कि हे तम्बरू! इस शिव भक्त देवी का पति विन्दुग अपने पातकों के कारण महा नरक में पड़ा है। अब वह पिशाच होकर विंध्याचल पर्वत पर पिशाच योनि भोग रहा है। वहां उसे महान कष्ट है। विन्दुग अपने पूर्व जन्म में एक महान पापी था। वह ब्राह्मण कर्मों से हीन था। दुष्ट, क्रोधी, साधु-सन्तों का शत्रु था। दीन-दुखियों को और भी दुःखी करने वाला, अपने पराये दोनों को कष्ट देने वाला, दूसरों के घरों में आग लगाने वाला, अपनी पत्नी को व्यभिचारिणी बनाने वाला था। उसने अपना सारा जीवन पाप कर्मों में व्यतीत किया। इन्हीं पाप के कारण मृत्यु के बाद वह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

घोर नरक को प्राप्त हुआ। नरक में वर्षों भयानक यातनायें भोगने के बाद अब वह विंध्याचल पर्वत पर पिशाच योनि भोग रहा है। इस देवी को जो कि भगवान की परम भक्त है, इच्छा है कि उसका उद्धार हो जावे। अतः तुम इसको साथ लेकर विंध्याचल पर्वत पर चले जाओ और वहां जाकर इसके पति को शिव महापुराण की परम पुनीत कथा सुनाओ। जब भगवान शंकर की पावन कथा को सुनकर उसके मन से पापों के समस्त विकार नष्ट हो जायें और उसका चित्त शुद्ध हो जाए, तो तुम उसको ये दिव्य देह धारण करवाकर उसको यहां शिव लोक में ले आना।'

श्री सूत जी ने कहा—'हे मुनिश्वरो! भगवती पार्वती के आदेशानुसार तम्बरू चंचुला को लेकर विंध्याचल पर्वत पर पहुंचा। वहां जाकर उसने उस पर्वत के महान बन-खण्ड में एक महाकाय पिशाच को देखा। जो कि कभी हंसता था और कभी रोता था। तम्बरू ने उसको बलपूर्वक पकड़ कर पाश से बांध कर उसको जकड़ दिया। फिर उसने उस क्षेत्र के समस्त शिव भक्तों को एकत्र किया और घोषणा की मैं यहां शिव महापुराण की पावन कथा आरम्भ करने वाला हूं। अतः सब लोग कथा सुनने के लिए यहां आएं। तम्बरू के इस प्रकार मुनादी कराने पर भगवान शंकर की पावन कथा सुनने के लिए वहां पर सहस्त्रों मनुष्य, देवता आदि एकत्रित हो गए। जब सब लोग आ गए तो उस पिशाच को सबसे आगे बिठाया गया। तम्बरू ने बीणा हाथ में लेकर पहले भगवान शंकर की आराधना की। उसके बाद कथा सुनाना प्रारम्भ किया। उसने पहले शिव महा पुराण का माहात्म्य सुनाया। फिर सातों संहिताओं की परम पुनीत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कथा कही। जिसे सुनकर समस्त श्रोताजन देवता तथा मनुष्य सभी कृतार्थ हो गए। और वह पिशाच अपने जन्म-जन्मान्तर के पापों से मुक्त हो गया। उसने तत्क्षण भगवान शकर की कृपा से दिव्य देह प्राप्त की और वह भगवान शंकर का कीर्तन करने लगा।

श्रोतागणों ने जब उसके पूर्व जन्म का वृतान्त सुना कि वह उस जन्म में वेश्यागामी, ब्राह्मण कर्मों से हीन, दुष्ट क्रोधा और सज्जनों से द्वेष करने वाला था। हिंसक, दुष्ट प्रकृति दोनों को कष्टदायक, पराये घरों को जलाने वाला, चांडाल अपनी पत्नी को व्यभिचारिणी बनाने वाला था। उस पातकी ने अपना मनुष्य जीवन महान पाप-कर्मों में व्यतीत किया था तो वह विस्मित रह गए और भगवान शंकर की कृपा से अब उसको मोक्ष प्राप्त हो गई है, यह देख कर वह सबके सब अत्यन्त प्रसन्न हुए। कथा की समाप्ति और विन्दुग की मोक्ष प्राप्ति के पश्चात सभी श्रोता-गण अपने-अपने घरों को वापस लौट गये। तुम्बरू फिर विन्दुग और चंचुला को लेकर शिवलोक में पहुंचा। शंकर भगवान और माता पार्वती ने उनका प्रसन्नता पूर्वक स्वागत किया। भगवान शंकर ने विन्दुग को अपना गण बनाकर सदा सदैव के लिए अपने पास रख लिया। श्री सूत जी बोले—हे मुनियो! इस प्रकार विन्दुग ने केवल शिव महापुराण को केवल सुनकर जन्म-जन्मान्तर के पापों से मुक्ति प्राप्त की और शिवलोक प्राप्त किया। हे ऋषिवरो! मैं सत्य कहता हूं कि भगवान शकर की इस पावन कथा को जो कोई भी सुनता है वह इस लोक में जीवन पर्यन्त सुख भोगता है और मृत्यु के बाद शिवलोक में वह परम पद प्राप्त करता है जो कि देवताओं को भी दुर्लभ है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

छटवां अध्याय

(शिव महापुराण के सुनने का विधान, वक्ता, श्रोता आदि के लक्षण। कथा से पूर्व नवग्रह, पूजन, मातृदेव पूजन, भगवान शंकर के पूजन तथा ग्रन्थ के पूजन की विधि।)

श्री शौनक जी ने कहा—"हे प्राज्ञ सूत जी! आपने जो यह परम पुनीत इतिहास हमें सुनाया है इसे सुनकर हम सब धन्य हो गये हैं अब आप कृपा करके हमें शिव महा पुराण के श्रवण करने की विधि बतलाइये। ताकि उसे सुनकर हमारा कल्याण हो और उसके साथ-ही-साथ संसार का भी कल्याण हो।"

सूत जी बोले—"हे महर्षे! केवल श्रवण मात्र से ही परम आनन्द प्रदान करने वाले श्री शिव महा पुराण की श्रवण विधि अब मैं तुमसे कहूंगा। श्रोता को चाहिए कि वह किसी ऐसे विद्वान ब्राह्मण को, जो कि भगवान श्री महादेव का अनन्य भक्त भी हो श्री शिव महा पुराण की कथा कहने के लिये आमन्त्रित करे। कथा किसी शिवाला, किसी मन्दिर या विलव वृक्ष के नीचे या अपने ही घर के किसी भाग में सुनने की व्यवस्था करनी चाहिए। पृथ्वी शुद्ध होनी चाहिए। यदि पक्का फर्श हो तो उसे भली प्रकार धुला लेना चाहिए। यदि कच्चा हो तो उसे गाय के गोबर से लिपवा लेना चाहिए। कथा करने के लिए ब्राह्मण के वास्ते एक बड़ी ही सुन्दर-सी वेदी बनवानी चाहिए। पण्डाल में चहूं ओर पताकाएं बांधनी चाहिएं। चारों तरफ दीवारों पर देवी-देवताओं के सुन्दर चित्र लटकाने चाहिएं। भगवान शंकर की मूर्ति के लिए कथा-वाचक पण्डित की वेदी के साथ ही एक और वेदी बनवानी चाहिए और उसमें भगवान सदा-शिव का एक सुन्दरतम चित्र रखना चाहिए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इसके पश्चात अपने सगे-सम्बन्धियों, इष्ट मित्रों तथा गली मुहल्ले वालों को आमन्त्रित करना चाहिए। पण्डाल में कथा वाचक पण्डित का मुख उत्तर की ओर और श्रोताओं का मुख पूर्व की ओर होना चाहिए। यानी दोनों के मुख आमने-सामने होने चाहिएं। जब श्रोता पण्डाल में पधारें तो उनको आदर सहित उनकी जगह पर बिठाना चाहिए। कथा प्रारम्भ होने से पूर्व उन्हें भली प्रकार जल-पान भी करवा देना चाहिए। कथा प्रारम्भ होने से पूर्व अपनी समस्त चिन्ताओं को त्याग कर अपने हृदय को भगवान शंकर के चरणों में लगा देना चाहिए।

वक्ता जब आसन पर बैठ जाये तो उसको कथा की समाप्ति तक किसी को प्रणाम न करना चाहिए। यह बात कथा-वाचकों को कभी न भूलनी चाहिए। पुराणों के जानने वाले पुन्यात्मा होते हैं उनकी अवस्था न देखकर केवल उनके भीतर का गुण देखना चाहिए। मनुष्य के यों तो कई गुण होते हैं लेकिन उन सब में धर्म का ज्ञान कराने वाला गुरू सब से श्रेष्ठ माना जाता है। किन्तु पुराण सुनाने वाला तो धर्म का ज्ञान कराने वाले से भी श्रेष्ठ कहा गया है और माना गया है। पुराणों की कथा कहने वाला वक्ता करोड़ों जन्मों के पापों का नाश करके महामुक्ति दिलवाता है। एक बात का ध्यान रक्खो जिस व्यक्ति से तुम पुराणों की कथा करवाओ वह परम सात्विक, साधु प्रकृति तथा दयालु होना चाहिए। उसे उचित है कि वह प्रातःकाल से साढ़े तीन पहर तक कथा कहे दोपहरी में वह श्रोताओं को दो घड़ी के लिए विश्राम देवे ताकि वह भोजन आदि से निबट सकें। कथा वाचक को चाहिए कि वह किसी भी दुर्जन तथा दुष्ट प्रकृति वाले व्यक्ति के यहां

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कभी कथा कहना स्वीकार न करे। जिस दिन उसे कथा आरम्भ करनी हो उस दिन उसको चाहिए कि अपने बाल बनवाये और यह कार्य उसको कथा प्रारम्भ करने से पूर्व अवश्यमेव कर लेना चाहिए। वक्ता के पास एक दो विद्वान पण्डितों का मौजूद होना भी आवश्यक है जो कि श्रोताओं की शंकाओं का समाधान कर सकें। कथा प्रारम्भ करने से पूर्व श्री गणेश जी का पूजन करना भी जरूरी है ताकि कथा निर्विघ्न समाप्त हो। गणेश पूजन के पश्चात वक्ता को भगवान शंकर तथा पुराण जिसकी कि कथा करनी हो उसका पूजन करना चाहिए। श्रोताओं को भी शुद्ध हृदय से तथा बड़े प्रेम से भगवान शंकर की इस पावन कथा का श्रवण करना चाहिए।

जो श्रोता अपने अन्दर द्वेष रखते हैं, जो कामी हैं, क्रोधी हैं, पाखण्डी हैं उनको इस कथा का पुण्य प्राप्त नहीं होता। वही श्रोता इस कथा के फल को प्राप्त करते हैं जो कि संसार की समस्त चिन्ताओं को त्याग कर एकाग्रचित्त होकर कथा सुनते हैं। घर-बार, स्त्री-पुत्र आदि की चिन्ताओं को त्यागकर जो श्रोता इस पावन कथा को सुनते हैं वही इसके फल को प्राप्त करते हैं। जो अपने मन को वश में करके यह कथा सुनते हैं वही इसका फल पाते हैं और जो प्राणी भक्ति की भावना को त्याग कर इसे सुनते हैं उनको इसके श्रवण करने का कोई फल नहीं मिलता। और वह जन्म जन्मान्तर तक दुःख भोगते रहते हैं। वह श्रोता जो कुछ भेंट किये बिना ही कथा सुनते हैं, वह सदा-सदैव के लिए मूर्ख हो जाते हैं (मूर्ख तो वह पहिले से होते हैं। यदि मूर्ख न होते तो वह पुराण के पूजन में यथा-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शक्ति भेंट न करते) ऐसे व्यक्ति सदा दूषित समझे जाते हैं। जो श्रोता कथा बीच में छोड़कर कहीं उठकर चले जाते हैं वह अपना धन-धान्य सब कुछ खो बैठते हैं।

वह श्रोता जो कथा सुनने के बीच पान चबाते रहते हैं मृत्यु पर्यन्त वह यमदूतों द्वारा अपना विष्ठा आप भक्षण करते हैं। वह मनुष्य जो कथा ऊंचे आसन, स्थान, तख्त, कुर्सी, चार-पाई आदि पर बैठकर सुनते हैं वह नरक में स्थान पाते हैं और विष वृक्ष बनते हैं। जो मनुष्य कथा में जाकर वक्ता को प्रणाम नहीं करते और कथा श्रवण करने के लिए बैठ जाते हैं वह नरकों के भोगने के बाद अर्जुन वृक्ष होते हैं। वह प्राणी जो बक्ता के बराबर आसन पर बैठकर कथा सुनते हैं उन्हें गुरु शय्या पर चढ़ने का पाप लगता है। जो श्रोता पाग बांधकर कथा सुनते हैं उनकी सन्तान पापी तथा कुलदोषक होती है। जो मनुष्य लेटकर कथा सुनते हैं वह नरक भोगने के बाद अज-गर बनते हैं। जो प्राणी कथा-वाचक तथा कथा की निन्दा करते हैं वह नरकों के भोगने के बाद कुत्ते बनते हैं। कथा के बीच में बुरी-बुरी बातें करने वाले तथा गालियां देने वाले गंधर्व होते हैं। वह प्राणी जो कथा सुनते हुए शोर मचाते हैं लड़ते झगड़ते हैं, विघ्न डालते हैं, वह नरक भोगने के बाद ग्राम शूकर बनते हैं। इसलिए वक्ता व श्रोता दोनों को भक्ति पूर्वक कथा कहनी व सुननी चाहिए। श्रोता को चाहिए कि जब तक कथा जारी रहे नित्य कथा कहने से पूर्व श्री गणेश जी का पूजन करे ताकि कथा में विघ्न न पड़ें। नित्यकृत्य संक्षेप से करके प्रायश्चित करे। विधिपूर्वक नवग्रह भद्रदेव का पूजन करे एवं शिव पूजन करे। ग्रन्थ जिसमें से कि कथा बांचना हो, उसका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पूजन करे। पूजन के बाद हाथ जोड़कर ग्रन्थ की विशेष रूप से स्तुति करे—"हे पुराण देव! आप साक्षात महेश्वर हैं। प्रत्यक्ष हो श्रवण के हेतु स्वीकृत हो अतः आप मुझसे सन्तुष्ट हो जाइये मेरा कथा बांचने का मनोरथ आपने ही सफल करना है। प्रभो! मैं आपका दास हूं। भवसागर में पड़ा हूं अपने कर्म ग्राहों में जकड़ा हुआ दीन हूं, आप मेरा उद्धार कीजिये।" इस प्रकार शिव पुराण की स्तुति करके फिर भगवान श्री वेद व्यास की पूजा करनी चाहिए। वस्त्र, भूषण, धूप, दीप आदि से कथा वाचक पण्डित का भी पूजन करना चाहिए। इसके बाद उसको कथा की समाप्ति तक यत्न पूर्वक नियम धारण करना चाहिए। कथा से पूर्व वक्त से प्रार्थना करनी चाहिए—आप कथा विशारद परम ज्ञानी श्री वेद व्यास का रूप हो। प्रभो! इस कथा से मेरा अज्ञान दूर कीजिए। शिव पंचार्ण मन्त्र के लिए पांच ब्राह्मणों का वरण करना चाहिए। वह भगवान सदा शिव को पंचाक्षर मंत्र को भक्ति पूर्वक जापते रहें। यह श्रवण का संविधान वक्ता तथा श्रोता आदि के लक्षण हैं।

सातवां अध्याय

(निष्काम तथा सकाम भाव से शिव महा पुराण की पवित्र कथा सुनने वालों को क्या फल मिलता है ? कथा की समाप्ति पर उद्यापन करने की विधि तथा पुस्तक के पूजन की विधि।)

शौनक जी बोले—"हे सूत जी! आपने शिव महा पुराण की परम पवित्र कथा के सुनाने तथा सुनने की विधि तो समझा दी है। अब कृपा करके मुझे इस कथा के सुनने वाले व्रती के नियम सुनाइये।"

सूत जी बोले—"हे शौनक! अब तुम शिव पुराण सुनने वाले व्रतियों का नियम सुनो जिससे कि उनको इस परम पवित्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कथा के निर्विघ्नता पूर्वक सुनने का फल प्राप्त होता है। वह लोग जिन्होंने कि दीक्षा न ली हो, इस पावन कथा के सुनने का कोई अधिकार नहीं रखते। अतः सुनने वालों को पहले यथा नियम वक्ता से दीक्षा लेनी चाहिए। उनको ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए और भूमि पर सोना चाहिए और पत्रावलियों पर भोजन करना चाहिए। कथा के बाद ही भोजन करना चाहिए पहिले नहीं। जब तक कथा समाप्ति न हो जाये तब तक व्रत रखना चाहिए और शुद्ध मन से कथा सुननी चाहिए। घी, दूध तथा फलों का एक ही समय भोजन करना चाहिए। या केवल एक समय खीर का भोजन करना चाहिए। व्रती को चाहिए कि वह गरिष्ठ दालें, अन्न, बासी चीजें न खाये। तथा प्याज, लहसुन, हींग, नशीली वस्तुओं का प्रयोग बिल्कुल न करे। काम आदि छः विकारों को छोड़ देना चाहिए। ब्राह्मणों पतिव्रता स्त्रियों एवं साधु-महात्माओं की निन्दा न करनी चाहिए।

रजस्वला स्त्री का देखना, पतितों से बात-चीत करना, ब्राह्मण द्वेषियों तथा नास्तिकों के साथ व्रती को न बोलना चाहिए। सत्यता, शुद्धता, दया, मौन, सरलता, विनय, उदारता आदि गुण व्रती में होने चाहिएं। कथा सदा निष्काम भाव से सुननी चाहिए। यदि निष्काम भाव से न सुन सके तो फिर सकाम भाव से सुने। सकाम भाव से कथा सुनने से श्रोता की कामना सिद्ध होती है और यदि निष्काम भाव से सुने तो उससे मोक्ष की प्राप्ति होती है। दरिद्री यदि इस कथा को सुने तो उस का दरिद्र दूर हो जाता है। क्षयी यदि इस कथा को सुने तो उसका क्षय दूर हो जाता है। रोगी सुने तो उसका रोग मिट जाता है। पापी का पाप मिट जाता है। निःसन्तान पुरुष को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सन्तान की प्राप्ति होती है। बन्ध्या स्त्री इस पावन कथा को सुनने से पुत्रवती हो जाती है। स्त्रियां जिनका गर्भ बार-बार गिर जाता हो, इस पवित्र कथा को सुनें तो उनको गर्भ रह जाता है। दुष्ट स्त्रियों की दुष्टता दूर हो जाती है और वह पवित्रात्मा व धर्मात्मा बन जाती हैं। हे महर्षि! शिव महा पुराण की यह पवित्र व पावन कथा प्रत्येक स्त्री-पुरुष को सुननी चाहिए। इस महा पुराण के परायण के दिन कोटि यज्ञों के समान उत्तम होते हैं। उन दिनों में यदि थोड़ा सा भी दान किया जाये तो उसका बहुत बड़ा फल होता है। कथा सुनने के बाद उसकी समाप्ति पर, इसका उद्यापन भी श्रोता को करना चाहिए। यह उद्यापन चौदस के दिन नहीं करना चाहिए। गरीबों के लिए उद्यापन करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह शंकर भगवान के अनन्य भक्त हैं। वह केवल सुनने से ही पवित्र हो जाते हैं। शिव भक्तों को इस परायण के यज्ञोत्सव की समाप्ति पर श्रोताओं को भक्ति पूर्वक पूजन करना चाहिए। जिस प्रकार भगवान शंकर का पूजन किया जाता है, उसी तरह शिव महा पुराण ग्रन्थ का पूजन करना चाहिए। पुस्तक के लपेटने के लिए रेशमी वस्त्र तथा बांधने के लिए नई रेशमी डोरी कथा-वाचक को देनी चाहिए। जो पुराण के लपेटने के लिए नया रेशमी वस्त्र तथा बांधने के लिए नई रेशमी डोरी देते हैं, वह युगों ज्ञान व धन प्राप्त करते रहते हैं। कथा वाचक को कम्बल, रेशमी वस्त्र, चौकी, तख्त आदि दान में देने से मनुष्य स्वर्ग में पहुंच कर मन चाहे भोगों कोभोगता है। फिर एक कल्प तक ब्रह्मलोक में निवास करता है और उसके बाद शिव लोक को प्राप्त होता है। व्रती श्रोता इस प्रकार कथा-वाचक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पण्डित का पूजन करके उसकी सहायता के लिए बैठे हुए पंडित का पूजन करनाचाहिए। इस परायण के यज्ञोत्सव की समाप्ति पर ब्राह्मणों को भोजन करवाना चाहिए। धन व वस्त्र दान करने चाहिएं और भगवान श्री हरि का कीर्तन करना चाहिए। अगले दिन विरक्त श्रोता को श्री गीता जी का पाठ करना चाहिए और यदि श्रोता गृहस्थी हो तो कर्म की शान्ति के लिए उसको हवन करना चाहिए। रुद्र संहिता के श्लोकों अथवा गायत्री मन्त्र से या इस पुराण के तत्वों से हवन करना चाहिए या उसको पंचाक्षर मन्त्र से हवन करना चाहिए। छोटे मोटे दोषों की शांति के लिए उसको भक्ति पूर्वक श्री विष्णु सहस्र नाम का पाठ करना चाहिए। इससे उसका श्री शिव महा पुराण का सुनना सफल हो जायेगा इसमें रत्ती भर भी संशय नहीं है। उसे चाहिए कि वह ग्यारह वेद पाठी तथा विद्वान ब्राह्मणों को खीर तथा मधु का भोजन करवाये और यदि सामर्थ्य हो तो तीन पल सोने का सिंह बनवा कर भगवान शंकर की संतुष्टि के लिए दान करे। कथा के श्रवण के प्रभाव तथा दान के प्रभाव से और शंकर भगवान की कृपा से मनुष्य अपने समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।"

श्री सूत जी बोले—"हे शौनक जी! यह श्री शिव महा पुराण का माहात्म्य है। अब आप कहिये कि आप और क्या सुनना चाहते हैं? श्री महा शिव पुराण समस्त पुराणों का सरताज है। इस पुण्यशील इतिहास को जो कोई इसे भक्ति पर्वक सुनाता, सुनता, पढ़ता या मनन करता है वह इस लोक में समस्त भोगों को भोगकर अन्त में शिवलोक को प्राप्त हो जाता है।

॥ इति श्रीशिवमहापुराण माहात्म्य ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

श्री विद्येश्वर संहिता

पहला अध्याय

(तीर्थराज श्री प्रयागराज में ऋषियों महर्षियों द्वारा एक धर्म सभा का आयोजन। ऋषि मण्डल का श्री सूत जी से ऐसा उपाय पूछना जिससे कि वह कलिकाल में पाप का नाश करके धर्म की रक्षा कर सकें।)

बार-बार भगवान श्री सदा शिव के चरण कमलों की वन्दना करते हुए भगवान श्री वेद व्यास जी बोले—"हे मुने! तीर्थ राज प्रयाग में, जहां पर कि पुनीत भागीरथी तथा यमुना का संगम होता है, एक समय समस्त ऋषियों व महर्षियों ने एकत्रित हो एक धर्म सभा का आयोजन किया था। वहां पर अपनी शिष्य मण्डली सहित उनके पौराणिक शिष्य श्री सूत जी भी पधारे थे। उनके आने पर समस्त ऋषियों-महर्षियों ने उनका पूजन किया और उनके आदर-सत्कार के पश्चात उनको एक ऊंचे आसन पर बैठाया। जब श्री सूत जी अपने आसन पर बैठ गये तो ऋषि-मण्डल ने विनीत भाव तथा विनम्र स्वर से हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना की—हे महर्षे! इस समय कलियुग के प्रभाव से समस्त जीव अत्यन्त दुःखी हैं। मृत्यु लोक के सभी प्राणी धर्म-कर्म से विमुख होने के कारण पापों की पीड़ा के कारण बुरी तरह से दग्ध हो रहे हैं। इस कलियुग के प्रभाव से प्राणी एक दूसरे के शत्रु बनकर एक दूसरे के दुःख का कारण बन रहे हैं। वह चोर हैं, पराई स्त्रियों से रमण करने वाले, हत्यारे, धमण्डी, ज्ञान से विनिष्ट, नास्तिक और माता-पिता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की सेवा न करके, उल्टा उनको दुःख देने वाले सिद्ध होंगे। वह स्त्री के कहने पर चलेंगे। वह सतकर्मों से विमुख होंगे। धर्म कार्यों में उनका मन बिल्कुल नहीं लगेगा। ब्राह्मण लोभी हो जायेंगे और वेदों के ज्ञान को बेचकर अपनी आजीविका चलायेंगे। व्यर्थ का गर्व करेंगे। वह अपने ब्रह्मत्व के कर्मों को बिल्कुल त्याग देंगे। तीनों काल की उपासना का भी त्याग कर देंगे। दया-धर्म बिल्कुल छोड़ देंगे। स्वभाव में क्रोध बढ़ जायेगा। दुष्ट प्रकृति वाले हो जायेंगे। खेती-बाड़ी का काम करने लगेंगे। कलियुग के प्रभाव से अन्य वर्ण भी अपनी मर्यादाओं को त्याग देंगे। क्षत्री भी अपने धर्म-कर्म को त्याग कर अपने धार्मिक व स्वभाविक कर्मों से विमुख हो जायेंगे हर समय पाप कर्मों में लीन रहेंगे। वह कायर होंगे, धर्म विमुख होंगे, चोर होंगे, नीच कार्य करेंगे और इन्द्रियों के दास बन जायेंगे। वह स्वाभिमान का त्याग कर देंगे। परतन्त्रता में उनको सुख का आभास होगा। वह भोग विलास को सच्चा सुख मानकर हर समय स्त्रियों की संगत में बैठना पसन्द करेंगे। मांस भक्षण करेंगे, मदिरा पान करेंगे और भोग विलास में डूबे रहेंगे। वेश्याओं के कोठों पर पड़े रहेंगे और उनके इशारों पर नाचेंगे। गौ-ब्राह्मण की सेवा बिल्कुल नहीं करेंगे। जो उन पर विश्वास करेगा उनके साथ विश्वासघात करेंगे। वह प्रजा के दुःख-सुख की चिन्ता त्याग कर बस अपना कोष भरने की ही चिन्ता करेंगे। वह राजकोष के धन को भोग विलास में बड़ी लापरवाही से व्यय करेंगे। वह बजाय इसके कि जीवों की रक्षा करें उसका उल्टा उनकी हिंसा करेंगे। तीसरे वर्ण वाले यानी वैश्य भी इस कलियुग के प्रभाव से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपना धर्म-कर्म त्याग कर सनातन संस्कारों से हीन हो जायेंगे। धर्म को त्याग देंगे और अधर्म को ग्रहण कर लेंगे। लोभ और लाभ को सन्मुख रखकर, डण्डी मारकर तथा कम तोलकर अधिक-से-अधिक पैसा कमाना अपना ध्येय बना लेंगे। वह हृदय हीन होकर दीनों को अधिक-से-अधिक दुःख देकर अपने लाभ के सम्बन्ध में ही विचार करेंगे। उन्हें अपने इष्ट देव, गुरु और ब्राह्मणों के प्रति कोई श्रद्धा न होगी। वह भोगों में लिप्त रहेंगे। परले सिरे के स्वार्थी होंगे। वह इतने नीचे गिर जायेंगे कि अपने लाभ के लिए वह अपनी कन्या का विक्रय करने से न चूकेंगे। और इसी प्रकार हे तात! शूद्र भी अपनी मर्यादाओं का त्याग कर देंगे। अपना धर्म कर्म छोड़ देंगे। वह शूद्र होकर ब्राह्मणों की तरह आहार-विहार करने लगेंगे। वह अपने घरों में भगवान की मूर्तियाँ स्थापित करके ब्राह्मणों की भांति ही हवन इत्यादि करने लगेंगे। वह ब्राह्मणों की निन्दा करेंगे लेकिन उनकी तरह विद्याध्ययन करके धन उत्पन्न करेंगे। और धनी होकर वह दूसरों पर अपनी धौंस जमायेंगे। धन के मद से उनमें अतीव अभिमान पैदा जायेगा जिसके कारण वह अपने सामने दूसरों को कुछ न समझेंगे। चारों वर्णों में उनसे बढ़कर पातकी, दुष्कर्मों का करने वाला और क्रूर कर्म करने वाला दूसरा और कोई न होगा। इसी प्रकार स्त्रियां भी अपना धर्म त्याग देंगी। पति को त्याग कर पराये पुरुषों से प्रेम करेंगी। पराये पुरुषों को अपने जाल में फंसायेंगी। वह अपने पति से तो झगड़ा करेंगी मगर अपने यारों से प्रेम करेंगी। उनके भीतर माता-पिता, सास-ससुर आदि का कोई भय न रहेगा। वह समय कुसमय कुपात्र-सत्पात्र आदि का ध्यान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किये बिना अपनी काम वासना को शान्त करने वाली होंगी। वह अपनी विलासिता के कारण सदैव रोगी रहेंगी और उनमें गृहस्थी के प्रति कोई मोह नहीं रहेगा। अब सूत जी आप ही कहिये कि ऐसे स्त्री-पुरुषों से उत्पन्न सन्तान कैसी होगी और उनका भविष्य क्या होगा? माता-पिता का ऐसा आचरण देखकर क्या ऐसी सन्तान अपने धर्म में भला क्या स्थिर रहेगी? देखिये! जब चहूं ओर पाप-ही-पाप दिखाई दे रहा है तो फिर धर्म की रक्षा किस प्रकार हो सकती है? पाप के बढ़ते हुए इस भारी बोझ को भला पृथ्वी किस तरह उठा सकेगी? जब धर्म ही क्षय हो जायेगा तो गौ, देवता, धर्म और ब्राह्मण की रक्षा किस प्रकार हो सकेगी? हे तात! कलियुग के बढ़ते हुए चरणों को देखकर हम सब व्यग्र हैं और केवल लोक-कल्याण को दृष्टि गोचर रखते हुए ही हमने इस समय यहां इस विशाल सभा का आयोजन किया है। आप सब धर्मों के ज्ञाता भी हैं और महान परोपकारी भी, इसलिए हम सब की प्रार्थना है कि आप इस समय हमें कोई ऐसा सरल उपाय बतलाइये जिससे कि हम पाप का नाश करके धर्म की रक्षा कर सकें।

ऋषि मण्डल की इस प्रार्थना को सुनकर श्री सूत जी थोड़ी देर तक मौन रहे। उन्होंने भगवान सदा-शिव के पावन चरणों का ध्यान किया और जब उनको परम शांति प्राप्त हो गई तो उन्होंने एक मधुर मुस्कान के साथ ऋषि मण्डल से कहा।

दूसरा अध्याय

(ऋषि मण्डल का श्री सूतजी से कलिकाल के पापमय प्रभाव से प्राणियों के मुक्त होने का उपाय पूछना। श्री सूतजी का उनको बताना कि कलियुग में उदय हुए पापों को नष्ट करने के लिए प्राणियों को भगवान सदाशिव की शरण ग्रहण करनी चाहिए।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

श्री सूतजी बोले—हे मुनियो ! आपके इस प्रश्न से, जो कि सबके लिए कल्याणकारी है उसे सुनकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं। कलियुग वास्तव में पापों का नाशक है। कलियुग में ब्राह्मण लोग दोनों लोकों को पवित्र करने वाले, चारों वर्णों के फल देने वाले भगवान सदाशिव का यश, सदा वर्णन करते रहते हैं। वह केवल भगवान शंकर के इस शिवमहापुराण के पठन से शिवलोक को प्राप्त कर लेते हैं। हे मुनियो ! जब तक श्री शिव महापुराण का उदय नहीं हुआ था, तब तक ब्रह्म हत्या का पाप कलियुग के बड़े उत्पात, महात्माओं का शिव के रूप को न जानना, घोर यमदूतों का निर्भय घूमना, समस्त शास्त्रों का पारस्परिक विवाद, समस्त पुराणों की परस्पर उत्तमता की गर्जना, सर्व तीर्थों की परस्पर पवित्रता का विवाद, मन्त्रों का, क्षेत्रों का, पीठों का और देवताओं का और सिद्धान्तों का परस्पर वाद-विवाद यह सब अपना-अपना प्रदर्शन करते रहते थे।

भगवान श्री वेद व्यास जी ने कहा है कि यह महापुराण महान फल देने वाला है। जो भी प्राणी इसके केवल एक-दो अध्याय भी सुन लेता है उसके समस्त पापों का नाश हो जाता है और जो स्वयं इस महान फल देने वाले शिव महापुराण का भगवान शंकर के चरणों का ध्यान करता हुआ तथा भक्ति सहित पाठ करता है वह स्वर्ग में पहुंच, मन चाहे भोगों को भोगकर, ब्रह्मलोक में एक कल्प निवास करके शिवलोक को प्राप्त करता है। जो प्राणी इस शिव महापुराण के अनुसार कर्म करता है उसको अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है। जो प्राणि इस शिव महापुराण का भक्ति सहित पाठ करके,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इसका पूजन करता है, वह समस्त देवताओं के पूजन के फल को प्राप्त करता है। ध्यानपूर्वक सुनिये यह शिव महापुराण भगवान श्री सदाशिव ने समस्त उपनिषदों का मन्थन करके निकाला है और इस शिव प्रदत्त अमृत का पान करने से प्राणी अमृतपद को प्राप्त हो जाता है। इस शिव महापुराण का निरन्तर एक मास तक पाठ करने से, प्राणी ब्रह्म हत्या जैसे महापाप से भी मुक्त हो सकता है। इसका पाठ शिवालय में या बिल्व वृक्ष के नीचे बैठकर करने वाले प्राणी को समस्त सिद्धियां अपने आप प्राप्त हो जाती हैं। जो इस महान ग्रन्थ का पाठ भैरव मन्दिर में एक-के-बाद-एक करके, तीन बार करता है, उसकी सभी मनोकामनायें श्री शंकर भगवान पूर्ण कर देते हैं। जो प्राणी चतुर्थी के दिन, व्रत रखकर, महा शिव पुराण का पाठ बिल्व वृक्ष के नीचे बैठकर करता है, उसको भगवान सदाशिव की भक्ति तो प्राप्त होती ही है, उसके साथ ही मृत्यु के उपरान्त उसको देवत्व पद की प्राप्ति भी होती है।

शिव महापुराण की यों तो सभी संहितायें सभी प्रकार के फल देने वाली हैं किन्तु यह दो संहितायें—रुद्र संहिता और कैलाश संहिता भगवान सदाशिव की लीला तथा ज्ञान से परिपूर्ण हैं। यह शिवपुराण वेद सम्मत है। भगवान श्री सदाशिव ने सबसे पहले इसका निर्माण किया था। इस पुराण में १२ संहिताएं हैं—विद्येश्वर संहिता, रुद्र संहिता, विनायक संहिता, उमा संहिता, मातृ संहिता, एकादश रुद्र संहिता, कैलाश संहिता, शतरुद्र संहिता, कोटिरुद्र संहिता, सहस्रकोटि रुद्र संहिता, वायवीय संहिता और धर्म संहिता। इस महापुराण में एक लाख श्लोक थे। भगवान श्री वेद व्यास जी ने इसे संक्षिप्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करके इसका चौबीस हजार श्लोकों में दोबारा निर्माण किया। सृष्टि के आदि में भगवान शंकर ने इस पुराण को सौ करोड़ श्लोकों में रचना की थी। किन्तु अब वह सौ करोड़ श्लोक अप्राप्य हैं। द्वापर युग के आरम्भ में भगवान श्री वेद व्यास जी ने उस महापुराण को चार लाख श्लोकों तथा अठारह पुराणों में विभक्त किया था। अब इसमें चौबीस लाख श्लोक हैं। जिनमें सात संहिताएं प्रधान हैं। यह सात संहिताओं का शिव महापुराण ब्रह्म के समान है।

पुराणों की गिनती में यह शिव महापुराण चौथा पुराण है। अब इसमें सात संहिताएं ही प्रधान हैं। इस सूक्ष्म रूप वाले शिव महापुराण के अन्तर्गत निम्न की सात संहिताएं हैं। वह क्रमानुसार इस प्रकार हैं—१. विद्येश्वर २. रुद्र ३. शतरुद्र ४. कोटिरुद्र ५, उमा ६. कैलाश ७. वायवीय संहिता।

तीसरा अध्याय

(ऋषियों-महर्षियों का श्री ब्रह्मा जी से श्री शिव महापुराण सुनाने के लिए प्रार्थना करना। श्री सूतजी का उनको बतलाना कि साधकों के लिए साधना के क्या नियम हैं और भगवान सदाशिव के चरणों की प्राप्ति कैसे की जा सकती है।)

ऋषि मण्डल ने श्री सूतजी की सेवा में विनम्र निवेदन किया—हे सूतजी! आपकी कृपा से हमने शिव महिमा भी सुन ली है और शिव महापुराण का माहात्म्य भी जान लिया है। उस परम कल्याणकारी शिव महापुराण का माहात्म्य सुनने के उपरान्त हमें पूरा शिव महापुराण सुनने की प्रबल इच्छा है। अब आप कृपा करके हमें पूरा शिव महापुराण सुनाइये, जो कि समस्त वेदों और शास्त्रों का सार है और जिसकी महामुनि भगवान वेद व्यास जी ने रचना की है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ऋषि मण्डल की प्रार्थना सुनकर श्री सूतजी ने कहा—हे ऋषियो ! आप श्री शंकर भगवान का स्मरण कीजिए और शिव महापुराण सुनिये। शिव महापुराण में भक्ति और वैराग्य का विस्तृत वर्णन है और उसके साथ ही परम ब्रह्म परमात्मा का वर्णन है, जो कि उपनिषदों के द्वारा जाना जा सकता है। जब इस सृष्टि का कार्य आरम्भ हुआ था, तब ऋषियों-महर्षियों में इस बात पर मतभेद हुआ कि अमुक वस्तु सबसे उत्कृष्ट है, अमुक नहीं है। उनके इस विवाद ने महान रूप धारण कर लिया। जब झगड़े का निपटारा किसी प्रकार से भी न हो पाया तो वह सब लोग श्री ब्रह्मा जी की शरण में पहुंचे और उनसे शंका समाधान के लिए निवेदन किया। उन्होंने कहा—"भगवन ! यह बताइये कि सब तत्वों में कौन पुराना है और कौन परातपर पुरुष है ?" श्री ब्रह्मा जी बोले—"जहां से मन के साथ वाणी उन्हें न पाकर लौट आती है जिनसे ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और इन्द्र आदि से युक्त और पांचों तत्व और ग्यारह इन्द्रियों के साथ इस समस्त संसार के स्वामी उत्पन्न हुए हैं वही महादेव सर्वज्ञ और जगत-पिता हैं वही महादेव सर्वोत्तम है। मनुष्य उनका दर्शन केवल प्रभु भक्ति से ही कर पाता है, नहीं तो उनके दर्शनों का अन्य कोई भी उपाय नहीं है। विष्णु, शंकर और अन्य इन्द्र आदि देवता केवल उनकी भक्ति द्वारा ही उनका दर्शन कर पाते हैं। अधिक क्या कहूं। भगवान सदाशिव की भक्ति द्वारा ही संसार के बंधन से मुक्ति प्राप्त करता है। हे मुनियो ! आप लोग भूतल पर जाकर सहस्र वर्ष का एक दीर्घ कालीन यज्ञ करो और इस प्रकार उनको प्रसन्न करो।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ऋषियो-महर्षियो ने कहा—"प्रभो ! आप हमें बताइये कि परमसाध्य क्या है और उसका परम साधन क्या है और साधक कैसा होना चाहिए ? आप यह सब बातें हमें विस्तार-पूर्वक समझाये।"

श्री ब्रह्मा जी ने कहा—"हे मुनियो ! इस लोक में साध्य शिव पद और साधन भगवान सदाशिव के चरणों की उपासना है। भगवान सदाशिव की उपासना को साधन बनाने वाले साधक के लिए आवश्यक है कि वह सर्वथा निस्पृह रहे। इस प्रकार भगवान सदाशिव की उपासना करने वाला व्यक्ति शीघ्र ही भगवान सदाशिव के पवित्र चरणों की भक्ति प्राप्त कर लेता है। भगवान सदाशिव प्राणी को उसकी भावना तथा उसकी साधना के अनुसार ही फल देते हैं। भगवान शंकर ने इस साधना के सम्बन्ध में अपने श्री मुख से भी निर्देश दिया है। उनके निर्देश के अनुसार कानों से सुनने, मुख से कहने और मन से मनन करने को ही साधना कहते हैं। यह तीनों क्रियायें साधन हैं और हे मनीश्वरो ! यह है भी सत्य। भगवान सदा-शिव परम कीर्ति वाले हैं। वह सदा ही श्रवण करने, वर्णन करने और मनन करने योग्य हैं। अतएव साधक के लिए आवश्यक है कि भगवान शंकर की भक्ति में लीन होकर सदा उनका ही कीर्तन करे, उनकी ही महिमा श्रवण करे और हर समय में उनका ही ध्यान करता रहे। बस इसी श्रेष्ठ साधन के करने से साधक भगवान श्री सदाशिव के चरणों को प्राप्त कर सकता है और शिव चरणों की प्राप्ति के पश्चात् प्राणी की समस्त इच्छायें तथा कामनायें मिटकर किसी वस्तु की चाह नहीं रहती। शिव चरणों की कृपा से उसको समस्त फल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपने आप प्राप्त होते रहते हैं। बुद्धिमान-जन पहले तो दूसरों से भगवान सदाशिव की महिमा सुनते हैं। फिर वही शिव महिमा अपने मुख से दूसरों को सुनाते हैं। इससे सुनाने व सुनने वाले दोनों के लिए मोक्ष द्वार खुल जाते हैं। प्रारम्भ में भक्ति करने वालों को, थोड़े बहुत कष्ट का आभास अवश्य होता है। किन्तु बाद में उन्हें महान आनन्द की प्राप्ति होती है। इसमें रत्ती भर भी संशय नहीं है।"

चौथा अध्याय

(श्रवण, कीर्तन और मनन क्या हैं ? इनको किस प्रकार करना चाहिए ? भगवान् श्री वेद व्यास जी का इन तीनों के सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक बतलाना।)

यह सुनकर मुनियो ने पूछा—"प्रभो ! श्रवण, कीर्तन और मनन यह तीनों क्या हैं ? और इन्हें किस प्रकार करना चाहिए ?"

श्री ब्रह्मा जी ने कहा—भगवान शंकर का पूजन, उनके नाम का जाप, उनके रूप, लीलाओं और नामों का चिन्तन करना यह तो है मनन। गीता द्वारा वेद मन्त्रों द्वारा और भाषा द्वारा भगवान शंकर के रूप, विलास और नामों का ग्रहण करना, वाणी के द्वारा उनकी स्तुति करना यह कीर्तन है। शिव जी का गुणगान श्रवण करना यह साधन है। सतसंग द्वारा जब भगवान शंकर का श्रवण तथा कीर्तन दोनों दृढ़ हो जाते हैं। तब शिव कृपा से मनन सिद्ध हो जाता है। जो कि आत्मा को पवित्र करता है। इस सम्बन्ध में हे ऋषियो ! मैं तुमको एक प्राचीन इतिहास सुनाता हूं। ध्यान पूर्वक सुनिये। श्री सूत जी ने कहा—

एक समय मेरे गुरु भगवान श्री वेद व्यास जी सरस्वती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के तट पर तप कर रहे थे तो श्री सनत कुमार जी ने आकर पूछा—"भगवन! भगवान श्री सदा शिव तो प्रत्यक्ष रूप से सबके सहायक हैं तो फिर आप तप क्यों कर रहे हैं?"

भगवान श्री वेद व्यास जी बोले—"मुक्ति के लिए।" किन्तु कारण जाने बिना तब श्री सनत कुमार जी बोले—"भगवान शंकर के गुणों को सुनना, उनका कीर्तन करना और फिर मनन करना यह तीन साधन हैं। और यह साधन वेद सम्मत हैं। पहले मैंने भी इन साधनों के भ्रम में पड़कर मन्दराचल पर्वत पर जाकर तपस्या की थी। मेरी तपस्या से प्रसन्न हो भगवान सदा शिव के नन्दीश्वर मेरे पास आये। उन्होंने मुझे मुक्ति के साधन बताये—श्रवण, कीर्तन और मनन। इसलिए हे मुनेश्वर! आप भी ऐसा ही कीजिए।" इतना कहकर श्री सनत कुमार चले गये।

इस पर मुनियो ने श्री सूत जी से पूछा—प्रभो! जो प्राणी श्रवण, कीर्तन और मनन नहीं करता उसको मोक्ष की प्राप्ति किस प्रकार होती है? आप हमें यह रहस्य बतलाइये ताकि अज्ञानियों को, जो कि श्रवण, कीर्तन और मनन नहीं करते. मुक्ति प्राप्त हो सके।

पांचवां अध्याय

(मुनियों का श्री सूत जी से लिंग पूजन का रहस्य पूछना। तो उन्होंने बताया कि पूर्व समय में श्री ब्रह्मा जी और भगवान श्री विष्णु के बीच युद्ध हुआ था तभी से भगवान सदा शिव के निष्कल लिंग और सकल वेर का पूजन हो रहा है।)

श्री सूत जी बोले—"हे मुनिश्वरो! जो प्राणी न तो भगवान सदा शिव की कथा को श्रवण कर सके, न ही उनका कीर्तन कर सके और न ही मनन कर सके उसके लिए उचित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

है कि वह शिव लिंग की स्थापना कर ले और नित्य प्रति उसका पूजन करे तो वह अवश्यमेव भव सागर से तर जायेगा।"

इस पर ऋषियो-महर्षियो ने कहा—"महाराज ! यह कैसे ? इस प्रकार सब देवताओं का पूजन किस प्रकार सम्भव है ? और लिंगेश्वर के पूजन द्वारा भगवान सदा शिव का पूजन किस प्रकार सम्भव है ?"

श्री सूत जी बोले हे मुनिश्वरो ! वह भेद भगवान श्री महादेव जी ने स्वयं प्रकट किया था। मैंने अपने गुरु भगवान वेद व्यास से सुना है कि श्री सदा शिव का एक रूप निष्कल है। चूंकि भगवान सदा शिव समस्त कलाओं से युक्त हैं उनका साकार बेर स्वरूप भी हो जाता है क्योंकि वह सकल है। सकल और निष्कल रूप से वह ब्रह्म कहलाते हैं। भक्तों को भगवान श्री सदा शिव की निराकार और साकार मूर्ति का नित्य पूजन करना चाहिए। भगवान श्री शंकर के अतिरिक्त और कोई दूसरा देवता निराकार नहीं है वह इसलिए कि वह ब्रह्म नहीं है। इस लिए निराकार लिंग में देवताओं की आराधना नहीं होती। सुनिये देवता जीव हैं ब्रह्म नहीं हैं। देवताओं का प्रार्चच उनकी साकार मूर्ति में ही होता है। भगवान शंकर ब्रह्म हैं और समस्त देवता जीव हैं। यह बात बिल्कुल सही है क्योंकि यह वेदान्त से भी सिद्ध है और प्रणव अर्थ के शब्द से भी सिद्ध है। यही प्रश्न श्री सनत कुमार जी ने श्री नन्दिकेश्वर जी से किया था। उन्होंने उत्तर दिया था—"केवल भगवान सदा शिव ही, इस प्रकार पूजन के अधिकारी हैं। कला युक्त भगवान सदा शिव का बेर पूजन लोक सम्मत है और वेदों ने इसकी आज्ञा भी दी है।" जब श्री सनत कुमार ने लिंग की उत्पत्ति के सम्बन्ध में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रश्न किया तो श्री नन्दिकेश्वर ने कहा—"पूर्व काल में जब श्री ब्रह्मा जी तथा भगवान श्री विष्णु के बीच युद्ध हुआ था तो भगवान निष्कल शिवजी ने वहां स्तम्भ रूप में प्रकट होकर सृष्टि की रक्षा की थी। तभी से भगवान सदा शिव का निष्कल लिंग और सकल बेर जगत में प्रचलित हैं। चूंकि बेर लिंग को देवताओं ने अपना लिया था इसलिए शिवजी के अतिरिक्त लिंग से देवताओं का भी पूजन होने लगा। और वह पूजन मनवान्छित फल भी प्रदान करता है। भगवान सदा शिव का लिंग और बेर दोनों ही पूजन के योग्य हैं और उस पूजन के फल स्वरूप भोग तथा मोक्ष दोनों ही प्राप्त होते हैं।"

छटवां अध्याय

(श्री ब्रह्मा जी का विष्णु लोक में जाना। उनको देखकर भगवान विष्णु का उनके सत्कार के लिए शेष-शय्या से न उठना। ब्रह्मा जी का क्रुद्ध होना। दोनों का परस्पर युद्ध करना। उनको लड़ते देखकर देवताओं का घबड़ाना और भगवान सदा शिव के पास जाना।)

श्री नन्दिकेश्वर बोले—पूर्वकाल में एक समय भगवान श्री विष्णु श्री लक्ष्मी जी की शेष शैय्या पर शयन कर रहे थे कि अकस्मात श्री ब्रह्मा जी वहां आन पहुंचे और उन्होंने भगवान श्री विष्णु से कहा—" तुम मुझको देखकर भी अभिमानी पुरुष के समान सो रहे हो, तुम उठकर खड़े हो जाओ। मैं तुम्हारा ईश्वर हूं। जो मनुष्य आये हुए गुरु को देखकर अभिमान का आचरण करता है उस मूर्ख को अपनी इस क्रिया के लिए प्रायश्चित करना चाहिए।"

श्री ब्रह्मा जी की बात सुनकर भगवान श्री विष्णु को क्रोध तो बहुत आया मगर वह उसे दबाकर बोले—"तुम्हारा कल्याण हो आओ बैठो। तुम्हारा मुख टेढ़ा क्यों हो गया है?" इस पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

श्री ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! समय के फेर से तुम्हें अभिमान हो गया। मैं तुम्हारा रक्षक हूं और समस्त जगत का पितामह हूं।"

भगवान श्री विष्णु बोले—"यह सारा संसार मेरे भीतर विराजमान है। और तुम हो चोर के समान इसे अपना समझते हो। तुम मेरे नाभिकमल से उत्पन्न हुए पुत्र हो।"

श्री नन्दिकेश्वर ने कहा—हे योगीन्द्र ! इस प्रकार उन दोनों के बीच एक दूसरे से बड़ा बनने का विवाद लेकर झगड़ा आरम्भ हो गया। वह दोनों आपस में लड़ने लगे। उनके वाहन भी परस्पर लड़ने लगे। भगवान श्री विष्णु श्री ब्रह्मा जी पर बाण और अस्त्रों की वर्षा कर रहे थे और श्री ब्रह्मा जी भी भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर अनेकों अस्त्रों से प्रहार कर रहे थे। उन दोनों का युद्ध देखकर देवता घबड़ाये। देवताओं ने उन दोनों से कहा—"आप दोनों परस्पर लड़कर अराजकता उत्पन्न कर रहे हैं। यह सारी सृष्टि तो भगवान सदा शिव की है। जिनकी इच्छा के बिना एक तिनके का भी नाश नहीं हो सकता।" भयभीत देवता फिर कैलाश पर्वत पर पहुंचे। भगवान सदा शिव के चहूं ओर गण खड़े थे। स्त्रियां पंखा झोल रही थीं। चारों वेद उनकी प्रशंसा कर रहे थे। देवताओं ने भगवान श्री सदा शिव को साष्टांग दंडवत कर नमस्कार किया।

सातवां अध्याय

(देवताओं का भगवान श्री सदा शिव को श्री ब्रह्मा जी और भगवान श्री विष्णु के बीच होने वाली लड़ाई के सम्बन्ध में बतलाना। श्री महेश्वर का उनको ढाढस बंधाना और स्वयं रणभूमि में आकर युद्ध को समाप्त करना।)

भगवान सदा शिव ने गम्भीर वाणी में देवताओं से कहा—"हे देवताओ ! मुझे ब्रह्मा और विष्णु का युद्ध पहले से ही पता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

था। और मुझे यह भी ज्ञात था कि तुम लोग उन दोनों के दुःख से बहुत दुःखी हो। तुम लोगों के लिए घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अभी-अभी अपने गणों के साथ तुम्हारे साथ चलूंगा। तत्पश्चात उन्होंने अपने एक सौ गणों को युद्ध भूमि में चलने के लिए आदेश दिया और स्वयं पार्वती को साथ लेकर भद्र रथ पर सवार होकर आकाश मार्ग से चले। देवराज इन्द्र भी उनके साथ हो लिए। भगवान श्री सदा शिव ने आकाश में छिपकर देखा कि भगवान श्री विष्णु और ब्रह्मा अपने अस्त्रों-शस्त्रों से एक दूसरे पर बुरी तरह से प्रहार कर रहे हैं और एक दूसरे को मारने में तत्पर हो रहे हैं। उनकी अस्त्र ज्वाला से तीनों लोक भस्म हुआ चाहते हैं। प्रलय के इस रूप को देखकर भगवान श्री सदा शिव से न रहा गया। अतः वह उनका युद्ध शांत करने के लिए महा अग्नि के तुल्य एक स्तम्भ के रूप में उन दोनों के बीच में जाकर खड़े हो गये। बस फिर क्या था उस महा अग्नि के प्रगट होने के साथ ही समस्त अस्त्र-शस्त्र स्वमेव शांत हो गये। उस अग्नि के स्तम्भ को देख कर दोनों भगवान विष्णु और श्री ब्रह्मा जी कहने लगे कि इस इन्द्रयातीव अग्नि स्वरूप स्तम्भ का हमें पता लगाना चाहिए कि यह क्या वस्तु है? अतएव उस स्तम्भ का पता लगाने के लिए भगवान श्री विष्णु ने शूका का रूप धारण किया और स्तम्भ का आदि भाग देखने के लिए पाताल में चले गये। ब्रह्मा जी ने हंस का रूप धारण किया और स्तम्भ का अंत भाग देखने के लिए ऊपर आकाश में गमन किया। किन्तु दोनों ही उसका कोई पता न लगा सके और वह पुनः युद्ध भूमि में वापस लौट आये ब्रह्मा जी को वहां एक केतकी का फूल दिखाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दिया। उनको विश्वास हो गया कि उन्होंने स्तम्भ का अन्त देख लिया है। वह उस फूल को लेकर भगवान श्री विष्णु के पास आये। और भगवान श्री विष्णु से कहा—"हे विष्णु! मैंने स्तम्भ का आगे का भाग देख लिया है।" उनकी यह बात सुनकर भगवान विष्णु ने उनके चरण पकड़ लिए। किन्तु श्री ब्रह्मा के झूठ बोलने के साथ ही भगवान सदा शिव उस अग्नि स्तम्भ में से साकार रूप में प्रकट हो गये। भगवान विष्णु ने आगे बढ़कर उनके चरण पकड़ लिए। और कहा—"भगवन्! आपका शरीर आदि अन्त से रहित है। मलिन बुद्धि वाले आपको पाने की इच्छा रखते हुए भी आपको नहीं पा सकते। हे करुणा सागर! आप प्रसन्न होइये।"

महेश्वर ने कहा—"हे विष्णु! मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूं। तुम बड़े ही सत्यवादी हो, अतः मैं तुम्हें अपनी समानता प्रदान करता हूं।"

इस प्रकार प्रसन्न होकर महेश्वर ने देवताओं के सन्मुख भगवान श्री विष्णु को अपनी प्रभुता समानता अर्पित कर दी।

आठवां अध्याय

(ब्रह्मा जी तथा केतक के झूठ बोलने पर भगवान सदा शिव का उन पर क्रोध करना। भैरव का भगवान सदा शिव के आदेश से श्री ब्रह्मा का पांचवा सिर काट डालना। ब्रह्मा जी का भगवान सदा शिव से क्षमा की याचना करना।)

श्री नन्दिकेश्वर ने कहा—"हे सनत कुमार जी! तब श्री सदा शिव ने श्री ब्रह्मा पर क्रोधित होकर अपनी दोनों भौंहों के बीच में से "भैरव" नाम की एक शक्ति उत्पन्न की। उस शक्ति ने उत्पन्न होने के साथ ही भगवान श्री सदा शिव से आज्ञा माँगी कि उसको क्या करना है। भगवान श्री सदा शिव ने कहा, तुमको अपनी तलवार से ब्रह्मा का पूजन करना है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बस, आज्ञा मिलने की देर थी कि भैरव ने श्री ब्रह्मा जी को बालों से पकड़ लिया। ब्रह्मा जी थर-थर कांपने लगे। भैरव ने एक ही वार से श्री ब्रह्मा जी का पांचवा सिर काट डाला। वह एक और सिर भी काटना ही चाहता था कि श्री ब्रह्मा जी ने झट अपने आपको भैरव के चरणों में गिरा दिया। इतने में भगवान श्री विष्णु ने भी भगवान सदा शिव के चरण पकड़ लिए और प्रार्थी हुए—प्रभो! आपने ही तो इन्हें पांचवा सिर प्रदान किया था। अतः आप इन पर प्रसन्न होइये और इनको क्षमा प्रदान कीजिये। इस पर भैरव ने ब्रह्मा जी को छोड़ दिया। ब्रह्मा जी ने भगवान सदा शिव से अपना पांचवां सिर प्रदान करने के लिए प्रार्थना की। भगवान श्री सदा शिव बोले—"तुमने अपनी प्रतिष्ठा और ईश्वरत्व लिए हुए भी छल किया है इसलिए तुम सत्कार स्थान और उत्सव से वंचित किये जाते हो।"

फिर कहा—"जो अपराधी हैं उन्हें तुम दण्ड दो, लोक मर्यादा को पालो। मैं तुमको वर देता हूं कि आज से तुम गणों के आचार्य हुए। वही तुम्हारा सम्मान तथा सत्कार करेंगे। कोई यज्ञ तुम्हारे बिना सम्पूर्ण नहीं होगा।"

ब्रह्मा जी से ऐसा कहकर भगवान श्री सदा शिव ने केतकी के फूल की तरफ ध्यान दिया और कहा—अब तू झूठ बोलने के कारण मेरी पूजा के योग्य नहीं रहा। तूने भगवान श्री विष्णु से जो यह झूठ बोला है कि श्री ब्रह्मा जी ने स्तम्भ का अन्त देख लिया है। यही नहीं तूने यह भी कहा है कि आपत्ति काल में असत्य बोलना भी असत्य नहीं है। यह धर्म शास्त्र की आज्ञा है। बस तू इस झूठ बोलने के कारण अब मेरी पूजा में रखने के योग्य नहीं रहा। किन्तु केतक भगवान सदा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शिव के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा—"प्रभो! मेरे पापों को दूर कीजिये। आप की कृपा से भला क्या नहीं हो सकता?"

भगवान सदा शिव बोले मेरा वचन तो कभी मिथ्या नहीं हो सकता। हां इतना हो सकता है कि मैं तो तुझे स्वीकार नहीं करूंगा किन्तु तू मेरे भक्तों द्वारा स्वीकार किया जायेगा! जहाँ पर भी मेरे मण्डप की रचना होगी, उसका सिरमौर तू ही होगा। इसके बाद भगवान सदा शिव देवताओं की सभा में आकर अपने आसन पर बैठ गये।

नवां अध्याय

(भगवान श्री सदाशिव का श्री ब्रह्मा जी और भगवान श्री विष्णु को उपदेश देना। लिंग की पूजा का महत्व। शिवरात्रि के दिन लिंग पूजन की विधि। शिवरात्रि के दिन लिंग के दर्शन तथा पूजन का फल।)

श्री नन्दिकेश्वर जी बोले—"हे सन्त कुमार जी! जब भगवान सदाशिव देवताओं के मध्य अपनी शोभित सभा में बैठ गए। तो भगवान श्री विष्णु तथा श्री ब्रह्मा जी ने उनकी विधिवत पूजा की। भगवान श्री सदाशिव उनकी पूजा करने से अतीव प्रसन्न हुए और कहने लगे—वत्स! मैं तुम दोनों की पूजा से अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं। आज से आज के दिन का नाम शिवरात्रि होगा जो कि मेरी प्रिय तिथि होगी। जो मनुष्य आज के दिन मेरी साकार मूर्ति और निराकार की पूजा करेगा वह इस संसार की रक्षा सृष्टि आदि सभी कार्य करने में समर्थ होगा। शिवरात्रि के दिन तथा रात को मनुष्य मेरा व्रत रखकर तथा जितेन्द्रिय रहकर मेरी पूजा करेगा उनको उसी फल की प्राप्ति होगी जो पूरा एक वर्ष तक पूजन करने से प्राप्त होता है। जैसे चन्द्रमा को देखकर समुद्र उमड़ता है ठीक उसी प्रकार आज का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दिन शिवरात्रि का दिन मेरी भक्ति को उमड़ाने का दिन है। मेरा स्तम्भ जो कि अभी-अभी प्रकट हुआ था आदि नक्षत्र है। यदि कोई अगहन में, आदी नक्षत्र में उमा सहित मेरे रूप का या केवल मेरे बेर लिंग का ही दर्शन कर लेता है तो वह मुझे कार्तिकेय से भी प्रिय लगता है। आज के पुनीत दिन में, केवल दर्शन से ही महा फल की प्राप्ति होती है और जो दर्शन करने के साथ-साथ मेरा पूजन भी करे तो उसके पूजन का फल वाणी द्वारा नहीं कहा जा सकता। इस स्थान का नाम जहां पर कि मैं लिंग रूप में प्रगट हुआ हूं, उस स्थान का नाम महा होगा। पूजन के समय यह लिंग छोटा हो जायेगा। यह लिंग उत्पन्न होने का स्थान, आरूणाचल कहलायेगा। इस तीर्थ में रहने से जीवों को पांच प्रकार की मुक्ति प्राप्त होगी। मोक्ष के नाम हैं— सालोक्य, समीप्य, सारूप्य, सृष्टि और सायुज्य। हे ब्रह्मा और विष्णु! तुम अपने-अपने मनोरथों को शीघ्र पूर्ण करो।" इतना कहकर भगवान सदाशिव ने ब्रह्मा-विष्णु युद्ध में जितनी सेना मारी गई थी उसको अमृत वर्षा कर पुनः जीवन दान किया। इसके बाद ब्रह्मा और विष्णु की शत्रुता यह कहकर समाप्त कर दी कि मेरे सकल और निष्कल दो स्वरूप हैं। ऐसे स्वरूप और किसी के नहीं हैं, अतः मेरे सिवाय और कोई दूसरा ईश्वर नहीं हो सकता। मेरा एक तो स्तम्भ (लिंग) रूप है और दूसरा निष्कल स्वरूप है। मेरे यह दोनों ही रूप सिद्ध हैं। मुझे तो बड़ा अचम्भा है कि तुम लोगों ने अज्ञानवश अपने आपको ईश्वर मान लिया है। तुम्हारे इस अज्ञान को दूर करने के लिए ही मुझे इस युद्ध-भूमि में आना पड़ा अब तुम अभिमान त्याग कर ईश्वर भक्ति करो। मेरी ही प्रसन्नता से इस संसार में सभी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पदार्थ प्रकाशित हो रहे हैं। अधिक क्या कहूं, मुझे गुरू के वचन ही प्रमाण रूप हैं। मैं ही परब्रह्म हूं। विस्तार तथा बुद्धि के कारण मैं ब्रह्मा हूं और सर्व व्यापक होने के कारण मैं आत्मा भी हूं। अन्य आत्मा से रहित हैं। तुम दोनों को इस नित्य लिंग का पूजन करना चाहिए। जहां मेरे लिंग रूप की स्थापना की जाती है वहां मैं अप्रतिष्ठित रूप से रहता हूं। अतः साकार और निराकार के भेद को छोड़कर नित्य ही इस लिंग का अर्चन करना चाहिए।

दसवां अध्याय

(भगवान श्री सदा शिव का श्री ब्रह्मा जी तथा भगवान श्री विष्णु को बतलाना कि तुमने सृष्टि और स्थिति यह दो सिद्धियां अपने तप से प्राप्त की हैं। फिर उनको बेर (मूर्ति) का तथा स्तम्भ (लिंग) के पूजन का उपदेश देकर अन्तर्ध्यान हो जाना।)

श्री ब्रह्मा जी और भगवान श्री विष्णु ने श्री सदा शिव से पूछा—"प्रभो! आप हमें स्वर्ग आदि पांच कृत्यों का लक्षण बतलाइये।" भगवान श्री सदा शिव ने कहा—मेरे सारे कार्य गोपनीय हैं। परन्तु सुनो—सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरो भाव, अनुग्रह यह पांच ही मेरे कृत्य जगत में नित्य सिद्ध हैं। इस संसार के प्रारम्भ का नाम सर्ग है, उसकी रक्षा करना स्थिति है, उसके नाश को संहार कहते हैं। उसके अदल-बदल यानी परिवर्तन को सिरो भाव कहलाता है। उसके मोक्ष को अनुग्रह कहते हैं। यही मेरे पांच कृत्य हैं। मेरे इन पाँचों कार्यों को पृथ्वी आदित्व मौन होकर गोपुर बिब धारण करते हैं। इन पाँच कार्यों को चलाने के लिए मेरे पांच मुख हैं और उन चारों दिशाओं में चार मुख हैं और उन चारों मुखों के मध्य में पांचवां मुख है। इस बात को सभी विद्वान जानते हैं। तुम दोनों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ने सृष्टि तथा स्थिति इन दोनों कार्यों को अपनी तपस्या के द्वारा प्राप्त किया है। इसी प्रकार संहार और तिरोभाव यह दो कार्य मैंने रुदर और महेश को उनके तप से प्रसन्न होकर दिये हैं। अनुग्रह नाम वाला पांचवां कृत्य कोई भी नहीं पा सकता। अति प्राचीन होने से तुम दोनों अपनी दोनों कृत्यों सृष्टि और स्थिति को भूल गये लेकिन रुद्र और महेश नहीं भूले। और तुम्हारे भूलने के कारण मुझे सृष्टि की स्थिति के लिए रूप, वेश, कृत्य, वाहन तथा आयुधादि सबको अपनाना पड़ा। मेरा ध्यान न करने से तुम दोनों, अपने दोनों कृत्यों को भूल गये। आज से तुम मेरे ज्ञान की सिद्धि के लिए ओंकार मन्त्र का जाप करो। जिसके जाप से तुम्हारे अन्दर अहंकार उत्पन्न न होगा। श्री नन्दिकेश्वर कहते हैं कि उमा सहित भगवान श्री सदा शिव ने उत्तर की ओर मुंह करके श्री ब्रह्मा और भगवान विष्णु को इस मन्त्र का उपदेश दिया। श्री ब्रह्मा तथा भगवान श्री विष्णु ने भगवान श्री सदा शिव जी से हाथ जोड़कर कहा—प्रभो! आपका रूप और तेज निष्कल है, आप सकल के स्वामी हैं, सर्व व्यापक हैं, प्रणव के वाच्य हैं, प्रणव ही आपका रूप है, आप इस संसार के निर्माता हैं, आपके पांच मुख हैं, आपके पांच ही कर्म हैं और आपके पांच ब्रह्म रूप हैं आपको बार-बार प्रणाम है। इस प्रकार स्तुति करके जब दोनों ने भगवान सदा शिव को नमस्कार किया तो उन्होंने कहा—"मैंने तुमसे सभी तत्वों का वर्णन करके तुमको मन्त्र भी बतला दिया है, जिसको कि जप कर तुम मेरे स्वरूप को प्रत्यक्ष जान सकते हो। मेरा बतलाया हुआ यह मन्त्र भाग्य-विधायक और सब प्रकार के ज्ञान को प्रदान करने वाला है। जो इस मन्त्र को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मार्ग शीर्ष की आर्द्रावली चतुर्दशी में जपता है और यदि आर्द्र सूर्य गति की होती है, तो एक ही मन्त्र का जाप करोड़ गुना हो जाता है। इसमें सन्ध्या समय मेरा दर्शन भी वैसा ही फल प्रदान करता है। मेरे लिंग स्तम्भ और वेद मूर्ति इन दोनों की पूजा उत्तम है। ओमकार मन्त्र से लिंग का और पंचाक्षर मन्त्र शिवाय नमः मन्त्र से वेद मूर्ति का पूजन करना चाहिए। ऐसा करने से मेरी प्राप्ति सुगम हो जाती है। इस प्रकार का उपदेश देकर भगवान सदा शिव अन्तर्ध्यान हो गये।

ग्यारहवां अध्याय

(श्री सूत जी का मुनियों को भगवान सदा शिव के मन्त्रों द्वारा शिवलोक की प्राप्ति का उपाय बतलाना। शिव गंगा में स्नान और दान से क्या फल मिलता है ? कामना से किये हुए कार्यों तथा निष्काम भाव से किये हुए कार्यों का फल।)

इतनी कथा सुनने के बाद मुनियों ने श्री सूत जी से पूछा—"प्रभो ! लिंग की स्थापना कैसी जगह करनी चाहिए और किस देश काल में उसका पूजन होना चाहिए ?"

श्री सूत जी बोले—"सावधान होकर सुनो—पवित्र तीर्थ या पवित्र नदियों या पवित्र स्थान पर लिंग की स्थापना करनी चाहिए। जहां पर कि उसकी नित्य ही पूजा होती रहे। पृथ्वी सम्बन्धी द्रव्य जलमय अथवा धातु आदि से लिंग बनवाना चाहिए। यदि चर मूर्ति बनानी हो तो छोटी बनवायें यदि अचर मूर्ति बनानी हो तो बड़ी बनवायें। शुभ लक्षणों से युक्त इस शिवलिंग की स्थापना करनी चाहिए। शिव लिंग खाट के पाए की तरह ऊपर-नीचे से मोटा, और बीच में से पतला होना चाहिए। इस प्रकार का बना हुआ शिव लिंग अधिक फल देने वाला होता है। चर शिव लिंग में लिंग तथा लिंग की पीठ का एक जैसा ही उपादान होना चाहिए, किन्तु बाण लिंग के लिए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ऐसा नियम नहीं है। लिंग की लम्बाई निर्माण-कर्त्ता की बारह उंगल के बराबर होनी चाहिए। किन्तु, उससे अधिक लम्बाई भी हो जाए तो कोई बुरी बात नहीं है। लिंग या बेर मूर्ति दोनों का पूजन शिव पद का प्रदान करने वाला है। लिंग के दो रूप हैं—स्थावर और अंगम। तरू, गुलम, लता आदि स्थावर लिंग हैं। कृषि करि आदि जंगम लिंग हैं। पीठ प्रकृति स्वरूप है और शिव लिंग ज्ञान स्वरूप है। जिस प्रकार भगवान सदाशिव भगवती पार्वती को गोद में बिठाए हुए पूजे जाते हैं उसी प्रकार पीठ को धारण करके लिंग की पूजा की जाती है। भगवान को चाहिए कि गुरू के आदेशानुसार स्नान, वस्त्र, गंध, धूप, दीप ताम्बूल निवेदन, नैवेद्य, अर्ध्य, तर्पण आदि से लिंग का पूजन करें और उसको नमस्कार करें। यह पूजा शिव पद को देने वाली है। पिसी हुई बारीक मिट्टी में गोबर निकालकर या कनेर के फूल, अनेक प्रकार के फलों, गुड़, मक्खन, भस्म, अन्न या जैसी इच्छा हो उससे लिंग बनाकर, उसका पूजन करना चाहिए। कोई-कोई भक्तजन अंगूठे में ही शिव का पूजन कर लेते हैं। जहां जी चाहे, भक्त लिंग स्थापना कर सकता है और उसका पूजन कर सकता है। भगवान सदाशिव सदा ही और सब स्थानों पर, फल देने वाले हैं जो कोई श्रद्धा पूर्वक भक्त को लिंग दान करता है उसको निश्चय ही महान फल प्राप्त होता है। दस हजार प्रणव मन्त्र नित्य जपने से और संध्या समय में एक हजार बार मन्त्र जपने से शिव लोक की प्राप्ति होती है। ब्राह्मणों को चाहिए कि गुरू से दिक्षापूर्वक मन्त्र लेकर पंचाक्षर मन्त्र ॐ शिवाय नमः के जप में प्रणव लगायें। गुरू ज्ञानी भी होना चाहिए और ब्राह्मण भी ब्राह्मण को जप में नमः शब्द पहले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बोलना चाहिए। स्त्रियों को नमः शब्द अन्त में लगाना चाहिए। ब्राह्मण स्त्री को नमः पहले लगाना चाहिए। जो कोई इस प्रकार पांच करोड़ मन्त्र जपता है, निश्चय ही वह सदाशिव के समान हो जाता है। और वह भक्त जन जो कि एक, दो, तीन या चार करोड़ मन्त्र जपते हैं, वह ब्रह्मादिकों के पद को प्राप्त करते हैं। जप के दिनों में नित्य दो-एक ब्राह्मणों को भोजन करवाना चाहिये। जो ब्राह्मण नित्य प्रातः काल एक हजार आठ गायत्री मन्त्र का जाप करे या नित्य वेद मन्त्र सूत्र को जपे तो उसको शिव पद की प्राप्ति होती है। मंत्रों में से जो मन्त्र अपने को प्रिय लगे उसका ही जाप करना चाहिए। केवल ॐ के ही एक हजार बार जपने से मनुष्य के सब मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। विद्वानों को चाहिये कि वह सदाशिव क्षेत्र में ही निवास करें। जहां कहीं भगवद् मन्त्र द्वारा लिंग पधराया जाता है, वहां सौ हाथ तक पुण्य क्षेत्र होता है वहां जो भी पुण्य कार्य किया जाता है उसी का सौ गुना फल मिलता है। जहां पर ऋषियों-महर्षियों द्वारा लिंग पधराया गया होता है, वहां हजार हाथ तक शिव-क्षेत्र होता है और जहां भूमि में से शिव लिंग स्वयं निकला हुआ हो वहां भी हजार हाथ तक शिव क्षेत्र मानना चाहिए। विद्वानों का कहना है कि ऐसे शिव क्षेत्रों में जो कुएं, बावलियां, तालाब आदि बनवाये जाते हैं उन्हें शिव गंगा कहते हैं। ऐसे शिव-क्षेत्रों में स्नान व दान करना महान फलदायक होता है। यदि, दाह, दशाह, मासिक, समिडीकरण वार्षिक पिंडदान, (बरसी) आदि ऐसे क्षेत्रों में करने से सब पापों से मुक्ति मिल जाती है।"

मुनियों ने श्री सूत जी से पूछा—"आप हमें संक्षेप में समस्त पवित्र क्षेत्रों के सम्बन्ध में बतलायें। जिन-जिन क्षेत्रों से आप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तक लोगों ने उच्च पद प्राप्त किए हैं उनका वर्णन करें। प्रभो आप योगियों में श्रेष्ठ हैं और शिव क्षेत्रों के ज्ञाता हैं।

बारहवां अध्याय

(पुण्य देने वाले शिव क्षेत्र। गंगा, सीन भद्र, नर्मदा, तमसा, रेवा, गोदावरी, कृष्णा, वेनी, तुंगभद्रा, स्वर्ण मुखरी, सरस्वती, पम्पा कन्या श्वेत नदी, कावेरी आदि पुण्यदा शुभप्रद और स्वर्ग दायनी नदियों का माहात्म्य सदभावना से इन नदियों के तट पर निवास करने वालों को अनेकों प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि का प्राप्त होना सभी पुण्य क्षेत्र शिव लोक दायक और शिव सम्बन्धी अभीष्ट फल दायक है।)

श्री सूत जी बोले—हे मुनियो! अब तुम पुण्य क्षेत्रों के सम्बन्ध में सुनो। जैसे भी हो सके मनुष्य को चाहिए कि वह पुण्य क्षेत्र में निवास करे और वहां पर पाप बिल्कुल न करे, क्योंकि पुण्य क्षेत्र में किया हुआ पाप वज्र के समान हो जाता है। गंगा के तट पर अनेक तीर्थ हैं। साठ मुखों वाली सरस्वती बड़ी ही पुनीत है। गंगा के तट पर निवास करने वाला ब्रह्म पद को प्राप्त कर लेता है। हिमालय में से निकली हुई गंगा अति पावन है। भगवान श्री सदा शिव ने इस पृथ्वी पर भिन्न भिन्न स्थानों में उनके निवासियों को मोक्ष प्रदान करने के लिए शिव क्षेत्रों का निर्माण किया है। अब तुम उन मुक्ति देने वाले शिव क्षेत्रों तथा उनके फलों का वर्णन सुनो—कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिनको कि एक लम्बी अवधि तक ऋषियों-महर्षियों ने अपना निवास स्थान बनाया है। और कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जो कि लोक-रक्षा के लिए अपने आप उत्पन्न हुए हैं। उनमें तीर्थत्व आ गया है। भगवती गंगा के तट पर अनेक क्षेत्र हैं। काशी प्रयाग आदि अनेकों पुण्य क्षेत्र हैं। वहां पर भगवती गंगा के मकर राशि के सूर्य और मकर राशि के बृहस्पति होने पर पूर्व से भी अधिक प्रशस्त और पुण्य दायक हो जाता है। वहां पर स्नान करने से गणेश पद की प्राप्ति होती है। महा नदी नर्मदा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के तट पर निवास करने से वैष्णव पद की प्राप्ति होती है। बारह मुखों वाली तमसा नदी दस मुखों वाली रेवा नदी और महा पुण्य दायक गोदावरी नदी के तट पर निवास करने से ब्रह्म हत्या तथा गौ हत्या का भी पाप नाश हो जाता है। इक्कीस मुखों वाली गोदावरी पुण्य लोक को देने वाली है। इन नदियों के अलावा अट्ठारह मुखों वाली कृष्णा वेनी नदी, विष्णु लोक दायकी दश मुखी तुंगभद्रा हिमालय कायदकी और स्वर्ण मुखरी नदी, जो कि नौ मुखों वाली है और जो ब्रह्मलोक से च्युत हुए प्राणियों को अपने तट पर जन्म देती है तथा सरस्वती कन्या श्वेत नदी और महा पुण्य दायक कावेरी जिसके कि सत्ताइस मुख हैं, यह सभी पुण्य दायक शुभ प्रद और स्वर्ग दायनी हैं। हे बुद्धिमान शौनक ऋषियो! सुनो, पुण्य क्षेत्र में किया हुआ अल्प पुण्य अनेक प्रकार से बढ़ता है, किन्तु वहां पर किया हुआ अल्प पाप भी विशाल हो जाता है। यदि कोई पुण्य क्षेत्र में निवास करके अपना जीवन वहीं पर बिताना चाहता है तो उसके केवल वहां निवास करने से ही पूर्व कृत पाप नष्ट हो जायेंगे। हे मुनियो! तीर्थ में निवास करने से उत्पन्न पुण्य, कायिक, वाचिक और मानस तीनों प्रकार के पापों का नाश हो जाता है। दान करने से धनकृत पाप मिट जाते हैं अन्यथा वह किसी प्रकार भी नष्ट नहीं हो पाते। पापों के बढ़ने से पुण्यों का नाश हो जाता है। बीज अंश बुद्धि अंश और भोग अंश पुण्यों तथा पापों में है। देवताओं का पूजन करने वालों को, ब्राह्मणों को दान देने वालों को और अनु-भक्ति करने वालों को समय पाकर भोगों का सुख प्राप्त होता है। अतः सुख की चाहना करने वाले मनुष्यों को इन क्षेत्रों में रह कर पुण्य कार्य करने चाहियें।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तेरहवां अध्याय

(मुनियों का श्री सूत जी से पूछना कि धर्म और अधर्म क्या है जिनके करने से स्वर्ग तथा नरक की प्राप्ति होती है ? हमें यह भी बतलाइये कि वह सदाचार क्या है, जिससे कि विद्वान लोकों पर विजय पा सकते हैं ? श्री सूतजी का धर्म-अधर्म तथा सदाचार की व्याख्या करना ।)

मुनियों ने कहा--"प्रभो ! हम अब आप से यह सुनना चाहते हैं कि धर्म क्या है और अधर्म क्या है ? चुनांचि स्वर्ग को देने वाला धर्म और नरक को देने वाला अधर्म का वर्णन कीजिए ।" श्री सूत जी ने कहा--हे मुनियो ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्राइन चारों वर्णों के लिए उचित है कि वह नित्य प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठकर भगवान श्री हरि का ध्यान करें । पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठने से उत्तम फल प्राप्त होता है । रात्रि को अन्तिम पहर जो ऊषा कहलाता है । उस समय ब्राह्मण को चाहिए कि बिछौने से उठकर मल मूत्र का त्याग करे ।

सदाचार वाला विद्वान वास्तव में ब्राह्मण है । वेदों का ज्ञान रखने वाला मनुष्य ब्रह्माण विप्र है । दोनों में से एक के पालन करने वाले को द्विज कहते हैं । अल्प आचरण करने वाला और वेद का अल्प ज्ञान रखने वाला तथा राज्य की सेवा करने वाला क्षत्री ब्राह्मण है । स्वल्प आचरण वाला और खेती व्यापार करने वाला वैश्य ब्राह्मण है । जो स्वयं खेती करता है वह मनुष्य शूद्र ब्राह्मण कहलाता है । दूसरों से शत्रुता एवं ईर्ष्या रखने वाला चाण्डाल द्विज कहलाता है । भूमिका पालन करने वाला राजा कहलाता है । इससे भिन्न क्षत्री कहलाता है । अन्न आदि धान्य का क्रय विक्रय करने वाला वैश्य कहलाता है । इनसे जो भिन्न हैं उनको बणिक कहते हैं । ब्राह्मण क्षत्री

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तथा वैश्यों की सेवा करने वाला शूद्र कहलाता है। अन्य दस्यु कहलाते हैं।

ब्राह्मण को रात्रि के अन्तिम पहर में उठकर घर से दूर बाहर जंगल में जाकर शौचिक आदि कर्मों से निवृत्त होकर दातौन करनी चाहिए। फिर जल के देवताओं को नमस्कार करके स्नान करना चाहिए। कंठ तक या कमर तक जल में खड़े होकर स्नान करना उत्तम है। परन्तु ऐसा न हो सके तो घुटनों तक जल में खड़े होकर स्नान करना चाहिए। और उस तीर्थ के देवताओं तथा अपने इष्ट देवता को तृप्त करे। फिर धोती पहने और पांच वस्त्र पहने। फिर गीले वस्त्र को जिससे कि स्नान किया था, बिना साबुन लगाये धोये और अपने पित्रों को तृप्त करे। फिर आचमन करके संध्या-उपासना करे। गायत्री मन्त्र जपे और सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए। प्रातःकाल सूर्यानुवाक से और संध्या में अग्नि अनुवाक से प्रोक्षण करना चाहिए। प्रातःकालीन, मध्यान्ह कालीन तथा सांय कालीन संध्या करनी चाहिए।"

श्री सूत जी बोले—हे शौनक ऋषियो! मध्यान्ह में गायत्री मन्त्र पढ़कर सूर्य को एक ही बार अर्घ्य देना चाहिए। अंगुलियों के छिद्र से लम्बवान सूर्य का दर्शन करना चाहिए और स्वयं सूर्य की परिक्रमा करके आचमन करना चाहिए। शास्त्र की आज्ञा है कि ठीक समय पर सन्ध्या करनी चाहिए। नित्य प्रति जितना जाप करना हो उससे १०० गायत्री अधिक जपना चाहिए। गायत्री के जाप का यह प्रमाण है कि दस दिन में एक लाख गायत्री का जाप पूरा करना चाहिए। इस प्रकार देवताओं को तृप्त करने से अर्थ की सिद्धि हो जाती है। ब्राह्मण के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लिए उचित है कि वह नित्य एक हजार गायत्री का जाप करे। उसे सोऽहं भावना से जाप करते हुए जीव को पर ब्रह्म परमेश्वर से जोड़ना चाहिए। हे ऋषियो! इस प्रकार से किया हुआ एक हजार गायत्री का जाप ब्रह्मपद प्रदान करता है और एक सौ गायत्री जप इन्द्रपद प्रदान करता है। इससे न्यूनाधिक जप ब्राह्मण की योनि प्रदान करने वाला है। ध्यान पूर्वक सुनो—धर्म से धन, धन से भोग और भोग से वैराग्य पैदा होता है। किन्तु इसके विपरीत अधर्म से उत्पन्न किये हुए धन से मोक्ष प्राप्त होता है। धर्म दो प्रकार का है—एक देह से, दूसरा धन से। यज्ञादि धर्म होते हैं और देह से तीर्थ स्थान आदि धर्म होते हैं। धन से धर्म और तप से दिव्य रूप की प्राप्ति होती है। किन्तु निष्काम कर्म करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

श्री सूत जी बोले—"हे मुनियो! अब मैं न्याय द्वारा धनार्जन का वर्णन करूंगा। तनिक ध्यान पूर्वक सुनिये—ब्राह्मण शुद्ध दान से, शुद्ध दान ग्रहण करने से, पवित्र यज्ञ करने से और पवित्र यज्ञ करवाने से धन अर्जन करे। क्षत्रिय भुजबल द्वारा, वैश्य व्यापार के द्वारा और क्षूद्र सेवा करके, दास भाव से धन का धर्म के द्वारा धन का संग्रह करे।

धर्म के द्वारा संग्रह किये हुए दान से ही मनुष्य जीवन में सिद्धि को प्राप्त होता है। अपना कल्याण चाहने वाले गृहस्थ को चाहिये कि जौन सी वस्तु, जिस ऋतु में, उत्पन्न हुई हो उसी ऋतु में उसे दान करे। वह दूसरों की भूख व प्यास मिटाने के लिए सदा-सदैव अन्न तथा जल का दान करे। कच्चा अन्न, पका अन्न लेह्य और चोस्य इन चार प्रकार के अन्नों का दान करे। वस्तु का कुछ अंश प्रतिग्रह का दोष करने के लिए अवश्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देवे, अन्यथा उसे रौरव नरक में जाना होगा। अपने धन के तीन भाग करने चाहिये। एक भाग तो धर्म के लिए दान कर देवे। दूसरा भाग धन की वृद्धि के लिए लगा देवे और तीसरा भाग अपनी घर-गृहस्थी चलाने के लिए अपने पास रख लेते हैं। मनुष्य को दूसरों के दोषों का वर्णन नहीं करना चाहिए। वैभव की वृद्धि के लिए दोनों संध्याओं के बीच अग्निहोत्र करना चाहिये। यदि, ऐसा न कर सके तो एक ही आहुति से सूर्य देव तथा अग्नि देव को प्रसन्न करना चाहिए। हे मुनियो! मैं अधिक क्या कहूं, जो मनुष्य हर समय देवयज्ञ के लिए तत्पर है, जो देवताओं के पूजन में लगा हुआ है जो अग्नि तथा गुरू को पूजने वाला है जो ब्राह्मणों को तृप्त करता रहता है वह स्वर्ग का अधिकारी है।

चौदहवां अध्याय

(मुनियों का श्री सूत जी से अग्नियज्ञ, देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, गुरु पूजा तथा ब्रह्मतृप्ति के सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक बतलाने के लिए कहना। श्री सूत जी का उनको यज्ञों की व्याख्या करके भली प्रकार समझाना सप्तवार, उनके देवता तथा उनकी पूजा का फल। सप्तवार व्रत तथा उनके रखने की विधि। श्रद्धा पूर्वक उपासना से ज्ञान की प्राप्ति।)

मुनियों ने कहा—हे सूत जी! आप हमें अग्नि यज्ञ, देव यज्ञ, ब्रह्म यज्ञ, गुरू पूजा तथा ब्रह्म तृप्ति के सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक बतलाइये।" श्री सूत जी बोले—"हे मुनियों! अग्नि यज्ञ कई प्रकार का होता है। एक यज्ञ तो वह है जिसमें एमिधा अग्नि में हवन की जाती है। दूसरा यज्ञ वह है यानी ब्रह्मचर्य पंडित जिसमें ब्रह्मादिक का बाहुल्य होता है। जब तक एक युवक का विवाह नहीं होता तब तक वह ब्रह्मचारी है। जब उसका विवाह हो जाये तब उसे दोनों समय अग्निहोत्र करना चाहिये। हे ब्राह्मणो! किन्तु जो ऐसे मति हैं जिन्होंने कि अपनी आत्मा में ही अग्नि आरोपन की हो और बनवासी हों उनको तो यथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

समय अल्प मात्रा में हितकर भोजन कर लेना ही अग्नि यज्ञ है। विवाह के समय से अग्नि कण्ड अथवा माड़े में सुरक्षित रक्खें, यह अग्नि कभी बुझने न पावे। इस अग्नि को अजस्त्र कहते हैं। दिन में सूर्य को आहूति देना भी अग्नि यज्ञ कहलाता है। इन्द्रादि देवताओं को जो आहूति दी जाती है उसे देव यज्ञ कहते हैं। ब्राह्मण देवताओं के तृप्ति के लिए यज्ञ करे और अपना शेष समय वेदों के स्वाध्याय में लगाये तो यह ब्रह्म यज्ञ कहलाता है। सृष्टि के आरम्भ में, करुणाकर भगवान श्री सदाशिव ने लोकों के उपकरणार्थ सबसे पहले अपना वार आदित्यवार बनाया और उपरान्त छः दिनों की रचना, उनके गुणों के अनुसार की। उन्होंने अपनी माया शक्ति का वार निर्माण किया जो कि धन का देने वाला है। इसके पश्चात उन्होंने आलस्य तथा पाप के निराकरण के लिए और लोक हित की भावना से विष्णु के वार का निर्माण किया।

इसके बाद भगवान श्री सदाशिव ने आयु का बढ़ाने वाला संसार की रक्षा व वृद्धि करने वाला श्री ब्रह्मा जी का वार बनाया। फिर उन्होंने देवराज इन्द्र तथा यमराज के वारों की रचना की, जो सुखदायक भी है और मृत्यु भय को दूर करने वाले हैं। पश्चात भगवान सदा-शिव ने वारों की रचना करके उनके अध्यक्षों की कल्पना की, जो कि जीवों को सुख और दुख के देने वाले हैं। यह सातों ग्रह ज्योति मंडल में विराजमान हैं। इन सातों वारों के देवताओं से उनकी पूजा करने पर जो फल प्राप्त होता है। उसके देने वाले भगवान सदाशिव ही हैं।

देवताओं की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए उनकी पूजा की पद्धति पांच प्रकार की है। जिस देवता को प्रसन्न करना हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उसका मन्त्र जपे, हवन करे, दान देवे और तप करे। शिर रोगों, नेत्र-रोगों तथा कुष्ट रोगों के मिटाने के लिए आदित्य की पूजा करे और ब्राह्मणों को भोजन करवाये। यह आदित्य की पूजा तीन दिन, तीन महीने, तीन वर्ष या इससे भी अधिक समय के लिए पूजा करे। ऐसा करने से यदि प्रबल प्रारब्ध का निर्माण हो जाये तो उपरोक्त रोग तथा जरा अवस्था के रोग शीघ्र नष्ट हो जाते हैं इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है।

पापों की शांति के लिए रविवार के दिन की पूजा उत्तम कही गई है। इस रविवार की पूजा में इष्ट देव को प्रसन्न किया जाता है। सोमवार के दिन लक्ष्मी की पूजा करे। रोगों के मिटाने के लिए मंगलवार का दिन उत्तम है। उस दिन काली माता का पूजन करे। उर्द और मूंग चार सेर तोलकर ब्राह्मण को दान करे, और ब्राह्मण को भोजन करवाये। बुधवार को भगवान श्री विष्णु का पूजन करे तो सदा पुत्र मित्र और कलत्र की पुष्टि होवे। बृपस्पति वार आयु वर्द्धक दिन है। उस दिन ब्राह्मणों को गौ दान में देवे। देवताओं को उपवीत वस्त्र चढ़ाकर उनकी खीर, दूध और घी से पूजा करे। जो मनुष्य भोगों की इच्छा रखता हो वह शुक्रवार को जितेन्द्रिय होकर षटरस भोजन द्वारा देवताओं तथा ब्राह्मणों का पूजन करे। अल्प मृत्यु को दूर करने के लिए शनिवार को रुद्र आदि देवताओं का पूजन करे। और तिल का भोजन करवाये तथा तिल का दान करे। और तिलों का ही हवन करे।

हे मुनियो! देश काल और पात्र का विचार करके जो मनुष्य इन वारों के सम्बन्ध में बतलाये गए उक्त नियमों का पालन करता है उसे देवोपासना द्वारा सब वस्तुओं की प्राप्ति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो जाती है। भगवान सदाशिव ही देश, काल, पात्र, द्रव्य, श्रद्धा और लोक के अनुसार उनके तारतम्भ का ध्यान रखते हुए सबको आरोग्यता सम्पत्ति आदि का फल प्रदान करते हैं।

पन्द्रहवां अध्याय

(देव यज्ञ आदि कर्मों का फल घर में, मन्दिर में, नदी के तट पर, तीर्थ में तथा समुद्र के तट पर क्या होता है ? वेद पाठी ब्राह्मण को दान करने का क्या फल होता है ? मनुष्य का भूखे को अन्न-दान देने का फल क्या होता है ? यदि मनुष्य ईश्वरार्पण बुद्धि से दान करे तो उसका क्या फल होता है ? मुनियों के इस प्रकार के प्रश्नों का सब शास्त्रों के वेता श्री सूत जी का उत्तर।)

मुनियों ने कहा—"हे सूत जी ! अब आप हमें पूजा के योग्य समय व स्थान, देश, काल, पात्र आदि के बारे में विस्तार पूर्वक बतलाने की कृपा कीजिये।" श्री सूत जी बोले—देव यज्ञादि कर्मों के लिए सबसे उत्तम स्थान घर (मकान) होता है। उससे दस गुना अच्छा स्थान गोशाला होती है। उससे दस गुना उत्तम नदी का तट होता है। उससे दस गुना उत्तम पूजा के योग्य स्थान बेल वृक्ष की जड़, तुलसी की जड़, पीपल की जड़, मन्दिर, तीर्थ में नदी का तट, गंगा का तट, सप्त गंगा का तट—गंगा, गोदावरी, कावेरी, ताम्र पूर्णी, सिन्धु, सरयु, रेवा यह सातों नदियां सप्त गंगा कहलाती हैं। इनसे दस गुना फल समुद्र के तट पर पूजन का होता है। किन्तु समुद्र तट से भी दस गुना फल यज्ञादि कर्म यदि पहाड़ की चोटी पर किये जायें तो होता है। हे मुनीश्वरो ! इससे भी दस गुना फल जहां अपना मन रमे।

अब काल का फल सुनो—सतयुग में यज्ञ करना और दान करना पूर्ण फल का प्रदान करने वाला होता था। त्रेतायुग में त्रिपाद फल की प्राप्ति होती थी। द्वापर में आधा और कलि-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

युग में एक भाग फल की प्राप्ति होती है। और जब यह कलियुग आधा निकल जायेगा तो इससे भी कम फल की प्राप्ति होगी। शुद्ध हृदय से किया हुआ यज्ञ या पूजन अवश्यमेव उत्तम फल को प्रदान करता है। शुद्ध दिन में किये हुए यज्ञादि कर्मों के करने से जो फल प्राप्त होता है, उससे दस गुना फल रवि संक्रांति को प्राप्त होता है, और उससे दस गुना फल चन्द्र ग्रहण में यज्ञादि कर्मों के करने से प्राप्त होता है। क्योंकि यह उत्तम काल है, अतः इस समय जप, पूजन तथा यज्ञ आदि करना, समयोचित होने के कारण पुण्य का देने वाला है। ऐसे समय में सत्य पुरुषों का संग करने का फल करोड़ों सूर्यों के समान है। जगत के साक्षी सूर्य का राहु रूपी विष से सहयोग होता है। इसलिए उस विष की शान्ति के लिए सूर्य ग्रहण के समय मनुष्य को स्नान दान तथा जप करना आवश्यक है। चूंकि यह समय पुण्य का देने वाला होता है इस लिए ऐसे समय दान करना चाहिए जो कि विष का निराकरण करने वाला है। अब पात्रों का वर्णन सुनिये—तपोनिष्ठ, ज्ञाननिष्ठ और भोगी यति पूजा के पात्र हैं। सूर्य ग्रहण में जो इन का पूजन करता है, उसके समस्त पाप क्षय हो जाते हैं। जिस ब्राह्मण ने चौबीस लाख गायत्री का जाप किया हो, वह भी पूजा का पात्र है। और उसकी पूजा सम्पूर्ण फल तथा भोग की देने वाली है। और पापों से रक्षा करती है। गायत्री के जाप से शुद्ध हुआ ब्राह्मण है। और वह हर प्रकार से योग्य पात्र है। यदि वेद के ज्ञाता ब्राह्मण को दान दिया जावे, तो स्वर्ग में दिव्य भोग भोगता है। नर-नारी जीव जो कोई भी भूखा हो वह अन्न दान का पात्र है। जिसको आवश्यकता हो और और दान लेने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की इच्छा है उसको दान देना अभिष्ट दायक है। मांगने पर जो दान दिया जावे उसका फल आधा होता है। सेवक को दिये गये दान का फल चौथाई होता है और यदि दीन ब्राह्मण को दान दिया जाये तो दस वर्ष का फल प्राप्त होता है। शिवभक्त को दान देने से कैलाश की प्राप्ति होती है। मनुष्य जिस उद्देश्य को दृष्टि गोचर रखकर दान देता है। वैसे ही फल को उसको प्राप्ति होती है। देवार्पण बुद्धि से दिया हुआ थोड़ा या बहुत दान अनन्त भोगों का प्रदान करता है। मनुष्यों को तप और दान दोनों सर्वदा करने चाहिएं। देवताओं की तृप्ति से सभी भोग पदार्थों की प्राप्ति होती है। यदि, मनुष्य ईश्वरार्पण बुद्धि से दान देवे तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस अध्याय के पढ़ने सुनने तथा सुनाने से मनुष्य को धर्म बुद्धि की प्राप्ति होती है और और ज्ञान की सिद्धि होती है।

सोलहवां अध्याय

(भगवान सदाशिव की मूर्ति के पूजन की विधि। गणेश, सूर्य, विष्णु, पार्वती तथा शिवजी के पूजन की विधि। श्री गणेशजी के पूजन का महत्व। केवल गणेश पूजन से ही मनुष्य के सब पाप दूर होकर अपने अभीष्टों को पूर्ण करके मनुष्य का मोक्ष तक पहुंचना। कार्तिक मास में देवताओं के भजन का फल। कार्तिक मास में रविवार के दिन सूर्य की पूजा का फल।)

मुनियों ने कहा—"हे सूत जी! अब आप हमें उस पार्थिव प्रतिमा के पूजन की विधि बतलाइये कि जिससे मनुष्य की सब इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं?" श्री सूत जी ने कहा—"हे मुनियो! तुमने बहुत ही अच्छा प्रश्न किया है कि मैं तुमको वह विधि बतलाऊं जिससे कि मनुष्य के सभी अभीष्ट सिद्ध होते हैं और सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं? हे ऋषियो! मिट्टी से बनाई हुई प्रतिमा का पूजन करने से अप मृत्यु का हरण होता है, स्त्री,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mukerji MSS (Retd) Collection, Jammu

पुत्र आदि धन धान्य आदि की और वस्त्र आदि की प्राप्ति होती है। मिट्टी से बनी हुई प्रतिमा की पूजा का अधिकार स्त्री तथा पुरुष दोनों को ही है। इसके बनाने की विधि इस प्रकार है—प्रतिमा बनाने के लिए तालाब, कुएं या जल के भीतर की मिट्टी लाकर सुगन्धित द्रव्य के चूर्ण से उसका शोधन करें और अच्छे मण्डप में बैठकर दूध डालकर अपने हाथ से एक सुन्दर प्रतिमा तैयार करें। जब प्रतिमा तैयार हो जावे तो उसे पद्मासन पर बैठाकर सम्मान से उसका पूजन करना चाहिए। गणेश, सूर्य, विष्णु, पार्वती, शिवजी की मूर्ति और शिवलिंग का पूजन ब्राह्मण को सदा-सदैव करना चाहिए। जो ब्राह्मण इस प्रकार षोडशोपचार युक्त पूजन करता है उसके सभी अभीष्ट सिद्ध हो जाते हैं। किसी भी देवता के स्थापित किये लिंग पर तीन सेर नैवेद्य और स्वयं उत्पन्न हुए लिंग पर पांच सेर नैवेद्य चढ़ाना चाहिए। इस विधि से जो कोई हजार नैवेद्य चढ़ाता है यदि वह ब्राह्मण है तो उसे सत्यलोक प्राप्त होता है। बारह उंगल चौड़ा और पच्चीस उंगल लम्बा यह लिंग का प्रमाण है। इसके अतिरिक्त पंद्रह उंगल ऊंचे लोहे अथवा लकड़ी के पात्र का नाम भी शिव ही है। ऐसे लिंगों का पूजन किया जाता है। इनके अभिषेक से आत्म शुद्धि, गन्ध चढ़ाने से पुण्य प्राप्ति, नैवेद्य चढ़ाने से दीर्घ आयु तथा तृप्ति और धन देने से धन की प्राप्ति होती है। दीप से ज्ञान और ताम्बूल से भोग मिलता है। अतएव मनुष्य को पूजन यत्न पूर्वक साधन करना चाहिए। नमस्कार और यज्ञ यह दोनों मनोरथों को पूर्ण करने वाले हैं। इनको पूजन के अन्त में अवश्यमेव करना चाहिए। मानसिक पूजा में भी इन दोनों को व्यवहार में लेना चाहिए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

क्योंकि इनके करने से भोग तथा मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है। जो जिस देवता का पूजन करता है वह विश्वस्त रूप से उस देवता के लोक को प्राप्त होता है। इसके साथ उसको उन लोकों के भोगों की प्राप्ति होती है। हे मुनियो! ध्यान पूर्वक सुनो। अब मैं श्री गणेश जी के पूजन की विशेष रीतियों का वर्णन करूंगा। श्री गणेश जी का पूजन करने से इस संसार में उत्तम प्रिय वस्तुओं की प्राप्ति होती है। शुक्रवार को श्रावण भाद्रपद के महीनों की शुक्ल पक्ष की चौथ को तथा पौष मास में शतभिषा नक्षत्र के आने पर श्री गणेश जी का पूजन विधि पूर्वक करना चाहिए।

देवता और अग्नि में श्रद्धा रखकर उनकी पूजा, पुत्र प्राप्ति, मनोरथ सिद्धि और पाप की निवृति कराती है। निश्चित वारों में की हुई भगवान सदाशिव का पूजन आत्म-शुद्धि प्रदान करता है। वार, तिथि, नक्षत्रों और योगों का आधार है। अभीष्ट कामना का पूरा करने वाला है। भगवान सदाशिव की पूजा सब मनोरथों को सिद्ध करने वाली है। जो आद्री नक्षत्र में और महा आद्री में भगवान सदाशिव की पूजा करता है उसकी आयु बढ़ती है मृत्यु का हरण होता है और भी नक्षत्रों, महीनों और वारों भगवान सदाशिव का पूजन अत्यधिक महत्व रखता है। भगवान श्री सदाशिव की भक्ति भोग और मोक्ष देने वाली है। मासों के हिसाब में, कार्तिक मास में देवताओं का पूजन व भजन विशेष रूप से फलदायक होता है। बुद्धिमान मनुष्यों को चाहिये कि वह इस मास में सभी देवताओं का भजन और पूजन करें। यम नियम से दान, तप, हवन और जप करें। क्यों कि कार्तिक मास में किया गया दान, तप, हवन और जाप सभी व्याधियों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को दूर करने वाला है। कठिन वस्तुओं के दान से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

कार्तिक मास, संक्रांति, कतीपात आदि शुभ पर्व और जन्म का दिन इनमें भी जन्म नैवेद्य का विधान है। यह चराचर संसार बिन्दु नाद स्वरूप है। बिन्दु शक्ति है और नाद भगवान सदाशिव हैं। उसी से दोनों को शिव लिंग कहा जाता है। अतः जन्म की निवृति के लिए भगवान सदाशिव का पूजन करना चाहिए। देवी रूप माता बिन्दु और शिव रूप पिता नाद हैं। माता-पिता की सेवा करने से परमानन्द की प्राप्ति होती है। माता-पिता की सेवा करने वाले पुत्र पर माता-पिता की विशेष कृपा रहती है। हे मुनियो! भगवान सदाशिव अपने सेवकों को अपनी कृपा से, अन्तिदिक ऐश्वर्य प्रदान करते हैं। इस लिए मनुष्य को माता-पिता की सेवा के समान ही शिव-लिंग की सेवा करनी चाहिए। भर्ग प्रकृति का रूप है और भर्गा पुरुष का रूप है। पुरुष प्रकृति का मेल जन्म कहलाता है। अव्यक्त प्रकृति से महत तत्व आदि का प्रकट होना, प्रकृति का दूसरा जन्म कहलाता है। इसलिए मनुष्य को जन्म-मरण से छुटकारा पाने के लिए लिंग का अवश्यमेव पूजन करना चाहिए। भग प्रकृति को कहते हैं, क्योंकि भग का अर्थ भोग समृद्धि है और भगवान सदा शिव हैं। इस प्रकार भगवान सदाशिव भोग के दाता कहे गए हैं। अन्य और कोई भोगों का देने वाला नहीं है। भग के स्वामी भगवान ही भर्ग हैं और भग सहित लिंग और लिंग सहित भग ही यहां और वहां नित्य भोग के लिए हैं। इसलिए मनुष्य को यथा विधि शिव लिंग का पूजन करना चाहिए रविवार के दिन भगवान सदा शिव की, की हुई पूजा जन्म आदि से निवृत्त कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देती है। आदित्यवार को ओंकार मन्त्र के द्वारा महा लिंग की पूजा करनी चाहिए। इस प्रकार छः लिंगों की अकार, उकार, मकार, बिन्दुग, नाद और ध्वनि के रूप में नित्य पूजन करने से मनुष्य मोक्ष को प्राप्त होता है। रुद्राक्ष धारण करने से, भस्म लगाने से, मन्त्र जपने से और पूजा करने से मनुष्य भगवान सदाशिव का पूर्ण भक्त बन जाता है। इस अध्याय को पढ़ने और सुनने से मनुष्य की उत्तरोत्तर शिव भक्ति सुदृढ़ होती है।

सत्रहवां अध्याय

(प्रणव एवं षडलिंग का माहात्म्य। भगवान सदाशिव की भक्ति और पूजा का विधान। प्रणव के दो प्रकार। प्रणव का जप करने वाला योगी हो जाता है। प्रणव शिव शक्ति की एकता और तृत्व स्वरूप तथा समस्त पापों का नाशक है। शिवलिंग की पूजा करने वाले भक्त शिवरूप होकर शिवलोक को प्राप्त हो जाते हैं।)

मुनियो ने कहा—"हे सूत जी! अब आप प्रणव लिंग एवं षडलिंग के माहात्म्य का वर्णन कीजिए और शिव भक्ति के विधान का वर्णन कीजिए।" श्री सूत जी बोले—हे मुनियो! आपने अत्युत्तम प्रश्न किया है। किन्तु इसका उत्तर क्या है यह तो भगवान सदा शिव ही जानते हैं दूसरा कोई नहीं जानता, तो भी मैं शंकर भगवान की कृपा से इस विषय का वर्णन करूंगा। शंकर भगवान हम सब पर कृपा बनाये रक्खें। अब आप प्रणव एवं षडलिंग का माहात्म्य सुनिये तथा शंकर भगवान की भक्ति का विधान सुनिये। प्रकृति में से उत्पन्न हुआ "प्र" संसार रूपी समुद्र की नौका है। इसलिए पंडित लोग इसे प्रणव कहते हैं। इसके अतिरिक्त इसका यह भी अर्थ है कि तुम में प्रपंच नहीं है। इस प्रणव का एक अर्थ और भी है, वह यह कि जो अधिक रूप से हमें मोक्ष की ओर ले जाता है। यह प्रणव माया से रहित होने के कारण सदा नवीन है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इसी कारण पंडित लोग इसे "प्रणव" कहते हैं। प्रणव मन्त्र भेद से सूक्ष्म और स्थूल दो प्रकार का है। जिसमें पांच अक्षर अव्यक्त हैं उसे सूक्ष्म और जिसमें पांच अक्षर व्यक्त हैं, उसे स्थूल कहते हैं। जप करते समय मन्त्र को सदा ध्यान में रखना चाहिए। इस मन्त्र को एकान्त में जपने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र का बिना अर्थ के जपने वाला मनुष्य योग को प्राप्त कर लेता है। छत्तीस करोड़ मन्त्र का जप करने वाला योगी हो जाता है। यह अकार, उकार, मकार, बिन्दु और नाद सहित तथा शब्द काल कला से युक्त है अर्थात अ, ऊ म इन दीर्घ तीन अक्षरों तथा मात्राओं सहित प्रणव होता है जो कि योगियों के हृदयों में निवास करता है। अपने सब प्रकार के पापों का नाश चाहने वाले सज्जन को चाहिए कि वह इस ह्रस्व प्रणव ओं का दीर्घ जप करें। वेद आदि में तथा दोनों समय की संध्या वन्दन में सर्व प्रथम ओं का उच्चारण करना चाहिए। नौ-नौ करोड़ जप करने से मनुष्य शुद्ध होकर गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द विषयों पर विजय पा लेता है। इसके अतिरिक्त यदि और नौ करोड़ जप किया जावे तो मनुष्य अहंकार को जीत लेता है। नित्य एक हजार प्रणव के जप से मनुष्य शुद्ध योग को प्राप्त होता है। फिर जो मनुष्य जितेन्द्रिय होकर पांच करोड़ प्रणव का जप करता है। वह पंचावर्ण से बाहर शिव लोक को प्राप्त होता है। जहाँ पर कि उसे राज मण्डप, उत्तम नदी के तट और तप रूप वृष्भ के दर्शन होते हैं। जहां नन्दी का स्थान है, उससे आगे के शिव वैभव को कोई नहीं जानता। वहां नन्दिकेश्वर बाहर खड़े होकर उपासना करते हैं। महात्माओं का कहना है कि बिना भगवान सदा शिव की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कृपा के शिव-लोक की जानकारी नहीं हो सकती। जो मनुष्य ब्राह्मण तथा गुरु से प्राप्त करके भगवान सदाशिव के पंचाक्षरी मन्त्र का पांच लाख जप करता है उसकी आयु बढ़ती है। यदि स्त्री पंचाक्षरी का पांच लाख जप करे तो उसका स्त्रीत्व छूट जाता है। क्षत्रिय क्षत्रित्व से छूटकर ब्राह्मण हो जाता है। वैश्य वैश्यत्व से छूटकर क्षत्रिय हो जाता है और वह ब्राह्मण कहलाता है। यदि कोई शूद्र पंचाक्षरी का २५ हजार जप करे तो वह ब्राह्मण के समान शुद्ध हो जाता है। क्योंकि यह मन्त्र शिव स्वरूप है। इसलिए जो इसको धारण कर लेता है वह शिव स्वरूप हो जाता है। शिव भक्ति की यही महानता है। जो मनुष्य जितना ही अधिक पंचाक्षर मन्त्र को जपता है उसको अपनी देह में उतनी ही सन्निकटता प्राप्त होती है। इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है शिव भक्त स्त्रियां देवी-लिंग-रूप हो जाती हैं। वह जितना अधिक मन्त्र जपती हैं उनके शरीर में भगवती को उतनी ही समीपता प्राप्त होती जाती है। शिवलिंग की पूजा शिव-शक्ति की पूजा है। स्त्री, पुरुष, ब्राह्मण तथा अन्य जाति के मनुष्य और रोगी चाहे कोई भी क्यों न हों उनको चाहिए कि "शिवाय" के पूर्व नमः लगाकर अन्त में "शिवाय" लगाकर मन्त्र का जाप करें। पांच लाख मन्त्र के पुरश्चरण के पश्चात शिव को प्रसन्न करने के लिए उपासक अभिषेक और नैवेद्य निवेदन करें। और शिव भक्तों की पूजा करनी चाहिए। भगवान शिव भक्त के अर्चण से अधिक प्रसन्न होते हैं। भगवान सदाशिव और उसके भक्त में कोई भेद नहीं। क्रिया निष्ट ब्राह्मण से तपस्वी उत्तम होता है। तपस्वी की अपेक्षा जापक उत्तम होता है। जापक की अपेक्षा ज्ञानी उत्तम होता है। ज्ञानी की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपेक्षा ध्यानी उत्तम होता है और ध्यानी की अपेक्षा समाधिस्थ उत्तम होता है। यह अध्याय वेद सम्मत है जो इस अध्याय को पढ़ता-सुनता तथा सुनाता है। उस पर भगवान सदाशिव की विशेष कृपा होती है और उसको समस्त सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है।

अठारहवां अध्याय

(बन्धन तथा मोक्ष क्या है ? बन्धन से मुक्त होने के उपाय। भगवान सदाशिव की षोडशोपचार वाली पूजा, प्रदक्षिणा और नमस्कार का फल।)

मुनियो ने कहा—"हे महर्षि ! बन्धन और मोक्ष क्या है ? बन्धन से मुक्त होने के उपाय भी बताइये।" श्री सूतजी बोले—"हे द्विज श्रेष्ठो ! मैं बन्धन और मोक्ष क्या है, बताता हूं। साथ ही मोक्ष के उपाय भी बताता हूं। ध्यान पूर्वक सुनिये। प्रकृति के आठ बन्धनों से बंधी हुई आत्मा जीवात्मा कहलाती है। इन आठ बन्धनों से छूटकर ही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करता है। सबसे पहले प्रकृति, प्रकृति से बुद्धि, बुद्धि से त्रिगुणात्मक अहंकार और अहंकार पंचतन मात्राएं—शब्द मात्रा, स्पर्श तन्मात्रा, रूप तन्मात्रा, रस तन्मात्रा और गन्ध तन्मात्रा उत्पन्न होती हैं। आठों प्रकृतियों से यह देह है और इस देह से जो क्रिया होती है उसी का नाम कर्म है। देह से कर्म उत्पन्न होता है फिर कर्मों से देह उत्पन्न होती है। इस प्रकार बार-बार जन्म और कर्म होते रहते हैं। शरीर तीन प्रकार के होते हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल शरीर व्यापार करता है। स्थूल शरीर इन्द्रियों का भोग करता है और कारण शरीर आत्मा के भोग के निमित्त है। कर्मों के द्वारा यह पाप पुण्य भोगता है और कर्मों के द्वारा ही उसको सुख दुःख की प्राप्ति होती है। जो कर्म रूपी डोर के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

साथ बंधा हुआ इन तीनों शरीर और कर्मों के चक्कर में घूमता रहता है। आठ प्रकृतियां ही चक्कर हैं। भगवान सदाशिव उनसे परे हैं। वह चक्रकर्ता हैं। अतः मनुष्य को भगवान सदाशिव की भक्ति करके, अपने चक्र के समान घूमने को दूर करना चाहिये। भगवान सदाशिव जोकि चक्रकर्ता हैं प्रकृति से परे हैं। वह आठों प्रकृतियों को वश में किए स्थित हैं। वह सर्वज्ञ, निस्पष्ट तथा परिपूर्ण हैं। जो मनुष्य मन, वचन, शरीर और धन से भगवान सदाशिव का पूजन करते हैं, भगवान उन पर अवश्यमेव प्रसन्न होते हैं। श्री सूत जी ने कहा—हे मुनियो! वह लिंग ही है जिससे कि मनुष्य की सब कामनायें पूर्ण होती हैं। वह स्थूल भी है और सूक्ष्म भी। इसी लिंग को पंचाक्षर कहते हैं। इसकी पूजा से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त पुरुषार्थ और प्रकृति के बनाये हुए भी बहुत से लिंग हैं जिन्हें कि भगवान सदाशिव ही जानते हैं दूसरा और कोई नहीं जानता। किन्तु पृथ्वी के विकास से उत्पन्न हुए चार लिंगों के सम्बन्ध में जानता हूं, सो मैं तुमको बताता हूं—

(१) स्वयं भू लिंग (२) विन्दु लिंग (३) प्रतिष्ठित लिंग (४) चर लिंग और (५) गुरु लिंग।

वह लिंग जो पृथ्वी को फोड़कर स्वयमेव निकला हो, उसे स्वयं भू लिंग कहते हैं। इस लिंग के पूजन से मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि होती। ठीक इसी प्रकार सोने चांदी तथा पृथ्वी आदि की वेदिका में या लिंग जो प्रणव मन्त्र से पत्र पर लिखकर उसकी प्रतिष्ठा आवाहन करें तो वह बिन्दु नादमय लिंग, तो वह स्थावर व जंगम रूप सदा शिव दर्शन के योग्य है। यों तो जैसा-जैसा मनुष्य का विश्वास हो, भगवान वैसा ही फल देते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मनुष्य शिव भक्त विधिपूर्वक लिंग को स्थापन करे और नित्य भोजन को निवेदन करे। परन्तु ऐसा करना केवल गृहस्थ के लिए ही लिखा गया है। निवृत्त हुए जनों को केवल सूक्ष्म लिंग का ही विधान है। उनके लिए विभूति से अर्चन कर विभूति का एक अलग ही महत्व है। भगवान सदाशिव का भक्त शिव स्वरूप ही हो जाता है। इस लिए स्त्री हो अथवा पुरुष उसको भस्म धारण करना चाहिए। दिन या रात में, किसी समय भी, सजल भस्म को, जो मनुष्य, त्रिपुण्ड सहित धारण करता है और भगवान सदाशिव की पूजा करता है उसे अवश्यमेव उसकी पूजा का पूरा-पूरा फल प्राप्त होता है। शिव मन्त्र द्वारा भस्म धारण करके मनुष्य शिवाश्रमी हो जाता है। वह मनुष्य जो शंकर भगवान का व्रत करते हैं उनको सूतक व पातक नहीं लगता है। भस्म लगाना गुरु से सीखना चाहिये। तन-मन-धन से गुरु की सेवा करनी चाहिए। शिष्य के अज्ञान का मिटाना गुरु का काम है। कोई भी कार्य आरम्भ करने से पूर्व श्री गणेश जी का पूजन करना चाहिये। उसके पश्चात अन्य देवताओं की पूजा करनी चाहिये। गुरु के आदेशानुसार भगवान श्री विष्णु की पूजा करनी चाहिए। दान भी करना चाहिए। सोने की मूर्ति, तिल, घृत का दान व्याधियों से मुक्त होने के लिए करना चाहिए ब्राह्मण तथा गौ को भोजन करवाना चाहिये। भगवान श्री सदाशिव का महाभिषेक करके और उन्हें नैवेद्य समर्पित ब्राह्मणों को भोजन करवाना चाहिये। भूतादिकों की शान्ति के लिए श्री भैरव जी की पूजा करनी चाहिए और सबके अन्त में श्री गणेश जी का महाभिषेक करना चाहिये और उनको नैवैद्य समर्पण करना चाहिये। शान्ति यज्ञ से अन्यान्य अनेक दोषों की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शान्ति हो जाती है। दक्षिणा के अभाव में, कुछ थोड़ा-बहुत दान करना चाहिये। दस हजार, लाख, करोड़ नमस्कार करना चाहिये। पश्चात भगवान सदाशिव की स्तुति, नमस्कार तथा अर्चन करना चाहिए। हे मुनियो! जो भगवान सदाशिव की इस प्रकार षोडशोपचार वाली पूजा, प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करते हैं, उनको महान फल प्राप्त होता है। प्रदक्षिणा से मनुष्य के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। शिव भक्त को चाहिए कि वह शिव महिमा को प्रकाशित करें। शिव-मन्त्र का रहस्य केवल भगवान सदाशिव ही जानते हैं दूसरा कोई नहीं जानता। शिव भक्त को चाहिये कि सदा-सदैव भगवान सदाशिव के आश्रय में रहे। हे मुनियो! इस अध्याय के पढ़ने वालों तथा सुनने वालों का अज्ञान भगवान सदाशिव की कृपा से नष्ट हो जाता है।

उन्नीसवां अध्याय

(मुनियों का श्री सूत जी से पार्थिव लिंग की महिमा सुनाने के लिए कहना। श्री सूत जी का उनको बताना कि पार्थिव लिंग की पूजा से बढ़कर कोई और दूसरी पूजा नहीं है। पार्थिव लिंग का पूजन, धन तथा आयु का बढ़ाने वाला तथा कार्य को सिद्ध करने वाला है।)

मुनियों ने कहा—"हे सूत जी! आप धन्य हैं। आप धन्यवाद के योग्य हैं। क्योंकि आपने हमें शिव-महिमा विस्तार पूर्वक सुनाई है। जिसे सुनकर समस्त ऋषि मण्डल गद्-गद् हो उठा है। क्यों न हो आप भगवान सदाशिव के महान भक्त हैं। अब आपसे निवेदन है कि हमें पार्थिव महेश्वर की महिमा सुनाइये, जो कि आपने भगवान श्री वेद व्यास जी से सुनी थी।" श्री सूत जी बोले—"हे मुनियो! तुम सब ध्यान पूर्वक सुनो। मैं अब तुम सबके सामने पार्थिव महेश्वर की महिमा का वर्णन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर रहा हूं। पार्थिव पूजन मुक्ति का प्रदान करने वाला है। भगवान शिव के समस्त लिंगों में से पार्थिव लिंग उत्तम है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि सब मन्त्रों में प्रणव मन्त्र उत्तम है। या जिस प्रकार समस्त वर्णों में ब्राह्मण उत्तम है या जिस प्रकार सब पुरियों में काशी नगरी उत्तम है या जिस प्रकार समस्त व्रतों में शिवरात्रि का व्रत उत्तम है या जिस प्रकार समस्त देवियों में भगवान सदा शिव की शिव-भक्ति प्रधानतम है। पार्थिव लिंग के पूजन से बहुत से लोग सिद्ध हो गए हैं। श्री ब्रह्मा भगवान, श्री विष्णु और कितने ही ऋषि-महर्षि केवल पार्थिव लिंग के पूजन से ही अपने सब मनोरथ सिद्ध कर चुके हैं। देवता, असुर, मनुष्य, गन्धर्व, सर्प, राक्षस तथा और भी बहुत सों ने केवल पार्थिव लिंग के पूजन से परम सिद्धि को प्राप्त किया है। सतयुग में रत्नों का, त्रेता में स्वर्ण का, द्वापर में पारे का और कलियुग में पार्थिव लिंग श्रेष्ठ हैं। पार्थिव मूर्ति के अनन्य पूजन से तप से अधिक फल की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य पार्थिव लिंग की अवहेलना करके अन्य लिंग की पूजा करते हैं, उनकी पूजा, स्नान, दान आदि सब व्यर्थ हैं। पार्थिव लिंग की आराधना, पवित्र, पूर्ण रूप, धन तथा आयु को बढ़ाने वाली है। कार्य को सिद्ध करने वाली है। जो पार्थिव लिंग की शुभ वेदी का पूजन करता है वही इस लोक में धनवान तथा श्रीमान होकर अन्त में रुद्र-लोक को प्राप्त होता है। जो लोग पार्थिव लिंग बनाकर नित्य उसका पूजन करते हैं। वह शिवलोक के भागी होते हैं और वर्षों तक वहां रहकर बाद में भरत खण्ड में आकर राजा होते हैं। निष्काम भाव से जो मनुष्य नित्य पार्थिव लिंग का पूजन करता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

है उसको आयुज्य मुक्ति की प्राप्ति होती है। किन्तु जो ब्राह्मण होकर पार्थिव लिंग का पूजन नहीं करता, वह अत्यन्त दारुण शूल नामक घोर नरक को प्राप्त होता है। लिंग कई प्रकार के हैं—रत्न, स्वर्ण, स्फटिक तथा पार्थिव। पुष्पराग से उत्पन्न चाहे कोई लिंग हो उसे भली प्रकार बनाकर उसका पूजन करना चाहिए।

बीसवां अध्याय

(पार्थिव पूजन की दो विधियाँ, पार्थिव लिंग निर्माण करने की विधि। पार्थिव लिंग की महिमा। पार्थिव लिंग के पूजन से आयु, आरोग्य, यश, स्वर्ग तथा पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति।)

श्री सूत जी बोले—अब मैं वैदिक भक्ति पार्थिव पूजन का विधान वर्णन करूंगा, जो कि उन्हें मुक्ति का देने वाला है। वैदिक भक्त को चाहिए कि वह पहिले स्नान करे, पश्चात यथा विधि सन्ध्योपासना करे और ब्रह्म यज्ञ के पश्चात तर्पण करे। वह पहिले ही शिव स्मरण पूर्वक भस्म तथा रुद्राक्ष धारण कर लेवे। फिर भक्ति पूर्वक बैठकर वेदोक्त विधि से पार्थिव लिंग का पूजन करे। यह पूजन किसी नदी के तट पर, जंगल में, पर्वत पर, शिवालय में या किसी अन्य पवित्र स्थान पर करना चाहिए। पुनीत भूमि में उत्पन्न हुई मिट्टी को प्रयत्न से लाकर बड़ी सावधानी के साथ लिंग पूजा करनी चाहिए। मिट्टी को शुद्ध व पवित्र जल द्वारा पवित्र करके धीरे-धीरे उसके पिण्ड बनाने चाहिएं। फिर वेद मार्ग द्वारा सुन्दर पार्थिव लिंग की रचना करे। "नमः शिवाय" द्वारा पूजन की सामग्री को शुद्ध करना चाहिए। फिर "भूरसि" इस मन्त्र से क्षेत्र को शुद्ध करे। "आयोस्मान" से जल का संस्कार करे। "नमस्तेरुद्र" इस मन्त्र से स्फटिकबन्ध करे। "नमः शंभवाय" इस मन्त्र से क्षेत्र की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu.

शुद्धि करे और नमः पूर्वक पंचा-मृतक प्रोक्षण करे। "नमोनील-ग्रीवाय" इस मन्त्र से लिंग की प्रतिष्ठा करे तथा "एत्तरुद्राय" मन्त्र से भक्ति पूर्वक रमणीय आसन देवे। फिर "नमोमहान्तम" इस मन्त्र से आवाहन करे "यातेरुद्र" इस मन्त्र से उपदेश करे (स्थिर करे) "यामिषुम" इस मन्त्र से भगवान सदाशिव का न्यास करे। "अयोचदिति" इस मन्त्र से प्रेम पूर्वक अधिवास करे तथा "असौजी" इस मन्त्र से देवता न्यास और "असौ-योऽव स्मर्पति" इससे उप समर्पण करे। फिर "नमोऽस्तुनील-ग्रीवाय" इस मन्त्र से मनु द्वारा पाद्यस्नान और रुद्रगायत्री से अर्घ्य देकर त्रियम्बक मन्त्र से आचमन करावे। दधि स्नान और घृतयाव इस मन्त्र से दूध से स्नान करावे। इस प्रकार वेदोक्त विधि से जो शंकर भक्त शंकर का पूजन करता है उसको भगवान सदाशिव उत्तम फल प्रदान करते हैं। श्री सूत जी ने कहा—हे ऋषियो! अब मैं विधि के साथ-साथ पूजन का वर्णन करूंगा। ध्यान पूर्वक सुनिये—सर्व प्रथम "नमः शिवाय" इस मन्त्र को पढ़कर पूजन की सब वस्तुओं का प्रोक्षण (जलक्षेप) करे तथा वैदिक मन्त्रों द्वारा पार्थिव लिंग का विधि पूर्वक पूजन करे। फिर भगवान सदाशिव का ध्यान करे और पंचाक्षी मन्त्र का जप करे। रुद्राक्ष का पाठ करे। मन्त्रों द्वारा भगवान सदाशिव से प्रार्थना करे—हे कृपानाथ! हे भूतनाथ! मेरा जीवन आपके गुणगान में है। मैंने अपना चित्त आपकी सेवा में अर्पण कर रक्खा है। ऐसा जानकर हे गोरेश! आप मुझ पर प्रसन्न होइये। हे शंकर! अज्ञान से अथवा ज्ञान से आप जो मेरे लिए कर सकते हैं कीजिए। प्रभो! आपको वेद, पुराण, सिद्धान्त तथा ऋषिगण भी नहीं जान सके, तो भला

CC-O. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मैं आपको कैसे जान सकता हूं। हे महादेव! मैं सर्व भाव से आपका हूं। आप मेरी रक्षा करें। आप मुझ पर प्रसन्न होइये। इस प्रकार प्रार्थना करके भगवान श्री सदाशिव पर पुष्प तथा अक्षत चढ़ावे। फिर साष्टांग दंडवत करे। विद्वान पुरुष यथोक्त विधि से प्रदक्षिणा करे। फिर श्रद्धा पूर्वक स्तुति द्वरा देवेश का स्तवन करे। कंठ से "बम" "बम" शब्द की ध्वनि करके प्रणाम करे और आदर के साथ भगवान शंकर का विसर्जन करे। हे मुनियो! इस प्रकार सविधि पार्थिव पूजन से शिव भक्त को मुक्ति और भक्ति की प्राप्ति होती है। और वह अपनी सब कामनाओं को प्राप्त करता है। इस अध्याय के पढ़ने सुनने से मनुष्य को आयु आरोग्य, यश, स्वर्ग तथा पुत्र-पौत्रादि का सुख प्राप्त होता है।

इक्कीसवां अध्याय

(विद्यार्थी, धन के इच्छुक, पुत्र के इच्छुक, मोक्ष के इच्छुक, भूमि के इच्छुक, दया के इच्छुक, तीर्थ की कामना वाले को पार्थिव लिंग की पूजा किस प्रकार करनी चाहिए। जगतमयी आठ मूर्तियां और उनका पूजन।)

ऋषियों ने कहा—"हे सूत जी! हम सब आपको प्रणाम करते हैं जो आपने बड़े अच्छे ढंग से हमें पार्थिव लिंग का विधान वर्णन किया है। अब हम आपसे, कामना भेद से पार्थिव लिंग की संख्यात्मक पूजा का वर्णन कीजिये।"

सूत जी ने कहा—"मैं आपकी इच्छानुसार आपके सामने कामना के अनुसार पार्थिव लिंग की संख्या का क्रम से वर्णन करूंगा। ध्यानपूर्वक सुनिये। संख्या निश्चय ही फल की देने वाली है। लिंग के आकार के समान ही पृथक-पृथक आवाहन प्रतिष्ठा तथा पूजा को समझना चाहिये। विद्यार्थियों को चाहिये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कि वह एक हजार पार्थिव लिंगों का निर्माण करके उनका पूजन करें। ऐसा करने से उनका मनोरथ अवश्यमेव पूर्ण हो जाता है। धन के इच्छुक को पांच सौ पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिए। पुत्र की कामना रखने वाले को १५ सौ लिंगों का पूजन करना चाहिए। वस्त्र के इच्छुक को पाँच सौ पार्थिव लिंग निर्माण करके उनका पूजन करना चाहिए। मोक्ष के इच्छुक को एक करोड़ पार्थिव लिंग निर्माण करके उनका पूजन करना चाहिए। भूमि के इच्छुक को एक हजार पार्थिव लिंग बनाकर उनका पूजन करना चाहिए। दया के इच्छुक तीन हजार की संख्या में शिव लिंग निर्माण करके उनका पूजन करना चाहिये। तीर्थ यात्रा के इच्छुक को तीन हजार पार्थिव लिंग बनाकर उनका पूजन करना चाहिए। मित्रों के इच्छुक व्यक्ति को तीन हजार पार्थिव लिंग का पूजन करना चाहिये। किसी को वश में करने के इच्छुक को आठ सौ पार्थिव लिंग बनाकर उनका पूजन करना चाहिये। पारण के इच्छुक को सात सौ पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिये। मोहन के इच्छुक को आठ सौ लिंगों का पूजन करना चाहिये। उच्चाटन के इच्छुक को एक हजार पार्थिक लिंगों का पूजन करना चाहिये। स्तम्भन के इच्छुक को एक हजार पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिए। द्वेष की भावना के इच्छुक को पांच सौ पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिये। कारागार से मुक्ति के इच्छुक को २५ सौ लिंगों का पूजन करना चाहिये। राजा से भयभीतों को पांच सौ पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिये। चोर आदि से भयभीत रहने वालों को दो सौ पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिये। डाकिनी आदि राक्षसियों से भयभीत रहने वालों को पांच सौ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिये। दरिद्रता से उन्मुक्त होने वाले को पांच हजार पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिये। अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति चाहने वाले को दस हजार पार्थिव लिंगों का पूजन करना चाहिये। इसी प्रकार जिसको जैसी कामना हो उसके अनुसार वेदोक्त विधि से उतनी-उतनी संख्या में पार्थिव लिंग की पूजा करे। पार्थिव लिंग की पूजा करोड़ों यज्ञों का फल देने वाली है तथा कामार्थी व्यक्ति को भुक्ति और मुक्ति देने वाली है। परन्तु जो लिंग का पूजन नहीं करता उसे आप महान दुर्वृत्त तथा दुरात्मा जानिये। उसको एक दिन अत्यधिक हानि उठानी पड़ती है। वह इसलिये कि एक ओर सब दान, व्रत और तीर्थ हैं और दूसरी ओर केवल लिंग का पूजन है। कलियुग तथा और लोकों में केवल लिंग पूजा को ही श्रेष्ठ कहा गया है। उसके समान दूसरी और कोई पूजा नहीं है। ऐसा ही शास्त्र का कथन है। भुक्ति-मुक्तिदाता लिंग मनुष्य को अनेक आपत्तियों से बचाता है। लिंग की नित्य पूजा करने वाले शिव भक्त भगवान सदाशिव को सायुज्य मुक्ति के प्राप्त होते हैं। पार्थिव लिंग की पूजा नित्य ही ऋषियों महर्षियों तक को करनी चाहिये। चार अंगुल ऊंचे वेदी से युक्त लिंग को सर्वोत्तम बतलाया गया है। उससे आधे को मध्यम और उससे आधे को अधम कहा गया है। बुद्धिमान तथा विद्वान को चाहिए कि सब कर्म जालों को त्याग कर केवल एक लिंग का पूजन करना चाहिये। अज्ञान रूपी अन्धकार से अन्धे विषयों से फंसे हुए मनुष्यों के लिए संसार से तरने के लिए लिंग पूजा के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं है।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा वर्ण संकर सबको अपने-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपने मन्त्रों द्वारा भगवान सदाशिव की भक्ति करनी चाहिए। यही नहीं, स्त्रियों तथा अन्य जाति के मनुष्यों को भी शिव पूजा का अधिकार है। ब्राह्मण, क्षत्रियों, तथा वैश्यों को वेद विधि से शिव पूजा का अधिकार है, अन्य को नहीं। महर्षि दधीचि और महर्षि गौतम के शाप से दग्ध चित्त वाले द्विजों के अन्दर वैदिक कर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती, जोकि श्रौत और स्कार्त विधि का अनादर करके अन्य कर्मों में लग जाते हैं। उन्हें संकल्प का भी फल नहीं प्राप्त होता। उनको चाहिए कि वह उसी स्थान पर त्रिजगन्मयी अष्टमूर्ति का पूजन करे। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा और यजमान यह आठ मूर्तियां पूज्य हैं। शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, ईश्वर, महादेव, पशुपति इनकी मूर्ति द्वारा पूजा करनी चाहिए। देवकर्म रात्रि में सदा उत्तर मुख होकर करें। इसी प्रकार पवित्र होकर उत्तर की ओर मुख करके भगवान सदाशिव का पूजन करे। भगवान सदाशिव के आगे पर्व मैंने बैठे इसी तरह भगवान सदाशिव तथा शक्ति के साथ उत्तर को भी न बैठे। विद्वान कभी भी भस्म रुद्राक्ष की माला और बेलपत्र के बिना भगवान सदाशिव का पूजन न करे। यदि सदाशिव के पूजन के लिए भस्म प्राप्त न हो सके तो मिट्टी से ही माथे पर त्रिपुण्ड लगा लेना चाहिए।

बाईसवां अध्याय

(श्री सूत जी का ऋषियों को बतलाना कि शिव नैवेद्य से अरबों यज्ञों से बढ़कर शिवसायुज्य की प्राप्ति होती है। विल्व-पत्र का माहात्म्य। प्रवृत्ति तथा निवृत्ति मार्ग। प्रवृत्ति तथा निवृत्ति मार्गीय के लिए भगवान सदाशिव के पूजन की विधि।)

मुनियों ने कहा—हे सूत जी! हमने सुना है कि शिव नैवेद्य ग्रहण के योग्य नहीं होता, यह बात कहां तक सत्य है इसका निर्णय कीजिए। श्री सूत जी बोले—हे मुनियो! जो कुछ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आपने पूछा है वह सब मैं विस्तार पूर्वक आपके सन्मुख कहूंगा, आप तनिक ध्यान पूर्वक सुनिये। क्योंकि आप सब भगवान सदाशिव के भक्त हैं इसलिये आप धन्य हैं। भगवान सदाशिव का भक्त पवित्र, शुद्ध व्रत का पालक और निश्चय का दृढ़ होना चाहिए और उसको भगवान सदाशिव का नैवेद्य भक्षण करने में आग्राह्य भावना को नहीं करना चाहिए। हे मुनियो! भगवान सदाशिव का नैवेद्य केवल देखकर जन्म जन्मान्तर के पाप दूर हो जाते हैं। उसके भक्षण करने पर तो अनेकों पुण्यों की प्राप्ति होती है। शिवजी का नैवेद्य भक्षण करने से हजारों, लाखों, करोड़ों तथा अरबों यज्ञों से बढ़कर शिवसायुज्य प्राप्त होता है। जिस मनुष्य के घर में शिवजी के नैवेद्य का प्रचार होता है उसका सारा घर तो पवित्र होता ही है उसके साथ-ही साथ दूसरे घर भी पवित्र हो जाते हैं। नैवेद्य आये तो उसे प्रसन्नता पूर्वक शिरोधार्य कर भक्षण करे। शिव दीक्षा से दीक्षित भक्त को शिव नैवेद्य भक्षण करना बड़ा ही सुख का देने वाला है। शिव नैवेद्य ग्रहण करने पर ब्रह्म हत्यारा भी पवित्र हो जाता है। किन्तु जहां चाण्डालों का अधिकार है वहां का नैवेद्य मनुष्य को भक्षण नहीं करना चाहिए। हां जहां चाण्डालों का अधिकार नहीं है वहां का महा प्रसाद मनुष्य को अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक ग्रहण करना चाहिए। वाण लिंग, लोह लिंग, सिद्धि लिंग, स्वयम्भू लिंग तथा सम्पूर्ण प्रतिमाओं में चाण्डाल का अधिकार नहीं है। हे मुनियो! जो मनुष्य भगवान शिव को विधिवत स्नान करवाकर स्नान के उस जल को तीन बार पीता है उसके कायिक, वाचिक तथा मानसिक पाप शीघ्राति शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। नैवेद्य भक्षण के सम्बन्ध में आपको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विस्तार पूर्वक बतलाने के पश्चात अब मैं आपके सन्मुख विल्व पत्र का माहात्म्य कहूंगा—विल्व वृक्ष को आप महादेव के समान ही समझिये। देवता भी इसकी स्तुति करते हैं। इसकी महिमा कठिनता से समझी जा सकती है। संसार भर में जितने भी पुण्य तीर्थ हैं, वह सब इस वृक्ष की जड़ में निवास करते हैं। जो पुण्यात्मा गन्ध, पुष्प आदि द्वारा विल्व वृक्ष की जड़ की पूजा करता है उसको निःसन्देह शिवलोक की प्राप्ति होती है। जो इसकी जड़ में दीपक जलाता है वह ज्ञान प्रकाश प्राप्त करके ज्ञानी हो जाता है। जो मनुष्य इस पवित्र वृक्ष की छाया में शिव भक्त को भोजन करवाता है, उसको मिलने वाले पुण्यों का क्या कहना ? उसको कोटि गुण पुण्य प्राप्त होता है। जो विल्व वृक्ष की छाया में शिव भक्त को खीर खिलाता है दरिद्रता कभी उसके पास नहीं फटकती। हे मुनियो ! मैं आपके सन्मुख शिव लिंग की पूजा सांगऔर उपांग के साथ वर्णन कर चुका हूं अब प्रवृत्ति तथा निवृत्ति मार्ग के सम्बन्ध में सुनिये—यह प्रवृत्ति तथा निवृत्ति मार्ग दो प्रकार का है। प्रवृत्तों के लिए पीठ पूजा समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। किन्तु उनको पूजन कार्य किसी योग्य विद्वान पण्डित के पथ प्रदर्शन में करना चाहिए। उनको अभिषेक के पश्चात शाली अन्न से नैवेद्य निवेदन करना चाहिए। उसके उपरान्त अपने घर में पूजन के पश्चात लिंग को सम्पुटित करके पवित्र स्थान पर विराजमान कर देना चाहिए। हाथ की पूजा हो जाने पर अपना भोजन निवेदन करना चाहिए।

निवृत्ति मार्ग गामियों के लिए सूक्ष्म लिंग पूजा विशेष रूप से हितकर है। उन्हें चाहिए कि विभूति द्वारा सूक्ष्म लिंग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का पूजन करके उसी विभूति को भी निवेदित करना चाहिए। पूजा के उपरान्त लिंग को सदा सिर पर धारण करना चाहिए।

तेईसवां अध्याय

(शिवनाम, रुद्राक्ष तथा शिवनाम की महिमा। शिवनाम गंगा, यमुना तथा सरस्वती के सदृश महा पुण्यमय है। महर्षियों ने वेद शास्त्रों के अध्ययन से निर्णय किया है कि संसार से तरने का उपाय केवल भगवान शिव का पावन नाम ही है। राजा इन्द्रद्युम्न जैसे महापापी तथा एक महा पापिनी ब्राह्मण पत्नी का केवल शिवनाम से ही सद्गति का प्राप्त होना।)

ऋषियों ने कहा—"हे सूत जी! अब आप हमें भस्म, रुद्राक्ष तथा शिव नाम तीनों की महिमा सुनाइये, जिसे सुनकर हम सब आनन्दित हों।"

श्री सूत जी ने कहा—"हे मुनिश्वरो! आपने लोगों के हित के लिए उत्तम प्रश्न किया है। निःसंदेह आप बड़े भाग्यशाली हैं। आप बड़े ही पवित्र हैं। अपने कुल के भूषण हैं। जो आप भगवान सदा शिव के पावन चरणों के भक्त हैं। आपको शिव कथा से बड़ा प्रेम है। इसलिए आपका जीवन सफल है और आप अपने जीवन में कृतकृत्य हैं। अब मैं भस्म, रुद्राक्ष तथा भगवान सदाशिव के नाम की महिमा कहूंगा, ध्यान पूर्वक सुनिये। भस्म, रुद्राक्ष तथा भगवान सदाशिव का पावन नाम यह तीनों वस्तुएं जिस शरीर में विराजमान हों उसके केवल दर्शन मात्र से ही त्रिवेणी के स्नान के फल की-सी प्राप्ति हो जाती है। शिवनाम तो श्री गंगा जी है, भस्म श्री यमुना जी है और रुद्राक्ष श्री सरस्वती जी हैं, यह तीनों ही पापों का नाश करने वाली हैं। यह तीनों भला जिसके शरीर में हों, उसके दर्शन मात्र से ही त्रिवेणी के स्नान का फल मिलता है। अतः

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मनुष्य को भगवान शिव के नाम सदा-सदैव उच्चारण करना चाहिए। रुद्राक्ष तथा भस्म धारण करना चाहिए। प्राचीन काल में श्री ब्रह्मा जी ने नाम, भस्म तथा रुद्राक्ष तीनों की तुलना त्रिवेणी के स्थान से की थी। तीनों को समान पाया था, इस लिए हे मुनिश्वरो! मनुष्य के लिए इन तीनों का धारण करना अत्यावश्यक है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने तो उसी दिन इन तीनों वस्तुओं को धारण कर लिया था।"

मुनियों ने कहा—प्रभो! आप अधिक विद्वान, महा प्रतिभा-शाली और शिव स्वरूप हैं। आपने हमें शिवनाम, भस्म तथा रुद्राक्ष धारण करने का फल तो बतला दिया है। अब हम सब आपके श्री मुख से इन तीनों की महिमा सुनना चाहते हैं। अतः आप तीनों का माहात्म्य विशेष रूप से वर्णन कीजिये।

श्री सूत जी बोले—"हे मुनिश्वरो! आप शिवनाम को पापों के लिए दावाग्नि के समान समझें जिससे कि पाप रूपी पर्वत जल कर राख हो जाते हैं। हे ऋषियो! जो मनुष्य नित्य शिव-नाम जपता है, उसे वेद का ज्ञाता, पुण्यात्मा, भाग्यशाली और विद्वान समझिये। जिन महात्माओं को शिवनाम में पूर्ण विश्वास है, उनकी मुक्ति में मुझे कोई संशय ही नहीं है।

अनेक जन्मों में जिसने घोर तप किया हो, उसे ही भग-वान शिव की भक्ति प्राप्त होती है। जिसके अन्दर भगवान शिव की भक्ति है, उसके लिए सब पाप दूर होकर उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। जिस प्रकार बनाग्नि से जले हुए वृक्ष भस्मीभूत हो जाते हैं। जो मनुष्य अपने शरीर को भस्म से पवित्र रखता है और भगवान शिव के नाम में श्रद्धा रखता है, वह संसार सागर से अवश्यमेव तर जाता है। चारों वेदों के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अध्ययन के पश्चात महर्षियों ने यही निश्चय किया है कि केवल भगवान शिव का नाम ही भव सागर से तरने का उपाय है। हे ऋषियो! पहले इन्द्र द्युम्न नाम का एक राजा था। जोकि महा पापी था। एक ब्राह्मणी महापापिनी थी। उन दोनों को भगवान शिव के नाम से ही सद्गति प्राप्त हुई थी। हे मुनियो! यह मैंने आपको शिवनाम की महिमा सुनाई है, अब आप लोग पवित्र भस्म का माहात्म्य सुनिये।

चौबीसवां अध्याय

(भस्म महिमा श्रेष्ठ मुनियों तथा ब्राह्मणों द्वारा कह गये मन्त्रों से उसके धारण करने की विधि। भस्म व त्रिपुण्ड धारण करने का फल। भस्म त्रिपुण्ड न करने वालों को क्या दण्ड मिलता है और धारण करने वालों को कौन सा सुख प्राप्त होता है, इसका विस्तार पूर्वक वर्णन।)

श्री सूत जी बोले—हे मुनियो! सब मंगलों को देने वाली भस्म दो प्रकार की है। एक महा भस्म दूसरी स्वल्प भस्म। महा भस्म तो कई प्रकार की है। श्रौत, स्मार्त तथा लौकिक तीन प्रकार की महा भस्म है। स्वल्प संज्ञक भस्म भी नाना प्रकार की है—श्रौत तथा स्मार्त भस्म ब्राह्मणों के लिए है दूसरों सबके लिए लौकिक भस्म है। मुनियों तथा ब्राह्मणों को मन्त्रों द्वारा भस्म धारण करना चाहिए, अन्य बिना मन्त्र के धारण कर सकते हैं। उपलों को जलाकर जो भस्म बनती है उसे आग्नेय भस्म कहते हैं। त्रिपुण्ड तिलक के लिए उसे द्रव्य भी कहा जाता है। अतएव विद्वानों को चाहिए कि हवन की भस्म का संग्रह करें। अन्य यज्ञों से उत्पन्न भस्म भी त्रिपुण्ड धारने में श्रेष्ठ है। जाबाल के उपनिषद् के अनुसार अग्नि आदि मन्त्रों के द्वारा सात बार जल से भिगोकर भस्म को शरीर में लगाना चाहिए। तीनों संध्याओं में जो मनुष्य शिव भस्म से त्रिपुण्ड

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लगाता है, वह सब प्रकार के पापों से मुक्त होकर शिवलोक को प्राप्त होता है। जो श्वेत भस्म से त्रिपुण्ड धारण करता है, वह अनादि भूत लोगों में अमृत है। मनुष्यको चाहिए कि त्रिपुण्ड तथा भस्म रमाकर ही यथाविधि जप करे। निर्दयी अधर्मी, सर्वथा पापी हत्यारा, मूर्ख, पतित भी भस्म धारने से जिस देश में भी रहे वहां सब तीर्थ निवास करते हैं तथा वहां पर यज्ञों का वास हो जाता है।

हे मुनीश्वरो! देव तथा दैत्य सभी त्रिपुण्डधारी का सम्मान करते हैं चाहे वह पापी ही क्यों न हो। यह तो रही पापियों की बात। श्रद्धा से त्रिपुण्ड धारण करने वालों का तो कहना ही क्या है? इस सम्बन्ध में मैं अधिक क्या कहूं। सदा भस्म धारण करें। लिंग का पूजन करें। और षडक्षर मन्त्र का जाप करें। ब्रह्मा विष्णु रुद्र देवता तथा ऋषि-मुनि भी भस्म धारण के माहात्म्य का वर्णन नहीं कर सकते। वह मनुष्य जिसने कि अपने वर्ण के सब आचार विचार का त्याग कर दिया हो यदि वह भी एक बार त्रिपुण्ड धारण कर लें तो उसके भी समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। वह मनुष्य जो बिना त्रिपुण्ड धारण करके अपना कार्य करते रहते हैं उनको जन्म जन्मान्तर तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। बस, वह संसार के बन्धनों में ही फंसे रहते हैं। त्रिपुण्डधारी ब्राह्मण ही शास्त्रों का अध्येता तथा सभी के अनुष्ठानों का करने वाला है। वह लोग जो त्रिपुण्ड को देखकर ईर्ष्या करते हैं या उसकी हंसी उड़ाते हैं वह चाण्डाल के यहाँ जन्म पाते हैं। ब्राह्मण व क्षत्रिय को चाहिए कि अपने शरीरों पर 'मानस्तोकेन' इस मन्त्र से भस्म धारण करें। वैश्य 'त्रयम्बक' इस मन्त्र से भस्म धारण करें। शूद्रों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को चाहिए 'नमः शिवाय' पंचाक्षर मन्त्र से भस्म धारण करना चाहिए। अन्य जाति वालों के लिए तथा विधवा स्त्रियों को शूद्र के समान ही भस्म धारण करना चाहिए। गृहस्थ को ब्रह्मादि पंच मन्त्रों द्वारा, ब्रह्मचारी को त्र्यम्बक मन्त्र द्वारा, वानप्रस्थ को अघोर मन्त्र के द्वारा और यति को प्रणव मन्त्र द्वारा त्रिपुण्ड और भस्म लेपन करना चाहिए। अतिवर्णाश्रमी 'मैं शिव हूं' 'मैं शिव हूं' इस भावना के साथ और योगी ईशान मन्त्र के द्वारा त्रिपुण्ड और भस्म धारण करें। हे मुनियो! चारों वर्णों को भस्म धारण करनी चाहिए और अन्य जीवों को भी।

भगवान शंकर का कहना है कि गृहस्थ, उदासीन, सन्यासी, ब्रह्मचारी और वर्ण शंकर सब बिना भस्म और रुद्राक्ष माला धारण करने के अन्न जल ग्रहण न करें। यदि वह ऐसा न करेंगे तो पाप के भागी होंगे तथा नरक में डाले जायेंगे। शिव यज्ञ में तान्त्रिक मनुष्य ऊर्ध्व पुण्ड धारी शंख चक्र चिन्हित मनुष्य भाग नहीं ले सकते सब प्रकार की हत्याओं के पाप, आरोग्य स्त्रियों के साथ रमण करने का पाप, झूठी गवाही देने का पाप, निन्दा करने से लगने वाला पाप, यह सब पाप शरीर पर भस्म तथा माथे पर त्रिपुण्ड धारण करने से नष्ट हो जाते हैं।

हे मुनिश्वरो! आपको मैंने त्रिपुण्ड का माहात्म्य सुना दिया है। अब मैं इसके धारण करने का विधान कहूंगा ध्यान पूर्वक सुनिये—मध्यमा तथा अनामिका उंगली में भस्म लेकर भृकुटि के मध्य से लेकर अन्त तक जितना विस्तार है वहां तक तीन लकीरों वाला त्रिपुण्ड तिलक मस्तक तथा अन्य अंगों पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

धारण करना चाहिए। त्रिपुण्ड की एक-एक रेखा के नौ-नौ देवता माने गये हैं। वह इस प्रकार की पहली रेखा में ग्रार्हपत्य अग्नि पृथ्वी धर्म रजोगुण ऋग्देव क्रिया शक्ति एवं प्रातः सेवन इत्यादि नौ हैं। दूसरी रेखा के उकार दक्षिण अग्नि आकाश तत्व युजर्वेद आत्मा अन्तरात्मा इच्छा शक्ति मध्यन्दिन सेवन एवं महेश्वर आदि नौ देवता हैं। तीसरी रेखा के मकार आहवनीय अग्नि परमात्मा तमोगुण दिवासाम देव, ज्ञान शक्ति, सायं सेवन एवं महादेव इस प्रकार नौ देवता हैं। हे ऋषियो! प्रत्येक रेखा को लगाते समय उसके देवताओं का ध्यान एवं स्मरण आवश्यक है। जिससे कि भक्ति, मुक्ति सहज प्राप्त होती है। भस्म बत्तीस सोलह आठ या पांच अंगों पर धारण करनी चाहिए। सिर, माथा, दोनों कान, दोनों नेत्र, नासिका के दोनों ओर, दोनों हाथ, मुंह, कंठ, दोनों कुहनी दोनों मणि-बंध, हृदय दोनों बगल, टूंड़ी, दो अण्ड कोष, दोनों अरू, दोनों घौंटू, दोनों पिन्नी, दोनों जांघें, दोनों पाँव आदि बत्तीस अंगों में क्रमशः अग्नि, पृथ्वी, वायु, देश दस दिशाएं, दस दिग्पाल, आठों वस्त्रधरा, ध्रुव, सोम और प्रत्यूज इत्यादि का, लेकर त्रिपुण्ड लगावें। अथवा सिर, कंठ, मस्तक, दोनों स्कन्ध, दोनों हाथ, कुहनियों, दोनों मणिबन्ध युगल हृदय टूंड़ी, दोनों बगलों एवं पीठ इन सोलह अंगों में क्रमशः धारण करे। फिर अश्विनी कुमार, शिव-शक्ति, रुद्र, ईश, नारद, वाम इत्यादि नौ देवताओं के नाम लेकर त्रिपुण्ड लगावे। अथवा सिर, बाल, दोनों कानों, मुख, दोनों हाथों, हृदय टूँड़ी, उरू स्थान, दोनों पिन्नयों एवं दोनों पांवों—इन सोलह अंगों क्रमशः शिव, चन्द्रमा, रुद्र, ब्रह्मा, गणेश, लक्ष्मी, विष्णु, शिव, प्रजापति, नाग कन्या, दोनों ऋषि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कुमारों का समुद्र तीर्थ इत्यादि के नाम स्मरण करके त्रिपुन्ड भस्म धारण करे। अथवा माथा, दोनों कानों, दोनों स्कन्ध, छाती टूंड़ी, एवं गुह्य अंग इत्यादि आठों अंगों में क्रमशः सप्त ऋषियों, ब्राह्मणों का नाम लेकर धारण करे। अथवा माथा, दोनों भुजाओं, छाती, नाभि इत्यादि पाँच अंगों में अथवा देश काल अवस्था के अनुसार जैसी भस्म मिले उससे त्रिपुण्ड त्रिनेत्र, तीनों गुणों के कारण एवं ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र की उत्पत्ति करने वाले शिव का स्मरण करके 'नमः शिवाय' इस मन्त्र से माथे पर त्रिपुण्ड धारण करे। शिव और शक्ति को प्रणाम करके दोनों बगलों में 'वीजाभ्यां नमः' इस मन्त्र से दोनों प्रमाष्ठों में 'पितृभ्यां नमः' इस मन्त्र से अधोभाग में 'उमेशा मयां नमः' इस मन्त्र से ऊपरी भाग में और 'भीमाय नमः' इस मन्त्र से पीठ पर और सिर के पीछे भस्म लगावे।

पच्चीसवां अध्याय

(संसार के मनुष्यों के हित के लिए भगवान सदाशिव का श्री पार्वती जी से रुद्राक्ष माहात्म्य कहना। रुद्राक्ष के आकार प्रकार तथा उनके धारण करने का फल।)

श्री सूत जी ने कहा—हे मुनिश्वरो। आप लोग धन्य हैं। क्योंकि आप भगवान सदाशिव के भक्त हैं। अब मैं संक्षेप में रुद्राक्ष का माहात्म्य कहूंगा। आप लोग ध्यान पूर्वक सुनिये। रुद्राक्ष का माहात्म्य पूर्व काल में लोक उपकार के लिए भगवान सदाशिव ने श्री पार्वती जी को सुनाई थी। वही इस समय मैं आपके सन्मुख वर्णन करूंगा।

भगवान सदाशिव ने श्री पार्वती जी से कहा—हे देवी! मैं संसार के हित के लिए रुद्राक्ष का माहात्म्य तुम्हारे सन्मुख कहूंगा—मैंने पूर्वकाल में हजारों वर्षों तक तपस्या की थी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तपस्या के बीच मुझे कुछ भय-सा प्रतीत हुआ अतः मैंने अपने नेत्र खोल दिये। मेरे नेत्र खोलने की देर थी कि उनमें से अपने आप जल की बूंदें गिरने लगीं। और मेरे वह आंसू देखते-ही-देखते देश के कोने-कोने में फैल गए। वह आंसू फिर रुद्राक्ष के वृक्षों में परिवर्तित हो गए। यह वृक्ष गौड़ देश से लेकर मथुरा, अयोध्या, काशी, लंका, मलयाचल, सह्याद्रि पर्वत तथा अन्य स्थानों पर उत्पन्न हुए। मेरे आंसुओं में से उत्पन्न होने के कारण इनका माहात्म्य अत्याधिक बढ़ गया। यहाँ तक कि वेदों ने भी इन वृक्षों की महिमा गाई है। यह विष्णु आदि देवताओं के लिए भी आनन्ददायक सिद्ध हुए। अतएव इनकी माला सब पापों का नाश करके भुक्ति व मुक्ति की देने वाली है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रजन सफेद, लाल व पीले एवं काले रुद्राक्ष अवश्यमेव धारण करें। चारों वर्णों वालों के लिए मैंने चार रंग बता दिये हैं अतः चारों वर्णों वाले इसकी माला अवश्य पहनें। रुद्राक्ष भोग तथा मोक्ष का देने वाला है।

भगवद्-नाम-जप अन्य मालाओं की अपेक्षा रुद्राक्ष की माला से करना विशेष फलदायक है। गोल, स्निग्ध, मजबूत, मोटा, काँटेदार रुद्राक्ष मनोरथ साधक एवं भुक्ति-मुक्ति प्रदायक है। किन्तु जो रुद्राक्ष कीड़ों द्वारा खाये गये हों, टूटे-फूटे हों, कांटों से रहित तथा चपटे हों उनकी माला धारण न करनी चाहिए। जिन रुद्राक्षों में छेद हों वह उत्तम हैं। जिनमें मनुष्य छेद करे वह मध्यम हैं। साढ़े पाँच सौ रुद्राक्षों का मुकुट तीन लड़ीदार तीन सौ आठ रुद्राक्षों का यज्ञोपवीत, एक-सौ-एक रुद्राक्ष की माला, तीन रुद्राक्ष शिखा में छः-छः कानों में, ग्यारह-ग्यारह दोनों कुहनियों में तथा दोनों मणि बन्धों में, तीन जनेऊ में, पांच

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कटि में—इस प्रकार ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारी मानव को सभी देवता प्रणाम करते हैं और उसे शिव समान जानते हैं।

भगवान सदाशिव ने कहा—हे पार्वती! यह मेरी आज्ञा है कि सारे वर्ण और सारे आश्रमी स्त्रियाँ तथा पतित सबके-सबको रुद्राक्ष की माला धारण करना चाहिए। दिन में रुद्राक्ष धारण करने से रात्रि के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और रात्रि में धारण करने से दिन में किये गए पाप दूर हो जाते हैं। हे मुनिश्वरो! गले में रुद्राक्ष, मस्तक पर त्रिपुण्ड और मुख से पंचाक्षर मन्त्र का जाप करने वाला भक्त मुझे बहुत प्यारा है, वह तो निःसंदेह साधु है। और आप द्वारा पूजनीय है। भगवान सदाशिव के सच्चे भक्तों के सम्बन्ध में मैं इतना ही कह सकता हूं कि यमराज तक ने अपने सेवकों से कह रखा है कि हे मेरे सेवकों! मेरे यमलोक में तुम उन्हीं लोगों को लाओ जिन्होंने कि अपने गले में रुद्राक्ष-माला धारण न कर रक्खी हो। जिनके मस्तक पर त्रिपुण्ड न हो और मुख में पंचाक्षर मन्त्र न हो। गले में रुद्राक्ष-माला धारण करने गले ललाट पर त्रिपुण्ड धारण करने गले तथा जिनके मुख में पंचाक्षर मन्त्र हो वह सबके-सब मेरे पूजनीय हैं।

भगवान शंकर ने कहा—हे पार्वती! एक मुखी रुद्राक्ष शिव रूप है इसके केवल दर्शन से ही ब्रह्म हत्यादिक पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस स्थान पर रुद्राक्ष की पूजा होती है उस स्थान पर सदा-सदैव लक्ष्मी का वास रहता है। वहां पर किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता और मनुष्य की सब अभिलाषायें अपने आप पूर्ण हो जाती हैं। दो मुखी रुद्राक्ष देवेश के समान सब कामनाओं को सिद्ध करने वाला है। यह लाख गोहत्या के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पाप से मुक्ति दिलाता है। तीन मुख वाला रुद्राक्ष साधन सिद्ध करता है। चार मुख वाला रुद्राक्ष ब्रह्म स्वरूप है। उसके केवल दर्शन मात्र से ही नर हत्या निवृत्त हो जाती है और यह चार मुख वाला रुद्राक्ष धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों का फल देता है। पांच मुखी रुद्राक्ष रुद्र रूप है। यह कामनाएं पूर्ण करता है तथा मोक्ष प्रदान करता है। छः मुखी रुद्राक्ष कार्तिक स्वामी का रूप है। इसे दायें हाथ में बांधने से ब्रह्म हत्या आदि दोष निवृत्त हो जाते हैं। सप्त मुखी रुद्राक्ष को अनंग कहते हैं। इसे धारण करने से धन की प्राप्ति होती है। अष्ट मुखी रुद्राक्ष अष्ट मूर्ति भैरव का रूप है। इसके धारण करने से मनुष्य की आयु लम्बी होती है और उसे मृत्यु के अनन्तर शिव रूप प्राप्त होता है। नौ मुख वाला रुद्राक्ष भैरव तथा कपिल रूप है। इसकी अधिष्ठात्री नव स्वरूपा श्री अम्बा देवी है। इसे बाईं बांह पर बांधने से समस्त भैरवों की प्राप्ति होती है। दस मुखी रुद्राक्ष विष्णु रूप है। इसके धारण करने से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष आदित्य रूप है। जो मनुष्य इसे मस्तक पर धारण करता है उसका बारह सूर्यों के समान तेज बढ़ता है। तेरह मुखी रुद्राक्ष विश्वदेव है इसके धारण करने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है एवं समस्त कामनाएं सिद्ध होती हैं। चतुर्दशो मुखी रुद्राक्ष सदाशिव है इसके मस्तक पर धारण करने से मनुष्य के समस्त पाप मिट जाते हैं।

भगवान सदाशिव ने कहा—हे पार्वती! यह रुद्राक्षों के अनन्त फल मैंने तुमको बतलाये हैं अब तुम इनके मन्त्र क्रमशः सुनो—

(१) ॐ ह्रीं नमः (२) ॐ नमः (३) क्लीं नमः (४) ॐ ह्रीं नमः (५) ॐ ह्रीं नमः (६) ॐ ह्रीं हु नमः (७) ॐ हुं नमः (८) ॐ हूं नमः

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

(९) ॐ ह्रीं हुं नमः (१०) ॐ ह्रीं नमः (११) ॐ ह्रीं हुं नमः (१२) ॐ क्रों क्षौं रौं नमः (१३) ॐ ह्रीं नमः (१४) ॐ नमः ।

शिव भक्तों को चाहिए कि इन मन्त्रों के द्वारा रुद्राक्ष धारण करके अपने मनोरथ सिद्ध करें। बिना मन्त्र के रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य नरक गामी होता है।

हे मुनिश्वरो ! यह विद्येश्वर संहिता स्वयं भगवान सदा शिव ने श्री पार्वती जी को सुनाई थी। अब मैंने आपको सुनाई है। वह सज्जन जो शिव-महिमा से पूर्ण इस अध्याय को नित्य प्रति पढ़ेंगे अथवा सुनेंगे वह पुत्र पौत्रादि सब सुख प्राप्त करके एवं सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करके अन्त में शिव रूप होकर मुक्त हो जायेंगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

रुद्र संहिता

पहला अध्याय

(मुनियों का श्री सूत जी से भगवान सदाशिव के प्रगट होने, जगज्जननी माता पार्वती की जन्म कथा, शिवजी और श्री पार्वती के विवाह आदि लीलाएं सुनाने के लिए कहना। श्री सूत जी का मुनियों को बतलाना कि इससे पहले यही प्रश्न श्री नारद जी श्री ब्रह्मा जी से कर चुके हैं। अतः आप जो कुछ श्री ब्रह्मा जी ने श्री नारद जी से कहा था, मुझ से ध्यान पूर्वक सुनिये।)

मुनियों ने कहा—"हे सूत जी! हम आप की कृपा से विद्येश्वर संहिता की सुन्दर कथा सुन चुके हैं। उसके श्रवण से हम सब को अपार आनन्द प्राप्त हुआ है। अब हम सबकी आप से प्रार्थना है कि आप हमें रुद्र संहिता के सुनाने की कृपा करें। आप भगवान सदाशिव तथा उमा के अलौकिक चरित्रों का पूर्ण रूप से वर्णन कीजिए। प्रभो! हम जानना चाहते हैं कि निर्गुण शिव संसार में सगुण कैसे हुए? हे ब्राह्मण! हम शिव-तत्व को नहीं जानते अतएव हम जानना चाहते हैं कि सृष्टि से पूर्व भगवान सदाशिव का क्या रूप था? वह सृष्टि के पूर्व में कैसे थे, कैसी क्रीड़ाएं करते रहे? और सृष्टि के अन्त में किस प्रकार रहे? वह किस प्रकार प्रसन्न हुए? और उन्होंने प्रसन्न होकर अपने भक्तों को क्या-क्या फल दिया? यह सारा वृत्तान्त आप हमसे कहिये। सब जानते हैं कि भगवान सदाशिव शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन तीनों देवताओं की उत्पत्ति भगवान सदाशिव के शरीर से हुई है। आप भगवान सदाशिव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के प्रकट होने की कथा, जगज्जननी माता पार्वती की जन्म कथा, शिवजी और पार्वती का विवाह आदि लीलाएं हमसे कहिये।"

भगवान श्री व्यास जी ने कहा—इस प्रकार ऋषियों-महर्षियों के पूछने पर श्री सूत जी ने कहा—हे मुनियो! आपकी भगवान सदाशिव के चरणों में जो श्रद्धा उत्पन्न हुई है और बार-बार आप जो मुझसे उनके सम्बन्ध में पूछते हैं इसके लिए आप सब धन्यवाद के पात्र हैं। आपके प्रश्न गंगाजल के समान निर्मल तथा पुन्यशील हैं। इन प्रश्नों के करने वालों, कहने वालों तथा पूछने वालों तीनों का कल्याण होता है। हे मुनिश्वरो! जिस प्रकार आपने जिज्ञासावश मुझसे प्रश्न किया है ठीक उसी प्रकार देव ऋषि नारद ने भी एक बार भगवान श्री विष्णु से यही प्रश्न किया था। भगवान विष्णु ने श्री नारद जी को श्री ब्रह्मा जी के पास भेज दिया था। नारद जी श्री ब्रह्मा जी के पास गये और उनसे कहा कि मैं आपसे भगवान सदाशिव के प्रकट होने, जगज्जननी माता पार्वती के जन्म की कथा, शिवजी और पार्वती के विवाह आदि की लीलाएं सुनना चाहता हूं। नारद जी का प्रश्न सुनकर श्री ब्रह्मा जी ने भगवान सदाशिव के प्रेम में भरकर उनके यश का गान किया। और भगवान सदाशिव का चरित्र सुनाना प्रारम्भ किया। श्री व्यास जी बोले—इतनी बात सुनते ही मुनियों ने श्री सूत जी से कहा—आप हमें कृपया यह बतलाइये कि श्री ब्रह्मा जी और श्री नारद जी का यह सुखकारी संवाद कब हुआ और आप इस संवाद को संक्षेप में हमें सुनाइये। ऋषियों-महर्षियों की बात सुनकर श्री सूत जी बोले—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, New Delhi. Digitized by eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दूसरा अध्याय

(नारद जी का पर्वतराज हिमाचल पर जाकर भगवान सदाशिव की तपस्या करना। इन्द्र को अपना सिंहासन छिन जाने का भय उत्पन्न होना। उसका कामदेव को नारद जी की तपस्या भंग करने के लिए कहना। कामदेव पर श्री नारद जी का विजय पाना और अपनी विजय का वृत्तान्त भगवान सदाशिव, श्री ब्रह्मा जी और भगवान विष्णु को सुनाना।)

हे मुनिश्वरो! एक समय देवर्षि नारद पर्वतराज हिमाचल पर तप करने के लिए गये। एक अत्युत्तम गुफा के समीप उन्होंने अपना दृढ़ आसन जमाकर प्राणायाम लगाकर तथा मौन धारण करके तपस्या आरम्भ कर दी। उन्होंने 'अहं ब्रह्म अस्मि' कहकर समाधि लगा दी। ऐसी समाधि से ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाता है। देवर्षि नारद के उग्र तप को देखकर देवराज इन्द्र सशंकित हो उठे कि कहीं वह उनका पद ही न हथिया ले। उन्होंने विचार किया कि जैसे भी बन पड़े। देवर्षि नारद की तपस्या भंग करनी चाहिए और यह कार्य कामदेव की सहायता से हो सकता है। उन्होंने कामदेव को याद किया। बस याद करने की देर थी कि कामदेव उनके पास आ पहुंचा। देवराज इन्द्र ने उसको प्रेमपूर्ण वचनों से प्रसन्न करते हुए उस से कहा—"हे मित्र! तुम सदा-सदैव देवताओं के अनन्य मित्र तथा हित चिन्तक रहे हो। इस समय हमें तुमसे एक बहुत बड़ा काम लेना है। वह काम तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कोई भी नहीं कर सकता। क्योंकि तुम आज तक कई ऋषियों-महर्षियों के गर्व को चूर्ण कर चुके हो और इस समय भी एक ऐसा ही काम आन पड़ा है। बात यह है कि पर्वतराज हिमालय की एक गुफा में देवर्षि नारद भगवान श्री सदाशिव को प्रसन्न करने के लिए उग्र तपस्या कर रहे हैं। हमें शंका है कि कहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देवर्षि अपने इस उग्र तप द्वारा भगवान श्री सदाशिव को प्रसन्न करके हमारा उच्च पद तथा यह राज्य ही न छीन लें। तुम्हें यह करना है कि शीघ्रातिशीघ्र हिमालय पर पहुंच कर उनके तप में विघ्न डालो। जिस तरह आज तक कई ऋषियों महर्षियों के तप के गर्व को छिन्न-भिन्न किया है उसी तरह तुम अपनी कामकला से देवर्षि नारद का घमण्ड भी चूर कर डालो। देवराज इन्द्र की आज्ञा पाकर कामदेव अपने मित्र वसन्त को साथ लेकर बड़े अभिमान के साथ हिमालय पर्वत पर गया और उनकी तपस्या भंग करने की चेष्टा करने लगा। देखते-ही-देखते वातावरण में मादकता छा गई। वसन्त की बहार से वातावरण सुरभित हो उठा। सुन्दर अप्सराएं कामुकता पूर्ण हाव-भावों का प्रदर्शन करने लगीं तथा नृत्य करने लगीं। पर देवर्षि नारद जी के मन को उनकी कोई भी कला विकृत न कर पाई। वह अविचलित रहे।

देवर्षि नारद पर कामदेव की चेष्टा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसका कारण भगवान श्री सदा शिव की असीम कृपा का प्रभाव था। यह स्थान जहां पर कि इस समय देवर्षि नारद तपस्या कर रहे थे, वही जगह थी जहाँ पर कि भगवान सदाशिव ने कभी कामदेव को भस्म किया था और जब उसकी पत्नी रति ने उसको जीवन दान देने के लिए भगवान सदाशिव से प्रार्थना की थी तो उन्होंने कहा था कि तुम्हारे पति को कुछ समय के पश्चात जीवित तो कर दिया जायेगा किन्तु उसकी मोहमाया का इस प्रदेश में कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। बस, इसीलिए देवर्षि नारद कामदेव के मोह जाल से अलिप्त तथा निर्विकार रहे और एक लम्बी अवधि तक वहां

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पर तपस्या करते रहे। जब तपस्या पूर्ण हो गई तो उनको काम विजय का अहंकार हो उठा। अहंकार के भाव के उत्पन्न होने के साथ ही उनकी विवेक बुद्धि नष्ट हो गई और वह अपनी काम विजय का वृत्तान्त भगवान श्री सदाशिव को सुनाने के लिए कैलाश पर्वत पर जा पहुंचे और वहां पहुंचकर बड़े अभिमान के साथ भगवान सदाशिव को अपनी काम विजय का वृत्तान्त कह सुनाया। भगवान श्री सदाशिव ने देवर्षि नारद जी से कहा—नारद! तुम इस समाचार को अपने तक ही सीमित रखना। यह बात तुम देवताओं से बिल्कुल नहीं कहना विशेष कर भगवान श्री विष्णु से इस सम्बध में कुछ नहीं कहना। इसी में तुम्हारा कल्याण है। जो कुछ हमने तुमसे कहा है इसे भूलना नहीं। किन्तु होनी बड़ी बलवान है। नारद जी को भगवान सदाशिव की बात पसन्द नहीं आई। वह ब्रह्म लोक जा पहुंचे और वहां पहुंचकर अभिमान के साथ अपनी काम विजय का वृत्तान्त उन्हें कह सुनाया। नारद जी की अपने मुंह से अपनी प्रशंसा को सुनकर श्री ब्रह्मा जी ने भगवान सदा शिव की भांति उनको आशीर्वाद देते हुए कहा—"देखो नारद जी! यह समाचार तुम अपने तक ही सीमित रखना देवताओं और विशेष कर भगवान विष्णु से नहीं कहना। यह मैं जानता हूं कि तुम भगवान श्री विष्णु के अनन्य भक्त हो फिर भी तुम्हारा कल्याण इसी में है कि तुम उनसे यह वृत्तान्त बिल्कुल न कहो। हमारी बात भूलियेगा नहीं। किन्तु श्री ब्रह्मा जी की बात श्री नारद जी को बिल्कुल पसन्द नहीं आई। और वह तुरन्त ही विष्णुलोक में पहुंचे। उनके पहुंचते के साथ ही सर्वान्तर्यामी भगवान विष्णु ने भगवान श्री सदाशिव का ध्यान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करके सब कुछ जान लिया और श्री नारद जी के समीप जाकर उनको हृदय से लगाया और कहा—हे नारद जी ! आप इस समय कहां से आ रहे हैं ? और यहां किसलिए पधारे हैं ? देवर्षि ! आप बड़े भाग्यशाली हैं । मैं आपके आगमन से पवित्र हो गया हूं । भगवान श्री विष्णु द्वारा सत्कार पाकर नारद जी ने उनको बड़े गर्व के साथ कामदेव पर विजय पाने की कथा कह सुनाई । सारा वृत्तान्त सुनकर भगवान श्री विष्णु ने भगवान सदाशिव का ध्यान लगाया और सब समाचार जानकर श्री नारद जी से कहा—हे नारद जी ! आप जैसे योगी, विवेक मुक्त, विशुद्ध हृदय, अखण्ड ब्रह्मचारी का भला वह तुच्छ कामदेव क्या बिगाड़ सकता है ? हे मुनिश्वर ! आप पर काम क्रोध आदि मनो विकारों का भला क्या प्रभाव हो सकता है ? आप तो जन्म से ही विकार रहित और बुद्धिमान हो । आप जैसे पहुंचे हुए योगियों के आगे किसका क्या वश चल सकता है ? आप धन्य हैं ? आपकी कीर्ति प्रशस्त हो ।

नारद जी भगवान विष्णु से अपनी प्रशंसा सुनकर हंसे । उनके गर्व का पारावार न रहा । वह मन ही मन फूले न समाये और भगवान श्री विष्णु को प्रणाम करके विष्णु लोक से चल दिए ।

तीसरा अध्याय

(नारद जी का गर्व चूर्ण करने के लिए भगवान श्री विष्णु का अपनी माया रचाना । नारद जी का राजा शीलनिधि की कन्या के स्वयंबर में जाना और उसकी कन्या पर मोहित हो जाना । उनका भगवान श्री विष्णु से उन जैसा रूप मांगना । भगवान का उनको वानर रूप प्रदान करना और स्वयं राजा का वेष बनाकर स्वयंबर में जाकर जयमाला पहनना । श्री नारद जी का कोप ।)

ऋषियों ने श्री सूत जी से कहा—"हे सूत जी ! आपको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रणाम है। आपने नारद जी की तपस्या की तथा उनके काम-देव को जीतने की बड़ी अद्भुत कथा सुनाई है। कृपा करके अब इससे आगे का हाल कहिये। श्री नारद जी के जाने के पश्चात भगवान श्री विष्णु ने क्या किया? नारद जी भगवान श्री विष्णु से विदा होकर कहां गए। यह सारी कथा विस्तार पूर्वक हमें सुनाइये।"

ऋषियों की बात सुनकर भगवान सदाशिव को स्मरण करके श्री सूत जी बोले—हे ब्राह्मणों भगवान श्री विष्णु ने निर्णय कर लिया कि उन्होंने नारद जी का अहंकार दूर करना है। अतः श्री नारद जी के जाने के बाद अपनी प्रबल माया रचाई। उन्होंने देवर्षि नारद के मार्ग में एक विशाल नगर की रचना की। वहां के राजा का नाम शीलनिधि था। महाराजा शीलनिधि की एक कन्या थी जो कि अत्यन्त रूपवान तथा गुण-वान थी। उस दिन उसका स्वयंबर था। उस कन्या को प्राप्त करने के लिए दूर-दूर से राजकुमार सुन्दर वेष भूषा में तथा सुसज्जित होकर आ चुके थे। नगर में बड़ी चहल-पहल थी और नगर को भली प्रकार सजाया गया था। यह देखकर श्री नारद जी राजभवन की ओर जा निकले। नारद जी को देख कर राजा शीलनिधि ने उनको प्रणाम किया और अपनी [illegible]या बुलाकर उससे भी उनके चरणों में प्रणाम करवाया। पश्चात विनम्र वचनों से उनका सत्कार करते हुए उनसे उस कन्या का भविष्य पूछा—प्रभो! इसको कैसा वर प्राप्त होगा? राजा के इस प्रकार पूछने पर काम से पीड़ित और राजकुमारी से विवाह के इच्छुक श्री नारद जी ने राजा शीलनिधि से कहा—"राजन्! आपकी कन्या सौभाग्यवती है, इसका पति विष्णु जैसा ही सर्वगुण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सम्पन्न होगा।" इस प्रकार उस कन्या को आशीर्वाद देकर श्री नारद जी वहां से चल दिये। हे मुनियो! श्री नारद जी की स्थिति बड़ी विचित्र हो गई। वह सोचने लगे कि राजकुमारी मुझे किस प्रकार प्राप्त हो सकती है? वह राजकुमारों के मध्य में मुझे किस प्रकार वरण कर सकती है? सौन्दर्य सब स्त्रियों को प्रिय होता है। यदि मैं भगवान श्री विष्णु का जैसा सौन्दर्य प्राप्त कर लूं तो राजकुमारी अवश्यमेव मेरे गले में जयमाला डाल देगी। अतः ऐसा सोचकर वह विष्णु जैसा रूप प्राप्त करने के लिए भगवान विष्णु के समीप श्री विष्णुलोक जा पहुंचे और भगवान से सारा हाल कह सुनाया। और भगवान से कहा—प्रभो! मेरी इच्छा है कि राजकुमारी का विवाह मेरे साथ हो, अतः आप अपना स्वरूप मुझे प्रदान कर दीजिए। मैं आपका प्रिय सेवक हूं। श्री सूत जी ने कहा—हे मुनिश्वरो! श्री नारद जी के इन वचनों को सुनकर भगवान हंसे और उन्हें आश्वासन देते हुए कहा—मैं आपका हर तरह से कल्याण तथा हित करूंगा। और मैंने आपको हरि का रूप दे दिया है। इतना कहकर भगवान श्री विष्णु ने नारद जी को सादर विदा किया। हरि नाम वानर का भी है। भगवान ने श्री नारद जी को उनके वास्तविक हित को दृष्टि गोचर रखते हुए वानर का रूप दिया था। ठीक उसी प्रकार जिस तरह कि एक वैद्य रोगी के कल्याण के लिए उसको कड़वी औषधि देता है। नारद जी भगवान की इस बात को समझ नहीं सके। वह अपने आपको अत्यन्त रूपवान समझते हुए जल्दी-जल्दी राजभवन में पहुंचे और राजकुमारों के बीच आकर बैठ गये। भगवान ने उनका वानर रूप देखकर ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा था कि श्री नारद जी का वानर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का रूप केवल राजकुमारी ही देख सके। सब उनको ऋषि स्वरूप में ही देख रहे थे। इस पर भी सभा में दो ऐसे रुद्र गण बैठे हुए थे जो कि इस भेद को जानते थे। नियत समय पर राजकुमारी अपनी जयमाला लेकर पण्डाल में पहुंची। नारद जी की वानर शक्ल देखकर उसे क्रोध आ गया और वह इनके पास न आकर आगे बढ़ गई। सभा में बैठे राजा-महाराजाओं में से उसे कोई भी पसन्द नहीं आया। वह उदास-सी हो गई। इतने में एक राजा के वेष में भगवान श्री विष्णु वहां आ पहुंचे। उनका विष्णु रूप वह कन्या ही देख सकती थी। उसने झट आगे बढ़कर जयमाला भगवान श्री विष्णु के गले में डाल दी। भगवान श्री विष्णु उस कन्या को लेकर अन्तर्ध्यान होकर विष्णु लोक को चले गये। उनके जाने के पश्चात दो रुद्र गणों ने जो कि ब्राह्मण के वेष में थे, श्री नारद जी की हंसी उड़ाई। उन्होंने कहा कि तुम किस प्रकार उस सुन्दरी को पाने की अभिलाषा कर रहे थे? नारद जी चौंके और उन्होंने रुद्र गणों की बात पर विश्वास नहीं किया। किन्तु जब उन्होंने दर्पण में अपनी शक्ल देखी तो उनको अत्यन्त क्रोध आया। उन्होंने दोनों रुद्र गणों को, जिन्होंने कि उनकी हंसी उड़ाई थी, राक्षस हो जाने का श्राप दे डाला।

चौथा अध्याय

(नारद-जी का क्रोध में भरकर भगवान श्री विष्णु को श्राप देना। भगवान श्री विष्णु का श्री नारद जी का श्राप स्वीकार कर लेना। भगवान श्री सदाशिव का श्री नारद जी के ऊपर से अपनी माया हटाना। नारद जी के विवेक का जागृत होना। उनका अपने श्राप के लिए पश्चाताप करना। भगवान श्री विष्णु का उनको धीरज बंधाना।)

इतनी कथा सुनकर मुनियों ने श्री सूत जी से पूछा—"सूत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जी ! उसके बाद श्री नारद जी कहां गए और उन्होंने क्या किया ?" सूत जी बोले---श्री नारद जी दोनों रुद्र गणों को श्राप देकर क्रोध में भरे हुए सीधे विष्णु लोक पहुंचे। और भगवान श्री विष्णु से कहने लगे---हे हरि ! तुम हमेशा से कपटी रहे हो। किसी को सुख तथा चैन से नहीं देख सकते। सुनलो जिस प्रकार तुमने मुझे स्त्री क्लेश से दुःखी किया है और स्वयं राजा का रूप धारण कर मेरे साथ कपट किया है। देखो ऐसे ही मनुष्यों में राजा बनोगे। और दुःख क्लेशों से पीड़ित रहोगे। तुमने मेरी शक्ल वानरों जैसी बनाई है, इसलिए वानर ही तुम्हारी सहायता करेंगे। इसके अतिरिक्त तुम स्त्री वियोग में अत्यन्त दुःखी रहोगे। और उस अवस्था में तुम मनुष्यों जैसी दशा को प्राप्त होओगे। बस, इस प्रकार नारद जी ने भगवान श्री विष्णु को शाप दे डाला और उन्होंने भगवान सदाशिव की आज्ञा समझ कर नारद जी के शाप को स्वीकार कर लिया।

और इसके बाद यह हुआ कि लीला नायक भगवान सदाशिव ने अपनी माया नारद के ऊपर से हटा ली। अब नारद जी ने देखा कि वह कन्या अदृश्य हो गई है। भगवान का रूप भी पहिले जैसा हो गया। नारद जी भी अपने वास्तविक रूप में आ गये। उनका ज्ञान जो कि माया के कारण लुप्त हो गया था, पुनः जागृत हो गया। अब वह शाप के सम्बन्ध में सोचकर पश्चाताप करने लगे कि मैंने शिव-माया से मोहित होकर बहुत बड़ा अपराध कर डाला। ओह ! मैं अब घोर नरक में पड़ूंगा। प्रभो ! अब आप ऐसा उपाय कीजिए जिससे कि मेरे पाप नष्ट हो जायें और मैं नरक में न डाला जाऊं। इतना कह कर श्री नारद जी भगवान विष्णु के चरणों में गिर पड़े। भग-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वान ने उन्हें उठाकर गले से लगा लिया और बोले नारद जी! आप चिन्ता न करें। आपने भगवान सदाशिव की आज्ञा का पालन नहीं किया, इसलिए आपको मोह हुआ था। शिव निर्गुण हैं, वह परब्रह्म परमात्मा हैं, वह महादेव के शुभ नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी सेवा में श्री ब्रह्मा जी संसार की रचना करते हैं और मैं भी उन्हीं की प्रेरणा से संसार की रक्षा करता हूं। वह भगवान सदाशिव रुद्र का रूप धारण करके इस संसार के संहारक हैं। फिर वही शिव के रूप में माया से पृथक होकर निर्गुण हो जाते हैं। हे नारद जी! मैं अधिक क्या कहूं, वह स्वेच्छाचारी, भक्तों की रक्षा करने वाले और सम्यक लीला नायक हैं। इसलिए हे नारद जी! आप सर्व प्रकार के संशयों को दूर करके भगवान सदाशिव के स्तोत्र का पाठ करें, भगवान सदाशिव आपका कल्याण करेंगे।

पांचवां अध्याय

(दोनों रुद्रगणों का नारद जी की शरण में आकर क्षमा-याचना करना तथा नारद जी द्वारा उनके श्राप में संशोधन करना। नारद जी का ब्रह्मा जी की शरण में जाना और शिवतत्व के ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा रखना।)

तत्पश्चात् सूत जी ऋषिगण को आगे की कथा सुनाने लगे। श्री सूत जी बोले—नारद जी से इस प्रकार कहने के बाद भगवान् अन्तर्ध्यान हो गए। नारद जी भगवान् के कथनानुसार पृथ्वी लोक में आकर शिवलिंगों का दर्शन करने लगे। इसी बीच वह दोनों रुद्रगण जिन्हें नारद जी ने श्राप दे दिया था, आकर नारद जी के चरणों में नत-मस्तक हो उनसे श्राप-मुक्ति के लिए प्रार्थना करने लगे। उनकी श्रद्धा व दीनता को देखकर नारद जी बोले कि उस समय शिवजी के प्रताप से मोह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वश मेरी प्रज्ञा भ्रमित हो गई थी जिसके कारण मैंने तुम्हें श्राप दे दिया था। मेरा श्राप निष्फल नहीं हो सकता। हां उसके भोग में कुछ संशोधन अवश्य कर देता हूं। तुम दोनों किसी मुनि द्वारा राक्षसी से उत्पन्न होओगे। तथा शिव में तुम्हारी दृढ़ आस्था होगी। तुम्हारी शक्ति व प्रताप चारों ओर फैल जायेगा। समय आने पर स्वयं भगवान शंकर मानव जून धारण कर अपने हाथों से तुम्हें मुक्ति प्रदान करेंगे। नारद जी के ऐसे वचन सुनकर वे दोनों रुद्रगण प्रसन्नचित्त हो वहां से चले गए। तदनन्तर नारद जी भी शिव तीर्थों का भ्रमण करते हुए ब्रह्म लोक जा पहुंचे। वहां उचित आदर-सत्कार के उपरान्त ब्रह्मा जी की स्तुति करते हुए बोले—हे पितामह! आपकी अनन्य कृपा से ही मैं भगवान विष्णु के स्वरूप को जानने में समर्थ हुआ हूं, भक्ति मार्ग, तप मार्ग, तीर्थ मार्ग की महिमा को जानने में समर्थ हुआ हूं। किन्तु शिवजी की माया से मोहित हुआ मैं अब तक शिव-तत्त्व को नहीं जान सका हूं। अतः शिव-तत्त्व के ज्ञान की मुझे प्रबल इच्छा है कि सृष्टि से पूर्व सृष्टि के मध्य तथा सृष्टि के अन्त में उनका क्या स्वरूप होता है। उन्हें किन उपायों से प्रसन्न किया जा सकता है। प्रसन्न होने पर वह किस प्रकार के फल प्रदान करते हैं। इन सब तथ्यों का विवेचन कृपा कर आप हमसे करें क्योंकि आप उस परम तत्त्व को जानने वाले हैं। अतः शरणागत मुझको उस परम ज्ञान का बोध करायें।

छटवां अध्याय

(ब्रह्मा जी का प्रसन्न होकर नारद जी को सृष्टि से पूर्व भगवान शंकर की स्थिति के विषय में बताना तथा पुरुष के रूप में विष्णु जी की उत्पत्ति का वर्णन तथा सूक्ष्म व स्थूल पदार्थोत्पत्ति का वर्णन।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नारद जी के इस प्रकार युक्तिपूर्ण वचनों को सुनकर पितामह ब्रह्मा अति प्रसन्नचित्त होकर कहने लगे—हे मुनिवर! आपने बहुत श्रेष्ठ व जन-कल्याण की दृष्टि से अत्युत्तम प्रश्न किया है। महाप्रलय में समस्त सृष्टि का पूर्णरूपेण विनाश हो चुका था। समस्त चराचर जगत सूर्य, चन्द्रमा, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश शून्य में लीन हो गए थे। मात्र शिव-तत्त्व ही शेष रह गया था। यह शिव-तत्त्व सत्यस्वरूप, ज्ञानस्वरूप तथा अनन्त है। प्रकृति रूपी शक्ति इसी से प्रकट हुई है। महत् शक्ति अम्बिका समस्त लोकों की स्वामिनी, समस्त संसार की जननी शाश्वत, अक्षरा तथा मूल कारण कही गई है। यह महत् शक्ति अष्ट भुजा तथा शुभा कही गई है। शिवजी ने इस शक्ति को साथ लेकर शिवलोक की रचना की। यह शिवलोक काशी के नाम से विख्यात तथा मोक्ष के लिए परमोपयोगी है। यही शिव-लोक शिवा-शिव का अविमुक्त निवास स्थान है क्योंकि महाप्रलय काल में भी शिवजी अपनी पार्वती शक्ति के साथ यहां निवास करते हैं। इसी क्षेत्र में शिवजी द्वारा निर्मित एक आनन्दवन भी है जहां शिवजी ने अपनी शक्ति पार्वती के साथ अनन्त काल तक विहार किया। तदनन्तर भगवान् शंकर के मन में विचार आया कि वे इस आनन्दवन का भार किसी अन्य को सौंप कर स्वयं शान्ति से शिव लोक में शयन करें। ऐसा विचार करने के बाद इच्छा की कि एक पुरुष का निर्वाण करें। ऐसा विचार करके उन्होंने इस क्षेत्र के दक्षिण के दसवें अंश में सुधा रूप आसव का व्यापार किया, जिससे अत्यन्त सौन्दर्यवान् दिव्य पुरुष उत्पन्न हुआ। यह पुरुष अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न तथा विलक्षण रूप से गुणवान् था। उस पुरुष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ने उत्पन्न होते ही महादेव को नमस्कार किया तथा उनसे अपने नाम तथा कार्य के विषय में पूछा। तब भगवान् शंकर ने हंसकर उसका नाम बताते हुए कहा कि समस्त सृष्टि में व्याप्त रहने के कारण तुम विष्णु के नाम से विख्यात होओगे। जैसे भक्तों के प्रिय तुम्हारे अन्य भी बहुत से नाम होंगे। इसके बाद उसके काम का वर्णन करते हुए शिवजी ने उसे चिरकाल तक तप करने का आदेश दिया तथा वेदों को भी प्रदान किया। विष्णु जी ने महादेव के कथनानुसार बारह हजार वर्ष तक भयंकर तप किया किन्तु अब तक उन्हें परम कल्याणकारी शिवजी के दर्शन नहीं हुए। उनकी चिन्ता को समझकर शिवजी ने संयम दूर करने और तप करने को कहा। तब पुनः उस दिव्य पुरुष ने चिरकाल तक कठोर तप किया। भगवान् शिव के प्रताप से विष्णु के शरीर से अनेक प्रकार की जल धाराएं निकलीं, वह सब जल शून्य में व्याप्त होकर ब्रह्मवत् हो गया, जिनके स्पर्श से पाप-ताप नष्ट होते हैं। यह सब देखकर विष्णु जी अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा श्रान्त होकर स्वयं उस जल पर सो गए। उस समय प्रकृति व पुरुष के अभाव में कुछ भी नहीं था। उन्हीं से समस्त सृष्टि की उत्पत्ति हुई तथा बाद में उसका विस्तार हुआ। सर्व प्रथम प्रकृति से सत्त्व, रजस्, तमस् तीनों गुण उत्पन्न हुए। पुनः उससे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध उत्पन्न हुए। उनके बाद क्रमशः पंच महाभूत पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश उत्पन्न हुए तथा उससे पंच ज्ञानेन्द्रियां नेत, श्रोग, नासिका, जिव्हा तथा त्वचा, पंच कर्मेन्द्रियां वाणी, हस्त, पाद, गुदा व उपस्थ प्रकट हुई।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सातवां अध्याय

(जल पर शयन करते हुए विष्णु जी की नाभि से कमल तथा उससे ब्रह्मा जी का जन्म, परम तत्त्व को लेकर ब्रह्मा-विष्णु विवाद, तदनन्तर शिवलिङ्ग का प्रकट होना तथा उसे देखकर दोनों द्वारा शिवत्व ज्ञान की प्रार्थना करना।)

श्री विष्णु जी के जल पर शयन करने पर शिवजी की इच्छा से उनकी नाभि में से एक दीर्घकाय कमल उत्पन्न हुआ जो अनन्त योजन विस्तार वाला था। इसी समय शिवजी ने पार्वती के साथ मिलकर मुझे उत्पन्न किया, मेरा जन्म उसी हिरव्य कमल से हुआ। उस समय मुझे किंचित् मात्र भी ज्ञान नहीं था कि मैं कौन हूं, मेरा जन्म दाता कौन है, क्योंकि मैंने कमल के सिवाय और कुछ भी नहीं देखा था। उस समय मुझे कुछ चैतन्य का अनुभव हुआ और मैं अपने को उत्पन्न करने वाले को ढूँढने लगा। हे ऋषि श्रेष्ठ! अधिक क्या कहूं एक-एक नाल पकड़कर सौ वर्ष तक नीचे को चला किन्तु कमल की जड़ को न देख पाया। पुनः ऊपर की ओर आते हुए एक कमल की कली दृष्टिगोचर हुई बस वहीं मुझे तप करने की प्रेरणा मिली। इस कल्याणकारी प्रेरणा से मेरा अज्ञान दूर हुआ तथा ज्ञान की ज्योति मिली। मैं अपने सृष्टिकर्ता के दर्शन की अभिलाषा से तप करने लगा। बारह वर्ष के अथक तप के बाद परम पावन भगवान् विष्णु के दर्शन हुए। उनका साक्षात्कार कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ किन्तु शिवजी की माया से मोहित होने के कारण उन्हें अपना पिता जानकर उनसे पूछा कि तुम कौन हो? विष्णु जी आशीर्वाद देते हुए बोले कि तुम निडर रहो। मैं तुम्हारी सब इच्छाओं को पूरा करूंगा। ब्रह्मा जी बोले—हे देवर्षि! भगवान् विष्णु के ऐसे वचन सुनकर मैंने कहा कि तुम मेरे साथ शिष्यवत् व्यवहार क्यों कर रहे हो? क्या तुम नहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जानते कि मैं प्रत्यक्ष रूप से सृष्टि की उत्पत्ति का, प्रकृति के प्रवर्तन का व सृष्टि के विनाश का कारण हूं। श्रुति में मुझे स्वयम्भू, स्वराट, परमेष्ठी और श्रेष्ठ कहा गया है। तब हे नारद जी! मेरे इस कथन पर भगवान् विष्णु मुझ पर कुछ कुपित से होकर कहने लगे—मैं जानता हूं तुम सृष्टिकर्ता हो, किन्तु तुम्हारा जन्म मेरे ही इस नित्य शरीर से हुआ है तुम मेरी नाभि से ही प्रकट हुए हो। किन्तु माया से आच्छादित होने के कारण तुम ज्ञान से परे हो। मैं ही सब देवों का स्वामी हूं। सबका कर्ता, भर्ता, हर्ता एक मात्र मैं ही हूं। समस्त स्थावर, जंगम जगत मेरे आधीन है। यदि यह सब जानकर तुम मेरी शरण में आ जाओ तो तुम्हारा कल्याण होगा। विष्णु जी के यह वचन मैं स्वीकार न कर सका और क्रोधित होकर बोला कि तुम कौन हो? व्यर्थ की बातें मत करो, तुम ईश्वर नहीं हो। यह सत्य है कि अवश्य ही तुम्हारा भी कोई कर्ता होगा। शिव जी की माया से मोहित मुझे उचित अनुचित का भी विवेक न रहा। जिससे मैंने विष्णु जी से अनुचित विवाद कर संघर्ष उत्पन्न कर दिया। इसी बीच भगवान् शिव का लिंग प्रकट हुआ। हम दोनों ने उस देव को अभिवादन करके अपना संघर्ष बन्द किया और नम्रता से प्रार्थना की, कि हे प्रभु! कृपया आप हमें अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान करायें।

आठवां अध्याय

(भगवान विष्णु तथा ब्रह्मा जी को ज्ञान प्राप्ति, ॐ अक्षर से सृष्टि उत्पत्ति के ज्ञान की प्राप्ति, शिव स्वरूप का ज्ञान, महावाक्य सहित पांच मन्त्रों की प्राप्ति तथा दानों का शिव-शिवा को प्रसन्न करने के लिए स्तुति करना।)

मुनिवर नारद जी से ब्रह्मा जी कहने लगे कि हम दोनों का अहंकार दूर हो गया। तभी महाप्रभु शिवजी की परम वाणी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सुनाई दी 'ॐ' 'ॐ' मैं इस परम घोष का अभिप्राय न समझ सका। उसी समय भगवान् विष्णु जी ने इस लिंग के दक्षिण भाग में अकार को और उत्तर भाग में उकार को देखा। तदनन्तर मध्य में मकार को तथा अन्त में ॐ को देखा। यह सब सूर्यमण्डल तथा चन्द्रमण्डल की भांति स्थित थे। जिसके आदि मध्य और अन्त रहस्यमय थे। सत्य आनन्द और अमृत स्वरूप परब्रह्म परायण ही दृष्टिगोचर हो रहा था। परन्तु यहां यह कहां प्रकट हुआ है, अग्नि के तुल्य उसका हम परीक्षण करें और नीचे की ओर से अवलोकन करें। हम उस वेद शब्द से उभय वेष वाले उस विश्वात्मा पर विचार कर ही रहे थे कि उसी समय एक परम ऋषि प्रकट हुए। श्री विष्णु जी ने उस परम ऋषि से पूछा और समझकर एक दूसरे ब्रह्मशरीरी शिव जी का ज्ञान प्राप्त किया। जो चिन्तन की सीमा से परे मन व वाणी से अगम्य केवल एक अक्षर ओंकार से ही जाना जा सकता है। वही एकाक्षर रूप ऋत परम कारण, सत्य, आनन्द अमृत परमेश्वर और परब्रह्म है। इसी एकाक्षर अकार से भगवान्, बीज स्वरूप, हिरण्यमय अण्ड से आविभूत ब्रह्मा जी हैं। उसी एकाक्षर उकार से हरि विष्णु जी परम कारण हैं। फिर उसी मकार से नील-लोहित महादेवजी हैं। किन्तु अकार सबका दृष्टिकर्ता है। मोहन करने वाले उकार हैं। और मकार तो नित्य अनुग्रह कर्ता हैं। मकार बीजी एवं अकार बीज है। अकार रूप प्रधान पुरुष ईश्वर हरि योनि अर्थात् कारण है। और बीजी बीज व योनि यह नारद संज्ञा वाले महादेव ही हैं। इन्हीं ऐश्वर्यरूप कर्तारूप भगवान् के लिंग के अकार जो उकार रूप योनि में गिर कर चारों ओर बढ़ने लगा। उससे हिरण्यमय अज्ञेय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अर्थात् जो जाना न जा सके और अलक्षण अर्थात् लक्षण से रहित एक अण्डा उत्पन्न हुआ। यह हिरण्यमय अण्डा चिरकाल तक जल में अवस्थित रहा। तत्पश्चात् सहस्र वर्ष पर्यन्त भगवान् ने इसे दो भागों में विभक्त कर दिया। तब इस स्वर्णिम अण्डे के एक भाग से द्युलोक या स्वर्गलोक उत्पन्न हुआ तथा अण्डे के नीचे के भाग से पञ्चतत्त्विनी पृथ्वी उत्पन्न हुई। फिर उस अण्डे से ककार नाम वाले चतुर्भुज, समस्त सृष्टिकर्ता, त्रिरूप धारी, विशाल, ऐश्वर्यवान् भव अर्थात् भगवान् शंकर प्रकट हुए। इसलिए यजुर्वेदीय इनको 'ॐ' 'ॐ' ऐसा कहते हैं। यजुर्वेद के ऐसे वचन सुनकर ऋग्वेद तथा सामवेद ने भी सादर 'हे हरे' 'हे ब्रह्मन्' कहा। तब देवताओं के स्वामी उनको सबने यथामति जानकर उत्पन्न मन्त्रों से शंकर भगवान् की वन्दना प्रारम्भ कर दी। इसी बीच मैं और जगत्पालक विष्णु जी एक सुन्दर रूप को देखने लगे जो पञ्चमुख दश भुजा कपूर के समान रंग रूप वाले, विलक्षण कान्तिमय, अनेक आभूषणों से सुसज्जित, महा महिम बलशाली था। और तब उन्हें देखकर हरि कृतकृत्य हो उठे। तब भगवान् महादेव प्रसन्नता पूर्वक अपने अलौकिक शब्दमय रूप से अवस्थित हो गए। उन निर्गुण गुणात्मा का शब्दमय रूप देखकर मैं पुलकित हो उठा तथा फिर हम दोनों ने उनका अभिवादन किया। तब उनसे दिव्य, धर्म प्राप्ति का हेतु, बुद्धि व धन का दाता अड़तीस अक्षरों का मन्त्र उत्पन्न हुआ। उसे गायत्री चारों कालों में उत्तम पंचशित 'ॐ नमः' आठ कलाओं से युक्त कहा गया है जिससे अभिचार अर्थात् मारण आदि कर्म होते हैं तथा जिसका जन्म श्वेत और शान्तिदायक तथा संहार का भी कारण है। अक्षरों की संख्या

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सबमें भिन्न तथा न्यूनाधिक क्रम से होती है उस श्रेष्ठ मन्त्र में इकसठ वर्ण हैं। इसके बाद मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए मन्त्र है जिसमें 'ॐ जूंसः' अथवा 'त्र्यम्बकं यजामहे' आदि का उच्चारण होता है। इसके साथ ही पंचाक्षर 'नमः शिवाय' चिन्तामणि मन्त्र तथा दक्षिण मूर्ति मन्त्र प्रकट हुआ। इन पांचों मन्त्रों को लोकपाल विष्णु ने ग्रहण कर जपना शुरू कर दिया। फिर मैंने और विष्णु ने ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद वेदत्रयी के साथ लेकर पार्वती सहित शिव की प्रसन्न चित्त से स्तुति करना आरम्भ कर दिया।

नवां अध्याय

(विष्णु जी की स्तुति से प्रसन्न होकर शंकर जी का प्रकट होना, ब्रह्मा जी द्वारा शंकर स्वरूप का वर्णन तथा शंकर जी का ब्रह्मा तथा विष्णु को उपदेश देना।)

आगे की कथा सुनाते हुए ब्रह्मा जी बोले कि विष्णु जी द्वारा इस प्रकार वन्दना करने पर महादेव प्रसन्न होकर प्रकट हो गए। उस समय प्रकट हुए शंकर जी के स्वरूप का वर्णन करते हुए ब्रह्मा जी कहने लगे कि महेश्वर के त्रिनेत्र तथा पाँच मुख थे। उनके मस्तक पर शशि शोभायमान था तथा सिर पर जटा बांधे हुए थे। उनका रंग-रूप गौर, नेत्र विशाल, समस्त शरीर पर भस्म लपेटे हुए, दस भुजाओं से युक्त, नीलकण्ठ, विशिष्ट आभूषणों को धारण किए हुए, मस्तक पर भस्म का त्रिपुण्ड लगाए हुए तथा प्रत्येक अंग विशिष्ट रूप से सुन्दर था। तब दयावान महादेव ने अपने श्वास मात्र से मुझे तथा श्री विष्णु को वेद ज्ञान से युक्त किया। इसके बाद विष्णु जी ने उनसे उनके प्रसन्न करने का उपाय पूछा कि मैं आपकी पूजा व तप किस प्रकार से करूं। विष्णु जी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के ऐसे वचन सुनकर शंकर जी प्रसन्न हो गए और बोले—हे देव श्रेष्ठ! तुम दोनों की श्रद्धा से मैं प्रसन्न हूं, तुम दोनों के लिए कुछ भी चिन्ता का विषय नहीं है। मेरा लिंग सर्वथा पूजनीय तथा त्याग करने योग्य है। जिस प्रकार इस समय तुम्हारे द्वारा मेरे लिंग की पूजा किए जाने पर आप दोनों के दुःख नष्ट हो गए उसी प्रकार जो भी आर्तजन मेरे लिंग की पूजा करेंगे वे सब प्रकार के दुःखों से मुक्त हो जायेंगे। इस प्रकार पूजित होने पर प्रसन्न होकर मैं सब मनोरथों को पूर्ण करने वाला तथा विविध फलों को प्रदान करने वाला हूं। इस समय मैं तुम दोनों पर प्रसन्न हूं। तुम दोनों मेरी लौकिक या पार्थिव प्रतिमा बनाकर मेरी सेवा करो जिससे तुम्हें सुख की प्राप्ति होगी। अब मेरी आज्ञा से तुम दोनों स्थावर जंगम का पालन करो। मैं भक्तों में प्रेम रखने वाला हूं। जब तुम व ब्रह्मा मेरी स्तुति करोगे तो मैं उसे सत्य करूंगा। तुम्हारे शरीर से मेरा एक अन्य रूप सत्ता में आयेगा जो रुद्र नाम से प्रसिद्ध होगा। मेरा वह अंश शक्ति व प्रताप में मेरे ही समान होगा। हम दोनों अभिन्न होंगे हमारी पूजा भी एक समान विधि से की जायेगी। शिव रूप सदृश ही मेरा स्वरूप भी होगा। तुम दोनों को इन दोनों में कोई भेद नहीं देखना चाहिए। कार्य में भेद अवश्य हो सकता है किन्तु कारण अभेद है। केवल रुद्र ही नहीं अपितु मैं, आप विष्णु, ब्रह्मा और रुद्र सब अभिन्न हैं इनमें भेद दृष्टि वाले की मुक्ति में बाधा होगी। हे ब्रह्मन्! मैं अब तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूं तुम लोग ध्यान से सुनो—मैं तुम दोनों प्रकृति से अपनी इच्छा से ब्रह्मा की भृकुटि से जन्मा हूं। किन्तु मैं शाश्वत, नित्य शिव रूप कारण रूप, सत्य ज्ञान व अनन्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

स्वरूप हूं। मेरे ऐसे स्वरूप को जानते हुए सदा मेरा ध्यान करना चाहिए। और रुद्र में प्रकृति का तमस् गुण जानना चाहिए। क्योंकि वह विकार भूत है किन्तु वास्तव में रुद्र तामसी नहीं है। अतएव हे ब्रह्मन्! मेरी आज्ञा से सब तुम सृष्टि कारक बनो तथा विष्णु भगवान् सृष्टि के पालक प्रवर्तक तथा मेरा यह रुद्रांश संहारकर्ता होगा। तथा उमा नाम की यह जो प्रकृति रूपिणी परमेश्वरी शक्ति देवी है। उसी की शक्ति वाणी देवी सरस्वती ब्रह्मा जी की पत्नी होगी। प्रकृति एक शक्ति लक्ष्मी का रूप धारण कर सदा विष्णु के आधीन रहेगी और यही शक्ति कभी काली के नाम से रुद्र को प्राप्त होगी। यह दोनों देवियां जिनका कार्य सृष्टि पालन व विनाश होगा परम कल्याणकारिणी शक्तियां कहलाएंगी।

दसवां अध्याय

(भगवान शिव द्वारा ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र के कार्य व आयुबल का विवेचन।)

इसके पश्चात भगवान शंकर विष्णु जी से बोले कि तुम मेरी आज्ञा से सदा समस्त ब्रह्माण्ड में पूजनीय तथा आदरणीय होओगे। ब्रह्मा के द्वारा निर्मित सृष्टि में उत्पन्न दुःख क्लेश को तुम्हीं दूर करोगे। इसके लिए तुम अनेक अवतार ग्रहण कर विश्व का कल्याण करोगे व श्लाघ्नीय होओगे तथा इस प्रकार अपने यश को समस्त सृष्टि में व्याप्त करोगे। हे नारद जी! ऐसा कहने के अनन्तर शिवजी ने मुझ ब्रह्मा का हाथ विष्णु के हाथ में रखते हुए कहा कि तुम कष्ट के समय सदा इनकी सहायता करना तुम सबके स्वामी भोग तथा मोक्ष को देने वाले हो। तुम सब कार्यों के कर्तारूप तथा प्राणरूप होगे। हे विष्णु! तुम पर जब भी दुःख अथवा भय की छाया हो तो मेरे इस रुद्र अंश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का पूजन करना। क्योंकि जो मेरी शरण में आता है सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है। इसके पश्चात महादेव उनके आयुबल का वर्णन करते हुए बोले कि चार हजार युग का एक ब्रह्मा दिन होता है और इतनी ही ब्रह्मरात्रि भी। तीस दिन का एक मास और द्वादश मास का एक वर्ष। इस प्रभाव के अनुसार ब्रह्मा की आयु शतवर्ष होगी। ब्रह्माजी का एक वर्ष विष्णु जी का एक दिवस होगा और इसी आधार पर यह भी सौ वर्ष तक जीयेंगे। इसी प्रकार विष्णु का एक वर्ष रुद्र का एक दिन कहलाएगा तथा इसी मानक आधार पर उनकी आयु भी सौ वर्ष होगी। तब सनातन शिव के मुख से उत्पन्न श्वास में इक्कीस हजार के सौ और छः सौ दिन-रात होते हैं। उनके छः उच्छवास और निश्वास का एक पल, साठ पल की एक घड़ी, और साठ घड़ी का एक दिन-रात होता है। शिवजी के उच्छवास व निश्वास असंख्य हैं तथा अगणित हैं। इसी से शिव का उत्कर्ष नित्य है। अब तुम मेरी आज्ञानुसार मेरे स्वरूप की रक्षा करते हुए विविध गुणों से सृष्टिकार्य करो। शिवजी की आज्ञा को स्वीकार करते हुए विष्णु जी ने उनका अभिवादन करके कहा—हे करुणाकर मैं आप की सब आज्ञाओं को ग्रहण करता हूं तथा उनके पूर्णरूप से पालन करने का वचन देता हूं। तदनन्तर महेश्वर ने अपना कल्याण-कारी हाथ विष्णु के समस्त शरीर पर फेरकर लीन हो गए। हे नारद! उसी समय से इस लोक में शिवलिंग पूजन का आरम्भ हुआ। इस कथा को जब कोई शिवलिंग के आगे पढ़ता है तो निस्संदेह छः मास में वह शिव रूप हो जाता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ग्यारहवां अध्याय

(ब्रह्मा जी द्वारा ऋषि समूह को ब्रह्मा-नारद संवाद के रूप में शिव-पूजन की विधि का संक्षेप में वर्णन।)

ऋषियों ने यह कथा सुनकर सूत जी से कहा—हे सूत जी! आपने महान् आलौकिक तथा दिव्य शिवलिंग की उत्पत्ति का व्यख्यान हमें दिया जो सब दुःखों को नष्ट करने वाला है। हे सूतजी अब हमारी शिव पूजन विधि सुनने की प्रबल इच्छा है जिसके करने से भगवान् शिव प्रसन्न हो जाते हैं तथा जिस पूजन पर चारों वर्णों का अधिकार है उसकी विधि हमसे कहिए जैसी कि आपने व्यासजी से सुनी है। सूतजी ऋषियों को पूजन विधि का वर्णन करते हुए बोले कि आप लोगों ने जो प्रश्न मुझ से किया है ठीक वैसा ही प्रश्न व्यास जी ने सनत्कुमार जी से पूछा था और उसे उपमन्यु ने सुना था। इसी का उत्तर व्यास जी ने मुझे तथा उपमन्यु ने श्रीकृष्ण को दिया। मैं आप सबसे ब्रह्मा द्वारा कथित विधि ब्रह्मा-नारद सवांद के माध्यम से ही कहता हूँ। यह शिव-लिंग पूजन इतने अधिक विस्तार वाला है, कि सहस्र वर्षों में भी पूर्ण नहीं हो सकता अतएव मैं तुमसे सब संक्षेप में कहता हूँ। सर्वप्रथम शिवजी में अनन्य श्रद्धा व भक्ति होनी चाहिये। लिंग पूजन के इच्छुक भक्त को उषाकाल में उठकर गुरु व भगवान शंकर का, समस्त तीर्थों का और हरि भगवान का स्मरण करना चाहिये तथा मेरे में, अन्य देवताओं व मुनियों में ध्यान लगाना चाहिए। तदनन्तर शिवस्तोत्र का पाठ करके उठकर दक्षिण में शौच को जाये। एकान्त में ही शौच करे। पवित्रता के लिये वर्णों के क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्रमशः पांच, चार, तीन व दो बार हस्त प्रक्षालन करे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गुदा और विडा में एक बार बाँए हाथ में दस तथा सात बार दोनों हाथों को मिट्टी लगाकर प्रक्षालन करे। स्त्रियों की शुद्धि शूद्रों के समान मिट्टी से हाथ पैर धोने से होती है। इसके बाद अपने वर्ण के अनुसार दातुन करे। दातुन ब्राह्मण के लिये बारह अंगुल की, क्षत्रिय के लिये ग्यारह अंगुल की तथा वैश्य के लिये दस शूद्र के लिये नौ अंगुल की दातुन का विधान है। षष्ठी अमावस नवमी के दिन उपवास करे। रविवार की संध्या के समय और श्राद्ध के दिन दातुन न करे। शास्त्रोक्त विधि से तीर्थों में मन्त्रोच्चारण के साथ स्नान करे। तब एकान्त व उत्तम स्थान पर ध्यान करे तथा यथा विधि शिवजी का पूजन करे। पूजन में सर्व प्रथम गणेश जी की पूजा करे फिर बैठकर शिवजी की स्थापना करे। तीन बार आचमन करके तीन प्राणायामों के मध्य शिवजी का ध्यान करे। जिस रूप में शिवजी पञ्चमुख, दशभुज आभूषणों से भूषित और बाघ की खाल का वस्त्र धारण किये हुए हैं। शिव पूजा आरम्भ करने से पहले श्रद्धालु प्रणव अक्षर अर्थात 'ॐ' के षड्न्यास से पवित्र हो। उसके बाद पूजन आरम्भ करे। पूजन के लिए अनेक प्रकार की विधियां अपने गुरु से सीखे। महादेव पर सहस्र धाराएं अर्पित करे तथा वेद मन्त्रों का उच्चारण करे। फिर पुष्प व चन्दन से शिवजी को प्रसन्न करे तथा 'ओं' के प्रयोग के साथ उन्हें सुगन्धित सामग्री अर्पित करे। तदनन्तर वेद मन्त्रों के उच्चारण से उनकी स्तुति करे तथा उनको नमस्कार करे। अर्ध्य देने के बाद शिवजी के चरणों में पुष्प चढ़ाए। तत्पश्चात शिवजी को प्रणाम कर पूर्ण सच्चे हृदय से उनकी वन्दना करे। हाथों में पुष्प लेकर उनके सामने खड़े होकर हाथ जोड़ कर विनती करे कि अज्ञान अथवा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ज्ञानवश मैंने आपकी जो पूजा की है वह उत्तम फल प्रदान करने वाली हो ऐसी प्रार्थना करके भगवान शंकर पर पुष्प चढ़ाये तथा स्वस्तिवाचक के अनन्तर भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करे। फिर पूजन की सब सामग्री रखकर प्रणाम करे तथा त्रुटि के लिये क्षमा याचना के साथ पुनः आचमन करे। तब अघोर मंत्र से शिवजी की वन्दना करे तथा उच्च स्वर में उनकी पूजा करे।

बारहवां अध्याय

(ब्रह्माजी का ऋषियों के साथ क्षीर सागर के तट पर विष्णुजी की स्तुति करना, विष्णुजी का सब ऋषियों को उपदेश देना तथा शिव-पूजन का महत्व बताना।)

ब्रह्मा जी के द्वारा यह सब सुनने के बाद नारदजी ने उनसे सब स्पष्ट कर कहने का आग्रह किया। ब्रह्माजी उनकी जिज्ञासा का उत्तर देते हुए बोले—एक बार मैं क्षीर सागर के तट पर अन्य ऋषियों के साथ विष्णु की प्रार्थना करने गया। वहां हम सबने उनकी अत्यन्त श्रद्धा से वन्दना की। तब शंकरजी में रत होकर विष्णु जी ने प्रसन्नता से पूछा कि आप ऋषिगण किस प्रयोजन से यहां आए हैं आपकी क्या इच्छा है मुझे बताएं। तब ब्रह्माजी ने उत्तर दिया हे श्रेष्ठ पुरुष कृपया हमें बताएं कि किस देवता की आराधना पूर्णरूप से दुःखों को नष्ट कर देती है। भगवान् विष्णु इसका समाधान करते हुए बोले—तुम लोग पहले से ही इस विषय में जानते हो और अब भी देख रहे हो फिर मुझसे ऐसा क्यों पूछते हो। किन्तु पुनः जिज्ञासु तुम्हारे व देवताओं के लिए मैं बताता हूँ कि भगवान् शिव ही सब दुःखों को भली भान्ति दूर करने में समर्थ हैं अतएव उनकी ही आराधना करनी चाहिए। दुःखों से निवृत्ति के लिए निरन्तर उनमें ध्यान लगाना चाहिए, उन्हीं की पूजा सदा करनी चाहिए। शिवलिंग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की तथा सकाम शिवजी की पूजा श्रेष्ठतम है। मानव शिवजी की पूजा से सब प्रकार के दुःखों से मुक्त होकर सब सुखों को भोग सकता है। इस प्रकार लिंग पूजन की महिमा को जान कर देवताओं ने विष्णु जी को प्रणाम किया। तथा सब कार्यों की पूर्ति के लिए लिंगों की प्रार्थना की। तदनन्तर विष्णुजी ने विश्वकर्मा को बुलाकर कहा कि मैं तो जीवोद्धार के कार्य में रत हूँ अतएव तुम मेरी आज्ञा से देवताओं के लिए शिवलिंगों की कल्पना करो। तब विष्णु की आज्ञानुसार देवताओं के लिए लिंगों की कल्पना करके उन्हें लिंग प्रदान किए। इन्द्र को पद्मराग मणि का लिंग, कुबेर को स्वर्णिम, धर्मराज को पीतमणि का, वरुण को श्याम वर्ण का, विष्णु को इन्द्रनीलमणि का तथा ब्रह्माजी को हिरकमय वसुओं व विश्वदेवा को चांदी का लिंग प्रदान किया। अश्विनीकुमारों के लिए पीतल, लक्ष्मी के लिए स्फुटिक आदित्यों के लिए ताम्र, चन्द्रमा के लिए मोती तथा ब्राह्मणों के लिए वज्र लिंग का निर्माण किया।

ब्राह्मणों की स्त्रियों को मृत्तिका का, नागों को चन्दन का, देवी को मक्खन का, योगी को भस्म का, यक्षों को दही का, छाया को मिट्टी का लिंग प्रदान किया। इस प्रकार सबको लिंग प्रदान किए गये। लिंग प्राप्ति के बाद में विष्णुजी से पूछकर देवताओं को इस लिंग की फलदायिनी पूजन विधि का वर्णन किया और कहा कि ज्ञान प्राप्ति तक सभी को इसी प्रकार विधि अनुसार लिंग की पूजा करनी चाहिए।

तेरहवां अध्याय

(ब्रह्मा जी द्वारा नारद जी को शिव-पूजन विधि का वर्णन करना।)

तत्पश्चात् ब्रह्मा जी को सब कामनाओं को पूरा करने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वाली सुखों को प्रदान करने वाली श्रेष्ठ शिव-पूजन विधि नारद जी को कहने लगे। प्रातःकाल उषाकाल को उठकर शिव-शिवा को स्मरण करे और श्रद्धा से हाथ जोड़कर उनके आगे नतमस्तक हो प्रार्थना करे हे महादेव! आप हृदय में निवास करने वाले उठकर समस्त लोकों का उद्धार कीजिए। हे देव! मैं आपको केवल प्रेरणा मात्र देने वाला हूं। ऐसे श्रद्धा भाव से कहकर गुरु के चरणों का स्मरण करना चाहिए तथा मल-विसर्जन आदि क्रिया को करके मिट्टी व जल के प्रक्षालन से देह को पवित्र कर दातुन करनी चाहिए। सूर्योदय से पूर्व दातुन करके जल से सोलह बार कुल्ला करे तथा षष्ठी अमावस नवमी रविवार आदि को दातुन न करे। तब यथाकाल यथा स्थान घर अथवा नदी में स्नान कर ले। रविवार, श्राद्ध, संक्रान्ति, ग्रहण, महादान और तीर्थ व व्रत के दिन गर्म जल से स्नान न करे। पवित्र होने पर भी गर्म जल से स्नान बहिष्कार करे। वारों के अनुसार तेल का प्रयोग करे फिर पूर्व की ओर मुख कर स्नान करे देवताओं तथा पितरों को तर्पण दे। स्वच्छ एवं पवित्र वस्त्र धारण करे। मृगादि की चर्म पर बैठकर आसन लगाये तथा मस्तक पर भस्म का त्रिपुण्ड धारण करे भस्म के अभाव में जल का ही त्रिपुण्ड लगाये। त्रिपुण्ड लगाने के बाद रुद्राक्ष पहने। फिर अपने कार्यों की पूर्ति के लिए शिव जी की पूजा करे। फिर मन्त्रोच्चारण के साथ तीन बार आचमन करे। गुरु द्वारा सीखी हुई विधि से सब पूजा सामग्री यथा शक्ति समीप रखे और धैर्य से जल, गन्ध व अक्षत से युक्त पात्र ग्रहण कर दुःखों को दूर करने वाले भगवान् शिव की पूजा करे। इसके बाद पार्वती जी की पूजा करे। चन्दन कुमकुम तथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अनेक सुगन्धित पुष्पों तथा नैवेद्यों से उनकी व शिवजी की आराधना करे। इसके बाद गुरु से और भी सब प्रकार की पूजा विधियां सीखकर वेदमन्त्र के साथ शिवजी को स्नान कराके पूजा करे। तब शिवजी की धीरे-धीरे परिक्रमा करके उन्हें प्रणाम करे व भक्ति तथा विनय पूर्वक पुष्प चढ़ाये। तथा विनय पूर्वक प्रार्थना करे। हे महादेव! यथामति अज्ञानवश अथवा ज्ञानवश मैंने जैसी आपकी आराधना की है वह उत्तम फल देने वाली हो। मैं मन व प्राण से आपका ध्यान करता हूं। अतएव हे पार्वतीनाथ आप मुझ पर प्रसन्न हों मैं आपकी शरणागत हूं। ऐसा कहकर पुष्प चढ़ाये और कहे हे शिवजी! अब आप अपने परिवार सहित अपने निवास स्थान पर जाएं तथा कृपा करके हे प्रभु! पूजा के समय फिर यहां उपस्थित हों। इस प्रकार हे ऋषियो! नारद ब्रह्मा के संवाद के माध्यम से एक अन्य शिव पूजन विधि मैंने आप से कही अब आगे को क्या जानने की जिज्ञासा है।

चौदहवां अध्याय

(सूत जी का ऋषियों को पुष्पादि से शिव-पूजा करने की विधि बताना।)

सूत जी के ऐसा कहने पर ऋषि बोले—हे सूत जी! अब किन-किन फूलों से शिवजी की पूजा करने पर क्या-क्या फल प्राप्त होते हैं इसका वर्णन हम से करें। सूत जी बोले—इस प्रश्न का उत्तर जो ब्रह्माजी ने नारद जी को जो दिया था वही मैं तुम से कहता हूं तुम लोग ध्यान से सुनो। कमल पत्र, बेलपत्र, शतपत्र तथा शंखपत्र से शिवजी की पूजा करने से धन की प्राप्ति होती है। बीस कमल का एक प्रस्थ और एक सहस्र बेलपत्रों का अर्धप्रस्थ होता है। सोलह पल का एक-एक प्रस्थ और एक पल दस टंक का होता है। इस परिमाण के अनुसार इतनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सामग्री से भक्त पूजन करे तो समस्त कार्यों की सिद्धि होती है। यदि निष्काम पूजा की जाये तो शिव तत्त्व को पाकर वह शिव-रूप हो जाता है। दस करोड़ पार्थिव शिवलिंगों के पूजन से राज्य प्राप्ति होती है। शिवलिंग पर फूल, चावल और चन्दन तथा अखण्ड जल की धाराएं अर्पित करने पर शिवजी प्रसन्न होते हैं। प्रत्येक बार प्रत्येक मन्त्र में बेलपत्र अथवा पुष्प अर्पित करे। शंख तथा पुष्पों से विशेष रूप से शिवपूजन दोनों लोकों में कामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा श्रेष्ठ कहा गया है। फिर धूप नैवेद्य आदि पूर्वक नमस्कार कर क्षमायाचना करनी चाहिए। इस प्रकार से पूजन करने पर राज्य तथा सुख भोग की प्राप्ति होती है। बन्धन से मुक्ति के लिए इससे आधी पूजा करनी चाहिये। रोग निवृत्ति के लिए पचास कमल, कन्याप्राप्ति के लिये पच्चीस सहस्र कमल, विद्या प्राप्ति के लिये घी, उच्चाटन के लिये भी घी, मारण में एक लक्ष से, मोहन में आधे लक्ष से, राजा को वश में करने के लिये दस लाख पुष्पों से पूजा तथा इतना ही जप करे। यश के लिये भी इतना ही तथा ज्ञान प्राप्ति के लिये एक करोड़, शिव दर्शन की इच्छा के लिये इससे आध से अर्चना करे। कार्य के फल सिद्धि के लिये मृत्युञ्जय का जप करे जिससे पांच लाख जप से शिवजी प्रसन्न हो जाते हैं। कुश से पूजा करने पर मुक्ति मिलती है। एक लाख जप से सर्वज्ञानी हो जाता है। तथा एक लाख दूर्वा से आयु और एक लाख धतूरे के पुष्पों से पुत्र की प्राप्ति होती है। आक के पुष्प अर्पित करे, शत्रु नाश की इच्छा से जवा पुष्प से अर्चना करे, कनेर पुष्प के द्वारा पूजा करने से रोग निवृत्ति व धन व वस्त्र की प्राप्ति होती है। हर सिंगार के पुष्पों की अर्चना सुख सम्पत्ति की वृद्धि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करती है। राई के पुष्पों से शत्रु का नाश तथा इसके एक लाख पुष्पों से महत् फल की प्राप्ति होती हैं। शिवजी को सभी पुष्प प्रिय हैं केवल चम्पा व केतकी के पुष्पों को शिवजी पर चढ़ाने का निषेध है। हे ऋषियो पुष्प पूजन के फल के बाद अब चावल अर्पित करने का परिमाण तथा फल सुनो। चावलों से पूजा करने पर धन सम्पत्ति की वृद्धि होती है किन्तु चावल खण्डित न हों तथा विधि विधान से भक्ति-भाव से अर्पित करना चाहिये। चावल की संख्या भी एक लाख, यह छः प्रस्थ या दो पल होना चाहिए। चावल से रुद्र की पूजा करे और सुन्दर वस्त्र शिवजी पर चढ़ाए, चावल अर्पित करने की यह श्रेष्ठ विधि है। इसके बाद एक श्रीफल, गन्ध और पुष्प आदि शिवजी पर चढ़ाये। फिर धूप आदि प्रदान करे तथा पूजन का फल प्राप्त करे। दो माशे रुपये की संख्या से दक्षिणा दे। यह सब करने के लिये यथा शक्ति का प्रावधान ह। इस प्रकार रुद्र सहित जब मन्त्रपूर्वक शिवजी की पूजा हो जाए तो बारह ब्राह्मणों को भोजन कराए। यह मन्त्र की एक सौ विधियां कही गई हैं। महापाप के नाश के लिए एक लाख तिल चढ़ाए। ग्यारह पल या चौंसठ माशा एक लाख के बराबर होता है। कल्याण का इच्छुक भी पूर्वोक्त विधि से पूजन करके ब्राह्मणों को भोजन कराए। यह पूजन बड़े-बड़े पापों व दुःखों को दूर करने वाला है। एक लाख अथवा आठ प्रस्थ जौ अर्पित करने से सुख में वृद्धि होती है। इस प्रकार प्रत्येक प्रकार की कार्य सिद्धि के लिए प्रत्येक प्रकार की पूजा करे। केवल जल की धारा चढ़ाने से ज्वर की शान्ति होती है। इसमें शत रुद्रिय मन्त्र, ग्यारह रुन्द्र मन्त्र रुद्र जाप, रुद्र सूक्त, षडंग, महामृत्युञ्जय और गायत्री के अन्त में नमः लगाकर नामों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से अथवा प्रणव से अर्थात 'ॐ' मन्त्र से तथा दूसरे शास्त्रोक्त मन्त्रों से जल की धारा अर्पित करे। जल धारा से शिव पूजन शुभ व सन्तान देने वाला है। गुरु से सीख कर इसे करे। यदि घर में नित्य कलह तथा अशान्ति हो तो शिवजी पर जल की धारा देने से सब दुःख दूर हो जाते हैं। यदि शत्रु को नष्ट करना हो तो शिवजी पर तेल की धार चढ़ाए। शहद से शिवजी की पूजा करने से राजा हो जाता है। गन्ने के रस से सब सुख शांति होती है। यदि गंगाजल की धार दे तो भोग व मोक्ष प्राप्त होते हैं। हे मुनिवर! आपकी जिज्ञासा के अनुसार मैंने आपको सब बता दिया जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सब कामनाओं को पूरा करने वाला तथा कल्याणकारी है। जो स्कन्ध व उमा पार्वती जी सहित शिवजी की विधिवत पूजा करता है वह सब प्रकार के सुखों को भोग शिवलोक को प्राप्त होता है।

पन्द्रहवां अध्याय

(भगवान् विष्णु व नारद जी का अपने स्वरूप को त्यागकर हंस व वराह का रूप धारण करके सृष्टि की रचना करना।)

सूत जी बोले—नारद जी ने उस श्रेष्ठ के लिए ब्रह्मा जी को धन्यवाद किया तथा उसके अनन्तर अन्य चरित्र व सृष्टि के प्रकार को जानने की इच्छा व्यक्त की। ब्रह्मा जी बोले—आपने अत्यन्त उत्तम प्रश्न पूछा है इसके बाद की कथा जैसी मैंने सुनी है मैं तुमसे कहता हूं। जब भगवान् शिव अन्तर्ध्यान हो गए। तब मैंने व विष्णु ने प्रसन्न होकर मैंने हंस और विष्णु ने वराह का रूप धारण करके सृष्टि रचने का विचार किया। हंस व वराह का रूप धारण करने का प्रयोजन बताते हुए ब्रह्मा जी बोले कि हंस की ऊपर जाने की गति निश्चय होती है और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तत्त्व ऋतत्व विभाग में उसे नीर क्षीर जैसा ज्ञान करने की प्रज्ञा होती है। हंस ज्ञान व अज्ञान का भेद करने में योग्य है। यही कारण था कि मैंने ब्रह्मा का रूप तजकर हंस का रूप धारण किया। और वराह की गति नीचे लाने में निश्चय होती है इसी कारण विष्णु ने स्वरूप को तजकर वनचर वराह का रूप धारण किया। इस रूप से विष्णु जी ने वराह-कल्प या भव-कल्प रचना चाहा उसी दिन से यह वराह कल्प कहलाया। इस प्रकार हे नारद! यह विष्णु व ब्रह्मा के वराह व हंस रूप धारण करने का कारण तुम्हें बताया अब सृष्टि रचना के प्रकार का वर्णन तुमसे करता हूं। जब शिवजी अन्तर्ध्यान हो गए तब मैंने शिवजी को प्रणाम किया तथा विष्णु जी के ज्ञान को प्राप्त कर मेरा मन सृष्टि रचना में रम गया। तदनन्तर उपदेश देकर विष्णु जी भी अन्तर्ध्यान हो गए। तथा ब्रह्माण्ड को छोड़कर वैकुण्ठ चले गए। तत्पश्चात् मैंने सृष्टि की रचना की इच्छा से शिव तथा विष्णु का स्मरण कर जल का निर्माण किया। उस उत्पन्न जल में एक अञ्जलि जल डालकर चौबीस तत्त्वों से युक्त एक अण्ड उत्पन्न किया जो विराट बन गया। उसे विराट हुआ देखकर मुझे बहुत संशय हुआ और मैंने बारह वर्ष का भयंकर तप किया। यह तप मैंने केवल विष्णु जी को ध्यान में रखकर किया। इस पर प्रसन्न होकर विष्णु जी प्रकट हो गए तथा मेरे अंशों का स्पर्श कर बोले—हे ब्रह्मा! शिव जी के प्रताप से मैं सब कुछ देने योग्य हूं। अतएव जो इच्छा हो मांगो। मैंने ब्रह्मा को उत्तर दिया—यह जो चौबीस तत्वों से युक्त अण्ड विराट हो गया है इसमें चेतन तत्व का अभाव है इसमें चैतन्य का संचार कर दीजिए। तब ऐसा सुनकर विष्णु शिवजी का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

स्मरण कर उस अण्ड में अनन्त रूप से प्रविष्ट हो गए। तब उस अण्ड में से हजारों सिर, हजारों नेत्र, हजारों चरण सहित अवयव निकलकर पृथ्वी के सब ओर व्याप्त हो गए और विष्णु जी सातों लोकों के स्वामी हो गए। शिवजी ने उन्हें कभी न नष्ट होने वाले कैलाश के ऊपर स्थान दिया। इसके बाद मैं पूर्णरूप से सृष्टि रचना में लीन हो गया। सर्वप्रथम मैंने पाप की सृष्टि की जो अविद्या तथा तमोगुण प्रधान्य था। उससे स्थावरों को उत्पन्न किया। तब मूल सृष्टि की रचना के लिए शिवजी का स्मरण करने लगा। उससे मैंने तिरछी गति वाले प्राणी उत्पन्न किए। इसके बाद सात्विक देवताओं की रचना की। इससे भी मुझे अपनी कार्य सिद्धि की सन्तुष्टि न मिली तो शिवजी की प्रेरणा से मैंने रजोगुण प्रधान मानव की सृष्टि की। इस प्रकार पांच प्रकार की सृष्टि रचने के मेरे मन में सर्गों की रचना का विचार उठा। इससे महत् सर्ग, सूक्ष्म भौतिक सर्ग और वैकारिक सर्ग की उत्पत्ति हुई। इस तीसरे वैकारिक सर्ग से आठ प्रकार की प्राकृतिक सृष्टि हुई और इसी प्रकृति के विकार से नवें कुमार सर्ग का प्रादुर्भाव हुआ जो अवर्णनीय है। फिर द्विजात्मक सर्ग की उत्पत्ति हुई जिसमें से महान शौनकादि का कौमार सर्ग उत्पन्न हुआ। यह शौनकादि मेरे महान त्याग भाव से युक्त मानस पुत्र थे। जब मैंने उन्हें सृष्टि उत्पन्न करने का आदेश दिया तो उन्होंने इसमें विरक्ति दिखाई जो मेरे क्रोध का कारण हुई। मेरे क्रोध की सीमा यहां तक थी कि मेरी आंखों से आँसू गिरने लगे। तब विष्णु जी ने मुझे शिवजी का तप करने का परामर्श दिया। इसके बाद मैंने भयंकर तप किया। जिसके फलस्वरूप मेरी भौंह तथा नासिका के मध्य से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

त्रिभूति अर्धनारीश्वर महादेव पूर्णता के कारण सबके स्वामी, नित्य तेजपुण्ड स्वरूप, पार्वतीनाथ कर्ता नीलकण्ठ भगवान् शंकर प्रकट हुए। उनका दर्शन पाकर मैं प्रसन्नता से बोला—हे देवेश! अब आप जन्म मृत्य से युक्त सृष्टि की रचना कीजिए। इस पर भगवान् शंकर ने हंसकर कहा—मैं ऐसे अनुचित सृष्टि नहीं करूंगा जो कर्मफल के कारण बन्धन में पड़े। मैं तो दुःख से निवृत्ति देने वाला हूं। दुःखियों को मुक्ति देने वाला हूं तथा गुरु के माध्यम उन्हें भली भांति ज्ञान देता हूं। मैं ऐसी प्रजा की सृष्टि नहीं करूंगा यह कार्य आप ही करें। मेरी आज्ञा से तुम्हें माया की कमी न होगी। ऐसा कहकर भगवान् शंकर अन्तर्ध्यान हो गए।

सोलहवां अध्याय

(ब्रह्माजी द्वारा सूक्ष्म भूतों का पंचीकरण से स्थूल सृष्टि उत्पन्न करना, मनु व शतरूपा की सृष्टि तथा उससे चराचर जगत् की सृष्टि का वर्णन।)

आगे की सृष्टि रचना का क्रम सुनाते हुए ब्रह्माजी कहने लगे—इसके बाद मैंने सूक्ष्म आकाश, पृथ्वी आदि पंचभूतों का पंचीकरण की क्रिया से स्थूल भूतों की पर्वत, समुद्र, वृक्षादि की सृष्टि की तथा कालादि से भी युगों तक के स्थूल कालों की रचना की तथा अन्य बहुत से पदार्थों को उत्पन्न किया। किन्तु इससे भी मैं सन्तुष्ट न था। शिव-शिवा की प्रेरणा से मैंने अपने नेत्रों से मरीचि हृदय से भृगु, सिर से अंगिरा और कर्ण से पुलह को, उदर से पुलस्त्य, समान से वसिष्ठ, आँख से क्रतु, कानों से अत्रि, प्राण से दक्ष, अंक से नारद तुम्हें और अपनी छाया से कर्दम ऋषि को उत्पन्न किया। इसके साथ ही मुक्ति के साधन धर्म की सृष्टि की। तब मुझे अपने कार्य-सिद्धि से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सन्तोष हुआ। इसके बाद मैंने अपने शरीर के दो भाग करके एक नारी और दूसरे से पुरुष को उत्पन्न किया। वह पुरुष स्वयंभू मनु तथा नारी शतरूपा नाम की परम तपस्विनी तथा योगिनी हुई। उस परम सुन्दरी से विवाह करके मनु ने मैथुन द्वारा सृष्टि की रचना की। शतरूपा से मनु के दो पुत्र प्रियव्रत और उत्तानपाद तथा तीन पुत्रियाँ आकूति, देवहूति और प्रसूति उत्पन्न हुईं। आकूति को रुचि नामक मुनि तथा देवहूति को कर्दम व उत्तानपाद की छोटी बहन प्रसूति को दक्ष प्रजापति को दिया। आकूति से रुचि ने यज्ञ को दक्षिणा से युक्त उत्पन्न किया जिसके बारह पुत्र उत्पन्न हुए। देवहूति से कर्दम मुनि के बहुत से पुत्र उत्पन्न हुए। दक्ष व प्रसूति के द्वारा चौबीस कन्याएं उत्पन्न हुईं जिनमें से दक्ष ने श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, तुष्टि, पुष्टि, मेधा, क्रिया बुद्धि, लज्जा, वसु, शान्ति, सिद्धि, कीर्ति इन तेरह को धर्म को दिया। तथा ख्याति सत्पथ, संम्भूति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनुरूपा, ऊर्जा, स्वाहा और स्वधा को भृगु, भव, मरीचि, अंगिरा, मुनि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अत्रि, वसिष्ठ, वह्नि और पितर को दिया। इनकी सन्तानों से समस्त सृष्टि भर गई। तब शिवजी की इच्छा से प्राणियों के कर्म फल के आधार पर अनेक वर्गों व जातियों की सृष्टि हुई जिनमें ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ थे। कल्प के भेद से दक्ष की साठ कन्याएं कही गई हैं जिनकी सन्तानों से तीनों लोक भर गये। इस प्रकार शंकरजी की आज्ञा से मैंने ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। शिवजी ने अपने त्रिशूल की नोंक से सती की रक्षा की जिनका विष्णु जी ने अपने प्रभाव से पहले ही निर्माण किया था जो पुनः जनहित के लिए वे दक्ष से प्रकट हुई थीं। इस प्रकार शिवजी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ने भक्तों के कल्याण के लिए बहुत से कार्य किए जिनका दाहिना अंग बैकुण्ठ तथा बायां अंग मैं हूं। इस प्रकार मैं ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र यह तीन गुण इधर प्रधान हुए। उधर सत्व रजस् तमस् तीनों गुणों से जिसका प्रधान मैं हूं रजोगुणयुक्त सुरादेवी, सतोगुण वाली सती और तमोगुणी लक्ष्मी प्रकट हुईं। सती के परा और शिवा यह तीन रूप हैं। जिनमें सती रूप में यह शिवजी की परीनीता हुईं तथा पिता दक्ष के यज्ञ में शरीर त्याग कर नारद तुम से अपने पद को प्राप्त हुईं, पार्वती के रूप में हिमालय की पुत्री हुई तथा तप बल से इन्होंने शिवजी को प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त इनके कालिका, चण्डिका भद्रा, चामुण्डा, विजया, जया, जयन्ती, भद्रकाली, दुर्गा, भगवती, कामाख्या, कामदा, अम्बा, मृडानी और सर्व मंगलालिक नाम प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार इन तीनों गुणमय देवियों तथा देवताओं ने मिलकर अनेक प्रकार की उत्तम सृष्टि की। इसके बाद ब्रह्माजी ने नारद जी को सम्बोधित करके कहा कि शिव की आज्ञा से मैं ही सृष्टिकर्ता हूं जैसा कि मैंने तुमसे वर्णन किया है।

सत्रहवां अध्याय

(ब्रह्मा जी का नारद को शिवजी को कैलाश में कुबेर से मित्रता का कारण बताते हुए प्रसंगवश गुणनिधि की कथा व चरित्र का वर्णन करना।)

इस प्रकार नारद-ब्रह्माजी के संवाद के माध्यम से सृष्टि रचना सुनाते हुए सूत जी बोले—इसके बाद नारदजी ने नम्रता से ब्रह्माजी से पूछा कि शिवजी कैलाश कब गए और कुबेर जी से उनकी मित्रता कैसे हुई और वह क्या कुछ हुआ उसका वर्णन आप मुझसे करें। ब्रह्मा जी उसे सब वृतान्त बताते हुए बोले—काम्पिल्य नगरी में यज्ञदत्त एक ब्राह्मण निवास करता था। वह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बहुत पण्डित ज्ञानी तथा यज्ञादि में निपुण था। उसका गुणनिधि नामक एक पुत्र हुआ। गुणनिधि की आयु आठ वर्ष की हो चुकी थी और उसका यज्ञोपवीत हो चुका था। वह पुत्र भी अनेक प्रकार की कलाओं का ज्ञाता था। किन्तु वह संयोगवश जुआरी, खेल-कूद करके व्यर्थ समय बिताने वालों तथा गाने बजाने वालों की संगति में पड़ गया। यह सब गुणनिधि अपने पिता से छिपकर करता था। यज्ञदत्त तो सदैव अपने गृह कार्यों यज्ञादि में व्यस्त रहता था, जब भी कभी अपनी पत्नी से वह गुणनिधि के विषय में पूछता तो वह बहाना बना देती कि इस समय वह घर नहीं है स्नान करने गया है अथवा पूजन के लिए गया है। एक मात्र पुत्र होने के कारण वह स्नेह-वश उसके पिता को धोखा देती रहती थी। कालान्तर में गृह्य सूत्रों के अनुसार यज्ञदत्त ने उसका विवाह कर दिया। गुणनिधि की माता सदा उसे इन कामों से रोकती तथा कहती थी कि तुम्हारे पिता बहुत विद्वान व क्रोधी हैं यदि उन्हें तुम्हारे इन निन्दनीय कार्यों का ज्ञान हो गया तो वह मुझे व तुम्हें दोनों को न क्षमा करेंगे। तुम उच्च कुल में उत्पन्न हुए हो ऐसी आदतें तुम्हें शोभा नहीं देतीं इनको छोड़ देने में ही तुम्हारी भलाई है। किन्तु इसका उस पर कोई प्रभाव न हुआ। एक बार वह घर से पिता की अंगूठी चुराकर ले गया तथा किसी जुआरी को बेच दी। संयोगवश उसके पिता ने वह अंगूठी जुआरी के हाथ में देख ली और उसे उसके विषय में पूछा। तब जुआरी ने उसको बताया कि यह अंगूठी उसने चुराई नहीं अपितु उसके पुत्र गुणनिधि ने ही लाकर दी है। इसके साथ ही उसे यह बताते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हुए कि गुणनिधि ने और भी बहुत सी चीजें अपने साथी जुआरियों को लाकर दी हैं। आश्चर्य व्यक्त किया कि इतना ज्ञानी तथा विद्वान होते हुए भी यज्ञदत्त अपने पुत्र के चरित्र से अनभिज्ञ कैसे है। यह सुनकर यज्ञदत्त लज्जित होकर चला आया। घर आते ही उसने अपनी पत्नी से पूछा—हे धूर्ता! तुम्हारा गुणनिधि पुत्र कहां गया है। इसके साथ ही मेरी वह अंगूठी दो जिसे मैंने उबटन करते तुम्हें दी थी। पत्नी ने कहा—मुझे स्मरण नहीं कि मैंने वह कहाँ रख दी है। इस पर यज्ञदत्त ने अपनी पत्नी को धिक्कारते हुए कहा—मुझे तेरी सत्य भाषण कला का ज्ञान है तथा तेरा पुत्र भी चरित्रहीन है जिसके विषय में तुमने मुझे कभी भी ज्ञान न होने दिया। इस प्रकार कहते हुए वह घर की अन्य वस्तुओं को देखने लगा किन्तु उसे कोई भी वस्तु न मिली क्योंकि वह सब वस्तुएं उसके पुत्र ने जुए में हार दी थीं। तथा माता भी ममता के कारण पुत्र की करतूतों को छिपातीरही थी। यज्ञदत्त ने सब जानकर अपनी पत्नी को दोषी मानते हुए अंजलि में जल लेकर पुत्र व पत्नी का त्याग कर दिया और किसी वेदपारंगत ब्राह्मण की कन्या के साथ पुनः विवाह कर लिया।

अठारहवां अध्याय

(गुणनिधि का शिव भोग चुराते हुए पकड़ा जाना तथा शिव-पार्षद की घोषणा से उसका उद्धार।)

ब्रह्मा जी बोले—पिता द्वारा त्यागे जाने पर गुणनिधि घर से दूर जाकर अपने भविष्य का विचार करने लगा। अपने पिता की विद्वता, माता के स्मरण तथा स्वयं के निन्दनीय कार्यों पर विचार कर पश्चाताप करने लगा। तृष्णा व क्षुधा से व्या-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कुल एक बार संध्या के समय शिव-मन्दिर के पास जाकर बैठ गया। जहां शिवरात्रि के व्रत के अवसर पर कोई सपरिवार समस्त सामग्रियों से युक्त पूजन के लिए आया हुआ था। जब वह लोग विधिवत् पूजन कर चुके और घर लाए हुए भोग आदि उन पर अर्पित कर चुके, तो कुछ समय विश्राम के लिए वह लोग वहां लेट गए। उधर मन्दिर के पीछे छिपा हुआ वह गुणनिधि उस भोग को लेने का अवसर देखने लगा। जैसे ही उनकी आंखें नींद से बोझिल हुईं वह धीरे-धीरे मन्दिर में घुस गया तथा शिवजी पर चढ़े हुए सब पकवान उठाकर भाग गया। लेकिन उसके भागने की आहट से उन लोगों की आंख खुल गई। उन्होंने शोर करते हुए उसका पीछा किया नगर के लोगों ने भी उसका पीछा किया इस प्रकार नगर वासियों तथा रक्षकों से ताड़ित हुआ वह अन्धा हो गया। अभी उसने चुराए हुए भोग को मुंह भी नहीं लगाया था कि यमदूतों ने आकर उसे पकड़ लिया वे उसे ले जाने ही वाले थे कि शिव जी के अनुचर भी उसे लेने आ गए और यमदूतों से बोले कि इस शिव भक्त ब्राह्मण को छोड़ दो क्योंकि अब यह पाप मुक्त हो चुका है। यमदूतों ने शिवजी के अनुचर का अभिवादन कर कहा यह बहुत दुष्ट, पाप का भागी निन्दनीय आचार युक्त है। यह छोड़ने योग्य किसी प्रकार भी नहीं। इसने शिवजी का नैवेद्य तक चुरा लिया है और शिव के नैवेद्य का भक्षण करने वाला पाप का भागी व दण्डनीय होता है किन्तु फिर भी धर्म के विषय में आप ज्ञानी हैं आपके अनुसार यदि इसमें धर्म का कुछ भी अंश हो तो हमें कहिए। तब शिवजी के अनुचर ने कहा—निन्दनीय व पाप कर्म करने वाले इस गुणनिधि के पाप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रहित कर्म इस प्रकार हैं। इसने शिव-लिंग के सिर पर गिरती हुई दीपक की ज्योति की रक्षा की तथा अपने वस्त्र की बत्ती बनाकर उसे प्रज्जवलित रखा। भूखे रहकर व्रत करके शिव के गुणों का श्रवण किया तथा उनका दर्शन किया। तथा ध्यान के समान ही मन्दिर के द्वार पर बैठा रहा। अतएव यह शिवलोक का अधिकारी है। वहां कुछ दिन रहकर पाप नष्ट हो जाने पर कलिंग देश का राजा बनेगा। यह ब्राह्मण शिवभक्त व शिव का प्रिय है यह हमारे साथ शिवलोक जायेगा। अब आप लोग अपने यमलोक को जाओ। उसका ऐसा कथन सुनकर यमदूत अपने लोक चले गए। तथा यमराज ने प्रसन्नता से उनकी बात स्वीकार कर ली। इस प्रकार वह गुणनिधि नामक ब्राह्मण शिव अनुचर के साथ शिवलोक गया वहां शिवजी व उमा देवी की आराधना से पाप मुक्त होकर कलिंग का राजा बना तथा अरिन्दम नाम से विख्यात हुआ। संयोगवश की गई शिवजी की सेवा से उसके समस्त पाप नष्ट हो गए। हे नारद! गुणनिधि के उद्धार का यह आख्यान जो सुनेगा। उसके सब कार्य सफल होंगे तथा सुख की प्राप्ति होगी। अब मैं तुम्हें महादेव शिवजी व कुबेर की मित्रता का प्रसंग सुनाता हूं।

उन्नीसवां अध्याय

(गुणनिधि का अलका पुरी में कठोर तप करना, उसे शिव-शिवा का दर्शन व क्रूर दृष्टि के कारण उसकी बाईं आंख का नाश व पार्वती जी के वर से कुबेर पद की

ब्रह्मा जी आगे की कथा सुनाते हुए बोले—जब मेरा पहला पद्म कल्प पूर्व हुआ तब मेरे मानस पुत्र पुलस्त्य से विश्रवा का जन्म हुआ जिसके पुत्र का नाम वैश्रवण था। उसने अलकापुरी का भोग किया तथा बाद में शिव के लिए भयंकर तप किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मेघवाहन कल्प के आरम्भ के समय उस अलकापुरी के राजा वैश्रवण के तप को देखकर शिवजी ने उसे साक्षात् दर्शन दिया तो उसके नेत्र बन्द हो गये। उसने कहा हे महेश्वर! आपके अपरिमित तेज के आगे मेरे नेत्र निमिलित हो गए हैं कृपया अपने चरण-कमलों के दर्शन के लिए मेरे नेत्रों को बल दें। अब हे नारद! यह वैश्रवण वही गुणनिधि था जो शिवजी की आराधना से अलकापुरी का राजा बना। किन्तु जब उसने शिवजी की पार्वती जी को देखा तो उनके प्रति उसने क्रूर दृष्टि से देखा जिसके फलस्वरूप उसका बाँया नेत्र नष्ट हो गया। यह देखकर शिवजी ने पार्वती जी से कहा यह तुम्हारा पुत्र है यह तुम्हारी ओर क्रूर दृष्टि से नहीं देखता अपितु तुम्हारे तप की प्रशंसा करता है अतः मैं इसे धन का स्वामी बनाता हूं। यह गुह्यको का स्वामी होगा। ऐसा कहते हुए भगवान् शंकर ने उसे धनपति बना दिया। तथा शिवा से मिलाकर कहा कि यह तुम्हारी माता हैं इन्हें प्रणाम करो। तत्पश्चात् उमा से बोले—देवी! यह तुम्हारा पुत्र है इस पर प्रसन्न होओ। पार्वती जी प्रसन्न होकर गुणनिधि से बोलीं—हे पुत्र! तुम्हारी सदा शिवजी में दृढ़ आस्था हो। किन्तु बाएं नेत्र से तिरछे होकर तुमने मुझे देखा इसलिए तुम्हारा बायां नेत्र नहीं होगा। किन्तु देवेश के आदेशानुसार तुम धनपति बनोगे। तब भगवान् शंकर ने विश्वेश्वर नामक स्थान में कुबेर बना दिया। उसी अलका पुरी नामक नगरी में ही अपना कैलाश नाम रखा।

बीसवां अध्याय

(कुबेर का कैलाश पर्वत पर कठिन तप करना व शिवजी और सभी देवताओं का वहां पहुंचना।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तदनन्तर सूत जी बोले—इसके बाद ब्रह्मा जी नारद जी को वह आख्यान सुनाने लगे जिसके कारण कुबेर कैलाश पर तप करने आया व उसके तपोबल को देखकर शिवजी भी वहाँ आए। कुबेर के भयंकर तप को देखकर ब्रह्मा के अंश से उत्पन्न रुद्र ने शिवजी की इच्छा से वहां जाने के लिए उत्सुक हो उठे। तब जोर-जोर से डमरू नाद करने लगे जिससे उत्पन्न ध्वनि समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त हो गई। विष्णु, ब्रह्मा तथा सब देवता मुनि-गण तथा सिद्ध लोग भी मूर्त होकर वहां एकत्रित होने लगे। तब शिवजी अपने असंख्य गणों की सेवा से युक्त होकर अपने रुद्र रूप के दर्शन के लिए वहां पहुंचे। शिवजी को आया देख कर कुबेर ने सादर उठकर अभिवादन किया तथा अनेक प्रकार की सामग्री से परिवार सहित उनका पूजन किया। तब आलिं-गन कर अलकापुरी में निवास का आग्रह किया। फिर शिवजी ने विश्वकर्मा को वहीं अलकापुरी में अपने भक्तों व गणों के लिए स्थान बनाने की आज्ञा दी। विश्वकर्मा ने भगवान के आदेशानुसार अनेक प्रकार के उपयुक्त स्थान बना दिये। इस समय हरि की आराधना से शंकर जी बहुत प्रसन्न हुए। फिर कुबेर की प्रार्थना से शिवजी कैलाश पर्वत पर गए तथा शुभ घड़ी में उसमें प्रवेश किया। यह देख विष्णु आदि देवता बहुत प्रसन्न हुए मुनिगणों तथा सिद्धों ने आदर से शिवजी का अभि-षेक किया। शिवजी के आसन ग्रहण करने पर सभी देवताओं ने उनकी स्तुतियाँ कीं तथा शिवजी ने सबकी कामनाएं पूरी कीं। इसके बाद सभी देवगण अपने-अपने स्थानों को लौट गए।

—●—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

सती खण्ड

पहला अध्याय

(शंकर जी के सती के साथ विवाह का वर्णन। सती द्वारा यज्ञ में शरीर त्याग व वीर भद्र द्वारा दक्ष-यज्ञ विध्वंस।)

नारदजी बोले—हे ब्रह्मा! भगवान शंकर के प्रताप से आप सब विषयों के ज्ञाता हैं। कृपया आप मुझे इसका वर्णन करिए जिस कारण देवेश महादेव ने परम जितेन्द्रिय होते हुए भी परम श्रेष्ठ स्त्री पार्वती जी के साथ विवाह कर तथा गृहस्थ जीवन को अपनाया दक्ष की पुत्री सती पुनः हिमालय की पुत्री पार्वती का शंकरजी से मिलन कैसे हुआ। इस सबका वर्णन करने में आप सर्वथा योग्य हैं। ब्रह्माजी उसे इस विषय में बताते हुए कहने लगे—हे मुनिवर! जो कथा मैं अब तुम्हें सुनाने जा रहा हूं उसे सुनाने से सब कार्यों की सिद्धि व मनुष्य जन्म का श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है। मेरे एक कन्या का जन्म हुआ जिसे देखते ही मैं काममोहित हो गया। मेरी ऐसी वृत्ति को देखकर मेरे अंश रुद्र ने धर्म को स्मरण कराते हुये मुझे व मेरे पुत्रों को बहुत ताड़ना की और अपने निवास स्थान कैलाश पर्वत पर चले गए। तब शिवजी की माया से अज्ञानवश उन्हें ही अपने पुत्रों सहित वश में करने का यत्न किया किन्तु मुझे असफलता का मुख देखना पड़ा। अन्त में लाचार होकर पुनः महादेव की सेवा की जिससे उन्होंने मुझे बहुत ज्ञान दिया। अब मैंने ईर्ष्या भाव तो छोड़

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दिया किन्तु हठ अभी तक जारी था। रुद्र को मोहित करने के लिए शक्ति का प्रयोग करना चाहा। तब अपने पुत्र दक्ष से असिकी वीरिनी कन्या से सती का जन्म कराया। दक्ष की वह पुत्री तप करने के कारण उमा नाम से विख्यात हो अपनी तपस्या से रुद्र की पत्नी हुई। अब रुद्र भी स्वतन्त्रता से सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा से रूप धारण कर मोहित होकर भोग करने लगे। गृहस्थ जीवन का बहुत समय सुख से बीतता रहा। किन्तु उधर शिवजी की माया से मोहित दक्ष के मन में गर्व का जन्म हुआ। वह स्थिर मन वाले शान्त रुद्र के विषय में तरह-तरह से निन्दनीय हस्तक्षेप करने लगा। अंहकार से वशीभूत होकर उसने एक बहुत बड़ा यज्ञ रचा जिसमें उसने मुझे जगत-पालक विष्णु जी तथा अन्य सभी गण्य-मान्य ऋषियों व मुनियों को आमंत्रित किया किन्तु पुत्री सती व जमाता रुद्र को न्यौता नहीं भेजा। इस पर भी हठ करके पिता के घर यज्ञ में गई, वहां पिता द्वारा अपने पति की निन्दा को सहन न करके धिक्कारते हुए वहीं पर उसने शरीर त्याग कर दिया। यह सब ज्ञात होने पर रुद्र जी ने क्रोधित होकर अपनी जटा से एक बाल उखाड़ कर उससे वीर भद्र को उत्पन्न किया। जिसने यज्ञ में जाकर दक्ष का सिर काट डाला तथा यक्ष का नाश कर डाला। इससे समस्त ब्रह्माण्ड में हलचल उत्पन्न हो गई। सब प्राणी करुणाकर रुद्र की स्तुति करने लगे। तब महेश्वर शिवजी ने दक्ष को पुनः जीवित कर सबके उचित आदर सहित यज्ञ कराया। सती के देह त्याग के समय उत्पन्न ज्वाला पर्वत पर पड़ी और वह ज्वालामुखी नाम से पूजी गई। आज तक जो ज्वालामुखी का दर्शन करता है उसकी सब कामनाएं पूरी होती हैं। कालान्तर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

में वे हिमालय की पुत्री हुईं तथा पार्वती नाम से जानी गईं। उस जन्म में भयंकर तप से उन्होंने शम्भु जी को प्राप्त किया। इस सब का वर्णन करते हुए सूत जी कहने लगे—जो भी इस कथा का श्रवण करेगा वह सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त होकर सुख प्राप्त करेगा।

दूसरा अध्याय

(ब्रह्मा जी का नारद जी को शिव-पार्वती चरित्र को सुनाना तथा पुष्प-बाण का प्रकट होना।)

सूत जी बोले—हे महर्षियो! ब्रह्मा जी के ऐसा कहने पर पुनः नारद जी पापनाशिनी शिव कथा सुनाने का आग्रह करने लगे। नारद जी बोले—हे ब्रह्मा जी! शिवजी की यह पाप-नाशिनी दुःखविनाशिनी कथा को सुनते हुए सन्तुष्ट नहीं हुआ। हे सृष्टिकर्ता! कृपा करके अब आप देवी सती व सदाशिव के चरित्र को मुझसे कहिए। सती जी की उत्पत्ति तथा शिवजी ने गृहस्थ जीवन को क्यों अपनाया। दक्ष से कुपित सती ने देह त्याग कैसे किया। पुनः वह हिमालय की पुत्री कैसे हुईं। उनके भयंकर तप, ताड़ना, काम-शान्ति का वर्णन सुनने की मुझे तीव्र उत्कंठा है। ब्रह्मा जी बोले—हे मुनिश्वर! अब मैं तुमसे शिवजी तथा पार्वती जी के चरित्र का वर्णन करता हूं। शिवजी अपने पूर्व रूप में निर्गुण, निर्विकार, चैतन्यस्वरूप, सदासद से परे, शक्ति विहीन दिव्य तथा एक ही थे। किन्तु पार्वती के साथ वे सगुण, शक्तिवान् हैं उनके बाएं अंग से मैं ब्रह्मा उत्पन्न हुआ। उनकी माया से मैं सृष्टि का रचयिता विष्णु सृष्टि के पालक तथा संहार कर्ता रुद्र उत्पन्न हुए। और इसी से उस पूर्व सदाशिव के तीन रूप हो गए। और मैं इनका आराधक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो गया। इनकी आराधना से मैं देवताओं व अन्य जीवों की उत्पत्ति करने लगा। मैंने सब प्रजापतियों को उत्पन्न किया। उस समय मैं पूर्ण रूप से शक्तिवान् था। इसके बाद मैंने मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, अंगिरा, क्रतु, वसिष्ठ नारद तुम, दक्ष व भृगु को उत्पन्न किया। इन्हें उत्पन्न करने के बाद में मैं शिवजी की माया से मोहित सा होने लगा। तभी मेरी भौंहों से संध्या नामक कन्या की उत्पत्ति हुई जिसे देखकर मैं विस्मित हो गया तथा मेरे पुत्र मरीचि व दक्ष भी शोकाकुल हुए। मेरे चिन्तित होते ही एक सौन्दर्यवान, विलक्षण, काले केशों से युक्त, कृष्णगजवत् स्थूल काय नीले वस्त्रधारी, कटाक्षों को हिलाते हुए एक पुरुष का आविर्भाव हुआ। सुगंधित श्वासों से युक्त वह अनुपम शृंगार किए हुए था। उस पुत्र को देखकर मेरे अन्य पुत्रों के मन में विस्मय तथा विकार के भाव उत्पन्न हुए। उनका हृदय विचलित होने लगा। तभी उत्पन्न हुए उस पुत्र ने मुझे नत-मस्तक होकर अभिवादन किया तथा बोला—हे ब्रह्मा जी! मुझे आदेश दें। तथा मुझे ऐसे कार्य में लगाएं जिससे मुझे मान-सम्मान मिले। ब्रह्मा जी बोले—तुम सनातन सृष्टि उत्पन्न करो। मैं विष्णु जी और सभी तुम्हारे वशीभूत होंगे। तुम पुष्प-बाण नाम से जाने जाओगे। तुम प्राणियों में विस्मय, सुख का लक्ष्य तथा मद भाव को उत्पन्न करने वाले होओगे तथा इस प्रकार सृष्टि के प्रर्वतक होगे। मेरे यह पुत्र भी तुम्हारी तत्त्वरूप से स्तुति करने वाले होंगे। यह कहकर पद्मासन पर बैठकर ब्रह्मा जी चुप हो गए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तीसरा अध्याय

(कामदेव का ब्रह्मा जी पर अपना वश चलाना, उसके वशीभूत ब्रह्मा जी को शिवजी की ताड़ना तथा ब्रह्मा जी का कामदेव को श्राप व उसके साथ संवाद ।)

ब्रह्मा जी बोले—तब मरीचि आदि ऋषियों ने उनका कार्य व शक्ति को देखकर उसका नामकरण किया। क्योंकि उत्पत्ति के समय ही उसने ब्रह्मादि के चित्र का मंथन कर दिया था। अतएव उसका नाम ऋषियों ने मन्मथ रखा। और कहा कि तुम संसार में अद्वितीय हो इसलिए तुम 'काम' नाम से विख्यात होंगे। मोह न करने की शक्ति से सम्पन्न होने के कारण तुम मदन तथा अहंकार से युक्त होने के कारण कन्दर्प नाम से जाने जाओगे। ब्रह्माजी ने सन्ध्या नाम की अनन्त सुन्दरी कन्या को उत्पन्न किया है जिसे प्रजापति दक्ष तुम्हें प्रदान करेंगे। ऋषियों के ऐसा कहने पर कामदेव ने अपने पांचों बाणों का नाम क्रमशः हर्षण, रोचन, मोहन, शोषण तथा मारण रखा तथा उनकी शक्ति की परीक्षा करने की इच्छा से इन बाणों को मुनियों पर छोड़ दिया। इसका केन्द्र सन्ध्या थी। उसने सबको मोहित करने की सोची। कामदेव के बाणों को छोड़ते ही ब्रह्मादि ऋषियों में मनोविकार होने लगा तथा चित्त व इन्द्रियों में काम का संचार होने लगा। काम से मोहित मेरे मन में विकार उत्पन्न हुए काम से विकृत वे अन्य सभी ऋषि मुनि भी संध्या को बार-बार चाहने लगे। संध्या भी कामवश होकर ऋषियों को आकर्षित करने लगी। एक प्रजापति ने भी उसकी इच्छा की। मरीचि, अत्रि और दक्ष आदि सभी काम वशीभूत हो गए थे। मुझे, सब मुनियों, सन्ध्या को काम से मोहित देखकर मन्मथ को अपने बल पर विश्वास हुआ। अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पितामह तथा भाइयों को विचलित व पथभ्रष्ट हुआ देखकर धर्म बहुत चिंतित हुआ और वह धर्माधिदेव भगवान् शंकर की आराधना करने लगा। तब शिवजी मेरी ऐसी दशा को देखकर मुस्कुराकर लज्जित करते हुए कहने लगे--हे ब्रह्मा! पुत्री के प्रति तुम्हें यह काम भाव कैसा? वेद के ज्ञाता तुम्हारे लिए यह निन्दनीय है। वेदज्ञ पुरुष को माता, बहन, भाई की स्त्री और कन्या के प्रति भूलकर भी कामी नहीं होना चाहिए। फिर तुम्हारे तो मुख में वेद है। काम मोहित तुमने कैसे इसे भुला दिया। सदा सूर्य के दर्शन करने वाले दक्ष, मरीचि आदि योगियों का चित्त स्त्रियों को देखकर कैसे विचलित हो गया। हा! जो जन स्त्री को देखकर स्खलित हो जाता है उसके साथ शास्त्र संगति कैसे की जा सकी है? इसके बाद हे नारद! जब शिवजी ने ऐसा कहा तो शर्म के मारे क्षण-भर में पसीने से भीगा रहा। मेरा विकार दूर हुआ। मेरे शरीर से उत्पन्न पसीना जब गिरा तो उससे पितृगणों की उत्पत्ति हुई। चौसठ हजार आग्नेष्वाला पितृगण तथा छियासी हजार बर्हिषद पितर हुए। और दक्ष के शरीर से पसीने गिरने पर एक गुणवती तथा रूपवती कन्या की उत्पत्ति हुई जो मुनियों के मन को भी मोहने वाली थी। वह कन्या रति नाम से जानी गई। उसे देखकर क्रतु आदि भी विचलित हो गये। उनसे जो वीर्य भूमि पर पड़ा उससे अन्य पितरों का जन्म हुआ। इस प्रकार संध्या बहुत से पितरों को उत्पन्न करने वाली थी। इसी बीच शिवजी अन्तर्ध्यान हो गये। उनके वचनों से लज्जित मेरे क्रोध का भागी काम हुआ। मेरे क्रोधित होते ही काम ने अपने बाण वापिस ले लिये। मैं जलती हुई अग्नि के समान जलने लगा उससे पीड़ित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मैंने ऋषियों व प्रजापति सहित उसे श्राप दे दिया कि तू शिव जी के नेत्र से भस्म हो जायेगा। यह सुनकर कामदेव धनुष छोड़कर मेरे पैरों में गिरकर प्रार्थना करने लगा और कहने लगा आपने ऐसा भंयकर श्राप क्यों दे दिया। आप तो न्याय के ज्ञाता हैं मैंने आपकी हानि नहीं की। मैंने तो आपके द्वारा बताई गयी अपनी शक्ति की ही परीक्षा मात्र की है। अतः हे ब्रह्माजी! मैं निरपराध हूँ आपने मुझे ऐसा कठोर श्राप क्यों दे दिया। तब ब्रह्माजी डपटते हुए काम से बोले—तुमने मेरे काम का केन्द्र मेरी कन्या को बनाया। इसलिए मैंने तुम्हें श्राप दिया है। हे मन्मथ! जब तुम शिवजी के नेत्र से भस्म हो जाओगे तो फिर शीघ्र ही इसी शरीर को प्राप्त करोगे। जब शंकरजी अपना विवाह करेंगे तब तुम पुनः शरीर को प्राप्त करोगे। ऐसा कह कर मैं ब्रह्मा अन्तर्ध्यान हो गया। सब मुनिजन और काम देव भी अपने निवास स्थान को चले गये।

चौथा अध्याय

(ब्रह्मा जी का नारद जी को काम देव तथा रति के विवाह की कथा सुनाना।)

नारदजी ने आगे की कथा सुनने की इच्छा प्रकट करते हुए ब्रह्मा जी से कहा—हे ब्रह्मा जी! कृपया इसके बाद की कथा का वर्णन कीजिए, क्योंकि शम्भु जी की कथा सुनने की मेरी प्रबल इच्छा है। ब्रह्माजी उसे आगे की कथा सुनाते हुए कहने लगे—हे मुनिवर! शिवजी के अपने निवास स्थान को चले जाने पर मैं भी अन्तर्ध्यान हो गया। तब प्रजापति दक्ष ने काम को आग्रहपूर्वक कहा—हे मन्मथ! तुम अपने सदृश गुणवती मेरी कन्या रति को पत्नी के रूप में स्वीकार करो। ऐसा कहते हुए दक्ष ने अपनी कन्या का नामकरण रति करके उसे कामदेव को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दे दिया। दक्ष की उस परम सौंदर्यमयी गुणवती कन्या को पत्नी रूप में पाकर कन्दर्प अत्यन्त हर्षित हुआ तथा उस समय मेरे (ब्रह्माजी) द्वारा दिए गए श्राप को भूल गया। शिवजी की माया से मोहित वह दक्ष से कुछ न कह पाया। इसके पश्चात हे नारद! अत्यन्त सुखदायक उत्सव हुआ तथा अपनी पुत्री को प्रसन्न देखकर प्रजापति दक्ष भी बहुत प्रसन्न हुए।

पांचवां अध्याय

(महर्षि वसिष्ठ को ब्रह्मा जी की आज्ञा से संध्या के समीप जाकर तप के विषय में उपदेश देने का वर्णन।)

इसके बाद सूतजी आगे की कथा सुनाते हुए कहने लगे—ब्रह्माजी के इस प्रकार वर्णन करने पर नारद जी ने उनसे भगवान शंकर जी की कथा के बाद संध्या का चरित्र जानने की इच्छा व्यक्त करते हुए कहा—हे ब्रह्मा! जब आप ब्रह्माजी तथा दक्ष प्रजापति सहित सभी देवगण रति को काम को अर्पित करके चले गए तब संध्या ने क्या किया। कृपया इसका वर्णन करें। तब तत्वज्ञ ब्रह्माजी कहने लगे—हे ऋषि श्रेष्ठ! अब मैं तुम्हें उस संध्या के चरित्र का वर्णन करता हूं जिसे सुनकर सभी स्त्रियाँ पतिव्रता होती हैं। संध्या सर्व प्रथम मेरे मन से उत्पन्न हुई थी। पुनः तप द्वारा देह त्याग करके वह अरुन्धती हुई। उस समय उसे मेधातिथि ने उत्पन्न किया था व वसिष्ठ ने पत्नी के रूप में स्वीकार किया था। इसके बाद ब्रह्माजी नारद जी को मेधातिथि ने संध्या को कैसे उत्पन्न किया और वसिष्ठ ने उसे कैसे ग्रहण किया। इसका वर्णन करते हुए बोले—जब मेरे काम को श्राप देने के बाद मैं व शिवजी वहां से अन्तर्ध्यान हो गए तब आमर्ष को प्राप्त होकर मेरी पुत्री संध्या ने सोचा मैं भी कैसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पापिन हूं, जिससे मुझे देखकर मेरे पिता व भाई भी कामवश हो जाते हैं। अतः मैं अपने इस पाप का प्रायश्चित करके स्वयं अपना उद्धार करूंगी। वेद का सहारा लेकर मैं अपनी देह को भस्म कर दूंगी और ऐसी मर्यादा स्थापित करूंगी जिससे संसार में जन्म लेते ही मनुष्य इस प्रकार कामी न हो। मैं भयंकर तप कर देह त्याग दूंगी। इस प्रकार विचार करके वह तप के उद्देश्य से चन्द्रभागा नदी के तट पर स्थित चन्द्रभाग पर्वत पर चली गई। तब मैंने अपनी पुत्री को चन्द्रभाग पर तप के लिए गई जानकर अपने पुत्र वसिष्ठ से कहा—तप के लिए गई हुई संध्या को तुम जाकर अच्छी प्रकार से दीक्षा दो क्योंकि वह अभी तक तपमार्ग से अनभिज्ञ है। पिता के ऐसे वचन सुनकर वसिष्ठ चन्द्रभाग पर्वत के लाल सरोवर के समीप बैठी संध्या के पास जाकर आदर से पूछने लगे—हे भद्रे! तुम किसकी कन्या हो और यहां पर किस भावना से आई हो। यदि गोपनीय न हो तो मुझे सब वृतान्त कहें कि तुम शोकित क्यों हो। तब अग्नि के समान दीप्तिमान देह वाले वसिष्ठ को देखकर संध्या ने अभिवादन किया तथा बताया कि मैं इस निर्जन स्थान पर तप की इच्छा से आई हूं। यदि आप ठीक समझें तो मुझे इस विषय में उपदेश दें। वसिष्ठ जी ने सब कुछ जानने के कारण और जानने की इच्छा नहीं की। फिर भगवान् शंकर जी का स्मरण करते हुए संध्या से कहा—तुम श्रेष्ठ आराधनीय शंकर भगवान् का स्मरण करो तथा उनका पूजन करो। इससे तुम्हारे सब कार्य सिद्ध होंगे। 'ॐ नमः शंकराय' कहकर अन्त में 'ॐ' लगाकर मौन होकर तप करो तथा मौन होकर ही स्नान तथा शिवजी का पूजन करो। केवल जल के सेवन के अतिरिक्त और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कुछ आहार नहीं लेना। इस प्रकार तप करने पर निश्चय ही तुम्हारी तपस्या सफल होगी तथा कामनाएं पूर्ण होंगी। शिवजी तुम्हें तप का उत्तम फल प्रदान करेंगे। वसिष्ठ इस प्रकार संध्या को सब तप विषयक उपदेश देकर वहीं अन्तर्ध्यान हो गए।

छठा अध्याय

(संध्या का वसिष्ठ के निर्देशानुसार एक चतुर्युगी तक तप करना, तब शिवजी का प्रसन्न होकर उसे प्रत्यक्ष दर्शन देना तथा मुंह मांगा वरदान देकर सभी इच्छाएं पूर्ण करना।)

ब्रह्माजी बोले—फिर वसिष्ठ के अन्तर्ध्यान हो जाने पर संध्या ने भयंकर तप करना आरम्भ कर दिया। शिवजी का स्मरण करते हुए उसने एक चतुर्युगी समाप्त कर लिया। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी ने आकाश में स्थित होकर उसे प्रत्यक्ष दर्शन दिया। तब संध्या ने मोहित होकर नेत्र बन्द कर लिए। शिवजी ने उसके हृदय में प्रवेश कर उसे ज्ञान, दिव्य वाणी तथा नेत्र प्रदान किए। इससे प्रसन्न होकर संध्या शिवजी की स्तुति करने लगी। स्तुति से प्रसन्न होकर भक्त वत्सल शिवजी बोले—हे भद्रे! तुम्हारे तप व स्तुति से मैं प्रसन्न हूं। अब तुम अपनी इच्छानुसार वर मांगो। तब महेश्वर शिवजी को बार-बार प्रणाम करके हर्षित संध्या बोली—हे महेश्वर! यदि आप मुझे वर के योग्य पाते हैं तो निश्चय ही मैं अपने पूर्व पापों से मुक्त हो गई। हे शिवजी! आप मुझे यही वर प्रदान करें कि इस संसार में उत्पन्न होते ही प्राणी कामी न हो जाएं तथा दूसरा वर दीजिए कि यदि मैं तीनों लोकों में विख्यात व्रत वाली हूं तो मेरे सदृश अन्य न हो। यदि मेरा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पुनः जन्म हो तो वह कहीं कामी होकर न गिरे तथा मेरा पति अत्यन्त कामी न होकर मुझसे मित्रवत् व्यवहार करे तथा जो मेरी ओर काम-भाव से देखे वह नष्ट व नपुंसक हो जाए। शिवजी ने इन तीनों वरों को एवमस्तु कहकर संध्या से कहा— हे भद्रे! अब से मैं प्रत्येक मनुष्य की आयु के भाग करता हूं। शैशव, कुमार, यौवन, वृद्धावस्था। जब प्राणी तीसरी अवस्था को प्राप्त हो तभी कामी हो तथा कुछ दूसरी अवस्था के अन्त में कामी हो। मैंने तुम्हारे तप से ही जगत में यह व्यवस्था की है। अब कोई भी प्राणी जन्म लेते ही तुरन्त कामी न होगा। तथा तुम इन तीनों लोकों में सती भाव को इस प्रकार प्राप्त होगी कि तुम्हारे सदृश कोई न होगा। तेरे पति के अतिरिक्त जो भी व्यक्ति तुझे काम-भाव से देखेगा वह नपुंसक हो जाएगा। तेरा पति भाग्यवान तथा सात कल्प पर्यन्त आयु वाला होगा। तुमने जो वर मांगे दिये। अब तेरे पूर्व जन्म की बात कहता हूं। अग्नि में तेरे शरीर का भस्म होना निश्चित है। इस समय मेधातिथि बारह वर्षीय एक यज्ञ कर रहे हैं। उसमें अग्नि बड़ी जोर से चल रही है उसमें प्रविष्ट हो जा। इसी पर्वत के नीचे चन्द्रभागा नदी के तट पर ऋषियों का आश्रम है। जिसमें मेधातिथि यज्ञ कर रहे हैं। उस यज्ञ में प्रवेश करने के कारण तू उनकी पुत्री होगी। तुझे जैसा पति चाहिए उसे मन में धारण करके अपने शरीर को अग्नि में गिरा दे। जब चतुर्युग के पश्चात सतयुग बीत जाने पर पर्वत पर कठिन तप करेगी तो त्रेता के प्रथम भाग में दक्ष की कन्या होकर यथा योग्य विवाहित होगी। दक्ष की और भी बहुत सी पुत्रियाँ होंगी जिनमें से तेरी सत्ताईस बहनों को दक्ष चन्द्रमा को दे देंगे। किन्तु रोहिणी चन्द्रमा को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विशेष रूप से प्रिय होगी। इससे कुपित होकर दक्ष चन्द्रमा को श्राप दे देंगे और सब देवगण तेरी शरण में आयेंगे। ऐसा कह कर भगवान शिव अन्तर्ध्यान हो गए।

सातवां अध्याय

(संध्या का मेधातिथि के यज्ञ में अग्नि में प्रवेश करना जिससे प्रातः कालीन संध्या तथा दिन की समाप्ति पर होने वाली संध्या का निर्माण, मेधातिथि का यज्ञ के अन्त में उसे देखना व विधिवत् उसे गोद लेकर उसका पालन करना व महर्षि वसिष्ठ से उसका विवाह करना।)

ब्रह्माजी नारद को संध्या चरित्र का वर्णन करते हुए बोले-- इसके अनन्तर संध्या चन्दभागा के तट पर मेधातिथि के यज्ञ में जा पहुँची, जहां शिवजी की माया से किसी ने उसे नहीं देखा। तब अपने उपदेष्टा वसिष्ठजी का पति के रूप में संकल्प करती हुई यज्ञाग्नि में प्रविष्ट हो गई। पुरोडाश हव्य के समान उसकी देह अग्नि में भस्म हो गई। अग्नि ने उसके शरीर को भस्म करके सूर्य मण्डल में प्रवेश कर दिया। सूर्य ने उसके शरीर को दो भागों में विभक्त करके अपने रथ में स्थापित कर लिया। जिसके ऊपर का भाग रात्रि व दिन के बीच होने वाली उषा कालीन संध्या तथा शेष भाग पितरों की प्रसन्नता के लिए दिन की समाप्ति पर होने वाली संध्या बन गयी। सूर्योदय के समय की संध्या सूर्यास्त की संध्या के समान, लाल कमल के समान होती है। उसके प्राणों को करुणाकर शिवजी ने अपने दिव्य शरीर में स्थापित कर दिया इसके बाद जब उधर मेधातिथि के यज्ञ की समाप्ति हुई तो ऋषियों ने तप्त स्वर्ण के समान कान्ति वाली कन्या को अग्नि में देखा। मेधातिथि ने प्रसन्न होकर विधिवत् स्नान कर उसे अपनी पुत्री मान कर गोद में लिया। और उसका नाम अरुन्धती रखा। तथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपने आश्रम में ही उसका लालन-पालन किया। जब वह पांच वर्ष की हुई तो विष्णु महेश ने आकर उसका विवाह ब्रह्मा-पुत्र वसिष्ठ के साथ कर दिया। पतिव्रताओं में अग्रगण्य मेधातिथि की कन्या अरुन्धती वसिष्ठ को पति के रूप में प्राप्त कर उनमें रमण करने लगी तथा शतपादिक श्रेष्ठ पुत्र को उत्पन्न किया। इसके बाद सूतजी बोले—हे ऋषियो! यह संध्या का चरित्र सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। जो भी स्त्री अथवा पुरुष इसका श्रवण करेगा वह इस पवित्र चरित्र को सुनकर निश्चय ही मनोवांच्छित फल को प्राप्त करेगा।

आठवां अध्याय

(ब्रह्माजी का शिवजी की माया से मोहित होकर, उनका स्त्री के प्रति अनुराग उत्पन्न करने की इच्छा से काम व रति को इसके लिए आग्रह करना, ब्रह्माजी से वसन्त की उत्पत्ति, ब्रह्माजी का शिवजी को मोहित करने के लिए वसन्त कामदेव को प्रदान करना।)

सूतजी कहने लगे हे मुनियो! जब ब्रह्मा ने इस प्रकार संध्या चरित्र नारदजी को सुनाया तो वह मुग्ध हो गए तथा कहने लगे—हे महाभाग! आपने दिव्य इस संध्या चरित्र को सुनाकर मुझे कृतार्थ किया है। हे ब्रह्मन्! अब इसके बाद संध्या ने क्या तप किया, इसका वर्णन करें। तब ब्रह्माजी बोले—हे नारद! जब संध्या को देखने मात्र से शिवजी ने मुझे अपमानित किया था तभी शिवजी की माया से मोहित हुआ मैं उनसे ईर्ष्या करने लगा था। इस कोशिश में लगा रहा करता था कि इसी प्रकार से उन्हें मोहित करूं। तब रति व मन्मथ को देखकर मैं थोड़ा मोहित हुआ। दक्षादि पुत्रों के पास गया और बोला—हे पुत्रो! तुम्हें ज्ञात है कि संध्या को देखने मात्र से शिवजी ने मुझे अत्याधिक फटकारा था। जिसकी पीड़ा से मैं आज तक पीड़ित हूं। जब तक शिवजी किसी स्त्री के प्रति मोहित नहीं हो जाते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मुझे शान्ति नहीं मिलेगी। तुम लोगों को अवश्य ही मेरी पीड़ा को दूर करने के लिए कोई उपाय करना चाहिए। मैं (ब्रह्मा) अपने पुत्रों से ऐसा कह ही रहा था कि उसी समय रति व काम भी वहां आ पहुंचे। मैंने उनकी बहुत प्रशंसा की तथा उन्हें शिवजी को मोहित करने के लिए कहा कि तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कोई उन्हें मोहित नहीं कर सकता। महादेव के मोहित होने पर ही तुम्हारे श्राप की भी शान्ति होगी व जगत का कल्याण भी। महादेव पर जब स्त्री का अनुराग होगा तभी तुम्हारा भी उद्धार होगा। हे मुनिवर! तब काम ने मुझसे कहा कि आपके वचनों के अनुसार शिवजी को मोहित तो मैं कर दूंगा किन्तु स्त्री का निर्माण आप करें। मन्मथ के ऐसा कहने पर मैं व दक्ष विचारमग्न होकर सोचने लगे कि किसके द्वारा उन्हें मोहित करें। फिर चिन्तामग्न मेरी व उनकी सांसों से जो सुगन्धित वायु निकली, उससे पुष्पों से अलंकृत वसन्त का जन्म हुआ। जो पुष्प कमलयुक्त, कान्तिमान, पुष्पित, ताम्र रस के समान नेत्र, संध्या के उदित चन्द्रमा के खण्ड के समान मुख तथा सुन्दर नासिका के समान थी। तब उत्पन्न हुए उस श्रेष्ठ को देखकर मैंने कन्दर्प से कहा—हे मन्मथ! तुम काम के सहचर होने के कारण सब देवता तुम्हारे वश में होंगे। यह रमण का हेतु वसन्त है यह लोकों को मोहित करने में तुम्हारा सहायक होगा। हे काम! अब तुम इन वसन्त आदि सहचरों को लेकर रति सहित शिवजी को मोहित करने का यत्न करो। फिर रति सहित काम ने मुझे प्रणाम किया तथा शिवजी के निवास स्थान को चला गया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नवां अध्याय

(कामदेव का ब्रह्माजी की आज्ञानुसार शिवजी को मोहित करने के लिए काम क्रीड़ायें करना, अन्त में निराश होकर पुनः ब्रह्माजी के पास जाना, ब्रह्माजी की श्वांसों से मारगणों की उत्पत्ति तथा ब्रह्माजी की आज्ञा से कामदेव का मारगणों को लेकर पुनः शिवजी को मोहित करने के लिए जाना।)

ऋषिवर नारदजी को आगे का वृतान्त सुनाते हुए ब्रह्मा जी कहने लगे—मेरी आज्ञा से कन्दर्प, रति व वसन्त को लेकर वहाँ पहुंचा जहां भगवान् शिव ध्यान मग्न थे। वहां पहुंचकर वसन्त के साथ मन्मथ ने लोकों को कामवश करने वाला अपना विलक्षण जाल फैलाया। परम सुन्दरी रति के साथ अनेक प्रकार की काम-क्रीड़ाएं कीं, जिससे भगवान शंकर का ध्यान भंग होकर स्त्री में अनुरक्त हो जाए। किन्तु सदाशिव पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा वे स्थिर व निर्विकार रहे। निराश होकर कामदेव मेरे पास लौट आए और लज्जा से नम्रतापूर्वक कहने लगे—हे महाभाग! मैं योगीश्वर शंकरजी को अपनी काम क्रीड़ाओं से विकृत नहीं कर पाया। उनको कोई भी कामवश नहीं कर सकता यह कार्य असम्भव व कठिन है। उसके इन वचनों को सुनकर मैं बहुत दुःखी हुआ व चिन्तित होकर दीर्घ श्वांस लेने लगा। जिससे अनेक भयंकर गण उत्पन्न हुए और भीषण कोलाहल करना शुरू कर दिया। 'मारो-काटो' का शब्द करते हुए वह मुझे भी मारने दौड़े। तब वहां उपस्थित कामदेव ने उन्हें रोका और मुझसे पूछने लगा—हे ब्रह्मन्! आपने इन भीषण गणों को क्यों उत्पन्न कर दिया इनका क्या प्रयोजन है। इन्हें मेरे अधीन कर दीजिए। यह सुनकर मैंने उन्हें काम को दे दिया और कहा—इनके उत्पन्न होते ही यह 'मारय-मारय' करने लगे। अतएव इनका 'मार' होगा। यह सदा तुम्हारे अधीन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रहेंगे। तुम्हारे कार्य में सहायक होंगे। ये सदा ज्ञानियों के ज्ञान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करेंगे। मेरे ऐसा कहने पर काम व रति प्रफुल्लित हो गए। तब मैंने उनसे पुनः शिवजी को काम के वशीभूत करने के लिए जाने को कहा। कामदेव ने उत्तर दिया हे ब्रह्मा! मैं आपकी आज्ञा का पालन अवश्य करूंगा। किन्तु मुझे विश्वास है मैं असफल रहूंगा क्योंकि कार्य अत्यन्त दुष्कर है मुझे भय है कहीं वह मेरे शरीर को भस्म न कर दें। यह कहकर कामदेव रति वसन्त व मारगणों सहित वहां से शिवजी के निवास स्थान को चले गए। तथा वहां जाकर उसके शिवजी को मोहित करने के अनेक प्रयास किए। किन्तु निराश होकर वापिस लौटना पड़ा। लज्जित होकर वह मेरे पास आकर कहने लगा–मैं शिवजी को मोहित नहीं कर सका। उन्हें मोहित करना असम्भव है।

दसवां अध्याय

(कामदेव की असफलता के बाद ब्रह्मा का विष्णु की स्तुति करना, विष्णु जी का प्रसन्न होकर दर्शन देना तथा सब वृतान्त जानकर ब्रह्माजी को इसके लिए मना करना तथा उनके हट को देखकर उमा की प्रार्थना करने का सुझाव।)

ब्रह्माजी बोले–हे नारद! कन्दर्प को असफल देखकर मेरा शिवजी को मोहित कहने का दर्प चूर-चूर हो गया। पर शिवजी को स्त्री के प्रति अनुरक्त करने का संकल्प मन में दृढ़ रहा। इस प्रकार निराश होकर मैंने विष्णुजी का ध्यान किया। जगत्पालक श्रीहरि प्रकट हुए, मेरी प्रार्थना से प्रसन्न होकर बोले–तुम जो चहाते हो कहो। मैंने ब्रह्मा ने कहा–भगवन्! मैंने काम को वसन्त मारगों तथा रति रहित रुद्र को काम-मोहित करने के उद्देश्य से भेजा था किन्तु सब निराशाजनक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रहा। मेरे इन वचनों को सुनकर आश्चर्य चकित होकर भगवान विष्णु बोले—हे पितामह! आप यह सब क्यों करना चाहते हैं कृपया सच-सच कहिए। ब्रह्माजी ने उत्तर दिया—भगवन्! सृष्टि के आरम्भ में मेरे शरीर से धर्म, काम, दक्ष आदि पुत्र तथा वाणी से संध्या एक पुत्री का जन्म हुआ। अपनी पुत्री की सुन्दरता को देखकर माया से मोहित मैं काम वशीभूत हो गया। उसी समय शंकरजी ने आकर मुझे इस भ्रष्ट आचरण के लिये फटकारा। इस प्रकार की ताड़ना को सुनकर मुझे बहुत विषाद हुआ। आज भी मेरा मन उस अपमान से पीड़ित है। हे विष्णु जी! जब तक शिवजी को भी मैं उसी प्रकार काम-मोहित नहीं कर पाता तब तक मुझे शान्ति नहीं मिलेगी। मेरे विचारों को जानकर भक्तवत्सल विष्णुजी बोले—हे सृष्टिकर्ता! आप परम ज्ञाता तथा जगत् के कर्ता होकर भी कैसी अज्ञानियों के समान हठ कर रहें हैं। तुम्हें शिवजी के प्रति इस प्रकार की भावना शोभा नहीं देती। यदि इस पर भी तुम शिवजी से स्त्री ग्रहण कराना चाहते हो तो पार्वतीजी का स्मरण करके उन्हें स्तुतियों द्वारा प्रसन्न करो। तुम्हारी सब इच्छाएं पूर्ण होंगी। सर्वगुण सम्पन्न पार्वतीजी अवतार ग्रहणकर किसी की पुत्री होकर शिवजी की पत्नी बनेंगी। इसके लिए दक्ष प्रजापति से तप करने को कहें तथा उस तप से प्रसन्न होकर पार्वतीजी उसके यहां कन्या के रूप में उत्पन्न हों। पार्वतीजी ही अपने विभिन्न रूपों में सरस्वती, लक्ष्मी तथा शिव-शक्ति उमा हैं। हे ब्रह्मा—तुम उन्हीं की शरण में जाकर उन्हें प्रसन्न करो, तुम्हारे सब कार्य सिद्ध होंगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ग्यारहवां अध्याय

(ब्रह्माजी का उमा की स्तुति करना, प्रसन्न होकर उमा का चामुण्डा के रूप में प्रकट होना तथा सब वृतान्त को सुनकर ब्रह्माजी से हठ छोड़ने का आग्रह करना, अन्त में वर परम्परा के वशीभूत होकर ब्रह्माजी को यह आश्वासन देना कि वह शिवजी को मोहित करने का प्रयास करेंगी।)

तदनन्तर नारद जी ने पुनः पूछा—हे महाभाग! भगवान विष्णु जी के जाने के बाद आपने क्या किया? ब्रह्माजी बोले—हे नारद! तब मैं शिवशक्ति पार्वती जी की स्तुति करने लगा। मेरी आराधना से वह योगमाया चामुण्डा देवी के रूप में प्रकट हुईं तथा मुझे अपने दिव्य स्वरूप का दर्शन दिया। वह देवी चार भुजाओं वाली, सिंह पर आसीन, दिव्य कान्ति से युक्त थीं। मैंने देवी की प्रार्थना करते हुए कहा—हे देवी! आप नित्य, शक्ति रूपिणी तथा सब प्राणियों को अपनी माया से मोहित करने वाली व सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं। मेरी आराधना से प्रसन्न होकर देवी ने पूछा—हे ब्रह्मा! आपने किस प्रयोजन से मेरा स्मरण किया। मैंने (ब्रह्मा) ने उत्तर दिया—हे देवी! शिवजी ने स्त्री को देखने मात्र से मेरी भर्त्सना की है। मेरी इच्छा है कि वह भी स्त्री से विवाह करें। वे ध्यानमग्न हैं मेरी प्रार्थना है कि आप जाकर उन्हें मोहित कर दें। दक्ष प्रजापति क्षीर सागर के तट पर आपको कन्या रूप में प्राप्त करने के लिए तप कर रहे हैं। आप दिव्य रूप धारण करके दक्ष को प्राप्त हो जाएं तथा शिवजी की पत्नी बनें। मेरे इन वचनों से देवी चिन्तित होकर बोलीं—हे ब्रह्मा! आप यह कैसी मूढ़ता वाली बात कह रहे हैं। ईर्ष्यावश शिवजी को मोहित करने का यह हठ अनुचित है। निर्विकार तथा स्थिर योगीश्वर सदाशिव को स्त्री अनुरक्त करने का प्रयोजन? मैं तो सदा उनकी सेविका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हूं। वे माया के स्वामी हैं उन्हें माया से मोहित कैसे किया जा सकता है। तब वर परम्परा के वशीभूत देवी ने सोचा यदि वर न दूँ तो परम्परा नष्ट हो जाएगी। ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे अनिष्ट न हो। यह सोच कर उन्होंने शिवजी का ध्यान किया तथा उनकी आज्ञा से ब्रह्मा से कहा—हे ब्रह्मा! शिवजी को मोहित करना असंभव है। फिर भी मैं प्रयत्न करूंगी कि वह विवाह कर लें, मैं सती का रूप धारण कर उनकी वशवर्तिनी हो जाऊंगी। यह कहकर देवी अन्तर्यान हो गईं।

बारहवां अध्याय

(दक्ष का तीन हजार वर्ष पर्यन्त भयंकर तप करना, उन्हें देवी का दर्शन प्राप्त होना तथा देवी का यह वर देना कि वह उनकी स्त्री से पुत्री के रूप में जन्म लेगी तथा कठिन तप से भगवान शंकर की अर्द्धांगिनी बनेंगी।)

ब्रह्माजी तथा चामुण्डा देवी का यह संवाद सुनने के बाद नारदजी बोले—हे ब्रह्मन्! कृपा करके उमा देवी के चरित्र का आगे वर्णन करिए। ब्रह्माजी बोले—उसके बाद प्रजापति दक्ष ने तीन हजार वर्षों तक कठोर तप किया। तब देवी शिवा ने उन्हें अपना प्रत्यक्ष दर्शन दिया तथा वर माँगने के लिए कहा। प्रजापति दक्ष ने कहा—ब्रह्माजी के प्रयोजन की सिद्धि के लिए मैंने आपकी आराधना की है। भगवान् शिव ब्रह्मा के अंश के रूप में अवतरित हुए हैं किन्तु आपका अभी तक अवतार नहीं हुआ है। मेरी प्रार्थना है कि आप उन्हें मोहित करके उनसे विवाह करें। प्रजापति के इन वचनों से देवी उनका भाव जान गईं और उन्होंने उसे वर दिया कि वह उनकी स्त्री से कन्या के रूप में उत्पन्न होंगी तथा भगवान शिव की अर्द्धांगिनी बनेंगी। यह वरदान देकर देवी अन्तर्ध्यान हो गईं। प्रजापति इच्छानुसार वर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को प्राप्त कर प्रसन्न होकर अपने निवास स्थान पर आकर अपने मनोरथ की पूर्ति की प्रतीक्षा करने लगे।

तेरहवां अध्याय

(प्रजापति दक्ष का पंचजनकी कन्या से हजारों पुत्र उत्पन्न करना तथा उन्हें सृष्टि बढ़ाने की आज्ञा देना, नारद जी का उन पुत्रों को बहकाकर निवृत्ति की ओर प्रेरित करना, यह देखकर दक्ष का नारद जी को श्राप देना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे देवर्षि! घर आकर प्रजापति दक्ष ने विविध प्रकार से मानस-सृष्टि की, किन्तु जब उसमें विकास हुआ तो उन्होंने मुझे कहा कि तुम्हें मैथुन धर्म में प्रवृत्त होकर सृष्टि बढ़ानी चाहिए। मेरी आज्ञा से दक्ष ने पंचजनकी कन्या से विवाह कर उससे दस सहस्र पुत्रों को जन्म दिया तथा उन्हें आगे सृष्टि करने का आदेश दिया। इसी की पूर्ति के लिए पूर्व दिशा में समुद्र संगम पर तप करने के लिए प्रवृत्त हुए किन्तु हे नारद! तुमने उन्हें निवृत्ति की ओर प्रवृत्त किया। दक्ष ने पुनः पंचजनकी कन्या से हजारों पुत्र उत्पन्न किए किन्तु वह भी निवृत्ति की ओर ही प्रवृत्त हुए। तब निवृत्ति की ओर अग्रसर अपने पुत्रों को देखकर दक्ष बहुत क्रोधित हुए तथा उन्होंने आपकी अत्यधिक निन्दा करते हुए श्राप दे डाला कि भ्रमण करते हुए तुमने मेरे पुत्रों को उनके मार्ग से विचलित किया है इसलिए तुम्हारे चरण पृथ्वी पर कहीं स्थिर नहीं होंगे। हे ऋषिवर! आप शान्त स्वभाव के ब्रह्मज्ञानी हैं अतः आपने दक्ष के श्राप को स्वीकार कर लिया।

चौदहवां अध्याय

(ब्रह्माजी का नारद को प्रजापति की साठ कन्याओं की उत्पत्ति, उनके विवाह, स्तुति के फलस्वरूप शिवा का कन्या के रूप में दक्ष को प्राप्त होने तथा उसके उमा नामकरण आदि का वर्णन।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ब्रह्माजी बोले—हे देवर्षि ! तब मैंने अपने पुत्र दक्ष को समझा बुझाकर तुम्हारे प्रति उसके क्रोध को शान्त किया । प्रजापति ने शान्त होकर पुनः अपनी पुत्री से साठ कन्याओं को उत्पन्न किया तथा विधिवत् धर्मानुसार उनका विवाह किया । उन्होंने अपनी दस कन्याएं धर्म को, तेरह कश्यप को, दो कृशाश्व को, दो धृतांगिरस को तथा शेष गरुड़ को प्रदान कर दीं । कन्याओं की उत्पत्ति के समय पार्वतीजी का स्मरण कर उनकी स्तुति की जिसके फलस्वरूप शिवा ने दिव्य रूप से कहा—तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी तप करो । यह कह कर देवी अपनी शक्ति से बालरूप धारण कर माता के समीप बैठकर शिशुवत् रोने लगी । उस आलौकिक कन्या को देखकर दक्ष अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा उनके उत्सव हुए । दक्ष ने उस कन्या का नाम उमा रखा । उल्लास से उसके सभी संस्कार पूर्ण किए । दिव्य सुन्दरी वह कन्या चन्द्रमा के समान बढ़ने लगी ।

पन्द्रहवां अध्याय

(युवावस्था को प्राप्त होने पर सती के विवाह के लिए चिन्तित पिता को देखकर स्वयं शिवजी को पति के रूप में प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करना तथा माता की आज्ञा प्राप्त कर घर पर ही शिवजी की आराधना व तप करना ।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारद ! जब उमा सौन्दर्य तथा दिव्य गुणों से युक्त युवावस्था को प्राप्त हुई तो प्रजापति दक्ष इसके विवाह के लिए चिन्तित हो गए । सती ने अपने पिता की चिन्ता को जानकर स्वयं कहा कि वह शिवजी को पति के रूप में प्राप्त करना चाहती है । इसके लिए उसने अपनी माता से आज्ञा चाही । तब माता ने आश्विन मास की नन्दा तिथि में चावल, नमक आदि से विधिपूर्वक पूजा आरम्भ कराकर घर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

में ही आराधना का प्रबन्ध कर दिया। तब देवी उमा असीम श्रद्धा-भाव से प्रार्थना करने लगी। उसकी अनन्य भक्ति को देखने के लिए मैं ब्रह्मा, विष्णु तथा अन्य देवगण भी गए। उनकी तपस्या को देखकर आश्चर्यचकित हम शिवजी की सेवा में कैलाश पर्वत गए।

सोलहवां अध्याय

(ब्रह्मा व विष्णु का शिवजी की सेवा में जाकर स्तुतिपूर्वक उनसे संसार की स्थिति को बनाये रखने के लिए पत्नी ग्रहण करने की प्रार्थना करना तथा उनका शिवजी के साथ संवाद। अन्त में उनकी हठ देखकर उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लेना।)

ब्रह्माजी बोले—तदनन्तर कैलाश पर्वत शिवजी के निवास स्थान पर पहुंचकर हमने शिवजी की हाथ जोड़कर वन्दना की। तब प्रसन्न होकर शिवजी ने पूछा कि आप किस प्रयोजन से आए हैं। इस पर हमने उत्तर दिया—हे देव! हम सब आपके अनुचर हैं। आप सर्वशक्तिमान् तथा सृष्टि के सूत्रधार हैं। आप ही संसार की स्थिति के कारण हैं, सृष्टि का जन्म, पालन व संहार आप पर ही निर्भर है। अतएव आप ही यदि इस प्रकार विरक्त हो जायेंगे तो सृष्टि की स्थिति कैसे रहेगी। मैं व विष्णु हम दोनों विवाहित हैं। अतः विश्व की स्थिति के लिए आप भी स्त्री ग्रहण करें। आपने सृष्टि से पूर्व कहा भी था कि जब मैं रुद्र के रूप में अवतार लूँगा तब विवाह कर सांसारिक व्यापार करूंगा। अब आप अपने वचनों को पूरा करें। आपके बिना हम संसार कार्य नहीं चला सकते। तब हम दोनों की प्रार्थना से प्रसन्न होकर शिवजी ने कहा—तुम दोनों ही मेरे प्रिय हो। आपकी इच्छा मैं अवश्य पूरी करूंगा। परन्तु हे ब्रह्मा विष्णु! मैं योगी व शांत तपस्वी हूं। मेरे स्त्री ग्रहण का क्या

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लाभ ? मुझे विवाह करना शोभा नहीं देता। विवाह सांसारिक बन्धन है। काम की इच्छा मूर्ख लोग करते हैं। योगी इच्छा-विहीन तथा वैरागी होता है। किन्तु यदि आप आग्रह करते हैं तो संसार के कल्याण के लिए मैं विवाह कर लूँगा। किन्तु आप उस योगिनी से कह दें कि वह मेरी आज्ञाकारिणी तथा मेरी विश्वासपात्र हो। जब मैं काम से अभीभूत होऊं वह उसी भाव से कामिनी बन जाए। जब मैं योगी-भाव से प्रवृत्त होऊं तो वह भी योगिनी बन जाए। वह सदा मेरी अनुसरणकारिणी रहे। यदि उसे मेरे वचनों पर अविश्वास होगा तो मैं उसे छोड़ दूंगा। भगवान शिव के इस कथन को सुनकर हम दोनों ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—हे महादेव! जगज्जननी उमा सती नाम से दक्ष प्रजापति के यहां कन्या रूप से उत्पन्न हुई हैं। आपको पति रूप से प्राप्त करने के लिए वह भीषण तप कर रही हैं वही सर्वथा आपकी अनुचरी तथा पत्नी बनने के योग्य हैं। इस प्रकार हम दोनों के कहने पर भगवान् शिव ने हमारी प्रार्थना स्वीकार करके 'तथास्तु' कहकर हमें कृतार्थ किया तथा उचित आदर सत्कार के साथ हमें विदा किया।

सत्रहवां अध्याय

(शिवजी का प्रसन्न होकर सती को दर्शन देना तथा वर मांगने के लिए कहना। वर के अनुसार शिवा को पत्नी के रूप में ग्रहण करने का वचन देकर यह सूचना ब्रह्मा के द्वारा प्रजापति दक्ष तक पहुंचाना तथा दक्ष का हर्ष पूर्वक उसे स्वीकार कर लेना।)

ब्रह्माजी बोले—सती के कठोर तप व दृढ़ संकल्प को देखकर भगवान् शिव ने प्रसन्न होकर उसे अपना प्रत्यक्ष दर्शन दिया। सती के मनोरथ को जानते हुए भी उन्होंने उससे आराधना का प्रयोजन पूछा तथा वर मांगने को कहा। अपने स्वामी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के दर्शन पाकर सती विह्वल तथा मुग्ध हो उठीं। प्रसन्नता तथा लज्जा के आवेश में उन्होंने सिर झुका लिया तथा मुख से कुछ न कह पायी। सर्वज्ञ महादेव उनके अभिप्राय को जानते ही थे किन्तु लज्जा के कारण सती अपनी भावनाओं को कह नहीं पाईं। अन्त में किसी प्रकार लज्जा को त्यागकर सती ने उत्तर दिया—हे भगवन्! आपको जो उचित लगे वही वर दे दें। तब शिवजी ने उसे वरदान देते हुए कहा—तुम मेरी अर्धांगिनी बनोगी। मनोवांछित वर पाकर सती गद्‌गद् हो गईं। उन्होंने काम मोहित मुग्ध करने वाली दृष्टि से शिवजी की ओर देखा। शिवजी में भी काम व शृंगारिक भावनाएं उत्पन्न हुईं। शिव-शिवा के इस सम्मोहन पर सम्पूर्ण वातावरण आनन्दमय हो गया तथा मुग्ध हुए वह दोनों प्रेम विह्वल हो उठे। तब सती को चेतना हुई तथा उसने नम्रता से कहा—हे स्वामी! आप मुझे मेरे पिता से विधिपूर्वक पत्नी रूप में ग्रहण करें। शिवजी ने प्रसन्नता से स्वीकार कर 'तथास्तु' कह दिया। तत्पश्चात् अन्तर्ध्यान होकर वह अपने निवास हिमालय आये तथा मुझे (ब्रह्मा) को स्मरण करके आदेश दिया कि दक्ष के पास जाकर कन्या देने के लिए आज्ञा दे दो। शिवजी के निर्देशानुसार ब्रह्माजी अपने पुत्र दक्ष के पास पहुंचे। यहाँ वर प्राप्ति का समाचार पाकर दक्ष अपने परिवार सहित असीम हर्ष से उत्सव मना रहे थे। दक्ष ने ब्रह्मा का उचित आदर सत्कार व स्तुति की। तब ब्रह्मा ने उसे सती को शिव की सेवा में देने का आदेश दिया। जिससे दक्ष अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा उन्होंने स्वीकार कर लिया। दक्ष की स्वीकृति पाकर मैं ब्रह्मा कैलाश पर्वत पर शिवजी के पास लौट आए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अठारहवां अध्याय

(ब्रह्मा का दक्ष का समाचार लेकर शिवजी के पास पहुंचकर उन्हें बताना कि दक्ष ने उन्हें दामाद बनाना स्वीकार कर लिया है तथा शिवजी का शुभ नक्षत्र में सती को पत्नी रूप में ग्रहण करना।)

ब्रह्मा के ऐसा कहने पर उत्सुक होकर नारदजी ने पूछा—हे पितामह! आपने कैलाश पर्वत पर जाकर क्या किया व शिवजी से आपका क्या वार्तालाप हुआ कृपा करके कहें। ब्रह्मा जी बोले—हे देवर्षि! जब मैं दक्ष की स्वीकृति प्राप्त कर कैलाश पर्वत पर पहुंचा तो सर्व प्रथम शिवजी ने स्वाभाविक रूप से सती व दक्ष का कुशल क्षेम पूछा। तब मैंने उन्हें विश्वास दिलाते हुए उत्तर दिया—हे कृपाकर! आपका वरदान पूर्ण होगा। दक्ष ने आपको पहले से ही जमाता रूप में चुन लिया है। आप शुभ मुहूर्त देखकर उनके घर जाकर सती को स्वीकार कर लीजिए। शिवजी ने प्रसन्नता से कहा कि तुम्हारे व नारदजी के साथ जाकर मैं सती को अर्द्धांगिनी बनाऊंगा। इस शुभ उत्सव पर आप अपने पुत्रों को भी आमंत्रित कर लें। तब शिवजी की आज्ञा पाकर मैंने अपने मरीचि आदि पुत्रों को भी बुला लिया। इधर शिवजी ने भी विष्णु जी का स्मरण किया जिससे तुरन्त गरुड़ पर सवार होकर लक्ष्मी सहित जगत्पालक विष्णुजी भी उपस्थित हो गए। सब देवता तथा ऋषि मुनि एकत्रित हो गए। चैत्र शुक्ल त्रयोदशी रविवार के दिन फाल्गुनी नक्षत्र में बड़े हर्षोल्लास के साथ यात्रा आरम्भ हुई। बारात की शोभा अद्वितीय थी। सदाशिव नन्दी पर आसीन थे। आलौकिक उत्सव था। प्रजापति दक्ष ने प्रसन्नता से सबका स्वागत किया। तब उस शुभ मुहूर्त में शिवजी ने विलक्षण गुणवती सौंदर्यवती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दिव्य सती को अर्द्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया। सब ने हर्षित होकर मंगल की प्रार्थना की।

उन्नीसवां अध्याय

(दक्ष के विधिपूर्वक कन्यादान करने पर विष्णु का लक्ष्मी सहित शिवजी की स्तुति करना, विवाह कराते समय माया के कारण काम-मोहित होकर ब्रह्मा जी का सती को देखकर वीर्य गिराना, जिससे कुपित होकर शिवजी का ब्रह्मा का वध करने के लिए उत्सुक होना, अन्त में विष्णु जी की प्रार्थना से प्रसन्न होकर स्थिर होना।)

ब्रह्माजी बोले—तब विधिपूर्वक कन्यादान देकर दक्ष ने शिवजी को बहुत सा धन दहेज के रूप में दिया। ब्राह्मणों को भी दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट किया। तब विष्णु ने लक्ष्मी के साथ शिवजी को हाथ जोड़कर स्तुति की तथा कहा—आप सब लोकों के पिता व सती माता हैं। अतः सती रूपिणी शिवशक्ति को प्राप्त कर आप समस्त ब्रह्माण्ड का उद्धार कीजिए। शिवजी ने 'तथास्तु' कहकर विष्णु जी को कृतार्थ किया। मेरी आज्ञा से शिव-शिवा ने अग्नि के चारों ओर प्रदक्षिणा की। उसके पश्चात् हर्षोल्लासमय विलक्षण उत्सव हुआ। शिवजी की माया से समस्त ब्रह्माण्ड मोहित हो गया। मैं (ब्रह्मा) भी मोहित हो गया। प्रदक्षिणा कराते समय दक्ष की पतिव्रता सुता सती के प्रति काम-मोहित हो गया तथा उसका मुख देखने के लिए अधीर हो गया। किन्तु लज्जाशील सती ने अपना मुख पूर्णरूपेण ढका हुआ था जिससे मेरी इच्छा पूर्ण न हुई। कामातुर मैंने सती का मुख देखने के लिए छल का सहारा लिया तथा हवन-कुण्ड में बहुत सा गीला ईंधन डालकर घी की आहुति दे दी। इससे इतना धुंआ उठा कि अंधेरा हो गया। इसी बीच अवसर देखकर मैंने सती का पर्दा हटाकर मुख देख लिया। मेरे काम की सीमा न रही। बर्फ के समान मेरे वीर्य की चार बूँदें पृथ्वी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पर गिर गईं। लज्जित व भयभीत मैं उसे छिपाने का प्रयत्न करने लगा। किन्तु शिवजी के सर्वज्ञ नेत्रों से बच न पाया, उन्हें मेरे वीर्य-स्खलन का ज्ञान हो गया। क्रोधित हो वह बोले—अरे पापी! तूने यह धृष्टता कैसे की। तू विवाह कराते हुए मेरी पत्नी के प्रति कामार्त हो गया। इस प्रकार फटकारते हुए शिवजी त्रिशूल उठाकर मेरा वध करने के लिए उद्यत हो उठे। मरीचि आदि मेरे सभी पुत्र चीत्कार करने लगे। भयभीत होकर सभी देवता शिवजी की स्तुति करने लगे। दक्ष ने भी आगे जाकर शिवजी को शान्त करने का प्रयत्न किया। शिवजी ने आवेश में कहा—विष्णु के कथनानुसार सती पर काम-दृष्टि रखने वाले को मैं नष्ट कर दूंगा। इस पापात्मा ब्रह्मा ने कामातुर होकर सती को क्यों देखा। इसके वीर्य का भी स्खलन हो गया। इस निन्दनीय का वध मैं अवश्य करूंगा। शिवजी के हठ को देखकर सभी देवता भयभीत हो गए। इसी समय विष्णु ने शिवजी की बहुत स्तुति की। शिवजी ने कहा—विष्णु! तुम मेरे प्रिय हो। मुझे रोको मत। इस धूर्त को मारने दो। यह ब्रह्मा बहुत पापी है। इस महादुष्ट का नाश मैं अवश्य करूंगा। मैं सृष्टि की रचना स्वयं कर लूंगा या अपनी माया से नए ब्रह्मा का सृजन कर लूंगा। किन्तु इसका वध अवश्य करूंगा। इस पर मुस्कराते हुए विष्णु ने कहा—हे देव! हम आप ही के अंश हैं। ब्रह्मा आपसे अभिन्न है तथा मैं भी आपका ही अंश हूं। आप तो सर्वज्ञाता हैं, आप ही शिव परमतत्त्व हैं। आप उपाधि तथा नित्य आदि के भेद से रहित हैं। इस प्रकार के विष्णु के तर्क को सुनकर तथा उनकी स्तुति को देखकर शिवाजी स्थिर होकर प्रसन्न हो गए तथा उन्होंने मेरा वध नहीं किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बीसवां अध्याय

(शिवजी के शान्त होने पर ब्रह्मा जी सहित सभी देवताओं का शिवजी की स्तुति करना तथा ब्रह्माजी की पापशुद्धि के लिए शिवजी का ब्रह्मा के सिर पर आसीन होना तथा तप का आदेश देना, वीर्य की चार बूंदों से चार बादलों की उत्पत्ति तथा अन्त में शिवजी का विवाह सम्पूर्ण होने पर दक्ष की आज्ञा से शिव व सती का विदा होना।)

ब्रह्माजी बोले—हे मुनिवर! जब शिवजी शान्त होकर स्थिर हो गए। तब सभी देवता प्रसन्न होकर हाथ जोड़कर शिवजी की स्तुति करने लगे। मैंने भी अनेक प्रकार से उनकी स्तुति की। इससे प्रसन्न होकर शिवजी ने सबकी उपस्थिति में मुझे कहा—हे ब्रह्मा! अब तुम निडर हो जाओ तथा अपने मस्तक का स्पर्श कर मुझे प्रणाम करो। शिवजी के कथनानुसार मैंने अपना मस्तक छूकर उन्हें प्रणाम किया। इसी बीच शिवजी मेरे मस्तक पर आसीन हो गए। इन्द्रादि सभी देवताओं के समक्ष मेरी लज्जा की सीमा न रही। फिर लज्जित होकर मैंने पुनः उनसे क्षमा याचना तथा स्तुति करने लगा। इस प्रकार उनकी स्तुति करके उनसे पाप मुक्ति का उपाय पूछने लगा। शिवजी ने कहा—हे ब्रह्मन्! तुम इसी प्रकार इसी रूप में प्रार्थना व सेवा करो। इस रूप से ही पृथ्वी में तुम प्रसिद्धि प्राप्त करोगे। तुम तेजस्वी ब्राह्मणों के कार्य-सिद्ध करोगे। वीर्य-पात करके तुमने मनुष्यों के समान आचरण किया है। अतएव तुम मनुष्य बन कर पृथ्वी लोक में भ्रमण करो। तुम्हारे इस रूप को देखकर लोग कहेंगे कि ब्रह्मा के शिर पर रुद्र बैठे हैं। इस प्रकार लोग पर स्त्री गमन नहीं करेंगे। इससे तुम्हारे पापों की शुद्धि होगी। तथा तुमने जो चार वीर्य की बूंदें पृथ्वी पर गिराई हैं। उनसे आकाश में प्रलय करने वाले चार बादल होंगे। जिनके नाम सन्वर्त, आवर्तक, पुष्कर, द्रोण होंगे। ऋषियों के देखते ही यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बादल में परिवर्तित हो गए। तब यह देखकर शंकर व सती सन्तुष्ट होकर शान्त हो गए। तदनन्तर शिवजी की आज्ञा पाकर विवाह पूर्ण कराया। तब भगवान शिव ने सती सहित दक्ष से हाथ जोड़कर जाने की आज्ञा मांगी। दक्ष ने प्रसन्नता से अपनी पुत्री व जमाता को विदा किया।

इक्कीसवां अध्याय

(ब्रह्माजी का नारदजी को शिव-शिवा के रमण व कैलाश पर्वत पर तथा हिमालय पर विहार का वर्णन करना।)

इस प्रकार ब्रह्माजी से शिव-शिवा के चरित्र व विवाह का वर्णन सुनकर नारदजी बोले—हे तात! आपने अत्यन्त कल्याणकारी व मंगलदायक शिव-शिवा का वृत्तान्त कहा। अब इसके बाद क्या हुआ कहिए। ब्रह्माजी बोले—दक्ष के यहाँ से जाने के बाद शिव-शिवा कैलाश पर्वत पर जा पहुँचे। वहां जाकर सती ने सभी शिवगणों को आश्रम से दूर जाकर निवास करने को कहा। शिवजी ने भी सहर्ष उन्हें जाने की आज्ञा दे दी तथा कहा कि संकेत मिलते ही शीघ्र उपस्थित हो जाना। इसके बाद नन्दी आदि शिवगण आश्रम से दूर जाकर निवास करने लगे। एकान्त होने पर शिवजी पार्वतीजी के साथ रमण करने लगे। शिवजी सती को फूलों की माला पहनाते तो कभी जब सती दर्पण में मुख देखतीं तो शिवजी उनके पीछे आकर खड़े हो जाते। और हठपूर्वक उनके कुण्डलों को स्पर्श करते। भयभीत सती का आलिंगन करते। कभी उन्हें फूलों के आभूषण अर्पित करते। तो कभी पर्वतों के कुञ्जों में सती के साथ रमण करते। क्षण भर भी सती को अलग न करते। इस प्रकार कुछ समय तक कैलाश पर्वत पर रमण करके शिवजी सती को लेकर हिमा-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लय चले गये। तथा वहां पर आनन्द विहार करने लगे। इसी प्रकार विहार करते हुए पच्चीस वर्ष बीत गये।

बाईसवां अध्याय

(विहार करते हुए वर्षा ऋतु में सती के कहने पर शिवजी का हिमालय के ऐसे स्थान पर जाना जहां पूर्णतया शान्ति व प्राकृतिक वातावरण था।)

ब्रह्माजी बोले—फिर एक बार जब वर्षा ऋतु आ गई तब कैलाश पर्वत पर बैठे हुए शिवजी से सती ने कहा—हे देव! वर्षा ऋतु आ गई है, अतएव अब हिमालय या द्युलोक अथवा पृथ्वी-लोक में जहां कहीं भी निवास के लिए उपयुक्त स्थान हो, वहां चलें। सती के कथन को सुनकर सर्वज्ञ महादेव हंसकर बोले—हे सती! जहाँ पर मैं तुम्हारे साथ रहूंगा वहां मेघ नहीं आयेंगे। वर्षा ऋतु में भी यह मेघ हिमालय के नितम्ब पर ही भ्रमण करते रहते हैं आगे नहीं जाते। इस प्रकार यह सब जानते हुए भी आपकी जहां जिस पर्वत पर जाने की इच्छा हो कहें। किन्तु मेरे अनुसार हिमालय ही उपयुक्त है तथा आपके शृंगार व विहार की दृष्टि से सर्वोत्तम है। फिर हिमालय शान्त स्थल है। यहां केवल स्थिर तपस्वी, योगी आदि ही रहते हैं तथा हरिण विचरण करते हैं। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से स्थान हैं। यदि तुम चाहो तो हम कैलाश के ऊपर कुबेर पुरी के भी ऊपरी भाग में चल सकते हैं। इसकी गुफाओं में देव-कन्याएं रहती हैं। सुमेर पर्वत भी सब प्रकार से योग्य है। अब जैसी तुम्हारी इच्छा हो वहीं चलें। इस प्रकार शिवजी के ऐसा कहने पर सती बोली—हे प्राण बल्लभ! मुझे आपके साथ हिमालय पर ही निवास करना भाता है। आप वहीं जाने का प्रबन्ध करें। सती के ऐसा कहने पर शिवजी उन्हें लेकर हिमालय के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सबसे एकान्त व शान्त स्थान पर ले गये। जहां केवल प्रकृति की ही प्रधानता थी। मनुष्य व पक्षी का वहां आभास भी न था। वहां महादेव सती के साथ बहुत काल तक विहार करते रहे। इस समय वह सब तत्वों के चिन्तन को छोड़कर सती में ही आसक्त हो गये थे।

तेईसवां अध्याय

(विहार के पश्चात् वार्तालाप में प्रसंगवश सती का शिवजी से परमतत्व तथा मोक्ष के विषय में पूछना, शिवजी का परमतत्व, भक्ति तथा उसके नौ अंशों का विशेष रूप से श्रद्धा की महिमा, इतिहास, धर्म, वेद, शास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र तथा अन्यान्य तत्वों का सती से विवेचन करना।)

ब्रह्माजी बोले—एक बार विहार के बाद शिव-सती बैठकर बातचीत कर रहे थे कि शिवजी को प्रसन्न पाकर प्रसंगवश सती ने कहा—हे नाथ! बड़े तप के फलस्वरूप आप मुझे मिले हैं। आपसे विहार करके मैं कृतार्थ व सन्तुष्ट हो गई हूं। अब मैं तत्त्वों में ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक हूं। अतः हे देव! इस संसार में मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए। विषयग्रस्त प्राणी भी जिस तत्त्व को जानकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है वह मुझे कहिए। सती के इस जिज्ञासा भरे प्रश्न को सुनकर शंकर प्रेमपूर्वक बोले—हे दाक्षायणी! शिवा! विज्ञान विशिष्ट ज्ञान ही परम तत्त्व है। दूसरा स्मरण, केवल ब्रह्म का स्मरण ब्रह्म साक्षात् परे है। भक्ति विज्ञान की जननी है। भक्ति का विरोधी कभी ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। मैं इसी भक्ति के आधीन हूं। यह भक्ति द्विविध है (१) सगुण, (२) निर्गुण। इनमें प्रथम श्रेष्ठ है। इसके भी दो-दो भेद हैं। इसके आगे इनके छः-छः और उनके अनेक भेद पण्डितों ने कहे हैं। मैं इनमें से प्रमुख नौ भेदों का विवेचन करता हूं। श्रवण,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कीर्तन, स्मरण, सेवन, दास्यभाव, अर्चना, वन्दना, सख्यता और आत्म-समर्पण। सभी कालों में भक्ति की महत्ता स्वीकार की गई है। कलियुग में तो भक्ति विशेष रूप से फलदायिनी है। संसार में मैं अपने भक्त के सभी कार्य व मनोरथ पूर्ण करता हूं। उसके सब दुःखों को दूर करके उसके शत्रुओं का नाश करता हूं। इसी भक्ति के कारण मैंने काल को तृतीय नेत्र से भस्म कर दिया था। इसी के वशीभूत होकर मैंने रावण का त्याग किया था तथा भक्ति के ही कारण मैंने दुष्ट व्यास को नन्दीश्वर से दण्डित कर काशी से निष्कासित कर दिया था। भक्ति के आधीन मैं कुछ पक्षपात नहीं करता। अपने भक्त की सब प्रकार से रक्षा करता हूं। भक्ति की ऐसी महिमा को सुनकर सती मुग्ध हो गईं। उन्होंने मन ही मन प्रणाम किया तथा भक्ति के ही विषय में श्रद्धा का माहात्म्य पूछा। संसार के कल्याण के विषय में शिवजी से प्रश्न किया। इसके अतिरिक्त शास्त्र व उनकी महत्ता सम्बन्धी प्रश्न पूछे। सती की इस जिज्ञासा व ज्ञान से भरे प्रश्नों से प्रसन्न होकर प्रेमपूर्वक वर्णन करना आरम्भ किया। इतिहास, कथा, भक्ति, वर्णाश्रम, धर्म, राज धर्म, पुत्र व स्त्री आदि के धर्म, वेदों, शास्त्रों का पूर्णरूप से विवेचन किया। इस प्रकार हिमालय पर विहार करते हुए ज्ञान सम्बन्धी वार्तालाप भी किया।

चौबीसवां अध्याय

(भ्रमण करते हुए शिवजी का दण्डकारण्य में पहुंचकर सीताजी व श्रीराम के विषय में बताना तथा वहां राम व लक्ष्मण को देखकर राम को प्रणाम करना, जिससे शंकित होकर सती का प्रश्न पूछना तथा शिवजी के वचनों पर अविश्वास करते हुए उनका सीता का रूप धारण करके राम की परीक्षा लेना व परीक्षा में श्रीराम का सफल होना, अन्त में लज्जित होकर उनका इस विषय में श्रीराम से प्रश्न करना।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नारदजी ने यह सब सुनकर ब्रह्माजी से कहा—हे पितामह! अब आप मुझे सती-शिव के चरित्र के विषय में और वर्णन करें। ब्रह्माजी बोले—हे मुनिवर! अब मैं तुम्हें शिव के चरित्र का वर्णन करता हूं। एक बार जब मायावी महादेव सती के साथ नन्दी पर बैठे भ्रमण कर रहे थे तो दण्डकारण्य में पहुचकर उन्होंने सती को वह स्थान दिखाया जहां रावण सीता का हरण करके ले गया था तथा श्रीराम वन के वृक्षों, लताओं, शिलाओं, पत्थरों से सीता का पता पूछते हुए उनके वियोग में दुःखित होकर उनको ढूँढ़ रहे थे। उनकी विरह-पीड़ा की कोई सीमा न थी। इस प्रकार यह सब सती से वर्णन करते हुए शंकर जी आगे चल रहे थे। इसी बीच उन्होंने सीता को ढूंढ़ते हुए विरही भगवान् राम तथा लक्ष्मण को देखा। उनके दृष्टिगोचर होते ही शंकर जी ने तुरन्त दूसरे मार्ग से जाकर श्रीराम को प्रसन्नता से प्रणाम किया तथा 'जय' शब्द का उच्चारण करते हुए श्रीराम को अपना दर्शन दिया। शिवजी के इस व्यवहार से शिवा माया से मोहित हो गईं और उन्होंने प्रेम पूर्वक शिवजी से पूछा—भगवन्! आप तो सभी देवताओं में श्रेष्ठ, पूजनीय तथा परमतत्व हैं। फिर वियोग से व्याकुल मनुष्यों के समान आचरण करते हुए इन दोनों में से कृष्ण वर्ण वाले को आपने अभिवादन क्यों किया? यह दोनों मनुष्य कौन थे? हे नाथ! आपके इस अद्भुत आचरण का कारण जानने के लिए मेरे मन में बहुत उत्सुकता है। क्योंकि आराधक भक्त को ही अपने आराध्य देवता को प्रणाम करना चाहिए। इस प्रकार माया से मोहित तथा चकित व शंकित सती को देखकर शिवजी बोले—हे महेश्वरी! मैंने इन्हें सादर प्रणाम किया। यह वरदान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का प्रभाव है। इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए यह दोनों भाई बहुत प्रज्ञावान हैं। इनके पिता दशरथ हैं तथा इनका नाम राम व लक्ष्मण है। यह गौर वर्ण वाला लक्ष्मण है जो शेष जी का अवतार है। ज्येष्ठ का नाम रामचन्द्र है। यह स्थिर तथा जगत-पालक विष्णु के अवतार हैं। पृथ्वी पर श्रेष्ठ लोगों की रक्षा तथा विश्व के उद्धार के लिए ही इन्होंने अवतार ग्रहण किया है। इस प्रकार शंका का समाधान करते हुए सदाशिव चुप हो गए। किन्तु माया से मोहित सती जी शिवजी की बातों से विश्वस्त न हुईं। सती के अविश्वास को देखकर शिवजी बोले—हे सती! यदि तुम मेरे वचनों से सहमत नहीं हो, तो स्वयं जाकर श्रीराम की परीक्षा करके देख सकती हो। इस प्रकार जिस किसी भी उपाय से तुम्हारा अविश्वास दूर हो, कर सकती हो। मैं इसी वृक्ष की छाया में तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहूंगा। इस प्रकार शंकर जी के कहने पर माया से मोहित सती श्रीराम की परीक्षा लेने चली गईं तथा मन ही मन परीक्षा का उपाय सोचने लगीं। तब उनके मन में विचार आया कि वह सीता का रूप धारण करके श्रीराम के पास जाएं कि सचमुच श्रीराम विष्णु का अवतार हैं तो मुझे पहचान लेंगे अन्यथा नहीं। वह सीता का रूप धारण करके श्रीराम के पास गईं। तभी शिवजी का स्मरण करते हुए श्रीरामचन्द्र जी ने सती को देखते ही पहचान कर उन्हें प्रणाम किया तथा हंसकर पूछा—हे माता! इस समय शिवजी कहां हैं जो आप अकेली यहां वन में विचरण कर रही हैं, इसके साथ ही आपने अपना वास्तविक रूप को त्याग कर यह क्या रूप धारण किया है। श्रीराम के वचनों को सुनते ही आश्चर्यचकित सती लज्जित हो गईं तथा महादेव के वचनों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को सुनकर पश्चाताप करने लगीं। तथा रामवेशधारी विष्णुजी से कहने लगीं—हे राम! मैंने तुम्हारी माया जान ली किन्तु आपको शिवजी ने प्रणाम किया इसका कारण जानने की मुझे तीव्र उत्कठा है। कृपया इसका वर्णन कर मेरा संदेह दूर करें। सती के यह वचन सुनकर श्रीराम के नेत्र प्रेम से खिल उठे।

पच्चीसवां अध्याय

(श्रीराम रूपधारी भगवान विष्णु का सती से शिवजी के प्रणाम करने का कारण बताना तथा जिसे सुनने के बाद सती का शिवजी के पास वापिस जाना, शिवजी का सती चरित्र जानने के बाद अपने पूर्व प्रण का स्मरण कर सती का परित्याग करना तथा त्याग से व्याकुल सती को अनेक प्रकार की कथाएं सुनाकर विमुक्त करना।)

तदनन्तर श्रीराम सती को शिव के प्रणाम करने का रहस्य बताने लगे। राम बोले—हे देवि! एक बार बहुत काल पूर्व, शिवने अपने लोक में विश्वकर्मा को बुलाकर एक अत्यन्त सुन्दर गोशाला बनवाई जिसमें एक बहुत विशाल भवन तथा आलौकिक सिंहासन तथा एक विलक्षण दिव्य छत्र भी था। तत्पश्चात सभी देवताओं, शास्त्र, युगों ब्रह्मादि, मुनियों देवियों अप्सराओं आदि को आमंत्रित करके अनेक वस्तुएं एकत्रित कीं। नागों की षोडषकन्याओं ने मंगलाचार किया व संगीतज्ञों ने वाद्य मृदंग वीणा से संगीत समारोह किया। इस प्रकार एक बहुत बड़े उत्सव का आयोजन किया। राज्याभिषेक की सामग्री संग्रह की गईं तथा तीर्थोदक के पांच घड़े भी रखे। इसके अतिरिक्त अनुचरों ने बहुत सी अन्य सामग्रियाँ जुटाईं। तब भीषण नाद वाला शंख बजाकर प्रसन्नता से वैकुण्ठ से विष्णु को आंमत्रित किया। तब एक शुभ घड़ी देखकर भक्ति से युक्त होकर भगवान् शंकर ने विष्णुजी को उस श्रेष्ठ सिंहासन पर आसीन कर अनेक प्रकार के आभूषणों से भूषित किया। मंगल पूर्वक उनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मस्तक पर मुकुट बांधकर उनका राज्याभिषेक कराया। तथा उन्हें अपना अनन्त ऐश्वर्य प्रदान किया। तब भगवान् शिव ने उनकी स्तुति की तथा सृष्टिकर्ता ब्रह्मा से व अन्य सब देवताओं से बारी-बारी उन्हें प्रणाम व उनकी स्तुति करने को कहा। तथा आज्ञा दी कि जैसे वेद में मेरे स्वरूप का वर्णन किया गया है वैसा ही इनका वर्णन करो। ऐसी आज्ञा पाकर ब्रह्मा ने प्रसन्नता से विष्णु जी को प्रणाम किया व सब देवताओं मुनियों आदि सहित उनकी बहुत स्तुति की। इसके बाद शिवजी ने विष्णु को अनेकों वरदान देकर उन्हें संसार का कर्ता, पालन कर्ता व संहारकर्ता बनाया। धर्म, अर्थ, काम को सिद्ध करने वाला तथा दुष्टों का संहर्त्ता नियुक्त किया। अपनी तीनों शक्तियां उन्हें प्रदान करके समस्त ब्रह्माण्ड में स्वतन्त्र लीलाएं करने को कहा। अपनी सारी माया उन्हें अर्पित कर दीं तथा अनेकों अवतारों से संसार का पालन करने को कहा। अपने लोक में उन्हें गोलोक नामक स्थान दिया और कहा—हे विष्णु! पृथ्वी लोक पर आपके जितने भी अवतार होंगे मेरे भक्त श्रद्धा से उनका दर्शन करेंगे। इस प्रकार विष्णु को सर्व शक्तिमान् बनाकर अपने गणों सहित महादेव कैलाश पर्वत चले गए। उसी समय जगत्पालक विष्णु ने गोप वेश धारण किया व गौओं व गोपियों के स्वामी बने। इस समय शिवजी की आज्ञा से उन्होंने चार अवतार ग्रहण किए हुए हैं। मैं राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न। इस समय मैं अपने भाई लक्ष्मण सहित पिता की आज्ञा से वन में आया हूं। किन्तु भाग्यवश यहां आकर दुःखित हो गया हूं। कोई रावण नामक राक्षस मेरी पत्नी सीता का अपहरण करके ले गया है। अपने भाई के साथ विरह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से व्याकुल होकर मैं यहां वन में सीता को खोजने आया हूं। किन्तु हे सती ! अब आपका दर्शन पाकर कृतार्थ हो गया हूं तथा विश्वस्त हो गया हूं कि आपकी कृपा से सब कल्याण होगा। इस प्रकार प्रणाम करके अनेक प्रकार से सीता जी को सन्तुष्ट करके रामचन्द्र जी वन में विचरण करने लगे। उन्हें शिव-भक्त जानकर सती ने उनकी अत्यन्त प्रशंसा की तथा लज्जा व पश्चाताप से व्याकुल हो शिवजी के पास लौट आईं। शिवजी के पास जाकर उन्हें यही चिन्ता थी कि वह शिवजी से क्या कहेंगी। यह विचार कर वह चिन्तित होकर पश्चाताप करने लगीं। फिर शिवजी के पास जाकर मन ही मन उन्होंने शिवजी को प्रणाम किया। चिन्ता व ग्लानि के कारण उनका मुख कान्तिहीन हो गया था। उनकी ऐसी स्थिति को देखकर शिवजी ने पूछा—कुशल तो है न ? आपने उनकी परीक्षा कैसे ली। उत्तर में सती कुछ न कह सकीं केवल सिर झुका लिया। वह व्याकुल होकर शिवजी के समीप जा खड़ी हुईं। महादेव ने ध्यान से सती का चरित्र जान लिया तथा बहुत दुःखी हुए। उन्होंने सोचा विष्णु जी के सामने की हुई पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार सती का परित्याग ही उचित है। इस प्रकार वेद, धर्म के पालक भगवान शिव ने अपने प्रण के अनुसार मन से सती का परित्याग कर दिया व सती से कुछ न कहकर अपने निवास स्थान कैलाश को जाने लगे। उसी समय विशेषकर सती को सुनाने के लिए आकाश वाणी हुई—हे परमेश्वर ! योगीश्वर ! आप धन्य हैं। समस्त ब्रह्माण्ड में आपके समान कोई भी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला नहीं है। यह आकाश वाणी सुनते ही सती शोभा विहीन हो गईं तथा उन्होंने शिवजी से पूछा—हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

स्वामी ! आपने ऐसी कौनसी प्रतिज्ञा की है, कृपा करके मुझे बताएं। सती के इस आग्रह पर भी शिवजी ने विष्णु व ब्रह्मा के समक्ष हुई अपनी प्रतिज्ञा को नहीं बताया। तब सती ने अपने स्वामी शिवजी का ध्यान कर अपने परित्याग को जान लिया तथा दुःखित हो उठीं। शोक संतप्त वह दीर्घ निःश्वास छोड़ने लगीं। तब विह्वल सती को देखकर महादेव सती का मन बहलाने के लिए अनेक कथाएं कहने लगे तथा कैलाश जाकर अपने रूप का ध्यान कर समाधिस्त हो गए। दुःखी व शोक से व्याकुल सती भी उनके समीप बैठी रहीं। सती-शिव के इस चरित्र को कोई भी न जान पाया। बहुत काल के बाद जब शिवजी ने समाधि भंग की तब सती ने उनके पास जाकर उन्हें प्रणाम किया। करुणाकर शंकर ने उन्हें अपने निकट ही आसन दिया तथा अनेक प्रकार की कथाओं से सती के दुःख को दूर किया। सती का मन पहले के समान सुखमय हो गया। किन्तु शिवजी अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे।

छब्बीसवां अध्याय

(एक महायज्ञ में शिवजी व दक्ष का परस्पर सामना होना व दोनों का परस्पर प्रणाम न करना, जिससे क्रोधित होकर दक्ष का शिवजी की निन्दा करना तथा गणों सहित नन्दीश्वर को श्राप देना जिससे क्रोधित होकर नन्दीश्वर का सब ब्राह्मणों को श्राप देना तथा शान्त होकर सब देवताओं को शिवजी को बताना कि दक्ष का श्राप निष्फल रहा है।)

इसके बाद ब्रह्माजी नारदजी से शिवजी से दक्ष के विरोध का कारण कहने लगे। ब्रह्माजी बोले—पूर्वकाल में प्रयाग में मुनियों ने एक महायज्ञ किया जिसमें सभी देवताओं को आमंत्रित किया गया। वहां अनेक प्रकार से ज्ञान सम्बन्धी विचार विमर्श हुए। शिव-सती भी अपने गणों सहित वहां आये। सब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उपस्थित देवताओं ने उठकर उन्हें प्रणाम किया तथा स्तुति की। इस बीच दक्ष भी वहां आ पहुंचे उन्होंने केवल मुझ ब्रह्मा को प्रणाम किया तथा मेरी आज्ञा से वहां बैठ गए। इसके बाद सबने प्रजापति दक्ष का स्वागत व पूजन किया। किन्तु योगीश्वर शिव अपने स्थान पर निश्चिन्त बैठे रहे। उन्होंने दक्ष को प्रणाम नहीं किया। यह देखकर दक्ष क्रोधित हो उठे तथा सभा में सबके सामने शिवजी की निन्दा की व भला बुरा कहा उन्होंने शिवजी को पाखंडी, असभ्य, दुष्ट, पापात्मा, स्त्री प्रेमी तथा ब्राह्मण निन्दक कहा। तथा बोले—मेरे साथ पुत्रवत् सम्बन्ध होने पर भी इसने मुझे प्रणाम नहीं किया। अतएव मैं इसे श्राप दे दूंगा। हे देवगणों! ब्राह्मणों आप सबके सामने मैं इसका बहिष्कार करता हूं। यह आज से यज्ञ में अन्य देवताओं के समान भाग नहीं प्राप्त कर सकेगा। इस प्रकार दक्ष के मूढ़तापूर्ण वचनों को सुनकर नन्दीश्वर के नेत्र लाल हो गए तथा दक्ष को धिक्कारने व डपटने लगे। यह देखकर दक्ष ने नन्दीश्वर को भी श्राप दे दिया व शिवजी के अन्य समस्त गणों को श्रापग्रस्त कर दिया। इस पर नन्दीश्वर आपे से बाहर हो गए। उन्होंने अहंकारी दक्ष को फटकारते हुए कहा—हे मूर्ख! तू शिवतत्त्व को नहीं जानता। धिक् मूर्ख। तूने जो सब ऋषियों व मुनियों के सामने शंकर जी का अपमान किया है इससे शिवजी के प्रभाव से मैं भी तुझे श्राप देता हूं कि तुम ब्राह्मण लोग वेद का वास्तविक ज्ञान न प्राप्त कर केवल अर्थवाद पर ही विश्वास करोगे। क्रोधित नन्दीश्वर के इस श्राप को सुनकर सभा में उपस्थित ब्राह्मणों में हाहाकार मच गया। तब शंकर जी स्थिति को संभालते हुए बोले—हे नन्दीश्वर! तुमने क्रोध करके उचित नहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किया। मैं ब्राह्मण और वेद को श्राप नहीं देता। इसके साथ ही उन्होंने नन्दीश्वर को बताया कि दक्ष का श्राप निष्फल रहा। सदाशिव के इस प्रकार समझाने पर नन्दीश्वर शान्त हो गया। शिवजी अपने गणों सहित अपने निवास स्थान को लौट गए। उधर दक्ष भी ब्राह्मणों को लेकर लौट गया। अब दक्ष अपने जमाता का विरोधी हो गया। ब्रह्माजी बोले—हे प्राज्ञ! अब तक मैंने तुमसे शिव-दक्ष के विरोध का कारण कहा। अब दक्ष किस प्रकार शिवजी से दण्डित हुआ। इसका वर्णन करता हूं। तुम ध्यान से सुनो।

सत्ताईसवां अध्याय

(शिव-निन्दक दक्ष द्वारा एक महायज्ञ का आयोजन। सभी देवताओं, मुनियों, गन्धर्वों, सिद्धगणों को आमंत्रित करना, किन्तु अपनी पुत्री व जमाता को आमंत्रित न करना। सभी उपस्थितों के पूछने पर तर्क से शिवजी की निन्दा करना। दक्ष के इस आचरण को देख दधीचि व अन्य शिव-भक्तों का यज्ञ से उठकर चले जाना। यज्ञारम्भ होना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! इसी विरोध को ध्यान में रख कर दक्ष प्रजापति ने कनखल नामक तीर्थ में महायज्ञ का आयोजन किया। तथा सभी गन्धर्वों, विद्याधरों, सिद्धों, यक्षों, आदित्य समूहों नाग को दक्ष ने अपने इस महायज्ञ में आमंत्रित किया। सभी ऋषि-मुनियों अगस्त्य, कश्यप, अत्रि, वामदेव, भृगु, दधीचि, व्यास, भरद्वाज, गौतम, पैल, पराशर, गर्ग, भार्गव, ककुपसित, सुमन्तुव्रिक, कंक और वैशम्पायन को यज्ञ का ऋत्विज बनाया। मैं ब्रह्मा व जगत्पालक विष्णुजी भी अपने अनुचरों व परिवार सहित उपस्थित हुए। किन्तु पापात्मा दक्ष ने शिवजी व सती को यज्ञ में आमंत्रित नहीं किया। शिवजी के विषय में कहा कि वह कपालधारी हैं तथा सती उस कपाल-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

धारी की पत्नी है इसलिए दोनों ही यज्ञ में उपस्थित होने के योग्य नहीं हैं। तब यज्ञ में सब देवताओं आदि से दधीचि ऋषि ने शिवजी के विषय में पूछा कि उन्हें क्यों नहीं आमंत्रित किया गया तो माया से मोहित दुष्ट दक्ष ने मुस्करा कर उत्तर दिया कि सब देवों के ईश विष्णु जी तो उपस्थित हैं ही फिर शिव की क्या आवश्यकता है। सत्य तो यह है ब्रह्माजी के आग्रह से मैंने उसे अपना जमाता बना लिया। अन्यथा उस असभ्य, भूतों, प्रेतों के स्वामी, अज्ञात जन्मी, मूर्ख, स्तब्ध, मौनी तथा अहंकारी शिव को कौन पूछता। वह आमंत्रित किए जाने के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। शिव नहीं अपितु आप लोग ही मेरे यज्ञ को सफल करें। दक्ष के अज्ञान से भरे दम्भ को देखकर उसे धिक्कारते ऋषि दधीचि कहने लगे—तुम चाहे शिवजी की कितनी ही निन्दा कर लो, किन्तु उन्हें बुलाए बिना तुम्हारा यज्ञ सफल नहीं हो सकता। इस प्रकार दक्ष को फटकारते हुए दधीचि यज्ञ को त्यागकर अपने आश्रम चले गए। उन्हें देखकर यज्ञ में उपस्थित सभी शिव भक्त दक्ष की निन्दा करते हुए श्राप देते हुए उठ कर चले आये। मूढ़ दक्ष ने हंसते हुए अन्य उपस्थित मुनियों से कहा—यह ठीक ही हुआ मैं निष्कासितों को अपने यज्ञ में सम्मिलित नहीं करना चाहता। विष्णु, ब्रह्माजी आदि आप सब वेदज्ञ हैं आप ही मेरे यज्ञ को पूर्ण करें। दक्ष के ऐसे वचन सुनकर माया से मोहित देवगण व मुनिगण इसके लिए सहमत हो गए तथा उन्होंने पूजा आरम्भ कर दी। हे महाभाग नारद! इस प्रकार दक्ष श्राप में यज्ञ का वर्णन आपसे किया अब आगे की कथा दत्त चित्त होकर सुनो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अट्ठाईसवां अध्याय

(दक्ष के यज्ञ में जाते हुए चन्द्रमा व अन्य ऋषियों आदि को देखकर सती का शिवजी से यज्ञ में चलने के लिए आग्रह करना। शिवजी के मना करनेपर भी पिताके अनुचित आचरण का कारण जानने के लिए सती का शिवजी कीआज्ञा लेकर यज्ञमें जाना।)

इस प्रकार ब्रह्माजी नारद को आगे की कथा सुनाने लगे। ब्रह्माजी कहने लगे कि इस प्रकार दक्ष के कहने पर विष्णु आदि देवताओं ने यज्ञ आरम्भ कर दिया। सभी देवता व ऋषि-मुनि जब यज्ञ में सम्मिलित होनेके लिए जा रहे थे। देवी सती उस समय अपनी सखियों के साथ पर्वत पर अनेक प्रकार की क्रीड़ाएं कर रही थीं। तभी उन्होंने देखा चन्द्रमा भी रोहिणी की आज्ञा ले कर दक्ष के यज्ञमें जा रहे हैं। उन्हें देखकर सती ने अपनी सखी विजया से पूछा कि चन्द्रमा कहां जा रहे हैं। सती के इस प्रश्न को सुनकर विजया तुरन्त चन्द्रमा के समीप जाकर पूछने लगी कि वे कहाँ जा रहे हैं। तथा सब कुछ ज्ञातकर सती को बताया। विजया से यह सब वृत्तान्त सुनकर सती बहुत आश्चर्यचकित व अधीर हो उठीं व बार-बार दक्ष के शिवजी को न बुलाने का कारण विचार कर चिन्तित हो गईं। वह शीघ्रता से शिवजी के समीप जाकर कहने लगीं—हे नाथ! मेरे पिता दक्ष ने एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया है। जिसमें सम्मिलित होने के लिए सभी ऋषि, मुनि व देवता जा रहे हैं। आप मेरे पिता के यज्ञ में क्यों नहीं जाते। कृपा करके इस उपेक्षा का कारण बताएं। व मेरे साथ यज्ञ में चलिए क्योंकि समय-समय पर उत्सवों आदि पर सम्बन्धियों के समीप जाना हमारा धर्म है। इससे परस्पर प्रेम-भाव बढ़ता है। सती के इन वचनों ने शिव जी के हृदय पर मर्माघात किया। किन्तु फिर भी स्थिर योगी-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji P S (Retd) Collection, Jammu

श्वर प्रेमपूर्वक सती से बोले—हे प्रिये ! तुम्हारे पिता मेरे विरोधी हैं इसी लिए उन्होंने मुझे आमंत्रित नहीं किया । मैं भी वहाँ जाना नहीं चाहता । क्योंकि बिना बुलाए जो किसी के घर जाते हैं वे मृत्यु से भी अधिक अपमानित होते हैं । इस लिए मैं तुम्हें भी यज्ञ में जाने की आज्ञा नहीं दे सकता । यह यथार्थ है कि अस्त्र भी मनुष्य को इतनी चोट नहीं पहुँचाते जितना कि सम्बन्धियों के आक्षेप से हृदय व्यथित होता है । पिता के इस अनुचित आचरण से क्रोधित होकर सती बोली—हे महादेव ! आप से ही यज्ञ सफल होता है । किन्तु दम्भी मेरे पिता ने आपको आमंत्रित नहीं किया । मैं पापात्मा अपने पिता की तथा यज्ञ में सम्मिलित होने वाले देवताओं तथा ऋषियों के द्वारा आपकी उपेक्षाका कारण जानना चाहती हूँ । हे देव ! इसी प्रयोजन से मैं पिता के यज्ञ में जाना चाहती हूँ । अतः आप मुझे इसके लिए आज्ञा दीजिए । सती के भावों को देखकर भगवान् शिवजी ने उत्तर दिया—हे सती ! यदि तुम्हारा यही विचार है तो तुम मेरी आज्ञा से पिता के घर जा सकती हो । नन्दीश्वर पर सवार होकर सभी आभूषणों से सुसज्जित होकर जाओ । इस प्रकार शिवजी की आज्ञा प्राप्त कर सती वस्त्राभूषणों से विभूषित होकर पिता के घर यज्ञ में गईं । शिवजी की आज्ञा से उनके साठ हजार गणों ने सती का अनुकरण किया ।

उन्तीसवां अध्याय

(पिता दक्ष के घर पहुंचकर सती का यह देखकर कि यज्ञ में शिवजी का भाग नहीं रखा गया, तब क्रोधित होकर दक्ष से इस उपेक्षा का कारण पूछना तथा उत्तर में दक्ष द्वारा शिवजी की निन्दा सुनकर क्रोधित सती का अपने पिता दक्ष को धिक्कारना ।)

ब्रह्माजी बोले—हे मुनिवर ! इस प्रकार सुसज्जित होकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सती जब पिता के घर पहुंची तो वहां यज्ञ हो रहा था। सती को देखकर माता तथा बहनों ने उचित सत्कार किया। किन्तु दक्ष व उनके अनुयायियों ने उसे देखा तक नहीं। खिन्न चित्त से सती ने समान भाव से माता पिता को प्रणाम किया। फिर यज्ञ में सभी देवताओं का भाग देखकर और शंकर जी के भाग को न देखकर सती को बहुत दुःख हुआ। क्रोधित होकर उसने अपने पिता से पूछा—हे पिताजी! आपने मुझे व मेरे पति शंकर जी को यज्ञ में आमंत्रित क्यों नहीं किया। वे तो स्वयं यज्ञस्वरूप, यज्ञांग और यज्ञों की दक्षिणा स्वरूप हैं उन्हीं पर यज्ञों की सफलता निर्भर होती है। आपने शंकरजी की अनुपस्थिति में यज्ञ की कैसे कल्पना की व यज्ञारम्भ कर लिया। आपने परम तत्व शंकरजी की इस प्रकार से उपेक्षा करके उनका अपमान क्यों किया। हे दुष्ट पिता! तुम्हारी बुद्धि विचलित होकर भ्रष्ट हो गई है जो आपने शंकरजी को उचित सम्मान नहीं दिया और इन ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने शिवजी की उपेक्षा को कैसे स्वीकार किया तथा उनकी अनुपस्थिति में यज्ञ आरम्भ किया। इस प्रकार सती ने देवताओं को भी फटकारा व विष्णुजी को तो बहुत लज्जित किया। दक्ष ने अपनी पुत्री के इस व्यवहार को देखकर क्रोधित होकर सती से कहा—हे सती! इस प्रकार के वचनों से कोई प्रभाव नहीं। मेरे बिना बुलाए तू यहां क्यों आई? तेरे यज्ञ में सम्मिलित होने व न होने से मुझे कोई मतलब नहीं। तेरा पति भूतों प्रेतों का स्वामी है। वेद से निन्दित, असभ्य व अमांगलिक है। इसी कारण अकुलीन तेरे पति शिव को मैंने यज्ञ से बहिष्कृत किया है। तब जगत् माता शिवजी की निन्दा को न सहन करके कुपित होकर पिता को धिक्कारने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लगीं—हे पिताजी ! जो शिवजी की निन्दा करता है उसका नाश अवश्यम्भावी है। अपने स्वामी की अकारण निन्दा सुनकर मुझे जीने की इच्छा नहीं रही। यदि प्राणी में कुछ भी योग्यता हो तो शिवजी की निन्दा सुनकर शिव-निन्दक की जिह्वा काट ले। यही उसका प्रायश्चित है। अथवा कान बन्द कर अन्यत्र चला जाए। मैं अग्नि में प्रवेश कर अपनी इस देह को त्याग दूंगी। इस प्रकार अपने पिता को नीति पूर्ण वचनों से फटकारते हुए व्याकुल होकर सती शिवजी के वचनों को स्मरण कर पश्चा-ताप करने लगीं।

तीसवां अध्याय

(सती का दक्षके सामने योगाग्नि से शरीर त्याग करना तथा यह देखकर शिवजी के गणों का अस्त्र लेकर दक्ष को मारने के लिए प्रेरित होना, भृगु का यज्ञ की रक्षा के लिए ऋभु नामक असुरों को उत्पन्न करना व उनका शिव गणों से युद्ध करके उनकी शक्ति नष्ट करना।)

इसके बाद ब्रह्माजी नारदजी को आगे का वृत्तान्त सुनाते हुए कहने लगे—हे तात नारद ! इस प्रकार शिवजी के अपमान से सती भगवान् शंकर का ध्यान करके मौन हो गईं तथा देह त्याग की इच्छा से पृथ्वी पर उत्तर की ओर मुख करके बैठ गईं तथा योगाग्नि से अपनी देह का त्याग कर दिया। इस पर सर्वत्र एक भयानक हाहाकार मच गया। सभी देवता व मुनिगण भयभीत हो उठे। तथा सती के शरीर के भस्म होते ही रुद्र गण शस्त्र लेकर क्रोध से दक्ष को नष्ट करने के लिए दौड़े। कुछ व्यकुलता से अपने ही अंगों को काटने लगे। साठ हजार में से बीस हजार तो पीड़ा से स्वयं ही नष्ट हो गए। इस प्रकार गणों को युद्ध के लिए उत्सुक देखकर भृगु ने यज्ञ में विघ्नों की शान्ति के लिए वेद मन्त्रों से आहुतियां अर्पित करना आरम्भ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर दिया। जिससे अनेक ऋभु नामक भयंकर शक्तिशाली असुर उत्पन्न हुए तथा शिवगणों के साथ युद्ध करने लगे। युद्ध से उन्होंने गणों की शक्ति को क्षीण कर दिया।

इकत्तीसवां अध्याय

(आकाश वाणी द्वारा दक्ष तथा अन्य देवताओं के सामने दक्ष के नष्ट होने की सूचना मिलना।)

ब्रह्माजी बोले—इसी समय इन्द्रादि सब देवताओं को सुनाते हुए आकाश वाणी हुई। हे दक्ष! तुमने यह अत्यन्त अनुचित कृत्य किया है जो अपने घर में आई हुई साक्षात् मंगल रूपिणी कन्या का तिरस्कार किया है। हे मूर्ख! सती शिव तो तेरी आदरणीय हैं तूने उनका पूजन न करके अनर्थ किया है। तूने अनादि शक्ति, जगत्जननी, रक्षिका तथा संहारिका सती का अपमान किया है। भगवान् शिव ही परम तत्व व सब देवों के स्वामी हैं जिनके दर्शन मात्र से सब यज्ञों का फल प्राप्त हो जाता है। किन्तु तुमने उनकी उपेक्षा की। तेरा यज्ञ नष्ट हो जायेगा। क्योंकि पूजनियों की पूजा न करने से अमंगल ही होता है। हे मूर्ख दक्ष! तेरा यह अंहकार कि शिवजी के बिना ही यज्ञ सफल कर अपना उद्धार करूंगा, अब नष्ट हो जायेगा। शिवजी की उपेक्षा करके कोई भी देवता तेरी रक्षा नहीं कर सकता।

बत्तीसवां अध्याय

(ऋभु नामक असुरों से भयभीत शिवगणों का शिवजी के पास जाकर सब हाल सुनाना, क्रोधित होकर शिव का वीरभद्र व महाकाली को उत्पन्न करना तथा उन्हें दक्ष का उसके परिवार व अनुयायियों सहित नाश करने का आदेश देना।)

नारदजी बोले—हे पितामह! उस आकाश वाणी का क्या

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रभाव हुआ तथा उसके बाद क्या हुआ कृपाकर कहिये। ब्रह्मा जी बोले—हे नारद! उस आकाश वाणी को सुनकर सभी देवता व ऋषि मुनि आश्चर्य चकित होकर स्तब्ध हो गए। तथा दूसरी ओर ऋभु असुरों द्वारा भगाए गए रुद्र गण शिवजी के पास पहुंचे तथा उन्हें सब हाल कह सुनाया। सती के शरीर त्याग की बात सुनकर शंकरजी क्रोधित हो उठे। संहारकर्ता उन्होंने अपने शिर की एक जटा उखाड़कर उसे पर्वत पर मार कर उसके दो खण्ड कर दिये। जिससे एक से भीषण नाद के साथ महा-पराक्रमी वीरभद्र प्रकट हुआ। व दूसरे खण्ड से अत्यन्त भयंकर और करोड़ों भूतों से घिरी महाकाली प्रकट हुईं। तब महाबली वीरभद्र ने हाथ जोड़ कर शिवजी से कहा—हे देव! मुझे मेरा कार्य बताएं। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं क्षण भर में समुद्र को सुखा दूँ पर्वतों को नष्ट कर दूं। ब्रह्माण्ड को नष्ट कर दूँ। आपके प्रताप से मेरे लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है। इस प्रकार वीरभद्र के वचनों से संतुष्ट होकर महेश्वर वीरभद्र को आशीर्वाद देकर कहने लगे—हे वीरभद्र! ब्रह्मा का एक अत्यन्त दुष्ट पुत्र दक्ष महायज्ञ कर रहा है जो दम्भी व मेरा विरोधी है। तुम्हें जाकर उसके यज्ञ को नष्ट करना है तथा वहां उपस्थित सब गन्धर्वों, यक्षों, देवों, ब्रह्मा, विष्णु आदि को नष्ट कर दो। तुम्हें देखकर विश्वेदेवा आदि तुम्हारी पूजा करेंगे। किन्तु तुम उन्हें भस्म करके शीघ्र ही मेरे पास आ जाना। तथा दधीचि के मना करने पर भी जो देवता वहां मेरे विरोधी बने हुए हैं उन सबको अग्नि में भस्म कर आना और भी हे महाबली! दक्ष को सपरिवार जलाकर तिलांजलि दे आना। इस वीरभद्र को निर्देश व आज्ञा देकर भगवान् शंकर मौन हो गए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तेतीसवां अध्याय

(शिव की आज्ञा से उन्हें प्रणाम करके वीर भद्र का असंख्य रुद्रगणों तथा नव-दुर्गाओं के साथ दक्ष का ध्वंस करने के लिए प्रस्थान करना व अनेक शुभ शकुनों का होना।)

महाबली वीरभद्र के प्रस्थान का वर्णन करते हुए ब्रह्माजी कहने लगे—तदनन्तर शिवजी को अभिवादन करके वीरभद्र ने दक्ष के यज्ञ का नाश करने के लिए प्रस्थान किया। भगवान् शंकर ने प्रलयाग्नि के समान करोड़ों रुद्रगणों को उनके सहायक बनाकर भेजा। शक्तिशाली वे शिवगण उत्सुकता से वीरभद्र के आगे पीछे चलने लगे। वीरभद्र ने शिवजी का रूप धारण कर लिया तथा ऐसे रथ पर सवार होकर जो चार सौ हाथ लम्बा था व जिसे दस हजार सिंह खींच रहे थे व अन्य बहुत से सिंह और हाथी उसके पार्श्व रक्षक थे। जब वीरभद्र ने यात्रा आरम्भ की तो कल्प वृक्षों ने पुष्प वर्षा की और सब गणों ने उनकी स्तुति की। इसी समय कालो, कात्यायनी, ईशानी, चामुण्डा, मुण्डमर्दिनी, भद्रकाली, भद्रा, बलि, वैष्णवी इन दुर्गाओं ने भी अपने भूतगणों सहित प्रस्थान किया। इस प्रकार दक्ष-यज्ञ विनाश के लिए जाते हुए वीरभद्र महाकाली के गणों की गिनती करना व अनुमान करना असंभव है। केवल मात्र शंकर के गण भृगी, कटि, अशनि, मालकगण चौंसठ हजार करोड़ सेना लेकर चले थे। उसी समय भेरी शंख, जयहर, मुखों तथा श्रृगों अनेक प्रकार के शब्द हुए तथा अनेक वाद्य-ध्वनियां हुईं। इस प्रकार अनेक शुभ शकुनों से वीरभद्र की यात्रा पूर्ण हुई।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चौंतीसवां अध्याय

(दक्ष के यज्ञ में अनेक प्रकार के अपशकुन होना तथा आकाशवाणी से उसके तथा उसके कारण अन्य देवताओं के नाश की सूचना मिलना तथा भयभीत दक्ष का विष्णुजी की शरण में जाना।)

ब्रह्माजी बोले—हे देवर्षि नारद! दक्ष के यज्ञ में भी अनेक अशुभ शकुन हुए। वीरभद्र के प्रस्थान करते ही दक्ष के यज्ञ के नाश के सूचक तीनों प्रकार के अशुभ शकुन हुए। दक्ष की बाईं आंख, बाहू व जंघा फड़कने लगी। पृथ्वी में भूकम्प आने लगे तथा दिशाएँ मलिन हो गईं। सूर्य में काले धब्बे दिखाई देने लगे। दक्ष के सिर पर हजारों गीध मन्डराने लगे जिससे यज्ञ का मन्डप ढक गया। गीदड़ भयानक रूप से हाहाकार करते हुए चिल्लाने लगे। सर्वत्र अन्धकार व्याप्त हो गया तथा दिशाओं का नाश होने लगा। सभी देवता विष्णु आदि भयभीत हो गए। इसी समय एक आकाशवाणी हुई—हे दक्ष! तुझे धिक्कार है। तू दुरात्मा दुष्ट मूर्ख अज्ञानी व पापात्मा है। अब तू शिव जी द्वारा नाश को प्राप्त होगा तथा अत्यन्त दुःख का भागी बनेगा। तू निन्दनीय है क्योंकि तेरे कारण यह उपस्थित सभी देवताओं को दुःख भोगना पड़ेगा। इस प्रकार आकाशवाणी व अपशकुनों से भयभीत दक्ष व्याकुल होकर विष्णुजी की शरण में गया तथा उनकी स्तुति करने लगा।

पैंतीसवां अध्याय

(विष्णु की स्तुति करके दक्ष का उनसे यज्ञ की रक्षा करने के लिए याचना करना तथा विष्णु द्वारा दक्ष को शिव तत्त्व का महत्त्व बताते हुए अपनी असमर्थता दिखाना। इसी बीच वीरभद्र का अपनी सेना सहित दक्ष के आश्रम में पहुंचना।)

दक्ष ने विष्णु की स्तुति करते हुए विष्णु जी से कहा—हे देव! मैं भय से कांप रहा हूँ। आप मेरी रक्षा करिए। आप तो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection, Jammu

यज्ञस्वरूप हैं अतएव आप ही मेरी यज्ञ सहित रक्षा करने में समर्थ हैं। इस प्रकार स्तुति करता हुआ वह दक्ष विष्णु के चरणों में गिर गया। विष्णुजी शिवजी का स्मरण कर उन्हें प्रणाम करके दक्ष को उठाते बोले—हे दक्ष! तुमने शिवजी का विस्मरण क्यों किया। यह महेश्वर शिवजी की उपेक्षा करने का ही फल है जो तुम्हारा कार्य विफल हो रहा है। पूजनियों का आदर न करने से दुःख मिलता है। द्ररिद्रता, मरण व भय यह तीनों प्राप्त होते हैं। अतः तुम यत्नपूर्वक शिवजी की पूजा करो। तुम्हारे ही इस अनुचित आचरण से हम सब की शक्ति व ऐश्वर्य भी क्षीण हो गए हैं। विष्णु भगवान के इस प्रकार कहने पर दक्ष का मुख सूख गया। वह चुपचाप पृथ्वी पर बैठ गया। इसी समय वीरभद्र अपनी विशाल सेना के साथ वहां पहुंच गया। जिसकी सेना के शक्तिशाली गणों से समस्त पृथ्वी व आकाश भर गया। पृथ्वी कांप उठी व समुद्र थर्रा उठे। उस सेना के पराक्रम को देखकर भयभीत दक्ष के मुख से रुधिर निकलने लगा तथा अपनी पत्नी सहित विष्णु से कहने लगा—हे प्रभो! आप ही कुछ करिए। आप ही के आधार पर मैंने यज्ञ आरम्भ किया था। मैं जानता हूं आप ही यज्ञों के प्रतिपालक, वेदों के अधिष्ठाता हैं। हे देव! अब आप ही इस यज्ञ की रक्षा करने के योग्य हैं। इस प्रकार दक्ष के गिड़गिड़ाने पर पुनः परम-तत्त्व शिवजी का विवेचन करते हुए विष्णु दक्ष से कहने लगे—दक्ष! वीरभद्र शिवजी की गण सेना का महाबली सेनापति है। यह शिवजी के शत्रुओं का पूर्णतया विनाश कर देता है। निश्चय ही तुम्हारे कारण यह हमारा भी नाश कर देगा। शिवजी को भुलाकर जो मैं तुम्हारे यज्ञ में सम्मिलित हुआ हूं इसका भी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भयानक फल मुझे भोगना पड़ेगा और आज मेरी शक्ति क्षीण हो जाने से मैं इसे रोकने में असमर्थ हूं। मेरा सुदर्शन चक्र भी निष्प्रभ हो गया है। यदि हम यहां से भाग जायें तो भी वीरभद्र की पकड़ से बच नहीं सकते। क्योंकि वीरभद्र के शस्त्रों की गति समस्त ब्रह्माण्ड में है। शिवजी के गणों में भी इतनी ही शक्ति है। विष्णु जी इस प्रकार दक्ष को समझा ही रहे थे कि वीरभद्र यज्ञमण्डप में सेना सहित आ पहुंचा।

छतीसवां अध्याय

(विष्णु जी के समझाने पर भी परिहास करके इन्द्र का वज्र लेकर युद्ध के लिए उत्सुक होना। उसका वीरभद्र के साथ युद्ध। अनेक देवताओं का नाश। मारे गए देवताओं का विष्णु जी से जाकर प्रार्थना करना तथा उनके आग्रह से भगवान् विष्णु का युद्ध करने के लिए तैयार होना।)

ब्रह्माजी बोले—इस प्रकार विष्णु के समझाने पर भी इन्द्र विष्णुजी का परिहास करते हुए अन्य देवताओं को लेकर युद्ध के लिए तैयार हो गये। उन्होंने शिव-गणों के साथ भयानक युद्ध किया। याज्ञिक भृगु ने दक्ष के सन्तोष के लिए शिवजी के गणों का उच्चाटन किया। शिव के गण पराजित होकर गिरने लगे। यह देखकर महाबली वीरभद्र क्रोधित हो उठा तथा महाबली ने महा त्रिशूल से देवताओं को नष्ट करना आरम्भ किया। उसके भयानक प्रहार से बहुत से देवता नष्ट हो गए। तथा बहुत से भाग गए। देवताओं की पराजय होने लगी। इन्द्र जैसे योद्धा ही किसी प्रकार युद्ध में खड़े रहे। देवताओं को इस तरह गिरते देखकर वीरभद्र गणों सहित शिवजी का स्मरण करके मन ही मन अन्य इन्द्रादि देवताओं से कहने लगा—हे अज्ञानियो! तुमने इस यज्ञ में आकर अच्छा नहीं किया। अब इस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अनुचित रूप से शिवजी की उपेक्षा करने वालों तुम्हें मैं नष्ट कर दूँगा। हे इन्द्र ! हे सूर्य, चन्द्रमा, कुबेर, वायु, वरुण, यम, शेष आदि देवताओ आज तुम्हारे इस कृत्य का ऐसा दण्ड दूगा कि तुम सदा के लिए तृप्त हो जाओगे। इस प्रकार मन ही मन कहकर वीरभद्र अपने दिव्य शस्त्रों से उन देवताओं को छेदने लगा। जिसकी चोट से घायल सभी देवता भागने लगे। उनके भागने पर सेना सहित वीरभद्र यज्ञ मंडप में जा पहुँचा। इसी बीच भागे हुए देवता पहले से ही विष्णु के पास आकर उसके पराक्रम की सूचना दे चुके थे। इस प्रकार देवों ने विष्णु से किसी प्रकार भी यज्ञ की रक्षा करने की प्रार्थना की। देवताओं व ऋषियों के हठ को देखकर विष्णुजी वीरभद्र से युद्ध करने के लिए तैयार हो गए।

सैंतीसवां अध्याय

(यज्ञ मण्डप में वीरभद्र व भगवान श्री विष्णु का भयानक युद्ध। अनेक प्रकार से युद्ध करके उन्हें पराजित करना असंभव जानकर विष्णु व ब्रह्मा का अपने निवास स्थान पर लौट जाना। वीरभद्र व गणों द्वारा सभी ऋषियों व यज्ञ सहित देवताओं का नाश तथा मल-मूत्र द्वारा यज्ञ का विध्वंस। दक्ष का वीरभद्र द्वारा शिर छेदन व नाश।)

ब्रह्मा जी बोले—इसके बाद वीरभद्र का विष्णु जी के साथ भयंकर युद्ध हुआ। इन्द्रादि सब देवता शिवजी के गणों के साथ युद्ध करने लगे। विष्णु ने अनेक अस्त्रों के साथ भयंकर युद्ध किया। भैरवादि गण उनके साथ युद्ध कर रहे थे। इसके बाद विष्णु व वीरभद्र का रोम हर्षण युद्ध हुआ। विष्णु के शरीर से योगबल के द्वारा असंख्य शंख, चक्र, गदा को धारण किए वीर उत्पन्न होने लगे तथा आयुधों से वीरभद्र के साथ युद्ध करने लगे। वीरभद्र ने शंकरजी का ध्यान करके उन सबको अपने त्रिशूल से नष्ट कर दिया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इससे भगवान् मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर गए। पुनः उठकर चक्र लेकर उसे मारने दौड़े। किन्तु वीरभद्र ने अपने विलक्षण तेज से उस चक्र को वहीं रोक दिया, वह वहीं स्थिर हो गया तथा विष्णु भी वहीं स्थिर हो गए, उनका स्तम्भन हो गया। याज्ञिकों ने वेद मन्त्रों से उन्हें स्तम्भन से मुक्त किया। स्वाभाविक होकर विष्णु ने अपना शार्ंग धनुष उठाकर उस पर बाण चढ़ाने का प्रयत्न किया। किन्तु वीरभद्र ने तीन बाणों से वह धनुष तीन टुकड़े कर दिया। तब मैंने (ब्रह्मा) तथा सती ने विष्णु को उस महागण से परिचित कराया। उसे पराजित करना असंभव जानकर विष्णु जी अन्तर्ध्यान होकर अपने निवास स्थान को चले गए। मैं ब्रह्मा भी पुत्र शोक से विह्वल होकर सत्य लोक आ गया। मेरे और विष्णु के चले आने पर वीरभद्र ने सबको पराजित कर मृग रूप धारण करके भागते हुए यज्ञ भगवान् को पकड़ कर उसका सिर काट डाला। प्रजापति, धर्म, कश्यप और अरिष्टनेमि मुनियों को पकड़कर लातों से पीड़ित किया। इसके बाद उस महाबली ने देवमाता सरस्वती की नाक अपने नाखूनों से नष्ट कर दी। तथा अन्य देवताओं व ऋषियों को भी अनेक प्रकार से मारा व उन्हें नष्ट कर दिया। मणिभद्र नामक शिवगण ने याज्ञिक भृगु की छाती पर पैर रखकर उनकी दाढ़ी काट ली। शिवजी को दक्ष के शाप देने पर हंसने वाले पूषा को चण्ड नामक गण ने पटक कर उनके दांत उखाड़ लिए। क्रोधित शिव के गणों ने मल-मूत्र की वर्षा करके दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर दिया तथा वेदी के भीतर छिपे दक्ष को पकड़ कर वीरभद्र ने उसका सिर काट कर अग्नि कुण्ड में डाल दिया। इस प्रकार सब कुछ नष्ट करके तथा शिवजी की आज्ञा का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पालन करके विजयी महाबली वीरभद्र कैलाश पर शिवजी के समीप गया। उसके कार्य से प्रसन्न होकर शिवजी ने उसे अपनी रुद्र-गण सेना का सेनापति बना दिया।

अड़तीसवां अध्याय

(ब्रह्माजी का नारद जी को शिव-चरित्र सुनाना तथा प्रसंगवश क्षुव-दधीचि की कथा कहना। विष्णुभक्त क्षुव से अपमानित होकर शुक्रजी की आज्ञा से दधीचि का महामृत्युञ्जय का जप करना व शिवजी से तीन वर प्राप्त करके क्षुव को चोट पहुँचाना। पराजित क्षुव का विष्णु को प्रसन्न करने के लिए तप करना तथा प्रसन्न होकर विष्णुजी का प्रकट होना व उसे महामृत्युञ्जय का महत्व बताना।)

सूतजी बोले—ब्रह्मा जी द्वारा दक्ष-नाश का प्रसंग सुनकर नारदजी ने उनसे पूछा—हे तात! विष्णुजी शिवजी की उपेक्षा करके यज्ञ में क्यों गए, जिसके कारण उन्हें अत्यन्त दुःख उठाना पड़ा। नारदजी के इस संदेह को दूर करने के लिए ब्रह्माजी उसे शिव-चरित्र सुनाने लगे—हे मुनिवर! पहले कभी दधीचि के श्राप से विष्णु का ज्ञान नष्ट हो गया था। जिसके कारण वे दक्ष के यज्ञ में गए। दधीचि के श्राप का कारण बताते हुए ब्रह्माजी पुनः कहने लगे—क्षुव नामक एक ब्रह्म पुत्र राजा था। इसकी दधीचि ऋषि से बहुत मित्रता थी। एक दिन इन दोनों में भयंकर अनर्थकारी विवाद हो गया। दधीचि ने कहा ब्राह्मण सब वर्णों में श्रेष्ठ है। किन्तु लक्ष्मी के मद में चूर क्षुव का मत था कि राजा सब वर्णों में श्रेष्ठ है। उसने कहा कि श्रुति में भी राजा को सर्वमय कहा गया है। अतएव मैं राजा सबसे बड़ा हूँ। इस प्रकार क्षुव के वचनों को सुनकर दधीचि क्रोधित हो गए और उन्होंने क्षुव को घूंसा मारा। क्षुव मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर गया किन्तु सचेत होकर उठते ही उसने दधीचि पर वज्र से प्रहार किया। जिससे पीड़ित होकर दधीचि पृथ्वी पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गिर पड़े और किसी प्रकार संभलकर उठे व बदले की भावना से उन्होंने शुक्राचार्य का ध्यान किया। शुक्राचार्य ने प्रकट हो कर उनके घाव को ठीक कर दिया और सब वृत्तान्त सुनकर क्षुव से बदला लेने के लिए महामृत्युञ्जय मन्त्र बताया और कहा कि इस मन्त्र के जाप से तुम्हारे सब कार्य पूर्ण होंगे। इस प्रकार मन्त्र बताकर शंकरजी का स्मरण करते हुए शुक्राचार्य अपने स्थान को चले गए। तथा दधीचि ऋषि भी शुक्राचार्य के कहे अनुसार शंकरजी का ध्यान करते हुए तप करने के लिए वन को चले गए। वहां जाकर शिवजी को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने महामृत्यञ्जय का विधिपूर्वक जप किया व कठिन तप करने लगे। उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान् शंकर प्रकट हुए और दधीचि से वर मांगने को कहने लगे। दधीचि ने उत्तर दिया—हे प्रभो! आप मुझे तीन वर दीजिए। पहला यह कि मेरे शरीर की अस्थियां वज्र के समान बन जाएं, दूसरा मैं सबसे अवध्य हो जाऊँ, तीसरा मैं सर्वथा ही दीन न होऊँ। शिवजी ने 'तथास्तु' कह कर उसे तीनों वर प्रदान किए व अन्तर्ध्यान हो गए। प्रसन्न होकर दधीचि राजा क्षुव के पास गए और उनके सिर पर अपने पैरों से प्रहार किया। विष्णु भक्त क्षुव ने गर्व से मुनि दधीचि के वक्षस्थल पर वज्र से प्रहार किया। किन्तु शिवजी के वरदान से दधीचि को कोई हानि न हुई। यह देखकर ब्रह्मा पुत्र क्षुव आश्चर्य चकित हो गया। मुनि ने उसे पराजित कर दिया। पराजित क्षुव वन में जाकर तप करने लगा। तथा जगत्पालक विष्णु की पूजा करने लगा। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर गरुड़ पर सवार होकर विष्णु ने उसे दर्शन दिया। क्षुव ने उन्हें अपनी पराजय व मृत्युञ्जय की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रभाव को कहा। विष्णु ने कहा—परमतत्त्व योगीश्वर के भक्त के लिए भय का कोई कारण नहीं है। मैं व अन्य सब देवता उनके अधीन हैं। उनकी उपेक्षा से महान् दुःख की प्राप्ति होती है। शिव भक्त इसी मुनि के श्राप से दक्ष के यज्ञ में मेरा विनाश व पुनरुत्थान होगा। हे राजन्! मैं शिवजी को दुःख नहीं पहुंचा सकता। हां कुछ यत्न दधीचि पर विजय प्राप्त करने के लिए अवश्य करूंगा।

उन्तालीसवां अध्याय

(भक्त राजा क्षुव का कार्य सिद्ध करने के लिए विष्णुजी का दधीचि मुनि के पास जाना, शिवजी के प्रभाव से दधीचि का उन्हें पहचान लेना, दधीचि व विष्णु का युद्ध तथा युद्ध में विष्णु को असफल देखकर ब्रह्माजी का उन्हें रोकना तथा शिव-भक्त दधीचि से उनका परिचय कराना। क्षुव व विष्णुजी का दधीचि ऋषि को प्रणाम करना, दधीचि का विष्णु को श्राप देना।)

ब्रह्माजी बोले—इस प्रकार राजा क्षुव को दिए हुए वर को पूरा करने के लिए भगवान् विष्णु छद्म वेश में ऋषि दधीचि के आश्रम में गए। ब्राह्मण वेशधारी भगवान् विष्णु ने जाकर उनसे कहा—हे महर्षि! मैं आपसे एक वर मांगने आया हूँ। शैव-भक्त दधीचि ने ध्यान लगा कर शिवजी का स्मरण किया व उनके प्रभाव से सब कुछ जान लिया। इस प्रकार विष्णु का अभिप्राय जानते हुए मुनि दधीचि ने विष्णुजी से कहा—हे मान्यवर! मैं सब कुछ जानता हूं। किन्तु आप भगवान् हैं और ब्राह्मण का वेश धारण करके आये हैं। हे महाभाग! आप अपने वास्तविक स्वरूप में आ जाएं। राजा क्षुव को दिए हुए वर को पूरा करने के लिए आप यहाँ आए हैं। दधीचि के ऐसा कहते ही भगवान् विष्णु लज्जित होकर दधीचि मुनि को प्रणाम करके कहने लगे हे मुनिवर! आप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सत्य कहते हैं और शिव-भक्त आप के लिए भय का कोई कारण नहीं है। लेकिन मेरे कहने पर आप केवल एक बार राजा क्षुव के पास जाकर कह दें कि मैं आप से डरता हूं। विष्णु जी के वचन सुनकर मुस्कराते हुए दधीचि ने कहा—हे विष्णु जी! शिवजी की कृपा से मुझे किसी का भय नहीं है फिर मैं उससे क्यों कहने जाऊं? इस प्रकार दधीचि के दृढ़ वचनों को सुनकर विष्णुजी क्रोधित हो गए और अपना चक्र उठाकर दधीचि को मारने के लिए उद्यत हुए। किन्तु दधीचि के ब्राह्मण होने के कारण वह निष्प्रभ होकर चला नहीं। महर्षि दधीचि विष्णु से कहने लगे—हे देव! शिवजी का दिया यह चक्र शिव-भक्त मुझ पर ही प्रयोग करना चाहते थे किन्तु आपका यह चक्र निष्प्रभ हो गया क्योंकि शिवजी के अस्त्र ब्राह्मणों के लिए नहीं हैं। यदि आप क्रोधित मेरा नाश ही करना चाहते हैं तो आप को ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्रों व बाणों आदि आयुधों का प्रयोग करना चाहिए। तब दधीचि को साधारण ब्राह्मण व शक्तिहीन समझकर विष्णु ने उन पर अपने सभी अस्त्रों से प्रहार किया। अन्य देवगणों ने भी विष्णु की सहायता की। इन्द्रादि देवताओं ने भी पूरी शक्ति से दधीचि पर अपने अस्त्रों को चलाया। किन्तु दधीचि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अब अन्त में दधीचि ने मुट्ठी भर कुशा उठाकर उन पर फैंकी तो वह त्रिशूल बन कर प्रलयाग्नि के समान अपने तेज से अस्त्र चलाने वाले तथा दधीचि के विरोधी देवताओं को नष्ट करने लगी। यह देखकर विष्णु, इन्द्र, यम आदि के अस्त्र उस महात्रिशूल को प्रणाम कर स्थिर हो गए। विष्णु के अतिरिक्त सभी देवता अपनी शक्ति क्षीण होती देखकर भाग गए। केवल विष्णुजी तत्परता से युद्ध

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करते रहे। और शिव-भक्त दधीचि भी शिवजी की कृपा से उनका सामना निडरता व धैर्य से करते रहे। हे नारद! तब मैं ब्रह्मा भी विष्णु-भक्त राजा क्षुव को लेकर उनका युद्ध देखने गया। मैंने असफल युद्ध करते हुए भगवान् विष्णु को तथा अन्य देवताओं को मना किया कि तुम्हारा उद्योग निष्फल है। आप इस शिव-भक्त ब्राह्मण को पराजित नहीं कर सकते। मेरे इन वचनों से सन्तुष्ट व शान्त होकर भगवान् विष्णु व मेरे ब्रह्मा-पुत्र क्षुव ने नम्रता से मुनि दधीचि को प्रणाम किया व अनेक प्रकार से उनकी स्तुति करने लगे। यह देखकर ऋषि दधीचि ने उन्हें क्षमा कर दिया किन्तु विष्णु आदि के प्रति उनका विषाद व क्रोध समाप्त नहीं हुआ। शिवजी का स्मरण करते हुए उन्होंने विष्णु सहित सभी देवताओं को श्राप दे दिया कि कालान्तर में तुम सब रुद्र की कोपाग्नि से नष्ट हो जाओगे। दीनता से दधीचि को प्रणाम करके राजा क्षुव अपने निवास स्थान चला गया। विष्णुजी भी वैकुण्ठ लोक को चले गए। तब से उस स्थान का नाम थानेश्वर हुआ जहां भगवान शंकर के दर्शन से मुक्ति मिलती है।

चालीसवां अध्याय

(वीरभद्र से घायल देवताओं द्वारा दक्ष के नाश का वृत्तान्त सुनकर क्रोधित ब्रह्माजी का विष्णु के पास जाना तथा विष्णु जी के कहने पर दोनों का शिवजी की शरण में जाकर उनकी स्तुति करना व प्रार्थना करते हुए उनसे यज्ञ में मरे हुए देवताओं को दक्ष सहित पुनर्जीवित करने के लिए कहना।)

नारद जी बोले—हे तात ब्रह्मा! महाबली ने जब दक्ष का यज्ञ सहित नाश कर दिया। उसके बाद जो कुछ हुआ उसका वर्णन करें। ब्रह्माजी बोले—हे ऋषिश्रेष्ठ! रुद्र की सेना से घायल देवताओं ने मुझ ब्रह्मा से यज्ञ नाश व दक्ष के विनाश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का सब वृत्तान्त मुझसे कहा। देवताओं के दुःख को देखकर व पुत्रशोक से व्याकुल मैं क्रोधित होकर दक्ष को जीवित करने व यज्ञ सम्पूर्ण कराने का उपाय सोचने लगा जिससे अन्य सब ऋषियों व देवताओं का दुःख भी दूर हो सके। इसी विचार को मन में रखकर मैंने विष्णुजी का ध्यान किया व बैकुण्ठ लोक पहुँच गया। वहां जाकर मैंने विष्णुजी की बहुत स्तुति की। तब उन्होंने मुझे समझाया कि दक्ष ने शिवजी का अपमान करके बहुत बड़ा अपराध किया है तथा दक्ष के यज्ञ में शिवजी का भाग न रखने के कारण हम सब भी शिवजी के प्रति दोषयुक्त हैं। अतएव प्रलय अवश्यम्भावी है। केवल यदि हम सब देवता शिवजी के पास जाकर प्रार्थना व स्तुति द्वारा उन्हें प्रसन्न करें तभी प्रलय शान्त हो सकती है नहीं तो सर्वनाश हो जायेगा। मैं भी इसके लिए आपके साथ चलने को तैयार हूँ। ऐसा कह कर विष्णुजी मेरे साथ शिवलोक जाने के लिए तैयार हो गए। तब हम सब अलकापुरी के आगे उस विशाल वट-वृक्ष के पास पहुँचे। जहाँ दिव्य योगियों से सेवित योगीश्वर महादेव आसीन थे। उनके चारों ओर गण व कुबेर बैठे हुए थे। उन्हें देखकर विष्णु सहित सब देवताओं ने उनके चरणों में गिर करके प्रणाम किया व अनेक तरह से स्तुतियां करने लगे—हे करुणा सागर! हे यज्ञेश्वर! हम सब आपके अपराधी हैं। अतएव आपकी कृपा के बिना हम विनाश को होते जा रहे हैं। अब आप अपने अपराधियों को क्षमा कर अभय दान दें व प्रलय से हमारी रक्षा करें। हे महादेव! आप प्रसन्न हों व दक्ष सहित यज्ञ को पुनर्जीवित करके यज्ञ को सम्पूर्ण करें। भग देवता की आंखें ठीक हो जाएं, भृगु की दाढ़ी पहले के समान हो जाए व यजमानों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को पुनर्जीवित करें। कृपा करके इन देवताओं की विपत्तियों का नाश करें। हम इस अवशिष्ट यज्ञ में आपको उचित भाग देंगे तथा आपको सर्वोच्च सम्मानित करेंगे। कृपा करके यज्ञ को पूर्ण कराएं। इस प्रकार हाथ जोड़कर नतमस्तक होकर सभी देवता उनकी स्तुति करते हुए उनसे प्रार्थना करने लगे।

इकतालीसवां अध्याय

(भगवान् शंकर का प्रसन्न होकर सब देवताओं व ऋषियों को क्षमा करना व पुनः पहले जैसा सुखी कर देना व आरोग्य प्रदान करना। वीरभद्र से नष्ट हुए दक्ष के सिर के स्थान पर बकरे का सिर लगाकर उसे पुनर्जीवित करना। दक्ष का दीनता से शंकरजी की स्तुति करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! सभी देवताओं के स्तुति करने से भगवान शिव प्रसन्न हो गए व देवताओं को अभयदान करते हुए कहने लगे—हे देवो! तुम अपराधियों के प्रति यद्यपि मेरा मन शान्त नहीं हुआ है फिर भी तुमको मैं प्रसन्नता से क्षमा करता हूं। मैंने दक्ष के यज्ञ का नाश नहीं किया। जो दूसरे का बुरा करता है उसका विध्वंस स्वयं हो जाता है। क्योंकि दक्ष ही उस यज्ञ का सिर है। अतएव उसका सिर बकरे का जैसा होगा। भग देवता सूर्य के नेत्र से यज्ञ भाग को देख सकेंगे। तथा पूषा पुनः अपने दांतों से यज्ञ भाग का भोग कर सकेंगे। ऋत्विज भृगु की दाढ़ी पुनः बकरे सी हो जाएगी। मेरे गणों द्वारा नष्ट सभी देवता व ऋषि आरोग्य प्राप्त करेंगे। सभी ऋत्विज व याज्ञिक सुखी होंगे। इस प्रकार वेदज्ञ, करुणाकर परमतत्त्व महादेव सब सृष्टि की प्रलय से रक्षा की घोषणा करके मौन हो गए। उनके यह वचन सुनकर सब देवता प्रसन्न हो गए वह शिवजी को धन्यवाद करने लगे। तदनन्तर शिवजी को देवर्षियों सहित यज्ञ में आमंत्रित करके हम सब कनखल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जहां दक्ष ने यज्ञ आरम्भ किया था आ गए। वहां उसी समय शिवजी ने भी आकर वीरभद्र द्वारा किए गए विध्वंस को देखा। स्वाहा, स्वधा, पूषा, तुष्टि, धृति, सरस्वती सब मरे पड़े थे। इस प्रकार के विनाश को देखकर हंसकर उन्होंने वीरभद्र को बुलाया और कहा—हे महाबली! यह तुमने क्या किया जो इन ऋषियों को कठोर दण्ड दिया। अब तुम दक्ष का शरीर मेरे समीप लाओ जिससे उसने यज्ञ आरम्भ किया था। शिवजी के कहे अनुसार वीरभद्र ने दक्ष का सिर रहित मृत शरीर उनके सामने रख दिया। उस शरीर को देखकर शंकर जी ने वीरभद्र से उसके सिर के विषय में पूछा। उसने उत्तर दिया। वह तो मैंने पहले ही अग्निकुण्ड में हवन कर दिया है। तब शिवजी ने बकरे का सिर लेकर प्रजापति दक्ष के सिर पर रखा और अपनी शक्ति से उसे जीवित कर दिया। जीवित होकर प्रजापति दक्ष ने उठते ही प्रसन्नता पूर्वक शंकर भगवान् का साक्षात्कार किया व दुर्भावनाओं के हृदय से नष्ट हो जाने पर उसने शंकरजी की प्रणाम पूर्वक अनेक प्रकार से स्तुति की। उसकी स्तुति से महादेव प्रसन्न हो गए और तब सभी विष्णु आदि देवताओं ने भी प्रसन्नता-पूर्वक उनकी स्तुति की।

बयालीसवां अध्याय

(भगवान् शंकर का प्रसन्न होकर दक्ष को अपने परम स्वरूप का ज्ञान कराना तथा ज्ञान व कर्म दोनों का ही ज्ञान प्राप्त करने के लिए कहना। तब सभी देवताओं के स्तुति करने पर शिवजी का उन्हें उसके अनुसार वर देना, दक्ष का यज्ञ सम्पूर्ण कराना व अन्त में शंकर सहित सब देवताओं का अपने निवास स्थान को लौटना।)

ब्रह्माजी बोले—सभी देवताओं द्वारा स्तुति किए जाने पर शिवजी प्रसन्न हो गए तथा दक्ष से बोले—हे प्रजापति दक्ष! यद्यपि मैं सर्वोच्च परमतत्व सब का स्वामी हूं तो भी मैं भक्तों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के वश हूं। चारों भक्तों में ज्ञानी श्रेष्ठ है। ज्ञानी ही मेरा प्रिय है व मेरा स्वरूप है। कर्मरत वह मनुष्य मूर्ख है जो केवल कर्म, यज्ञ, दान, तप आदि से मुझे प्राप्त करना चाहता है। हे दक्ष! तू भी इसी प्रकार केवल कर्म से ही परमेश्वर को प्राप्त करना चाहता था। यह तेरा प्रयास अनुचित था अतएव मैंने तेरे सहित यज्ञ का नाश कर दिया था। अब तू बुद्धिपूर्वक ज्ञान प्राप्त करते हुए सावधानी से कर्मपरायण हो। मुझ शंकर को सर्वश्रेष्ठ ब्रह्माण्ड का कर्ता जान जगत् की सृष्टि स्थिति व संहार का इन कार्यों के सम्पादन के लिए ही मैं विभिन्न रूप व नाम धारण करता हूँ। विष्णु-भक्त का अर्थ यह नहीं है कि वह मेरी निन्दा करे तथा शिव-भक्त भी विष्णु का अपमान नहीं कर सकता। यदि ऐसा होगा तो हम दोनों श्राप द्वारा उसे तत्व का ज्ञान नहीं होने देंगे। तदनन्तर शिवजी के कल्याणकारी वचनों को सुनकर वहां उपस्थित सब देवता व ऋषि मुनि प्रसन्न हो गए। दक्ष व सभी उपस्थित देवगण सपरिवार शंकरजी को परमेश्वर जान कर उनकी स्तुति करने लगे। तब उनकी भक्ति व स्तुति के अनुसार शिवजी ने उन्हें वर दिये। दक्ष प्रसन्नता व प्रेम से शिवजी का नाम जपने लगा। तथा इसके बाद शिवजी ने कृपा करके दक्ष का यज्ञ सम्पूर्ण कराया। सभी देवताओं को उनके योग के अनुसार यज्ञ में भाग मिला। शिवजी को भी उनका भाग मिला। ब्राह्मणों व ऋत्विजों को दक्षिणा दी गई। इस प्रकार विधिपूर्वक यज्ञ समाप्त हुआ। सब देवता व ऋषि-गण शंकरजी का यश गाते हुए अपने निवास को चले गए। मैं व विष्णुजी भी अपने निवास स्थान चले गए। दक्ष ने भी ज्ञान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्राप्त करके शिवजी की आराधना की। इसके पश्चात् शंकरजी अपने निवास स्थान कैलाश पर्वत को चले गए। सूतजी बोले—हे महर्षियो! इस उत्तम सती चरित्र का श्रवण व पठन-पाठन करने वाला ज्ञान सुख व दिव्य गति को प्राप्त होता है। दक्ष-पुत्री सती अपना शरीर त्यागकर हिमालय की पत्नी मैना के गर्भ से उत्पन्न हुई और महान् तपस्या करके शिवजी को प्राप्त हुई।

इति श्री रुद्र संहिता सती खण्ड

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

रुद्र संहिता पार्वती खण्ड

पहला अध्याय

(नारद जी के पूछने पर ब्रह्मा जी का सती के हिमालय के यहां जन्म लेने व उस जन्म का वृत्तान्त सुनाते हुए हिमालय व मैना के चरित्र का वर्णन आरम्भ करना।)

नारद जी बोले—हे तात ब्रह्मा ! सती ने हिमालय की पुत्री बनकर किस प्रकार तप किया व कैसे शिवजी को प्राप्त किया। इसका वर्णन करें। ब्रह्माजी बोले—दक्ष के यज्ञ में शरीर त्याग करने के बाद सती ने हिमालय के यहां जन्म लेने का विचार किया। पूर्व हिमालय की पत्नी मैना ने शिव-लोक में सती की पूजा की थी। अतएव इस जन्म में सती ने मैना की पुत्री रूप में उत्पन्न होने का निर्णय किया। पर्वत की पुत्री सती इस जन्म में पार्वती नाम से जानी गई और इस जन्म में नारद तुम्हारे उपदेश से अत्यन्त कठिन तप द्वारा शिवजी को प्राप्त किया। नारदजी बोले—हे पितामह ! यह मैना अवश्य ही प्रशंसनीय व गुणी व ज्ञानी थीं जिनके गर्भ से सती ने जन्म लिया। अतएव पहले आप मुझसे मैना के जन्म व चरित्र का वर्णन करें। ब्रह्मा जी बोले—हे ऋषि श्रेष्ठ ! अब मैं तुम्हें पार्वती की माता मैना के परम पावन दिव्य चरित्र का वर्णन करता हूं। उत्तर दिशा में एक हिमाचल नाम का पर्वतों का राजा था। उस पर्वत की छटा अलौकिक विलक्षण थी। वह पर्वत सब प्रकार सम्पन्न व तेजवान् था। यह शैलराज विष्णु स्वरूप सज्जनों का पूजनीय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

है तथा सन्तों व तपस्वियों के तप का प्रिय स्थान है। स्थिर व जंगम दो प्रकार के भेदों से युक्त यह पर्वत हिमालय नाम से भी प्रसिद्ध था। इस हिमालय नगाधिराज ने अपने कुल की वृद्धि व धर्म की स्थिति के लिये विवाह करने का विचार किया। उसके ऐसा सोचते ही सभी देवता पितरों के पास गए और बोले कि यदि आप सब लोग कर्तव्य पालन के इच्छुक हों और यदि आप देवताओं के कार्य की सिद्धि करना चाहते हैं तो मंगल-रुपिणी शुभा कन्या मैना का विवाह हिमालय पर्वत के साथ कर दीजिए। इससे सबका उद्धार होगा और देवताओं के मार्ग में आने वाली विपत्तियों व कष्टों का नाश होगा। देवताओं का यह प्रस्ताव पितरों को भा गया और उन्होंने अपनी पुत्रियों के श्राप की बात स्मरण करके अपनी पुत्री मैना का विवाह हिमालय से कर दिया। बड़े उत्सव आदि के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। विवाह में हरि आदि सभी देवता व मुनि वामदेव भी उपस्थित थे। विवाह के अन्त में सभी देवता शिव-शिवा का ध्यान करते हुए अपने निवास स्थान चले गए।

दूसरा अध्याय

(ब्रह्माजी द्वारा नारद को मैना की उत्पत्ति व श्राप के विषय में वर्णन करते हुए पितर कन्याओं द्वारा शौनकादि का अपमान तथा क्रोधित सनत्कुमार द्वारा उन्हें श्राप देने व पुनः प्रार्थना किए जाने पर प्रसन्न होकर उनके श्रापोद्धार व सनत्कुमार के कथनानुसार तीनों कन्याओं के जन्म का वर्णन करना।)

नारदजी ने कहा—हे ब्रह्मन्! अभी-अभी आपने मैना की व पितरों की कन्याओं के श्राप का प्रंसग वश संकेत किया था कृपया उसका विस्तार से वर्णन करें। ब्रह्माजी बोले—मेरे पुत्र प्रजापति दक्ष के सात कन्याएं उत्पन्न हुईं। जिनका विवाह उसने महर्षियों के साथ कर दिया। उनकी स्वधा नाम की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कन्या को उसने पितरों को दे दिया। जिससे साध्वी तीन कन्याओं ने जन्म लिया। ज्येष्ठा पुत्री का नाम मेनका मध्यमा का नाम धन्या व कनिष्ठा का नाम कलावती हुआ। हे नारद! एक बार यह तीनों कन्याएं श्वेतद्वीप में शिवजी के दर्शन करने गईं तो वहां बड़ा भारी संत समागम हुआ। जिसमें ब्रह्मा-पुत्र शौनकादि भी आए। सबने विष्णु की प्रार्थना की और शौनकादि का बहुत आदर से स्वागत किया। किन्तु यह तीनों बहनें उनके स्वागत में न उठीं और न ही उन्हें अभिवादन किया। भगवान् शंकर की माया से यह तीनों बहनें मोहित हो गई थीं। उनके इस अहंकार को देखकर क्रोधित होकर शौनकादि ने उन्हें दण्ड देने का विचार किया। तथा योगीश्वर सनत्कुमार ने उन्हें श्राप दे दिया कि श्रुतियों की ज्ञानी तुम तीनों ने अहंकार के कारण हमारा अभिवादन नहीं किया। अतः तुम स्वर्ग से दूर जाकर मनुष्य बन जाओ। अब तुम तीनों मनुष्य की स्त्रियां बनोगी। ब्रह्माजी बोले—हे मुनिवर! ऋषि सनत्कुमार का श्राप सुनकर तीनों बहनें स्तब्ध रह गईं। और नत-मस्तक होकर मुनि के चरणों में गिरकर क्षमा-याचना करने लगीं—हे मुनिवर! आप हमें क्षमा करके प्रसन्न हों। माया से मोहित होकर अज्ञानवश हमने आपको प्रणाम नहीं किया। आपका क्रोध अवश्य ही उचित है। अतएव अब कृपा करके ऐसा करिए किससे हम पुनः स्वर्ग को प्राप्त करें। अब शिवजी की माया से भ्रमित ऋषि सनत्कुमार उनके श्राप मुक्ति का उपाय सोचने लगे। उन्होंने कहा—हे पितरों की कन्याओं! तुम प्रसन्न होकर मेरे वचनों को सुनो जिससे तुम्हें सुख प्राप्त होगा। शैलराज हिमालय हिम का आधार है। यह ज्येष्ठा मेनका उसकी पत्नी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

होगी। और इसका पार्वती नाम की कन्या होगी। और यह दूसरी धन्या है यह महायोगिनी जनक को प्राप्त होगी और महालक्ष्मी सीता की माता होगी। कलावती वृषभान की पत्नी बनेगी और द्वापर के अन्त में यही उसकी प्रिय पुत्री राधा बनकर उत्पन्न होगी। मैना पार्वतीजी के वर से कैलाश जायेगी। धन्या जनक से सीता को उत्पन्न कर वैकुण्ठ तक जायेगी। कलावती वृषभान की कामिनी बन राधा के साथ जीवन्मुक्त होकर गो-लोक तक जायेगी। दुःख के सर्वथा अभाव में सुख नहीं मिलता। अच्छे कर्म वालों का दुःख दूर हो जाने पर उन्हें दुर्लभ सुख प्राप्त होता है। तुम पितरों की कन्या हो अतएव तुम्हें स्वर्ग का विलास चाहिए। विष्णु के दर्शन से तुम्हारा कल्याण होगा। शिवजी में तुम्हारी दृढ़ भक्ति व आस्था है अतएव तुम धन्य व पूजनीय हो। मैना की पुत्री पार्वती कठिन तप से शिवजी की पत्नी, धन्या की पुत्री सीता रामचन्द्र की पत्नी तथा कलावती से उत्पन्न राधा श्रीकृष्ण की पत्नी हो। इस प्रकार कहकर योगीश्वर सनत्कुमार अंतर्ध्यान हो गए। और वे तीनों कन्याएं भी प्रसन्न होकर अपने निवास को चली गईं।

तीसरा अध्याय

(विवाह के पश्चात् हिमालय का मैना के साथ विहार करना, विष्णुजी का सब देवताओं को साथ लेकर हिमालय के पास जाना व उनसे ऐसा उपाय करने के लिए कहना जिससे शिवा उनके घर में उत्पन्न हों। हिमालय की सहमति प्राप्त कर सब देवों की उमा की पूजा करना व स्तुति करना।)

नारदजी बोले—हे तात ब्रह्मन्! अब आप मुझे यह बताएँ कि पार्वतीजी ने मैना के घर जन्म क्यों लिया और उस जन्म में उन्होंने कठिन तपस्या से शिवजी को प्राप्त किस प्रकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किया ? ब्रह्माजी बोले—हे मुनिवर ! मैना से विवाह कर हिमालय अपने घर आ गया। तथा मैना के साथ विभिन्न शोभनीय स्थलों पर रमण व विहार करने लगा। उसी समय विष्णुजी सब देवताओं सहित उनके पास गए। उन पूज्य लोगों को अपने घर आया देख हिमालय ने प्रसन्नता से उनका आदर सत्कार किया और कहा कि आज मेरा जन्म कृतकृत्य हो गया। मुझे अपने तप, दान, यज्ञ आदि सबका उत्तम फल प्राप्त हो गया क्योंकि आप सब देवताओं ने मेरा घर पवित्र कर मुझे कृतार्थ कर दिया है। अब आप लोगों का जो प्रयोजन अथवा मेरे योग्य कोई कार्य हो तो कहें। हिमालय के इस प्रकार के वचनों को सुनकर विष्णु आदि का विश्वास दृढ़ हो गया और उन्होंने सोचा कार्य सिद्ध होगा। तब वे हिमालय से कहने लगे—हे महाभाग ! जगत्जननी उमा पहले दक्ष की पुत्री व शिवजी की पत्नी हुई थीं तथा पिता द्वारा की गई पति की उपेक्षा को देख कर खिन्न होकर उन्होंने अपना प्रण स्मरण करके शरीर त्याग दिया था। यह सब वृत्तान्त आपके लिए अज्ञात नहीं है। हम सब देवता आपके घर इसी इच्छा से आए हैं कि कृपा करके आप कुछ ऐसा करें जिससे उमा देवी आपके घर उत्पन्न हों। विष्णुजी के यह विचार जान कर हिमालय ने उनका कथन स्वीकार करके कहा कि ऐसा ही होगा। इस प्रकार हिमालय की स्वीकृति जान कर सब देवताओं ने एक पवित्र स्थान पर बैठ कर उमा देवी का स्मरण करके ध्यान किया। उन्होंने प्रणाम करके उमा देवी का अभिवादन किया व उन्हें प्रसन्न करने के लिए अनेक प्रकार से स्तुतियां करने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चौथा अध्याय

(देवताओं की स्तुति से प्रसन्न होकर उमा देवी का उन्हें दर्शन देना व देवताओं का प्रार्थना करना कि वे सनत्कुमार के वचनों को पूर्ण करने के लिए मैना की पुत्री के रूप में प्रकट हों। इस प्रकार उनकी प्रार्थना को सुनकर शंकर जी व सभी देवताओं के सुख को ध्यान में रखकर जगदम्बा का उन्हें ऐसा ही करने का आश्वासन देना।)

ब्रह्माजी बोले—इस प्रकार सभी देवताओं के स्तुति करने से उमा देवी प्रसन्न हो गईं व उन्हें अपना दर्शन दिया। उनका तेज अद्वितीय था। उन्हें देखकर सभी देवता उनकी स्तुति करने लगे कि—हे जगदम्बा! कृपा करके अब आप सनत्कुमार जी के वचनों को पूर्ण करें। आप पृथ्वी पर हिमालय व मैना की पुत्री बनकर अवतार ग्रहण कर सब देवताओं को सुख प्रदान करें। आपके इस अवतरण से कैलाशवासी शंकर जी भी प्रसन्न होंगे तथा सभी देवता सुखी होंगे। इस प्रकार देवताओं की नम्र भक्ति व आग्रह भरी याचना को सुनकर प्रसन्न हो गईं। इस प्रकार सब कुछ विचार कर अपने स्वामी शंकर जी का स्मरण करके मुस्कुरा कर कहने लगीं—हे समस्त ब्रह्माण्ड के देवताओ! तुम्हारी विपत्तियों का नाश हो, आपकी प्रार्थना पूरी होगी। मैं हिमालय व मैना के घर पृथ्वी पर अवश्य ही अवतार लूंगी, क्योंकि हिमालय व मैना ने भी मेरी बहुत आराधना व सेवा की है। अभी तक वे मेरी सेवा करते हैं। तुम्हारे सब के सुख के लिए मैं उनके यहां प्रकट होऊंगी। शिवजी की माया विलक्षण है अतएव मैं उन्हें ही पति के रूप में वरण करूंगी। यथार्थ यह है कि जब से मैंने देह त्यागी है तबसे शंकरजी मेरी चिन्ता में दिगम्बर हो गए हैं और सती-रूपिणी मेरा वियोग आज भी उनके लिए दुःसाहस है। मेरे कारण ही वह कुवेषी हो गए हैं। गले में अस्थियों की माला है। सदा अशान्त रहते हैं। वह कभी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विश्राम अथवा शयन नहीं करते। वे रुद्र मुझे प्राप्त करना चाहते हैं। अतएव मैं मैना के घर अवश्य ही प्रकट होऊंगी। आप सब देवगण निश्चिन्त होकर अपने घरों को जाएं व शिवजी का कीर्तन करें। उमा देवी की कृपा से तुम सब लोग सुखी बनोगे। इस प्रकार देवताओं को आशवस्त करके जगत्जननी माता अपने निवास स्थान को चली गईं तथा उधर देवता भी अपने घरों को लौट गए। दुर्गाजी का यह चरित्र पठन अथवा श्रवण से सब कामनाओं व कार्यों को पूर्ण करने वाला है।

पांचवां अध्याय

हिमालय व मैना का जगदम्बा का ध्यान करके तप करना, प्रसन्न होकर उमा का प्रकट होना व वर माँगने के लिए कहना। मैना को मनोवाँछित दोनों वरों की प्राप्ति। प्रथम वर के फलस्वरूप मैना को मैनाक नामक दीर्घायु ज्येष्ठ पुत्र की प्राप्ति। इन्द्र से भयभीत मैनाक का समुद्र में जाकर छिपना व समुद्र से मित्रता।)

आगे का वृत्तान्त सुनाते हुए ब्रह्माजी कहने लगे—हे नारद! जब देवता हिमालय व मैना से वचन लेकर चले गए तभी से वे दोनों भगवान् शंकर व जगत्जननी शिवा का नाम जपने लगे व बहुत तन्मयता से उनकी आराधना करने लगे। देवताओं के आदेशानुसार वह उमादेवी को पुत्री के रूप में प्राप्त करना चाहते थे। ब्राह्मणों को दानकर चैत्रमास से विधि पूर्वक जगदम्बा की प्रार्थना व तप करना आरम्भ कर दिया। सबसे पहले उन्होंने अष्टमी के दिन व्रत किया व नवमी को धूप दीप आदि सम्पूर्ण पूजा सामग्री से उनका विधिवत् पूजन किया। इस तप की साधना में कभी उन्होंने केवल मात्र जल का आहार किया तो कभी केवल वायु का और बहुधा तो निराहार ही तप किया। इस प्रकार उनकी श्रद्धा व व्रत से प्रसन्न होकर जगत्जननी ने उन्हें अपना साक्षात-दर्शन दिया और मैना से कहा—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हे मैना ! तुम दोनों ने अत्यन्त श्रद्धा व लगन से मेरा व्रत व पूजन किया है तुम्हारी सेवा से मैं सन्तुष्ट हूँ । अब तुम अपनी इच्छा से वर मांगो । जगदम्बा के इन वचनों से कृतार्थ होकर मैना ने पुनः-पुनः प्रणाम करके उनसे कहा—हे जगदम्बा ! आप को प्रणाम करती हुई मैं आपके शरणागत हूँ । आप यदि मुझे वर देना चाहती हैं तो प्रथम वर में मुझे दीर्घायु, पराक्रमी, सभी प्रकार की सिद्धियों के ज्ञानी शत-पुत्र प्रदान करें । द्वितीय वर में हे माता ! आप गुणवती, रूपवती, विलक्षण, कुल का उद्धार करने वाली व सर्वत्र पूजनीय मेरे घर में मेरी पुत्री के रूप में प्रकट हों और मैं आपका पाणिग्रहण रुद्रजी के साथ करूँ । हे नारद ! मैना के इन दोनों वरों को सुनकर देवी स्मित हास्य से बोलीं—हे मैना ! तुम सौ पुत्रों को प्राप्त करोगी जिसमें तुम्हारा ज्येष्ठ पुत्र सब प्रकार से श्रेष्ठ व अधिक पराक्रमी होगा । द्वितीय वर के अनुसार देवताओं के दुःखों व विपत्तियों को दूर करने के लिए मैं भी तुम्हारी पुत्री के रूप में अवतार ग्रहण करूंगी । इस प्रकार दोनों वरदान देकर उमादेवी अन्तर्ध्यान हो गईं । व्रत का इच्छित फल प्राप्त करके प्रसन्न मैना भी उल्लास के साथ घर लौट आई । व घर लौट कर उसने हिमालय को सब कुछ कह सुनाया । इस प्रकार वर प्राप्त कर दोनों आनन्दमग्न हो गए । ब्रह्माजी बोले—कुछ काल पश्चात् मैना के गर्भ से ज्येष्ठ पुत्र मैनाक का जन्म हुआ । पुत्र प्राप्त कर हिमालय व मैना अत्यन्त हर्षित हुए । तथा सम्पूर्ण हिमालय नगर में उत्सव होने लगे व ब्राह्मणों को दान दिया गया । मैना का यह ज्येष्ठ पुत्र मैनाक नागकन्याओं का पति बना । जब क्रोध से इन्द्र ने पर्वतों के पंखों को नष्ट करना आरम्भ किया, तब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भयभीत मैनाक समुद्र की शरण में गया जहां समुद्र ने इसे अपने भीतर छिपने का स्थान दिया। उसी समय से समुद्र के साथ उसकी मित्रता हो गई।

छठवां अध्याय

(मैना को दिए वर को पूरा करने के लिए व देवताओं के सुख के लिए जगदम्बा का हिमालय के घर जन्म लेना।)

नारदजी को पार्वती जन्म की कथा सुनाते हुए ब्रह्मा जी बोले—पुत्रों को प्राप्त करके मैना व हिमाचल सदा रुद्र व उमा का स्मरण करते रहते थे। जगत्जननी ने मैना को दिए वचनों को पूरा करने के लिए पूर्ण अंशों में हिमाचल के हृदय में स्थान ग्रहण किया व तब उत्तम समय में हिमाचल ने मैना में गर्भ स्थापित किया। पर्वत रानी मैना के गर्भ धारण करते ही उसकी शोभा अद्वितीय व दीप्तिमान हो गई। तथा गर्भ का समय पूर्ण होने पर कल्याणकारिणी शिवा जगदम्बा ने मैना के घर जन्म लिया।

सातवां अध्याय

(उमा देवी का जन्म लेकर हिमाचल के घर में निरन्तर वृद्धि को प्राप्त करना। उनके बड़ी होने पर शंकर जी की इच्छा से नारदजी का हिमालय के घर जाना व हिमाचल की पुत्री की भाग्य रेखा को देखकर उसके भावी पति को अशुभ लक्षणों से युक्त बताना। पार्वती जी को सुखी करने के लिए तप करने को कहना।)

ब्रह्माजी कहने लगे—हे तात नारद! जगदम्बा ने जन्म लेकर साधारण कन्याओं के समान रुदन किया। उसके रुदन को सुनकर समस्त हिमाचल नगर में हर्षोल्लास छा गया व हिमाचल भी आनन्दमग्न हो गए। नगर भर में उत्सव होने लगे। नृत्य गीत हुए व वाद्य बजने लगे। हिमाचल ने शास्त्रोक्त विधि से जातकर्म किया। व ब्राह्मणों को दान दिया। मुंह मांगी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वस्तुएं प्रदान कर सबको प्रसन्न किया। शुभ समय में कन्या का नामकरण संस्कार हुआ। विद्वानों व मुनियों ने कन्या का तारा, महाविद्या, काली आदि अनेक नाम सुझाए। हिमाचल की पुत्री अपने पिता के घर चन्द्रमा की कला के समान वृद्धि को प्राप्त होने लगी। उसके शरीर व अंगों की शोभा चन्द्रमा के समान दीप्ति व कान्तिमय थी। अपनी सखियों के साथ विभिन्न प्रकार की क्रीड़ाएं करने लगी। उन्होंने अपना वास्तविक तेज को गुप्त रखा। कभी वह गंगा के किनारे मिट्टी से घर बनाती तो कभी गेंद के साथ खेलती तो कभी विभिन्न प्रकार के वेश बदलकर क्रीड़ाएं करतीं। तथा समय आने पर गुरु के पास जाकर बड़ी तन्मयता से विद्या ग्रहण करने लगी। ब्रह्माजी बोले—हे नारद! फिर एक बार तुम शिवजी की आज्ञा से हिमाचल के घर गए वहां उसके घर आपका बहुत आदर सत्कार हुआ। तथा अपनी कन्या पार्वती को बुलाकर हिमाचल ने उसे तुम्हें प्रणाम करने के लिए कहा। पार्वती के प्रणाम करने पर हिमाचल ने कहा—हे मुनिवर नारद! आप भूत वर्तमान व भविष्य के ज्ञाता हैं। कृपया आप मेरी कन्या का भाग्य बताएं कि इसका पति कैसा होगा। तब तुमने पार्वती जी का हाथ देखकर कहा—हे शैलराज! आपकी कन्या का भाग्य बहुत उत्तम है। इसका पति योगी, नग्न, निर्गुण, कामवासना से रहित, माता पिता से रहित, अहंकार से रहित, अपवित्र व साधु होगा। नारद तुम्हारे यह बचन सुनकर दोनों पति-पत्नी दुःखी हो गए। पार्वती ने सोचा नारदजी की भविष्यवाणी सदा सत्य होती है। इस प्रकार के लक्षण केवल रुद्र में ही हो सकते हैं। इस प्रकार रुद्र जी का विचार आते ही पार्वती जी अत्यन्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रसन्न चित्त हो गईं। उधर पार्वती के वर के अशुभ लक्षणों से युक्त जानकर हिमाचल ने नारदजी से कहा—इस दोष को दूर करने के लिए क्या उपाय करना चाहिए। नारदजी हिमाचल को समझाते हुए कहने लगे। जिन लक्षणों को मैंने आपसे अभी कहा वह सब रुद्रजी में ही प्राप्त होते हैं। किन्तु भगवान् रुद्र में यह अशुभ लक्षण भी शुभ कहे गए हैं। क्योंकि समर्थ व्यक्ति का अवगुण भी गुण के समान सुख देने वाला कहा गया है। अतएव आप अपनी पुत्री का विवाह उनके साथ ही कर दें। इसके लिए पार्वती जी को तप के द्वारा उन्हें प्रसन्न करना होगा। तभी प्रसन्न होकर रुद्र इन्हें पत्नी के रूप में स्वीकार करेंगे। इस प्रकार पार्वती जी को तप करने का उपदेश देकर तुम वहां से चले आए।

आठवां अध्याय

(मैना का हिमालय के पास जाकर पार्वतीजी के विवाह के विषय में कहना, हिमालय का उसे पार्वतीजी को तप करने के लिए आदेश देना, किन्तु मैना का पार्वतीजी के कोमल शरीर को देखकर व्याकुल होना व पार्वतीजी का माता के आशय को समझकर स्वयं तप करने का कारण कहना।)

ब्रह्माजी बोले—हे तात नारद! पार्वतीजी के बड़ी हो जाने पर एक बार मैना ने अपने पति हिमालय के पास जाकर प्रणाम कर कहा—हे नाथ! हमारी कन्या पार्वती अब विवाह के योग्य हो गई है। अतएव अब किसी सुयोग्य वर के साथ इसका विवाह कर देना चाहिये। पार्वती के सुख के लिये वर का गुणवान् होना आवश्यक है। हिमालय ने पत्नी के विचार जानकर उत्तर दिया—हे मैना! इसमें तुम्हें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। नारदजी की भविष्यवाणी सत्य ही होती है। यदि तुम अपनी पुत्री को प्रसन्न देखना चाहती हो तो उसे भगवान् रुद्र का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ध्यान करके तप करने के लिए कहो। भगवान् रुद्र प्रसन्न हो कर जब इसका पाणिग्रहण कर लेंगे तब उनके अशुभ लक्षण भी अपने आप ही उत्तम व शुभ हो जायेंगे। पति के वचन सुनकर मैना हर्षित हो गई। किन्तु इसके साथ ही तप के लिए सर्वथा कोमल उमा को देखकर दुःख से व्याकुल हो गई, तथा खिन्नचित्त होकर मौन हो गई। माता-पिता के इस प्रकार के भावों को जानकर सर्वज्ञानी श्री उमा (जगदम्बा) ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा—हे माता मैंने रात्री के चौथे पहर ब्रह्म-मुहूर्त में एक स्वप्न देखा जिसमें एक तेजस्वी ब्राह्मण ने मुझे कृपा करके दर्शन देकर मुझे भगवान् के लिए तप करने का सुझाव दिया। पार्वतीजी के इस प्रकार कहने पर मैना ने सब कुछ स्वप्न सहित कह सुनाया।

नवां अध्याय

(सती के विरह से व्याकुल शिवजी का गृहस्थ धर्म त्याग कर समाधि लगाना व समाधि के श्रम से उत्पन्न पसीने से एक बालक का जन्म लेना, तभी पृथ्वी का स्त्री रूप धारण करके वहां आना व शिवजी का उसे उस बालक का पोषण करने का आदेश देना व बालक को पृथ्वी के नाम से ही भौम नाम प्राप्त करना व भौम का शिवजी की आराधना से शुक्रलोक को प्राप्त करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! कैलाश पर्वत पर भगवान् शंकर भी अपनी प्रिया के वियोग से व्याकुल होकर विचरते रहे। कभी अपना दुःख हल्का करने के लिए अपने गणों को सतीजी के गुणादि का वर्णन करते रहते। पश्चात् गृहस्थ-धर्म का त्याग कर वस्त्र त्यागकर कुछ समय तक नग्न समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करते रहे। अन्त में पुनः कैलाश पर्वत लौट आए व समाधिस्थ हो गए। समाधि से जगने पर समाधि के परिश्रम से उत्पन्न उनके मस्तक के पसीने की बूंदें पृथ्वी पर गिर पड़ीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इसी पसीने की बूँद से एक बालक उत्पन्न हुआ। जो लाल वर्ण युक्त व चार भुजाओं वाला था। यह बालक अत्यन्त सुन्दर व विलक्षण था। प्रकट होते ही उस बालक ने रुदन किया। उसके उत्पन्न होने पर शिवजी साधारण मनुष्यों के समान उसके पालन पोषण का विचार करने लगे। इसी समय एक भयभीत स्त्री वहां आई और बालक को उठाकर दूध पिलाकर गोद में लाड़ प्यार करने तथा चुम्बन लेने लगी। यह कोई साधारण स्त्री नहीं अपितु स्वयं पृथ्वी थी। अन्तर्यामी शंकर जी ने उसे पहचान कर कहा—हे पृथ्वी तुम इस बालक का बड़े लाड़ प्यार से पालन करो। यह बालक मेरे मस्तक के पसीने से उत्पन्न हुआ है यह तुम्हारे ही नाम से प्रसिद्ध होगा। महेश्वर के ऐसा कहते ही वह पृथ्वी रूपिणी स्त्री बालक को गोद में उठाकर अपने निवास स्थान को लौट गई। और वहां बड़े प्रेम से उसका पोषण करने लगी। उसी के नाम से वह बालक भौम नाम से प्रसिद्ध हुआ। युवा होने पर उसी बालक ने काशीपुरी आकर वहां बहुत समय तक भगवान् शंकर का पूजन किया। उसके फल-स्वरूप उसे अन्त में शुक्रलोक से भी ऊपर के लोक में स्थान मिला।

दसवां अध्याय

(शिवजी का अपने गणों सहित हिमाचल प्रदेश में तप करने के लिए जाना। हिमालय का उनका स्वागत करना तथा तप के लिए पूर्ण प्रबन्ध करना। पार्वती को साथ लेकर शिवजी की सेवा में जाना, किन्तु शिवजी का सौंदर्यमयी पार्वती को अपनी दासी स्वीकार न करना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे मुनिवर! कुछ समय के बाद शिवजी अपने गणों सहित तप करने के लिए हिमालय पर तप करने के लिए पहुंचे। पवित्र गंगा के ब्रह्मलोक में प्रकट होने के स्थान पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तप के लिए सर्वथा योग्य जानकर वहीं समाधि लगाकर ध्यानमग्न हो गए। उनके आगमन का समाचार पाकर हिमाचल वहां भगवान् रुद्र के सत्कार व दर्शन के लिए पहुंचे। वहां जाकर उन्होंने रुद्र को प्रणाम किया तथा उनकी आराधना की। भगवान् शंकर हिमाचल का अभिवादन स्वीकार कर हंसते हुए बोले—हे हिमालय! मैं यहां तप करने के लिए आया हूं। आप मेरी तपस्या के लिये इस प्रकार का प्रबन्ध कर दो जिससे मैं यहां पूर्णतया एकान्त में तप कर सकूं तथा मेरे तप में विघ्न उपस्थित न हो। ब्रह्माजी बोले—महादेव की इच्छा को जानकर हिमालय ने कहा कि आप यहां निश्चिन्त होकर तप करें। मैं सब प्रकार से आपकी सुविधा का ध्यान रखूँगा। इस प्रकार शिवजी को आश्वस्त करके हिमालय घर आ गया। घर आकर उसने मैना को सब कुछ कह सुनाया और अपने सेवकों व गणों को बुलाकर सबको निषेध कर दिया कि ब्रह्मलोक में गंगा के उद्गम स्थल पर कोई न जाए तथा घोषणा कर दी कि जो भी वहां जाएगा उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा। ब्रह्माजी बोले—हे तात नारद! कुछ समय पश्चात हिमालय सब प्रकार की पूजन सामग्री पुष्प फल गन्ध सहित पार्वती जी को लेकर भगवान् शिव की सेवा में पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने सादर भगवान् शंकर को प्रणाम किया। तथा पार्वती जी को आगे करके बोले हे भगवन्! यह मेरी पुत्री पार्वती आपकी सेवा करना चाहती है। अतएव मैं इसे आपके पास लाया हूं। हे कृपा निधान! आप मेरी इस पुत्री को अपनी सेविका के रूप में स्वीकार करें। हिमालय की यह प्रार्थना सुनकर शिवजी ने अपने नेत्र खोले तथा परम सुन्दरी गुणवती पार्वती जी को देखकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हिमालय से बोले—हे हिमाचल! तुम्हारी पुत्री चन्द्रमा के समान अद्वितीय सुन्दरी है। इस प्रकार की मोहिनी स्त्रियों के सामीप्य से तप में विघ्न उत्पन्न हो जाते हैं अतएव मैं इस कन्या को अपनी सेवा में रहने की आज्ञा नहीं दे सकता। हिमाचल महादेव शंकर के इस प्रकार कठोर व शुष्क उत्तर को सुनकर खिन्न चित्त होकर चिन्तित हो गया।

ग्यारहवां अध्याय

(शिवजी के इस प्रकार मना करने पर पार्वती जी द्वारा शक्ति की महिमा का विवेचन से तर्क करते हुए शिवजी की बात का खण्डन करना। उनके युक्ति पूर्ण खण्डन से रुद्र का उन्हें अपनी सेवा करने की आज्ञा देना। पार्वती जी का प्रतिदिन शिवजी की सेवा व पूजन करना। उधर ब्रह्माजी की आज्ञा से कामदेव का शिवजी को मोहित करने के लिए अपना जाल फैलाना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! इस प्रकार जब शिवजी ने निष्ठुरता से पार्वती की सेवा को अस्वीकार कर दिया। तब पार्वती स्वयं शंकरजी की युक्ति का खण्डन करते हुए कहने लगीं—हे योगीश्वर! आपकी बात का उत्तर मैं स्वयं देना चाहती हूं। हे देव! आप यहां तप की इच्छा से पधारे हैं। आपका यह तप क्या शक्ति से अविच्छिन्न है? यह शक्ति ही सब कर्मों की प्रकृति मानी गई है। यही सृष्टि की रचना व संहार का कारण है। आप विचार करके देखिए यदि यह प्रकृति रूपी शक्ति न हो तो संसार का स्वरूप कैसा हो। संसार की इस स्थिति के लिए प्राणी द्वारा शक्ति का पूजन आवश्यक है। पार्वती जी के इस तर्क को सुनकर महेश्वर बोले—हे शैल सुता! मैंने योग द्वारा प्रकृति का नाश कर दिया है। अब मैं तत्त्व रूप में स्थित हूं। साधु जनों के लिए प्रकृति का संग्रह करना उचित नहीं है। तब इस प्रकार के खण्डन को सुनकर पार्वती हंसते हुए कहने लगीं—हे योगीराज! आप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कैसी बात करते हैं जरा विचार करें कि यदि सचमुच ही आपने प्रकृति का नाश कर दिया है तो आप कैसे विद्यमान हैं। संसार की स्थिति ही प्रकृति है। जगत् के समस्त व्यापार का प्रकृति ही कारण है। आप प्रकृति को ही नहीं जान रहे हैं मैं प्रकृति हूं और आप पुरुष। मेरी ही शक्ति से आप गतिशील हैं, सगुण हैं चेष्टावान् हैं प्रकृति के अभाव में पुरुष असमर्थ है। इस प्रकार सांख्य योग के आधार पर दिए गए तर्कों से प्रभावित होकर शिवजी ने कहा—हे पार्वती! यदि मैं पुरुष शक्ति से रहित हूं तो आप प्रकृति श्रद्धापूर्वक मेरी सेविका बनो। इस प्रकार पार्वती जी से सहमत होकर शिवजी ने हिमाचल से कहा—हे पर्वतराज! अब मैं तप करना चाहता हूं। आपकी कन्या यहां नित्य आकर मेरा दर्शन व पूजन कर सकती है। शिवजी के यह वचन सुनकर हिमाचल प्रसन्न होकर पार्वती को साथ लेकर घर आ गए। उसी दिन से पार्वती उनके दर्शन के लिए आने लगीं। अपनी सखियों के साथ आकर वह उनका सोलह प्रकार से पूजन करतीं उनके चरणों को धोकर उसी जल का चरणामृत ग्रहण करतीं। इसी प्रकार पूजन व दर्शन में पार्वतीजी का समय व्यतीत होने लगा। कभी-कभी पार्वती जी अपनी सखियों को साथ लेकर कामोत्पादक गीत भी गाने लगीं। पार्वतीजी को इस प्रकार अपनी सेवा में लगा देखकर शिवजी ने सोचा यह काली, उमा, महेश्वरी तभी तप करेगी जब उसके द्वारा अभिमान का बीज अंकुर सहित नष्ट हो जाएगा और तभी मैं इसे अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण करूंगा। ब्रह्माजी बोले—इस प्रकार विचार कर शिवजी ध्यानमग्न हो गए। किन्तु उनके मन में पार्वती जी के लिए चिन्ता [illegible] तत्त्व समझाया और एक [illegible] वे शैलजा को नि[illegible]

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देखते और पार्वती जी बहुत श्रद्धा व प्रेम-भाव से शिवजी का पूजन, दर्शन, चिन्तन करने लगीं। इस प्रकार उन दोनों को देखकर तारकासुर से पीड़ित मुनि व देवताओं ने मुझ ब्रह्मा से कहा और मैंने कामदेव को आज्ञा दी। मेरी आज्ञा से कामदेव वहां पहुंचा और अनेक प्रकार का माया जाल फैलाकर कामदेव को मोहित करने का प्रयास करने लगा। किन्तु रुद्र पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा अपितु अन्त में उन्होंने काम को ही भस्म कर दिया।

बारहवां अध्याय

(दक्ष की पुत्री दिति व कश्यप के दो पुत्रों के नाश के बाद उन चार मरुद्गणों की उत्पत्ति व उन्हें स्वर्गलोक की प्राप्ति। तप द्वारा दिति को अत्यन्त पराक्रमी पुत्र की प्राप्ति व माता की आज्ञा से उस वज्रांग नामक पुत्र का समस्त ब्रह्माण्ड को जीत राजा बनना व अपनी माता का बदला लेना तथा अन्त में देवताओं को उनका राज्य लौटा देना। वज्रांग का अपनी पत्नी की इच्छा पूर्ण करने के लिए तप करना व ब्रह्मा जी से वर प्राप्त करना।)

नारद जी ने पूछा—हे महाभाग ब्रह्मन्! आपने अभी जिस तारकासुर का संकेत दिया वह कौन था उसने देवताओं को पीड़ित क्यों किया? कृपाकर इसका वर्णन करें। ब्रह्माजी बोले—[illegible]ीचि के पुत्र कश्यप हुए जिनकी दिति आदि दक्ष की तेरह कन्याएं स्त्रियां थीं। दिति उनमें सबसे बड़ी थीं। उसके हिरण्य कश्यप और हिरण्याक्ष नामक दो पुत्र हुए। इन दोनों को विष्णु जी ने नृसिंह व वराह रूप धारण कर नष्ट कर दिया। तब पुत्रों के नाश से शोकाकुल दिति ने कश्यप जी से प्रार्थना की व उनकी सेवा व कृपा से पुनः गर्भ धारण किया। इन्द्र को जब यह बात ज्ञात हुई तो दिति के गर्भ में प्रवे[illegible] कर बालक के टुकड़े-टुकड़े कर दिए [illegible] एकहने लगीं—[illegible]स बालक को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मृत्यु न हुई। अतएव गर्भ काल पूर्ण होने पर उसके गर्भ से उनंचास बालकों का जन्म हुआ। यह सब मरुद्गण हुए व स्वर्ग लोक को प्राप्त हुए। इस प्रकार उनके स्वर्गलोक चले जाने पर दिति पुनः कश्यप जी की सेवा में पहुंची और उन्हें प्रसन्न करने का यत्न करने लगी। कश्यप ने कहा—दिति! तुम दस हजार वर्ष तक शुद्ध होकर तप करो। तभी तुम अपनी इच्छानुसार पुत्र प्राप्त कर सकोगी। इस प्रकार कश्यप के वचनों के अनुसार दिति ने श्रद्धापूर्वक तप किया व तप के पूर्ण होने पर पति के द्वारा उसने फिर गर्भ धारण किया। इस बार उसके अत्याधिक बलवान् वज्रांग नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। दिति ने उसे देवताओं से युद्ध करने का आदेश दिया। माता की आज्ञा से वज्रांग ने सब देवताओं को पराजित कर उन्हें बन्दी बनाया तथा स्वयं देवताओं का राजा बन गया। इस प्रकार अपने पुत्र को राजा व सब देवताओं को उसके अधीन देखकर दिति अत्यन्त प्रसन्न हुई। यह देख ब्रह्मा जी कश्यप जी को साथ लेकर वज्रांग के पास गए। उनके कहने से वज्रांग ने देवताओं को मुक्त कर दिया और बोला—हे देव! मुझे राज्य का लोभ नहीं था। किन्तु इस इन्द्र ने स्वार्थवश मेरी माता के पुत्रों को मारा था। इसीलिए माता की आज्ञा से मैंने इसे जीतकर राज्य प्राप्त किया है। मुझे राज्य से कोई प्रयोजन नहीं, देवतागण भी अपने कर्मों का फल पा चुके हैं। अतः अब यह लोग अपना राज्य मुझसे वापिस ले सकते हैं। इस प्रकार देवताओं को राज्य सौंपकर वज्रांग ने मुझसे कहा—हे ब्रह्मन्! मुझे परमतत्त्व का उपदेश दें जिससे मुझे सुख प्राप्त हो। हे नारद! तब मैंने उसे सात्विक भाव का तत्त्व समझाया और एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उत्पन्न करके वज्रांग को दे दी। तभी वज्रांग ने राक्षसी भाव को त्याग दिया। परन्तु उसकी स्त्री के हृदय में सात्विक भाव न था। उसने काम-भाव से पति की बड़ी सेवा की। उसकी सेवा से प्रसन्न होकर वज्रांग ने कहा—हे प्रिये! तुम क्या चाहती हो। उसकी स्त्री ने उत्तर दिया—हे नाथ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे महा पराक्रमी त्रिलोकी को जीतने वाला व विष्णु को भी पीड़ित करने वाला पुत्र दीजिए। इस प्रकार की पत्नी की इच्छा को सुनकर सात्विक-भाव वाला वज्रांग व्याकुल होकर चिन्तित हो उठा। उसने सोचा देवताओं के साथ शत्रुता अनुचित है, किन्तु यह देवताओं को पराजित करना चाहती है। यदि केवल इस स्त्री की इच्छा को पूरा कर दिया गया तो संसार के सभी मुनियों व देवताओं को कष्ट उठाना पड़ेगा। दूसरी ओर यदि इस स्त्री की इच्छा को पूर्ण न किया तो नरकगामी बनूंगा। इस प्रकार धर्म संकट में पड़कर उसने अपनी पत्नी की इच्छा पूर्ण कर देना ही ठीक समझा। यह सब शिवजी की माया थी। उसने स्त्री को पुत्र देने का वर दे दिया। उस वर को पूरा करने के लिए अपनी इन्द्रियों को संयम में रख कर वज्रांग ने चिरकाल तक कठोर तप किया। ब्रह्मा जी कहने लगे—हे नारद! तब मैं प्रसन्न होकर उसके पास पहुँचा और वर माँगने के लिए कहा। तब उसने आकाश में मेरा दर्शन पाकर मुझे प्रणाम किया और अनेक प्रकार से स्तुति करके बोला—हे ब्रह्मन्! आप मुझे एक ऐसा पराक्रमी पुत्र प्रदान करें जो मेरा तथा अपनी माता का हितचिन्तक, तप स्वरूप, समर्थ व रूपवान हो। तत्पश्चात् 'तथास्तु' कहकर मैं ब्रह्मा अन्तर्ध्यान होकर अपने लोक चला आया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तेरहवां अध्याय

(वज्रांग की पत्नी से अत्यन्त पराक्रमी तारकासुर का जन्म, माता की आज्ञा से तारकासुर का विभिन्न प्रकार से भीषण तप करना। उसके तप के प्रभाव से प्रभावित होकर स्वयं ब्रह्माजी का उसके पास जाकर वर माँगने को कहना तथा वज्रांग को दो मनोवांछित वरदान देना। वर के प्रभाव से अजेय बनकर तारकासुर का समस्त ब्रह्मा लोक को जीतना व देवों को पीड़ित करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे मुनिवर! कुछ समय के पश्चात् वज्रांग की पत्नी को गर्भ हुआ। तथा समय पूर्ण होने पर उसने अत्यन्त विशालकाय व पराक्रमी बालक को जन्म दिया। उसके जन्म लेते ही समस्त संसार में उथल-पुथल मच गई। बादलों ने भयानक गर्जन किया, बिजलियां गिरने लगीं, पहाड़ कांपने लगे, नदियों व समुद्रों के जलों में उत्पात होने लगा। भयानक आवाज करके आंधी चलने लगी। राहु ने सूर्य को ग्रसित कर लिया। इस प्रकार अनेक विचित्र उपद्रव हुए। ऋषि कश्यप ने उसका नामकरण तारक किया। तारकासुर बड़ी तेजी से अपने पिता के घर वृद्धि को प्राप्त होने लगा। अल्प आयु में ही वह पर्वत के समान विशालकाय हो गया और माता से तप करने के लिए आज्ञा मांगने लगा। माता से आज्ञा प्राप्त कर देवताओं पर विजय प्राप्त करने की इच्छा से गुरु की आज्ञानुसार मधुवन में तप करने के लिए चला गया। तथा मुझ ब्रह्मा का ध्यान कर भीषण तप करने लगा। उसने हाथों को व दृष्टि को ऊपर की ओर उठा लिया तथा एक पांव पर स्थिर रह कर निश्चल होकर तप करता रहा। फिर सौ वर्ष तक केवल अंगूठे को आधार बना कर उस पर खड़े होकर तप किया। सौ वर्ष तक केवल जल का सेवन किया तो सौ वर्ष तक केवल वायु का। सौ वर्ष जल में, सौ वर्ष थल पर और सौ वर्ष अग्नि में स्थित होकर तप किया। सौ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वर्षों तक पृथ्वी की ओर सिर करके, सौ वर्ष तक केवल हथेली पर स्थित होकर और सौ वर्ष पर्यन्त वृक्ष की शाखा के सहारे स्थित होकर तप किया। तथा अन्य अनेक प्रकार से भीषण तप किया। इस भयानक तप के प्रभाव से उसका शरीर तेज उगलने लगा जिससे समस्त देवलोक जलने लगा, जिससे सब देवगण भयभीत हो गए। यह सब देखकर मैं उस तारकासुर के पास पहुंचा और उसे वर मांगने के लिए कहा। मुझे सामने पाकर तारकासुर ने प्रणाम किया और बोला—हे ब्रह्मन्! यदि आप मुझे वरदान देना चाहते हैं तो पहले वर में ऐसा कर दें कि आपकी सृष्टि में मेरे समान कोई और शक्तिशाली न हो दूसरा वर यह दीजिए कि मेरी मृत्यु केवल भगवान् शिव के वीर्य से उत्पन्न बालक के द्वारा चलाए गए अस्त्र से ही हो। तब तथास्तु कहकर मैं अपने ब्रह्मलोक आ गया। उधर तारकासुर मनोवांछित वर प्राप्त कर बहुत प्रसन्न हुआ और घर लौट आया। तब ब्रह्मा की आज्ञा से शुक्राचार्य ने दैत्यों को आदेश देकर तारक को उनका राजा बना दिया। तदनन्तर तारकासुर निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होने लगा। समस्त ब्रह्माण्ड को जीतने की इच्छा से सबको दण्ड देता हुआ व देवताओं को भी कष्ट पहुंचाने लगा। उसने इन्द्र को भयभीत कर ऐरावत हाथी, अपना खजाना, सफेद रंग के नौ घोड़े दे दिए। ऋषियों आदि को पीड़ित करके उसने कामधेनु, सूर्य का उच्चैश्रवाः घोड़ा तथा अन्य देवताओं की भी सब प्रिय वस्तुएं छीन लीं। फिर उसने त्रिलोक से ढूंढ़ ढूंढ़कर उत्तम वस्तुएं एकत्रित कर लीं। समुद्र ने भी भयभीत होकर अपने अमूल्य रत्न उसे प्रदान कर दिए। पृथ्वी ने इसकी प्रजा के लिए बिना श्रम के ही अनेक प्रकार के अन्न आदि उत्पन्न करना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आरम्भ कर दिया। सूर्य भी इसके डर से इसकी इच्छा के अनुकूल तपने लगा। इस प्रकार चन्द्रमा, वायु, पृथ्वी आदि सबके व्यापारों पर दैत्यराज तारकासुर का वश चलने लगा। देवताओं व पितरों का भाग लेकर तारकासुर इन्द्र का सिंहासन ग्रहण कर राजा बन बैठा। देवताओं को भगाकर उनके निवास स्थान दैत्यों को प्रदान कर दिए।

चौदहवां अध्याय

(तारकासुर से भयभीत देवताओं का ब्रह्मा जी की शरण में जाना। ब्रह्मा जी का उन्हें भगवान् रुद्र का विवाह शैलसुता पार्वती जी से कराने के लिए यत्न करने को कहना, तथा स्वयं ब्रह्मा जी का तारकासुर के समीप जाकर उसे समझाना व स्वर्ग का राज्य छोड़ने के लिए कहना, । उनकी आज्ञा से तारकासुर का पृथ्वीलोक में तथा इन्द्रादि देवताओं का स्वर्गलोक में जाना।)

ब्रह्मा जी कहने लगे—हे तात नारद जी! जब स्वर्गलोक में तारकासुर का आतंक बहुत बढ़ गया तो सभी देवता पीड़ित व भयभीत होकर मुझ ब्रह्मा की शरण में आये तथा प्रणामपूर्वक स्तुति करते हुए कहने लगे—हे ब्रह्मन्! वह दैत्य तारकासुर आपके वर के प्रभाव से समस्त ब्रह्माण्ड को जीतकर, स्वर्गलोक से सब देवताओं को निकालकर स्वयं राजा बन बैठा है। उसके आतंक से हम सब बहुत दुःखी हैं। आप हमारे दुःखों का नाश करो हम सब आपकी शरणागत हैं। इस प्रकार भय से पीड़ित उन देवताओं की प्रार्थना सुनकर मैंने कहा—हे देवताओ! मैंने स्वयं इसे वरदान दिया है अतएव मैं इसे नष्ट नहीं कर सकता। यह समय आने पर विष के वृक्ष की भांति स्वयं नष्ट हो जाएगा। इसे स्वयं भगवान् शिव अथवा विष्णु भी मार नहीं सकते। केवल मात्र रुद्र के वीर्य से उत्पन्न पुत्र ही इसे मार सकता है। यही एक मात्र उपाय है। दक्ष की पुत्री सती अब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हिमालय के यहाँ उत्पन्न हो चुकी है। उसका विवाह रुद्र जी के साथ होगा। उनसे जिस पुत्र की उत्पत्ति होगी, उसी के द्वारा इसका नाश होगा। अब तुम देवता लोग रुद्रजी का विवाह पार्वती के साथ कराने के लिए उद्योग करो। मैं भी स्वयं जाकर तारकासुर को समझाता हूं जिससे वह तुम लोगों को दुःख न दे। इस प्रकार समझा बुझाकर मैंने देवताओं को लौटा दिया। और मैं ब्रह्मा स्वयं तारकासुर के पास जाकर उसे समझाने लगा—हे तारक! मैंने तुम्हें देवताओं को पीड़ित करने के लिए वरदान नहीं दिया था। यह स्वर्ग देवों का निवास स्थान है यह तेजोमय सार रूप है। इस पर तुम्हारा अधिकार नहीं है। तुम इसे तुरन्त छोड़कर पृथ्वी पर जाकर राज्य करो अन्यथा बहुत दुःख पाओगे। इस प्रकार हे मुनिवर! तारक को समझाकर मैं अपने निवास स्थान को लौट आया। उधर तारकासुर ने भी मेरे कथनानुसार स्वर्ग छोड़ दिया तथा पृथ्वीलोक में आकर शोणित नगर में राज्य करने लगा। तथा देवता आदि भी मेरी आज्ञा से स्वर्गलोक को चले गए।

पन्द्रहवां अध्याय

(स्वर्गलोक में सब देवताओं का रुद्रजी का पार्वती से विवाह कराने के लिए विचार करना। इन्द्र का कामदेव को बुलाकर उसे शिवजी को काम-मोहित करने का आदेश देना, जिससे उनका विवाह उमा देवी के साथ हो। कामदेव का रति को लेकर शिवजी को मोहित करने के लिए प्रस्थान करना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद! उधर स्वर्ग में पहुँचकर सभी देवता भगवान् रुद्र का विवाह उमा देवी से कराने के लिए उपाय सोचने लगे। सबने मुझ (ब्रह्मा) के वचनों को स्मरण करके विचार किया कि सर्वप्रथम कामदेव को भेजकर शिवजी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को पार्वती जी के प्रति मोहित करना चाहिए। इस प्रकार सोचकर इन्द्र ने कामदेव को स्मरण किया। कामदेव उसी समय अपने गणों सहित वहां इन्द्र की सेवा में उपस्थित हुआ तथा प्रणाम करके बोला—हे देव! आज्ञा दें किस प्रयोजन से आपने मुझे स्मरण किया है। देवराज इन्द्र बोले—हे कामदेव! तारक नामक एक दैत्य है जो देवताओं को पीड़ित कर रहा है। ब्रह्मा जी के वर से वह अवध्य है। केवल देवता ही नहीं सभी स्थावर, जंगम, जीव उससे दुःखी हैं। इसकी मृत्यु का केवल उपाय है कि भगवान् रुद्र के वीर्य से उत्पन्न पुत्र ही इसका नाश करने में समर्थ होगा। ब्रह्मा जी के वरदान के अनुसार केवल मात्र यही उसके वध का कारण हो सकता है। भगवान् रुद्र के वीर्य से पुत्रोत्पत्ति के लिए उनका विवाह उमा देवी के साथ होना आवश्यक है। अब तुम जाकर किसी प्रकार से सदाशिव को कामवश करो जिससे उनमें उमा देवी के प्रति, जो प्रतिदिन उन्हें पुष्प चढ़ाती हैं प्रेम भाव उत्पन्न हो जाए। इस प्रकार उन दोनों के विवाह से ही देवताओं का प्रयोजन सिद्ध हो सकता है। और यह कार्य केवल आप कर सकते हैं। इस प्रकार इन्द्र के वचन सुनकर कामदेव इन्द्रादि देवताओं को यह आश्वासन देकर कि वह अवश्य ही इस कार्य को करेगा। रति व अन्य गणों सहित वहां से हिमाचल में रुद्र के पास चला गया।

सोलहवां अध्याय

(हिमालय पर पहुंचकर कामदेव का शिवजी को काम मोहित करने के लिए बसन्त तथा पांचों बाणों की सहायता से अनेक प्रकार से प्रयत्न करना। ध्यान से मुक्त हुए शिवजी का काम के प्रभाव से उमा देवी के प्रति क्षण भर के लिए मोहित होना, किन्तु तुरन्त ही चेतना प्राप्त कर लेना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! हिमालय पर पहुंच कर काम-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देव जो शिवजी की माया से पूर्णतया मोहित हो चुका था शिवजी को काम-मोहित करने के लिए अपना जाल फैलाने लगा। सर्व प्रथम उसने वसन्त का प्रयोग करके अनेक वनों व उपवनों को लगा दिया तथा उनके वृक्षों को फलों फूलों से लाद दिया। सर्वत्र वसन्त खिल उठी। कोयल मधुर स्वर में गाने लगी। मन्द-मन्द सुवासित वायु चलने लगी। नदी-सरोवर विकसित कमलों से भर गए, भौंरे फूलों पर गुंजन करने लगे। इस प्रकार स्थिर हृदयों को भी विचलित कर देने वाले काम-प्रसार को देखकर भगवान शिव आश्चर्य चकित हो गए। और उससे भी अधिक कठिन तप करने के लिए उद्यत हुए। तब कामदेव ने जब वसन्त की बहार को असफल देखा तो उसने रति स्त्री के साथ अपने पांचों पुष्प बाण भगवान् शिव के बाईं ओर चला दिए। कामदेव के शक्तिशाली बाणों ने यहां अपना प्रभाव दिखाया। इसके साथ ही हाव-भाव से युक्त श्रृंगार रस ने भी अपना जाल फैलाकर शिवजी के शरीर पर आक्रमण किया। किन्तु वे सब ध्यान मग्न शिवजी के हृदय तक पहुंचने में असफल रहे। प्रचण्ड अग्नि के समान तृतीय नेत्र से युक्त ध्यानावस्थित भगवान् शंकर को मोहित करना असंभव है। हे नारद! उसी समय पार्वती जी धूप, दीप, सुगन्ध आदि लेकर सखियों सहित वहां पूजन करने के लिए आईं। तभी शिवजी ने अपना ध्यान भंग किया। अवसर पाते ही कामदेव अपने बाणों द्वारा योगीश्वर को मोहित करने का प्रयत्न करने लगा। सर्व प्रकार से सुसज्जित पार्वती जी भी कामदेव के इस कार्य में सहायक सिद्ध हुईं। तभी कामदेव ने धनुष पर अपना पुष्प बाण चढ़ा कर सदाशिव पर छोड़ दिया। कामदेव के इस प्रयत्न से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान शिव कामवश हो गए। काम-युक्त शिवजी ने सोचा पार्वती का यह सुन्दर शरीर देखने में ही इतना सुन्दर है यदि इसका आलिंगन किया जाए तो कितना सुखद होगा। इस प्रकार काम मग्न होकर वे सोचते रहे कि तभी उन्हें ज्ञान हुआ और कहने लगे--अरे! निष्काम होते हुए भी मैं काम-मोहित हो गया। यदि जगत का स्वामी मैं इस प्रकार काम-मोहित होकर स्त्रियों के अंगों का स्पर्श कर बैठा तो साधारण मनुष्यों की क्या गति होगी। तप के मध्य यह विघ्न कैसे हुआ। काम-देव बहुत दुष्ट निकला जिसने मुझे भी सकाम कर दिया।

सत्रहवां अध्याय

(शिवजी का काम को बाण चढ़ाये हुए देखकर क्रोधित होना व उनके तृतीय नेत्राग्नि से काम का भस्म होना। भस्म हुए अपने पति को देखकर रति का विलाप करना। उसके विलाप को देखकर ब्रह्मादि देवताओं का शंकर जी की शरण में जाना। शंकर जी का उन्हें रति काम के पुनर्मिलन के विषय में आश्वासन देना।)

ब्रह्मा जी बोले--हे देवर्षि! अपने आपको इस प्रकार काम मोहित पाकर शिवजी आश्चर्य-चकित होकर इधर उधर देखने लगे। उनके ऐसा करने से दिशाएं कांप उठीं इसी समय उन्होंने वृक्ष पर बैठे पुष्प बाण चढ़ाए हुए काम को देखा जो शंकर जी पर दुबारा बाण छोड़ने का यत्न कर रहा था। उसे देखते ही रुद्र क्रोधित हो गए। उनके क्रोध को देखकर काम भयभीत होकर कांपने लगा व हाथ जोड़कर शंकर जी का स्मरण करने लगा। दूसरे सभी देवता अपने प्रयास को निष्फल हुआ जान कर लज्जित होकर शिवजी को प्रसन्न करने के लिए उनके समीप गए तथा नम्रता से उनकी स्तुति करने लगे। किन्तु शंकर जी पर उनकी स्तुति का कोई प्रभाव नहीं हुआ वह निरन्तर क्रोधित होते गए। उनके क्रोध के तेज से शंकर जी का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मस्तक का तृतीय नेत्र खुल गया। नेत्र के खुलते ही उसमें से तीव्र अग्नि निकली जिससे वृक्ष पर छिपा काम जलने लगा। और पूर्णतया भस्म होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। कामदेव को भस्म हुआ देखकर सभी देवगण दुःखी हुए। उधर पार्वती जी अपनी सखियों के साथ घर चली गईं। पति के वियोग से व्याकुल रति मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी और पश्चात् तटस्थ होकर सोचने लगी कि देवताओं ने बहुत बुरा किया जो मेरे पति को यहां भेजकर भस्म करा दिया। हृदयावर्दक उसके विलाप से चराचर जीव भी दुःखी हो उठे। यह देखकर सभी देवता उठकर रति को समझाने लगे कि संसार में दुःख आते ही रहते हैं। सबको अपने कर्मों का फल मिलता है। कोई किसी के दुःख अथवा सुख का कारण नहीं हो सकता। धैर्य धारण करो। व्यर्थ शोक करने से क्या होगा। अब तुम धैर्य से अपने पति की कुछ भस्म लेकर अपने पास रख लो। शिवजी की कृपा से तुम्हारा पति पुनः जीवित हो जायेगा और तुम्हें प्राप्त होगा। ब्रह्मा जी कहने लगे—हे नारद! इस प्रकार रति को समझा बुझा कर देवता लोग भगवान् शिव के पास पहुंचे। उन्हें प्रणाम तथा स्तुति पूर्वक प्रसन्न करके बोले—हे प्रभो! हम यह कार्य कोई अपने स्वार्थ के लिए नहीं कर रहे थे। यह सम्पूर्ण देवताओं का कार्य था। दैत्य तारकासुर सभी देवताओं को बहुत पीड़ित कर रहा है। हम सब उसी के विनाश के लिए कार्य कर रहे थे। आप अब कृपा करके प्रसन्न हों तथा रोती हुई व्याकुल रति को सांत्वना दें। तब सदाशिव बोले—हे ऋषियो व देवगणों! मैंने क्रोध में आकर जो कर दिया सो कर दिया अब कुछ नहीं हो सकता। केवल जब श्री कृष्ण भगवान् रुक्मिणी के साथ विवाह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करके द्वारका में पुत्र जन्मेंगे तब उन्हीं में कामदेव भी प्रद्युम्न नाम से जन्म लेंगे। शम्बर नामक एक दानव आकर उसे चुरा कर ले जाएगा और समुद्र में फेंक देगा। यह रति उसी शम्बर के नगर में रह रही होगी वहीं इसे उसका पति मिल जाएगा। यह सुनकर देवतागण कहने लगे—हे देव! तब तक कहीं इस रति का देहान्त न हो जाए अतएव कृपया आप तब तक इसके शरीर की रक्षा करते रहें। तथा इसके पति को शीघ्र जीवित करके इसका दुःख दूर करने की कृपा करें। सर्वेश्वर बोले—हे देवताओ! चिन्ता की आवश्यकता नहीं कामदेव शीघ्र जीवित हो जाएगा। यह सब वृत्तान्त आप किसी से न कहना मैं तुम्हारे दुःख दूर करूंगा अब तुम अपने निवास स्थान को जाओ। यह कहकर भगवान् शंकर अन्तर्ध्यान हो गए और सब लोग अपने अपने निवास स्थान को चले गए।

अठारहवां अध्याय

(भयभीत हुए सब चराचर जीवों का ब्रह्मा जी की शरण में जाना, उनके कष्ट को जानकर ब्रह्मा जी का शिवजी की क्रोधाग्नि को हाथ से पकड़कर समुद्र को देना तथा प्रलय काल तक उसे धारण करने के लिए कहना तथा शिवजी की क्रोधाग्नि का समुद्र में प्रवेश।)

ब्रह्मा जी कहने लगे—हे देवर्षि! भगवान् शंकर के तृतीय नेत्र से काम के भस्म हो जाने पर समस्त ब्रह्माण्ड के जीव भय-भीत होकर मेरे पास आए और अपना दुःख मुझसे कहने लगे। उनके आने का कारण जानकर मैं शंकर जी के समीप गया। वहां सदाशिव की क्रोधाग्नि प्रचण्ड रूप से भड़क रही थी। उस प्रचण्ड अग्नि को शंकर जी की कृपा से हाथ से रोककर पकड़ लिया और समुद्र के पास जा पहुंचा। मुझे देखकर समुद्र पुरुष का रूप धारण कर मेरे पास आया और बोला—हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

महाभाग! आप किस प्रयोजन से यहाँ उपस्थित हुए हैं? मैं आपकी क्या सेवा करूं? तब मैंने ब्रह्मा ने कहा—हे समुद्रदेव! सदाशिव ने अपने तृतीय नेत्र की क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया है। वह सर्वेश्वर शिवजी की क्रोधाग्नि है उससे ब्रह्माण्ड जल जायेगा। इसी कारण उसे हाथ से पकड़कर आपके पास ले आया हूं। सृष्टि के प्रलय काल तक इसे धारण किए रहो। जिस समय मैं आकर निवास करूं तभी तुम इसे छोड़ देना। इस प्रकार मुझ ब्रह्मा के कहने पर समुद्र ने उसे स्वीकार कर लिया। तब वायु वेग के साथ बड़े-बड़े शोले निकालती हुई वह शिव-क्रोधाग्नि समुद्र में प्रविष्ट हो गई। तब समुद्र भी अपने निवास स्थान को चला गया तथा मैं भी अन्तर्ध्यान होकर अपने लोक को चला आया। तब सभी चराचर जीव सुखी हुए।

उन्नीसवां अध्याय

(घर पहुंचकर पार्वती जी का शिवजी के विरह में व्याकुल होना, घूमते हुए नारद जी का हिमाचल पहुंचना तथा सब हाल जानकर पार्वती जी को पञ्चाक्षर मन्त्र का जप करने के लिए कहना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे ऋषि श्रेष्ठ! जब कामदेव शिवजी की क्रोधाग्नि से भस्म हो गया तब पार्वती सखियों के साथ घर वापिस आ गई। घर पहुंचकर शिवजी के विरह में व्याकुल हो उठी। खाते पीते उठते बैठते वह शिवजी के विरह में व्याकुल रहने लगी। ब्रह्मा जी कहने लगे—हे नारद! एक बार तुम घूमते घूमते वहां पहुंचे। हिमाचल ने तुम्हें देखकर तुम्हारा बहुत आदर सत्कार किया तथा उच्च आसन पर बैठाया। इसके बाद शिव-पूजन से लेकर काम के भस्म होने तक की सारी कथा कह सुनाई। यह सब वृत्तान्त जानकर तुमने हिमालय से केवल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

यही कहा कि शिवजी का भजन करो। इस प्रकार हिमालय से कहकर तुम पार्वती जी के पास पहुंचे तथा अवसर देखकर उनसे कहने लगे—हे पार्वती जी! तुम बिना तप किए केवल सेवा द्वारा ही उन्हें प्राप्त करना चाहती थीं। तुम्हें इसका अभिमान हो गया था। इस अहंकार को दूर करने के लिए शिवजी ने ऐसा किया है। अब तुम उन्हें प्राप्त करने के लिए तप करो जिससे प्रसन्न होकर शिवजी तुम्हें स्वीकार करें। हे नारद! तुम्हारे ऐसा कहने पर पार्वती बोलीं—हे मुनिवर! आप कृपा करके मुझे शिवजी की आराधना के लिए मन्त्र प्रदान करें। क्योंकि गुरु के बिना कोई भी कार्य सफल नहीं होता। तत्पश्चात् हे नारद! तुमने देवी पार्वती जी को पञ्चाक्षर मन्त्र 'ॐ नमो शिवाय' यह मन्त्र दिया और कहा—यह मन्त्र सब मन्त्रों का राजा है। और सब कामनाओं को पूरा करने वाला है। इस मन्त्र की आराधना से तुम्हें सदाशिव के दर्शन होंगे। तुम इसका जप नियम पूर्वक दृढ़ता से करना। इससे सदाशिव प्रसन्न हो जायेंगे।

बीसवां अध्याय

(नारदजी के कहे अनुसार तप के लिए तत्पर पार्वती जी का पिता हिमाचल तथा माता मैना से तप के लिए आज्ञा लेना तथा उनकी आज्ञा प्राप्त कर वल्कल वस्त्र धारण कर उस स्थान पर जहाँ कामदेव भस्म हुए थे, जाकर तीन हजार वर्षों तक कठोर तप करना।)

ब्रह्माजी कहने लगे—हे नारद! तुम्हारे द्वारा यह जान कर कि तप के बिना शिवजी को पाना असंभव है पार्वती जी तप करने को उत्सुक हो उठीं। तथा इसके लिए अपने माता-पिता के पास जाकर कहने लगीं—हे तात! मैं तप करना चाहती हूं। इस तप से ही मेरा शरीर जीवन वंश आदि सफल होगा। अतएव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कृपा करके आप मुझे तप करने की आज्ञा दें। पुत्री के निश्चय को सुनकर हिमालय ने कहा—हे पुत्री! तुम्हारा विचार निश्चय ही बहुत अच्छा है। किन्तु इस विषय में तुम अपनी माता से भी आज्ञा प्राप्त कर लो यदि वह आज्ञा दे दें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। पिता के ऐसा कहने पर पार्वती जी शीघ्रता से अपनी माता से पूछने लगीं—हे माता जी! क्या मैं तप करने के लिए वन जा सकती हूं? यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं कल प्रातः काल होते ही तप करने के लिए वन की ओर प्रस्थान करूं। पुत्री का ऐसा निश्चय देखकर मैना दुःख से बोलीं—हे पार्वती! तुम घर में ही तपस्या करो। वन में जाकर तपस्या करने का हठ अच्छा नहीं है। स्त्रियों का कोमल शरीर वन में जाकर तप करने के योग्य नहीं है। इस प्रकार अनेक तर्कों से मैना ने पार्वती जी को तप के लिए वन जाने से रोकने का यत्न किया। माता के वचनों को सुनकर पार्वती जी दुःखी हो उठीं। इस प्रकार अपनी पुत्री की खिन्नता व हठ को देखकर माता ने उमादेवी को तप के लिए वन जाने की आज्ञा दे दी। आज्ञा पाकर अत्यन्त प्रफुल्ल मन से पार्वती जी ने अपने माता पिता को प्रणाम तथा सखियों को यथोचित अभिवादन करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया व वन की ओर प्रस्थान किया। कुछ दूर जाकर उन्होंने वस्त्राभूषणों को त्यागकर वल्कल वस्त्र धारण कर लिए। इसके पश्चात् उस स्थान को जहां सदाशिव ने तप किया था तथा जहां गंगाजी प्रकट हुई थीं तप के लिए चुना। वहां की भूमि को शुद्ध करके जितेन्द्रिय होकर मन को एकाग्र करके तथा शिवजी में ध्यान अवस्थित करके भीषण तप करना आरम्भ कर दिया। ग्रीष्म काल में वह अपने चारों ओर अग्नि जलाकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मन्त्र का जाप करतीं तो सर्द काल में शीतल जल में बैठकर जप करतीं। भोजन, जल, वायु सबका त्याग करके शिवजी के ध्यान में मग्न होकर तप करती रहीं। ब्रह्माजी कहने लगे—हे देवर्षि! इस प्रकार उमादेवी ने तीन हजार वर्षों तक कठिन तप किया। उन्होंने तप करते हुए इतने कठोर कष्ट सहे कि उनकी आस्था व कठोर तप को देखकर सभी देवगण आश्चर्य चकित हो गए व उनका दर्शन करने के लिए आए। हे नारद! इतना कठोर तप आज तक किसी ने नहीं किया।

इक्कीसवां अध्याय

(पार्वती जी के भीषण तप को देखकर देवताओं व देव योनियों का दुःखी होकर ब्रह्मा जी के पास जाना। ब्रह्मा जी का उन्हें लेकर विष्णु जी के पास जाना। विष्णु जी का उन्हें शंकर जी के पास जाने का सुझाव देना तथा सभी भयाकुल देवताओं का उनके साथ शिवजी की शरण में जाना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे मुनिवर! उमा देवी के इस भीषण तप से समस्त ब्रह्माण्ड तप्त हो उठा। देवता, दानव, गन्धर्व, ऋषि, मुनि, विद्याधर, सिद्ध-साध्य आदि सभी व्याकुल होकर इन्द्र आदि लोकपालों को साथ लेकर ब्रह्मा जी के पास पहुंचे। और बोले—हे ब्रह्मन्! आपका यह चराचर ब्रह्माण्ड बहुत अधिक संतप्त हो रहा है उससे व्याकुल होकर हम सब आपकी शरण में आए हैं। त्रिलोकी के इस प्रकार तप्त होने व कांपने का क्या कारण है। उनके इस प्रकार कहने पर मैं (ब्रह्मा) ध्यान द्वारा उमा देवी के तप को जान गया। तब यह सब विष्णु जी को सुनाने के लिए हम सब क्षीर सागर पहुंचे। वहां ध्यान में मग्न विष्णु जी का दर्शन करके सबने उन्हें प्रणाम किया और बोले—हे देव! इस समय पार्वती जी शंकर जी को प्राप्त करने के लिए कठोर तप कर रही हैं उन्हीं के भीषण तप से समस्त त्रिलोकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कंपित व तप्त हो रही है। अत्यधिक दुःखित व व्याकुल होकर हम सब आपकी शरण में आए हैं। आप ही हमारी रक्षा करने में सक्षम हैं। विष्णु जी बोले—हे देवो! मैंने तुम्हारा दुःख जान लिया है अब हम सबको मिलकर भगवान् शंकर की शरण में जाना चाहिए। वहां जाकर उनसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वे माता पार्वती के तप से प्रसन्न होकर उन्हें इच्छित फल दें तथा उनके साथ विवाह करके हम सबका उद्धार करें। विष्णु जी के वचन सुनकर भयभीत होकर देवता बोले—हे भगवन्! हम भगवान् शंकर के पास नहीं जा सकते। उनका क्रोध सहने में हम असमर्थ हैं। क्रोध में उन्होंने कामदेव को भस्म कर दिया था कहीं वह हमें भी भस्म न कर दें। इस प्रकार भयभीत देवताओं को समझाते हुए विष्णु जी बोले—हे देवताओ! भय करने की आवश्यकता नहीं। भगवान् सदाशिव अत्यन्त दयालु हैं। वे तुम्हें भस्म नहीं करेंगे। वे तो हम सबके स्वामी व रक्षक हैं इसमें तुम्हें सन्देह नहीं होना चाहिए। हमें शीघ्र ही उनकी शरण में जाना चाहिए निश्चय ही वे हमारी रक्षा करेंगे। ब्रह्मा जी बोले—विष्णु जी के आश्वासन से सभी देवता भगवान् शंकर के दर्शन के लिए चल पड़े। उससे प्रथम तप में मग्न उमा देवी के दर्शन व उनकी प्रशंसा करते हुए शंकर जी के निवास स्थान पर पहुंचे। दूर से ही भगवान् के दर्शन करके भयभीत देवताओं ने नारद तुम्हें उनके पास भेजा। तुम निर्भय होकर शंकर जी के पास पहुंचे और उन्हें परम आनन्द में मग्न देखकर लौट आए। फिर सब देवताओं को साथ लेकर शंकर जी के पास पहुंचे। वहां स्तुतियों से उन्हें प्रसन्न करने लगे। तथा बारम्बार उन्हें नत मस्तक होकर प्रणाम करने लगे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बाईसवां अध्याय

(सभी देवताओं का शिवजी को अपना कष्ट सुनाना और उसके निवारणार्थ उन्हें गिरिजा से विवाह करने के लिए कहना। उनके इन्कार करने से सभी देवताओं का अत्यन्त दीनता से उनकी प्रभूत स्तुतियाँ करना। तब भक्ति के वशीभूत होकर भगवान् शिव का उन्हें पार्वती जी से विवाह करने का आश्वासन देना।)

ब्रह्मा जी आगे का वृत्तान्त सुनाते हुए कहने लगे—हे नारद! तब शंकर जी की अनेक प्रकार से स्तुति करके देवता गण बोले—हे भगवन्! हम सब आपकी शरण में आए हैं। आप हमारी रक्षा करें। भयभीत हाथ जोड़े हुए देवताओं को देखकर शिवजी बोले—हे विष्णु जी! हे ब्रह्मा जी! आप सब अपने यहां आने का प्रयोजन कहें। शिवजी के इस प्रकार कथन को सुन कर सब देवताओं ने विष्णु जी की ओर देखा। तब विष्णु जी देवताओं की ओर से कहने लगे—हे रुद्र जी! तारकासुर दानव से हम सब बहुत दुःखी हैं। उस दानव ने हम सबको अपने घरों से बाहर निकाल दिया है। हे सदाशिव! उसका नाश केवल आपके वीर्य से उत्पन्न पुत्र द्वारा होगा। अतएव हे शंकर जी! आप हिमाचल की पुत्री पार्वती जी से विवाह करें जिससे हमारे दुःखों का नाश हो। देवताओं के इस अनुरोध को सुनकर शिव जी बोले—हे देवगणों! यदि मैं उस अपूर्व सुन्दरी शैलसुता के साथ विवाह कर लूँ तो सब देवता, ऋषि-मुनि आदि काम मोहित हो जायेंगे। वह सुन्दरी स्वयमेव कामदेव को जीवित कर देगी। सब कार्यों की सिद्धि के लिए ही मैंने कामदेव को भस्म कर दिया है। अब मुझे विवाह करने के लिए प्रेरित मत करो। इस प्रकार उत्तर देकर सदाशिव ध्यानावस्थित होकर अपने ही ब्रह्मरूप आत्मचिंतन में लीन हो गए। तब शिवजी को ध्यानमग्न हुआ देखकर सब देवता नन्दीश्वर से कहने लगे—हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नन्दीश्वर! अब आप ही हमारा मार्ग-दर्शन करिए। इन्हें प्रसन्न करने का उपाय बताएं। नन्दीश्वर बोले—हे विष्णु आदि देवताओ! आप भगवान् शंकर का पूजन करें। सदाशिव तो अपने भक्तों के वश में रहते हैं। अवश्य ही आपकी भक्ति से प्रसन्न होकर आपके मनोरथ सिद्ध करेंगे। नन्दीश्वर के इस प्रकार के वचन सुनकर सभी देवता भगवान् शिव की स्तुतियां करने लगे। अत्यन्त दीनता के साथ प्रार्थना व स्तुति करते हुए देवता अश्रुपात भी करने लगे। हे मुनिवर नारद! तब मैं (ब्रह्मा) तथा विष्णु ने भी मिलकर शिवजी का ध्यान लगा कर चिन्तन व पूजन किया। तब भक्तवत्सल भगवान् शिव ने समाधि भंग की और प्रेम से हमारी ओर देखकर बोले—हे देवताओ! आप सब यहां किस प्रयोजन से आए हो। तब विष्णुजी कहने लगे—हे महादेव! आप तो सब कुछ जानते हैं तथा अन्तःकरण को भी जानने वाले हैं। हम सब आपकी शरण में हैं। हे देव! आप शैलसुता उमा देवी के साथ विवाह कर लें। तथा उनसे पुत्र उत्पन्न करके तारकासुर दानव का नाश कराके आप हम सब की उस दानव से रक्षा करें। नारद जी के आदेशानुसार उमा देवी आपको प्राप्त करने के लिए भीषण तप कर रही हैं। आप उन पर कृपा करें। तब मुस्कुराते हुए शंकर जी बोले—हे देवो! विवाह एक बहुत अद्भुत बन्धन है। इस लोक में बहुत से बन्धन हैं किन्तु स्त्री भोग उनमें सबसे बड़ा बन्धन है। उसी के संग से मनुष्य विषय वासना में पड़कर मन के वशीभूत हो जाता है। मैं स्वयं इस बन्धन में पड़ना नहीं चाहता। किन्तु भक्ति के आधीन होकर मुझे सब कुछ करना पड़ता है। इस कारण भक्तों के वश हुआ मैं आपकी इच्छा को पूर्ण करूंगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तथा तारकासुर से प्राप्त दुःखों से तुम्हारी रक्षा करूंगा। इस प्रकार आपका मनोरथ सिद्ध करने के लिए पार्वती से विवाह करूंगा। अब आप सब निश्चिन्त होकर अपने निवास स्थानों को जाएं। इस प्रकार कहकर शंकर जी मौन हो गए।

तेईसवां अध्याय

पार्वती जी की प्रेम परीक्षा करने के लिए भगवान् शंकर का वसिष्ठ आदि सात ऋषियों को भेजना, उन ऋषियों का विभिन्न प्रकार से पार्वती की परीक्षा करना व उन्हें अपने मार्ग से विचलित करने का प्रयास करना अन्त में निराश होकर व उनके दृढ़ संकल्प से प्रभावित ऋषियों का शंकरजी के पास वापिस लौट आना।)

ब्रह्माजी बोले—हे देवर्षि! विष्णु आदि देवताओं के चले जाने पर सदाशिव ने पार्वतीजी की प्रेम परीक्षा करने की इच्छा करके वसिष्ठ आदि सात ऋषियों को स्मरण किया। स्मरण करते ही सातों ऋषि शंकर जी के पास उपस्थित हो गए। नम्रता से प्रणाम व स्तुति करके कहने लगे—हे देव! हम सब आपके दास हैं आज्ञा दें। ऋषियों के ऐसे वचन सुनकर शिवजी हंसकर बोले—हे ऋषियो! गौरी शिखर नामक पर्वत पर पार्वती जी मेरी प्राप्ति के लिए भीषण तप कर रही हैं। तुम लोग वहां जाकर अनेक प्रकार से छल-कपट द्वारा उसके प्रेम की परीक्षा करो तथा उसका वर्णन आकर मुझे सुनाओ। इस प्रकार शंकर जी ने उन ऋषियों को वहां जाने की आज्ञा दी। भगवान् शिव की आज्ञा पाकर सातों ऋषि तप करती हुई उमादेवी के समीप पहुंचे। वहां जाकर उन्होंने पार्वतीजी को प्रणाम किया और कहा—हे पार्वतीजी! आप यह अत्यन्त भीषण तप किस प्रयोजन से कर रही हैं। कृपा करके कहें। यह सुनकर पार्वती जी ने उत्तर दिया—हे ऋषियो! मैं देवर्षि नारदजी के कथनानुसार भगवान् शिवजी को प्राप्त करने के लिए तप कर रही हूं। वे मेरे देवता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। अवश्य ही वे मेरी कामना को पूर्ण करेंगे। पार्वतीजी के विश्वास भरे इस कथन को सुनकर ऋषियों ने अट्टहास किया और कहने लगे—हे उमादेवी! आप उस कपटी नारद के कहे अनुसार तप कर रही हैं आप जैसी निष्कपट व सरल हृदय की कन्याएं उस ढोंगी के चरित्र को नहीं जान सकतीं। उसने तो इस प्रकार अनेकों को मरवा दिया। बहुतों के घर बरबाद कर दिए। दक्ष के दस हजार पुत्र पश्चिम की ओर नारायण सरोवर पर तप करने को गए। वहां उन्हें यह महात्मा मिल गए इन्होंने उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे सबके सब घर नहीं लौटे। पुनः दक्ष ने दस हजार पुत्र उत्पन्न करके तप करने को भेजे उनको भी बहका दिया। विद्या धर चित्रकेतु को इस प्रकार का उपदेश दिया जिससे उसका घर ही उजड़ गया। इस कपटी नारद ने बहुतों को वैराग्य का ज्ञान देकर नष्ट कर डाला है। अब तुम सरल हृदया उसकी बातों में आकर अपना जीवन नष्ट करने पर तुली हो। हे शैलसुता! तनिक सोचो उस ढोंगी के छलावे में पड़कर तुम ऐसे पति की इच्छा करती हो जो सर्वथा निर्लज्ज, अमंगल रूप, काम से रहित, निर्विकार, उदासीन, कुल से रहित, भूतों प्रेतों का स्वामी नग्न रहता है। इस प्रकार का पति पाकर तुम किस सुख की संभावना करती हो। प्रजापति दक्ष ने भी अपनी परम गुणवती रूपवती कन्या का विवाह इस शिव के साथ किया था। उस बेचारी को भी इसने कौन सा सुख दिया। पिता के घर जाकर इसी दुःख से उसने अपने आपको भस्म कर डाला। सदा अकेला रहने वाला वह किसी भी स्त्री के द्वारा वरण किए जाने के योग्य नहीं है। हे पार्वती जी! आप इस प्रकार के पति का ध्यान छोड़ दो। तथा तप त्याग कर अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

घर को जाओ। हम तुम्हारा विवाह सर्व गुण सम्पन्न विष्णु जी के साथ करा देंगे। जिन्हें पाकर तुम्हें समस्त ब्रह्माण्ड का सुख प्राप्त होगा। हे नारद! जब इस प्रकार अनेक प्रकार से ऋषियों ने शिवजी की व तुम्हारी निन्दा की तो हंसकर पार्वती जी ने कहा—हे ऋषियो! निश्चय ही आप जो कुछ कह रहे हैं सत्य है मैं अपने दृढ़ विश्वास को त्याग नहीं सकती। पार्वती होने के कारण मैं तप से नहीं घबराती। देवर्षि नारदजी ने तो मेरा कल्याण किया है। मेरे लिए वह पूज्य व परम गुरु हैं। उन्हें मैं किस प्रकार त्याग सकती हूं। आपके विचार में गुणी विष्णु जी श्रेष्ठ तथा निर्गुण शिवजी अयोग्य हैं। सत्य तो यह है कि शंकर जी भक्तों के लिए अवतार धारण करते हैं। संसार को अपनी प्रभुता दिखाते ही नहीं हैं। इसी कारण प्रत्येक जन अपने धर्म जाति एवं कुल आदि से उन्हें नहीं जान सकता। परम गुरु नारदजी ने तो कृपा पूर्वक मुझे उत्तम मार्ग दिखा दिया है जिससे मुझे शिव तत्त्व का ज्ञान हो गया है। हे ऋषिगण! यदि भगवान् शिव के साथ मेरा विवाह न भी हुआ तो भी क्या हुआ मैं अविवाहित रहकर उन्हीं का भजन किया करूंगी। संसार के पदार्थ भले ही अपना धर्म छोड़ दें, सूर्य इधर से उधर हो सकता है किन्तु मेरा निश्चय अटल है। इस प्रकार कह कर पार्वती जी मौन हो गईं। तब उन सातों ऋषियों ने उसकी दृढ़ प्रतिज्ञा देखकर उसे आशीर्वाद दिया तथा प्रणाम करके लौट आए।

चौबीसवां अध्याय

(सप्त ऋषियों का शिवजी के पास जाकर सब वृत्तान्त सुनाना व अपने लोक को चले जाना। तब स्वयं शिवजी का ब्राह्मण वेश धारण करके पार्वती के पास जाना तथा तप का कारण पूछना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! तदनन्तर उन सातों ऋषियों ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आकर शिवजी से सब हाल कह सुनाया। तथा अपने निवास स्थानों को चले गए। तब स्वयं सदाशिव ने दण्डी ब्राह्मण का रूप धारण किया और पार्वतीजी के पास पहुंचे। वहां पवित्रता की मूर्ति ब्रह्मचारिणी के रूप में तप करती हुई पार्वती जी को देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए। तथा पार्वतीजी भी ब्राह्मण वेश धारी शिवजी को देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुईं। तब उन्होंने ब्राह्मण भक्ति में आकर पुष्प व फलों की भेंट से आदर सत्कार किया। और कहने लगीं—हे विप्रवर! आप कहां से पधार रहे हैं। आप के दर्शन से मेरे मन में ज्योति का प्रसार हो रहा है। कृपाकर कहें कि आप कौन हैं। यह सुनकर ब्राह्मण वेशधारी शिवजी ने कहा—हे तपस्विनी मैं भी एक तपस्वी हूँ। इच्छानुसार सर्वत्र भ्रमण करता हूँ। हे देवि! आप कौन हैं? किसकी कन्या हैं? यहां वन में किस प्रयोजन से तप कर रही हैं। यह सुनकर पार्वतीजी ने उत्तर दिया—हे ब्राह्मण देवता! मैं हिमाचल की कन्या हूँ। पूर्व जन्म में मैं दक्ष की पुत्री सती थी। तब मैं अपने पिता द्वारा पति का अपमान न सह सकी और योग द्वारा अपने शरीर को त्याग दिया। अब इस जन्म में मैं हिमालय की पुत्री पार्वती हुई हूँ। इस जन्म में भी जब तप में विघ्न करने वाले कामदेव को भस्म करके शिवजी मुझे त्याग कर कहीं चले गए तब उनके विरह से व्याकुल मैं स्वर्ण नदी के तट पर आई और वहां बहुत समय तक तप करती रही किन्तु तब भी अपने प्राण-नाथ को पा न सकी। अब अपना प्रयत्न असफल हुआ देखकर अग्नि में जलकर मरना ही श्रेष्ठ समझा था आपको आया देख कर क्षण भर के लिए ठहर गई। अब आप पधारें मैं अग्नि में प्रवेश करूँगी। ब्रह्माजी कहने लगे—हे नारद जी! इस प्रकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कहकर ब्रह्मचारी के देखते देखते ही पार्वती जी अग्नि में प्रवेश कर गईं किन्तु उनके प्रवेश करते ही अग्नि भी चन्दन के समान शीतल हो गई। यह देखकर ब्राह्मण बोले—हे देवि! तुम्हें तो अग्नि भी नहीं जला सकती। हे भगवती! अब आप अपने तप का प्रयोजन मुझसे कहें।

पच्चीसवां अध्याय

(शिवजी का पार्वती जी से तप करने का कारण पूछना व पार्वती से इस विषय में उनका वार्तालाप व प्रसंगवश उन्हें अपने मार्ग से विचलित करने का प्रयास करना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद! तब पार्वती शिवजी के प्रश्न को सुनकर कहने लगीं—हे ब्राह्मण देवता! मैं सर्वथा मन वचन कर्म से शिवजी को अपना पति स्वीकार कर चुकी हूं। मैं जानती हूं मेरा यह निश्चय अत्यन्त कठिनता से पूर्ण होने वाला है। किन्तु तो भी मेरा मन मुझे उत्सुकता से तप करने के लिए प्रेरित कर रहा है। यह सुनकर ब्रह्मचारी ने कहा—हे पार्वती जी! तुम सदाशिव के लिए यह कठोर तप कर रही हो। भाग्य-वश गुरुकृपा के कारण मैं उन्हें भली-भांति जानता हूं। वे बैल पर चढ़ने वाले वृषभध्वज हैं। भस्म व जटाधारी हैं। भूत पिशाचों के स्वामी हैं व उनके मध्य रहते हैं। न जाने क्यों तुम इस प्रकार के पति का वरण करना चाहती हो। जरा विचार कर देखो। शायद तुम्हारी मति भ्रमित हो गई है। पूर्वकाल में दक्ष की कन्या ने भी इस शिव को अपना पति चुना था। उसके पिता को यह अच्छा नहीं लगा था। अतएव उन्होंने यज्ञ में अपने जमाता से ईर्ष्या के कारण अपनी कन्या को भी निमंत्रण नहीं दिया। तब क्रोधित सती ने पति के अपमान तथा पति द्वारा त्यागे जाने के दुःख से योगाग्नि द्वारा अपनी देह को भस्म

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर दिया था। सोचो उसे कौन सा सुख मिला। हे पार्वती! तुम भ्रमित हो रही हो। तुम सुन्दरी हो, गुणवती हो तुम्हें तो इन्द्र विष्णु आदि जैसे गुणवान प्रभुत्व सम्पन्न पति का चयन करना चाहिए था। उस शिवजी को तुम्हारा पति रूप में इच्छा करना मुझे हास्यास्पद सा प्रतीत होता है। तुम्हें ज्ञात होना चाहिए उनके पास न धन है न सोना चांदी। यहां तक कि वस्त्रहीन होने के कारण वे स्वयं दिगम्बर रहते हैं। आरोहन के लिए उनके पास केवल एक वृद्ध कमजोर सा बैल है। तुम्हारा पति बनने के लिए उनमें कोई भी गुण नहीं है। इस प्रकार हे नारद! जब ब्राह्मण वेशधारी शिव ने अनेक प्रकार से शिवजी की निन्दा की तो पार्वती जी अत्यन्त कुपित हो उठीं।

छब्बीसवां अध्याय

(ब्रह्मचारी वेशधारी शिवजी के मुख से शिव-निन्दा सुनकर पार्वती जी का उन्हें फटकारना तथा उस शिव-निन्दक को त्याग कर अन्यत्र जाने के लिए उद्यत होना, तभी पार्वती जी को शिवजी का दर्शन देना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! तब शिव-निन्दा को सुनकर क्रोधित हुई पार्वतीजी ने कहा—हे विप्रवर। इस प्रकार के शिवजी के दोषों का वर्णन करके थककर सप्त-ऋषि भी यहां से जा चुके हैं। अब वही दोष तुम भी कह रहे हो। जिस सदा-शिव महादेव ने विष्णु जी को अपनी श्वासों से वेद पढ़ा दिए, उनके समान विद्वान कौन हो सकता है। वे तो समस्त ब्रह्माण्ड के पिता हैं। उनकी आयु का आपको अनुमान कैसे हो सकता है। उनका पूजन करने से भक्त लोग मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर लेते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवता इन्हीं की छत्रछाया में तीनों लोकों का सुख भोग रहे हैं। आठों सिद्धियां इनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji-IFS (Retd) Collection Jammu

चरणों में सिर झुकाकर खड़ी रही हैं। इस प्रकार के शिवजी की प्रभुता अवर्णनीय है। महिमाशाली इस प्रकार के शिवजी के निन्दक के लिए कहीं भी स्थान नहीं है। शिव-निन्दक के सारे पुण्य नष्ट हो जाते हैं। अतएव हे ब्राह्मणदेव! आपको शिव जी की निन्दा नहीं करनी चाहिए। अब तो मैं आपकी पूजा कर चुकी हूँ अतएव आपके अपराध को क्षमा कर देती हूँ। किन्तु आगे कभी भी शिवजी की निन्दा मत करना। मुझे विश्वास है कि वे मेरे तप का फल मुझे अवश्य ही प्रदान करेंगे। इस प्रकार ब्रह्मचारी को समझा कर पार्वतीजी चुप हो गईं तथा पुनः सदाशिव के ध्यान में मग्न हो गईं कि तभी ब्रह्मचारी ने कुछ और कहना चाहा जिससे क्रोधित होकर पार्वतीजी ने अपनी सखी विजया से कहा—इस पापात्मा ब्राह्मण को शीघ्र ही यहां से निकाल दो अन्यथा यह फिर से शिव-निन्दा करने लगेगा। शिव-निन्दा सुनने व करने वाले दोनों ही समान रूप से पाप के भागी होते हैं। शिव-निन्दक को तो अवश्य ही मार देना चाहिए और यदि शिव-निन्दक ब्राह्मण हो तो उसे त्याग देना चाहिए। यदि ऐसा न हो सके तो स्वयं शिव-भक्त को वह स्थान त्याग देना चाहिए। इस प्रकार जब पार्वतीजी उस स्थान से उठकर चलने लगीं तो करुणाकर भगवान् शिव स्वयं अपने वास्तविक रूप में आ गये और बोले—हे शैलसुता! तुम कहां चलीं? मैंने तो तुम्हें त्यागा नहीं किन्तु अब तुम ही मुझे त्याग रही हो। मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अब तुम जो चाहो वर मांगो। अपनी भक्ति व तप द्वारा तुमने मुझे अपने अधीन कर लिया है। हे प्रिये! तुम तो अनन्त काल से मेरी पत्नी हो। मैंने तुम्हारी अनेक प्रकार से परिक्षाऐं लीं। समस्त ब्रह्माण्ड में आज तुम्हारे समान तप करने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वाला कोई नहीं है। आज मैं तुम्हारी भक्ति के वश में हूँ। इस प्रकार सदाशिव के वचन सुनकर पार्वतीजी मुदित हो उठीं।

सत्ताईसवां अध्याय

(प्रसन्न पार्वती जी का शिवजी से पति बनकर हिमालय से याचना करने के लिए कहना तथा शिवजी का सहर्ष स्वीकार कर लेना।)

ब्रह्माजी बोले—हर्ष विभोर होकर पार्वतीजी ने शिवजी से कहा—हे प्राणनाथ! क्या आपको स्मरण नहीं? आप यदि सचमुच में मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा कर मुझे पत्नी के रूप में स्वीकार करें। अपने पिता के पास जाकर मैं यह समाचार देती हूं। आप भी भिक्षु के रूप में मेरे पिता से याचना करें जिससे वे मेरा विवाह आपके साथ कर दें। पार्वतीजी के ऐसे वचन सुन कर शंकरजी बोले—हे प्रिये! जैसा उचित हो करो, मैं यह मंगल कार्य करने के लिए तैयार हूं। श्री पार्वतीजी ने कहा आप मेरे पिता के पास जाकर उनकी कन्या का हाथ मांगें और कहें कि आप अपनी कन्या का सौभाग्य मुझे स्वीकार करके पुण्य के भागी बनें। ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! पार्वतीजी इस प्रकार शिवजी से प्रार्थना करके नमस्कार करके चुप हो गईं। फिर भगवान् शंकर ने तथास्तु कहा और अपने निवास स्थान को चले गए। कैलाश पर्वत जाकर उन्होंने नन्दीश्वर आदि मुख्य-मुख्य गणों को यह सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। वे सब भी यह जानकर अति हर्षित हुए।

अट्ठाईसवां अध्याय

(तप का मनोवांछित फल पाकर पार्वतीजी का घर लौटना जहां उन्हें अत्यन्त हार्दिक स्वागत मिलना। तभी शिवजी का डमरू बजाते हुए हिमालय व मैना के पास आना व भिक्षा के रूप में कन्या को मांगना तथा अपने अनेक चमत्कार दिखाना। किन्तु अज्ञानवश हिमालय व मैना का इन्कार कर देना।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उधर पार्वतीजी ने भी तप का इच्छित फल प्राप्त कर घर की ओर प्रस्थान किया। हिमाचल और मैना पार्वतीजी के आगमन का समाचार सुनकर अपने पुरोहितों, सम्बन्धियों, मित्रों आदि सहित विमान पर चढ़कर नगर के बाहर पार्वती जी के दर्शन के लिए आये। इसके साथ ही सब नगरवासी भी उनके पीछे पीछे पार्वतीजी के दर्शनों के लिए उपस्थित हुए। जय जयकार होने लगी। राजमार्ग पर स्त्रियां मंगल गीत गाने लगीं तथा दीपक हाथ में लेकर नृत्य करने लगीं। ब्राह्मण लोग भी स्वस्ति वाचन करते हुए वेद ध्वनि करने लगे। शंख, मृदंग, ढोल आदि वाद्य बजने लगे। पार्वतीजी ने आते ही माता-पिता को प्रणाम किया। दोनों ने पुत्री को कण्ठ से लगाकर आशीर्वाद दिया। तथा पार्वतीजी को साथ लेकर नगर की ओर चल पड़े। नगर में जाकर सब अत्यन्त हर्ष से पार्वतीजी का गुणगान करने लगे। तदनन्तर सबकी प्रसन्नता के लिए हिमाचल गंगाजी के तट पर स्नान के लिए चले गये। तभी भगवान सदाशिव नट का रूप धारण कर डमरू बजाते हुए मैना के समीप आकर नाचने लगे। जिससे सभी नगरवासी तथा मैना मोहित हो गये। स्वयं पार्वतीजी भी उनका त्रिशूल आदि चिन्ह देखकर मोहित हो गईं। तब मैना स्वर्ण पात्र में रत्न आदि भरकर उन्हें भिक्षा देने लगीं। भिक्षुक का रूप धारण किये हुये शिवजी यह देखकर बोले—हे देवि! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी कन्या दान कर दो, इस भिक्षा से मुझे कोई प्रयोजन नहीं है। इस प्रकार कहकर शिवजी पुनः नृत्य करने लगे। यह सुनकर मैना क्रोधित हो गईं और उन्हें बाहर निकालने के लिये तत्पर हो गईं। तभी हिमाचल भी गंगा स्नान करके लौटे। अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आंगन में भिक्षुक को देखकर उन्होंने मैना से सब वृत्तान्त पूछा तथा जानकर हिमालय भी क्रोधित हो उठे। उन्होंने सेवकों को आज्ञा दी—इस नट को शीघ्र ही बाहर निकाल दो। नौकरों ने अग्नि के समान तेजवान उन्हें देखा। वे महादेव का स्पर्श भी न कर सके। सदाशिव के तेज को देखकर हिमाचल व मैना आश्चर्य चकित हो गए। तब भगवान सदाशिव ने उन्हें अपना महाअद्भुत रूप दिखाया। फिर पार्वतीजी की याचना करने लगे। किन्तु उधर उनकी माया से मोहित हिमालय ने उनकी मांग स्वीकार नहीं की। यह देखकर महादेव अन्तर्ध्यान हो गए। तभी मैना व हिमालय को ज्ञान हुआ कि स्वयं सदाशिव ही उनके पास कन्या मांगने आए थे। तब हिमाचल स्वयं अपने कृत्य पर विचार कर पछताने लगे।

उन्तीसवां अध्याय

(पार्वतीजी की शिवजी में प्रगाढ़ भक्ति को देखकर पृथ्वी की समृद्धि को बनाए रखने की इच्छा से इन्द्रादि देवों का ब्रह्माजी व बृहस्पति जी की शरण में जाना तथा उनके इन्कार करने पर शंकरजी की शरण में जाना व उनसे प्रार्थना करना कि वे हिमालय के पास जाकर स्वयं अपनी निन्दा करें जिससे हिमाचल अपनी पुत्री का विवाह भगवान सदाशिव के साथ न करें।)

ब्रह्माजी बोले—हे ऋषिवर! पार्वतीजी की शिवजी के प्रति दृढ़ आस्था देखकर इन्द्रादि देवताओं ने सोचा, हिमालय अपनी कन्या का दान करके दुर्लभ मोक्ष पद को प्राप्त कर लेगा और पृथ्वी का त्याग कर देगा। जिससे पृथ्वी की समृद्धि निश्चित रूप से समाप्त हो जाएगी। हिमालय तो दिव्य रूप होकर शिव लोक गामी हो जाएगा। यह तो अच्छा नहीं है। इस प्रकार आपस में विचार करते-करते सब देवता गुरु बृहस्पति जी के पास गए और उन्हें सब हाल कह सुनाया। तथा उनसे प्रार्थना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करने लगे कि आप शीघ्र हिमालय के पास जाकर शिव-निन्दा करो जिससे हिमालय शिवजी को अपनी कन्या देने से इन्कार कर दें। देवताओं के इस प्रकार के विचार जानकर शिवजी का ध्यान करते हुए बृहस्पति जी ने कहा—हे देवताओ! तुम सब महा स्वार्थी व पाप के भागी हो जो अपने स्वार्थ के लिए मुझसे शिव-निन्दा कराना चाहते हो। शिव-निन्दक होकर मैं ही क्यों नरक का भागी बनूँ आप स्वयं क्यों नहीं जाते जिससे आपका मनोरथ सिद्ध हो जाए। तुम लोग सप्त ऋषि अथवा ब्रह्माजी की शरण में जाओ उन्हीं से अपना दुःख कहो वे तुम्हारी विपदा हरेंगे। हे नारद! तब सारे देवता मेरे पास आए और सब वृत्तान्त मुझसे कहने लगे। मैंने उत्तर दिया—हे देवताओ! मैं भगवान् शिव की निन्दा नहीं करूंगा क्योंकि शिव-निन्दक के सब अच्छे कर्म भी बुरा फल देने वाले हो जाते हैं। वह कभी भी सुख शांति को नहीं पाता। आप स्वयं भगवान् शिव के पास जाकर उन्हें प्रसन्न करो जिससे वे स्वयं ही अपनी निन्दा जाकर हिमालय से करें। तब इस प्रकार मेरे कहने से सब देवता कैलाश पर्वत पहुंचे। वहां शिवजी के दर्शन कर उन्हें प्रणाम करके स्तुति करने लगे। देवता बोले—हे महादेव! हम सब आपकी शरणागत हैं। तथा बार-बार सिर झुका कर आपको प्रणाम करते हैं। इस प्रकार प्रार्थना करके देवों ने शिवजी को अपना दुःख कह सुनाया। देवताओं की बात सुनकर सदाशिव ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। देवता लोग उनकी जय-जयकार करते हुए शंकर जी को प्रसन्न कर अपने लोकों को चले गए। उनके जाने के बाद महादेव हाथ में छाता तथा दण्ड लेकर सुन्दर-सुन्दर वस्त्र धारण करके, हाथ में स्फुटिक मणि की माला, स्वकण्ठ में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शालिग्राम धारण किए हुए साधुओं का रूप धारण करके हिमालय के पास पहुंचे। हिमालय उस समय बन्धु वर्ग तथा पार्वती जी सहित सभा में बैठे हुए थे। साधु रूपी रुद्र जी को देखकर वे उनके स्वागत के लिए सिंहासन से उठ खड़े हुए। भक्ति भाव से बार-बार उन्हें प्रणाम किया। पार्वती जी ने भी साधु वेशधारी रुद्र जी को पहचान लिया तथा भक्ति भावना से उन्हें प्रणाम किया। हिमालय द्वारा दिए गए आसन पर बैठकर भगवान शंकर ने कहना आरम्भ किया। हे हिमाचल जी मैं वैष्णव ब्राह्मण हूं। परोपकार करना मेरा धर्म है। भिक्षा पर ही आश्रित रहता हूं। मुझ पर गुरु देव की अत्यन्त कृपा है जिससे मैं सब स्थानों पर बिना परिश्रम किये इच्छानुसार पहुंच जाता हूं। मुझे ज्ञात हुआ है कि तुम अपनी परम सुन्दरी कन्या का विवाह अकुलीन, निराश्रित, विचारहीन, भिक्षावृत्ति वाले शिव के साथ करना चाहते हो। हे पर्वतराज! जरा भी आपने अपनी कन्या का भला नहीं विचारा है। वह शिव आपके तथा कन्या की समता में कदापि नहीं ठहर सकता। पार्वती अभी नासमझ व अनुभव हीन है। अपने भविष्य में आने वाले दुःखों का ज्ञान उसे नहीं है। अतएव वह शिव के साथ विवाह करना चाहती है। हे हिमाचल! तुम अपनी विवेक शक्ति से काम लो और विचार कर शिव के अतिरिक्त किसी और गुण रूप युक्त से उसका विवाह कर दो। इस प्रकार कहकर शिवजी वहां से चले गए।

तीसवां अध्याय

(शिव-निन्दा सुनकर हिमाचल व मैना का चिन्तित होकर पार्वतीजी का विवाह शिवजी से न करने का विचार करना। उधर पार्वतीजी को दिए गए वर को पूरा करने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के लिए शिवजी का सप्त ऋषियों सहित अरुन्धती को हिमालय व मैना को समझाने के लिए भेजना कि वह अपनी कन्या का विवाह शिवजी से ही करें।)

ब्रह्माजी बोले—उस ब्राह्मण द्वारा की गई शिव-निन्दा को सुनकर मैना चिन्तित हो उठी और कहने लगी—हे प्राणनाथ! आपने देखा इस वैष्णव ब्राह्मण के विचार में शिव मेरी पुत्री के लिए सर्वथा अयोग्य पति है। आप जरा शिव-भक्तों से मिलकर इसका निर्णय ले लो। यदि वास्तव में ऐसा ही है तो मैं पार्वती का विवाह ऐसे असभ्य से कदापि न करूंगी। अन्यथा विष खा लूंगी। मुझे अपने प्राणों की चिन्ता नहीं है और पार्वती को भी मैं समुद्र में फेंक दूंगी किन्तु शिव को नहीं दूंगी। इस प्रकार कहकर मैना रुदन करने लगी। उधर कैलाश पर्वत पहुंचकर शिवजी ने सप्त ऋषियों को स्मरण किया। सप्त ऋषि तुरन्त उनकी सेवा में प्रस्तुत हुए तथा प्रणाम कर बोले—हे देव! आज्ञा दें हमें किस प्रयोजन से स्मरण किया है? उस समय उनके साथ सिद्ध मूर्ति अरुन्धती भी थी। सदाशिव उनकी प्रार्थना सुनकर बोले—पापी दानव तारकासुर देवताओं को बहुत दुःख पहुंचा रहा है। ब्रह्मा जी के वर से उसकी शक्ति बढ़ गई है। उधर पार्वती ने भी मेरी प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या की है। उनकी इच्छानुसार उनके तप का फल देना मेरा कर्तव्य है। इन बातों से मैं पार्वतीजी के साथ विवाह करना चाहता हूं। इसके पूर्व भी मैं हिमालय के पास भिक्षुक के रूप में कन्या मांगने गया था। मुझे परब्रह्म जानकर उन्होंने अपनी कन्या का विवाह मुझसे करने का विचार कर लिया था। उसके बाद देवताओं के कहने पर मैं पुनः ब्राह्मण का रूप धारण करके स्वयं हिमालय के पास गया और अपनी निन्दा की जिससे वे मुझ से घृणा करने लगे हैं। मेरे साथ पार्वती का विवाह करने का विचार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उन्होंने त्याग दिया है। इस कारण अब तुम शीघ्रता से उनके पास जाओ और वहां जाकर हिमाचल तथा मैना को समझाओ जिससे वह पार्वती का विवाह मेरे साथ कर दें। इससे पार्वती को दिया हुआ मेरा वर पूर्ण होगा। यह सुनकर मुनि शिवजी को प्रणाम करके चले गए। वहां से चलकर शीघ्र वह हिमाचल के पास पहुंचे। तेजस्वी ऋषियों के दर्शन पाकर हिमाचल ने प्रसन्नता से उठकर उनका स्वागत किया। उन्हें आदर से उचित आसन दिया और नम्रता से कहने लगा—हे ऋषियो। आपके दर्शनों से मैं कृतार्थ हो गया हूं। यद्यपि आप पूर्ण काम हैं तथापि मुझ सेवक को भी सेवा का अवसर प्रदान कर आज्ञा दें।

इकत्तीसवां अध्याय

(सप्त ऋषियों तथा अरुन्धती का हिमालय तथा मैना को अनेक प्रकार से शिवजी की माया व प्रभुता का वर्णन करके समझाने का प्रयत्न करना कि उन्हें अपनी पुत्री का विवाह शिवजी से ही करना चाहिए।)

ब्रह्मा जी—तब मुनियों ने हिमाचल की ओर से अवसर पाते ही कहना आरम्भ किया—हे हिमाचल! भगवान् सदाशिव परम ब्रह्म हैं और जगत् के पिता हैं तथा पार्वती जी जगत्जननी हैं तुम पार्वती जी का विवाह शंकर जी के साथ करके अपने जन्म को सफल करो। ऋषियों के यह वचन सुनकर हिमाचल ने उत्तर दिया—हे ऋषियो! आपका कथन सत्य है किन्तु अभी-अभी एक वैष्णव ब्राह्मण ने आकर शिवजी की निन्दा करके कहा है कि पार्वती के साथ विवाह के लिए शिव सर्वथा अयोग्य वर है। इस प्रकार शिव को दोष युक्त जानकर पार्वती की माता कोप भवन में चली गई हैं उनकी हठ है कि वे पार्वती का विवाह शिव से कदापि न करने देंगी। मेरा मन भी विचलित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो रहा है। मैं स्वयं भी उस भिक्षुक रूप शिव को अपना जमाता नहीं बनाना चाहता। तब हिमालय के ऐसा कहने पर ऋषितों ने अरुन्धती को मैना के पास भेजा। वहां पहुंचकर अरुन्धती ने देखा मैना व्याकुल होकर मूर्च्छित सी पड़ी है, अरुन्धती ने उसके समीप जाकर स्नेह से कहा--हे मैना! उठो चैतन्य होओ! तुम्हारे हित के लिए सप्त ऋषि व अरुन्धती आए हैं। तब मैना ने तुरन्त उठकर सामने अरुन्धती को देखा और उन्हें प्रणाम किया तथा कहने लगी--मैं धन्य हूं! पूर्वकाल में किए हुए किसी पुण्य के फलस्वरूप आज अरुन्धती पधारी हैं। हे भगवती! आपका यहां आना कैसे हुआ? मैं आपकी सेवा किस प्रकार करूं आज्ञा दें। हे नारद! तब अरुन्धती ने मैना को अनेक प्रकार से समझाया कि सर्व प्रभुत्व सम्पन्न शिवजी ही उनकी कन्या के लिए योग्य वर हैं। इस प्रकार अनेक प्रकार से शिवजी की योग्यताओं का वर्णन करके मैना को समझाकर वह अरुन्धती ऋषियों के पास आ गई। ऋषिगण अभी हिमाचल को समझाने का यत्न कर रहे थे। ऋषिगण कह रहे थे--हे हिमाचल! तुम उमा देवी का विवाह सदाशिव जी से करके उनके श्वसुर बनने का सौभाग्य प्राप्त करो। शंकर जी तो महायोगी हैं वे विवाह करना ही नहीं चाहते। केवल तारकासुर के नाश के लिए देवताओं ने प्रार्थना से इसके लिए बाध्य किया है। तुम्हारी कन्या ने भी भीषण तप करके उनसे यही फल मांगा है कि वे उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करें। ब्रह्मा जी बोले--तब शंका से हिमाचल ने कहा--हे ऋषियो! मेरी पुत्री राजकुमारी है, वह राजाओं जैसा सुख भोगती है, किन्तु शिवजी तो पूर्णरूप से घर से रहित, धन स्वर्ण वैभव से रहित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। उनके पास तो भोज्य पदार्थ भी नहीं हैं। यह कन्या वहां जाकर क्या खायेगी। भला वहां जाकर उसे क्या सुख मिलेगा। आप स्वयं विचार करके जैसा उचित समझें वैसी आज्ञा दें। इस प्रकार हिमाचल के कहने पर वसिष्ठ जी बोले— हे पर्वतराज! तुम शिवजी की माया को नहीं जानते। वे तो स्वयं धन के स्वामी हैं, कुबेर तो उनका सेवक मात्र है। जगत्-पालक वे ही जगत् के रचयिता, पालक, संहारकर्ता हैं। ब्रह्मा विष्णु उनके अंश हैं। उनके मुख से सरस्वती, वक्ष स्थल से लक्ष्मी तथा तेज से शिवा प्रकट हुई हैं। भला उनके पास किसी दुःख की समानता ही कैसे की जा सकती है। तुम्हारी कन्या तो सृष्टि के प्रारम्भ से उनकी पत्नी बनती रही है तथा होती रहेगी। इन सब बातों की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। और अपनी कन्या शिवजी को दे दो। तुम्हारी कन्या के भीषण तप के कारण देवताओं द्वारा प्रार्थना किए जाने पर सदाशिव तुम्हारी कन्या के पास पहुंचे और उसे वरदान दिया। उसके पश्चात् तुम्हारी कन्या को दिए हुए वर को पूरा करने के लिए तुम्हारे घर पधारे और उस समय प्रसन्न होकर तुमने सदाशिव को कन्या देने का वचन दिया। अब तुम अपने वचनों से पीछे हट रहे हो यह उचित नहीं है। यदि तुमने शालीनता तथा प्रेम से कन्यादान न किया तो शंकर जी बल पूर्वक तुम्हारी कन्या के साथ विवाह कर लेंगे। हे हिमाचल! इससे तुम्हारा शिखरों सहित नाश हो जायेगा। पंख तो पहले इन्द्र ने काट लिए हैं। अब शिखरों को भी नष्ट करना चाहते हो। केवल एक कन्या के कारण अपने कुल का नाश क्यों कर रहे हो। कुल की रक्षा के लिए एक का त्याग कर देना अच्छा होता है। ऐसा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नीति शास्त्रों में कहा गया है। अनरण्य राजा ने भी भयभीत होकर अपनी पुत्री ब्राह्मण को दे दी और अपनी सम्पत्ति तथा परिवार की रक्षा कर ली।

बत्तीसवां अध्याय

(महर्षि वसिष्ठ जी का हिमाचल को ऋषि अनरण्य के नीति नैपुण्य की कथा सुनाना तथा समझाना कि उसे भी अपने कुल की रक्षा के लिए एक का त्याग कर देना चाहिए और अपने कुल की रक्षा करनी चाहिए।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! अनरण्य का नाम सुनकर हिमाचल ने उत्सुकता से पूछा—हे महर्षि वसिष्ठजी! अनरण्य राजा का वृत्तान्त हमें सुनाइये वह कौन थे, किस वंश में जन्मे थे। वसिष्ठजी कहने लगे—हे पर्वतराज! राजा अनरण्य चौहदवें मनु इन्द्रसावाण के वंश में उत्पन्न हुए थे। भगवान शिव के वह प्रिय भक्त थे। सातों द्वीपों पर इनका राज्य था। इन्होंने ही अपने कुल में आचार्य बनाकर सौ यज्ञ किए थे। इनकी पांच रानियां थीं जिनसे सौ पुत्र तथा लक्ष्मी के समान सुन्दरी पद्मा नाम की कन्या थी। यह कन्या राजा तथा रानियों की बहुत प्रिय थी। राजा बड़े उदारात्मा थे। एक बार उन्होंने देवताओं के कहने पर भी स्वर्ग में इन्द्र का आसन अस्वीकार कर दिया था। अनरण्य राजा की प्रिय कन्या जब विवाह योग्य हुई तो इन्होंने उसके वर की खोज में चारों ओर पत्र भेजे और वर की खोज होने लगी। उसी समय तप से लौटते हुए पिपलाद ऋषि ने एक मनुष्य को अपनी स्त्री के साथ विहार करते देख लिया। ऋषि पिपलाद के मन में भी काम वासना जाग उठी। स्त्री किस प्रकार प्राप्त हो, यही सोचते हुये वे निवास स्थान पहुँचे। कुछ दिनों पश्चात एक दिन ऋषि पिपलाद पुष्पभद्रा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नामक नदी पर स्नान करने गये। अनरण्य की सुन्दरी कन्या भी आई थी। उस सौंदर्यमयी को देखकर ऋषि मोहित हो गए। ऋषि ने कन्या के आस पास खड़े लोगों से उसका परिचय पूछा। उन लोगों ने हँसकर कहा कि यह राजा अनरण्य की पुत्री है क्या आपका मन इसके प्रति मुग्ध हो गया है? जाकर राजा से इसे मांग क्यों नहीं लेते। इस प्रकार लोगों के हास्य-युक्त वचन सुनकर लज्जित हुये ऋषि पिपलाद ने मन में निश्चय किया कि वे उसे प्राप्त करके ही रहेंगे। तत्पश्चात शीघ्र ही स्नान आदि नित्य कर्मों को तथा शिव-पूजन आदि करके ऋषि पिपलाद राजा अनरण्य की सभा में गये। मुनि को देखकर राजा पिपलाद ने उन्हें प्रणाम करके आदर से आसन पर बिठाया। और उनसे आने का प्रयोजन पूछा। तब राजा अनरण्य के वचन सुनकर ऋषि ने उनसे उनकी कन्या की याचना की। ऋषि के वचन सुनकर राजा चुप हो गए। कुछ समय पश्चात् ऋषि ने फिर कहा –हे राजन्! अपनी कन्या शीघ्र ही मुझे दे दो अन्यथा शीघ्र ही तुम्हारा कुल सहित नाश कर दूँगा। ब्रह्माजी बोले– ऋषि के ऐसे वचन सुनकर भयभीत हो राजा, रानियां, सेवक आदि सब रुदन करने लगे। तथा बार-बार चिन्तन करने लगे कि इस बूढ़े ऋषि को कन्या कैसे दे दी जाए? लोग क्या कहेंगे? अभी राजा इस प्रकार चिन्ता कर रहे थे कि उसी समय के पुरोहित तथा राजगुरु वहां आ पहुँचे। राजा ने रोते-रोते उन्हें सब हाल कह सुनाया। तब भली-भांति विचार करके राजगुरु तथा पुरोहित जी ने कहा–हे राजन् आपने कन्या को किसी न किसी को तो देना ही है फिर इसी के साथ उसका विवाह क्यों न कर दें जिससे कुल की रक्षा भी हो जाए। इस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

. Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मुनि के द्वारा कुल का विनाश अच्छा नहीं है। तब पुरोहित तथा राजगुरु के विचार जानकर राजा अनरण्य ने अपनी कन्या को वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर मुनि को दे दी। मुनि ने भी यथाविधि पद्मा से विवाह कर प्रसन्नता पूर्वक अपने निवास की ओर प्रस्थान किया। इसी शोक से व्याकुल होकर राजा राजपाठ छोड़कर वन चले गए। उनके साथ ही रानी भी वन चली गई। कन्या के दुःख से व्याकुल रानी की मृत्यु हो गई। घर में भी सारा परिवार नौकर-चाकर राजा के बिना दुःख से व्याकुल हो गए। राजा अनरण्य ने वन में जाकर तप किया और शिवजी को प्रसन्न करके शिवलोक को प्राप्त हुआ। तब अनरण्य राजा के बड़े पुत्र कीर्तिमान राज्य करने लगे। वसिष्ठ जी ने कहा—हे पर्वतराज! इस प्रकार अनरण्य राजा ने अपनी कन्या देकर अपने कुल व सम्पत्ति की रक्षा की। अतएव तुम भी इसी प्रकार अपनी कन्या का विवाह शिवजी से करके सब देवताओं को अपने अधीन कर लो और शिवलोक के भागी बनो।

तेतीसवां अध्याय

(हिमाचल के कहने पर वसिष्ठ जी का पद्मा व पिपलाद के विवाह के बाद के जीवन का वर्णन करना। धर्म द्वारा पद्मा की परीक्षा लेने, पद्मा द्वारा धर्म को शाप देने तथा धर्म के पद्मा को वर देने का वर्णन करना तथा अन्त में हिमाचल को अपनी कन्या शिवजी को देने का आग्रह करना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी! अनरण्य की कथा सुनकर हिमाचल ने वसिष्ठ जी से पद्मा व पिपलाद के विषय में पूछा। तथा आग्रह किया कि उनका वृत्तान्त विस्तार से कहें कि विवाह के बाद वे कहां गए? क्या-क्या करते रहे? वसिष्ठ जी बोले—पर्वतराज! पिपलाद ऋषि बहुत वृद्ध थे। उनके मुख पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

झुर्रियां निकली हुई थीं। दांत तो थे ही नहीं। कमर झुक गई थी। कांप-कांपकर चलते थे। इस प्रकार बूढ़े ऋषि के साथ पद्मा उनकी कुटिया में निवास करने लगी। वह पद्मा साक्षात् लक्ष्मी स्वरूप थी। वह बूढ़े पति को विष्णु मानकर उसकी पूजा व सेवा करने लगी। एक बार पद्मा स्वर्णदा नामक नदी पर स्नान करने गई, वहां उसकी परीक्षा करने के लिए स्वयं धर्मराज पधारे। उन्होंने राजसी ठाठ बाट धारण किया। अनेक प्रकार के बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से सुसज्जित वे नवयुवक कामदेव के समान लग रहे थे। रथ पर आसीन थे। पद्मा की परीक्षा लेने के लिए वे मार्ग में ही पद्मा को रोककर कहने लगे—हे सुन्दरी! तुम तो राजरानी बनने के योग्य हो। यह बूढ़ा पिपलाद तो तुम्हारी समता कदापि नहीं कर सकता। यह वृद्ध तो अल्पायु है। हे सुन्दरी! अपूर्व रूप और सौन्दर्य अनेक पुण्यों से मिलता है। सुन्दर नवयुवक के साथ ही इसकी सार्थकता है। अन्यथा यह व्यर्थ है। अतः इस वृद्ध को त्यागकर मेरा साथ करो, मैं तुम्हें अपनी हृदय की रानी बनाऊंगा। मैं रति शूर हूं। इस प्रकार कहकर राजकुमार बने हुए धर्मराज रथ से उतर आए और पद्मा को पकड़ने का प्रयत्न करने लगे। तब हटकर क्रोध में भरकर पद्मा कहने लगी—अरे दुष्ट पापात्मा! दूर हट जा। मेरे शरीर का स्पर्श मत करना नहीं तो शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा। काम-मोहित होकर मेरा पतिव्रत धर्म नष्ट करना चाहते हो। अपने परम पूज्य महा तपस्वी महर्षि पिपलाद को त्याग मैं तुझ जैसे स्त्री प्रेमी, कामी, दुराचारी के साथ क्यों जाऊं। हे मूर्ख! यदि मुझ पतिव्रता को तू बुरे भाव से देखेगा तो शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा। ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी!

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जब इस प्रकार क्रोधित होकर पद्मा ने उसे श्राप दे दिया। तो धर्मराज राजा का वेश त्यागकर कांपते-कांपते असली रूप में आकर कहने लगा—हे माता! मैं धर्म हूं। ज्ञानियों के गुरु का गुरु मैं धर्म हूं। मैं सदा पर स्त्रियों को माता समझता हूं। मैंने तो केवल आपकी परीक्षा के लिए यह सब किया है। आपके पति धर्म की परीक्षा मैंने पूर्णतया ले ली है। यह सब करके मैंने कुछ अनुचित नहीं किया। मेरा कर्त्तव्य है कि मैं धर्मात्मा पुरुषों की धर्म सम्बन्धी परीक्षा लेकर उन्हें धर्म के सम्बन्ध में अधिक विश्वस्त करता रहूं। किन्तु आपने अब जो मुझे श्राप दे डाला है उसका क्या होगा? ब्रह्मा जी कहते हैं—हे नारद जी! तब पद्मा के पतिव्रत धर्म से प्रसन्न धर्मराज पद्मा के सामने चुप हो गए। पद्मा आश्चर्य से धर्मराज को देखती हुई कहने लगी—हे धर्मराज। तुम तो समस्त जीवों के कर्मों के साक्षी हो तुमने मेरी परीक्षा के लिए ढोंग क्यों रचा। अब मैं क्या कर सकती हूं। मैं शाप तो आपको दे चुकी हूं। मेरा शाप तो नष्ट हो ही नहीं सकता। क्योंकि पृथ्वी आकाश वायु आदि सब कुछ नष्ट हो सकता है किन्तु पतिव्रता स्त्री का श्राप नष्ट नहीं हो सकता। तुम धर्म स्वयं भी शुद्ध, सनातन, नित्य व व्यापक हो यदि तुम्हारा नाश हो गया तो सत्य की क्या स्थिति होगी। यह तो मुझसे बहुत बड़ा अनर्थ हो गया है इसके लिए क्या किया जाय? एवं धर्म तुम चार पाद वाले हो। सतयुग में तुम्हारे चार पाद रहेंगे। त्रेता में तीन, द्वापर में दो तथा कलयुग में एक भी न रहेगा। पुनः सतयुग आने पर तुम्हारे चारों पाद पहले की तरह हो जायेंगे। हे नारद जी! पतिव्रता पद्मा के वचन सुन कर धर्म ने प्रसन्नता से कहा—हे पद्मा जी! आप धन्य हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आप सदैव अपने पति के चरणों की प्रेमिका रहोगी। तुम्हारा पति पुनः युवावस्था को प्राप्त हो जायेगा। उसकी जवानी स्थिर होगी। वह मार्कण्डेय के समान दीर्घायु, कुबेर के समान धनी, इन्द्र जैसा वैभव युक्त सौंदर्यवान्, धर्मात्मा, रति में प्रवीण होगा। अपने पति द्वारा तुमे दस पुत्र होंगे। वे भी गुणवान् तथा धर्मात्मा व दीर्घायु होंगे। यह मैं तुम्हें वर दे रहा हूं। वसिष्ठ जी बोले—हे हिमाचल! इस प्रकार धर्म से वर पाकर पद्मा प्रसन्नता से घर आ गई और उधर धर्म भी पद्मा की प्रशंसा करते हुए अपने निवास स्थान को चला गया। घर पहुंचकर धर्म के दिए वर के अनुसार अपने पति को पद्मा जवान हुआ देखकर प्रसन्न हुई और सुखपूर्वक उसके साथ विहार करने लगी। कुछ समय पश्चात् पति द्वारा उसे अधिक गुण सम्पन्न दस पुत्र प्राप्त हुए। हे पर्वतराज! इस प्रकार वे दोनों स्त्री पुरुष अत्यन्त प्रसन्न व सुख पूर्वक रहने लगे। वसिष्ठ जी द्वारा इस अद्भुत चरित्र को सुनकर हिमाचल अपनी पत्नी से कहने लगे—हे देवी! विलम्ब न करो। पार्वती का विवाह अति शीघ्र शिवजी से कर दो।

चौंतीसवां अध्याय

(पार्वतीजी को शिवजी को अर्पण करने के लिए उपयुक्त हिमालय को वसिष्ठ आदि ऋषियों द्वारा प्रसंसा करना तथा पार्वतीजी को आशीर्वाद देकर ऋषियों तथा अरुन्धती का शिवजी के पास पहुँचना तथा सब वृत्तान्त कहना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारद! इस प्रकार वसिष्ठ जी से अरुन्धती की कथा सुनकर हिमाचल ने प्रसन्नता से कहा—हे ऋषियो! मेरा भ्रम अब समाप्त हो चुका है। मेरा धन, सम्पत्ति, स्त्री, पुत्र, कन्या तथा शरीर आदि सब शिवजी के प्रति अर्पण है। इतना कह कर पुनः कहने लगे—मैं उमा को वस्त्राभूषणों से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सुसज्जित करके शिवजी को अर्पण करने के लिए तैयार हूं। मेरा निश्चय दृढ़ हो गया है। हिमाचल के ऐसे वचन सुनकर सप्त-ऋषि प्रसन्नता से बोले—हे हिमाचल! तुम धन्य हो। हमारे विचार से भगवान् शंकर भिखारी तथा आप दाता हैं। आप अवश्य ही शिव-भिक्षु को पार्वती कन्या का दान दें। इस प्रकार हिमालय की प्रशंसा करके पार्वतीजी के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए कहने लगे—हे पुत्री! तुम्हारा कल्याण हो। तथा पुष्प फल आदि देने लगे। अरुन्धती ने भी शंकर जी की प्रशंसा से प्रभावित तथा मुग्ध करके मैना से लोक रीति के अनुसार हल्दी, रोली से पत्थर पूजन मार्जन आदि कराकर चार दिन के बाद लग्न भी करा दिया। इसके अनन्तर सप्तऋषि व अरुन्धती हिमाचल से विदा लेकर शंकरजी के पास पहुंचे और वहां जाकर सब वृत्तान्त उन्हें कह सुनाया। उन्होंने कहा कि हमने हिमाचल को धर्म शास्त्रों के वचन सुनाकर समझा दिया है कि वह अपनी पुत्री का विवाह आपके साथ कर दें। आप विवाह की तैयारी करें तथा सभी देवताओं को इसकी सूचना दे दें।

पैंतीसवां अध्याय

(हिमाचल का शास्त्रोक्त विधि से लग्न पत्रिका लिखवाकर शिवजी के पास भिजवाना तथा शिवजी का बन्धु-बान्धवों तथा परिवार सहित हिमाचल के पास पहुंचना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे देवर्षि! तदनन्तर हिमाचल ने अपने बन्धु-बान्धवों को बुलाकर प्रसन्नता से अपने पुरोहित श्री गर्ग जी से लग्न-पत्रिका बनवाई। तब लग्न-पत्रिका का यथाविधि पूजन करके अनेक सामग्रियों के साथ शंकर जी के पास भिजवा दिया। पुरोहित के शंकर जी के पास पहुंचने पर शिवजी ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उनका यथोचित आदर-सत्कार किया। इसके पश्चात् पर्वत राज हिमाचल ने अपने दूरस्थ के सभी सम्बन्धियों को निमन्त्रित किया। तथा विवाह की तैयारियां होने लगीं। वस्त्र आभूषण रत्न आदि अनेक वस्तुओं का संग्रह किया जाने लगा। मिठाईयां पकवान आदि बनवाए जाने लगे। भोजन बनाने का कार्य भार अनुभवी हलवाईयों को दिया गया। सौभाग्यवती स्त्रियां मंगलगान करने लगीं। अनेक प्रसाधनों से पार्वती जी का साज शृंगार किया जाने लगा। विभिन्न साज-साधनों से सुसज्जित स्त्रियों का समूह एकत्रित हो गया। लोक रीतियों का सम्पादन किया गया। हे नारद जी! हिमाचल का निमन्त्रण प्राप्त कर सभी पर्वत तैयार होकर अलंकृत हो वहां पहुंचने लगे। मन्दराचल, अस्ताचल, उदयाचल, मलयाचल, गिरिराज, दद्दुर, विसद, गन्धमादन, करवीर, महेन्द्र, पारियाज, क्रोञ्च, पुरुषोत्तम, नील, सनील, चित्रकूट, वेंकठ, श्रीगिरि, गोकामुखो, विंध्याचल, कालिंजर अनेकों पर्वत वहां सज धजकर पहुंचे। इस प्रकार सब वहां विवाह में भाग लेने के लिए पहुंचने लगे। इसके अतिरिक्त शोण, भद्रा, नर्मदा, गोदावरी, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सिंध, शतद्रु, विपाशा, चन्द्रभागा, भागीरथी आदि सब नदियां भी दिव्य रूप धारण कर वस्त्राभूषणों से अलंकृत होकर शिव जी का विवाह देखने के लिए हिमाचल के यहां उपस्थित हुईं। हिमाचल ने प्रसन्नता से उनका स्वागत किया तथा आदर सत्कार से उनके ठहरने का प्रबन्ध किया।

छत्तीसवां अध्याय

(हिमाचल के आदेश से विश्वकर्मा का विशाल व सुन्दर विवाह-मण्डप बनाना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! तब विवाह की खुशी में हिमा-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चल समस्त नगर को सजाने लगे। विवाह के लिए मण्डप बनाने का आदेश उन्होंने विश्वकर्मा को दिया। विश्वकर्मा ने हिमाचल की आज्ञा पाकर शीघ्र ही एक विशाल सुन्दर मण्डप की रचना कर दी। जो दस हजार योजन लम्बा चौड़ा था तथा चालीस हजार कोस में था। मानो उसने अपनी निपुणता तथा विवाह की प्रसन्नता मण्डप निर्माण में ही प्रकट कर दी थी। विविध स्थावर जंगम, पुष्प, स्त्री पुरुष आदि की मूर्तियां बनाई थीं। जल में थल और थल में जल की प्रतीति होती थी। देखने वाला एक बार देखता तो देखता ही रह जाता। मण्डप में द्वार-पालों की मूर्तियां भी बनाई जिनके हाथों में धनुष था। मुख्य द्वार पर लक्ष्मी जी की प्रतिमा शोभायमान थी। हाथी, घोड़े, सारथियों द्वारा रथ साक्षात् गतिशील प्रतीत होते थे। सबसे प्रधान द्वार पर नन्दीश्वर की मूर्ति बनाई गई। उसके ऊपर पुष्पों का गुच्छा सजा दिया गया जोकि रत्न-जड़ित था। इसके साथ ही उस विश्वकर्मा ने विद्याधर गन्धर्व लोकपाल भृगु आदि ऋषि-महर्षि मनोहर प्रकार से रच दिए और भी अपने सेवकों सहित गरुड़ पर आरूढ़ भगवान् विष्णु की अद्भुत प्रतिमा तथा ऐरावत हाथी पर सवार इन्द्र की मूर्ति भी बना दी। इस प्रकार विवाह का वह मण्डप अद्वितीय शोभा वाला था। विश्वकर्मा ने मण्डप में अन्य देवताओं के लिए भी उचित स्थान बना दिए थे।

सैंतीसवां अध्याय

(शिवजी की आज्ञा से नारद जी का सब देवताओं, मुनियों आदि को विवाह का निमंत्रण देना तथा सबका सुसज्जित होकर वाहनों पर चढ़कर शंकर जी के समीप पहुंचना। लोकाचार रीतियों के अनुसार शिवजी का शृंगार करके वेद मन्त्रों के साथ पूजन करके प्रस्थान करना।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ब्रह्मा जी बोले–हे मुनिवर! जब भगवान् शंकर ने लग्न पत्रिका स्वीकार की तो उसमें लिखी सभी लोकाचार की रीतियों का भी पालन किया गया। शंकर जी ने वहां उपस्थित सभी लोगों को विवाह का निमंत्रण दिया। तदनन्तर भगवान् सदाशिव ने तुम्हें (नारद जी को) स्मरण किया। तुम तुरन्त ही वहां उपस्थित होकर अपने भाग्य की प्रशंसा करते हुए प्रणाम करके भगवान् की स्तुति करने लगे। जिससे प्रसन्न होकर सदाशिव ने कहा–हे देवर्षि! मैं तुम से जो कुछ कहता हूं उस परम तत्त्व को ध्यानपूर्वक सुनो। हे नारद जी! तुम्हारे उपदेश से ही पार्वती जी ने कठोर तप किया था। उस तप से प्रसन्न होकर मैं उसे उसका पति बनने का वर दे चुका हूं। हिमाचल के यहां से विवाह के लिए लग्न-पत्रिका भी आ चुकी है। आज से सातवें दिन श्री पार्वती जी के साथ मेरा विवाह लोक रीतियों के साथ होगा। अब मेरे इस शुभ विवाह का निमंत्रण विष्णु ब्रह्मादि देवताओं, मुनियों, सिद्धों, यक्षों आदि को दे आओ तथा उनसे कहना कि वे सब अपने परिवार सहित आभूषणों से अलंकृत होकर, अपने वाहनों पर आरूढ़ होकर मेरे विवाहोत्सव पर उपस्थित हों। इस प्रकार शिवजी की आज्ञा पाकर तुमने अत्यन्त प्रसन्नता से कहा–हे महादेव! मैं आपका सेवक हूं आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। इस प्रकार कह कर तुम सबको शिवजी के विवाह का निमंत्रण देने के लिए चल पड़े। तथा सबको निमंत्रण देकर आनन्दपूर्वक वहां से लौट आए। ब्रह्मा जी कहते गए–हे नारद जी! शिवजी के विवाह का निमंत्रण पाकर अत्यन्त हर्ष से अलंकृत होकर विष्णु जी तथा लक्ष्मी जी परिवार सहित भगवान् शिव के पास

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पहुंचे। तथा शिवजी को आदर से प्रणाम करके उनकी आज्ञा से अपने स्थान पर बैठ गए। तब धीरे-धीरे सब देवता अपने परिवार सहित सज-धजकर वहां एकत्रित होने लगे। सिद्ध, मुनि, यक्ष, गन्धर्व आदि भी निमंत्रण पाकर हर्ष से वहां वर यात्रा में सम्मिलित होने के लिए पहुंचे। अप्सराएं सुन्दर नृत्यों का प्रदर्शन करने लगीं, देव कन्याएं मंगल गान करने लगीं। महान् उत्सव होने लगा। इसके साथ ही लोकाचार की रीतियां करके शिवजी की आज्ञा से विष्णु आदि सभी देवता वर-यात्रा की तैयारियां करने लगे। सात माताओं ने सदाशिव का श्रृंगार किया। मस्तक का तृतीय नेत्र मुकुट बन गया। चन्द्र-कला ने तिलक की शोभा धारण की। कण्ठ के सर्पों ने दोनों ओर से फन ऊंचे उठा लिए तथा कुण्डल के समान प्रतीत होने लगे। समस्त शेष शरीर पर सर्प लिपट गए जो अगंद आदि आभू-षण बन गए। सारे शरीर पर चिता की भस्म लगा दी गई वह चमकने लगी। वस्त्रों के स्थान पर सिंह तथा मृग की चर्म धारण की गई। इस प्रकार के विचित्र श्रृंगार से सुसज्जित होकर भगवान् शंकर दूल्हा बने। विष्णु जी ने कहा—हे शंकर जी! आप गृह्यसूत्र की विधि के अनुसार विवाह करें। मण्डप स्थापना नान्दीमुख श्राद्धादि कुल रीति के कर्म भी आप इसी प्रकार करते चलें। इससे आपका यश होगा तथा लोक रीतियों की मर्यादा बढ़ेगी। ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी! सदाशिव ने विष्णु जी का कथन स्वीकार कर लिया तथा कश्यप, अत्रि, वसिष्ठ, गौतम, भाण्डारिक, गुरु, कण्व, बृहस्पति, शक्ति, जमदग्नि, महाबल, मधु पिंगल, नील पूर्णभद्र ये सब नौ-नौ करोड़, चर्तुदक, करण बीस-बीस करोड़, अहिरोमक, यज्वाक्ष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शतमन्यु करोड़-करोड़, काष्ठागुष्ठ चौंसठ करोड़ गण साथ लेकर चले। विरूपाक्ष, सुकेश, वृषभ, तालकेतु, षडास्य, चंचास्य, सनातन, संवतर्क, चैत्र, लकुलीश, लोकान्तक, दीपात्मा, दैत्याकण्टदेव, भृंगी, रिटि, श्रीमानदेवप्रिय, अशनि, भानु आदि गणों ने चौंसठ-चौंसठ हजार गण साथ लिए। भूत एक अरब, प्रमथ तीन करोड़, प्रमथ रोमज बीस-बीस करोड़ और वीरभद्र चौंसठ हजार गण लेकर बरात में चले। इसके अतिरिक्त नन्दी, क्षेत्रपाल, भैरवादि गणों ने भी असंख्यों गण साथ लिए। हजारों हाथों वाले मुकुट वाला जटा चन्द्र रेखा वाले नील कण्ठ, त्रिनेत्रधारी रुद्राक्ष पहने भस्म रमाये कुण्डल कड़ों से सुशोभित ब्रह्मा-विष्णु इन्द्र के समान अणिमा आदि अष्ट सिद्धियों से युक्त करोड़ों सूर्यों के समान तेजस्वी आकाश पाताल पृथ्वी आदि सभी जगह विचरने वाले यह सम्पूर्ण गण भगवान् शंकर के विवाह में चल रहे थे। हे नारद जी! इस प्रकार सब प्रकार से वर-यात्रा की तैयारी करके भगवान् शिव जी सर्पों के आभूषणों से भूषित होकर बैल पर चढ़कर वर बन कर हिमाचल के घर की ओर चल पड़े। इसके साथ ही चण्डी सदाशिव की बहन बनकर सिर पर सोने का कलसा रखकर परिवार के साथ वहां पहुंच गई। तथा अनेक अद्भुत चरित्रों का प्रदर्शन करती हुई वर-यात्रा में गणों के आगे-आगे चलने लगीं। डमरू, शंख, सींग नगाड़े आदि वाद्यों का स्वर गूंजने लगा। सब देवताओं के मध्य विष्णु भी वर-यात्रा में चल रहे थे। ब्रह्मा जी बोले—मैं भी वेद शास्त्र पुराण अगम आदि के साथ सनक आदि सिद्ध तथा प्रजापतियों के साथ-साथ अपने परिवार के साथ चल रहा था।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अड़तीसवां अध्याय

(गणों से रक्षित होकर डमरू आदि वाद्यों के साथ सज-धज कर शिवजी का बारात में वर बनकर जाना।)

ब्रह्माजी बोले—हे देवर्षि! तब महादेवजी ने नन्दीश्वर आदि गणों को चलने के लिए आज्ञा दी। कुछ गण रक्षा के लिए वहां ठहरा दिए गए। उस समय शिवजी के गणों का स्वामी शंख कर्ण करोड़ों गण साथ लेकर चला। केकराक्ष के साथ दस करोड़ गण थे। विष्टंभ व विकृत के साथ आठ आठ करोड़ गण चले। विसाख ने चार करोड़ गणों को साथ लिया। इसी प्रकार पारिजात ने नौ करोड़ गण साथ लिए। दुन्दुभ ने आठ करोड़, कपालाख्य ने पांच करोड़, सुन्दारक ने छः करोड़, कन्दक कुण्डल एक-एक करोड़, पिप्पल तथा महाकेश एक-एक हजार करोड़, सनादक ने एक अरब चन्द्रतायन तथा आवेशन आठ-आठ करोड़, कुण्ड और पर्वतक बारह करोड़, काल कालक महाकालक सन्नाह ये चार सौ करोड़, अग्निमुख एक करोड़, आदित्य मूर्धा, धनावह, कुमद, अमोघ, कोकिल, सुमत्र ये सब करोड़ करोड़, काक यादोदर, सन्तानक, पराशर, मार्कण्डेय, अगस्त्य, च्यवन गर्ग, शिलाद, शिलापालक, अरुणपाल, अकृत, श्रम, दधीचि, उपमन्यु, भरद्वाज, अकृतव्रण, पिप्पलाद, कुशिक, कौत्स आदि ऋषियों को बुलाकर लोकाचार रीतियां करने की आज्ञा दी। इसके पश्चात् सबने मिलकर भगवान् का रक्षा-विधान करके ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद आदि के मन्त्रों द्वारा स्वस्तिवाचन करना आरम्भ कर दिया। तदनन्तर विघ्नों के नाश के लिए ग्रह पूजन मण्डल में आए हुए देवताओं के पूजन कराए। इसी प्रकार लौकिक और वैदिक विधि के अनुसार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मंगल कार्य करा दिए। इस प्रकार सब कुछ हो जाने पर शिवजी ने ब्राह्मणों को नमस्कार किया तथा उनकी आज्ञा से बरात सजाकर प्रस्थान किया।

उन्तालीसवां अध्याय

(वर-यात्रा में चलते हुए शंकरजी का नारदजी को सब से पहले वहां का समाचार लेने के लिए हिमाचल नगर भेजना। वहां पर विश्वकर्मा के द्वारा बनाए मण्डप को देख कर आश्चर्य चकित नारदजी का हिमाचल की आज्ञा से मैनाक आदि को लेकर शंकर को लेने के लिए वापिस आना तथा मण्डप का वर्णन करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे ऋषि श्रेष्ठ! उस वर-यात्रा में तुम भी जा रहे थे। तब कुछ विचार कर सदाशिव ने विष्णुजी से सलाह कर तुम्हें सबसे पहले हिमाचल के पास भेजा। वहां पहुंचकर तुम विश्वकर्मा द्वारा बनाए गए मण्डप को देखकर चकित हो गए। वहां लाखों रत्नों से जड़ित स्वर्ण कलश शोभायमान हो रहे थे। बड़े-बड़े केले के खम्भे लगाए गए थे। उस अद्वितीय शोभा वाले मण्डप को देखकर तुम मोहित से हो गए थे। वहां भगवान् शंकर के चित्र को देखकर उन्हें साक्षात् महादेव जान तुमने हिमाचल से पूछा था—हे पर्वतराज! क्या महादेव शंकर आ गए? तब तुम्हें चित्रों में भ्रमित समझ कर हिमाचल ने कहा—हे नारदजी! वे तो अभी नहीं आए। आपको भ्रम हो गया है। आप जरा स्वस्थ हो लें। तथा मेरी ओर से मैनाक आदि पुत्रों को साथ लेकर वहां जाएं तथा आदर सहित शिवजी व उनकी बरात को यहां ले आएं। हिमाचल के कथन से तुम मैनाक आदि को लेकर शंकर जी के पास आए। तुम्हें आया देखकर मैं एवं विष्णु आदि देवता तुम्हें घेरकर पूछने लगे—क्या समाचार है? वहां तुम्हारे साथ कैसा सलूक हुआ? क्या हिमाचल शंकरजी को अपनी पुत्री देना चाहता है कि नहीं? इस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रकार के प्रश्नों की बौछार को सुनकर तुमने मुझे व विष्णु को एकान्त में ले जाकर कहा—हे देवताओ ! हिमाचल ने एक ऐसा मण्डप बनवाया है जिसमें तुम सब देवताओं के जीते जागते चित्र लगे हुए हैं। मैं तो उन्हें देखकर भ्रमित हो गया था। ऐसा प्रतीत होता है आप लोगों को मोहित करने के लिए ही उसने ऐसा किया है। इस प्रकार का समाचार सुनकर इन्द्र ने भय-भीत होकर कहा—हे लक्ष्मी के स्वामी विष्णुजी ! त्वष्टा के पुत्र को मैंने मार दिया था। उसी का प्रतिकार लेने के लिए मेरे ऊपर विपत्ति न आ जाए। कहीं मैं मारा न जाऊं। तब विष्णु ने कहा—हे देवराज ! ऐसा प्रतीत होता है कि वह हिमाचल अवश्य ही हमसे बदला लेना चाहता है क्योंकि तुमने पूर्वकाल में मेरी आज्ञा से पर्वतों के पंख काट डाले थे। यही बात उसे स्मरण है। इसीलिए वह हमें जीतना चाहता है किन्तु हमें डरना नहीं चाहिए। हमारे स्वामी भगवान् शंकर हमारे साथ हैं। तब हे नारद ! इस प्रकार लौकिक गति दिखाते हुए उन देवताओं से शंकरजी बोले—हे देवताओ ! साफ-साफ कहो क्या बात है। हिमाचल अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ करना चाहता है या नहीं ? इस प्रकार शंकरजी के वचन सुनकर तुमने कहा—हे महादेव ! आपका विवाह तो निश्चित है उसमें कोई विघ्न नहीं है। हिमाचल ने तो स्वयं अपने पुत्रों को मेरे साथ भेजा है यह आपको ले जाने के लिए आए हैं। किन्तु हिमाचल ने देवताओं को मोहित करने के लिए मण्डप में बहुत से अद्भुत देवताओं के चित्र बनवाए हैं। यह जानकर भगवान् शंकर ने देवताओं को समझाया। तुम लोग डरो नहीं हिमाचल अपनी कन्या मुझे दे रहा है तो उसकी माया हमारा क्या बिगाड़ेगी। तुम लोग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शीघ्रता से चले। इस प्रकार भगवान् के वचनों से आश्वस्त होकर मैनाक आदि को आगे करके सभी देवता शंकरजी के साथ हिमाचल नगर पहुंचे।

चालीसवां अध्याय

(बारात सहित शिवजी के हिमाचल नगर में पहुंचने पर पर्वतों द्वारा उनका स्वागत तथा पर्वतों और देवताओं का मिलन।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! आप शंकर आदि देवताओं को लेकर हिमाचल के यहां पधारे। बरात आने का समाचार पाकर हिमाचल आनन्द से पर्वतों को लेकर उनका स्वागत करने के लिए पहुंचे। तदनन्तर देवता और पर्वत आपस में मिलने लगे। हिमाचल ने तुरन्त शंकरजी के समीप जाकर उन्हें प्रणाम किया। तथा उनका अनुकरण करते हुए सभी पर्वतों ने बारी-बारी उन्हें प्रणाम किया। वर के रूप में सजे हुए शंकरजी की शोभा अद्वितीय थी विविध आभूषणों को धारण किए हुए अपने प्रकाशमय अंगों से दिशाओं को आलोकित करते हुए सदाशिव वर के रूप में बैल पर सुशोभित थे। हिमाचल ने बार-बार प्रणाम किया तथा उनकी आज्ञा प्राप्त कर सब देवताओं के ठहरने का प्रबन्ध किया। फिर वेदी के निकट आकर स्नान किया तथा दान-पुण्य करके अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि तुम लोग भगवान् शिवजी के पास जाकर प्रार्थना करो कि हमारे पिता अपने बन्धुओं के साथ मिलनी करने के लिए आप की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस प्रकार पिता की आज्ञा से हिमाचल के पुत्रों ने शंकर जी के पास जाकर सूचना दे दी। भगवान् शिव ने कहा—तुम लोग जाकर कहो कि वे आ रहे हैं। शंकरजी के कहने पर हिमाचल के पुत्र लौट गए। देवताओं ने पुनः

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सुन्दर शृंगार करके हिमाचल के घर की ओर प्रस्थान किया। उसी समय मैना ने तुम नारदजी को बुलाकर कहा कि वे इसी समय शंकरजी के दर्शन करना चाहती हैं।

इकतालीवां अध्याय

(शंकर जी के दर्शन की इच्छुक मैना का नारद जी को लेकर चन्द्रशाला जाना। वहां बरात तथा अन्य देवताओं की शोभा को देखकर उनका प्रसन्न व गर्वित होना। मैना के अभिमान को जानकर शिवजी का अपने गणों सहित अद्भुत कुरूप वेश धारण करके आना तथा उन्हें देखकर मैना का दुःख से मूर्छित हो जाना।)

मैना ने नारद जी तुमसे कहा—हे नारद जी! मैं इसी समय शिवजी को देखना चाहती हूं। मैं जानना चाहती हूं कि उनकी छवि कैसी है जिन्हें पाने के लिए मेरी पुत्री ने इतना कठोर तप किया था। इस प्रकार कहकर तुम्हें साथ लेकर वे चन्द्रशाला की ओर चल पड़ीं। भगवान् सदाशिव अपनी माया से पार्वती जी की माता मैना के इस प्रकार के भावों को जान गए तथा ब्रह्मा व विष्णु से बोले—तुम लोग सब देवताओं को लेकर अलग-अलग होकर हिमाचल के घर पहुंच जाओ। हम अपने गणों के साथ पीछे-पीछे आ रहे हैं। देवताओं ने आज्ञा मान ली। देवताओं की सजी हुई सेना को देखकर मैना अत्यन्त हर्षित हो गई। बरात में सबसे आगे सुन्दर वस्त्रों व आभूषणों से अलंकृत गन्धर्व अपने-अपने वाहनों पर सवार होकर वाद्य बजाते आ रहे थे। उन्हीं के साथ-साथ उनके गण भी ध्वजा पताकाएं फहराते हुए चल रहे थे। अप्सराएं नाचती हुई आ रही थीं। उनके पीछे वसु थे। उन्हें देखकर मैना बोली—हे नारद जी! क्या इन्हीं में शिवजी भी हैं। तब हे नारद! तुमने उत्तर दिया—नहीं, ये तो उनके गण हैं। मैना ने सोचा जब शिवजी के गण इतने सुन्दर हैं तो स्वयं शिवजी कितने सुन्दर होंगे? इसके बाद मणिग्रीव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपनी सेना के साथ आए। इसी प्रकार अग्नि, यम, निर्ऋत, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, इन्द्र आदि बारी-बारी से आए। अधीरता से मैना ने पुनः पूछा—क्या इनमें मेरे जमाता हैं? तब तुमने उत्तर दिया—यह सब शिवजी के सेवक दिकपाल हैं। चन्द्र और सूर्य भी आए। उन्हें देखकर भी मैना ने यही प्रश्न पूछा। नारद जी तुमने मैना को उनका परिचय दिया। इनके बाद मेघ के समान श्याम सुन्दर, करोड़ों काम को जीतने वाले, शोभा सम्पन्न चार भुजा वाले, कमल नयन पीताम्बर लहराते, शान्त विष्णु जी गरुड़ पर सवार होकर आए। उन्हें देखकर मैना ने अधीरता से पूछा—क्या ये शिव हैं। तब तुमने कहा—यह तो लक्ष्मी जी के स्वामी विष्णु जी हैं। हे मैना! तुम क्या सोचती हो। समस्त जगत् के स्वामी शंकर तो इससे भी अधिक सुन्दर हैं। उनकी सुन्दरता का तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता। ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी! तुम्हारे वचन सुनकर मैना तो अपने भाग्य को सराहने लगी। ये सब लोग शिवजी के सेवक हैं। जब ये ही लोग इतने सुन्दर हैं तो इनके स्वामी कैसे हों। इस प्रकार विचार कर मैना अपने भाग्य को सराहने लगी। हे नारद जी! अभी गर्वित होकर मैना ऐसा कह ही रही थी उसके अभिमान को दूर करने के लिए अपने अद्भुत गणों के साथ शिवजी भी आने लगे। भूत, प्रेत, पिशाचादि अत्यन्त कुरूप गणों की सेना आरम्भ हो गई। कोई वायु रूप था, किसी की नाक टेढ़ी थी, किसी की सूंड आधी थी, किसी के होठ लम्बे थे। किसी की दाढ़ी लम्बी थी, किसी के सिर पर बाल ही नहीं थे, किसी की आंखें नहीं थीं, किसी के पास दण्ड था तो कोई औंधा लेटकर चल रहा था। कोई वाहन की पूंछ की ओर मुख

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करके बैठा है तो कोई सींग, डमरू और गोमुख बजाता हुआ आ रहा है। किसी का मुण्ड नहीं, किसी का रुण्ड नहीं, किसी के अनेकों मुख हैं, किसी के अनेक आंखें हैं, किसी के कान नहीं हैं तो कोई अनेक कानों वाला है। किसी के सिर नहीं है तो किसी के अनेक सिर हैं, किसी के बिल्कुल हाथ पांव नहीं हैं तो किसी के अनेक हाथ पांव हैं। इस प्रकार भयानक बीभत्स शोभा वाले कुरूप गण आरम्भ हो गए। तभी शिवजी को देख कर तुमने मैना को संकेत दिया। यह सुनकर मैना शिवजी को देखते ही विषाद व वितृष्णा से कांपने लगी। कुरूप भयानक गणों के मध्य पांच मुख वाले, तीन नेत्र वाले, दस भुजाओं से युक्त, अंगों में भस्म लगाए हुए, मुण्डमाला धारण किए, बाघ का चर्म धारण किए हुए, पिनाक धनुष को उठाए हुए, कन्धे पर त्रिशूल धारण किए हुए और बड़े कुरूप व निर्बल एवं वृद्ध बैल पर सवार भगवान शंकर दिखाई दिए। मैना को अत्यन्त भयभीत हुआ देखकर तुमने मैना को समझाया और कहने लगे—हे मैना देवि! यह शिव ही तुम्हारे जमाता हैं। तब हे नारद! तुम्हारे वचन सुनकर तेज वायु के झोंके लगने से टूटी लता के समान दुःख से कांपकर मैना मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

बयालीसवां अध्याय

(मूर्छा दूर होने पर अपनी पुत्री के पति का स्मरण करके मैना का विलाप करना तथा नारद जी, पार्वती जी, सप्त ऋषियों, हिमालय आदि को फटकारना तथा हठ करना कि वह अपनी पुत्री का विवाह शिवजी से नहीं करने देगी।)

ब्रह्मा जी कहने लगे—हे नारद जी! मैना के पृथ्वी पर गिरते ही सेविकाएं भागकर आईं और अनेक प्रकार से मैना की मूर्छा दूर करने का प्रयास करने लगीं। मूर्छा के दूर होते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ही मैना रोने लगी तथा अपने पुत्र, पुत्री, नारद तुम्हारी तथा सप्त ऋषियों की निन्दा करने लगी तथा बोली—हे नारद! तूने मेरी पुत्री के जीवन का सत्यानाश कर दिया। तूने ही पार्वती को शिव को पति बनाने के लिए प्रेरित किया था जिसका फल आज दिखाई दे रहा है। हाय! अब मैं क्या करूं। कौन मुझे इस दुःख से छुटकारा दिलायेगा। मेरा जीवन तथा कुल दोनों ही कलंकित हो गए। मैं किसी को मुंह दिखाने योग्य नहीं रही। लोग क्या कहेंगे कि किसे मैंने अपनी कन्या दे डाली। कहां गए वे ऋषि? यदि मेरे सामने आएं तो उनकी दाढ़ी नोच डालूं। ब्रह्मा जी कहने लगे—हे नारद जी! इस प्रकार विलाप करती हुई मैना पार्वती जी के पास पहुंचकर उसे फटकारने लगीं। मैना बोली—हे उमा! तूने यह क्या किया? जो सूर्य, चन्द्रमा, इन्द्र आदि इतने सुन्दर देवताओं को छोड़ कर नारद की बातों में आकर इस बीभत्स व कुरूप शिव के लिए तप करती रही। तुझे कितना समझाया था किन्तु तूने हठ न छोड़ा। तेरी ऐसी बुद्धि, रूप एवं तुझे धिक्कार है। अब तुझे जीवित रखने से क्या प्रयोजन? मैं अभी तुझे मारकर स्वयं भी आत्म-हत्या कर लूंगी। भले ही मुझे नरक भोगना पड़े। तुझे इस नरक में नहीं पड़ने दूंगी। ब्रह्मा जी बोले—इस प्रकार क्रोध में कहते हुए मैना हिमाचल के पास पहुंची। उसे देखकर चारों ओर हाहाकार मच गया। सब देवता वहां एकत्रित हो गए। मैं ब्रह्मा भी शोर सुनकर वहां पहुंच गया और तुम भी आ गए। मुझे देखकर तुमने मैना से कहा—हे मैना देवी! अभी तुमने शिव स्वरूप देखा ही कहां है। शिवजी का जो रूप तुमने देखा है वह उनकी लीला का अंश मात्र है। उनकी लीला है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हे देवि ! क्रोध त्यागकर स्वस्थ होने का यत्न करो। बरात के स्वागत तथा विवाह का प्रबन्ध करो। नारद जी के वचन सुन कर मैना आपे से बाहर हो गई और बोली—हे दुष्ट नारद ! मेरे सामने से दूर हो जा। अभी यहां से चला जा। मैं तेरा मुख भी नहीं देखना चाहती। मैना के यह वचन सुनकर इन्द्रादि देवता मैना को समझाने लगे। वे देवता बोले—हे मैना देवि ! तुम नहीं जानती यह शिवजी तो सारे जगत् के स्वामी हैं। यह तो तुम्हारी कन्या का सौभाग्य है कि उन्होंने उसके तप से प्रसन्न होकर उसका पति बनने का वर दे दिया है। देवताओं के ऐसे वचन सुनकर मैना उन्हें भी फटकारने लगी तथा अपनी जिद पर अड़ी रही कि वे शिवजी को अपनी कन्या न देंगी। तभी सप्त ऋषि वहां आकर मैना को समझाने लगे। सप्तर्षि कहने लगे—हे पितृश्वरों की पुत्री मैना जी ! इतनी समझदार होकर भी क्यों तुम अज्ञान मार्ग को अपना रही हो। तुम्हें तो अपने भाग्य को सराहना चाहिए जो जगत् के स्वामी भगवान् सदाशिव ही तुम्हें जमाता के रूप में प्राप्त हो रहे हैं। तथा भिक्षुक के रूप में तुम्हारे द्वार पर उपस्थित हुए हैं। चैतन्य व स्वस्थ होकर उनका स्वागत व दर्शन करो। तुम्हें बिना परिश्रम के परम तत्त्व की प्राप्ति हो रही है। तब और भी अधिक क्रोधित होकर मैना कहने लगी—तुम सब यहां से चले जाओ। मेरे सामने से दूर हो जाओ। मैं पार्वती का विवाह शिव से किसी शर्त पर नहीं करूंगी। तब तक हिमाचल भी वहां पहुंच गए। हिमाचल भी अनेक प्रकार से मैना को समझाने लगे हे मैना ! इस समय तुम भ्रमित क्यों हो रही हो। तुम्हारे यहां सब देवता व ऋषि पधारे हुए हैं। तुम शंकर जी के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भयानक रूप को देखकर घबरा रही हो वे तो अनेक रूप धारण करते हैं। वे सबके पालक, सबके पूज्य, सर्व समर्थ सृष्टि के पालक एवं संहारकर्ता हैं। तुम स्वस्थ होकर विवाह का कार्य आरम्भ करो। यह सुनकर मैना कहने लगी—हे स्वामी! पार्वती का विवाह शिव के साथ तो हो नहीं सकता। मैंने सोच लिया है कि या तो पार्वती के गले में रस्सी डालकर किसी ऊंचे स्थान से गिरा दूंगी जिससे पार्वती न रहे। यदि आप हठ पूर्वक इसका विवाह करने का प्रयत्न करोगे तो मैं अपने प्राण दे दूंगी। ब्रह्मा बोले—इस प्रकार कहकर मैना जोर-जोर से रोने लगी। तब हे नारद जी! मैं स्वयं जाकर उसे समझाने लगा। मैंने कहा—हे मैना! तुम तो व्यर्थ में ही इतना बखेड़ा कर रही हो। भगवान् शिव तो अनेक रूप धारण करते हैं, अनेक रूप व नाम वाले हैं, सृष्टि का पालन व संहार उन्हीं के हाथ में है। हे विष्णु जी! मैं शिव के साथ अपनी कन्या का तभी विवाह करूँगी जब वह अपना रूप धारण कर आयेंगे अन्यथा नहीं।

तेंतालीसवां अध्याय

(ब्रह्माजी की आज्ञा से नारदजी व विष्णुजी का शंकरजी के पास जाना। तप से प्रसन्न करके उनके सुन्दर रूप के दर्शन पाकर, मैना को भी उनके उस रूप का दर्शन कराना तथा उन्हें देखकर प्रसन्न होकर पार्वती के भाग्य को सराहना तथा मैना का अपने किए को स्मरण करके पछताना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! उस समय मैंने ही तुम को तथा विष्णु जी शंकरजी के पास भेजा। वहां जाकर तुमने तथा विष्णुजी ने सदाशिव की बहुत प्रशंसा की तथा स्तुति की। अन्तर्यामी शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें अपने सुन्दर तथा दिव्य रूप के दर्शन दिए। तब प्रसन्न होकर आप मैना के पास भागते हुए आए। आकर बोले—हे मैना देवि! इस समय भगवान् अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सुन्दर व दिव्यरूप में अवस्थित हैं। आप चलकर दर्शनकर लो। अभी वह आप के घर ही आ रहे हैं। इस प्रकार के वचन सुनकर मैना आपको साथ लेकर वहां गई तथा शिवजी के सुन्दर रूप के दर्शन करके आनन्दित होने लगी। करोड़ों सूर्य के समान आलोकित, समस्त शरीर में सुन्दर वस्त्र धारण किए हुए, मुख से मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए, गौर वर्ण वाले शिव सुन्दर वृषभ के ऊपर सवार हुए आ रहे हैं। विशाल मस्तक पर चन्द्रमा की कला सुशोभित है। विष्णु आदि आप में पूर्णतया स्वतन्त्र ईश्वर हैं यह तो सब कामों को बिगाड़ने वाला है। इस हठ को छोड़कर पार्वतीजी का विवाह उनके साथ कर दो। यह सुनकर रोते-रोते मैना कहने लगी—पितामह! व्यर्थ में झूठी प्रशंसा मत करो। मैंने स्वयं अपनी आखों उनका रूप देखा है। इस प्रकार विलाप करती हुई मैना अपने हठ पर अड़ी रही। तब अन्त में विष्णुजी पहुँचकर मैना को समझाने लगे। विष्णु ने कहा—हे मैना देवि! तुम तो पितृश्वरों की पुत्री हो धर्म का आधार लेकर चलने वाली समझदार हो। इस प्रकार का हठ तुम्हें शोभा नहीं देता। तुमने अभी शिवजी को देखा ही कहां है वे तो सगुण भी हैं और निर्गुण भी, सुन्दर भी हैं और असुन्दर भी। सभी उनका पूजन करते हैं। वे ही सज्जनों की गति हैं। मूल प्रकृति ईश्वर एवं पुरुषोत्तम को प्रथम उन्होंने ही रचा। मैं व ब्रह्मा उन्हीं की सन्तान हैं। इसके बाद समस्त लोकों के हित के लिए अपनी इच्छा से भगवान् रुद्र ने अवतार धारण किया है। उन्हें अपने विवाह से क्या प्रयोजन? वे तो केवल पार्वती के तप का फल देने के लिए तेरे द्वार पर पधारे हैं। अतः अब अज्ञानमय इस दुःख को त्यागकर शिव का भजन करो, जिससे तुम्हें परमानन्द

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की प्राप्ति होगी। ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! विष्णुजी के इस प्रकार समझाने पर मैना कुछ स्वस्थ हुई और कहने लगी—हे विष्णुजी! अपनी कन्या पार्वती का विवाह मैं तभी शिवजी के साथ करूंगी जब वे अपना असली रूप धारण करके आयेंगे अन्यथा नहीं।

चवालीसवां अध्याय

(बरात आने पर मैना का शिवजी की आरती उतारना तथा सबके रहने का उपयुक्त प्रबन्ध करना। पार्वती जी का भी सब देवों के पूजन के लिए जाना।

ब्रह्मा जी कहने लगे—हे नारद जी! इसके बाद भगवान् शिव प्रसन्नता पूर्वक गणों, देवताओं, सिद्धों, मुनियों आदि के साथ हिमाचल के घर पहुंचे। मैना भी शीघ्रता से सभी स्त्रियों को साथ लेकर घर आकर शिवजी के स्वागत के लिए आरती सजाने लगी। आरती सजाकर सब स्त्रियों के साथ द्वार पर उपस्थित हुई। वर के रूप में द्वार पर उपस्थित शंकर जी की कान्ति करोड़ों कामदेव के समान थी। मैना ने गौर वर्ण, एक मुख त्रिनेत्रधारी सुगन्धित मालती पुष्पों की माला, मुकुट, बाजूबन्द, रत्नजटित कंगन आदि धारण किए हुए, चन्दन, कस्तूरी आदि से सुगन्धित युवा, मन्द-मन्द हंसते हुए उन शंकरजी के दर्शन कर अपने आपको धन्य समझा। हर्षातिरेक में मैना ने बड़े प्रेम से उनकी आरती उतारी। शिवजी का यह रूप पार्वती द्वारा बताए रूप से भी अधिक सुन्दर था। आरती के बाद मैना भीतर चली गई। वहां लड़कियां महादेव जी की शोभा देखकर आपस में कहने लगीं—ऐसा वर तो हमने कहीं नहीं देखा। देवता उनकी सेवा करते आ रहे हैं। सूर्य ने उनके सिर पर छत्र धारण कर रखा है। चन्द्रमा आभूषणों की शोभा को धारण किए हुए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। गंगा यमुना चंवर ढुला रही हैं। अणिमा आदि आठों सिद्धियां सामने नाच रही हैं। शिवजी के पीछे सुन्दर एवं अनेकों रूप धारण करने वाले गण, सिद्ध, मुनि, देवता जय-जयकार करते आ रहे हैं। विश्वासु तथा अप्सराएं आगे-आगे गा रही हैं। शिवजी के इस रूप को देखकर मैना क्षण भर तो स्तब्ध रह गई। फिर पार्वती के भाग्य की सराहना करने लगी—हे पुत्री! तुम धन्य हो, तुम्हारे तप के प्रताप से सदाशिव आज हमारे यहां पधारे हैं। हे देव! मुझे क्षमा करें। मैं अज्ञानवश आपकी निन्दा कर बैठी। शिवजी के दर्शनों के लिए नगर की सभी स्त्रियां बाहर निकल आईं। चक्की पीसने वाली चक्की छोड़कर चली आई, पति की सेवा करने में रत पति को छोड़ कर चली आई, कोई दूध पीते बच्चे को छोड़कर चली आई। कोई बछड़ा बांधना ही भूल गई। शिवजी के दर्शनों की उत्सुक सब अपने कामों को छोड़कर भागती चली आईं। सदाशिव के दर्शनों से मोहित हुई एक दूसरे से कहने लगीं—हे सखि! आज हिमाचल पुर में रहने वाले नर-नारियों को अपने नेत्रों व जन्म का फल प्राप्त हो गया। हे पार्वतीजी! तुम्हारा भाग्य धन्य है। तुम्हारा तप भी धन्य है। समस्त जगत् के स्वामी तुम्हारे पति बन रहे हैं। इस प्रकार प्रशंसा करती हुईं सब स्त्रियां शिव जी पर पुष्पों की वर्षा करके चन्दन आदि से पूजन करने लगीं।

पार्वती जी धन्य हैं जिन्हें ऐसा पति प्राप्त हुआ है। हे नारद जी! हिमाचल के घर सर्वत्र आनन्द छाया था। उत्सव हो रहे थे। तदनन्तर बरातियों के रहने का प्रबन्ध किया गया। हिमाचल अपने घर पहुंचे। तत्पश्चात् जगत्जननी पार्वती जी सब देवों के पूजन के लिए बाहर निकलीं। सुन्दर नीलकमल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के समान नेत्रों वाली, सुन्दर चितवन तथा कटाक्षयुक्त मस्तक पर सिंदूर लगाए, गले में रत्न माला धारण किए हुए, चन्दन, कस्तूरी, केशर आदि लगाए हुए, लाल कमल के समान पैरों पर सुशोभित पैंजनियों से युक्त सर्व प्रकार से शृंगारित पार्वती जी ने सब देवताओं को नमस्कार किया। शिवजी ने भी दृष्टि घुमाकर उनकी ओर देखा। उन्हें वह साक्षात् सती प्रतीत हुईं। सती के स्मरण से शिवजी पुलकित हो उठे। पार्वती जी सब देवों का पूजन करके ब्राह्मण स्त्रियों के साथ घर लौट आईं।

पैंतालीसवां अध्याय

(लोक रीतियों के अनुसार स्नान-उबटनादि पूर्वक शिवजी का हिमाचल के घर जाकर विवाह वेदी पर आसीन होना तथा विवाह कार्य का आरम्भ होना।)

ब्रह्माजी बोले—हे देवर्षि! तब उसके बाद हिमाचल ने शंकरजी का वेद-रीति के अनुसार यज्ञोपवीत संस्कार कराया। पार्वतीजी को भी वैदिक व लौकिक रीतियों के अनुसार स्नान कराया गया व शिवजी द्वारा दिए गए वस्त्राभूषण धारण कराए गए। जिन्हें पहनकर पार्वतीजी की शोभा निखर उठी। ज्योतिषाचार्य श्री गर्गजी ने हिचाचल से कहा—हे शैलराज! लग्न का समय आ गया है आप शंकरजी को बुलाइए। हिमाचल ने ब्राह्मणों को शंकरजी को बुलवाने के लिए भेज दिया। वहां जाकर ब्राह्मण लोगों के यह कहने पर कि कन्यादान का समय निकट है आप लोग शीघ्र पधारें सभी देवता प्रसन्न हुए। उसके बाद शिवजी ने शीघ्रता पूर्वक लोकरीति के अनुसार उबटन आदि लगाकर स्नान किया, तथा सुन्दर वस्त्राभूषणों से अलंकृत होकर वृषभ पर सवार शिव हिमालय के घर पहुंचे। इस प्रकार पधारे हुए शंकरजी को देखकर हिमाचल ने उनका स्वागत किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

यथा विधि पूजन करके विष्णु मुझ (ब्रह्मा), इन्द्र आदि मुख्य-मुख्य देवताओं को रत्नजड़ित आसनों तथा अन्य देवताओं को भी उचित आसनों पर बैठाया। मैना ने ब्राह्मण तथा सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ मिलकर शंकरजी की आरती उतारी। फिर आचार्य बने हुए ब्राह्मण ने हिमाचल से मधु अर्क दिलाया तथा विवाह कार्य आरम्भ हुआ। हिमाचल अपनी पुत्री शैलजा को आभूषणों आदि से अलंकृत करके ले आए। तथा वेदी पर बिठा दिया। बृहस्पति आदि शुभ लग्न का अवसर पाकर कन्यादान से पूर्व के मंगल कार्य शुरू हो गए। श्रीगर्गजी के कहने पर पार्वतीजी घटिका के स्थान पर शंकरजी पर अक्षत अर्पित करने लगीं। तथा श्रीगर्गजी द्वारा पूजित होकर शिव-पार्वतीजी एक दूसरे को देखकर आनन्दित हुए।

छयालीसवां अध्याय

(हिमाचल का कन्यादान के अवसर पर शिवजी से उनका गोत्रादि पूछना तथा पुनः नारद जी व अन्य ऋषियों तथा देवताओं के कहने पर तटस्थ होकर कन्यादान करना तथा बहुत सा दहेज देना।)

धीरे-धीरे सब मंगल-कार्य होने पर कन्या-दान का अवसर आ गया। श्री गर्ग जी की आज्ञा से मैना हिमाचल की बाईं ओर स्वर्ण कलश लेकर आ गई। तब हिमाचल ने वस्त्राभूषण शिवजी को देकर ब्राह्मणों को संकल्प कराने के लिए कहा। हिमाचल का संकेत पाकर ब्राह्मण लोग संकल्प पढ़ने लगे। हिमाचल ने सदाशिव से कहा—हे देव! आप अपना कुल, गोत्र, प्रवर, नाम, वेद, शाखा आदि ब्राह्मणों से कहें। हिमाचल के ऐसा कहने पर शंकर जी सोच में पड़ गए। तथा अन्य उपस्थित ऋषिगण हंसने लगे। तब हे नारद जी! तुमने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान् की प्रेरणा से वीणा बजाना आरम्भ कर दिया तथा हिमाचल से कहने लगे—हे पर्वतराज ! आप भी कैसी अज्ञानियों जैसी बातें करते हैं। कुल गोत्र आदि का नाम पूछकर आप इनका अपमान कर रहे हैं। उनका वंश आदि का ज्ञान तो विष्णु-ब्रह्मादि को भी नहीं हो सकता। यह तो अपनी इच्छानुसार अनेकों लीलाएं करने के लिए अवतार धारण करते हैं। आप इनका कुल गोत्र पूछ रहे हैं। हे शैलराज ! शिवजी कुलीन हैं या अकुलीन तुम्हारी कन्या के पति हैं। भगवान् शिवजी ने जब अपना रूप लिंग का बनाया था तब इनके मस्तक को कोई नहीं देख पाया था। ब्रह्मा जी उसका आदि देखने के लिए ऊपर तथा विष्णु जी उसका अन्त देखने के लिए नीचे को गए। किन्तु कोई भी नहीं जान पाया था। हे हिमाचल ! महादेव का कुल गोत्र तो नाद है वही स्वयं शिवजी हैं इन दोनों में अभेद है। हे नारद ! इस प्रकार तुमसे ज्ञान भरी बातें सुनकर हिमाचल आश्चर्य चकित रह गए तथा ऋषि व देवता जय-जयकार करने लगे। तब सुमेरु आदि पर्वतों ने हिमाचल से कहा—हे पर्वतराज ! अब विलम्ब कैसा ? शीघ्रता से कन्यादान दो। तब तटस्थ होकर हिमाचल कन्यादान करने लगे। कन्यादान करते हुए हिमाचल ने कहा हे महादेव ! अपनी कन्या आपको दान करता हूं इसे अपनी धर्मपत्नी स्वीकार करें। इस प्रकार जल व कन्या का हाथ संकल्प पूर्वक शिवजी को अर्पण कर दिया। शिवजी भी वैदिक व लौकिक रीति के अनुसार पार्वती जी का पाणिग्रहण कर प्रसन्नता से मंत्रोच्चारण करने लगे। चारों ओर से जय-जयकार होने लगी। गन्धर्व गाने लगे अप्सराएं नृत्य करने लगीं। हिमाचल ने कन्यादान करके शिवजी को बहुत सा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दहेज दिया। रत्न जटित आभूषण, सुसज्जित दुधारू गाएँ अश्व, रूपवती तथा युवा एक लाख दासियां दीं। एक करोड़ स्वर्ण हाथी सोने तथा हीरों से जड़े हुए रथ भी दहेज में दिए। दहेज देने के पश्चात् माध्यदिनी स्तोत्र से शिवजी की स्तुति की। तत्पश्चात् मुनिजन शंकर जी तथा पार्वती जी के सिर पर अभिषेक कराने लगे।

सैंतालीसवां अध्याय

(विवाह में परिक्रमा के समय पार्वतीजी के चरणों को देखकर ब्रह्माजी का काम-मोहित होकर वीर्य-पात करना तथा शिवजी का उसे देखकर क्रोधित होकर ब्रह्माजी को मारने के लिए उद्यत होना, बाद में सभी देवताओं के समझाने पर शिवजी का तटस्थ होना, ब्रह्माजी के वीर्य से बाल-खिल्य ऋषियों का जन्म।)

हे नारदजी! ब्रह्माजी ने कहा—फिर मेरी आज्ञा से ब्राह्मणों ने अग्नि स्थापना कराके वेद मन्त्र के उच्चारण के साथ शिवजी से हवन कराया। पार्वतीजी के भाई मैनाक ने अपनी बहन को खीलें दीं। पुनः लोक रीति के अनुसार शिवजी-पार्वतीजी ने अग्नि की परिक्रमा की। अग्नि परिक्रमा करती हुई पार्वतीजी के चरणों को देखकर मैं (ब्रह्मा) काम-मोहित हो गया तथा मेरा वीर्य भूमि पर गिर पड़ा। लज्जित होकर मैं उसे अपने पैरों से छिपाने लगा। मेरे इस कार्य को शंकरजी ने देख लिया तथा क्रोध में आकर मुझे मारने दौड़े। भय के कारण मैं कांपने लगा। उपस्थित सभी देवता भी भयभीत होकर शिवजी से प्रार्थना करने लगे—हे महादेव! अपराध क्षमा करें। आप तो सच्चिदानन्द स्वरूप हैं, प्रसन्न हों, मोक्ष की इच्छा से मुनिजन आपका ध्यान करते हैं आप तो इन्द्रियातीत हैं। आपके स्वरूप को कौन जान सकता है। आप दया के सागर ब्रह्माजी को क्षमा कर दें। इस प्रकार देवताओं की स्तुति करने पर शिवजी ने मुझ को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अभय दान दिया। तब मैंने अपने वीर्य को पांव से मसल दिया। उनके अनेक कणों से हजारों बाल खिल्य ऋषि उत्पन्न हो गये। तथा मेरे चारों ओर खड़े होकर 'हे पिताजी! हे पिताजी!' पुकारने लगे। हे नारदजी! तब तुमने भगवान् की प्रेरणा से क्रोध में आकर उन तेजस्वी ऋषियों से कहा--हे ऋषियो! अब तुम्हारा यहां कोई प्रयोजन नहीं है। तुम लोग गन्धमादन पर्वत पर जाकर सूर्य के शिष्य होकर तप करो। तब आपके (नारद-जी) के कहने पर वे ऋषि शंकरजी को प्रणाम कर गन्धमादन पर्वत पर चले गए।

अड़तालीसवां अध्याय

(विवाह के शेष कार्य सम्पन्न होना तथा पार्वतीजी की सखियों का शिवजी से अनेक प्रकार से मजाक करना।)

ब्रह्माजी बोले--हे देवर्षि! तदनन्तर विवाह के शेष कार्य सम्पन्न किए जाने लगे। शिव-पार्वती जी के सिर पर अभिषेक, ध्रुवदर्शन, हृदय-स्पर्श, स्वस्ति-पाठ, शिवजी का पार्वतीजी की मांग में सिंदूर भरना, शिव पार्वती को एक स्थान पर बैठाकर संस्त्रव प्राशन, पूर्ण पात्र, गोदान, आचार्य कर्तव्यता, ब्राह्मणों को दान देना आदि कार्य पूर्ण कराए गए। अनेक उत्सव किए गए। नगर की स्त्रियां कुहवर स्थान में ले जाकर लोक-रीतियां कराके वासालय में ले गईं। ग्रंथ विमोचन आदि लोकाचार के कार्य सम्पन्न किए गए। तब वहां सरस्वती, लक्ष्मी, सावित्री, जाह्नवी, अदिति, शचि, लोपामुद्रा, अरुन्धती, अहिल्या, तुलसी, स्वाहा रोहिणी, वसुन्धरा, शतरूपा, संज्ञा आदि दिव्य स्त्रियाँ आकर बारी-बारी से शिवजी से हंसी मजाक करने लगीं। सरस्वती ने कहा--हे शिवजी! अब तो आपने परमसुन्दरी पार्वतीजी को पा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लिया है। इनके चन्द्रमुख को देख अपना हृदय शीतल कर लो। लक्ष्मी जी बोलीं—हे देवाधि देव! जिस पार्वतीजी के विरह में आपने इतना कष्ट उठाया उससे आँखें मिलाने में लज्जा कैसी। सावित्री जी बोलीं—हे रुद्रजी! अब तो आपको पार्वतीजी के भोजन करने पर ही भोजन करना चाहिए। उन्हें कर्पूर वरास युक्त ताम्बूल भी अर्पित करना होगा। जाह्नवी ने कहा—हे शंकरजी! सौंदर्यवती पार्वतीजी के केश धोना तथा उन्हें शृंगारित करना आपका कर्तव्य है। यह स्त्रियों का सुख सौभाग्य सनदती हैं। शचि बोली—जिन्हें प्राप्त करने के लिए आपका समय विलाप करते हुए गुजरता था। उन्हें पाकर अब हृदय से क्यों नहीं लगाते। अरुन्धती ने कहा—मैंने आपको इतनी सुन्दर सती दी। अब आप इसे सुन्दर रति दें। अहिल्या बोली—हे शंकरजी। आप वृद्धावस्था को त्याग युवा रूप धारण कर लें, जिससे मैना आश्वस्त हो जाए कि आप पार्वती के अधीन हो। तुलसी ने कहा—आपने तो काम भस्म करके पार्वती को त्याग दिया था फिर क्यों उसे अपनाया। स्वाहा ने कहा—हे सदाशिव! आप इस प्रकार के हास्य को अन्यथा न समझें। विवाह के समय स्त्रियां हंसी करती ही हैं। वसुन्धरा ने कहा—हे भावों के ज्ञाता! आप तो काम-मोहित स्त्रियों के भावों को जानने वाले हैं। शतरूपा बोली—काम-पीड़ित स्त्रियां भोग के बिना प्रसन्न नहीं होतीं आप पार्वतीजी को रति से प्रसन्न करें। ब्रह्माजी बोले—इस प्रकार स्त्रियों के हास्य-वचन सुनकर शिवजी कहने लगे—हे देवियो! आप निर्लज्ज वचन क्यों कह रही हो। तब तो समस्त स्त्रियां शंकरजी के वचन सुनकर शरमा गईं और चुप हो गईं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उनन्चासवां अध्याय

(रति का शिवजी के पास जाकर विलाप करना तथा उनसे अपने पति के जीवन के लिए प्रार्थना करना। शिवजी की कृपा से कामदेव को पुनर्जन्म की प्राप्ति।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! उसी समय रति शंकरजी के पास आकर बोली—हे सदाशिव! आप तो पार्वती जी के पति बन गए। किन्तु मेरा पति तो आपने भस्म कर दिया था। अब आप मेरे पति को जीवित करके मुझे भी सुखी करें। इस विवाह में सभी प्रसन्न हैं। केवल मैं ही वियोगी हूँ। हे देवाधिदेव! कृपा करके इस शुभ अवसर पर मेरे पति को जीवित करके फिर पार्वती विहार का आनन्द लें। इस प्रकार विलाप व स्तुति करती हुई रति ने अपने पति की भस्म की पोटली शिवजी के सामने रख दी। और कहने लगी—हे भगवन्, हे देव! मेरा उद्धार करो। तब तो रति के रुदन व विलाप को सुनकर सरस्वती आदि सभी रुदन करती हुई शिवजी से प्रार्थना करने लगीं—हे कृपा के सागर! दीनानाथ! आप काम को जीवन प्रदान कर दें आपको सती विहार में सुख मिलेगा। इस प्रकार के वचन सुनकर शिवजी ने जैसे ही उस भस्म की पोटली की ओर देखा उसी समय कामदेव जीवित होकर प्रकट हो गया। उसे देखकर रति कृतकृत्य हो गई। कामदेव ने शिवजी को प्रणाम किया। प्रसन्न मन से शिवजी ने कहा मैं तुम दोनों पर प्रसन्न हूँ। अब तुम मनोवांछित वर मांगो। इतना सुनकर कामदेव ने हाथ जोड़ कर कहा—हे देव! यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरे पहले अपराध को क्षमा करें। आपके भक्तों में मेरा प्रेम हो, आपके चरणों में मेरा विश्वास व भक्ति रहे बस यही वरदान दें। कामदेव के वचन सुनकर शिवजी ने कहा हे कामदेव मैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तुम से प्रसन्न हूँ तुम निर्भय होकर रहो इस समय बाहर विष्णु जी के पास जाकर बैठो। शिवजी की आज्ञा पाकर काम बाहर आए तो उन्हें देखकर हर्षित होकर देवताओं ने कहा—हे कामदेव। तुम धन्य हो तुम्हें शिवजी ने पुनर्जीवन दिया है। इस प्रकार आनन्द से कामदेव का स्वागत करके सभी देवता अपने आसन पर बैठ गए। उसके बाद शंकरजी ने पार्वतीजी के साथ बैठकर मिष्ठान का भोजन किया। तदनन्तर हिमाचल व मैना से आज्ञा पाकर सदाशिव वहां से जनवासे को गए। वहां ब्रह्मा, विष्णु ऋषियों आदि को प्रणाम किया।

पचासवां अध्याय

(हिमाचल के प्रार्थना करने पर शिवजी का अन्य देवताओं के साथ हिमाचल के घर भोजन करना तथा अत्याधिक सुसज्जित मण्डप में शयन करना तथा प्रातःकाल उठ कर पुनः जनवासे की ओर प्रस्थान करना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी! हिमाचल ने अपना आंगन साफ व पवित्र करवा के सजाया। तथा अपने पुत्रों व अन्य पर्वतों को शंकर जी के पास भोजन करने का निमंत्रण देने के लिए भेजा। तब पर्वतों के द्वारा हिमाचल का निमन्त्रण पाकर शंकर जी सभी देवताओं, ऋषियों, मुनियों के साथ हिमाचल के घर भोजन करने के लिए पधारे। हिमाचल ने आदर से उनका स्वागत किया तथा भोजन के लिए बैठाया। विविध प्रकार के व्यंजन परोस कर सबसे भोजन करने के लिए प्रार्थना करने लगे। शिवजी अन्य देवताओं के साथ हंसी मजाक करते हुए भोजन करने लगे। उस समय इन्द्र आदि लोकपालों तथा भृगु आदि ऋषियों ने अपनी अलग पंक्ति बना ली थी। मैं व विष्णु शंकर जी के पास बैठे थे। हे नारद जी! सब बरातियों ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भोजन करके सन्तुष्ट होकर आचमन आदि किया तथा अपने-अपने विश्राम स्थल को चले गए। मैना की आज्ञा से स्त्रियों ने शंकर जी को वासाख्य महोत्सव के लिए रोक लिया। भगवान् शिव रत्न जटित सिंहासन पर बैठकर निवास-भवन की शोभा को निहारने लगे। वहां सैकड़ों रत्न जटित दीपक जल रहे थे। तथा रत्न जटित ही पात्र दर्पणादि शोभायमान हो रहे थे। श्वेत चामर भी रखे हुए थे। कहीं ब्रह्मलोक प्रतीत होता था तो कहीं लोकपाल इन्द्र के नगर का आभास होता था, कहीं शिवलोक का भ्रम होता था तो कहीं वैकुण्ठ की छाप थी। सर्वत्र देवताओं के दिव्य चित्र थे। इस प्रकार के सुन्दर भवन की शोभा को देखकर भगवान् शंकर वहां रत्न जटित पलंग पर सो गए। रात्रि बीतने पर जब प्रातःकाल हुआ तब अनेकों प्रकार के वाद्य बजने लगे। सारे देवता उठे और आनन्दित होकर अपनी सवारियां सजाने लगे। तब भगवान् विष्णु ने शंकर भगवान् के पास धर्म को भेजा। धर्म ने जाकर शिवजी से प्रार्थना की—हे स्वामी! कृपा करके जनवासे में पधारें देवतागण आपकी राह देख रहे हैं। शिवजी ने उत्तर दिया—हे धर्म तुम जाओ मैं अभी आ रहा हूं। इस प्रकार कहकर उसे भेज दिया तथा अपने मन में जाने की इच्छा करने लगे। नगर की स्त्रियां वहां आकर मंगलगान करने लगीं। भगवान् शंकर ने अपने प्रातःकालीन नित्य कर्म करके मना से जाने की आज्ञा मांगी तथा आज्ञा प्राप्त कर ऋषि मुनियों को प्रणाम कर बैठ गये।

इक्यावनवां अध्याय

(हिमाचल के आग्रह पर सब देवताओं का हिमाचल के घर बहुत दिन तक रहकर वापिस जाने की तैयारी करना तथा सप्तर्षियों के द्वारा हिमाचल को अपने जाने की सूचना देना।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी ! तब विष्णु आदि देवतओं ने अपना आवश्यक कर्म करके हिमाचल से विदा मांगी। तब नगर की स्त्रियों के साथ जनवासे में आकर हिमाचल ने कहा—हे स्वामी ! मेरी प्रार्थना है कि इन बरातियों के साथ आप कुछ दिन यहां निवास करें। आपके दर्शन पाकर हम आनन्दित होंगे। हे नारदजी ! इस प्रकार हिमाचल ने शिवजी से कुछ दिन और ठहरने का आग्रह किया। तब देवताओं के साथ मिल कर हिमाचल की प्रशंसा करते हुए कहा—हे पर्वतराज ! आप धन्य हैं आपकी कीर्ति महान् है, आप धर्म की प्रतिमूर्ति तथा अद्वितीय हैं। देवताओं ने कहा—तुम्हारे द्वार पर परब्रह्म शंकर जी अपने गणों सहित उपस्थित हुए, तुमने उन्हें सर्वप्रकार से प्रसन्न किया। आप धन्य हैं। ब्रह्माजी कहने लगे—तब बाजे आदि बजाए गए। उत्सव होने लगे। नाच गान होने लगा। भगवान् शिव ने हिमाचल से जाने के लिए प्रार्थना सहित आज्ञा चाही। हिमाचल ने शंकरजी सहित विष्णु आदि सभी देवताओं को अपने घर ले जाकर भोजन करने के लिए प्रार्थना की। सब देवताओं को उपयुक्त आसनों पर बिठाया। स्त्रियों ने मंगल गीत गाए। इस प्रकार गीतों को सुनते हुए बराती प्रसन्नता से भोजन करने लगे। भोजन के पश्चात् सन्तुष्ट हो जाने पर हिमाचल नेउन्हें प्रार्थना करके दो दिन और ठहरने का अनुरोध किया। तब सब देवता पुनः जनवासे में ठहर गए। इस प्रकार बार-बार आग्रह करके हिमाचल ने बहुत दिनों तक उन्हें जाने नहीं दिया। तब सब देवताओं ने सप्तर्षियों को हिमाचल के पास भेजा। उन्होंने जाकर हिमाचल से निवेदन किया—हे शैलराज ! शंकरजी तथा अन्य सभी देवताओं ने आज ही अपने-अपने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

निवास स्थान जाने का निश्चय कर लिया है। यह समाचार पाकर मैना व्याकुल होकर रुदन करने लगी। तथा शिवजी से प्रार्थना करने लगी–हे महादेव! मेरी पुत्री पार्वती आपकी अनादि काल से दासी है। यह आपकी सेवा करेगी। इसका पालन करना। आप में इसकी पूर्ण आस्था है। आपकी निन्दा यह सहन नहीं कर पाती। इस प्रकार अनेक वचन कहते हुए मैना ने पार्वतीजी का हाथ सदाशिव के हाथ में सौंप दिया और रोने लगीं। श्रीशंकरजी ने मैना को अनेक प्रकार से आश्वस्त किया और मैना तथा हिमाचल की आज्ञा पाकर जाने के लिए उद्यत हुए।

बावनवां अध्याय

(सप्त ऋषियों के कहने पर मैना का पार्वती जी को शिवजी के साथ भेजने की तैयारियां करना तथा ब्राह्मण स्त्री का पार्वती जी को पतिव्रता स्त्री धर्मों का उपदेश देना।)

ब्रह्मा जी बोले–हे नारद जी! सप्त ऋषियों ने हिमाचल से शीघ्र कन्या को तैयार करके सदाशिव के साथ भेजने का अनुरोध किया। सप्त ऋषियों के यह वचन सुनकर हिमाचल व्याकुल हो गए। कुछ समय तक विह्वल रहकर उन्होंने तटस्थ होकर मैना से पार्वती जी को भेजने की तैयारी करने के लिए कहा। मैना को यह सुनकर शोक व हर्ष दोनों हुए।। फिर वह स्त्री को विदा करने के लिए तैयारी करने लगी। पार्वती जी का पूर्णरूपेण शृंगार किया गया। मैना के कहने पर एक ब्राह्मण-स्त्री ने पार्वती जी को पतिव्रता धर्म की शिक्षा दी। उसने कहना आरम्भ किया–हे पार्वती जी! पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली स्त्रियां श्लाघनीय तथा धन्य हैं। ऐसी स्त्रियां पति तथा पिता के दोनों कुलों को तार देती हैं। पति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को परमेश्वर मानने वाली स्त्री की ही सद्गति होती है। इस लोक में आनन्द की प्राप्ति होती है। पतिव्रता स्त्री का यह धर्म है कि पति के भोजन कर लेने पर भोजन करे, पति के सो जाने पर ही सोए। क्रोध एवं प्रसन्नता में भी पति का नाम मुख से न बोले। क्रोधित होकर पति कभी अगर मार भी दे तो उसे धैर्य से सहन कर ले। उसके प्रत्युत्तर में कुछ न कहे। केवल पति से क्षमा-याचना करे। पति के बुलाने पर सब काम छोड़ कर भागी चली आए। उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करे। कभी भी द्वार पर खड़ी न हो। बिना कारण कभी किसी अन्य के घर जाकर न बैठे। अपने घर की वस्तुएं किसी को न दे। घर की प्रत्येक वस्तु को संभाल कर रखे। घर के प्रत्येक काम-काज में प्रवीण होना चाहिए। पतिव्रता स्त्री कभी भी बिना पति की आज्ञा से किसी यात्रा या खेल तमाशे आदि के स्थान पर न जाए। तीर्थ स्नान की यदि इच्छा हो तो पति के चरण धोकर उसका पान करने से उसका तीर्थ स्नान हो जाता है। पति की आज्ञा से पति का जूठन ही खाए। कभी भी पर्वों आदि पर भी बांटकर न खाए। कभी भी वस्तु के लिए पति से झगड़ा न करे। अपव्यय न करे। पति की आज्ञा के बिना व्रत उपवास आदि न करे। हठ पूर्वक किए गए धर्म कर्म का कोई फल नहीं मिलता। सुख पूर्वक सोते हुए या बैठे हुए पति को कभी न उठाये। दुःखी, दरिद्र, नपुंसक, रोगी, वृद्ध, विपद् ग्रस्त पति को भी परमेश्वर समझकर उसकी सेवा करे। ऋतुकाल में तीन दिन तक पति को अपना मुख न दिखाए। शुद्ध स्थान से पवित्र होकर ही उसके सामने आए। तीसरे दिन स्नान के पश्चात् सबसे पहले पति का ही मुख देखे। यदि पति कहीं पर-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देश गया हो तो पति के रूप का ध्यान करके सूर्य नारायण के दर्शन करे। सिंदूर कुमकुम आदि सुहाग की वस्तुएं धारण करके अपने पति की दीर्घायु की कामना करे। नीच, शूद्रा, धोबिन, व्यभिचारिणी स्त्रियों का साथ न करे। पति से झगड़ा करने वाली स्त्री से भी बात न करे। एकान्त में न रहे। कभी वस्त्र हीन न हो। स्नान भी वस्त्ररहित होकर न करे। पति की इच्छा होने पर ही पति से रमण करे। रमण के समय ही पति से हठ कर सकती है अन्य समय में नहीं। सदा पति के अधीन होकर आचरण करे। उसके साथ सुखी व उसके साथ दुःखी होने पर दुःखी हो। दुःख सुख में उसका साथ दे। वह अपने पति को ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी श्रेष्ठ समझे। यदि कोई स्त्री अपने पति की आज्ञा के बिना उपवास या व्रत करती है तो वह अपने पति की आयु का हरण करती है। जो स्त्री अपने पति को भला बुरा कहती हैं ऐसी स्त्रियां वनों में गीदड़ी का जन्म पाती हैं। पति से ऊंची न बैठे। व्यभिचारी और दुष्ट पुरुषों से दूर रहे। पति से कठोर वचन न कहे। सास, ससुर, जेठ, जेठानी आदि बड़ों के सामने न ऊंचा बोले, न कठोर बोले, न हंसे। पति के बाहर से आने पर आदर से चरण धोए। हे पार्वती जी! पतिव्रता नारियां लोकों को पवित्र कर देती हैं। तीनों देवों की प्रार्थना से अत्रि की पत्नी ने शाप से वराह द्वारा मरे हुए एक ब्राह्मण को जीवित कर दिया। हे शैलजा! आप तो जगत्माता सबका कल्याण करनें वाली हो। आप तो सब कुछ जानती हैं आपके लिए तो लोकरीति रिवाज के लिए कहना पड़ा। इस प्रकार पतिव्रत धर्म की शिक्षा देकर ब्राह्मणी ने पार्वती जी को आशीर्वाद दिया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तिरेपनवां अध्याय

(हिमाचल व मैना का अत्यधिक रुदन करते हुए पार्वतीजी तथा महादेव को विदा करना तथा अनेक वस्त्राभूषण व दहेज देना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! तब ब्राह्मण की स्त्री ने मैना को पार्वतीजी को भेजने के लिए कहा। उसके कहने पर मैना ने पार्वतीजी को विदा करने का निश्चय किया। प्रेम विह्वल उनकी आंखों से आंसू निकलने लगे। पार्वतीजी को हृदय से लगाकर ऊंचे स्वर में रोने लगी। स्वयं सदाशिव भी रोने लगे। पशु-पक्षी आदि तो क्या हिमाचल अपने पुत्रों, मंत्रियों, ब्राह्मण आदि के साथ वहां आ गए। मोहवश हिमाचल अपनी पुत्री को हृदय से लगाकर रोने लगे। तब तत्त्वज्ञानियों ने आध्यात्म ज्ञान देकर सबको शान्त किया। तटस्थ होकर पार्वतीजी ने आदर व भक्ति से माता-पिता व गुरुजनों को प्रणाम किया। फिर पुनः शोका-कुल होकर रोने लगी। पार्वतीजी को देखकर अन्य स्त्रियां भी रोने लगीं। तत्त्वज्ञानियों ने उन्हें सांत्वना दी और कहा यात्रा का शुभ लग्न हो गया है। आपका कल्याण हो। हिमाचल ने उसे धैर्य दिया और पार्वतीजी के लिए पालकी मंगाकर उन्हें बिठा दिया। सभी उपस्थित लोगों ने पार्वतीजी को आशीर्वाद दिया। हिमाचल व मैना ने पार्वती जी को वस्त्राभूषण व बहुत सा धन दिया। ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! तब पार्वतीजी ने ब्राह्मणों पुरोहितों को उनकी स्त्रियों को प्रणाम किया। उनकी पालकी चलने लगी। हिमाचल ने अपने जमाता शंकरजी को प्रणाम किया। और विष्णु आदि देवताओं से गले मिले। इस प्रकार देवताओं तथा शिव-पार्वतीजी को कुछ दूर तक छोड़कर उदासीनता से घर लौटे। तब वहां से जाकर भगवान शंकरजी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सभी देवताओं के साथ कैलाश पर्वत पहुंचे। कैलाश पर्वत पर पहुंचकर सदाशिव ने सबको स्वादिष्ट भोजन कराया। भोजन के उपरान्त सभी बरातियों ने सदाशिव से आज्ञा ली और अपने-अपने लोकों में चले गए। ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! मैंने आपसे शंकरजी के शुभ विवाह का वर्णन किया। यह शोक व दुःखों का नाश करने वाला है। मन को प्रसन्नता देता है। जो इस शुभ विवाह का पाठ करता है उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं। और अन्त में शिवलोक को प्राप्त होता है। शुद्ध मन से जो इसका श्रवण करता है उसके सब रोग दूर हो जाते हैं। यश, पुत्र व सन्तति की वृद्धि होती है। शिवलोक की प्राप्ति होती है।

इति श्री रुद्र संहिता पार्वती खण्ड

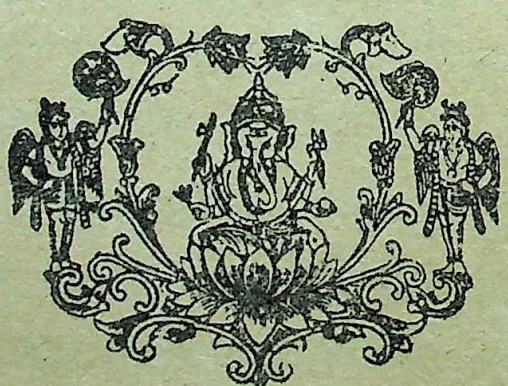

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

रुद्र संहिता कुमार खण्ड

पहला अध्याय

(कैलाश पर्वत पहुंचकर पार्वतीजी के साथ एक दिव्य निर्जन स्थान पर पहुंचकर रमण करना। तारकासुर से पीड़ित देवताओं का शंकरजी की स्तुति करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! अब मैं तुम्हें कैलाश पर्वत पर जाने के बाद क्या हुआ। कार्तिकेयजी का जन्म कैसे हुआ। इसका वर्णन सुनाता हूं। तुम ध्यान से सुनो। हिमाचल नगर से विदा लेकर जब शिवजी कैलाश पर्वत पर पहुंचे, वहां पहुंच कर उन्होंने देवताओं का कार्य सिद्ध करने का निश्चय किया। वहां पहुंचने पर उनके गणों ने प्रसन्नता से अनेक उत्सवों का आयोजन किया। देवता लोग भी प्रसन्नता से अपने निवास स्थानों को चले गए। तत्पश्चात हिमाचल पुत्री पार्वतीजी के साथ सदाशिव एक दिव्य निर्जन स्थान पर जाकर अनेक हजारों वर्षों तक रमण करते रहे। समय व्यतीत का उन्हें आभास न रहा। मानो पलक झपकते ही उन्होंने हजारों वर्ष व्यतीत कर दिए। इन्द्रादि देवताओं ने सुमेरु पर्वत पर एक गोष्ठी का आयोजन किया कि अभी तक भगवान शंकर ने कोई पुत्र उत्पन्न नहीं किया। इस प्रकार विचार मग्न वह मुझे साथ लेकर विष्णुजी के पास पहुंचे। उनके पास जाकर हमने विष्णुजी से सब वर्णन किया। हमारा निवेदन सुनकर विष्णुजी ने कहा—आपके लिए चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। शिवजी के संभोग से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कौन बाधा उत्पन्न कर सकता है। हजार वर्ष पूर्ण होते ही वह स्वयं अपनी इच्छा से विरक्त हो जायेंगे। जो मनुष्य किसी स्त्री पुरुष का वियोग करता है वह स्वयं जन्म-जन्मान्तरों तक इस प्रकार का वियोग सहता है। तुम्हें ऐसा यत्न करना चाहिए कि किसी प्रकार से हजार वर्ष पूर्ण होने पर शिवजी का वीर्य पृथ्वी पर आकर गिरे उस वीर्य से स्कन्द नामक पुत्र का जन्म होगा। इस समय तुम सब देवता अपने निवासों को जाओ और शिवजी को विहार करने दो। इस प्रकार विष्णुजी के समझाने पर सब अपने निवास स्थानों को चले गए। तब उस शक्ति (शिवा) व शक्तिमान (शिव) के विहार से पृथ्वी कांप उठी। समस्त ब्रह्मांड भयभीत हो उठा। तब पुनः सब देवता मुझे लेकर विष्णुजी के पास पहुंचे। हमारी व्यथा सुनकर हमें लेकर विष्णुजी कैलाश पर्वत पहुंचे। किन्तु वहां शिवजी नहीं थे। उनके गण थे। विष्णुजी ने नम्रता से उनसे शिवजी का पता पूछा। उन्होंने कहा—शिवजी पार्वती के मंदिर में गए हैं। हमें ज्ञात नहीं वे वहां क्या कर रहे हैं। तब शिवजी के धाम पहुंचे हुए विष्णुजी ने भगवान् शंकरजी की बहुत स्तुति की। तारकासुर से भय-भीत सभी अन्य देवताओं ने भी शिवजी की बहुत स्तुति की।

दूसरा अध्याय

(देवताओं की प्रार्थना से शिवजी का पृथ्वी पर वीर्य गिराना. जिसे अग्नि का भक्षण करना, पार्वती जी का सब देवताओं व अग्नि को शाप देना। स्तुति करके सब देवताओं व अग्नि का गर्भ से मुक्ति पाना व सप्तर्षियों की छः स्त्रियों में शिव-वीर्य का प्रवेश करना। उन स्त्रियों का उसे त्यागकर पर्वतराज पर और पर्वतराज का गंगा में गिराना। गंगा का उसे सरकण्डे के वन में त्यागना। वहां उसमें तेजस्वी बालक का जन्म होना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी! यद्यपि सदाशिव पूर्णतया वैरागी हैं तथापि उमा देवी के भय से वे संभोग न त्याग पाए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विष्णु जी मुझे अन्य देवताओं को अपने निवास पर देखकर बहुत प्रसन्न हुए। हम सबने उनकी प्रशंसा व स्तुति करके अपना प्रयोजन उनसे कहा। और तारकासुर का नाश करने का निवेदन किया। हम देवताओं का कथन सुनकर शिवजी विचार मग्न हो गए और बोले—हे देवताओ! भाग्य को कोई बदल नहीं सकता। स्खलित हुए मेरे वीर्य को ग्रहण करने का सामर्थ्य भला किसमें है? इस प्रकार कहकर उन्होंने वीर्य पृथ्वी पर गिरा दिया। देवताओं ने अग्नि से कहा तुम कपोत बनकर उसे ग्रहण कर लो। अग्नि ने कपोत बनकर उसे ग्रहण कर लिया। तभी शिवजी को विलम्ब हुआ देखकर पार्वती जी वहां पहुंच गईं। यह सब देखकर उन्हें क्रोध आ गया। कुपित होकर उन्होंने देवताओं से कहा—तुम लोग स्वार्थी व दुष्ट हो! तुमने स्वार्थ के लिए शिवजी की आराधना करके मेरे विहार को भंग कर दिया। जिससे मैं वन्ध्या हो गई। मुझ से विरोध कर कोई देवता सुख नहीं पा सकता। इस प्रकार पार्वती जी ने सब देवताओं को शाप दे दिया। पार्वती जी के क्रोध से अग्नि प्रज्जवलित हो उठी। उन्होंने कहा—सब देव नारियां वन्ध्या हो जायेंगी। मेरे विरोधी सब देवता दुःखी होंगे। फिर अग्नि को फटकार कर कहा—तूने शिवजी के वीर्य का भक्षण क्यों किया? तू अब सर्व भक्षी हो जायेगा। तू शिवजी के तत्त्व को न जानने वाला और सदा देवताओं का कार्य-साधक बना रहे। इस प्रकार श्राप देकर रुष्ट होकर पार्वती जी वहां से चली गईं। पश्चात् यह सब वृत्तान्त शिवजी से कहा। पार्वती जी ने गणेश जी को उत्पन्न किया। उधर सब देवता अग्नि में होम द्वारा अन्नादि भक्षण करते रहे। इससे उनके उदर में गर्भ रह गया जिससे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विष्णु आदि सब देवता पीड़ित हुए। शिवजी की माया से उनकी बुद्धि भ्रमित होने लगी। गर्भ की गर्मी से वे संतप्त हो उठे। और शंकर जी की शरण में गए। शिवजी के मन्दिर पर जाकर सबने हाथ जोड़कर उनकी स्तुति की तथा गर्भ से मुक्ति देने के लिए प्रार्थना की। तब देवताओं की स्तुति सुनकर शंकर जी द्वार पर आए वहां विष्णु आदि देवता खड़े थे। उन्होंने प्रार्थना की—हे स्वामी! हम इस वीर्य से दग्ध हो रहे हैं। हम आपके शरणागत हैं। आप ही हमारा दुःख दूर करने में समर्थ हैं। इस प्रकार देवातओं की इस प्रार्थना को सुनकर शिवजी ने हंसकर कहा—हे देवताओ! मेरे कथनानुसार तुम लोग मेरे वीर्य को वमन द्वारा बाहर निकाल दो इसी से तुम्हें सुख प्राप्त होगा। इस प्रकार शिवजी की आज्ञा से सब देवताओं ने वीर्य बाहर निकाल दिया। विष्णु आदि देवताओं का दुःख दूर हो गया उन्होंने भक्त वत्सल शिवजी की बहुत स्तुति की। किन्तु अग्नि फिर भी संतप्त होकर जलता रहा। उसने भी भगवान् शंकर की बहुत स्तुति की। और कहा—हे भगवन्! मुझ मूढ़ के अपराध को क्षमा करें। और मेरे ताप का हरण करें। आप दीनानाथ और भक्त वत्सल हैं। इस प्रकार अग्नि के स्तुति करने से भगवान् प्रसन्न हो गए। उन्होंने अग्नि से कहा—तुमने मेरा वीर्य ग्रहण करके अच्छा नहीं किया। तुम्हारा अपराध अधिक था अतएव तुम्हारा ताप नहीं समाप्त हुआ अब मैं तुम से प्रसन्न हूं। तुम मेरे इस वीर्य को त्यागकर किसी स्त्री की योनि में स्थिर कर दो। इससे तुम्हारा ताप नष्ट हो जायेगा। अग्नि ने उत्तर दिया—हे महादेव! आपका तेज दिव्य है इसे धारण करने में कोई भी समर्थ नहीं है। ब्रह्मा जी बोले—हे नारद

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जी ! उसी समय वहां आकर तुमने अग्नि से कहा—हे अग्ने ! तुम शिवजी की आज्ञा का पालन करो। मैं तुम्हें आसान उपाय बताता हूं। माघ के महीने में जो स्त्री प्रयाग में स्नान करके आए उसकी देह में तुम यह वीर्य स्थापित कर देना। तब हे नारद जी ! माघ के मास में प्रातःकाल सप्तर्षियों की स्त्रियां प्रयाग पर स्नान करने आईं। शीत अधिक होने के कारण उनमें से छः स्त्रियां अग्नि के तापने के लिए गईं। तभी उसी क्षण शिवजी के वीर्य के कण रोमों द्वारा उनके शरीर में प्रविष्ट हो गए। अग्नि का ताप शान्त हो गया। वह अपने स्थान पर आ गया। छः स्त्रियां गर्भवती होकर अग्नि से दुःखी हो गईं। उनके पतियों ने उन पर व्यभिचार का दोष लगाकर त्याग दिया। वे हिमालय पर जाकर तप करने लगीं। वहां तप द्वारा उन्होंने उस गर्भ को त्यागकर छुटकारा पाया। उधर पर्वतराज ने भी उस गर्भ को सहन न कर सकने के कारण गंगा जी में गिरा दिया। गंगा जी ने भी इस असह्य वीर्य को तरंगों से सरकण्डों के वन में त्याग दिया। मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी के दिन वहां पर एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। प्रकट हुए अपने पुत्र को देखकर शिवजी पार्वती जी भी बहुत आनन्दित हुए। समस्त ब्रह्माण्ड में मंगल छा गया। दुष्ट दैत्यों को अपशकुन दिखाई देने लगे। अनेक वाद्य बजने लगे। वन में उस बालक पर पुष्प वर्षा हुई और सभी देवता हर्ष से झूम उठे।

तीसरा अध्याय

(ऋषि विश्वामित्र का सहसा उस बालक के समीप जाना, स्वामी कार्तिकेय का उन्हें ब्रह्मर्षि की उपाधि देना तथा उनसे अपना (बालक का) संस्कार करवाना व उन्हें ज्ञान प्रदान करना। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक लीलाओं का बर्णन।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इसके पश्चात् ब्रह्माजी आगे का वृत्तान्त बताते हुए कहने लगे—हे नारदजी ! अब आगे क्या हुआ उसका वर्णन भी ध्यान से सुनो। तभी सहसा वहां ऋषि विश्वामित्र आए। और उत्पन्न हुए उस बालक को देखकर प्रसन्नता से उन्होंने उसे नमस्कार किया व उसके प्रताप को जानकर स्तुति करने लगे। तब अत्यन्त प्रसन्नता देने वाले उस बालक ने विश्वामित्र से कहा—हे ऋषि ! तुम शिवजी की इच्छा से ही यहां आए हो। अब आज से तुम मेरे पुरोहित हो गए। और सभी के पूज्य अब तुम यथाविधि मेरा संस्कार करो। आश्चर्य चकित होकर विश्वामित्रजी ने उस बालक से कहा—हे तात ! मैं गाधि क्षत्रिय का पुत्र हूं। मैं ब्राह्मणों का सेवक विश्वामित्र हूं। आप कृपाकर अपना परिचय दें। परमानन्द दायक उस बालक ने कहा—हे विश्वामित्रजी ! आज से तुम मेरे वरदान से ब्रह्मर्षि हो गए। निस्संदेह अब वसिष्ठादि ब्रह्मर्षि तुम्हारे प्रशंसक होंगे। मेरे कहने से तुम मेरा संस्कार करो और यह रहस्य गुप्त रखना। तब विश्वामित्रजी ने उस बालक का जात संस्कार किया। उस बालक ने भी प्रसन्न होकर उन्हें सच्चा ज्ञान दिया। हे नारद जी ! अब मैं उत्सवकारी उस बालक के और भी चरित्र तुम से कहता हूं। श्वेत नामक एक ऋषि ने उस बालक को देखकर प्रसन्नता से उसे चूमा व आलिंगन करके शक्ति व शस्त्र अर्पित किए। उस शक्ति को प्राप्त कर वह बालक क्रौंच पर्वत पर चढ़ गया। उसके शिखर को ढाने लगा। यह देखकर दस वीर राक्षस उसे मारने के लिए आए, कुमार ने वज्र से उन सब को नष्ट कर दिया। सारा ब्रह्माण्ड कांप उठा। शंकरजी भी सब देवताओं के साथ वहां आए। इन्द्र ने उसके दाहिने पार्श्व में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर गणेश जी ने उन्हें भीतर न जाने दिया और कहा कि मेरी माता इस समय स्नान कर रही हैं आप अन्दर नहीं जा सकते। आप यहां से भाग जाओ। शिवजी ने कहा—हे मूर्ख! तू मुझे अन्दर जाने से रोकता है क्या तू नहीं जानता मैं परमपिता शिव हूं। यह सुनकर गणेश जी ने शिवजी पर प्रहार कर दिया। शिवजी ने क्रोधित होकर कहा—हे मूर्ख! गिरजापति शिव मुझको तू नहीं जानता? तू मुझे अपने ही घर जाने से रोकता है। इस प्रकार कहते हुए शिवजी ने पुनः अन्दर जाने की चेष्टा की! किन्तु फिर गणेश जी ने लकड़ी से उन पर प्रहार कर दिया। तब क्रोधित शिवजी ने अपने गणों को आज्ञा दी कि इसे रोको। और इस प्रकार शिवजी बाहर खड़े रहे।

चौदहवां अध्याय

(शिवजी की आज्ञा से सब गणों का गणेशजी के पास जाकर उन्हें हटने के लिए कहना। इस प्रकार गणेशजी व शिवजी के गणों का वाग्युद्ध।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! शिवजी की आज्ञा पाकर शिवजी के गण गणेशजी के समीप जाकर पूछने लगे—हे द्वार-पाल! तू कौन है? यदि जीना चाहते हो तो भाग जाओ। गणों के इस प्रकार के वचन सुनकर क्रोधित होकर गणेशजी हाथ में दण्ड लेकर उन गणों को धमकाने लगे कि तुम सब यहां से भाग जाओ। मुझसे विरोध करने का फल अच्छा नहीं होगा। गणेश जी के ऐसे वचन सुनकर शिवगण हंसने लगे। व पुनः क्रोधित होकर गणेश जी से कहा—हे मूर्ख! हम सब सर्व श्रेष्ठ शिवजी के गण हैं तुम्हें यहां से हटाने के लिए ही आए हैं। अभी तक तो तुम्हें अपने सदृश गण मान कर छोड़ दिया किन्तु अब तो लगती है तुम मरना ही चाहते हो। तुम यहां से भाग जाओ। गणेश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जी ने उनकी धमकी सुनकर निर्भीकता से जवाब दे दिया और अपने स्थान से विचलित न हुए। यह देखकर शिवजी के गणों ने शिवजी के पास जाकर सब हाल कह सुनाया। शिवजी ने डपटकर उन्हें कहा—तुम लोग जैसे भी हो उस गण को वहां से हटाओ। डांट खाकर शिवजी के गण पुनः मन्दिर द्वार पर स्थित गणेश जी के पास पहुंचे और उनसे हटने के लिए कहने लगे। गणेश जी ने गर्व से कहा—मैं पार्वती पुत्र अपने कर्तव्य से कदापि नहीं हट सकता। तब द्वार पर शोर सुनकर भीतर से पार्वतीजी ने अपनी एक सखी को भेजा कि देखो बाहर क्या हो रहा है। सखी ने बाहर आकर सब हाल देखा और हर्ष से पार्वतीजी को कह सुनाया। तथा कहा यह बहुत अच्छा हुआ जो शिवजी को रोक लिया गया नहीं तो शिवजी बिना कहे सुने भीतर आ जाते थे। हे पार्वती! तुम अपना मान न त्यागना। पार्वती जी ने कहा ठीक है। सच ही तो है अभी क्षण भर भी मेरा पुत्र द्वार पर खड़ा नहीं हुआ था कि शिवजी के गण आकर उसे तंग करने लगे। फिर मैं क्यों अपना मान छोड़ूं। जो कुछ होगा देखा जाएगा। उधर बाहर गणेश जी कमर कस कर स्वाभिमान से डपट कर बोले—हे गणो! मैं पार्वती जी का पुत्र हूं और तुम शिवजी के गण। हम दोनों के पद समान हैं अतएव हम दोनों ही अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करें। तुम ही एक मात्र द्वार-पाल नहीं हो। यदि तुम अपने कर्तव्य नहीं छोड़ सकते तो मैं क्यों अपने कर्तव्य से विचलित होऊं। मैं इस समय पार्वती जी की आज्ञा का पालन कर रहा हूं। इस प्रकार के तर्क सुनकर शिवजी के गण निरुत्तर होकर फिर शिवजी के पास लौट गए और सब हाल सुनाने लगे। तब लोकनीति को अपनाते हुए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पार्वती जी ने भी कुमार को उठाकर गोद में बैठाकर प्यार किया व चुम्बन किया। कैलाश पर्वत पर बहुत बड़ा उत्सव हुआ। जय-जयकार व स्तुति शब्दों से आकाश गूँज उठा। विष्णु आदि सब देवताओं ने शिवजी की बड़ी स्तुति की।

तेरहवां अध्याय

(सखियों के कहने पर पार्वती जी का अपने गण गणेश जी की रचना करना तथा उन्हें द्वार पर बिठाकर स्वयं भीतर स्नान करने जाना। इसी बीच शिवजी का अन्दर प्रवेश करने का प्रयत्न करना व गणेश जी का उन्हें रोकना।)

सूत जी कहते हैं—तारकासुर के संहारकर्ता कार्तिकेय जी का यह चरित्र सुनकर नारद जी बहुत प्रसन्न हुए। नारद जी बोले—हे तात! स्वामी कार्तिकेय जी का यह उज्जवल चरित्र तो मैंने सुना। अब कृपा करके कल्याणकारी गणेश जी के चरित्र का वर्णन कीजिए। इस प्रकार नारद जी के पूछने पर शिवजी का ध्यान करते हुए ब्रह्मा जी कहने लगे—हे देवर्षि! कल्प भेद से गणेश जी के कई चरित्र हैं। उनमें से एक बार शनि की दृष्टि से उनका सिर छेदन हुआ और उसके स्थान पर हाथी का सिर जुड़ा, उस श्वेत कल्प में उत्पन्न होने वाले गणेश जी की कथा कहता हूं। इसमें स्वयं शंकर जी ने ही गणेश जी का सिर छेदन किया था। सृष्टिकर्ता शंकर जी के विषय में यह सब कुछ भी सन्देह करने योग्य नहीं है जगत्पिता शंकर जी सगुण व निर्गुण दोनों ही हैं। अपनी लीला से वह जगत् की उत्पत्ति, पालन व संहार करते हैं। हे मुनिश्वर! अब आदर से उनका चरित्र सुनो। जब विवाह के पश्चात् शिवजी कैलाश पर्वत पर चले गए। तब वहां कुछ समय व्यतीत होने पर गणपति का जन्म हुआ। एक समय की बात है। जया और विजया नामक दो सखियों ने पार्वती जी से जाकर कहा—शंकर जी के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

द्वार पर जो हमारे असंख्य गण व द्वारपाल विराजमान रहते हैं उन पर हमारा अधिकार होते हुए भी कुछ नहीं है। हमारा मन उनसे नहीं मिलता है। अतएव हे भगवती! हमारा अपना भी कोई गण होना चाहिए। आप उसकी रचना कीजिए। पार्वती जी को सखियों का यह सुझाव अच्छा लगा। उन्होंने अपने गण रचने की इच्छा की। एक बार जब पार्वती जी स्नान कर रही थीं नन्दी द्वार पर बैठा था तब मना करने पर भी शिवजी हठ पूर्वक अन्दर प्रवेश कर गए थे और तब जगदम्बा को लज्जित होकर उठना पड़ा। इस समय पार्वती जी को सखियों का विचार याद आया और उन्हें एक श्रेष्ठ सेवक की आवश्यकता प्रतीत हुई। उन्हें एक ऐसा सेवक रचने की आवश्यकता प्रतीत हुई जो उनकी आज्ञा का सदैव पालन करे। तब पार्वती जी ने अपने शरीर की मैल से सर्व लक्षण सम्पन्न गण का निर्माण किया जो सर्वांग सम्पन्न सुन्दर व योद्धा था। पराक्रमी अपने उस पुत्र को पार्वती जी ने अनेक प्रकार के वस्त्रालंकारों से सुसज्जित करके कहा—तुम ही एक मात्र मेरे पुत्र हो दूसरा कोई नहीं है। यह सुनकर उस पुत्र ने कहा—हे माता! आज्ञा दें। मैं आपकी सब आज्ञाओं का पालन करूंगा। पार्वती जी ने कहा—तुम मेरे द्वार के रक्षक बनो। मेरी आज्ञा के बिना कोई कैसा ही क्यों न हो मेरे घर के भीतर न आने देना। इस प्रकार आज्ञा देकर पार्वती जी ने गणेश जी के हाथ में एक लकड़ी दी और उसका मुख चूमकर द्वार पर नियुक्त कर दिया। गणेश जी माता की आज्ञा से द्वार पर बैठ गए। तब आश्वस्त होकर पार्वती जी फिर अन्दर जाकर स्नान करने लगीं। इसी समय शिवजी द्वार पर आ गए। शिवजी को देख

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दैत्यराज तारक पर प्रहार किया तो तत्क्षण ही घायल होकर वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। और सबके देखते-देखते नष्ट हो गया। कुमार ने फिर उस पर प्रहार नहीं किया। तब उत्साह से सब देवों ने असुरों को मार भगाया। बचे हुए दैत्य कुमार की शरण में आए। दैत्यों की सेना नष्ट हो गई। दैवताओं की विजय से सब ओर आनन्द छा गया। विजयी नायक कुमार अपने गणों को साथ लेकर जगत्माता पार्वती जी के पास गए। पार्वतीजी ने स्नेह से अपने पुत्र को गोदी में बैठाकर प्यार किया। देवताओं ने उन पर पुष्प वर्षा की। गाने बजाने का अभूत पूर्व उत्सव हुआ। देवताओं ने उनकी स्तुति की। जग-दम्बाजी के साथ शिवजी अपने गणों को लेकर कैलाश पर्वत पर चले गए।

ग्यारहवां अध्याय

(कुमार कार्तिकेय जी का बाणासुर तथा प्रलम्बासुर का संहार करना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारदजी! बाणासुर नामक दैत्य से आतंकित क्रौंच नामक पर्वत ने कुमार के समीप आकर बहुत प्रार्थना व स्तुति की—हे स्वामी! बाणासुर मुझे बहुत दुःख देता है। आप मेरी उनसे रक्षा करें। तब क्रौंच की स्तुति से प्रसन्न होकर स्कन्द जी ने उसे सांत्वना दी। और शिवजी के चरणों में मन ही मन प्रणाम करके बाणासुर को नष्ट करने के लिए शक्ति छोड़ी। वह शक्ति बाणासुर को नष्ट करके कुमार के पास लौट आई। कुमार ने क्रौंच से कहा—अब तुम निर्भय होकर घर जाओ। वह दैत्य नष्ट हो गया। क्रौंच पर्वत कुमार के यह वचन सुनकर उनकी स्तुति करके घर लौट गया। घर जाकर उसने शिवजी को प्रसन्न करने के लिए उनके तीन लिंगों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की स्थापना की। प्रतिज्ञेश्वर, कपालेश्वर, कुमारेश्वर। यह तीनों ही लिंग सिद्धि दायक हैं। फिर देवगुरु बृहस्पति को आगे करके सब देवों ने कैलाश जाने की इच्छा की तो वहां प्रलम्बासुर नामक दैत्य उपद्रव करने लगा। उससे दुःखित होकर शेष जी का पुत्र कुमुद कुमार की शरण में आया। उसने शिवजी के पुत्र कार्तिकेय जी की बहुत स्तुति की। स्तुति से प्रसन्न होकर कुमार ने शक्ति से प्रलम्ब का संहार कर दिया। वह दैत्य अपने अनुचरों सहित नष्ट हो गया। शेष-पुत्र कुमुद, शिव-पुत्र स्वामी कार्तिकेय की स्तुति व प्रशंसा करके अपने घर पाताल में आ गया। हे नारद जी! सब चरित्रों में कुमार चरित्र अद्भुत है। जो मनुष्य ध्यान से इस चरित्र को सुनता और पढ़ता है उसे शिव-लोक की प्राप्ति होती है। वह इस लोक में सुख भोगकर मोक्ष को प्राप्त करता है।

बारहवां अध्याय

(कुमार कार्तिकेय जी का सब देवों के साथ मिलकर शिवजी के पास जाना व वहां पहुंचने पर शिव-पार्वतीजी का उन्हें प्यार करना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद! इस प्रकार दैत्य-नाश के बाद सब देवताओं ने महाबली कुमार को कैलाश चलने की प्रेरणा दी। उनके कहने पर कुमार दिव्य विमान पर आरूढ़ होकर अन्य देवताओं के साथ शिवजी का गुणगान करते हुए कैलाश पर्वत की ओर रवाना हुए। वहां पहुंचकर विष्णु आदि देवताओं ने शिवजी को प्रणाम करके उनकी स्तुति की। कुमार ने भी विमान से उतरकर नम्रता से शिवजी को प्रणाम किया। शिवजी ने आनन्दित होकर पुत्र को उठाकर उसका मुख चुम्बन किया। शिवजी व पार्वती जी को कुमार पर बहुत स्नेह हुआ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दैत्यराज ने उस कुमार को देखकर हंसते हुए कहा—हे देवो! क्या शत्रुओं पर प्रहार करने वाला कुमार यही है। मैं इस कुमार व सब गणों सहित देवताओं व लोकपालों को मार सकता हूं। इस प्रकार वह असुर सेनापति वक्र दृष्टि से कुमार को देखता हुआ परम शक्ति धारण करके युद्ध कर ने लगा। फिर देवताओं से कहने लगा—हे मूर्खों! तुमने इस बालक को मेरे सामने क्यों कर दिया है। क्या तुम लोगों को लज्जा नहीं आती? आती भी तो कैसे यह विष्णु तो सर्वथा छली अविवेकी व निर्लज्ज है। इसने तो इस प्रकार के न जाने कितने अन्य पाप किए हैं। यह इन्द्र भी ऐसा ही तो है। देखो न, इन्होंने किस प्रकार इस छोटे से बालक को मेरे सामने कर दिया है। यदि मैं इस छोटे से बालक को मारता हूं तो इसका पाप इन दोनों को ही लगेगा। हे बालक! तुझे यदि अपने प्राणों की आवश्यकता है तो भाग जा मैं तुझे नहीं मारूंगा। इस प्रकार इन्द्र व विष्णुजी की निन्दा करने से उसका धर्म क्षीण हो गया। तभी इन्द्र ने अपना वज्र चला कर उस पर प्रहार किया। वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। किन्तु तुरन्त ही क्रोधित होकर उठ खड़ा हुआ और शक्ति के एक ही प्रहार से उसने इन्द्र को गिरा दिया। इन्द्र के गिर जाने से देवताओं में हाहाकार मच गया। तारक ने इन्द्रजी को अपने पैरों से भी मारा। जिससे और भी उसका धर्म क्षीण हो गया। यह देख विष्णुजी ने अपने चक्र से उस पर प्रहार किया। इस चक्र के प्रहार से वह घायल होकर गिर गया। फिर शीघ्र उठकर अपनी शक्ति से विष्णुजी पर प्रहार किया वे भी तत्काल मूर्छित होकर गिर पड़े। फिर तो सब देवताओं में हाहाकार मच गया। विष्णुजी के उठने से पहले ही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वीरभद्र ने अपने प्रचण्ड त्रिशूल से उस प्रतापी दैत्य पर प्रहार कर दिया। उसके लगने से तारकासुर भूमि पर गिर पड़ा। किन्तु साथ ही उठकर उसने वीरभद्र को भी गिरा दिया। क्षण भर के लिए वीरभद्र मूर्छित हो गया। देवताओं में हाहाकार मच गया। दैत्यराज महाकाल के समान चमकने लगा।

दसवां अध्याय

(कुमार कार्तिकेय का गणों के साथ मिलकर तारकासुर से युद्ध करना व उसका वध करके दैत्य सेना को नष्ट करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! यह सब देखकर कुमार अपने गणों के साथ शिवजी का स्मरण करते हुए दैत्यराज के साथ युद्ध करने लगा। देवताओं व ऋषियों ने उनकी उच्च स्वर में स्तुति की। तारक दैत्य व कुमार में भयंकर संग्राम होने लगा। दोनों अपनी-अपनी शक्तियों से युद्ध करने लगे। मन्त्रों से परस्पर युद्ध करने वाले वे एक दूसरे के साधक हुए। दोनों ने एक दूसरे के वध की इच्छा से युद्ध किया। दोनों के अंग प्रत्यंग घायल हो गए। सब देवता व गन्धर्व बैठकर संग्राम देखने लगे। और कहने लगे कि देखें किसकी जीत होती है। कुमार ने शीघ्र ही अपनी शक्ति से तारक की छाती पर प्रहार किया। तारक ने भी कुमार पर अपनी शक्ति छोड़ी। शक्ति के प्रहार से कुमार घायल हो गए। परन्तु महर्षियों के प्रार्थना करने पर वे क्षणमात्र में ही उठकर फिर से युद्ध करने लगे। और गर्जन करते हुए उन्होंने तारक पर अपनी शक्ति छोड़ी। दोनों शक्ति के प्रयोग से एक दूसरे को घायल करने लगे। कुमार कार्तिकेय ने मन ही मन में शिवजी व पार्वती का ध्यान करते हुए दूसरी शक्ति उठा ली। और उस प्रबल शक्ति से

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तारकासुर अकेले इन्द्र से युद्ध करने लगा। अन्य भी सभी देवता व दैत्य अकेले-अकेले युद्ध करने लगे। चारों ओर युद्ध का वातावरण छाया हुआ था।

आठवां अध्याय

(इन्द्रादि लोकपालों, विष्णु जी, वीरभद्र आदि का वीरता से तारकासुर से युद्ध करना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी! तब देवताओं व दैत्यों ने पृथक्-पृथक् युद्ध करना आरम्भ कर दिया। तारकासुर ने अपनी शक्ति को इन्द्र पर चला दिया। इन्द्र उसी समय पराजित होकर अपनी सवारी से नीचे गिर पड़े। इस प्रकार वीरता से युद्ध करते हुए उसने सभी लोकपालों को पराजित कर दिया। अन्य देवता भी उससे पराजित होकर भाग गए। असुर विजयी होकर उल्लास से कोलाहल करने लगे।। तारकासुर व उसकी सेना को विजयी होते देखकर वीरभद्र क्रोधित हो उठा। अपने गणों को साथ लेकर वह दैत्यराज से युद्ध करने लगा। सभी दैत्य भी उनसे युद्ध करने लगे। त्रिशूल, ऋष्टि, खड्ग, पाश, वज्र आदि अनेक शस्त्रों से युद्ध होने लगा। वीरभद्र ने अनेक प्रकार के आयुधों से तारकासुर को घायल करके पृथ्वी पर गिरा दिया। क्षण भर के लिए मूर्छित रहकर पुनः चैतन्य होकर वीरभद्र पर अपनी शक्ति का प्रहार करने लगा। तारक व वीरभद्र में जोर शोर से युद्ध होने लगा। हे नारद जी! तब तो महाबली उस तारक ने अपनी शक्ति का प्रयोग करके वीरभद्र को भी पराजित करके भगा दिया। और विजय के उन्मादी उस तारक ने देवताओं पर बाणों से वर्षा करना आरम्भ कर दिया। देवता भयभीत होकर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भागने लगे। उन्हें पराजित होते देखकर विष्णु जी युद्ध के लिए आगे बढ़े। और आयुधों के साथ तारक पर प्रहार करने लगे। रोमहर्षक उनके महायुद्ध को सब लोग आश्चर्य से देखने लगे। विष्णु जी ने पूरे वेग से दैत्यराज पर गदा से प्रहार किया। किन्तु तारक ने त्रिशिख बाण से उसके दो टुकड़े कर दिए। तब क्रोधित होकर विष्णु जी ने शार्ंग धनुष पर बाण चढ़ाकर असुर सेनापति पर फेंका। असुर तारक ने बाणों को काटकर अपनी शक्ति से उन पर प्रहार किया। वे मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़े। इसके साथ पुनः चैतन्य होकर उन्होंने अपना सुदर्शन चक्र चला दिया। चक्र से पीड़ित व घायल होकर पृथ्वी पर गिर गया और फिर उसी समय उठकर चक्र को काटते हुए विष्णु जी से संग्राम करने लगा। विष्णु जी भी उस पर गदा से प्रहार करने लगे।

नौवां अध्याय

(ब्रह्माजी का कुमार को युद्ध में अपने द्वारा तारक को दिए गए वर के विषय में बताना। फिर कुमार को आगे करके सब देवों का युद्ध के लिए तत्पर होना। तारक का वीरता से युद्ध करते हुए पुनः इन्द्र, विष्णु, वीरभद्र आदि को पराजित करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! जब तारक ने इस प्रकार अपनी शक्ति से सबको पराजित कर दिया तब मैंने कुमारजी के पास जाकर कहा—हे तात! मैंने तारक को वर दिया है कि यह विष्णु आदि किसी देवता द्वारा नहीं मरेगा। मैंने इसे वर दिया है कि शिवजी के वीर्य से उत्पन्न पुत्र ही इसका वध कर सकता है। अतः आप इससे युद्ध कीजिए। आपके अतिरिक्त कोई भी इसे मार नहीं सकता। हे नारदजी! मेरे वचन सुनकर कुमार कार्तिकेयजी रथ से उतर कर पैदल चलने लगे तथा परम कान्तिमय उल्का के समान अपनी शक्ति को उठा लिया। तब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

छठवां अध्याय

(नारद नामक ब्राह्मण का स्वामी कार्तिकेय से अपने अज-मेध यज्ञ की रक्षा करने के लिए कहना। कार्तिकेयजी का उस अज को खोज निकालना। ब्राह्मण से उस अज को माँगना तथा ब्राह्मण के यज्ञ को पूरा करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! देवों का स्वामित्व ग्रहण कर कार्तिकेयजी उनकी रक्षा में तत्पर हो गए। एक बार एक नारद नामक ब्राह्मण उनके पास आकर हाथ जोड़ कर निवेदन करने लगा—हे स्वामी! मैं आपकी शरणागत हूँ। आप ही मेरे कष्ट को दूर करने में समर्थ हैं। मैं अज-मेध यज्ञ कर रहा था, मेरा अज न जाने कहां चला गया है। मेरा यज्ञ नष्ट हो जाएगा। किन्तु आपके जैसे समर्थ स्वामी के होते यह असंभव है। आप सारे ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं। शिवजी के पुत्र आपकी सेवा सब देव-लोग करते हैं। इस प्रकार स्तुति सुनकर कार्तिकेयजी ने अपने वीरबाहु नामक प्रधान गण को उस ब्राह्मण का यज्ञपूर्ण करने की आज्ञा दी। वह बलशाली गण स्वामी की आज्ञा पाकर समस्त त्रिलोकी में उस अज को खोजने लगा। किन्तु उसे सब स्थानों पर केवल अज के उपद्रव सुनने को मिले। अज कहीं भी दृष्टिगोचर न हुआ। कुमार का गण विष्णुलोक में गया, वहां उसने अज को उपद्रव करते पकड़ लिया और उसे लेकर कुमार के पास आ गया। स्वामी कार्तिकेय सारे संसार का भार लेकर उस अज पर सवार हो गए और ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करने लगे। अज एक मुहूर्त भर में स्वामी को ब्रह्माण्ड में घुमा कर वहीं जहां से चले थे, आकर खड़ा हो गया। स्वामी उसकी पीठ से उतरकर अपने आसन पर जा बैठे। अज वहीं खड़ा रहा। तब नारद ने भगवान् से निवेदन किया—हे देव! इस अज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को मुझे दे दीजिए। आपने मेरे यज्ञ की रक्षा की, भविष्य में भी मुझ पर इसी प्रकार कृपा दृष्टि रखिएगा। स्वामी कार्तिकेय ने कहा—हे विप्र! यह अज वध के योग्य नहीं है। आप अपने घर जाएँ, मेरे वर से आपका यज्ञ सम्पूर्ण होगा। यह सुनकर ब्राह्मण ने प्रसन्नता से अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

सातवां अध्याय

(स्वामी कार्तिकेय जी को लेकर सब देवताओं का तारकासुर से युद्ध करने के लिए जाना तथा देवों और दैत्यों का युद्ध आरम्भ होना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी! स्वामी कार्तिकेय के इस अद्भुत चरित्र से देवताओं को बल मिला, वे दुगने उत्साह से कुमार को अग्रणी बनाकर तारकासुर को मारने चले। उधर तारक भी देवों से युद्ध करने के लिए सेना लेकर पृथ्वी व सागर के संगम पर आ गया। युद्ध के नगाड़ों व वाद्यों से संसार कांप उठा। पृथ्वी को कंपा देने वाले दैत्यों व देवों में युद्ध आरम्भ हो गया। वे एक दूसरे के ऊपर प्रहार करने लगे। देवताओं के सेनापति कार्तिकेय हाथी पर सवार सबसे आगे थे उनके पीछे लोकपालों की सेना थी। कुमार हाथी को त्याग एक यान पर जा बैठे। प्रचेता उन पर एक छत्र किए हुए था जो अत्यन्त प्रकाशमान था। दोनों ओर से भयानक वार होने लगे। क्षण भर में पृथ्वी पर रुण्ड मुण्ड कट-कटकर गिरने लगे। हजारों वीर कटने गिरने लगे। रक्तपात होने लगा। गीदड़, गीदड़ी, चीलें, कौए, भूत, प्रेत आकर अनेक प्रकार से मांस नोचने लगे। महादैत्य तारक ने एक बड़ी सेना लेकर देवताओं पर आक्रमण किया। देवता उत्साह में भरकर उसे रोकने लगे। किन्तु वह किसी से न रुका। देवों व दैत्यों में भयंकर युद्ध होने लगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ताओं के दर्शन करूंगा। यह कहकर स्वामी कार्तिकेय ने कृत्तिकाओं से जाने की आज्ञा ली और शिवजी के गणों के साथ चल पड़े।

पांचवां अध्याय

(दुःखी मन से कृत्तिकाओं का कार्तिकेय को विदा करना। कैलाश पर्वत पहुंचने पर शंकरजी व सब देवों का कुमार कार्तिकेय का स्वागत करना तथा उनको सबका स्वामित्व प्रदान करके राज्याभिषेक करना व यथा शक्ति सामर्थ्य प्रदान करना।)

ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! उसी समय एक रथ दृष्टि-गोचर हुआ। यह रथ जिसे पार्वतीजी ने भेजा था बहुत ही सुन्दर व वेगवान था। रथ को चारों ओर से पार्षदों ने घेरा हुआ था। वह रथ कार्तिकेयजी के पास आकर स्थिर हो गया। भारी मन से कार्तिकेय जी उस रथ पर सवार हुए तभी वह छहों कृत्तिकाएं विलाप करती हुई वहां आ पहुंचीं तथा कहने लगीं—हे पुत्र! हमने तुम्हें बहुत प्रेम किया है अब तुम हमें छोड़कर जा रहे हो। इस प्रकार दुःख से कार्तिकेयजी को गले से लगा कर मूर्छित हो गईं। कुमार ने यह देखकर उन्हें अध्यात्म ज्ञान दिया और शिव-गणों के साथ चल पड़े। विमान पर सवार हो कृत्तिकाओं तथा नन्दीश्वर के साथ कैलाश पहुंचे। उनके आने का समाचार पाकर शिवजी अन्य देवों व गणों सहित उस गंगा के पुत्र को देखने आए। शंखनाद व अन्य वाद्य बजने लगे। सर्वत्र मंगल उत्सव हो रहे थे। वीरभद्र आदि गण शिवजी की स्तुति कर रहे थे। चारों ओर जय जयकार नमः की ध्वनि गूंज रही थी। सभी सरकण्डों में उत्पन्न हुए शिवजी के पुत्र को देखने चले। देवताओं व पार्वती ने उत्सव मनाए। शिवजी व पार्वतीजी की बहुत शोभा हुई। सब देवता आदि उनकी स्तुति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करने लगे। शिवजी कुमार को गोद में लेकर प्रेम पूर्वक खिलाने लगे। शंकरजी ने कार्तिकेय जी को एक रत्नजड़ित सिंहासन पर बैठाकर सभी तीर्थों के जलों को वेदमन्त्रों से पवित्र करके सौ रत्नजड़ित कलशों से स्नान कराया। विष्णुजी ने रत्न-सार-निर्मित किरीट, मुकुट, बाजूबन्द वैजयन्ती माला और चक्र प्रदान किया। शिवजी ने भी शूल, पिनाक, वज्र, पाशुपतास्त्र, बाण, संहारास्त्र और परम विद्या दी। मैंने उसे यज्ञोपवीत वेद-माता गायत्री, कमण्डलु, ब्रह्मास्त्र व शत्रुमर्दन विद्या प्रदान की। इन्द्र ने अपना ऐरावत हाथी, वज्र। वरुण ने श्वेतछत्र और रत्नमाला दी। सूर्य ने मन के अनुसार गमन करने वाला वेग-वान रथ और कवच। यमराज ने दण्ड व समुद्र ने अमृत-कलश दिया। इसी प्रकार सब देवताओं ने उसे अनेक प्रकार की वस्तुएं प्रदान कीं। पार्वतीजी ने उन्हें चिरंजीव रहने का आशीर्वाद। लक्ष्मीजी ने दिव्य सम्पदा और एक मनोहर हार दिया। सावित्री ने सभी सिद्धियां व अन्य सभी उपस्थित देवियों ने बालक की पालना के लिए यथाशक्ति वस्तुएं प्रदान कीं। तब मैंने ब्रह्मा ने कहा—यह सब उस तारक दैत्य को मारने के लिए हो रहा है। अब आप लोग शीघ्र कुमार को आज्ञा दें कि इस मांगलिक कार्य के लिए वह हमारे साथ चलें। प्रभु ने आज्ञा दे दी। आज्ञा प्राप्त कर कुमार को आगे करके सब देवता चल पड़े। विष्णुजी के कहने पर त्वष्टा ने कैलाश पर्वत के निकट एक मनोहर नगर व उसमें कुमार के निवास के लिए राजमहल बनवा दिया, जिसमें एक सिंहासन भी रखवा दिया गया। सभी देवताओं ने कुमार को अभिवादन किया और कुमार ने आसन ग्रहण करके उनका स्वामित्व स्वीकार किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वज्र से प्रहार किया। जिससे शाखा महाबली उत्पन्न हुआ। इन्द्र ने फिर उसके वाम-पार्श्व में प्रहार किया जिससे विशाखा नामक दूसरा महाबली पुरुष उत्पन्न हो गया। तब इन्द्र ने उसके हृदय पर प्रहार किया जिससे नैगम महाबली दूसरा मनुष्य उत्पन्न हो गया। ये चारों अत्यन्त वीर स्कन्ध हुए। यह चारों इन्द्र को मारने दौड़े। इन्द्र भयभीत होकर उनकी शरण में आए। वह बालक स्वर्ग में पहुँचा। वहां एक सरोवर में स्नान करती हुई कृत्तिका नाम की छः स्त्रियां उसे पकड़ने दौड़ीं। उनमें भारी विवाद हुआ कुमार ने छः मुखकर एक-एक मुख से सबका स्तनपान किया। प्रसन्न होकर वे कुमार को अपने लोक में ले गईं। वहां बड़े लाड़ से उसका लालन-पालन करने लगीं।

चौथा अध्याय

(भगवान् शिव का उस बालक के विषय में देवताओं आदि से पूछताछ करना तथा जानकर अपने गणों को उसे लेने के लिए भेजना। स्वामी कार्तिकेय का कृत्तिकाओं से पूछकर शिवजी के गणों के साथ जाना।)

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद जी! बहुत काल बीत जाने पर एक बार पार्वती जी ने उस बालक के विषय में शिवजी से पूछा—हे देवाधिदेव! पूर्वकाल के पुण्यों के फलस्वरूप आप मुझे प्राप्त हुए हैं कृपा करके कहें कि आपका वह वीर्य कहां गया जिसे आपने पृथ्वी पर गिरा दिया था जिसे देवताओं ने छिपा लिया था। वह वीर्य क्या नष्ट हो गया अथवा उससे कोई बालक प्रकट हुआ? तब पार्वती जी के वचन सुनकर जगदीश्वर ने देवताओं और मुनियों को बुलाकर पूछा—हे देवो! मेरा वह अमोघ वीर्य कहां है? शीघ्र बताओ नहीं तो मैं दण्ड दे दूंगा। महादेव के यह वचन सुनकर सब लोग भयभीत होकर एक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

एक करके अपनी जानकारी की बात कहने लगे। तब जैसे-जैसे वह वीर्य जहां-जहां गया उसका तथा कृत्तिकाओं द्वारा पाले जाने का पता सुनकर शिवजी बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने ब्राह्मणों को दक्षिणा दी। पार्वती जी पुत्र का समाचार पाकर प्रसन्न हुईं। शंकर जी ने अपने गणों को आज्ञा दी कि कृत्तिकाओं के पास जाकर उनसे मेरा पुत्र ले आओ। शिवजी के एक से एक बली गण रुद्र, भूत आदि ने स्वर्ग में उड़ान भरकर कृत्तिकाओं को घेर लिया। भयभीत कृत्तिकाओं ने स्वामी कार्तिकेय से कहा—हे पुत्र! हमारे घर को असंख्य सेनाओं ने घेर लिया है। हमें बहुत भय लग रहा है। प्रकाशमान कार्तिकेय ने उत्तर दिया—हे देवियो! मेरी उपस्थिति में आपको भय करने की आवश्यकता नहीं है। बालक होकर भी मैं इन सबका मुकाबला कर सकता हूं मैं दुर्निवार हूं। उसी समय शिवजी के सेनापति नन्दीश्वर ने उनके पास जाकर निवेदन किया—हे भाई व देवियो! मुझे महादेव शिवजी ने यहां भेजा है। इस समय ब्रह्मा विष्णु आदि सब देवता कैलाश में विद्यमान हैं। देवाधिदेव शिव जी ने मुझे तुम्हें खोजने के लिए यहां भेजा हैं। अब तुम मेरे साथ पृथ्वी पर चलो। वहां देवताओं सहित शिवजी तुम्हारा अभिषेक करेंगे। तारकासुर को मारने के लिए तुम्हें आयुध प्रदान करेंगे। नन्दीश्वर का कथन सुनकर कार्तिकेय जी ने कहा—यह कृत्तिका ज्ञान-योगिनी प्रकृति की कला हैं। इनके दूध से ही मैं पला हूं। मैं इनका पोष्य पुत्र हूं। इनका उपकार मैं भूल नहीं सकता। शैलकन्या से मेरा जन्म नहीं हुआ है। वह भी इन कृत्तिकाओं के समान मेरी धर्म माता हैं। यदि शिवजी ने मुझे पुत्र मानकर बुलाया है तो मैं तुम्हारे साथ चलकर सब देव-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शिवजी ने गणों से कहा—वह अकेला है और तुम असंख्य और फिर पति के सामने पत्नी का हठ क्या है। यदि पार्वती हठ करती है तो इसका फल पाएगी। अतः तुम लोग युद्ध करो। जो होगा देखा जाएगा। इस प्रकार कहकर शिवजी मौन हो गए।

पन्द्रहवां अध्याय

(शिवजी की आज्ञा से शिव गणों का गणेश जी से युद्ध करना।)

ब्रह्माजी बोले—शिवजी के आज्ञा देने पर सब गण निडर होकर मन्दिर के द्वार पर आए। गणेश जी भी सावधान ही खड़े थे। गणों को देखकर गणेश जी ने कहा—मैं अकेला ही पार्वती जी की आज्ञा का पालन करूँगा। आज तुम सब शिवा की शक्ति देखोगे। इस प्रकार गणेशजी के देखते-देखते गण उन पर अस्त्र लेकर टूट पड़े। गणेशजी भी आयुधों से उनका मुकाबला करने लगे। शिवजी का कोई भी गण उनका मुकाबला न कर सका। गणेशजी अकेले ही उन सैकड़ों को परास्त करने लगे। पराजित होकर शिवजी के गण भागने लगे। गणों को भगाकर गणेशजी फिर द्वार पर डटकर खड़े हो गए। तब नारदजी तुम्हारी प्रेरणा से सब देवता शिवजी के पास गए और हाल पूछने लगे। शिवजी ने उत्तर दिया—हे देवो! पार्वती का गण मेरे मन्दिर के द्वार पर लकड़ी हाथ में लिए खड़ा हुआ है। जो भी अन्दर जाना चाहता है उसे रोक लेता है। आप ब्रह्मादि यदि चाहें तो इस क्लेश को दूर कर सकते हैं। तब शिवजी की माया से मोहित मैं ब्रह्मा कुछ ऋषियों को साथ लेकर उस बालक के पास पहुंचा। मुझे देखते ही उस बालक ने आगे बढ़कर मेरी दाढ़ी मूँछ नोच लीं। मैंने भयभीत होकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कहा—हे देव ! क्षमा करें। मैं युद्ध करने के लिए नहीं आया हूँ। अपराध क्षमा करें। मैं ब्रह्मा हूँ। और शान्ति स्थापित करने के लिए आया हूँ। अभी मैं गणेशजी को अपना परिचय ही दे रहा था कि उन्होंने मुझे मारने के लिए परिघ उठा लिया। मैं वहां से भाग आया। मेरे साथी ऋषियों को उन्होंने परिघ से मारा। फिर तो भयभीत मैंने जाकर शिवजी से सब हाल कह सुनाया। उस बालक की लीला सुनकर शंकरजी क्रोधित हो गए। उन्होंने इन्द्रादि देवताओं को उसे पराजित करने की आज्ञा दी। किन्तु कार्तिकेय सहित सभी महाबली देवताओं का प्रयास व्यर्थ रहा। उस बालक ने सबको परास्त कर दिया। किन्तु कार्तिकेयजी वहीं डटे रहे। शेष सभी देवों ने भागकर शिवजी से सब हाल कह सुनाया। विष्णुजी भी अपनी सेना सहित उस बालक को पराजित करने चले। मार्ग में नारद तुमने शिवजी से कहा—हें देव ! जैसे भी हो शिव गणों की व देवों की मर्यादा रखनी होगी। इस प्रकार कह कर तुम वहां से अन्तर्ध्यान हो गए।

सोलहवां अध्याय

(बालक के पराक्रम को देखकर स्वयं शिवजी का उससे युद्ध करना व गणेश जी का सिर काटना।)

ब्रह्मा जी आगे का वृत्तान्त सुनाकर कहने लगे—हे नारद ! तुम्हारे वचन सुनकर शिवजी स्वयं उस बालक से युद्ध करने के लिए तत्पर हो गए। एक से एक पराक्रमी देवता व लोकपाल बालक से संयुक्त युद्ध करने लगे। भयानक अस्त्रों का प्रयोग हुआ। शिवजी भी अपनी सेना सहित उस बालक गणेश जी से चिरकाल तक युद्ध करते रहे। तब बालक ने विकराल रूप धारण कर लिया। शिवजी आश्चर्य चकित हो गए। विष्णु जी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ने सोचा इसको मोहित करके ही परास्त किया जा सकता है क्योंकि तमोगुण प्रधान यह बालक अजेय है। शिवजी की माया से विष्णु जी मोहित हो गए। गणेश जी ने उन पर परिघ से वार किया। शिवजी क्रोध में भरकर उस बालक को त्रिशूल से मारने को दौड़े। तब शिवजी को देख गणेश जी ने मन ही मन अपनी माया का ध्यान करके अपनी शक्ति से उन पर वार किया। इस समय गणेश जी की शक्ति महेश्वर से बढ़-चढ़कर थी। शक्ति के प्रहार से महादेव जी का धनुष हाथ से गिर पड़ा। तब उन्होंने पिनाक उठा लिया। गणेश जी ने परिघ के वार से पिनाक के टुकड़े कर दिए। फिर शूल धारण कर गणेश जी ने शिवजी के पांचों हाथों को व्यर्थ कर दिया। शिवजी ने सोचा आश्चर्य है! जब मेरी यह दशा है तो मेरे गणों का तो कहना ही क्या। फिर शिवा द्वारा दिए गए शक्ति बल से गणेश जी ने परिघ उठाकर शिवजी व अन्य सब देवों को ताड़ित कर दिया। परिघ से घायल सब देवता भयभीत होकर दूर भाग गए। तब क्रोधित शिवजी ने त्रिशूल उठाकर उस बालक का सिर काट दिया। तब कहीं जाकर देवों व गणों की सेना निश्चिन्त हुई। हे नारद! तुमने उसी समय जाकर यह सब वृत्तान्त शिवा को सुना दिया और कहा—हे देवि! तुम अपना मान न त्यागना। इस प्रकार कहकर हे कलह प्रिय नारद जी! तुम अन्तर्ध्यान हो गए।

सत्रहवां अध्याय

(गणपति के प्राणान्त पर पार्वती का क्रोध करना तथा शिव द्वारा गणेश को फिर जीवनदान देना।)

नारदजी बोले—हे जगत् पिता! तब पूर्ण कथा को सुनकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

महादेवी ने क्या किया ? कृपा करके मुझे वह सम्पूर्ण कहानी सुनाइये। ब्रह्माजी ने कहा—हे मुनिश्रेष्ठ ! गणेश जी की मृत्यु पर शिवजी के गण मृदंग आदि बजाकर महोत्सव करने लगे। इस पर पार्वतीजी को अत्यधिक क्रोध आया। वह कहती, हा मैं अब क्या करूं, कहां जाऊं। देवताओं और गणों ने मेरे पुत्र का संहार कर दिया। अब मैं प्रलय की रचना कर उन सबका भक्षण कर डालूँगी। दुःखी होकर पार्वती ने सौ हजार शक्ति की रचना कर डाली। तब वे निर्मित शक्तियां शिवा को प्रणाम कर कहने लगीं। हे मां हमारे लिए क्या आज्ञा है। जगदम्बा ने कहा तुम लोग देव सेना में जाकर भयंकर प्रलय मचा दो। देवता, राक्षस, ऋषि मुनि आदि जो मिलें उनका तत्काल भक्षण कर डालो। पार्वती की आज्ञा को शिरोधार्य कर सभी शक्तियां देव आदि का भक्षण करने लगीं। वे देवताओं को अपने क्रोध-युक्त हाथों से पकड़-पकड़ कर मुख में रखने लगीं। उनके इस कार्य को देखकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश सभी देवताओं को अपने जीवन की आशा भी न रही और वे सोचने लगे कि क्या देवी इसी क्षण प्रलय कर डालेगी। वर्तमान स्थिति को और अधिक शोचनीय होता देख सबने एक स्वर से विचार किया कि यदि गौरी प्रसन्न हो जाए तो सभी कार्य बन जायेंगे। शक्तियों के आतंक से देवता भययुक्त तथा निष्प्राण हो रहे थे। क्रोधयुक्त शिवा के मन्दिर में जाने का साहस किसी का भी नहीं हो रहा था। सभी देवता भयभीत होकर दूर ही स्थित थे तथा भय और करुणा की दृष्टि से जगदम्बा को निहार रहे थे। तभी दिव्य दर्शन नारदजी वहां आये तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश को प्रणाम कर शान्ति की स्थापना हेतु विचार करने लगे। सब देवताओं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ने नारद को अग्रणी बना कर देवी के समक्ष चलने का प्रस्ताव रखा। तब नारद सहित सभी देवताओं ने शिवा के पास पहुंच देवी की स्तुति करनी आरम्भ की तथा अनेक स्तोत्रों से उसको प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। उसे सुन वह देवी कुछ न बोली पर क्रोध भरी दृष्टि से उन्हें निहारती रही। तब ऋषियों ने कहा कि हे देवी क्षमा करो! क्षमा करो! अभी क्षण में ही संहार हुआ जाता है। हे गौरा तुम्हारा स्वामी भी यहां उपस्थित है। कम से कम उनको तो देखो। समस्त ही हम ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा आपकी समस्त प्रजा यहां हाथ जोड़ कर खड़ी है। हे मां अब इनका अपराध क्षमा करें। इस प्रकार सभी देवता दीन तथा हीन बने हाथ जोड़ अम्बिका के सामने खड़े हो गए। तभी भगवती के मन में करुणा उत्पन्न हुई और दया दृष्टि डालकर देवताओं से बोली कि अगर मेरा पुत्र जीवित हो उठे और सभी देवताओं के मध्य उसे पूज्य माना जाए तो यह संहार रुक जाएगा अन्यथा शान्ति असम्भव है। भगवती के इस उवाच पर सभी देवताओं ने शिवजी से प्रार्थना की। शिवजी ने कहा ठीक है हम सब लोगों को वही करना चाहिए जो सभी लोगों के लिए मंगलमय हो। तुम सब लोग उत्तर दिशा की ओर जाओ और जो पहले मिले उसका सिर काटकर गणेश के शरीर से जोड़ दो तो वे जीवित हो उठेंगे। यह सुनकर सभी गण तथा देवता उत्तर दिशा की ओर चल पड़े और उन्हें प्रथम एक दांत वाला हाथी मिला। उन्होंने उसका सिर काटकर गणेश जी के शरीर के साथ जोड़ तथा अच्छी तरह से धोकर उनकी पूजा की एवं विष्णु जी से कहा कि अब जैसा उचित समझें वही कृत्य किया जाए। विष्णु ने वेद मंत्रों से अभिमंत्रित कर गणेश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जी पर जल छिड़का। जल के ऊपर पड़ते ही गणेश जी जीवित हो उठे। उस गजमुख, लाल वर्ण तथा आभायुक्त बालक की प्रसन्न मुख एवं सुन्दर आकृति बड़ी ही शोभायमान तथा देदीप्यमान थी। शिवा पुत्र को जीवित देखकर सभी का क्लेश दूर हो गया। सभी ने प्रसन्न होकर शिवा को उसके पुत्र के दर्शन कराए। पार्वती अपने पुत्र को जीवित देखकर अति प्रसन्न हो गई।

अठारहवां अध्याय

(गणपति का सभी देवताओं का अधिपति बनना तथा एक दंत का रूप धारण करना।)

नारद जी बोले—हे प्रजेश्वर! शिवा पुत्र के जीवित होने पर क्या हुआ, कृपाकर वह वृत्तान्त भी सुनाइए। ब्रह्मा जी ने कहा—हे मुनिश्रेष्ठ! जब देवी ने देखा कि उसका पुत्र जीवित हो गया है तो अति प्रसन्न हुई और दोनों करों से पकड़ उसका आलिंगन करने लगी। उसे अनेकों प्रकार के भूषण तथा वस्त्र पहनाए गये। सभी ने उसकी अर्चना की तथा देवी ने बालक को यह वरदान दिया कि हे पुत्र! तुम्हारे मस्तक पर जो यह सिंदूरी रंग की चमक है इसी कारण मानव पुष्प तथा चन्दनादि से तुम्हारी पूजा करेंगे। तुम्हें सभी प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होंगी तथा तुम्हारी पूजा से मानव मात्र के सभी विघ्न दूर हो जायेंगे। शिवजी ने बालक के सिर पर हाथ फेरकर कहा—यह मेरा दूसरा पुत्र है। गणेश जी ने उठकर शिव को प्रणाम किया तथा सभी देवों के आगे नतमस्तक हो अपने अपराध की क्षमा मांगी। त्रिदेवों ने उसे वर देकर सबका पूज्य तथा गणनाथ कहा। तब से गणेश जी सभी प्रकार के विघ्नों के हर्त्ता तथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सब प्रकार के फलदायक कहलाये। त्रिदेवों ने यह भी कहा कि पहले मानव मात्र इनकी पूजा करेंगे तथा फिर हमारी। बाद में शिवजी ने सभी मांगलिक वस्तुएं मंगवाकर गणेश जी की अर्चना की, तत्पश्चात विष्णु जी तथा फिर मैंने। पार्वती के पश्चात सभी देवताओं ने बड़े आदर से गणेश जी की पूजा की। फिर सभी देवताओं ने समवेत स्वर से गणेश जी को सर्वाध्यक्ष कहकर अनेक वरों से युक्त आशीर्वाद दिए। हे नारद! पार्वती की उस समय की प्रसन्नता का वर्णन मेरे चारों मुख भी नहीं कर सकते। देवों ने वाद्य बजाए, अप्सराओं ने नृत्य किया तथा आकाश से पुष्प वर्षा हुई। सबका दुःख दूर हो गया। शिव तथा पार्वती को अत्याधिक प्रसन्नता हुई। पार्वती कोपहीन हो गई तथा शिवजी फिर इसके समीप जा बैठे। जो लोग इस मंगलकारी आख्यान को श्रवण करेंगे वे सब मंगलों तथा कल्याणों से परिपूर्ण होंगे। गणेश जी के प्रसाद तथा तेज से उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

उन्नीसवां अध्याय

(माता पिता द्वारा गणेश विवाह का विचार करना तथा जगत् जननी द्वारा उनकी इच्छा व्यक्त करने पर हर्षित होना।)

नारद जी बोले—हे जगत् पिता ब्रह्मा आपने हमें गणेशजी का जन्म चरित्र सुनाया इसके पश्चात् क्या हुआ? शिवा शिव के इस पराक्रम पूर्ण यश की वह कथा हमें सुनाइए जो परमानन्द देने वाली है। ब्रह्मा जी बोले-हे मुनिवर ध्यान देकर सुनो मैं सुनाता हूं। अब गणेश माता पिता के पालन से दिन प्रतिदिन बढ़ने तथा खेल कूद करने लगे। कुमार भी साथ ही थे, दोनों पुत्र भक्ति पूर्वक माता पिता की सेवा करते हुए परस्पर प्रेम पूर्वक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रह रहे थे तथा वृद्धि को प्राप्त हो रहे थे। एक दिन जब शिव पार्वती एकांत में बैठे विचार कर रहे थे कि अब दोनों पुत्रों का विवाह कर दिया जाय। माता पिता की इच्छा को जान दोनों कुमारों ने एक साथ ही विवाह की इच्छा प्रकट की तथा कहा कि पहले मैं विवाह करूंगा तथा पहले मैं विवाह करूंगा। इस प्रकार दोनों परस्पर विवाद करने लगे। यह सुनकर शिव तथा पार्वती अत्यन्त आश्चर्यमय हुए। उन्होंने सोचा कि किस प्रकार दोनों का विवाह किया जाय। इसको सोचकर दोनों ने एक अद्भुत युक्ति निकाली। एक दिन शिवा शिव ने दोनों को बुलाकर कहा कि देखो तुम दोनों पुत्र हमारे लिए एक समान हो तथा प्रिय हो। किसी पर भी हमारा प्रेम कम या अधिक नहीं है। इसीलिए हमने यह प्रतिज्ञा की है कि जो पहले समस्त पृथ्वी की परिक्रमा करके हमारे पास आयेगा उसका विवाह पहले किया जायेगा। तब माता पिता का वचन सुनकर महाबली कार्तिकेय तुरन्त पृथ्वी परिक्रमा के लिए चल पड़े परन्तु बुद्धिमान गणेश वहीं खड़े रहे तथा बार-बार विचार करने लगे कि क्या करूं, कहां जाऊं। मुझसे तो एक कोस भी नहीं चला जाता फिर पृथ्वी की प्रदक्षिणा करना तो असम्भव है। यह सोचकर गणेश जी अपने घर जा स्नान-ध्यान कर माता पिता से बोले कि आप दोनों सिंहासन पर एक साथ बैठिये, मैं आपकी अर्चना करूंगा। पार्वती तथा शंकर गणेश की पूजा ग्रहण करने बैठे। गणेश जी ने उन दोनों की पूजा करके सात परिक्रमा कीं तथा कहा कि अब आप मेरा विवाह कर दें। शिवा शिव ने कहा कि क्या तुम पृथ्वी की परिक्रमा करके आ गये। कुमार तो गये हैं जाओ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तुम भी शीघ्र ही प्रदक्षिणा कर डालो। गणेश माता पिता के ये वचन सुनकर बोले—हे तात! आप दोनों कर्म रूप स्वयं बड़े बुद्धिमान हैं। अतः मेरी बात सुनिए, जब मैंने आपकी सात बार परिक्रमा कर ली तब फिर आप यह कैसे कह सकते हैं कि पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके आओ। यदि यह वेदशास्त्र संमत हो तो आप भी मानिए अन्यथा नहीं। वेद शास्त्र जो कहते हैं वह आपको भी करना चाहिए नहीं तो शास्त्र असंगत हो जाएगा। ऐसा कह बुद्धि श्रेष्ठ तथा महा ज्ञानी पार्वती पुत्र गणेश चुप हो गये। तब जगत वंद्य पार्वती शंकर गणेश जी के वचन सुन कर बड़े ही आश्चर्य चकित हुए तथा पुत्र की विलक्षण बुद्धि की प्रशंसा करते हुए बोले—कि हे तात! तुम्हारा कथन सत्य है। तुमने जो कुछ किया उसे अन्य नहीं कर सकता। तुम्हारी बात हमें स्वीकार्य है। इस प्रकार शिव पार्वती ने गणेश को विवाह का आश्वासन दिया।

बीसवां अध्याय

(सिद्धि तथा बुद्धि से गणेशजी का विवाह होना तथा क्षेम और लाभ दो पुत्रों की प्राप्ति।)

ब्रह्माजी बोले—इसी समय विश्वरूप प्रजापति ने शिव के पास आकर अपनी सिद्धि और बुद्धि नामक दो कन्याओं के विवाह की बातचीत प्रारम्भ की। गौरी शंकर ने उनके विवाह के प्रस्ताव को मान लिया तथा गणेशजी का विवाह उन दोनों कन्याओं से सम्पन्न कर दिया। सभी देवता इस विवाह में सम्मिलित हुए तथा विश्वकर्मा ने इस विवाह को पूर्ण किया। कुछ समय पश्चात् गणेशजी की दोनों स्त्रियों—सिद्धि से क्षेम तथा बुद्धि से लाभ नामक पुत्र उत्पन्न हुए। इस प्रकार जब गणेशजी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ने अचिन्त्य सुख भोग लिया तब पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके कार्तिकेय भी आ गये। परन्तु जब वह घर पहुँचने ही वाले थे तो मार्ग में उनकी भेंट नारद जी से हो गई। उन्होंने उनसे यह कह दिया कि अब घर क्या करने जाते हो, तुम्हारे माता-पिता नें तुम्हारे साथ जैसा व्यवहार किया है वैसा इस लोक में कोई नहीं करता। तुमको तो धरती की परिक्रमा के लिये भेज दिया और इधर गणेशजी का विवाह कर दिया। प्रजापति की दो कन्याएं उनकी दो स्त्री हैं तथा उनके दो पुत्र भी प्राप्त हो चुके हैं। इस प्रकार माता-पिता ने तुमको छला है। सत्य ही यदि माता ही विष दे दे या बेच दे अथवा राजा ही सर्वस्व हरण करले तो किसके पास प्रतिवेदन किया जा सकता है। हे नारद तुम्हारे द्वारा ऐसी बात सुनकर कुमार के क्रोध का पारावार न रहा तथा वह घर तो गये परन्तु माता-पिता को प्रणाम कर तुरन्त क्रौंच पर्वत पर तपस्या करने चले गये। जब शिव-पार्वती ने बहुत पूछा तो कह दिया कि आपने मेरे साथ कपट व्यवहार किया है। कुमार के विरह में माता गिरिजा को अत्यधिक दुःख हुआ तथा वे दीनता पूर्वक शिवजी से अनुनय विनय करके उन्हें साथ ले क्रौंच पर्वत पर पहुँचीं। तब शंकर पार्वती को वहां आते देखकर कुमार विरक्त हो कहीं अन्यत्र चले गये। शंकर पार्वती ने वहां जाकर कुमार से भेंट की। तब से उन दोनों स्थानों में कार्तिकेय कुमार सहित शंकर पर्वती का माहात्म्य अब तक माननीय है तथा इस कथा को पढ़ने तथा सुनने से सभी मनो कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

॥ इति श्री रुद्र संहिता कुमार खण्ड ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

रुद्र संहिता युद्ध खण्ड

पहला अध्याय

(तारुक, विद्युन्मालि और त्रिपुरारी नामक दैत्यों का जन्म तथा शिव द्वारा उनका हनन।)

नारद बोले—हे प्रभो! अब हमें शिवजी का वह चरित्र सुनाने की कृपा करें जिसमें उन्होंने दुष्ट दानवों का वध किया है। तब ब्रह्माजी बोले—एक समय व्यासजी ने यही बात सनत्कुमार जी से पूछी थी वही कथा मैं तुमसे कहता हूँ।

सनत्कुमार जी बोले—हे महा विद्वान व्यास जी! अब तुम भगवान् शंकर जी के उस शुभ चरित्र को श्रवण करो जिस में उन्होंने एक ही बाण से असुरों को भस्म कर दिया था। शिव पुत्र स्कन्द द्वारा तारकासुर की मृत्यु पर उनके तीन दैत्य पुत्र पृथ्वी पर तप करने लगे। उनमें तारका बड़ा, विद्युन्माली मध्यम तथा कमलाक्ष सबसे छोटा था। ये तीनों समान बली, दृढ़ चित्त महावीर और देव द्रोही थे। इन्होंने ब्रह्मा जी को प्रसन्न करने के लिए सुमेरु पर्वत की गुफा में जाकर बड़ा ही कठोर तप किया। तपस्या करते-करते उन्होंने अपनी देह को सुखा डाला। वे शत वर्ष तक एक पांव पर खड़े होकर तप करते रहे तथा हजारों वर्षों तक विविध प्रकार से कठिन तपस्या की। तब ब्रह्मा जी प्रसन्न होना उन्हें वरदान देने के लिए पधारे और कहा हे महा दैत्यो! मैं तुम पर अत्याधिक प्रसन्न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हूं जो वर चाहो मांग लो। असुरों ने ब्रह्मा जी को प्रणाम किया और विचार कर कहा कि देवश्रेष्ठ! अगर आप हम पर कृपालु हैं तो हमें सब प्राणियों से अवध्य कीजिए। हमारे सब विघ्नों को दूर करें तथा हम सब अजर अमर रहें और अगर इच्छा हो तो त्रिलोकी का भी वध कर सकें। तब उन तपस्वियों के वचनों को सुनकर ब्रह्मा अपने प्रभु गिरीश का स्मरण का बोले—हे दैत्यो! अमरत्व त्याग और अन्य कोई भी वस्तु मांग लो। कोई भी प्राणी अजर अमर नहीं होता। कालों के भी काल हरि तथा भगवान् शंकर के सिवा विश्व में अन्य कुछ भी अमर नहीं। अतएव तुम सत् गुणों के आश्रय में आकर मृत्यु में कोई शर्त लगाकर वरदान मांग लो, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। तब दैत्यों ने पुनः एक मुहूर्त तक ध्यानावस्थित हो, विचार कर कहा कि हमारे पास कोई ऐसा दृढ़ दुर्ग नहीं है जिसमें न शत्रु प्रवेश कर सके आप हमें ऐसा सुरक्षित तीन पुरों करा दीजिए। उसमें धन सम्पत्ति के सुखदायक साधनों के अतिरिक्त सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र हों जो अजेय हों तथा कोई भी देव दानव उसे तोड़ न सके। यह कह कर तारकाक्ष ने अपने लिए स्वर्ण का, कमलाक्ष ने चांदी का तथा विद्युन्माली ने लोहे के पुर की इच्छा व्यक्त की। ब्रह्मा जी ने कहा तथास्तु ऐसा ही होगा, परन्तु शिवजी के हाथों तुम सब मारे जाओगे तथा अन्य तुम्हारा कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगा। तत्पश्चात् ब्रह्मा जी ने मय को बुलाकर उन तीनों के लिए तीन पुरों का निर्माण करने की आज्ञा दी। मय ने परिश्रम से उन तीन पुरों का निर्माण किया। एक आकाश में, एक स्वर्ग में और एक पृथ्वी में स्थित था। मय वह तीनों पुर उन असुरों को देकर स्वयं भी उनकी इच्छा-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नुसार उनके पास निवास करने लगा। इस प्रकार तारक के वे तीनों पुत्र ब्रह्माजी के वर के प्रभाव से त्रैलोक्य को नष्ट कर अपने पुरों में आराम से रहकर समस्त प्रकार के आनन्द भोगने लगे।

दूसरा अध्याय

(दैत्यों से युद्ध करने के लिए भगवान् शिव को देवों द्वारा आवदान तथा निम्न प्रकार से उनकी स्तुति।)

व्यासजी बोले—हे वक्ताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजी के पुत्र आप मुझे यह बताइए फिर देवता कैसे सुखी हुए। तब शिव चरणों का ध्यानकर सनत्कुमार जी ने कहा तब त्रिपुरोंके तेजसे दग्ध हो इन्द्रादि देवता दुखित हो ब्रह्माजी के पास गये तथाअपना कष्ट कह कर त्रिपुरों के वध की प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने उन्हें आश्वासन देकर शिवजी के पास भेज दिया। तब दुःखित देवताओं ने शंकर जी के पास पहुंच कर उनकी स्तुति की तथा कहा—हे हिरण्य-गर्भ! हे सर्वव्यापक! आपको शत-शत प्रणाम है। हे अमित तेजधारी आपको नमस्कार है। सनत्कुमार जी कहते हैं। तब अनेक प्रकार से महादेव जी की इन्द्रादि देवताओं ने स्तुति की तथा कहा कि हे त्रिपुरारि! तारक के पुत्रों ने हम सब इन्द्रादि देवताओं को पराजित कर दिया है, त्रिलोक को अपने वश में करके हम सब को नष्ट कर तथा विश्व को उजाड़ कर रख दिया है। हे शंकर! जब तक त्रिपुरों का नाश नहीं होता, तब तक आप ही किसी नीति का विधान कीजिए। इन्द्रादि देवताओं के इन वचनों को सुन उत्तरमें शिवजी ने कहा—

तीसरा अध्याय

(त्रिपुर के शिव भक्त होने के कारण उनके साथ शिव का युद्ध में संकोच तथा देवताओं का विष्णु शरण में जाना।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शिवजी बोले—हे देवो ! मैं तुम्हारे कष्टों को समझ रहा हूं परन्तु मेरा अभी वश नहीं चल रहा क्योंकि त्रिपुरों के स्वामी अभी तक पुण्यात्मा हैं और इसीलिए अवध्य हैं। तुम सभी धर्म-ज्ञाता हो अतः धर्म से विचार करो। मेरी राय में तुम विष्णुजी के पास जाओ तथा जैसा वे कहें वैसा ही करो। यह सुनकर इन्द्रादि देवों ने ब्रह्माजी को अग्रणी बनाया तथा विष्णु जी के पास पहुंचे। उन्होंने शीघ्र ही विष्णु को अपने सब कष्टों का निवेदन किया। भगवान ने सब बातें सुनकर कहा कि यह सच है जहां पर सनातन धर्म हो, वहां दुःख नहीं होना चाहिए। देवताओं ने कहा कि तब हम क्या करें हमारे कष्ट का निवारण किस प्रकार होगा और हम कैसे सुखी रहेंगे क्योंकि त्रिपुरों के रहते तो धर्म नहीं रह सकता। आप यथाशीघ्र उनके वध का उपाय करें अन्यथा सब देवता अकाल ही काल को प्राप्त हो जायेंगे। यह सुन भगवान सोचने लगे कि मैं किस प्रकार देवों के कार्यों को सम्पन्न करूं। क्योंकि तारक पुत्र तो शिवजी के परम भक्त हैं। समर्थ विष्णु ने यज्ञों का स्मरण किया तथा उनके स्मरण मात्र से ही तत्काल ही यज्ञगण वहां उपस्थित हो गए। उन्होंने विष्णु को प्रणाम कर प्रसन्नता प्राप्त की। तब उनकी ओर इंगित कर विष्णु ने देवों से कहा—हे देवो। तीनों जगत की विभूति के लिए यज्ञ करो तथा यज्ञों से ही त्रिपुरों का नाश होगा। सनत्कुमार जी बोले अच्युत भगवान के यह वचन सुनकर उन्हें प्रणाम कर समस्त देवगण यज्ञेश का स्तवन करने लगे। सविधि उन्होंने यज्ञ का विधान किया। फिर तो उस यज्ञ कुण्ड से एक महान शरीर वाला शूल धारी हजारों भूतों का समुदाय निकल पड़ा। तब अनेक प्रहरों से युक्त, नाना वेश-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

धारी कालाग्नि रुद्र के समान तथा काल सूर्य के समान प्रकट हुए उन भूतों से विष्णुजी ने कहा हे भूत गणो ! देव कार्य के लिए तुम लोग शीघ्र ही त्रिपुर नगर को जाकर उन्हें नष्ट कर आओ। इसी में तुम्हारी प्रसिद्धि है। विष्णुजी के इन आदेशों को सुन वे भूतगण दैत्यों के त्रिपुर नगर को गए। परन्तु जैसे ही वे त्रिपुर नगर में प्रविष्ट हुए तैसे ही त्रिपुरों के तेज से भस्म हो गए तथा जो बचे वे भाग कर विष्णु के पास पहुंचे। उनके संहार को सुन भगवान विष्णु चिन्तित हो गए तथा उन्होंने देवताओं को भी चिन्ता मग्न देखा। वे सभी दैत्यों के तीनों पुत्रों की विजय से चिंता युक्त थे। भगवान बोले—कुछ भी हो धर्मात्मा का नाश नहीं हो सकता। अभी तक त्रिपुर धर्मात्मा हैं तथा उनका संहार असंभव है। शिव का पूजक तो कैसा भी पापी हो, पापों से मुक्त हो जाता है अतः जब तक रुद्र की पूजा न होगी तब तक सबकी मनोकामना पूर्ण न होगी। लिंग पूजन से तो मोक्ष भी प्राप्त हो जाता है। जब तक वेद, धर्म और शिव पूजन त्रिपुरों में विद्यमान है उनका नाश नहीं हो सकता। यह विचार कर विष्णु ने उन तीनों असुरों के वेद, धर्म और शिवार्चन का विनाश करना ही सर्व प्रथम उत्तम समझा। फिर उन्होंने देवताओं से कहा कि अब आप लोग अपने घरों की ओर प्रस्थान करें मैं यथा समय तथा यथा संभव आपकी सहायता करूंगा। सनत्कुमार जी कहते हैं कि उनकी आज्ञा मानकर देवता अपने धाम वापिस चले गए एवं विष्णुजी उनके हित का विधान करने लगे। उसी सर्व पाप नाशक वृत्तान्त को मैं तुम्हें सुनाता हूं सुनो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चौथा अध्याय

(विष्णु द्वारा अरिहन् का जन्म तथा नास्तिक शास्त्र का प्रार्दुभाव और त्रिपुरों को नये धर्म की ओर प्रेरित करना।)

सनत्कुमार जी कहने लगे कि भगवान् ने अपनी आत्मा से अत्यन्त तेजवान् मायावी पुरुष की उत्पत्ति की, जिसका सिर मुंडा हुआ था तथा मलिन वस्त्र पहने एक हाथ में काठ का पात्र तथा दूसरे हाथ में एक झाड़ू लिए उसे चला रहा था वह अपने हाथ में खुला वस्त्र लिए मुख में वस्त्र लपेटे तथा व्याकुल वाणी में 'धर्म' कहता हुआ मुनि रूप धारण किए भगवान् नारायण के आगे आ खड़ा हुआ तथा बोला—हे अरिहन्! मेरे लिए क्या आज्ञा है? मेरे क्या नाम होंगे तथा क्या स्थान होगा? उसके ऐसे वचनों को सुन विष्णु अत्याधिक प्रसन्न हुए और उससे कहा कि मुझे तुम्हारी आवश्यकता है तुम मेरे अंग से उत्पन्न मेरे ही स्वरूप हो। तुम मेरे कार्य करने में समर्थ हो इसलिए तुम्हारी पूजा होगी. मान होगा। तुम्हारा मुख्य नाम 'अरिहन्' होगा इसके पीछे तुम्हारा एक अन्य सुन्दर नाम होगा जिसे मैं बाद में कहूंगा। अभी तुम्हारे समक्ष जो कार्य है उसे सम्पन्न करो। तुम बड़े मायावी हो। अतः तुम सोलह हजार श्लोकों वाले ऐसे शास्त्र की रचना करो जो वर्णाश्रम धर्म विवर्जित हो। इसमें अपभ्रंश शब्द तो भरे ही हों और कर्म विवाह भी वर्णित हो। इसके लिए मैं अपनी माया को तुम्हारे साथ कर तुम्हें सामर्थ्य प्रदान करता हूं कि तुम उसका निर्माण कर सको। भगवान् के इन वचनों को सुनकर मुंडी ने उन्हें प्रणाम किया तथा बोला—हे जनार्दन! मुझे क्या करना है इसके लिए शीघ्र ही आज्ञा दें। आपके आशीर्वाद से मैं अवश्य सफल होऊंगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

यह सुन विष्णु ने उस मायावी को समस्त शास्त्र पढ़ा दिया जिसमें स्वर्ग नरक यहीं है अन्य कहीं नहीं। तदुपरान्त शिवजी के चरण कमलों का स्मरण कर विष्णु जी ने कहा—बस इसी विधान से तुम सब दैत्यों का संमोहन कर लो। तुम त्रिपुरों के पास जा उन्हें यही शास्त्र पढ़ाओ तुम्हें कोई दोष नहीं लगेगा। तुम्हारे इस कार्य के करने से त्रिपुरों में तमोगुण का प्रकाश होगा तथा वे नष्ट हो जायेंगे। मेरी इस आज्ञा से तुम्हारे इस धर्म का विस्तार होगा तथा तुम्हें मेरी गति प्राप्त होगी। वहां से फिर मरुस्थल में जाकर तुम कलियुग के आने तक अपने धर्म में नियत रहकर निवास करना तथा कालान्तर में कलियुग के आने पर अपने धर्म का प्रकाश कर अनेक प्रशिष्यों के साथ इस धर्म का प्रचार करना। ऐसा कहकर विष्णु अन्तर्ध्यान हो गये तथा मुंडी ने भगवान् की आज्ञा को शिरोधार्य कर बहुत से शिष्य बनाये और उनको वही मायामय शास्त्र पढ़ाया। अब उसके चार शिष्य हो गए। शिवाज्ञा से वे भी अपने गुरु के समान मलिन वस्त्र धारण कर अल्पभाषी बन उसका लाभ रूप तत्व लेने लगे। उन चारों ने पाखंड धर्म अपनाया। हाथ में पात्र ले, नाक पर कपड़ा लपेटे इधर-उधर विचरने लगे तथा हाथ में छोटे-छोटे वस्त्रों से बनी बुहारी लेकर जीव हिंसा के भय से धीरे-धीरे पैर रखकर चलना आरम्भ किया। भगवान् ने पकड़ कर उन्हें उनके गुरु के हवाले किया। फिर पहले वाले का आदि रूप नाम रखा तथा उन चारों का कृषि, पति, कीर्य और उपाध्याय नामकरण किया। तब विष्णु ने कहा कि अब से तुम सदा मेरा अरिहन् नाम शुभ और शत्रुनाशक नाम ध्यान में रखना। इसके पश्चात् मायावी ने भगवान् को प्रणाम कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शिष्यों सहित त्रिपुर नगर को प्रस्थान किया तथा वहां जाकर शीघ्र ही अपनी कृषि माया फैला दी तथा बालक को मोहित कर दिया। परन्तु अभी भी शिवजी के प्रभाव से त्रिपुर में उनकी माया सहज न फैल सकी। इससे वे अति खिन्न हुए तथा उन्होंने विष्णु जी का स्मरण किया। विष्णु जी ने शिवजी का स्मरण किया तब उनकी आज्ञा को पाकर नारद जी का स्मरण किया गया। नारद जी को विष्णु जी ने आदेश दिया कि तुम इन ऋषि-शिष्यों सहित त्रिपुर में जाकर वहां के निवासियों को मोहित कर देवों को प्रसन्न तथा सुखमय करने का कार्य करो। नारद जी त्रिपुर नगर में जाकर त्रिपुर पति से मिले। नारदजी ने यतियों की धर्म परायणता और उनकी वेद विद्या सम्पन्नता की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह धर्म सभी धर्मों से उत्तम है मैं भी इसी में दीक्षित हुआ हूं। यदि तुम्हारी इच्छा है तो तुम भी इसमें दीक्षित हो जाओ। यह बात सुनकर त्रिपुराधीश को पर्याप्त आश्चर्य हुआ परन्तु मोहितावस्था में होने के कारण वह भी उस मुंडी के धर्म में दीक्षित होने गया तथा उसे अपना गुरु बनाया। इसे देख सभी त्रिपुरवासी उस मुंडी के धर्म में दीक्षित हो गए तथा सारा त्रिपुर उस मायावी के शिष्यों से परिपूर्ण हो गया।

पांचवां अध्याय

(मायावी वर मुंडी द्वारा त्रिपुर में नास्तिक धर्म का प्रचार तथा विष्णु की माया के कारण सभी का मोहित हो शिव धर्म से विमुख होना।)

व्यासजी ने पूछा हे सृष्टि श्रेष्ठ! दैत्य राजाओं के दीक्षित एंव मोहित होने पर उस मायावी पुरुष ने क्या कहा और दैत्य राज ने क्या कहा? सनत्कुमार जी ने कहा- जब वह राजा दीक्षित हो गया तब उससे अरिहन (मुंडी) ने कहा मेरा ज्ञान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वेदान्त का सार है। यह अनादि काल से चला आ रहा है। इसमें कर्त्ता कर्म नहीं है। आत्मा से लेकर स्तम्भ तक जितने भी शरीर के बंधन हैं उनमें आत्मा ही एक ईश्वर है बाकी सभी असामर्थ्यवान् हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश सभी अरिहन् कहलाते हैं तथा समय आने पर सभी लीन हो जाते हैं। आहार, मैथुन, निद्रा सब इस देह में समान हैं, सभी प्राणी समान हैं किसी में कोई विशेषता नहीं। आत्मा एक है। मृत्यु सभी के लिए आवश्यम्भावी है। सभी शरीर धारी समान हैं, इस कारण कभी किसी की हिंसा मत करो, अहिंसा ही परमोधर्म है। अपराधीनता ही स्वर्ग तथा अभिलाषित भोजन ही स्वर्ग है। हिंसा से नरक होता है। दान अनेक प्रकार के होते हैं परन्तु अभयदान से बढ़कर कोई दान नहीं है। भयभीत को अभयदान, रोगी को औषधि, छात्रों को विद्या और भूखे को अन्नदान देना ये चार प्रकार के दान ही प्रमुख हैं। मणि, मन्त्र और औषधि के प्रभाव को बिना विचारे ही नाम और अर्थ का उपार्जन के लिये नियमपूर्वक अभ्यास करे। अत्यधिक साधन की कोई आवश्यकता नहीं हैं। प्राणियों को स्वर्ग और नरक यहीं है। सुख का नाम स्वर्ग और दुःख का नाम नरक है। सुखपूर्वक मरना ही मोक्ष है। अग्नि में तिल, घी और पशु की आहुति कर स्वर्ग की इच्छा करना व्यर्थ की बात है। इस प्रकार उस दैत्य नायक के लिये यतिराज ने अपना सिद्धान्त कहकर फिर उसे पुरवासियों के लिये कहा कि प्रत्यक्ष में ही अर्थ का विवास करना चाहिये तथा यही एक मात्र सुख का साधन है। देव से परे की बात है। आनन्द ही ब्रह्म और नानात्व की कल्पना मिथ्या है। शरीर के स्वस्थ रहते ही सुख का साधन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करना चाहिए अन्यथा बुढ़ापा आने पर सुख संचय कठिन हो जाएगा। वेद भी सुख का साधन करने को कहता है। लोगों में जाति कल्पना व्यर्थ है। ऊंच-नीच कुछ नहीं। वृद्धजनों का कहना है कि सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा की उत्पति हुई, उसके दो पुत्र दक्ष और मरीचि हुए। फिर मरीचि के पुत्र कश्यप ने दक्ष की तेरह कन्याओं का धर्म से विवाह किया। फिर प्रजापति के मुख, बाहु, उरु, जांघ और चरण से चार वर्ण उत्पन्न हुए। यह केवल पूर्वजों की कल्पना है। यह बातें विचार से तर्क संगत नहीं हैं। यदि सभी एक ही शरीर से उत्पन्न हुए तो उसके चारों पुत्र विभिन्न वर्गों के कैसे हो गए? इस प्रकार मनुष्य को किसी प्रकार का भी भेद विभेद नहीं मानना चाहिए। सनत्-कुमार जी बोले—इस प्रकार उस मुंडी ने पुरवासी से वाद विवाद कर वेद मार्ग को नष्ट कर दिया तथा प्रतिव्रताओं के व्रत तथा पुरुषों के जितेन्द्रिय व्रत का भी खंडन किया। उसने शिवजी तथा विष्णु, सूर्य और गणेश की पूजा आदि को भी निषेध किया। इस प्रकार उसने स्त्रियों, राजकुमारों, पुरवासियों सभी को विमोहित कर दिया। त्रिपुरावासी अपने-अपने धर्म से विमुख हो गए और अधर्म का आचरण करने लगे। अलक्ष्मी ने अपना निवास वहां बना लिया और लक्ष्मी उनको त्याग कर अन्यत्र चली गई। भगवान विष्णु द्वारा उस बुद्धि को निर्मित देख स्वयं नारद कृतार्थ हो गये। शिवजी की इच्छा से राक्षस मय अपने भाइयों सहित सामर्थ्य हीन हो गया।

छठवां अध्याय

(देवों द्वारा त्रिपुरारी वध के लिए शंभु से प्रार्थना तथा भगवान् शिव का सज्जित हो युद्ध के लिए प्रस्थान।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

व्यास जी ने सनत्कुमार जी से पूछा—जब दैत्यराज विमोहित हो गया तब क्या हुआ। अब वह सम्पूर्ण चरित्र मुझे कृपाकर बतायें तथा कृतार्थ करें। सनत्कुमार जी कहने लगे—जब इस प्रकार दैत्यराज ने शैवधर्म को त्याग दिया, सारा स्त्री धर्म नष्ट हो गया, लोग दुराचारी हो गए तब भगवान् नारायण ने कैलाश पर जाकर शंकर की स्तुति की। ब्रह्मा और देवराज इन्द्र ने भी वहां पहुंचकर शंकर की अर्चना की। तब भगवान् आदि शंकर उनके तप से अत्यन्त प्रसन्न हुए और वृषभ पर आसीन होकर उनके सामने आये और देवताओं से बोले—मैं दैत्यों का अधर्म समझ गया हूं इससे अब मैं त्रिपुरों का विनाश कर दूंगा। परन्तु फिर भी वे मन से अभी भी मेरे दृढ़ भक्त हैं। वे माया से मोहित हैं जिन्होंने तो सम्पूर्ण धर्म का त्याग कर दिया है उनका संहार तो मैं करूंगा, परन्तु शेष को विष्णु ही मारेंगे। यह बात सुन विष्णु जी कुछ निराश से हो गए। उनकी उदासी को लक्षित कर शिवजी की ओर उन्मुख हो ब्रह्मा जी ने कहा कि श्रेष्ठ देव! आप जैसे श्रेष्ठ योगी को तो कोई पाप छू तक नहीं सकता, फिर आप सभी का संहार क्यों नहीं करते। त्रिपुरों ने तो अब हर प्रकार से आपकी पूजा अर्चना को त्याग दिया है इस कारण आप समान भाव से हमारी रक्षा कीजिए। यह सारा जगत आपका परिवार है तथा हरि आपके युवराज, मैं आपका पुरोहित तथा इन्द्र आपका आज्ञा पालक राज करने वाला है। अन्य सभी देवी देवता आपके अधीन तथा आपके अन्तर्गत कार्य करने वाले हैं। सनत्कुमार जी कहने लगे ब्रह्मा जी के ऐसे वचनों को सुनकर सुरपति शिव अत्यन्त प्रसन्न हो गए तथा कहा—हे ब्रह्मा! तुम मुझे किस भांति सम्राट मानते हो,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मेरे पास न कोई दिव्य रत्थ है न कोई वैसा ही सारथी और न ही विजय करने वाला धनुष बाण है। मैं किस प्रकार दैत्यों का वध करूंगा। उनकी इस प्रकार की बातों को सुनकर ब्रह्मा आदि देवता अति प्रसन्न हो गए और महेश्वर को प्रणाम करके कहने लगे कि आप युद्ध के लिए सनद्ध हों, हम सभी आपके रक्षादिरूप हो जायेंगे। यह कह सभी देवता गण हाथ जोड़कर शिवजी के सामने नतमस्तक हो गए।

सातवां अध्याय

(शम्भु द्वारा युद्ध को प्रस्थान तथा पार्वती का गणेश को लेकर वहाँ पहुंचना तथा भगवान् शिव द्वारा पुत्र मोह में युद्ध त्याग।)

सनत्कुमार जी बोले—तब मयअस्त्रों को शरण देने वाले दयावस्तसत्र भगवान् ने देवताओं की बात स्वीकार कर ली, उसी समय पार्वती देवी अपने पुत्र को गोद में लिए वहां आ गई जहां देवताओं सहित शंकर विराजमान थे। पार्वती को आते देखकर विष्णु आदि सभी देवता नम्र हो उन्हें प्रणाम करने लगे। सभी ने सुलक्षण जय का शब्द उच्चारण किया। तब अद्भुत कौशल करने वाली देवी ने भगवान् शंकर से अपने दोनों पुत्रों को उनको प्यार करने का अनुरोध किया तथा शंकर ने प्रसन्न होकर उनका मुख चुम्बन किया। पश्चात् वे सबको साथ में ले अपने भवन में चले गए। देवता भी साध कर बाहर द्वार पर प्रतीक्षा करने लगे। परन्तु शिवजी के चले जाने से उनके मन में चिन्ता व्याप्त हो गई तथा अपने को भाग्यहीन मान दैत्यों के भाग्य की प्रशंसा करने लगे। इतने में कुम्मोदर नामक गण ने आकर देवताओं पर अपनी लकड़ी का प्रहार किया जिससे देवता हाहाकार कर उठे। कई मुनि गिर पड़े तथा कई देवता लुढक गए। इन्द्र तो व्याकुल होकर अपनी टांगों को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पृथ्वी पर टेक कर गिर पड़े। फिर सब एकत्र हो विष्णु जी के पास चले गए। तब विष्णु जी ने देवताओं को बहुत सा आश्वासन दिया और कहा सब ठीक हो जायेगा। यदि तुम 'ॐ नमः शिवाय कुरु कुरु' इस मंत्र का एक करोड़ जाप करो तो शिवजी अवश्य तुम्हारा कार्य करेंगे। तब विष्णु की आज्ञानुसार सभी देवता शंकर की आराधना करने लगे। स्वयं विष्णुजी देवताओं के हित को ध्यान में रखकर जाप करने लगे। विधि पूर्वक एक करोड़ मंत्र की जापना के उपरांत शिव ने फिर सबको दर्शन दिये और कहा मैं प्रसन्न हूँ जो चाहो वर मांगो। देवताओं ने त्रिपुर के संहार का वर मांगा। तब शिवजी ने कहा मेरे लिए दिव्य रथ, सारथी और धनुष बाण लेकर आओ। इस पर सभी देवता अति प्रसन्न होकर विश्वकर्मा के पास गये। विष्णु की आज्ञा से विश्वकर्मा ने अति सुन्दर देवमय रथ आदि का निर्माण कर दिया।

आठवां अध्याय

(विश्वकर्मा द्वारा रथ का निर्माण तथा शिव द्वारा उस पर आसीन हो देवताओं की इच्छा को पूर्ण करना।)

व्यास जी बोले हे सर्व कालिक तथा सर्व शक्तिमान तथा अज्ञेय सनत्कुमार जी! आपने तो शंकर की बड़ी अनोखी कथा सुनाई। अब कृपा करके यह बताइये कि विश्वकर्मा ने उस दिव्य रथ का कैसे निर्माण किया। तब सनत्कुमार जी ने शिव के चरणों का स्मरण करके कहा कि विश्वकर्मा ने जो एक रुद्र के लिए तैयार किया वैसा रथ किसी भी लोक में न था। वह सर्वांग स्वर्ण का बना हुआ था। उसके दाहिने पहिये में सूर्य तथा बांए में चन्द्र लगे हुए थे। वर्ष के बारह महीनों के बारह तारे उसकी दायीं ओर लगे हुए थे और सोलह कलाओं के सोलह तारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उसके बायीं ओर के पहिये से जुड़े थे। उन बारह तारों में बारह आदित्य और चन्द्रमा की द्वादश कलाएं उसके बायीं ओर लगी हुई थीं। ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु उस रथ में विद्यमान थी। ब्रह्मा तथा विष्णु की आज्ञा से निर्मित वह रथ सम्पूर्ण तथा अद्भुत था।

नवां अध्याय

(शिवा तथा शिव का मिलन और अद्भुत यात्रा की व्याख्या।)

सनत्कुमार जी ने कहा जब इस प्रकार वह महादिव्य रथ तैयार हो गया तब ब्रह्मा जी ने वेद रूप घोड़े उसमें जोड़कर शिवजी को उस पर आसीन किया। वेदमय घोड़े रथ सहित शिवजी को लेकर आकाश में स्थित हो गए और इसमें तनिक भी विलम्ब नहीं हुआ तथा वे शीघ्र तीनों पुरों के सम्मुख जा पहुंचे। रथ में बैठे महेश दानवों की ओर चले। उसी समय उन्होंने देवताओं से कहकर अधिपति नामक पद प्राप्त किया ताकि वे असुरों को नष्ट करने में सफल हो सकें। परन्तु इससे देवताओं को चिन्ता व्याप्त हो गई। तब शिवजी ने कहा चिन्ता मत करो जो मेरे इस दिव्य पशुपत व्रत को करेगा उसको मोक्ष हो जायेगा। देवता प्रसन्न हो उनकी जय-जयकार करने लगे। उसी समय शंकर पार्वती को साथ ले त्रिपुरों को मारने निकले। समस्त देवता हाथी, घोड़े, सिंह, रथ और वृषभ आदि पर चढ़कर देवराज इन्द्र के साथ हुए। विष्णु आदि सभी देवता परम प्रकाश भाव महेश्वर के आगे हुए। आकाश से देवता उन पर पुष्प वर्षा कर रहे थे। उसी समय हजारों गण तीनों पुरों में प्रवेश करने लगे। उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि गणना असम्भव है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दसवां अध्याय

(शिवजी द्वारा गौरी पुत्र गणेश की अर्चना करना तथा तारक दानव को नष्ट कर देने के पद को प्राप्त करना।)

सनत्कुमार जी ने कहा इस प्रकार युद्ध की समस्त सामग्रियों से युक्त हो त्रिपुर के वध के लिए शिवजी रथ पर सवार हो धनुष चढ़ाकर स्थित हो गए। परन्तु हजारों वर्षों तक वे इसी प्रकार खड़े रह गए और उनका बाण तक न चला। इसका कारण था गणेश जी एक अंगूठे के बल से खड़े उसमें विघ्न करने लगे जिससे शंकर का लक्ष्य त्रिपुर तक नहीं पहुंच पाता था। इसके पश्चात उन्हें आकाश वाणी सुनाई दी कि जब तक आप गणेश जी की पूजा न करेंगे तब तक त्रिपुर-संहार नहीं कर सकते। यह सुनते ही शंकर जी ने गणेश का पूजन किया। गणेश जी प्रसन्न हो उनके मार्ग से हट गये। तदुपरान्त शंकर ने धनुष सजाकर उस पर बाण चढ़ाकर पाशुपत अस्त्र में संयुक्त कर त्रिपुर संहार की इच्छा की। उन्होंने निरादर से उसकी ओर देखा। देवताओं ने भी शीघ्रता से उसका वध करने की प्रार्थना की। शिवजी ने करोड़ों सूर्यों के प्रकाश की तरह प्रकाशमान् अपने बाण को असुरों पर चला दिया। देवताओं सहित शिवजी के देखते-देखते चारों ओर के समुद्र द्वारा घिरे हुए दैत्यों के तीनों पुर भस्म होकर एक साथ भूमि पर गिर पड़े। सैकड़ों की संख्या में दैत्य एक साथ भस्म हो गए। शिवजी की पूजा न करने से हाहाकार मच गया। जब अपने भ्राताओं सहित तारकाक्ष भस्म होने लगा तो उसने भक्त वत्सल शंकर जी का स्मरण किया तथा कहा—हे शिव! हम जानते हैं कि आप हमें भस्म किये बिना नहीं मानेंगे तथापि हम

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आपकी कृपा चाहते हैं कि हमारी बुद्धि जन्म जन्मान्तर तक आप में लगी रहे। ऐसा कह वे दानव शिवजी की उस वह्नि में भस्म हो गए। एक अविनाशी विश्वकर्मा मय नामक दैत्य को छोड़कर सभी स्थावर तथा जंगम भस्म हो गए। तत्पश्चात् वे तीनों शिवजी की पूजा के प्रताप से फिर शिवजी के गण हो गए।

ग्यारहवां अध्याय

(जब सभी देवताओं पर विपत्ति पड़ना, शिवजी का उनको वरदान, उनके दुःखों को दूर करना तथा शंकर द्वारा देवताओं को वर प्रदान करना।)

व्यासजी बोले—महर्षि कृपाकर अब यह बतायें कि त्रिपुरों के नष्ट होने पर देवताओं ने क्या किया। मय सहित त्रिपुरपति कहां-कहां चले गये। तब सनत्कुमार जी ने उत्तर दिया—शिवजी द्वारा त्रिपुर वासियों का संहार होने पर देवताओं को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। परन्तु प्रलयंकर शंकर के तेज के सामने उनका शीश उठ नहीं रहा था। इन्द्रादि सभी देवता भगवान् शंकर तथा पार्वती के तेज के सामने नतमस्तक होकर खड़े थे। तब देव सेना के भय को देख ऋषियों से न रहा गया और वे भयंकर शिव को प्रणाम करने लगे। ब्रह्मा भी भयभीत होकर शंकर की स्तुति करने लगे। तब लोकों के कल्याण कर्त्ता शंकर ने प्रसन्न होकर कहा मांगों क्या वर मांगते हो। शिवजी के ऐसे वचन सुनकर देवता प्रसन्न हो गये और कहा कि हे देवेश अगर आप वास्तव में प्रसन्न हैं तो हमें वही वर दीजिये कि जब भी देवों पर कोई संकट आये तब आप हमारी सहायता के लिए प्रगट हों तथा हमारे दुःखों को दूर करें। तब शिव ने प्रसन्न होकर तथास्तु ऐसा ही होगा कहा। मैं सदैव तुम्हारी अभि-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लाषाओं को पूर्ण करता रहूँगा। जो मेरे इस चरित्र को पढ़ेगा और सुनेगा उसके सभी मनोरथ सिद्ध होंगे। ऐसा कह शिव ने देवताओं को उनका अभिष्ट वर दिया।

बारहवां अध्याय

(मय दानव को मुक्ति प्रदान करना तथा मुण्डी को वरदान कर दिया जाना, तत्पश्चात उसका मरुभूमि में जाकर निवास करना।)

सनत्कुमार जी कहने लगे—तब शिव को प्रसन्न देखकर बचा हुआ मय दानव भी उनके पास आया तथा शंकर सहित अन्य देवताओं को हाथ जोड़कर प्रणाम करने लगा। फिर उसने कहा—हे शिव! भवसागर से पार लगाने वाले प्रभो! मैं आपकी शरण आया हूं, अतएव आप मेरी भी रक्षा कीजिये। शंकरजी ने उसे भी वर मांगने को कहा। उसने भी शिव की भक्ति मांगी। शिवजी ने तथास्तु कहकर उसे अपनी दृढ़ भक्ति प्रदान कर दी। वह वापिस वितल लोक में वास करने चला गया। पश्चात् वे सब मुण्डी भी वहां आए और शिव तथा सभी देवताओं को प्रणाम कर अपने लिए आज्ञा मांगने लगे तथा शिव भक्ति नष्ट कर अपने दुष्कर्मों पर पश्चाताप करने लगे। तब विष्णुजी ने कहा तुम्हें किसी प्रकार की चिन्ता की आवश्यकता नहीं। मैंने यह सारा चरित्र शिवजी की आज्ञा से किया है। इस कारण तुम भी शिवजी के दास तथा देवों के हितकारी हो। तुम्हारी कुगति नहीं होगी। प्रत्युत कलियुग में जो मनुष्य तुम्हारे इस चलाए हुए मत को मानेंगे उन्हीं की कुगति होगी। इसमें शक नहीं। अब मेरी आज्ञानुसार तुम सभी मुण्डी मरुभूमि में जाकर निवास करो। मुण्डी मरुभूमि की ओर चले गए। तब सभी देवताओं ने शंकर पार्वती सहित उनके गणों की पूजा की और अपने युद्ध आयुद्धों के सहित वहीं अन्तर्ध्यान हो गए।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तेरहवां अध्याय

(इन्द्र को जीव-दान तथा बृहस्पति को जीव-संहार प्रदान करना तथा इन्द्र द्वारा बुद्धि बल से जीवन-दान को प्राप्त करना।)

व्यास जी बोले—हे ब्रह्मन्! हमने यह बात पहले सुनी है कि भगवान् शंकर ने ही जलंधर का भी वध किया था। अगर यह सत्य है तो भगवान् की इस अनुपम कथा को भी विस्तार से सुनाइये। सूत जी कहते हैं कि जब व्यास ने उस महामुनि से इस प्रकार पूछा तो सनत्कुमार जी ने कहा—हे मुने! एक समय जब देव गुरु बृहस्पति तथा देवराज इन्द्र कैलाश पर शंकर जी का दर्शन करने गए तो शंकर जी ने अपने भक्त की परीक्षा ली। उन जटा जूटधारी दिगम्बर ने उनको मार्ग में ही रोक लिया। यद्यपि वे तेजस्वी, शांत, लम्बी भुजा और चौड़ी छाती वाले, गौर वर्ण अपने विशाल नेत्रों, पुत्रों तथा सिर पर जटा धारे वैसे ही बैठे थे। तथापि उन शंकर जी को न पहचान कर इन्द्र ने उनका नाम धर्म आदि का परिचय पूछा और कहा कि शंकर जी अपने स्थान पर हैं या नहीं। इस पर उस तपस्वी ने कुछ न कहा। परन्तु त्रिलोकी के ऐश्वर्य से गर्वित इन्द्र कब चुप रहते। उन्होंने क्रोधित हो उस तपस्वी से घुड़ककर कहा—अरे मैं पूछता हूं तू उत्तर क्यों नहीं देता? मैं अभी तुझे वज्र से मारता हूं तब देखता हूं कि तुझ मूर्ख की रक्षा कौन करता है। यह कहकर इन्द्र ने ज्योंहि उस दिगम्बर को मारने के लिए हाथ में वज्र लिया त्योंहि सदाशिव ने वज्र सहित इन्द्र के हाथ को स्तम्भित कर दिया और विकराल नेत्र कर भगवान् शंकर ने ज्योंहि उसे देखा तभी लगा वह दिगम्बर प्रज्जवलित हो उठा है और तेज से जला देगा। भुजाएं स्तम्भित होने से इन्द्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के क्रोध और दुःख का अन्त न रहा। पर ज्योंहि बृहस्पति जी ने उस पुरुष को क्रोधित देखा त्योंहि अपनी बुद्धि से शंकर जान कर प्रणाम किया और दण्डवत कर बहुत सी स्तुति भी की। फिर इन्द्र को भी शंकर जी के चरणों में बिठाया और कहा हे दीनानाथ! महादेव! अपना क्रोध रोककर इन्द्र के अपराध को क्षमा कीजिए। बृहस्पति के यह वचन सुनकर महेश्वर गम्भीर वाणी में बोले—हे बृहस्पति! मैं अपने नेत्रों से निकलते हुए क्रोध को कैसे रोकूँ? बृहस्पति ने कहा हे भगवन्! भक्तों पर सदैव दया ही करनी चाहिए। भला अपना नाम भक्त वत्सल तो सार्थक करो। आप अपने इस तेज को अन्यत्र स्थापित कर इन्द्र का उद्धार कीजिए। तब भगवान् शंकर ने गुरु बृहस्पति से कहा मैं तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न हूं। तुमने इन्द्र को जीव-दान दिलवाया है। इससे मैं अपने वर द्वारा तुम्हें 'जीव' नाम से विख्यात करता हूं। मेरे नेत्रों की अग्नि अब इन्द्र को पीड़ित न करेगी। बृहस्पति से ऐसा कह शंकर ने अपने नेत्रों की अग्नि को अपनी हथेली पर डाल लिया तथा फिर अन्तर्ध्यान हो गए। इन्द्र तथा बृहस्पति भय से विमुक्त हो अति प्रसन्न हो गए। इस प्रकार जिसको जानने की इच्छा की उन्हें जान इन्द्र तथा बृहस्पति अपने स्थान को चले आये।

चौदहवां अध्याय

(शम्भु के तेज से जलंधर दानव की उत्पत्ति, दानवों का प्रसन्न होना तथा देवगणों का अत्यंत विपत्ति में पड़ना।)

व्यासजी बोले—हे सनत्कुमार जी! आपको नमस्कार है। अतः कृपाकर आप यह बताइये जब शिवजी ने अपने माथे के तेज क्षार को समुद्र में डाल दिया, उस समय क्या हुआ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सनत्कुमार जी बोले—हे तात! जब शिवजी ने वह तेज क्षार समुद्र में डाल दिया, उसी समय वह बालक हो गंगा सागर के संगम पर बैठकर अत्यन्त उच्च स्वर से भयभीत करने वाला रुदन करने लगा। उसके रुदन से सारा संसार व्याकुल हो उठा। लोकपालों के मन में भी व्याकुलता उत्पन्न हुई। चराचर चलायमान हो गया। ब्रह्माण्ड व्याकुल हो गये। तब समस्त देवता और मुनि व्याकुल हो लोक पितामह ब्रह्माजी की शरण में गये। सबने मिलकर ब्रह्माजी को प्रणाम कर उनकी स्तुति की तथा कहा कि हे पितामह! यह तो बड़ा भयंकर समय उपस्थित हुआ है। इसका नाश कीजिये। तब ब्रह्माजी सत्य लोक से उतर कर समुद्र तट पर उस बालक को देखने आये। समुद्र ने ब्रह्माजी को आते देख उस बालक को उठा कर उन्हें प्रणाम किया। और पुनः उसकी गोद में दे दिया। तब विस्मित हो ब्रह्मा ने पूछा—हे सागर शीघ्र बताओ यह बालक किसका है। समुद्र ने नम्र शब्दों में कहा—हे भगवन्! यह तो मैं नहीं जानता, किन्तु मुझे इतना अवश्य ज्ञात है कि यह गंगा सागर के संगम पर प्रकट हुआ है अतः हे जगत् गुरु! आप इस बालक के जात कर्मादिक संस्कार कीजिए। इसका जातक फल बताइये। सनत्कुमार जी कहते हैं कि इधर तो सागर ब्रह्माजी से ऐसा कह रहा था उधर सागर पुत्र ब्रह्माजी के गले में हाथ डाल कर बार-बार उन्हें आकर्षित कर रहा था। फिर तो उसने जोर से ब्रह्माजी का गला पकड़ा कि उससे पीड़ित हो उनके नेत्रों से आंसू टपकने लगे। किसी प्रकार ब्रह्माजी ने दोनों हाथों से बल लगाकर अपना गला छुड़ाया और सागर से सादर कहा कि हे सागर! मैं तुम्हारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पुत्र का जातक फल वर्णित कर रहा हूँ। उसे ध्यान से सुनो, मेरे नेत्रों से जो जल निकला है, इस कारण इसका नाम जलंधर होगा। यह उत्पन्न होते ही तरुण हो गया है, इससे यह सब शास्त्रों का ज्ञाता, महापराक्रमी, महाधीरजवान, महायोद्धा तथा रिपुदमन होगा। यह युद्ध में कार्तिकेय के समान धीर तथा सर्व विजयी होगा। यह बालक सभी दैत्यों का अधिपति और विष्णु का जीतने वाला होगा तथा कहीं भी नहीं हारेगा। एक शंकर को छोड़ यह सबसे अवध्य होगा तथा जहां से उत्पन्न हुआ है वहीं वापिस जायेगा। इसकी स्त्री बड़ी पतिव्रता, सोभाग्य-शालिनी, सर्वसुन्दरी तथा शील का अथाह सागर होगी। सागर से ऐसा कहकर ब्रह्माजी ने महर्षि शुक्र को बुलाकर उनके हाथों से उस बालक को दैत्यों का राज्याभिषेक कराया तथा स्वयं अन्तर्ध्यान हो गये। उस बालक को देखकर सागर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपने साथ घर ले गया। नाना प्रकार के उपायों से पालन कर उसको पुष्ट किया। फिर कालनेमि नामक असुर को बुला उसकी वृन्दा नामक कन्या से विवाह करा दिया। उसके विवाह में महोत्सव हुआ तथा नद, नदी और सब असुरों को बड़ा सुख हुआ। स्त्री सहित जलन्धर शुक्राचार्य के प्रभाव से असुरों पर राज्य करने लगा।

पन्द्रहवां अध्याय

(देवों तथा जलन्धर के मध्य युद्ध। जलन्धर का देवों से वैर तथा उनको युद्ध में हरा कर अमरावती पर अधिकार करना।)

सनत्कुमार जी बोले—एक समय जब सागर पुत्र जलंधर अपनी स्त्री वृन्दा सहित असुरों से सम्मानित हो सभा में बैठा था तो परम कांतिमान भृगुजी वहां आ पहुंचे। उनके तेज से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सभी दिशायें प्रकाशित हो रही थीं। गुरु को आया देख असुरों सहित सागर पुत्र ने उठकर उनका अभिवादन किया तथा एक दिव्य आसन पर उनको बैठा स्वयं भी यथा स्थान पर बैठ गए। तब सागर पुत्र ने प्रश्न किया कि हे प्रभु! आप मुझे यह बताइये कि राहू का सिर किसने काटा। इस पर शुक्राचार्य जी ने विरोचन पुत्र हिरण्यकशिपु और उसके धर्मात्मा पौत्र का परिचय देकर देवताओं द्वारा समुद्र मंथन की कथा संक्षेप में कहकर बताया कि जब समुद्र से अमृत निकला तो उसे देव रूप से राहू पीने चला। परन्तु इस पर इन्द्र के पक्षपाती भगवान विष्णु ने ही राहू का सिर काट डाला। यह सुन जलंधर के नेत्र लाल हो गए और वह अत्यन्त क्रोधित हो उठा। उसने घस्मर नामक दूत को बुलाकर गुरु का कहा हुआ सारा वृत्तान्त सुनाकर आज्ञा दी कि शीघ्र ही इन्द्रपुरी में जाकर उसे मेरी शरण में लाओ। घस्मर जलंधर का बड़ा निपुण दूत था। वह शीघ्र ही इन्द्र की सुधर्मा नामक सभा में पहुंचा तथा जलंधर के शब्दों में कहा—हे देवताधम! तुमने समुद्र को क्यों मथा और मेरे पिता के सब रत्नों को क्यों ले लिया है? ऐसा कर तुमने अच्छा नहीं किया, अगर अपना भला चाहते हो तो सब रत्नों एवं देवताओं के साथ मेरी शरण में आ जाओ। अन्यथा हे सुराधम तेरे लिए बड़ा भय होगा और मैं सत्य कहता हूं कि तेरा राज्य विध्वंस हो जाएगा। इस पर इन्द्र बहुत बिस्मित हुआ और कहने लगा—पहले मेरे भय से सागर ने सब पर्वतों को क्यों अपनी कुक्षि में स्थान दिया और उसने मेरे शत्रु दैत्यों की क्यों रक्षा की? इसी कारण मैंने सब रत्नों का हरण कर लिया तथा मैं भी सत्य कहता हूं कि मेरा द्रोही सुखी नहीं रह सकता। इन्द्र की ऐसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बात सुन दूत शीघ्र ही जलंधर के पास वापस आया और सब बातें कह सुनाईं। उन्हें सुन दैत्य मारे क्रोध के कांपने लगा तथा देवताओं को जीतने के लिए उद्योग करने लगा। फिर तो सभी दिशाओं से दैत्य उसके पास आने लगे। शुम्भ-निशुम्भ आदि करोड़ों सेनापतियों के साथ जलंधर इन्द्र से युद्ध करने लगा तथा शीघ्र ही इन्द्र के नंदन वन में अपनी सेना उतार दी। अमरावती छोड़ देवता उससे युद्ध करने चले। भयानक मारा-मार हुई। दोनों पक्षों के आचार्य अपने-अपने दल के मृतकों को जिलाने लगे। असुरों के गुरु आचार्य शुक्र अपनी मृत संजीवनी विद्या से और देव गुरु बृहस्पति द्रोणगिरी से औषधि लाकर जिन्दा करते रहे। इस पर जलंधर ने क्रोधित होकर अपने गुरु शुक्राचार्य से कहा कि मेरे हाथ से मरे देवता कैसे जी जाते हैं, क्योंकि जिलाने वाली विद्या तो केवल आपके पास ही है। इस पर शुक्रजी ने देव गुरु द्वारा द्रोणगिरी से औषधि लाकर देवताओं को जिलाने की बात कह दी। यह सुन जलंधर और भी क्रोधित हो गया। शुक्रजी ने कहा—क्रोधित क्यों होते हो यदि शक्ति हो तो द्रोणगिरी को उखाड़कर समुद्र में फेंक दो। इस पर क्रुद्ध जलंधर शीघ्र ही द्रोण पर्वत के पास पहुंचा तथा उसे उठा परम वेग से समुद्र में फेंक दिया। इसके पश्चात् वह युद्ध स्थल में आकर बड़े वेग से युद्ध करने लगा। जब बृहस्पति औषधि लेने गए तो द्रोणाचल को उखड़ा हुआ पाया। वे भयभीत हो देवताओं के पास आये और युद्ध बन्द करने के लिए कहा। उन्होंने कहा अब तुम जलंधर को जीत नहीं सकते। पहले इन्द्र ने शिवजी का जो अपमान किया यह उसी का फल है। यह सुन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देवता जय की आशा त्याग, अत्यन्त दुःखित हो इधर-उधर भाग गए। सिन्धु पुत्र जलंधर निर्भय हो अमरावती में घुस गया तथा देवताओं ने गुफाओं में शरण ली।

सोलहवां अध्याय

(भयकम्पित देवताओं का भगवान विष्णु की शरण में जाना तथा भगवान विष्णु का देवताओं की व्यथाओं के मिटाने के लिए जलंधर के साथ युद्ध।)

सनत्कुमार जी कहने लगे—जब देवताओं ने जलंधर को अपनी खोज में आते देखा तो वे भयभीत होकर भाग गए तथा भागते-भागते वैकुण्ठ में विष्णु जी के पास चले गए। देवताओं ने अपनी रक्षा के लिए भगवान् विष्णु की स्तुति की। तब देवताओं की उस करुणा वाणी को सुनकर करुणाकर भगवान ने उनसे कहा कि भय को त्याग दो। मैं शीघ्र ही युद्ध में उस जलंधर का सामना करूंगा। ऐसा कह भगवान् तुरन्त गरुड़ पर जा बैठे। देवताओं सहित विष्णु को युद्ध की ओर प्रस्थान करते देख सागर पुत्री लक्ष्मी ने अपने नेत्रों में जल भरकर कहा कि यदि मैं सर्वदा आपकी प्रिय हूं तो मेरा भाई युद्ध में आप द्वारा मारा नहीं जाना चाहिए। इस पर विष्णु ने कहा—यदि तुम्हारी ऐसी ही प्रीति है तो मैं जलंधर को अपने हाथों से मारूंगा नहीं परन्तु मैं युद्ध अवश्य करूंगा क्योंकि देवताओं ने मेरी बड़ी स्तुति की है। ऐसा कह शंख, गदा, चक्र तथा पद्मधारी भगवान् विष्णु गरुड़ पर सवार हो शीघ्र ही युद्ध स्थल पर पहुंचे जहां जलंधर विद्यमान था। विष्णु के तेज से गर्वित देवता सिंहनाद करने लगे। फिर तो गरुड़ के पंखों की प्रबल वायु के वेग से पीड़ित हो दैत्य इस प्रकार घूमने लगे जैसे आंधी बादलों को आकाश में घुमा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देती है। अपने वीर दैत्यों को उस आंधी से इस प्रकार उखड़ते देख जलंधर ने क्रोधित हो विष्णु को कठोर वचन कह उन पर आक्रमण कर दिया।

सत्रहवां अध्याय

(रण में अजय शत्रु जलंधर पर भगवान् का प्रसन्न होना तथा उसे वरदान देना। वरदान के फलस्वरूप देवताओं तथा लक्ष्मी सहित जलंधर के घर में वास करना।)

सनत्कुमार जी बोले—दैत्यों के पैने प्रहारों से दुःखित हो देवता इधर-उधर भागने लगे। तब इन्द्र आदि को इस प्रकार भागते देख भगवान् स्वयं गरुड़ को लेकर आगे बढ़े। उन्होंने अपने शार्ंग नामक धनुष की बड़े शोर के साथ ध्वनि की जिससे तीनों लोक गूँज उठे। पल मात्र में भगवान् ने हजारों दैत्यों को काट डाला। यह देख जलंधर के क्रोध का पारावार न रहा। तदुपरान्त विष्णु तथा जलंधर का महा संग्राम हुआ। बाणों से आकाश भर गया। लोग आश्चर्य करने लगे। विष्णु जी ने बाणों के वेग से उस दैत्य की ध्वजा, छत्र और धनुष बाण काट डाले तथा एक बाण से उसकी छाती पर प्रहार किया। इससे कम्पित हो जलंधर ने अपनी गदा गरुड़ के मस्तक पर दे मारी। गरुड़ पृथ्वी पर गिर पड़ा। साथ ही क्रोध से उस दैत्य ने होठ फड़फड़ाते हुए विष्णु जी की छाती में भी एक तीक्ष्ण बाण मारा। इसके प्रत्युत्तर में विष्णु ने उसकी गदा काट दी तथा अपने शार्ंग धनुष पर बाण चढ़ाकर उसको बींधना प्रारम्भ किया। जलंधर भी उन पर अपने तीक्ष्ण बाणों का प्रहार करने लगा तथा वैष्णव धनुष को काट दिया। धनुष के कट जाने से विष्णु जी ने गदा ग्रहण कर ली तथा जलंधर को खींच मारी। परन्तु अग्नि के समान उस अमोघ गदा की मार से भी वह महा दैत्य विचलित नहीं हुआ तथा साथ ही उस दुर्मद ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अत्यन्त क्रोधित हो एक अग्नि मुख त्रिशूल उठाकर विष्णु पर छोड़ दिया। विष्णु जी ने शिव चरणों का स्मरण कर नंदक नामक त्रिशूल से उसके खड्ग को छेद दिया। जलंधर ने झटक कर विष्णु जी की छाती पर जोर से एक मुक्का मारा। उसके उत्तर में भगवान् ने भी उसकी छाती पर मुष्टि से प्रहार किया। फिर दोनों घुटने टेक बाहुओं और मुष्टिकों से बाहु-युद्ध करने लगे। कितनी ही देर तक भगवान् उसके साथ युद्ध करते रहे। इससे उनको बड़ा आश्चर्य हुआ वे कुछ थक से गए। तब सर्व श्रेष्ठ मायावी भगवान् उस दैत्यराज से गम्भीर वाणी में बोले—हे रण निपुण दैत्य श्रेष्ठ! तू धन्य है जो इस महायुद्ध में बड़े-बड़े आयुधों से भी भयभीत न हुआ। तेरे इस युद्ध से मैं बड़ा प्रसन्न हूं। मैंने सारी त्रिलोकी में ऐसा युद्ध नहीं देखा। तुम जो वर चाहो मांग सकते हो। मैं आज अदेय वस्तु भी तुम्हें दूंगा। भगवान् विष्णु की वाणी सुनकर दैत्यराज ने कहा यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह वर दीजिए कि आप मेरी बहिन के साथ तथा अपने सभी कुटुम्बियों के साथ मेरे घर पर निवास करें। सनत्कुमार जी कहते हैं—उसके ऐसे वचन सुनकर विष्णु जी को खेद तो हुआ पर वचन बद्ध होने के कारण उन्होंने 'तथास्तु' कह दिया। अब विष्णु जी देवताओं के साथ जलंधर के यहां निवास करने लगे। जलंधर अपनी बहिन लक्ष्मी सहित विष्णु तथा अन्य देवताओं को पाकर बड़ा खुश हुआ। फिर तो देवताओं के पास जो भी रत्नादि थे सबको लेकर उनके स्थानों पर दैत्यों को स्थापित कर जलंधर पृथ्वी पर आया। निशुम्भ को पाताल में स्थापित कर दिया और देव, दानव, यक्ष, गन्धर्व, सिद्ध, सर्प, राक्षस, मनुष्य आदि सबको अपने अधीन कर वह त्रिभु-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वन पर राज्य करने लगा। उसने धर्मानुसार सुपुत्रों के समान प्रजा पालन किया तथा उसके धर्म राज्य में सभी सुखी थे।

अठारहवां अध्याय

(नारदजी द्वारा देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए कपट जाल का बिछाना तथा उसमें सफलता प्राप्त करना।)

सनत्कुमार जी बोले—हे मुनिश्रेष्ठ! तब जलंधर को इस प्रकार धर्मपूर्वक राज्य करते हुए तथा भ्रातृभाव को देख देवता क्षुब्ध हो गए। उन्होंने देवों के देव शंकर का मन में स्मरण करना आरम्भ किया तथा अनेक प्रकार से उनकी स्तुति की। तब भक्तों की कामना पूर्ण करने वाले शंकर ने नारद जी को बुलाकर देवों का कार्य सम्पन्न करने के लिए उन्हें वहां भेजा। शम्भु भक्त नारद शिव की आज्ञा से देवपुरी में प्रविष्ठ हुए। इन्द्रादिक सभी देवता व्याकुल हो शीघ्रता से उठ नारद जी की आवभगत करने लगे। उत्कंठा भरी दृष्टि से नारद जी ने सभी की ओर देखा। देवताओं ने अपने समस्त दुःखों का नाश करने की प्रार्थना नारद जी से की। नारद जी ने कहा मैं सब जानता हूँ इसलिए मैं जलन्धर के पास जाने की सोच रहा हूँ। ऐसा कह कर नारद जी ने देवताओं को आश्वासन दिया और स्वयं जलन्धर की सभा में पहुंच गए। जलन्धर ने नारदजी के चरणों की पूजा करने के उपरांत कहा—हे मुनिश्रेष्ठ कहो आप कहां से पधार रहे हैं तथा विश्व में आपने क्या-क्या देखा। यहां आने का क्या प्रयोजन है। मेरे योग्य जो कार्य है उसके लिए आज्ञा दीजिए। जलन्धर के इस प्रकार बुद्धिपूर्ण वचन सुन कर नारद जी प्रसन्न हुए तथा बोले—हे महाबुद्धिमान दानव राज जल-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

न्धर ! तुम वास्तव में धन्य हो क्योंकि इस समय तीनों लोकों में विद्यमान सभी प्रकार के रत्नों के एक मात्र भोक्ता हो तथा मैं तुम्हें अपने आगमन का कारण बताता हूं। हे दानवराज मैं जब कैलाश पर्वत पर भ्रमण कर रहा था तब मैंने देखा कि वहां पर दस हजार योजनों में कल्प वृक्ष का वन है तथा सैकड़ों काम-धेनुओं का विचरण हो रहा है। वह वन चिन्तामणि से प्रकाशित परम दिव्य अदभुत तथा सम्पूर्ण रूप से स्वर्णमय है। मैंने वहां पार्वती के साथ स्थित शंकर को भी देखा जो सर्वांग सुन्दर गौर वर्ण त्रिनेत्र तथा मस्तक पर चन्द्रमा धारण किए हुए हैं। यह देख मुझे आश्चर्य हुआ कि उनके समान ऐश्वर्यशाली त्रिलोकी में अन्य कोई नहीं। परन्तु उसी समय मुझे तुम्हारा ध्यान आया इसीलिए तुम्हारी समृद्धि को देखने मैं तुम्हारे पास चला आया हूं। यह सुन जलंधर को बड़ा हर्ष हुआ तथा उसने नारद जी को अपनी सम्पूर्ण समृद्धि दिखला दी। उसे देख देवताओं के कार्य साधने आये हेतु नारद जी ने खूब प्रशंसा की और कहा कि वास्तव में तुम त्रिलोकी पति होने के योग्य हो तुम्हारे पास किसी वस्तु की कमी नहीं है। ऐरावत, उच्चैःश्रवा घोड़ा, कल्प वृक्ष, कुबेर की निधि, मणियों तथा रत्नों के ढेर, ब्रह्मा जी का हंस युक्त विमान सभी कुछ तो तुम्हारे पास है परन्तु तुम्हारे पास कोई स्त्री रत्न नहीं है। उसके बिना तुम्हारा यह सब ऐश्वर्य फीका है। तुम कोई स्त्री रत्न ग्रहण करो। सनत्कुमार जी कहते हैं नारद जी के इस प्रकार के वचन सुन दैत्यराज काम से पीड़ित हो गया। उसने नारद जी से पूछा कि ऐसी स्त्री कहां मिलेगी जो सब रत्नों में श्रेष्ठ हो। यदि ऐसा रत्न ब्रह्माण्ड में कहीं है तो आपकी आज्ञा से मैं उसे अवश्य ले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आऊंगा। नारद जी ने कहा ऐसा रत्न तो कैलाश में योगी शंकर के पास ही है। उनकी सर्वांग सुन्दर देवी पार्वती बहुत ही मनोहर है उसके समान सुन्दरी सारे विश्व में नहीं है। उनसे बढ़कर समृद्धिमान मुझे कोई नहीं लगता। तभी तो परम भक्त आत्माराम शंकर भी उनके वश में हो गए हैं। देवर्षि उस दैत्यराज से ऐसा कहकर आकाश मार्ग से चले गए।

उन्नीसवां अध्याय

(होनी के वशीभूत होकर दूत का पार्वती को जाकर मांगना तथा 'स्वकीर्ति मुख' की उत्पत्ति तथा शिव का गण बनना।)

व्यास जी बोले—हे सर्व को जानने वाले सनत्कुमार जी! दैत्यराज ने क्या किया यह सब मुझे विस्तार पूर्वक बतलाइये। सनत्कुमार जी बोले—उनके चले जाने पर राहु नामक दूत को जलंधर ने बुलवाया तथा कैलाश पर जाने की आज्ञा दी। उसे कहा कि वहां एक जटाधारी शम्भु नामक योगी रहता है उससे मेरा पराक्रम और सब ऐश्वर्य कहकर उसकी सर्वांग सुन्दरी भार्या को मेरे लिए मांग लाओ। उसके ऐसे वचनों को सुन वह दूत शिवजी के पास पहुंचा। परन्तु नंदी ने उसे भीतर सभा में जाने से रोका, किन्तु वह अपनी उग्रता से शिवजी की सभा में चला गया और दैत्यराज का सन्देश कह सुनाया। फिर तो राहु नामक दूत के ऐसा कहते ही शूलपाणि के आगे पृथ्वी फोड़ कर एक भयंकर शब्द वाला पुरुष प्रकट हो गया। उसका मुख सिंह के समान था और जो मानो दूसरा नृसिंह था। वह दौड़ कर राहु को खाने चला। परन्तु उस पुरुष ने उसे पकड़ लिया। राहु ने शिवजी की शरण मांगी। तब शिव ने उसे राहु से छोड़ देने के लिए कहा। परन्तु उसने कहा मुझे बड़ी जोर से भूख

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लगी है मैं क्या खाऊं। महेश्वर ने कहा यदि भूख की विशेष बाधा है तो शीघ्र ही अपने हाथों तथा पैरों के माँस का भक्षण कर डालो। शिवजी की आज्ञा से उसने तुरन्त ऐसा ही किया और उसका केवल सिर मात्र शेष रह गया। तब उसका ऐसा कार्य देख भगवान् शिव अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसे अपना परम आज्ञा पालक जान उसे अपना विशेष तथा प्रिय गण बना लिया और कहा कि मेरी पूजा के समय अब तेरी भी पूजा होगी और जो तेरी पूजा न करेंगे वे मेरे प्रिय न होंगे। शिवजी से ऐसा वर पाकर उस पुरुष को प्रसन्नता हुई। वह उस दिन से शिवजी के द्वार पर 'स्वकीर्ति' नामक गण होकर स्थित रहने लगा।

बीसवां अध्याय

(शिव के गणों तथा असुरों का युद्ध करना तथा कृत्या का जन्म और जलंधर के साथ युद्ध।)

व्यास जी बोले—सर्वज्ञ सनत्कुमार जी यह तो आपने परम पावन भगवान शंकर की एक अद्भुत तथा अनोखी कथा सुनाई है। अब कृपा करके यह बताइये कि उस अद्भुत पुरुष से छूट कर राहु कहां चला गया? तब सनत्कुमार जी ने कहा कि उससे छूटने पर वह बर्बर नाम से विख्यात हो गया तथा अपना नया जन्म पाकर अपने को धन्य मान धीरे-धीरे जलंधर के पास गया और सारी कथा सुनाई। यह सुनकर जलंधर को बड़ा क्रोध आया और उसने सब दैत्यों को सेना सजाकर युद्ध की आज्ञा दी। कालनेमि और शुम्भ निशुम्भ आदि सभी महाबली दैत्य तैयार हो युद्ध के लिए सन्नद्ध होने लगे। महाप्रतापी जलंधर के साथ युद्ध के लिए निकल पड़ा। उसके आगे महर्षि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शुक्र तथा छिन्न सिर राहु चला। फिर तो बड़े ही अपशकुन हुए। उसी समय जलंधर का मुकुट खिसक कर सिर से पृथ्वी पर गिर पड़ा तथा आकाश में मेघ छा गए। ऊपर इन्द्रादि सभी देवता एकत्र हो कैलाश पर शिवजी के पास पहुंचे तथा कहा कि आपने जलंधर से युद्ध करने के लिए विष्णु को भेजा था परन्तु वे उसके अधीन हो गए तथा लक्ष्मी सहित उसके घर में निवास कर रहे हैं तथा हमें भी वहीं रहना पड़ रहा है। अब वही सागर पुत्र आपसे युद्ध करने के लिए आ रहा है अतएव आप उसे मार कर हमारी रक्षा कीजिए। देवताओं से यह सुन शिवजी ने विष्णु को बुलाया। शीघ्र ही विष्णु जी आ उपस्थित हुए। तब शिवजी ने पूछा हे भगवन् आपने युद्ध में जलंधर का संहार क्यों नहीं किया और बैकुण्ठ छोड़ कर आप उसके घर कैसे चले गए? यह सुन विष्णु ने हाथ जोड़ नम्रता पूर्वक शिव से कहा कि उसे आप का अंशी तथा लक्ष्मी का भ्राता होने के कारण मैंने नहीं मारा। वह बड़ा ही वीर तथा देवताओं में अजेय है। मैं सत्य कहता हूं कि उसे कोई नहीं मार सकता। इसी पर मुग्ध होने पर मैंने उसके घर में स्वयं निवास करने का वर दिया है तथा इसी कारण मैं वहां रहता हूं। विष्णुजी के इन वचनों को सुनकर भक्त पालक भगवान् शिवजी हंस पड़े तथा कहा अगर आप ऐसा कहते हैं तो मैं उस दैत्य को अवश्य मारूंगा। आप उस दैत्य को अब मरा हुआ ही समझिये तथा निश्चिन्त होकर अपने घरों को जाइये। इस पर देवता प्रसन्न होकर प्रस्थान कर गए। इसी समय पराक्रमी जलंधर अपनी विशाल सेना सहित पहुंचा तथा उसने कैलाश को घेर लिया। दैत्यों के नाद और कोलाहल से शिवजी क्रुद्ध हो गए। उन्होंने अपने नंदी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आदि गणों को युद्ध करने की आज्ञा दी। कैलाश के समीप भीषण युद्ध होने लगा। दैत्य अनेकों प्रकार से अस्त्र शस्त्र बरसाने लगे। भेरी, मृदंग, शंख और वीरों तथा हाथी, घोड़ों और रथों के शब्दों से शब्दित हो पृथ्वी कांपने लगी। युद्ध में कटकर मरे हुए हाथी, घोड़ों और पैदलों का पहाड़ लग गया। रक्त मांस का कीचड़ उत्पन्न हो गया जिससे युद्ध भूमि अगम्य हो गई। दैत्यों के आचार्य शुक्र अपनी मृत संजीवनी विद्या से सब दैत्यों को जिलाने लगे। यह देख शिवजी के गण व्याकुल हो गए और जाकर शुक्राचार्य की बात कह सुनाई। यह सुन भगवान शिव क्रोध से तमतमा उठे तथा उनके मुख से एक भयंकर कृत्या उत्पन्न हुई जिसकी दोनों जंघाएं ताल-वृक्ष के समान थीं। वह युद्ध भूमि में जा सब असुरों का भक्षण करने लग गई तथा युद्ध भूमि के समीप विचरते भृगुजी को अपनी योनि में बन्द कर लिया तथा फिर स्वयं भी अन्तर्ध्यान हो गई। शुक्र के गुप्त हो जाने से दैत्यों का मुख मलिन हो गया और वे युद्धभूमि छोड़ भागने लगे। इस पर उनके शुम्भ-निशुम्भ और कालनेमि आदि सेनापतियों ने भागते हुए वीरों को रोककर शिवगणों पर बड़ा कठिन प्रहार किया और ऐसे ही शिवजी ने नन्दी आदि तथा कार्तिकेय तथा गणेश आदि ने भी अपने गणों को रोक-रोक दैत्यों के साथ भीषण युद्ध आरम्भ कर दिया तथा उन पर तीक्ष्ण प्रहार करने लगे।

इक्कीसवां अध्याय

(देवों तथा असुरों का संग्राम तथा दोनों ओर के वीरों का आपस में द्वन्द्व युद्ध और गणेश तथा कार्तिकेय की पराजय।)

सनत्कुमार जी कहते हैं—इस समय शिवजी के गण प्रबल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

थे और उन्होंने जलंधर के शुम्भ-निशुम्भ और महासुर काल-नेमि आदि को पराजित कर दिया। यह देख सागर सुत जलंधर एक विशाल रथ पर जिस पर लम्बी पताका लगी हुई थी, चढ़ कर युद्ध भूमि में आकर घनघोर गर्जना करने लगा। इधर शंकर के गण भी युद्ध में तत्पर होकर गर्जने लगे। इस प्रकार दोनों सेनाओं के हाथी, घोड़े, रथ, शंख, भेरी तथा दोनों ओर के वीरों के सिंहनाद से पृथ्वी व्याप्त हो गई। इसके बाद जलंधर ने कुहरे के समान बाणों को फेंककर पृथ्वी से लेकर आकाश तक व्याप्त कर दिया। नंदी को पांच, गणेश को पांच, वीरभद्र को एक साथ ही बीस बाण मारकर उनके शरीर को छेद दिया और मेघ के समान गर्जने लगा। यह देख कार्तिकेय ने भी दैत्यराज जलंधर को अपनी शक्ति उठाकर मारी जिसके आघात से वह पृथ्वी पर गिर पड़ा परन्तु वह इतना शक्तिशाली था कि शीघ्र ही उठ पड़ा और क्रोधित हो कार्तिकेय पर अपनी गदा का प्रहार किया। ब्रह्म वरदान की सफलता के लिए शंकर पुत्र कार्तिकेय पृथ्वी पर सो गये। गणेश और नंदी भी व्याकुल हो पृथ्वी पर गिर गये। वीरभद्र का सिर प्रहार के कारण फट गया और बहुत सा रक्त बहने लगा। वीरभद्र व्याकुल हो धाराशायी हो गये। वीरभद्र को पृथ्वी पर गिरा देख शिवजी के गण भय के मारे चिल्लाते हुए भाग गये।

बाईसवां अध्याय

(शिव तथा जलंधर का युद्ध। शिवजी द्वारा भीषण संग्राम तथा युद्ध भूमि में कई राक्षसों का काम तमाम होना तथा घस्मर का वध होना।)

सनत्कुमार जी बोले—अब रौद्ररूप भगवान् शंकर उन वीर गणों के साथ नंदी पर चढ़कर हंसते हुए युद्ध भूमि में आये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उनको आता देख पराजित गण फिर युद्ध भूमि में लौट आये और सिंहनाद करते हुए अपने आयुधों से दैत्य पर प्रहार करने लगे। भीषण रूप धारी रुद्र को देख दैत्य भागने लगे। युद्ध में अपने दैत्यों को हारता देख जलंधर हजारों बाण छोड़ता हुआ शंकर की ओर दौड़ा। इतने में शंकर जी ने जलंधर के सब बाणों को काटकर अपने गणों को निर्भय कर दिया तथा अपने बाणों की आंधी से दैत्यों को भयभीत कर दिया। खड्गरोमा नामक दैत्य को अपने फरसे से मार डाला। बलाहक का सिर भी काट दिया तथा इसी बीच घस्मर भी मारा गया। किसी को शिवजी के बैल ने मारा तथा अनेक उनके तीक्ष्ण बाणों के प्रहार से मर गये। यह देख जलंधर शुम्भादिक दैत्यों को धिक्कारने और भयभीतों को धैर्य देने लगा। दैत्य सेना ने पलायन किया। तब महा क्रुद्ध जलंधर शिवजी को अपनी ओर ललकारने लगा तथा साथ ही एक साथ सत्तर बाणों को मार शिवजी को बींध दिया। बहुतों के ऊपर बाणों से प्रहार किया। शिवजी उसके बाणों को काटते रहे। यहां तक कि उन्होंने जलंधर की ध्वजा, छत्र तथा धनुष को भी काट दिया। धनुष के कट जाने से जलंधर ने गदा उठाई। शिवजी ने एक प्रचंड बाण मारकर उसकी गदा के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। तब उसने समझा कि शंकर उससे अधिक बलवान हैं। अतएव उसने गन्धर्वी माया उत्पन्न कर दी जिससे अनेकों गन्धर्व तथा अप्सराओं के गण प्रकट हो गए। वेणु तथा मृदंगादि बाजों के साथ नृत्य और गान होने लगा। इससे अपने गणों सहित रुद्र भी मोहित हो एकाग्र हो गए। उन्होंने युद्ध बंद कर दिया फिर तो काम मोहित हो जलंधर बड़ी शीघ्रता से शंकर का रूप धारण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर वृषभ पर बैठ पार्वती के पास जा पहुंचा। उधर जब पार्वती ने अपने पति शंकर को आते देखा तो अपनी सखियों का साथ त्याग कर आगे आ गईं। उन्हें देखते ही कामातुर जलंधर का वीर्यपात हो गया और उस पतन से वह जड़ भी हो गया। गौरी ने उसे दानव समझा। वह अन्तर्ध्यान हो उत्तर की ओर मानस पर चली गईं। तब वहां पार्वती को न देख जलंधर फिर शिवजी की ओर लौटा। उधर पार्वती ने विष्णु को बुलाकर दैत्य का कृत्य बताया और पूछा कि क्या आप इससे अवगत हैं? भगवान् ने उत्तर दिया मुझे आपकी कृपा से सब ज्ञात है आप जो आज्ञा दें मैं उसे पूर्ण करूंगा। जगत् माता ने कहा कि उस दैत्य ने जो मार्ग खोला है उसका मार्ग अनुसरण करना सर्वथा उचित है। मैं तुम्हें आज्ञा देती हूं कि तुम भी जाकर उसकी पत्नी के पतिव्रत्य धर्म को भ्रष्ट करो तभी यह दैत्य मरेगा। पार्वती की यह आज्ञा पाते ही विष्णु जी छल करने के लिए जलंधर के नगर की ओर चल पड़े।

तेईसवां अध्याय

(विष्णु द्वारा जलंधर का रूप धारण कर जलंधर की पत्नी वृन्दा के पास पहुंचना तथा उसे प्रलोकित करना।)

व्यासजी ने पूछा—हे सर्वज्ञ सनत्कुमार जी अब कृपा करके यह बताइये कि भगवान् ने वहां जाकर क्या किया तथा जलंधर की पत्नी वृन्दा ने किस प्रकार अपने धर्म का त्याग किया। सनत्कुमार जी बोले—जलंधर के नगर में पहुंच विष्णु ने उसकी पतिव्रता स्त्री का तप भंग करने का विचार किया। वे उसके नगर में एक उद्यान में जाकर विश्राम करने लगे तथा रात को स्वप्न में वृन्दा को दर्शन दिये। तब वृन्दा ने रात में स्वप्न देखा कि उसका पति नग्न होकर सिर पर तेल लगाये महिष

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पर चढ़ा हुआ है। वह काले रंग की पुष्पों की माला पहने हुए है तथा उसके चारों ओर हिंसक जीव मंडरा रहे हैं। वह सिर मुड़ाये अन्धकार में दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान कर रहा है। उसने अपने नगर को डूबा हुआ तथा अन्य अनेक भयानक स्वप्न देखे। तत्काल ही वृन्दा जाग उठी तथा स्वप्न पर विचार करने लगी। इतने में उसने उदित उस सूर्य को देखा तो पाया कि वह कान्तिहीन है तथा उसमें एक छिद्र भी है। इसे उसने अपना अनिष्ट जाना। वह भयभीत हो सर्वत्र अशान्ति को प्राप्त हुई। इसके बाद अपनी दो सखियों के साथ उपवन में गई, परन्तु वहां भी किसी प्रकार की शान्ति तथा सुख न प्राप्त कर सकी। तब वह स्त्री वन में गई। वहां भी उसकी उत्सुकता बनी रही और उद्विग्न हो उठी। उसने वहां सिंह के समान ही भयंकर राक्षसों को देखा, जिससे उसकी कातरता का अन्त न रहा, वह भयभीत होकर भागने लगी। परन्तु उसी क्षण उसके पास अपने शिष्यों सहित शान्त मौनी तपस्वी आ गया। भयभीत वृन्दा उसके गले में हाथ डाल उससे अपनी रक्षा की याचना करने लगी। मुनि ने अपनी एक ही हुंकार से उन राक्षसों को भगा दिया। वृन्दा को आश्चर्य हुआ वह भय से मुक्त हो मुनि को हाथ जोड़ कर प्रणाम करने लगी। कृतज्ञता ज्ञापन किया। फिर उस मुनि से अपने युद्ध रत पति का हाल जानना चाहा। मुनि ने मौन हो ऊपर से नीचे तक देखा। वे अभी कुछ कहना ही चाहते थे कि उसी समय दो वानर मुनि के समक्ष प्रगट हो गए तथा मुनि ने ज्योंही संकेत किया वे आकाश में उड़कर चले गए तथा जलंधर का सिर तथा कवंध लिए मुनि के सामने आ गए। अपने मृत पति का सिर देख वृन्दा मूर्छित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

होकर गिर पड़ी तथा अनेक प्रकार से दारुण विलाप किया। इसके पश्चात उस मुनि से कहा कि हे कृपा निधान! आप मेरे इस पति को जीवित कर दीजिए। तब मुनीश्वर ने कहा—हे देवी यह युद्ध में शिवजी के द्वारा मारा गया है इसलिए जीवित नहीं हो सकता। जिसको शिवजी ने मार दिया उसको कौन जीवित कर सकता है। परन्तु शरणागत की रक्षा करना सनातन धर्म है इस कारण कृपा करके मैं इसे जिलाये देता हूं। वह मुनि तो साक्षात विष्णु थे जिन्होंने यह माया फैला रखी थी। वे जलंधर को जीवित कर स्वयं अन्तर्ध्यान हो गए। सागर पुत्र ने उठकर वृन्दा का आलिंगन किया और मुख चूमा। वृन्दा भी पति को जीवित देख अत्यन्त हर्षित होती हुई और अब तक की सब बातों को मात्र स्वप्न समझती हुई अपने पति को आलिंगन बद्ध कर लिया। इसके पश्चात वृन्दा सकाम हो बहुत दिनों तक उस वन में रमण करती रही। एक बार के सुख एवं संभोग काल के अन्त में उन्होंने विष्णु को देखकर उन्हें धिक्कारती हुई बोली—हे पराई स्त्री से रमण करने वाले विष्णु! तुम्हारे शील को धिक्कार है। मैंने जान लिया है कि वे मायावी तपस्वी तुम्हीं थे। हे व्यास जी! ऐसा कह वह बहुत अधिक क्रोधित हो उस पतिव्रता वृन्दा ने अपने तेज को प्रकट करते हुए शाप दिया कि जो तुमने मुझे माया रूपी दो राक्षस दिखाये थे वही दोनों तुम्हारी स्त्री का हरण करेंगे और उसके विरह में दुःखी होकर तुम वानरों की सहायता से वन में भ्रमण करोगे और यह सर्पेश्वर जो तुम्हारा शिष्य बना है यह वहां भी तुम्हारा साथी रहेगा। ऐसा कहती हुई पतिव्रता वृन्दा विष्णु के मना करने पर भी अग्नि में प्रवेश कर गई। ब्रह्मा आदि देवता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आकाश से उसकी संगति देखते रहे। वृन्दा के शरीर का तेज पार्वती के शरीर में चला गया और आकाश में जय-जय शब्द होने लगा। पतिव्रता के प्रभाव से वृन्दा ने मुक्ति प्राप्त की।

चौबीसवां अध्याय

(महाबली जलंधर द्वारा शंकर से भीषण युद्ध तथा शंकर द्वारा उसका वध।)

व्यासजी बोले—हे पुत्र! इसके पश्चात युद्ध में क्या हुआ तथा वह दैत्य कैसे मारा गया। कृपा कर उस वृत्तान्त को मुझे बताएं। सनत्कुमार जी बोले—जब गिरिजा वहां से अदृश्य हो गईं और गंधर्वी माया भी विलीन हो गई, तब भगवान शिव चैतन्य हो गए। उन्होंने लौकिकता व्यक्त करते हुए बड़ा क्रोध किया तथा जलंधर से युद्ध करने लगे। जलंधर शंकर के बाणों को काटने लगा। परन्तु जब और अधिक काट न पाया तो उसने उन्हें मोहित करने के लिए माया की पार्वती बना अपने रथ पर बांध लिया जो शुम्भ-निशुम्भ द्वारा बध्यमान थी तथा विलाप कर रही थी। जब अपनी प्रिय पार्वती को इस प्रकार कष्ट में पड़ा देखा तो उन्होंने अग्नि के समान क्रोधित तथा भयंकर रूप धारण किया। अब उनके इस रौद्र रूप को देख कर किसी दैत्य की हिम्मत उनके सामने खड़े होने की न थी। जलंधर की सारी माया क्षण मात्र में ही नष्ट हो गई। संग्राम में चारों ओर हा-हाकार मच गया। भागते हुए शुम्भ-निशुम्भ को उन्होंने शाप दिया कि तुम पार्वती को मार रहे थे इसलिए तुम्हें अब मैं न मारूंगा, तुम्हें तो केवल गौरी ही मारेगी। शिवजी के ऐसा कहने पर जलंधर क्रोधित हो अग्नि के समान प्रज्वलित हो उसने शंकर पर घोर बाण बरसा कर पृथ्वी पर अन्धकार पैदा कर दिया। तब उस दैत्य की ऐसी चेष्टा देखकर शंकरजी बड़े

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ही क्रोधित हुए तथा उन्होंने चरणांगुष्ट से बनाये हुए सुदर्शन चक्र को चलाकर उसका सिर काट लिया। एक प्रचंड ध्वनि के साथ उसका सिर धरती पर गिर पड़ा तथा महान हाहाकार होने लगा। अंजन पर्वत के समान उसके शरीर के दो खंड हो गए। उसके रुधिर से सारी युद्ध भूमि लाल हो गई। शिवाज्ञा से उसका रक्त और मांस महारौरव में जाकर रक्त का कुण्ड हो गया तथा उसके शरीर से तेज निकलकर शंकर के शरीर में वैसे ही प्रवेश कर गया जैसे वृन्दा का तेज गौरी के शरीर में प्रविष्ट हुआ था। जलंधर को मृत्यु को प्राप्त देख देवता, गंधर्व और सर्प प्रसन्न हो उठे।

पच्चीसवां अध्याय

(जलंधर के वध पर देवताओं द्वारा भगवान शंकर की विभिन्न प्रकार से स्तुति तथा युद्ध कला की प्रशंसा।)

सनत्कुमार जी बोले—अब ब्रह्मादि देवताओं ने सिर झुका कर भगवान शिव की बड़ी अर्चना की तथा कहा—हे प्रभो! आप प्रकृति से परे, परब्रह्म और परमेश्वर हैं। आप निर्गुण, निराकार, सबके ईश्वर होकर भी नित्य अनेक कर्मों को करते हैं। हे शंकर! हम ब्रह्मादि आपके दास हैं। हे देवेश, हे नाथ, आप प्रसन्न हों। हमारी रक्षा कीजिये। सनत्कुमार जी कहते हैं कि जब सब देवादि ने इस प्रकार शिव की पूजा की तो उन्होंने मौन धारण कर लिया तथा देवों को वर दे अन्तर्ध्यान हो गए। महेशाख्यान से शिव जलंधर युद्ध को जो पढ़े और सुनावेगा वह यहां पर सब सुखों को भोग अन्त में गणेश पद प्राप्त करेगा।

छब्बीसवां अध्याय

(विष्णु, मोहननाथ, धात्री, मालती तथा तुलसी का आविर्भाव।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

व्यास जी बोले—हे ब्रह्मा जी के पुत्र ! अब कृपा करके मुझे यह बताइये कि वृन्दा को मोहित कर विष्णु जी ने क्या किया और फिर वे कहां गये ? सनत्कुमार जी बोले—जब देवता स्तुति कर मौन हो गये तब शंकर जी ने प्रसन्न हो सभी देवताओं से कहा—हे ब्रह्मादि देवताओ ! जलंधर तो मेरा ही अंश था। मैंने उसे तुम्हारे लिए नहीं मारा है किन्तु यह मेरी सांसारिक लीला थी। फिर भी आप लोग सत्य वचन बोलें कि वास्तव में आप प्रसन्न हुए हैं कि नहीं ? तब तो ब्रह्मादिक देवताओं के नेत्र हर्ष से खिल उठे तथा उन्होंने शिवजी को वह वृत्तांत सुनाया कि किस प्रकार विष्णु जी ने बड़े प्रयत्न से वृन्दा को मोहित किया तथा वह अग्नि में प्रवेश कर परम गति को प्राप्त हुई। देवताओं ने यह भी कहा कि तभी से वृन्दा की सुन्दरता पर मोहित हुए विष्णु उनकी चिता की राख लपेटे इधर-उधर घूमते हैं। अतएव आप उन्हें समझाइये। क्योंकि यह सारी प्रकृति तथा चराचर उनके अधीन हैं। देवताओं से यह वृत्तांत सुन शिवजी ने उन्हें अपनी माया समझाई और कहा कि यह जगत् तो वास्तव में इसी के अधीन है। उसी से मोहित हो विष्णु भी कामवश हो गये हैं। परन्तु महादेवी उमा त्रिदेवों की जननी तथा सबके परे है। अतएव विष्णु का मोह दूर करने के लिए आप सब उनकी शरण में जाइये। यदि वे प्रसन्न हो जायेंगी तो आपका सब कार्य पूरा हो जायेगा। शंकर जी की आज्ञा से सभी देवता मूल प्रकृति को प्रसन्न करने चले। उनके स्थान पर पहुंचकर उनकी बड़ी स्तुति की। तब यह आकाश वाणी हुई कि हे देवताओ ! मैं ही तीन प्रकार के तीन गुणों से पृथक होकर स्थित होती हूं। सत्य गुण से गौरा, रजोगुण से लक्ष्मी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तथा तमोगुण से ज्योति रूप हूं। अतएव आप सब लोग मेरी आज्ञा से यदि उन देवियों के पास जाओ तो वे तुम्हारे मनोरथों को सिद्ध कर देंगी। यह वाणी सुन देवताओं के नेत्र खुल गये। वे भगवती के वाक्यों का आदर करते हुए गौरी, लक्ष्मी और सरस्वती को प्रणाम करने लगे। सब देवताओं ने उनकी स्तुति की। उनकी स्तुति से प्रसन्न हो तीनों देवियां प्रकट हुईं तथा कुछ बीज देकर कहा कि इसे ले जाकर दे दो तुम्हारे सभी कार्य सम्पन्न हो जायेंगे। ब्रह्मादिक देवता उन बीजों को ले विष्णुजी के पास गये तथा उन्हें वृन्दा की चिता भूमि में डाल दिया। विधात्री के बीज से धात्री, लक्ष्मी के बीज से मालती तथा गौरा के बीज से तुलसी प्रकट हुई। विष्णु जी ने ज्योंही उस स्त्री रूपी वनस्पतियों को देखा कि वे उठ बैठे तथा उनका मोह भंग हो गया और उन्होंने क्षमा-याचना की। धात्री तथा तुलसी से उन्होंने प्रीति की तथा सब देवताओं से नमस्कृत हो अपने लोक वैकुण्ठ में चले गये तथा पूर्वतः शिवजी की भक्ति करने लगे। यह आख्यान शिवजी की भक्ति देने वाला तथा लोक परलोक में सद्गति प्रदान करने वाला है।

सत्ताईसवां अध्याय

(इस आख्यान में शंखचूड़ का जन्म तथा उसकी शिव भक्ति।)

सनत्कुमार जी बोले—हे मुने! अब आप प्रेम पूर्वक शंकर के अन्य चरित्रों को भी सुनिए। इस प्रकार शंखचूड़ नामक एक और दानव था जिसे रण भूमि में शंकर ने अपने त्रिशूल से मारा था। विधाता के पुत्र मरीचि तथा उनके पुत्र कश्यप थे। कश्यप बड़े धर्मात्मा, सृष्टिकारक और ब्रह्माजी की आज्ञा को मानने वाले थे। दक्षजी ने प्रसन्न हो उनको अपनी तेरह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कन्याएं ब्याह दीं जिनकी सन्तानों से संसार भर गया। कश्यप की उन स्त्रियों में एक का नाम दनु था जो परम साध्वी, रूपवती और सौभाग्य शालिनी थी। उस दनु के बहुत पुत्र हुए। उनमें विप्रचित्त नामक एक पुत्र बहुत बली तथा पराक्रमी था। उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम दम्भ था। यह भी बड़ा धार्मिक तथा विष्णु भक्त और जितेन्द्रिय था। पर जब उसके कोई पुत्र नहीं हुआ तो उसने शुक्राचार्य को गुरु बनाकर कृष्ण मंत्र ग्रहण कर पुष्कर तीर्थ में जाकर एक लाख वर्ष तक आसन बांधकर तप किया। उसके तप से तृप्त हो देवता ब्रह्माजी को साथ ले विष्णुजी के पास गये तथा अपनी रक्षा की मांग की। विष्णु ने कहा घबराओ नहीं अभी प्रलय का समय नहीं आया है। मेरा भक्त दम्भ पुत्र प्राप्ति के लिए कठिन तपस्या कर रहा है मैं पहले उसे वरदान द्वारा निवृत्त करूँगा। देवता सन्तुष्ट हो घरों को लौट पड़े तथा भगवान् विष्णु पुष्कर की ओर चल पड़े तथा दम्भ से वर मांगने को कहा। दम्भ ने उनसे उनके समान ही महाबली तथा पराक्रमी पुत्र मांगा जो त्रैलोक्य विजयी तथा देवताओं का विजेता हो। विष्णुजी ने तथास्तु कहा तथा उस उग्र तपस्या से निवृत्त कराया। थोड़े ही समय बाद दम्भ की स्त्री गर्भवती हुई। सुदामा नामक गोप उसके गर्भ में आया। यह वही सुदामा था जो कृष्ण का मित्र था तथा जिसे राधा ने शाप दिया था। समय पर उस साध्वी ने श्रेष्ठ पुत्रको जन्म दिया। मुनियों को बुलाकर उसका जात कर्म कराया गया। तथा उसका नाम शंखचूड़ पड़ा।

अट्ठाईसवां अध्याय

(ब्रह्मा के वरदान स्वरूप तुलसी तथा शंखचूड़ का विवाह तथा मनोकामना की पूर्ति।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सनत्कुमार जी बोले—अब जगत् पिता ब्रह्मा के आदेश से शंख चूड़ पुष्कर में जाकर तपस्या करने लगा। कितने ही दिनों तक उसने एकाग्र मन हो गुरु के आदेशानुसार इन्द्रियों को वश में कर प्राप्त मन्त्रों का जाप किया। जब ब्रह्माजी उसे वर देने आये। उसने ब्रह्मा से वर मांगा कि देवता मुझे जीत न सकें। ब्रह्मा जी ने कहा ऐसा ही होगा। यह कहकर ब्रह्मा जी ने उसे कृष्ण का अक्षय कवच दे दिया और कहा कि तू बद्रिकाश्रम चला जा वहां सकामा तुलसी तप कर रही है तू उससे विवाह कर लेना। शंखचूड़ बद्रिकाश्रम में तुलसी के पास चला गया। सूक्ष्मा जी तुलसी उस पर कटाक्ष करने लगी। शंखचूड़ ने उसका परिचय पूछा तो उसने कहा कि मैं धर्मध्वज की कन्या हूं। तुम कौन हो? यहां से चले जाओ। नारी जाति बड़ी मोहिनी होती है इसलिए उसने अपने को काम होने के दोष से खंडित किया तथा यह भी कहा कि वह यहाँ ब्रह्मा जी की आज्ञा से आया है। मैं दम्भ पुत्र दानव वनु के वंश में उत्पन्न हुआ सुदामा नामक गोप तथा नारायण का पार्षद हूं। इस समय मैं राधिका जी के शाप से दानव हुआ हूं। ऐसा कह शंख-चूड़ मौन हो गया। तुलसी ने कहा कि वही पुरुष संसार में धन्य है जो स्त्रियों से पराजित न हो। तुमने मुझे अपने विचार से पराजित किया। तुलसी के ऐसा कहते ही ब्रह्मा जी वहां पहुंच गये। उन्होंने शंखचूड़ से कहा तुम इसके साथ विवाह क्यों नहीं करते। गन्धर्व रीति से विवाह करो। तुम दोनों स्त्रियों तथा पुरुषों में रत्न हो। दानव ने गन्धर्व रीति से उससे विवाह कर अपने पिता के घर की ओर प्रस्थान किया तथा अनेक सुन्दर स्थानों में जाकर तुलसी संग रमण करने लगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उन्तीसवां अध्याय

(शुक्राचार्य द्वारा शंखचूड़ को असुरों का प्रधान बनाना।)

सनत्कुमार जी बोले—जब इस प्रकार विवाह कर तथा ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त कर शंखचूड़ वापस आया तो दानवों में अत्यन्त प्रसन्नता व्याप्त हो गई। कुल गुरु शुक्राचार्य ने भी शिष्य को श्रेष्ठ आशीर्वाद दिया तथा उसे असुराधिपत्य के पद पर अभिषिक्त किया तथा देव और दानवों के वैर का संक्षिप्त इतिहास बताया। इसे सुनकर शंखचूड़ दानवों तथा दैत्यों की एक महान सेना ले इन्द्रपुरी को विजय करने निकल पड़ा। तब शंख को युद्ध के लिए आया जान देवता भी सेना ले उससे युद्ध करने निकल पड़े। उनका राजा इन्द्र था। देवताओं तथा असुरों का बड़ा भयंकर संग्राम हुआ तथा दानवों के वेग से देव सेना भाग चली। उन्होंने पहाड़ों तथा कन्दराओं में जाकर शरण ली। त्रैलोक्य उसके वश में हो गया। वह यज्ञ भाग भोग स्वयं इन्द्र बन कर सारे जगत पर शासन करने लगा। सूर्य, चन्द्रमा, वायु, कुबेर, यम सभी देवता उसके अधीन हो गये। इस प्रकार कितने ही वर्षों तक उसने सम्पूर्ण भुवनों का राज्य किया। शंखचूड़ गोलोकवासी श्री कृष्ण का बड़ा मित्र व उनकी भक्ति में रत तथा स्वभाव से साधु था। वह पूर्व जन्म के शाप के कारण दानव कुल में उत्पन्न हुआ था। परन्तु उसकी बुद्धि दानवों की सी नहीं थी। उधर राज्य हरण से पराजित देवता ब्रह्मा जी को साथ ले विष्णु जी के पास वैकुण्ठ गये। वहां सबने मिलकर भगवान् विष्णु की स्तुति की तथा दुःखित होकर अपना हाल कहा। उसे सुन भगवान् विष्णु बोले—मैं शंखचूड़ के सब वृत्तान्तों को जानता हूं। पूर्वकाल से ही मेरा बड़ा भक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तथा परम तेजस्वी है। परन्तु आप लोगों को घबराने की आवश्यकता नहीं। मैं इस विषय में शिवजी से बातचीत करूंगा। ऐसा कह विष्णु जी उन्हें अपने साथ ले शिवलोक की ओर चल दिये तथा वहां पहुंच नाना प्रकार से शिवजी की स्तुति की।

तीसवां अध्याय

(देवताओं का ब्रह्माजी के साथ विष्णु लोक में जाना तथा देवों की चिन्ता तथा दुर्दशा का वर्णन।)

सनत्कुमार जी कहते हैं—हे मुनिश्रेष्ठ व्यास जी! इस प्रकार सब देवताओं को साथ ले जब ब्रह्माजी शिवलोक पहुंचे तो उन्होंने देखा कि शिवजी की सभा लगी हुई है और समस्त गण उनको चारों ओर से घेर कर बैठे हुए हैं। मध्य में त्रिनेत्र शंकर बैठे हैं जो त्रिशूल, भस्म तथा रुद्राक्ष से शोभित हैं। उनके शरीर पर सफेद वस्त्र और गले में रत्नों के हार शोभायमान हैं। पार्वती भी वहां शंकर के साथ विराजमान थीं। वे सब शिवजी की सभा में होने वाले सुन्दर नृत्य तथा गान को ओरों की तरह सुनने लगे। अवसर पाते ही विष्णु ने शंकरजी की स्तुति कर कहा—हे प्रभो! हम सभी देवता आपकी शरण में हैं। हम दुखियों की रक्षा कीजिए। हम शंखचूड़ से बहुत पीड़ित हैं। आप जगत्पालक, त्रिलोक के स्वामी तथा शरणागत की रक्षा कीजिए। आप प्रसन्न हों तो हमारा उद्धार हो जाए।

इकत्तीसवां अध्याय

(भगवान शिव द्वारा देवताओं को शंखचूड़ के वध का आश्वासन देकर निश्चिन्त करना।)

सनत्कुमार जी कहने लगे—ब्रह्मादिक देवताओं के साथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विष्णुजी से ऐसी बात सुन करुणानिधान शिवजी ने कहा—शंखचूड़ का इतिहास मुझे अच्छी तरह मालूम है। उसका वध अवश्य होगा। वह पूर्व का सुदामा नामक श्रीकृष्ण का परम भक्त गोप है तथा राधा के शाप के कारण भारत में राक्षस हो राज्य कर रहा है। वह देव द्रोही तो है पर धर्म में बड़ा निपुण है। परन्तु तुम्हें मेरे शासन में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। शंकर अभी ऐसा कह ही रहे थे कि वहां उनकी अनुकूलता के लिए श्री कृष्ण राधा तथा सभी पार्षदों के साथ पहुंच गए। शिवजी की आज्ञा से समीप बैठ गए। श्रीकृष्ण ने उनकी स्तुति करके कहा कि हे नाथों के नाथ मैं जो अपने को सर्वोपरि मानकर विहार करता था, आज अपनी स्त्री सहित शापित हूं। मेरा श्रेष्ठ पार्षद सुदामा नामक गोप भी राधा के शाप के कारण दानव योनि को भोग रहा है। इसलिए आप हम पर प्रसन्न होइये तथा हमारा शापोद्धार कीजिये। श्रीकृष्ण की स्तुति से प्रसन्न हो शंकर ने उन्हें सन्तोष देते हुए कहा—हे गोपिकानाथ! भय को त्याग सुखी हो जाओ। तुम्हारा कल्याण होने वाला है। बारह कल्प में तरुणी राधा के साथ शाप भोग कर तुम फिर अपने धाम को प्राप्त हो जाओगे। सुदामा गोप शंखचूड़ बनकर सभी देवताओं को कष्ट दे रहा है। जिसके कार्य के लिए ब्रह्माजी तथा इन्द्र मेरी शरण में आये हैं। तब शिवजी ने ब्रह्मा और विष्णु से कहा कि आप दोनों भी जाकर देवताओं को समझाओ। मेरा पूर्ण रूप कैलाश पर विराजमान है और मुझमें तथा उसमें कुछ अन्तर नहीं है। जो हम दोनों में भेद करेगा वह कष्ट पावेगा। इसके पश्चात राधा सहित कृष्ण, ब्रह्मा तथा विष्णु भय रहित हो अपने-अपने स्थान को लौट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गए। सभी देवता स्तुति करने लगे। शिवजी ने कहा आप सभी देवता अपने-अपने स्थान को जाओ मैं अवश्य शंखचूड़ को मारूंगा।

बत्तीसवां अध्याय

(पुष्पदंत तथा शंखचूड़ का वार्तालाप। पुष्पदंत का देवताओं के लिये राज्य की मांग तथा शंखचूड़ का मना करना तथा कहना कि पृथ्वी का भोग केवल वीरों द्वारा ही होता है।)

सनत्कुमार जी बोले—अब महा रुद्र महेश ने गंधर्व राज चित्ररथ को अपना दूत बनाकर शंखचूड़ के पास भेजा। जिसका नगर महेन्द्र और कुबेर के भवन के समीप था। वहां पहुँच चित्ररथ ने कहा—हे शंखचूड़—तुम देवताओं का अधिकार दे दो अन्यथा मेरे साथ युद्ध करो। मैं महा रुद्र तुम्हारा वध करूँगा। जैसा हो विचार कर कहो। मेरा नाम पुष्पदंत है। शंकरजी ने जो मुझ से कहा है, वही मैंने अक्षरशः तुमसे कहा है। अब जैसा कहो, मैं वैसा जाकर कह दूँ। तब पुष्पदंत से ऐसा सुनकर शंखचूड़ ने कहा कि मैं देवताओं को राज्य न दूँगा। यह पृथ्वी वीर भोग्या है। मैं देवताओं के पक्षपाती रुद्र को युद्ध दूँगा और जिसके ऊपर आक्रमण हो वह वीर नहीं, अधम है। अतएव मैं पहले ही रुद्र पर आक्रमण करूंगा। मैं वीर यात्रा के विचार से बड़े तड़के ही उधर की यात्रा करूँगा। तुम जाकर ऐसा ही रुद्र से कहो। पुष्पदंत अपने स्वामी शिवजी के पास लौट आया तथा जैसा उसने कहा था वैसा ही आकर सुना दिया।

तेतीसवां अध्याय

(शिवजी का शंखचूड़ के वध के लिये प्रस्थान तथा रुद्र सूर्य एवं चन्द्रमा का उनके साथ गमन।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ऋषि सनत्कुमार जी बोले—तब दूत की बातों को सुनकर भगवान् शिव को बड़ा ही क्रोध आया और उन्होंने अपने वीर भद्रादिक गणों को बुलाकर दोनों कुमारों और भद्रकाली सहित शंखचूड़ से युद्ध करने के लिए आज्ञा दी। सभी वीर शस्त्रादि से युक्त हो युद्ध करने के लिये चल पड़े। कार्तिकेय तथा गणेश जी सारी सेना के अधिपति के आठों भैरव, आठों वसु, एकादश रुद्र और द्वादश सूर्य बड़ी शीघ्रता से शिवजी से जाकर मिले। अग्नि, चन्द्रमा, विश्वकर्मा, अश्विनीकुमार, कुबेर, यम, नल, कुबेर, वायु, वरुण और बुध सभी मांगलिक ग्रह तथा महाबली काम शंकरजी के साथ आये तथा अपने वीर साथियों सहित सौ भुजाओं वाली देवी भद्रकाली स्वयं उपस्थित हुईं जिसकी जिह्वा एक योजन तक चलायमान हो रही थी। उसके हाथ में एक योजन लम्बा त्रिशूल था तथा एक योजन लम्बी शक्ति धारण किये थी। तीन करोड़ योगिनी तथा तीन करोड़ विकट डाकनियां उसके साथ थीं। इस प्रकार शिव ने अपनी सेना को सजा कर युद्ध के लिये प्रस्थान किया। चन्दभागा नदी के तट पर एक मनोहर वृक्ष के नीचे अपना आसन जमाया।

चौंतीसवां अध्याय

(प्रातःकाल के समय शंखचूड़ का अपने-अपने साथी राजाओं के साथ युद्ध के लिए प्रस्थान तथा जाने से पहले गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करना।)

सनत्कुमार जी बोले—हे मुनिराज! अब सवेरे उठकर शंखचूड़ ने अपनी पत्नी तुलसी से कहा—आज प्रातः ही मैं युद्ध के लिए जाऊंगा मुझे आज्ञा दो। रात में उसने पत्नी से बहुत बातें कीं तथा दोनों काम-क्रीड़ा करते हुए सुख के सागर में मग्न रहे। प्रातः उठकर शंखचूड़ ने यथोचित अपने पुत्र को राज्य-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भार सौंपा तथा रोती हुई प्रिया को समझाकर जो युद्ध के लिए बार-बार मना कर रही थी, अनेक प्रकार से समझाया तथा अपने सेनापति को बुला सेना तैयार करवाई। क्षण मात्र में ही उसके दुर्मद वीर युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गए। मौर्य, कालिक और कालिकेय आदि सभी उनके साथ चले। अगणित शूरवीरों की कई सेनाएं उसके साथ चलीं। कुल मिलाकर तीन लाख अक्षौहिणी सेना युक्त वह अपने मंडलीक शिविर से प्रस्थान कर गया। गुरुजनों को आगे कर वह रत्न जटित श्रेष्ठ रथ पर सवार हो युद्ध करने चल पड़ा। चलते-चलते पुष्पभद्रा नदी के तट पर अक्षय वट के नीचे उसने अपना डेरा लगाया तथा वहां से शिवजी की सेना का निरीक्षण किया।

पैंतीसवां अध्याय

(शंख द्वारा शिवजी के पास अपने दूत को भेजना तथा रुद्र सेना में जाकर उनके वास्तविक आने के कारण को जानना।)

सनत्कुमार जी ने आगे कहा—तब दानवेन्द्र ने अपने दूत को भगवान् शिव के पास भेजा तथा कहलाया कि मैं शंखचूड़ आ गया हूं, आपकी क्या इच्छा है कृपा करके सत्य ही कहिए। यह सुन महादेव जी अति प्रसन्न होकर बोले—हे दूत! तुम जाकर अपने स्वामी एवं राजा से कह दो कि देवताओं से वैर त्याग उनके साथ सन्धि कर उनका राज्य उनको वापस दे दो ताकि तुम अपने राज्य पर राज करो और देवता अपने राज्य पर। प्राणियों का विरोध बुरा होता है और फिर यह विरोध तो देवताओं के साथ है जिसका परिणाम अच्छा नहीं है। जब शिवजी ने इस प्रकार श्रुति-स्मृति की बहुत सी बातें कह दूत को समझाया तो तर्क का ज्ञाता दूत बहुत सी बातें भवितव्यता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से मोहित तथा वश में होकर कहने लगा—हे देवों के अधिपति ! आपने जो कुछ भी कहा वह महा सत्य है। परन्तु मेरा भी एक निवेदन है। सारा दोष असुरों का तो नहीं है। दोष देवताओं में भी है। मधुकैटभ दैत्य के सिर को किसने काटा ? त्रिपुर के साथ युद्ध कर उसको क्यों भस्म किया गया ? आप केवल देवताओं का पक्ष ही क्यों लेते हैं जबकि आप सुर-असुर दोनों के ईश्वर हैं। आप जैसे महात्मा के लिए यह बड़ी लज्जा की बात है जो हमारे से वैर करते हैं। तब इस प्रकार के वचनों को सुन शिवजी ने कहा कि हम तो केवल भक्तों के अधीन हैं। जैसी उनकी इच्छा होती है वैसा कार्य कर लेते हैं तथा किसी से पक्षपात नहीं करते। देवों के कार्य करने में युद्ध करने में कोई लज्जा नहीं है। तुम ऐसा ही जाकर शंखचूड़ से कह दो। यह कहकर शंकर जी मौन हो गए तथा दूत अपने स्वामी शंखचूड़ के पास चला गया।

छत्तीसवां अध्याय

(देव तथा दानवों का एक साथ पराक्रम से युद्ध करना तथा सेना का विशाल सेना से आपस की शक्ति का टकराना।)

सनत्कुमार जी कहते हैं—उस दूत ने जाकर शिवजी की कही गई सभी बात विस्तार से राजा शंखचूड़ को बताई। इस पर शंख ने युद्ध को ही उचित समझा तथा तत्काल अपने वीरों को युद्ध के लिए आज्ञा दे दी। इधर भगवान् तथा सर्वज्ञ शिव जी ने भी अपनी सेनाओं को युद्ध के लिए सन्नद्ध किया। स्वयं भी तैयार हो गए। अनेक प्रकार की रण भेरियां बज उठीं। दोनों पक्षों के वीर भयानक युद्ध करने लगे। महेन्द्र का वृषपर्वा से, दम्भ का विष्णु से, कालासुर का कालका से, गोकर्ण का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हुताशन से, कालकेय का कुबेर से, मय का विश्वकर्मा से, भयंकर का मृत्यु से, संहार का यम से तथा कालम्बिक का वरुण के साथ युद्ध होने लगा। अभी तक काली और पुत्रों सहित शिवजी वृक्ष के नीचे ही बैठे रहे। शंखचूड़ भी रत्न सिंहासन में अभी तक दूर ही बैठा था। देवताओं तथा असुरों ने प्राणासंहर्ता युद्ध किया। अनेक आयुधों का प्रयोग तथा प्रहार हुआ। क्षण मात्र में ही पृथ्वी कटे हुए वीरों तथा टूटे हुए वाहनों से पट गई।

सैंतीसवां अध्याय

(शंखचूड़ का अनुपम संग्राम तथा वीरभद्र और कालिका द्वारा संहारकारी युद्ध का करना।)

सनत्कुमार जी बोले—अब सब देवता दानवों से पराजित हो इधर-उधर भागने लगे तथा कई भाग कर शंकर जी की शरण में चले गए। यह सुन भगवान् शंकर बड़े ही कुपित हो उठे तथा स्वयं युद्ध करने चले। उन्होंने पहुंचते ही सैकड़ों अक्षौहिणी सेना का नाश कर दिया। काली ने भी दैत्यों का नाश कर उनका रक्तपान शुरू कर दिया। सैकड़ों लक्ष हाथियों और दानवों को पकड़-पकड़ काली अपने मुख में डालने लगी। स्कंद के बाणों से करोड़ों दानवों का संहार हुआ तथा जो बचे वे भाग खड़े हुए। इस प्रकार स्कंद तथा भगवती की विजय हुई। तब अपनी सेना का इस प्रकार संहार होता देख दानवराज शंखचूड़ स्वयं युद्ध के लिए तैयार हुआ। उसने कान तक प्रत्यंचा खींच कर बाण छोड़ने शुरू किये तो युद्ध स्थल में घोर अन्धकार छा गया। अब उसकी मार से शिव पुत्र स्कंद पीड़ित होने लगे तथा उसने अपनी माया फैला दी। अब उसकी माया को शिव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के गण और देवता न जान सके। उस समय महाबली शंखचूड़ ने स्कंद का धनुष काट दिया, साथ ही अपनी घातक शक्ति उठा कर उसकी छाती पर मारी। उसके प्रहार से क्षण भर के लिए स्कंद जी को मूर्छा छा गई। तत्पश्चात मूर्छा से उठ कर स्कंद अपने माता-पिता का ध्यान कर भयंकर युद्ध करने लगा। उसने अपने बाणों से शंखचूड़ के रथ में छेद-छेद कर दिये तथा उसके कवच, किरीट, कुण्डल तथा वाहन तक को भी छेद डाला तथा विष बुझी ऐसी शक्ति उसकी छाती पर मारी जिससे शंखचूड़ पृथ्वी पर गिर पड़ा तथा बहुत काल तक बेहोश रहा। तत्पश्चात उसने भी उठकर कार्तिकेय पर अपनी शक्ति का प्रहार किया जिससे कार्तिकेय मूर्छित हो गया। इस प्रकार उन्होंने ब्रह्म वाक्य को प्रमाणित किया। काली उन्हें अपनी गोद में उठा कर शिवजी के पास ले गई। भगवान शंकर ने उन्हें जीवित कर दिया, वे उठकर फिर युद्ध के लिए चल पड़े। उधर वीरभद्र शंखचूड़ से लड़ रहे थे। दोनों ने एक दूसरे के बाणों को काटा और परस्पर आघात किया। परन्तु शंखचूड़ ने एक शक्ति को चला वीरभद्र को पृथ्वी पर गिरा दिया। वे शीघ्र ही उठ पड़े तथा दूसरा धनुष ले युद्ध करने लगे। उसी समय काली फिर युद्ध क्षेत्र में लौट आई तथा कार्तिकेश्वर की रक्षा करते हुए दानवों का भक्षण करने लगी। दोनों पक्षों के वीर विकट संग्राम करने लगे।

अड़तीसवां अध्याय

(शंखचूड़ तथा चंडिका का आपस में एक दूसरे पर क्रोध करना तथा भिन्न-भिन्न आयुधों का एक दूसरे पर प्रयोग करना।)

सनत्कुमार जी बोले—अब देवों ने भयानक सिंहनाद किया जिससे कितने ही दानव मूर्छित गिर पड़े। विकराल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दांतों वाली चंडिका वीरों का रक्तपान करने लगी। तब काली को इस प्रकार युद्ध रत देखकर दैत्यराज शंखचूड़ स्वयं युद्ध करने के लिए आया। काली ने प्रलय की आग के समान घोर बाण वर्षा की। परन्तु राजा शंखचूड़ ने वैष्णव अस्त्र चलाकर उसे शांत कर दिया तब देवी ने नारायण अस्त्र चलाया। शंखचूड़ ने रथ से उतर कर उसे प्रणाम किया, जिससे वह अस्त्र स्वयं ही शांत हो गया। तब देवी ने ब्रह्मास्त्र को छोड़ा पर दानवेन्द्र इस बार भी रथ से उतरकर उससे बच गया। इस अस्त्र से बचकर उसने देवी पर घोर बाण वर्षा की। देवी उन सभी बाणों का चर्वण करने लगी तथा साथ ही दानवों को भयभीत करने के लिए घोर गर्जना करने लगी। इस प्रकार एक ओर तो काली तथा दूसरी ओर से शंखचूड़ भीषण संग्राम करने लगे। तब काली ने पाशुपत अस्त्र का प्रयोग किया परन्तु उसकी अमोघता की रक्षा के लिए आकाशवाणी ने उसे रोक दिया। क्योंकि उससे उसकी मृत्यु नहीं लिखी थी। भद्रकाली पाशुपत अस्त्र को रोककर सौ लाख दानवों को चाट गई। इसके पश्चात् भद्रकाली शंखचूड़ को खाने को दौड़ी। तब दानवेन्द्र ने रौद्रास्त्र का प्रयोग कर उसका वेग रोका तथा अन्य भी कई दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किया। परन्तु अति क्रोधित भगवती ने सभी को खंड-खंड कर दिया। वह शंखचूड़ द्वारा चलाये गये चक्रादि को भी निगल गई। फिर बड़े वेग से उठकर देवी ने उस पर मुष्टि का प्रहार किया तो दानवराज सात चक्कर खाकर गिर पड़ा। परन्तु क्षण भर बाद ही वह उठकर देवी से बाहु युद्ध करने लगा। परन्तु फिर अपनी माता की बुद्धि से उसने स्वयं को ऐसा करने से रोका। देवी ने उसे पकड़कर और बार-बार घुमा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर बड़े क्रोध से ऊपर को फेंक दिया। प्रतापी शंखचूड़ बड़े वेग से ऊपर कूद गया। फिर नीचे आकर भद्रकाली को प्रणाम कर उनके आगे खड़ा हो गया। इसके बाद वह अपने रथ पर जा बैठा तथा भद्रकाली क्रोध से दानवों का रक्तपान करने लगी। उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे देवि! अभी समर में तुम्हें एक लाख दानवों का रक्तपान और करना है। तुम उन्हें शीघ्र भक्षण करो और संग्राम में दानवराज का वध करने की चेष्टा न करो क्योंकि यह तुमसे अबध्य है। इस पर काली दैत्यों का रक्तपान करने लगी तथा इसके पश्चात् शिवजी के पास सारा हाल बताने चली गई।

उन्तालीसवां अध्याय

(शिवजी द्वारा शंखचूड़ की सेना का संहार तथा भद्रकाली का फिर रणक्षेत्र में आकर युद्ध करना तथा दानवों के रक्त पान के लिए अपने मुख का विस्तार करना।)

सनत्कुमार जी बोले—काली से ऐसा सुन शिवजी स्वयं अपने गणों के साथ युद्ध करने के लिये निकल पड़े। वृषभ पर चढ़े महेश्वर युद्ध भूमि में जाकर खड़े हुए तो उनको देखकर शंखचूड़ ने रथ से उतर कर सिर झुका उन्हें प्रणाम किया तथा बाद में रथ पर चढ़ कर युद्ध करने लगा। सौ वर्ष तक उसने शिवजी से युद्ध किया। मेघों के समान अपार वर्षा की। शंख-चूड़ ने बड़े ही दारुण बाण चलाये पर शिवजी ने उन सबको काट दिया। पश्चात महा शिवजी ने अति कुपित हो उसके अंगों में शस्त्रों का प्रहार किया। तब दानव ने महा कुपित हो शिवजी पर चक्र का प्रहार किया। शिवने अपनी गदा व अपनी मुष्टिक मार कर चूर्ण कर दिया। तब उसने अपनी गदा चलाई, शिवजी ने उसे भी तोड़ दिया। इस प्रकार वह विभिन्न अस्त्रों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से लड़ता रहा तथा शिवजी ने उसके सभी अस्त्रों को काट दिया। इतने में ही महाकाली वहां पर फिर आ पहुंची तथा अपना मुख फैलाकर बहुत से राक्षसों का भक्षण करने लगी। वीरभद्र तथा नन्दीश्वर ने बहुत से दैत्यों का नाश किया। बचे बचाये बहुत से वीर भाग गये।

चालीसवां अध्याय

(सुख तथा कल्याण की देने वाली शंखचूड़ के वध की कथा। इस कथा को सुनने पर परमधाम की प्राप्ति।)

सनत्कुमार जी बोले—जब अपनी सेना का इस प्रकार संहार हो रहा था तो दानव को बड़ा क्रोध आया। उसने मेघवत् बाण बरसाये। फिर अदृश्य हो अपनी माया का भय दिखाने लगा, जिसे देवताओं में से कोई न समझ सका, पर भगवान् शिव कुछ भी ध्यान न देकर उस पर दिव्य प्रहार करने लगे। इससे उसी क्षण उसकी माया नष्ट हो गई तब महाबली शिव ने वह त्रिशूल उठा लिया जिसका सहन करना तेजस्वियों के लिए कठिन था। परन्तु उसी समय आकाशवाणी हुई—हे महेश्वर! अभी इस त्रिशूल को क्यों चलाते हो? आप वेद मर्यादा नष्ट न करें। जब तक इसके पास विष्णु का उत्तम कवच तथा पतिव्रता स्त्री है तब तक न इसके पास जरा आयेगी न मृत्यु। इस पर शिवजी ने अपना त्रिशूल वहीं रोके रखा। शिवजी की इच्छा से उसी समय विष्णु जी वहां पर आ गए तथा ब्राह्मण का वेष बना शंखचूड़ से भिक्षा मांगी। शंखचूड़ ने पूछा क्या चाहिए। इस पर उस वृद्ध ने कहा मैं इस प्रकार नहीं मांगूंगा। पहले आप प्रतिज्ञा कीजिए। शंखचूड़ ने प्रतिज्ञा की। ब्राह्मण ने कहा—मैं आपका कवच चाहता हूं। दानवराज

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ने प्राणों से भी प्यारा कवच ब्राह्मण को दे दिया। हरि ने माया से शंखचूड़ का कवच ले लिया। फिर उसी रूप से वे तुलसी के पास पहुंचे। माया विशारद भगवान् ने देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिए उसके साथ शक्ति से विहार किया। फिर तो शिवजी को अवसर मिला। उन्होंने विजय नामक एक प्रज्वलित शूल उठाकर शंखचूड़ पर चला दिया जिससे उसका संहार हो गया। आकाश में दुन्दुभी बजने लगी। गन्धर्व गाने और अप्सराएं नृत्य करने लगीं। शिवजी के ऊपर फूलों की वर्षा हुई और मुनिगण शिवजी की प्रशंसा करने लगे। राजा शंखचूड़ भी शाप से मुक्त हो अपने पूर्व रूप को प्राप्त हुआ। उसकी हड्डियों से एक प्रकार की शंख जाति पैदा हुई। जिसका जल शिवजी को छोड़ सभी पर चढ़ाना ग्राह्य है। विशेषतः विष्णु तथा लक्ष्मी को तो शंख का जल बहुत प्रिय है। इसके बाद शिवजी स्कंद सहित अपने लोक को चले गये। शंकर जी का यह चरित्र सब दुःखों को हरने वाला, लक्ष्मी देने वाला और सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

इकतालीसवां अध्याय

(विष्णु का शंखचूड़ का रूप धारण कर तुलसी के पास जाना तथा उसके शाप के फलस्वरूप पाषाण के रूप को प्राप्त करना।)

व्यासजी बोले—हे मुनिश्रेष्ठ! विष्णुजी ने तुलसीजी में अपनी शक्ति का आधान कैसे किया कृपा करके विस्तार से कहिये। सनत्कुमार जी बोले—देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिये भगवान् ने शंखचूड़ का रूप धारण करके ही तुलसी के साथ रमण किया था। इस कार्य में परम पिता शंकर तथा माता पार्वती की आज्ञा का पालन करना भी उनका ध्येय था।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आकाशवाणी की आज्ञा से प्रेरित हो विष्णु ने शंखचूड़ का कवच हरण किया तथा ब्राह्मण का रूप त्याग तथा शंखचूड़ का रूप धारण कर वे शीघ्र ही तुलसी के पास जा पहुँचे। अपने स्वामी को आया देख तुलसी अत्याधिक प्रसन्न हुई और पति के चरणों को धोकर प्रणाम कर रोने लगी। कृतज्ञता ज्ञापन करती हुई कटाक्ष सहित युद्ध का समाचार पूछने लगी। विष्णु ने हंसकर अमृत सदृश वचनों में युद्ध का विवरण बताया तथा कहा कि ब्रह्माजी ने हम में और शंकर में सन्धि करा दी है इसलिये मैं घर चला आया हूँ तथा ऐसा कह विष्णु ने शयन कर उसके साथ विहार भी किया। उनके इस प्रकार के रमण को देखकर तुलसी को भ्रम हुआ और वह तर्क करने लगी। उसने विष्णु से पूछा सत्य बता, तू कौन है? मेरा सतीत्व धर्म क्यों दूर किया तथा इस प्रकार कपट से क्यों भोगा? तुलसी के शाप के भय से विष्णु ने अपनी सुन्दर मूर्ति बनाली। परन्तु तुलसी ने वह रूप देख चिन्हों से उनको विष्णु जाना और अपना पतिव्रत भंग हुआ जान क्रोध किया। तुलसी ने कहा—हे विष्णु! तुम में दया नहीं है। तुम्हारा मन पाषाण के समान है। तुमने मेरे सतीत्व धर्म को भंग कर मेरे स्वामी का वध कराया है। तुम बड़े कर्म हीन भी हो। अतएव मैं तुम्हें शाप देती हूँ कि तुम पत्थर हो जाओ। तुम्हें तो दया सागर कहना व्यर्थ है। ऐसा कह कर वह विलाप करने लगी। उसको विलाप करते देख भगवान् विष्णु ने शिव का स्मरण किया। शंकर जी शीघ्र वहां प्रकट हो गये। उन्होंने उस शोकाकुल दुखिया को जगत् की नश्वरता समझाते हुए उसकी तपस्या का फल दिया और कहा यह शरीर त्याग कर तुम दिव्य देह धारण कर हरि के साथ विहार करो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

साथ ही तुम्हारा यह रूप छूटने पर भारत में गंडकी नदी होगी और देव पूजन के साधन से कुछ काल में तुम मेरे वर से प्रधान तथा तुलसी नाम से विख्यात होगी और स्वर्ग, पृथ्वी तथा पाताल में तुम सर्वदा हरि की समीपता पाओगी तथा वैकुण्ठ में हरि के साथ क्रीड़ा करती रहोगी और सभी वृक्षों में तुम्हारा स्थान श्रेष्ठ होगा। तुमने जो हरि को शाप दिया है उसके प्रभाव से तुम गण्डकी के तट पर ये हरि पाषाण रूप से स्थित रहेंगे तथा वहां पैने दांतों वाले करोड़ों कीड़े उस शिला को छेदकर उनमें चक्र बना देंगे और उसका नाम शालिग्राम होगा। इस प्रकार समझा शिवजी अन्तर्ध्यान हो गए। तुलसी ने भी प्रसन्न हो उस शरीर का त्याग किया तथा दिव्य देह को पाया। कमलापति उसके साथ वैकुण्ठ गए तथा वह गण्डकी नदी हो वह निकली। विष्णु उसके तट के पत्थर हो गए। उस पत्थर में अनेक कीड़े अनेक प्रकार के छिद्र कर देते हैं तथा जो जल पत्थर में गिरता है वह बड़ा ही पुण्यदायक होता है। विष्णुजी के माहात्म्य सहित यह आख्यान बड़ा ही भुक्ति तथा मुक्ति-दायक है।

बयालीसवां अध्याय

(हिरण्याक्ष नामक राक्षस का भगवान् शिव द्वारा वध तथा उस वध की कथा का सनत्कुमार द्वारा सुन्दर रूप से वर्णन।)

नारद जी बोले—हे ब्रह्मन्! शिवजी के महान आख्यानों को सुनकर मुझे अभी भी तृप्ति नहीं हुई है। अतः उन महान आत्मा के चरित्र तथा भक्तों के आश्रित हुई उनकी सुख देने वाली लीला को और आगे बताइये। ब्रह्मा जी कहने लगे—जलंधर वध की कथा सुन व्यास जी उन मुनीश्वर से इस प्रकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पूछने लगे। तब सनत्कुमार जी कहने लगे—हे व्यास जी! अब मंगलदायक भगवान् शिव के उस आख्यान को सुनो जिसमें अंधकासुर दैत्य ने शंकर जी के गाणपत्य पद को प्राप्त किया। पहले तो उसने शंकर से बड़ा भयानक युद्ध किया तथा बाद में सात्विक भाव से सदैव उनकी भक्ति की। यह सुन व्यास जी ने पूछा—हे भगवन्! यह अन्धक कौन था? किसके कुल में उत्पन्न हुआ था, किसका पुत्र था? यह कृपया विस्तार से बताइये। ब्रह्मा जी बोले यह सुन सनत्कुमार जी कहने लगे—एक समय देवताओं के चक्रवर्ती भक्तों पर कृपा करने वाले शंकर अपने गणों और पार्वती के साथ कैलाश से काशी में विहार करने आये तथा काशी को अपनी राजधानी बना भैरव नामक वीर को उसका रक्षक बनाकर पार्वती सहित मनुष्यों की सुखदायक लीला करने लगे। इसी प्रकार एक समय शंकर जी मंदराचल पर्वत पर जाकर जब पार्वती के साथ विहार करते रहे तब उनके अनेक विहारों में जब पार्वती ने अपने कनक कमल सी प्रभा वाले हाथों से शंकर के नेत्र बंद कर लिए तो क्षण भर के लिए चारों ओर महान् अंधकार छा गया तथा महेश्वर का शरीर स्पर्श करने से पार्वती के दोनों हाथों में मद का जल निकलने लगा। पुनः एक बड़ा कराल मुख भयंकर क्रोध परायण अंधाविरूप, जटाधारी, कृष्ण वर्ण, विकृत तथा बहुत से रोमों वाला मनुष्य उत्पन्न हो नाचने, गाने, हंसने, रोने और घोर शब्द करने तथा जीभ से चाटने लग गया। उसके अद्भुत दर्शन से गौरी को बहुत आश्चर्य हुआ तथा भगवान् से पूछा कि यह घोर पुरुष कौन है? सनत्कुमार जी बोले—तब सारी सृष्टि को उत्पन्न करने वाले भगवान् शिव ने हंसते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हुए कहा कि हे देवि ! यह तुम्हारा वही पुत्र है जो तुम्हारे द्वारा मेरे नेत्रों को बंद करने के फलस्वरूप मेरे माथे के पसीने से अभी कुछ क्षण पहले प्रगट हुआ है तुम्हीं ने इसको रचा है अतः तुम अपनी सखियों तथा गणों सहित बुद्धि से विचार करके जैसे उचित हो इसकी रक्षा करो। इस बात को सुन पार्वती ने दया करके तथा अनेक प्रकार के उपायों से उसकी रक्षा का विधान किया। उसी समय हिरण्य नेत्र नामक दैत्य अपने बड़े भाई की संतति वृद्धि देख पुत्र कामना से शंकर जी को प्रसन्न करने, तप करने वन में गया। उसके तप से प्रसन्न हो शंकर जी ने उसे दर्शन दिए तथा वर मांगने को कहा। उसने कहा कि मैं वंश रहित हूं मेरे कोई पुत्र नहीं है। शिवजी ने तथास्तु कहकर उसे पुत्र प्राप्ति का वर दिया और कहा मेरा अंधक नाम पुत्र तेरे ही समान बलवान है तू उसको अपने पुत्र के रूप में मुझसे मांग ले। उस दैत्य ने शिव पार्वती की प्रदक्षिणा करके उस पुत्र को प्राप्त किया तथा अपने साथ ले घर वापस आ गया। उसके पश्चात् उसने देवता, पृथ्वी तथा पातालवासियों को जीतकर अपने देश में मिला लिया। फिर तो दैत्यों के राजा हिरण्याक्ष के आतंक से देवता व्याकुल हो गए। उन्होंने सर्वात्मक यज्ञमय काल वराह रूप प्रधान विष्णु जी की आराधना कर उन्हें पाताल भेजा। उन्होंने वहां जाकर अपनी घोर दाढ़ों के प्रहार से पिशाचरों की सेना को मथकर सुदर्शन चक्र से हिरण्याक्ष का सिर काट उसके राज्य पर अंधक का अभिषेक किया। फिर अपनी कराल दाढ़ों पर पृथ्वी को उठा जल पर स्थापित किया। हिरण्यनेत्र के मरने से सब देवता और मुनि तथा अन्य जीव सुखी हो गए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तेतालीसवां अध्याय

(हिरण्यकशिपु दानव का जगत् में प्रसिद्धि प्राप्त करना तथा भगवान् द्वारा अपने नृसिंह रूप की सिद्धि।)

व्यास जी बोले—हे सनत्कुमार जी! जब देव द्रोही दैत्य मर गया तो उसके बड़े भाई हिरण्यकशिपु ने क्या किया? कृपा करके उसका आख्यान भी मुझे सुनाइए। ब्रह्माजी ने कहा। सनत्कुमार जी व्यास जी के यह वचन सुन शिवजी के चरण कमलों का स्मरण करके बोले—जब भगवान् ने उसके भाई को मार दिया तो वह हिरण्यकशिपु क्रोध और शोक से युक्त हो भगवान् से वैर करने लगा। उसने प्रजा को दुःख देने के लिए क्रदनप्रिय वीर असुरों को आज्ञा दी। वे अपने स्वामी की आज्ञा शिरोधार्य कर देवताओं और प्रजाओं का क्रदन करने लगे। उनके आतंक से लोकों का नाश होने लगा। देवता लोग स्वर्ग छोड़ पृथ्वी पर भाग गए। हिरण्यकशिपु अपने मरे हुए भाई को जल दानादि देकर उसकी सन्तानों आदि को सांत्वना देते हुए अपने को अजर, अमर, अजेय तथा अप्रतिद्वन्द्वी जानकर एक छत्र राज करने लगा। इसके बाद मंदराचल की गुफा में जाकर एक अंगूठे के बल खड़े होकर, भुजा उठा, आकाश में दृष्टि बांध बड़ा ही घोर तप करने लगा। इसी बीच देवताओं ने दैत्यों को जीतकर अपने अधिकार में कर लिया। उधर जब हिरण्यकशिपु के तप तेज से निकली अग्नि सब लोकों को बांधने लगी तो उससे तप्त होकर देवता दुःखी होकर ब्रह्माजी के पास गए। ब्रह्माजी ने हिरण्यकशिपु को वर दिया कि उसे मृत्यु का भय नहीं होगा, वह न किसी अस्त्र, पाश, वज्र, सूखा वृक्ष, गिरीन्द्र, जल तथा अग्नि से मर सकेगा तथा देवता, दैत्य, मुनि,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सिद्ध आदि सृष्टि का कोई भी जीव उसे मार न सकेगा। वह स्वर्ग, नरक, पृथ्वी, ऊपर, नीचे, दिन, रात में भी न मर सकेगा। तथापि उसके वर का तप देकर भी ब्रह्मा ने उसे चालीस हजार वर्ष तक राज्य करने के लिए असुराधिप बना दिया। उसने राज्य पा उन्मत हो त्रिलोकी को ही नष्ट कर देना चाहा। उसने सभी धर्मों का नाश कर रण में प्रसन्नता व्यक्त की तथा सभी देवताओं को जीत लिया। इन्द्रादिक सभी देवता व्याकुल हो ब्रह्माजी की आज्ञा ले क्षीर सागर में विष्णुजी के पास पहुंचे तथा विष्णु की अनेक प्रकार से स्तुति कर अपना दुःख कहा। उन्हें सुन विष्णुजी ने सब देवताओं को आश्वासन देकर अपने-अपने धाम जाने की आज्ञा दी तथा कहा कि वे अवश्य ही दैत्य का वध करेंगे। इसके बाद विष्णु नृसिंह रूप धारण कर दैत्य की नगरी में गए। दैत्यों से प्रबल युद्ध किया। तब उन अतुल प्रभाव वाले नृसिंह भगवान् को देखकर दैत्य पुत्र प्रह्लाद ने अपने पिता से उस जगन्मय की बड़ी प्रशंसा की तथा कहा कि आप उनकी शरण जाइये। उस पर दैत्य ने पुत्र को दुरात्मा कहा और अपने वीर दैत्यों को नृसिंह को पकड़ लाने की आज्ञा दी। परन्तु वे उनके समीप जाने से ही ऐसे दग्ध हो जाते थे जैसे घास के तिनके। तब दैत्य राज स्वयं युद्ध करने गया परन्तु नृसिंह के आगे उसकी एक न चली तथा उन्होंने उसे पकड़ अपनी जंघाओं पर रख उसके मर्म स्थानों को अपने नाखूनों से फाड़ डाला तथा उसके सभी अंगों को चूर्ण-चूर्ण कर दिया। इसके बाद प्रह्लाद को बुलाकर उसके पिता के राज्य पर बिठाया गया। सभी देवता प्रसन्न हुए तथा विष्णु जी अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लोक को चले गए। तब व्यास जी बोले--अब हमें आप वह कथा सुनायें जिसमें अंधक को प्रभाव प्राप्त हुआ तथा वह गणाधिपत्य बना तथा उसने शिवजी से युद्ध किया।

चवालीसवां अध्याय

(अंधक का अनेक प्रकार से तप करना तथा मनवांछित वर प्राप्त करना तथा भगवान शंकर को अनुचित वचनों का कहना।)

सनत्कुमार जी बोले--एक समय खेल-खेल में हिरण्याक्ष पुत्र अंधक से उसके भाइयों ने हंसी करते हुए कहा कि अब तुम्हारा क्या प्रयोजन है? तुम्हारा पिता तो मूर्ख था जिसने तपस्या करने के पश्चात भी तुम्हारे जैसे बिना आंख वाले तथा विकृत पुत्र को प्राप्त किया। तुम राज्य पाने योग्य कदापि नहीं हो, भला दूसरे से उत्पन्न पुत्र भी कभी राज्य प्राप्त कर सकता है। उन भाइयों की इस प्रकार की बातें सुन उस समय तो वह कुछ नहीं बोला तथा उन्हें नाना प्रकार के मीठे वचनों से शान्त किया परन्तु रात्रि में निर्जन वन में तप करने चला गया। वहां जाकर उसने दस हजार वर्ष तक मंत्र जपते हुए घोर तप किया। जब इतने पर भी कुछ परिणाम न निकला तो उसने अपने शरीर को जला देना चाहा। तब उसके तप से ब्रह्मा जी को आश्चर्य हुआ तथा वे उसे वर देने गये तथा कहा कि हे दानव! मैं तुझ पर प्रसन्न हूं जो चाहे वर मांग। उसने कहा--मेरे निर्दयी भाइयों ने मेरा राज्य छीन लिया है अतः वे प्रह्लादादि सभी मेरे सेवक हो जायें। मुझ अंधे के दिव्य नेत्र हो जायें, इन्द्रादि सभी देवता मुझे वर देवें तथा मुझे कोई मार न सके चाहे वह देवता, गन्धर्व, यक्ष, सिद्ध, किन्नर और मनुष्य तथा नारायण और सर्वमय शंकर ही क्यों न हों। उसकी ऐसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दारुण वाणी सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। तुम वर को पलट कर मांगो। तब उसने कहा कि ऊपर कहे गए सभी वर तो मुझे प्राप्त हों ही परन्तु शंकर को छोड़कर मुझे और कोई न मार सके। अब ब्रह्मा जी ने तथास्तु कह दिया तथा उनके ऐसा कहते ही अंधक स्वस्थ हो गया और तपासन से उठकर अपने घर वापस आया। उसने सभी देवताओं तथा दैत्यों को जीत लिया। ब्रह्मा के वर प्रभाव के कारण सभी उसके अधीन हो गए। उसने वैदिक धर्म का तिरस्कार किया। धन की मदान्धता ने उसे कुमार्गी बना दिया। इसके बाद जब एक समय वह अपनी सेना सहित मंदराचल पर्वत पर गया तो वहां की स्वर्ण युक्त शोभा से आकृष्ट हो उसने अपने लिए एक अद्भुत गृह का निर्माण करना चाहा तथा मन्दिर के शिखर पर उसने अपनी इच्छा पूर्ण भी कर ली। वह वहां कुछ दिन तक ठहरा हुआ था तो उसके मन्त्रियों ने आकर सुनाया कि परम सुन्दरी स्त्री एक जटा जूटधारी, त्रिशूलधारी पुरुष के पास बैठी है उसके समीप एक बैल भी है। इस प्रकार उसके मन्त्रियों ने महेश तथा पार्वती का परिचय अंधक को दिया तथा यह भी कहा कि आप उसे चलकर देख लें। उसने कहा कि मैं उसे क्यों देखने जाऊं तुम्हीं सब जाकर उसे मेरे लिए माँग लाओ। तब अंधक की आज्ञा को शिरोधार्य कर उसके दुर्योधन, वैधस, हस्ति नामक मन्त्रियों ने मन्दिर की गुफा में बैठे हुए शिवजी के पास जा उनके रूप आदि का अनेक प्रकार से हास्य करते हुए उनकी भार्या को अंधक के लिए मांगना शुरू कर दिया। इसे सुनकर शिवजी हंसने लगे तथा कहा—अरे दुष्टो! तुम सब मुझसे ऐसा क्यों कहते हो मेरे तो कोई माता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पिता भी नहीं हैं और न किसी से कोई वैसा रिश्ता ही है। फिर भी मैं चराचर का स्वामी यहां गुप्त रहकर अपना एक पाशुपत व्रत समाप्त कर रहा हूं। यह सर्व व्यापिनी सिद्धरूप मेरी स्त्री है। इसमें सब कुछ सहन करने की योग्यता है। जो उचित हो इसी से मांगो। ऐसा कह तपस्वी वेषधारी शिवजी चुप लगा गये। इसके बाद वे दूत अंधक के पास लौट आये और जो कुछ शिवजी ने कहा था वह सब कह सुनाया तथा और भी बहुत सी बातें बढ़ा-चढ़ाकर कहीं। उन्हें सुन मंदबुद्धि दैत्य क्रोध से जल उठा और देव प्रतिकूलता तथा काम बिह्वल हो स्वयं वहां जाने को तैयार हो गया।

पैंतालीसवां अध्याय

(पार्वती देवी के गणों तथा अन्धक का युद्ध तथा अनेक प्रकार के दैत्यों का वध होना।)

सनत्कुमार जी कहने लगे—तब अंधक ने मदिरापान किया तथा मदमस्त हाथी की चाल चलता हुआ अपनी सेना को ले वहां पहुंचा जहां शिव के वीरों ने गुफा का मार्ग अवरुद्ध कर रखा था। परन्तु उन गणों की मार खाता हुआ गिरता पड़ता काम की ज्वाला से दग्ध अंधक आगे बढ़ा। शिव के गणों ने उसका आने का अभिप्राय भी पूछा और उसने बताया भी। वह आगे बढ़ना चाहता ही था कि शिवजी के गणों ने उसे मार-मार कर भगा दिया। उसके प्रबल वीर दैत्यों में विरोचन, बलि, बाणासुर, सहस्त्रबाहु और प्रह्लाद आदि ने भी उसकी ओर से युद्ध किया, किन्तु वे सभी तथा और भी शम्बर तथा वृषभादिकों को शिवजी के गणों ने मार कर भगा दिया। उस समय भी भयानक युद्ध हुआ। उसमें रुंड नाचने लगे तथा मेद मांस तथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चर्बी पीकर गीदड़ आनन्द करने लगे। रुधिर की कीच मच गई। इस कांड से शिवजी को किंचित खेद हुआ तथा वे कहने लगे—देखो यह संसार की भी क्या विलक्षणता है कि स्त्री प्रसंग से कभी-कभी स्वजनों तथा अपने ही लोगों से इस प्रकार युद्ध करना पड़ता है मानो वे पराये हों। कहां तो मैं पाशुपत व्रत पूर्ण करने आया था और कहां मैं इस संकट में फंस गया तथा मेरा बहुत सा बल नष्ट हो गया इसलिए मैं एक दूसरा व्रत आरम्भ करूंगा। पार्वती से ऐसा कह शंकर उठकर किसी दूसरे वन में तपस्या करने चले गए तथा वहां जाकर फिर से पाशुपत व्रत को आरम्भ किया। पार्वती शंकर की प्रतीक्षा में मंदराचल पर्वत पर बनी रहीं। जब उन्हें शंकर की अनुपस्थिति में बड़ा ही एकाकीपन महसूस हुआ तथा वीरक पुत्र उनकी रक्षा करता रहा। उसी समय एक दिन काम पीड़ित अंधक पार्वती की गुफा में प्रविष्ट हो गया। वीरक उससे युद्ध करने लगा। पांच सौ पांच दिन उसने खाना पीना निद्रा त्यागकर ससैन्य वीरक के साथ युद्ध किया। सम्पूर्ण दैत्यों ने वीरक को घेर लिया। उसका निकलना कठिन हो गया। तब संकट आया देख गुफा में बैठी पार्वती ने अपनी सभी सखियों सहित एकाग्र मन हो ब्रह्मा विष्णु सहित इन्द्रादि देवताओं को याद किया तो समस्त देवता स्त्री वेष में वहां पर उपस्थित हो गए। कारण यह था कि राजाओं के अन्तःपुर में कोई पुरुष जा नहीं सकता था। निदान उन स्त्रियों ने भेरी तथा युद्ध वाद्य बजाये। उन वाद्यों को सुन पार्वती का गण वीरक जो उस समय मूर्छित था क्षण में सचेष्ट हो उठा तथा महारथियों के शस्त्रों को ग्रहण कर उन्हीं के शस्त्रों से उन्हें मारने लगा। फिर तो हाथ में दण्ड

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लिए ब्राह्मी क्रोध से परिपूर्ण शंख, चक्र, धनुष धारे हाथ में बाहु दण्ड लिए नारायणी तथा हाथ में वज्र लिए इन्द्राणी अर्थात सभी देवताओं के नाम काली देवियां अपने-अपने आयुधों से युक्त हो उस दैत्य की अपार सेना के मुकाबले खड़ी हुईं। उसी समय ब्रह्मा की आज्ञा से अति पराक्रमी वीरक को सेनापति बनाया गया। सेनापति वीरक की सरंक्षता में अपनी सखियों सहित पार्वती ने अभूतपूर्व युद्ध किया। अंधक महाव्यूह की रचना कर हजारों वर्षों तक इस युद्ध को करता रहा। एक हजार वर्ष पश्चात महेश्वर भी वहां आये। उन्होंने पार्वती को युद्ध करते देखा। पार्वती की नजर उन पर पड़ी। उन्होंने सिर झुकाया तथा उन्हें हृदय से लगाकर गुफा में प्रवेश किया। दैत्यों का युद्ध वेग भी अब शांत हो गया। उसके बाद उस दैत्य ने शंकर के पास सन्देश भेजकर उनसे उनकी स्त्री की भी मांग की तथा यह भी कहलवाया कि तुम तपस्वी नहीं मेरे शत्रु हो। यह सुन शंकर के क्रोध की सीमा नहीं रही। उन्होंने उसके दूत को बहुत सी बातें समझाकर उसे युद्ध का सन्देश भेज दिया।

छयालीसवां अध्याय

(शम्भु तथा अंधक में भयंकर संग्राम तथा दानव दल का नाश और सम्पूर्ण दानव राज्य का नष्ट भ्रष्ट हो जाना।)

सनत्कुमार जी ने आगे कहा—तब महाबली गिल नामक दैत्य को आगे कर अंधक शिवजी से युद्ध करने आया। वह शंकर की गुफा के पास पहुंच भयंकर शब्द करने लगा तथा शिव तथा पार्वती पर वज्र का प्रहार करने लगा। तब त्रिशूल धारी शंकर क्रोधित हो अपने गणों सहित विष्णु आदि देवताओं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को बुला दैत्यों से युद्ध शुरू कर दिया। परन्तु उस प्रबल दैत्य ने सबको निगल लिया। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, सूर्य और चन्द्रमा आदि समस्त देवता उस दैत्य के पेट में चले गए। केवल शंकर का गण वीरक शेष बचा। तब वह भागकर शंकर जी के पास आया तथा सारा हाल कहा। उसे सुन शंकर ने सामवेद का गान किया तथा अट्टहास किया जिससे क्षण भर में सारा अंधकार दूर हो गया। उधर उस दैत्य ने नंदी को निगल लिया। इसे देख शिव वृषभ पर चढ़कर मंत्र जपते हुए निगले हुओं को उगलवाने के लिए युद्ध में आये। उन्होंने अपने तीव्र बाणों से उस दैत्य के मुख से विष्णु सहित ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य तथा चन्द्रमा आदि को उगलवाया। देवताओं की सेना फिर युद्ध करने लगी। उधर शुक्राचार्य युद्ध में मारे गए दैत्यों को अपनी संजीवनी विद्या से जीवित करने लगे। ऐसा करते देख शिवजी के गण उन्हें पकड़कर शिव के पास ले गए। शिवजी ने उन्हें निगल लिया। शुक्र के नष्ट होने से दैत्यों का बल अधिक क्षीण हो गया तथा देवताओं ने उन्हें मार-मारकर व्याकुल कर दिया। इस प्रकार बहुत समय तक हिरण्यकशिपु के वंश में उत्पन्न दैत्य महेन्द्र से युद्ध करके हार गया। परन्तु अब तक भी दैत्यों का प्रधान युद्ध में डटा रहा। इन्द्र ललकार-ललकारकर उसे मारने लगे। परन्तु वह भी अपने पैने बाणों से रुद्र तथा गिरिजा को पीड़ित करता रहा तथा सैकड़ों प्रकार की माया से कपट युद्ध करने लगा। देवताओं से अवध्य होने के कारण उसने अब शंकर को अपनी माया द्वारा जीतना चाहा। समस्त अंधक युद्ध भूमि में व्याप्त हो घोर युद्ध करने लगे। परन्तु शिवजी ने अपने त्रिशूल से दैत्य को मारकर बहुत प्रकार से छेद डाला।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उसके सारे शरीर से रक्त ही रक्त बहने लगा। उस रक्त प्रवाह से अनेक दैत्य उत्पन्न हो युद्ध करने लगे। इधर विष्णु ने भी शंकर के कर्ण से बहुत से गण उत्पन्न कराये। फिर भयानक युद्ध आरम्भ हुआ। देवताओं ने वंदना कर क्षुधा से व्याकुल चंडिका देवी का स्मरण किया। वह दैत्यों के शरीर से निकले रक्त का पान करने लगी। तब अपने कुल का सनातन क्षात्र धर्म स्मरण कर वह दैत्य शंकर जी पर पुनः घोर बाण बरसाने लगा। शिवजी ने त्रिशूल उठा उसका हृदय छेदते हुए उसे ऊपर उठा लिया। यह होते ही युद्ध शांत हो गया। सूर्य की प्रचंड किरणों ने इसकी काया जला दी। शरीर जर्जर हो गया। ऊपर से मेघों ने जल बरसाकर उसे और भी पीड़ित कर दिया। एक ओर से हिमखंड उसे अलग ही विदीर्ण करने लगा। फिर भी उस दैत्य के प्राण नहीं निकले। तब वह करुणा सागर परम दयालु भगवान् शंकर की स्तुति करने लगा। शिवजी ने प्रसन्न हो उसे गणपति का पद दे दिया। युद्ध समाप्त हो गया। चारों ओर से शिवजी के लिए जय-जयकार होने लगा। भगवान् शंकर पार्वती को साथ ले प्रसन्न हो पुनः गुफा में चले गए। वहां उन्होंने अपना अंश स्थापित कर परम प्रसन्नता प्राप्त की।

सैंतालीसवां अध्याय

(शिव द्वारा शुक्र को निगला जाना तथा इस प्रकार शुक्राचार्य का अंत होना।)

व्यास जी बोले—हे मुनिश्वर! अब आप मुझे बताइये कि शंकर जी के उदर में स्थित महायोगी शुक्राचार्य ने क्या किया? शंकर जी ने उसे भस्म कर दिया या वे अपने तेज से बच गये। शिवजी के उदर से निकल कर मृत्यु को जीतने वाली संजीवनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विद्या को कैसे प्राप्त किया। शंकर के त्रिशूल से नष्ट होकर अंधक ने किस प्रकार गणपति के पद को प्राप्त किया। तब शंकर के चरणों का स्मरण कर सनत्कुमार जी कहने लगे—हे व्यास जी! यह तो शंकर जी का ही प्रभाव था जो अत्यन्त बलशाली दैत्यों के आगे देवताओं की विजय हुई, अन्यथा अन्धक कोई साधारण दत्य नहीं था। जब वह शंकर जी से हारने लगा तब भागकर शुक्राचार्य जी की शरण में गया और अपनी गुरुवंदना द्वारा उन्हें प्रसन्न कर दैत्यों की रक्षा करने के लिये बुला लिया। शुक्राचार्य ने आकर विद्येश का स्मरण कर मरे हुए दैत्यों पर विद्या का प्रयोग किया। उसकी आवृत्ति करते ही दैत्य दानव अस्त्र शस्त्र ले ऐसे उठे जैसे सोते से उठ रहे हों। दैत्य सेना में जान आ गई। तथा वे पुनः भीषण युद्ध करने लगे। यह देख शिव के गण थर्रा गये तथा नन्दी ने जाकर शुक्र का आगमन तथा उनकी विद्या के प्रयोग के बारे में बताया। इस बात को सुनकर शिवजी हंस पड़े तथा नन्दी से कहा तुम अभी जाकर शुक्राचार्य को पकड़ कर मेरे पास ले आओ। फिर तो नन्दीश्वर सिंह के समान गरजता हुआ दैत्य सेना पर टूट पड़ा तथा दैत्यों के मध्य से शुक्राचार्य को पकड़ लिया। दैत्यों ने उन्हें नंदी से छुड़ाने की पर्याप्त कोशिश की पर असफल रहे। नन्दी शुक्राचार्य को पकड़ कर शिव के पास ले आये। शिव ने उच्च स्वर में हाहा-कार करते हुए शुक्र को फल के समान अपने ही मुख में रख लिया।

अड़तालीसवां अध्याय

(उदर में समाये हुए शुक्र का बाहर निकलने का प्रयास तथा लिंग के मार्ग से मुक्ति तथा पार्वती का उसको अपने पुत्र के समान मानना।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

व्यासजी ने पूछा शिवजी के द्वारा शुक्राचार्य के निगल जाने के बाद क्या हुआ तथा अंधक के महाबली दैत्यों ने क्या किया ? सनत्कुमार जी बोले—शिवजी के उदर में स्थित शुक्राचार्य ने बाहर निकलने का बड़ा उद्योग किया। उन्होंने शिवजी के छिद्रों की बड़ी खोज की। सैंकड़ों वर्षों तक खोजने पर उन्हें शिवजी के शरीर में कोई छिद्र नहीं मिला, जिससे वे बाहर निकल सकें। तब शुक्राचार्य शिव के दिये पूर्व मंत्र को जपते-जपते शिव के वीर्य के रूप में उनके उदर पञ्जर से निकल लिंग के मार्ग बाहर आये। शिवजी को प्रणाम किया। पार्वती ने पुत्र मान विघ्न रहित किया। तब लिंग के द्वारा वीर्य के रूप से निकले हुए शुक्र को देखकर दयासागर शिवजी ने कहा—हे भृगु पुत्र ! जिस कारण तुम मेरे लिंग से वीर्य रूप में निकले हो इस कर्म से आज से तुम्हारा नाम शुक्र पड़ा अब जाओ। शुक्र ने शिवजी को प्रणाम किया तथा उनकी स्तुति की और आज्ञा ले पुनः दैत्यों की सेना में चले गये। यह तो शिवजी के उदर से निकलने का वृत्तान्त है। अब उस मंत्र को सुनो जिसे शुक्र ने शिव के उदर में जपा था।

उनन्चासवां अध्याय

(शिव भक्ति के कारण अन्धक को अभय का वरदान मिलना तथा गणपति पद को प्राप्त कर जगत् में सम्मान पाना।)

सनत्कुमार जी बोले—ॐ नमस्ते देवेसाय सुरासुर नमस्कृताय भूत भव्य महादेवाय हरित पिंगल लोचनाय बुद्धि रूपेण इत्यादि मंत्रों को जब शुक्रजी ने शम्भु के पेट में जपा तब वे उत्कट वीर्य के समान शिव लिंग के मार्ग से बाहर आये। प्रथम जन्म के पश्चात् तीन हजार वर्ष पहले वह शुक्र पृथ्वी पर शिव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जी से उत्पन्न हुए। उधर अन्धक शिवजी के त्रिशूल पर सूखते हुए शिवजी की एक सौ आठ परम मूर्तियों का ध्यान करता हुआ उनकी स्तुति कर रहा था। इससे शिवजी ने प्रसन्न हो उसे सब प्रकार के भय से मुक्त कर दिव्य अमृत वर्षा से उसमें प्राण संचरित कर उसे त्रिशूल से उतार, उसका अभिषेक किया और कहा कि मैं तेरी अन्तिम भक्ति से प्रसन्न हूँ, वर मांग। अन्धक हाथ जोड़ कांपता हुआ अपने द्वारा किये अपराधों की क्षमा मांगते हुए माता-पिता रूप शिव तथा पार्वती से भक्ति मांगने लगा। उसे अपने अद्भुत जन्म का पूर्ण स्मरण हो आया। उसके मनोरथ पूरे हो गए। वह अपने माता पिता को गद्गद् हो गया। बुद्धिमान शिव तथा पार्वती ने उसके मस्तक को सूंघा। फिर तो उसने उन प्रसन्न हुए शिवजी से इच्छित वर पाया। यही उस अन्धक का पुरातन गाणपत्य वृत्तान्त है जो उसने महादेवी जी के प्रसाद से पाया था। जो इसे यत्न पूर्वक पढ़ता है उसकी सब कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

पचासवां अध्याय

(शुक्राचार्य द्वारा ज्योतिर्लिंग की स्थापना तथा भगवान् शिव की उपासना द्वारा दुबारा संजीवनी विद्या का ग्रहण करना।)

सनत्कुमार जी बोले—हे व्यास अब शुक्र ने मृत्यु को जीतने वाली संजीवनी विद्या दोबारा कैसे प्राप्त की उसे सुनो। पहले शुक्राचार्य वाराणसी में जाकर प्रभु विश्वनाथ का ध्यान करते हुए तप करने लगे। वहां उन्होंने शिव के ज्योतिर्लिंग की स्थापना कर उसके आगे एक सुन्दर कुँआ बनवाया और बत्तीस सेर पंचामृत से शिवजी का लाख बार स्नान करवाकर फिर सुगंधित पदार्थों, द्रव्यों से स्नान कराया। फिर स्तुति पूर्वक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शिवजी सहस्र नाम तथा और भी स्तोत्रों से शिवजी को प्रसन्न किया। इस प्रकार शुक्राचार्य पांच हजार वर्ष तक शिव की पूजा करते रहे। परन्तु जब इस पर भी भगवान शिव प्रसन्न न हुए तो उहोंने अत्यन्त ही कठिन दूसरे नियमों को ग्रहण किया और भावना रूपी जलों से अत्यन्त चंचल चित्त को शुद्ध करने लगे। हजारों वर्षों तक वे कण तथा धूप पान करते रहे। तब शिवजी प्रसन्न हो वहां प्रकट हुए और शुक्र से बोले—मैं तुम्हारे तप से बड़ा प्रसन्न हूं। तुम्हारी जो इच्छा हो वर मांगो। शुक्र जी ने परम पुलकित हो शिवजी को प्रणाम किया और सिर झुका तथा अंजलि बांध बार-बार शिवजी की स्तुति की। यह स्तुति शिवाष्टक नाम से जानी जाती है तथा बड़ी ही सुन्दर है। शुक्र के उस अष्टक को सुन शिवजी और भी प्रसन्न हो गए तथा स्तुति कर पृथ्वी पर गिरे हुए शुक्र को उन्होंने हाथ से उठा कर आलिंगन बद्ध किया। तुमने जो मेरा ज्योतिर्लिंग स्थापित कर पूजा की है उससे मैं बड़ा ही प्रसन्न हुआ। इस समय जो वर मांगो मैं देने को तैयार हूं। वह भी समय आएगा, जब तुम मेरे शरीर से मेरे उदर में प्रवेश कर मेरी इन्द्रिय-मार्ग से निकल पुत्र भाव को प्राप्त करोगे। यह दुर्लभ वर मैं आज तुम्हें प्रदान करता हूं। इसके अतिरिक्त जिस मृत संजीवनी विद्या को अपने कठोर तप से प्राप्त किया है वह तुम्हें प्रदान करता हूं। इस विद्या द्वारा तुम मरे हुए प्राणियों को जीवित कर सकोगे और जिस कार्य का उद्देश्य कर नियम से जपोगे तो इस सत्येश्वरी विद्या के प्रभाव से तुम्हारे सारे कार्य पूर्ण होंगे। तुम मेरे आशीर्वाद से सूर्य तथा अग्नि का भी अतिक्रमण कर आकाश में विमल तारा होकर एक प्रकाशमान ग्रह भी हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जाओगे तथा तुम्हारे दृष्टिपात से ही तुम्हारे सामने स्त्री तथा पुरुष जो भी यात्रा करेंगे, उन सबके कार्य नष्ट हो जायेंगे। तुम्हारे उदय होने से ही विवाहादिक शुभ कार्य होंगे तथा मनुष्यों के सभी धार्मिक कार्य सफल होंगे। तुम्हारे द्वारा स्थापित ज्योतिर्लिंग की जो पूजा करेगा उनके भी कार्य सिद्ध होंगे। शुक्र को इस प्रकार का वर दे भगवान शिव उस पार्थिव लिंग में लय हो गए।

इक्यावनवां अध्याय

(भगवान शंकर की बाणासुर पर कृपा तथा भगवान् कृष्ण का सदाशिव के साथ युद्ध।)

व्यास जी बोले—हे सनत्कुमार जी! अब कृपाकर मुझे वह कथा सुनाइये जिसमें भगवान् शिव ने बाणासुर को गणपति पद दिया था। तब सनत्कुमार जी यों कहने लगे—ब्रह्मा जी के बड़े पुत्र मरीचि एक श्रेष्ठ प्रजापति हो चुके हैं जिनके बड़े पुत्र महामुनि कश्यप ब्रह्मा जी के बड़े भक्त और सृष्टि के बढ़ाने वाले हुए। उन कश्यप मुनि की तेरह स्त्रियां थीं। दो दक्ष की कन्या थीं। उनमें सबसे बड़ी दिति के दैत्य तथा शेष कन्याओं से चराचर सहित देवताओं की उत्पत्ति हुई। तब बड़ी स्त्री दिति से बड़ा पुत्र हिरण्यकशिपु और छोटा हिरण्याक्ष नामक दो महाबली पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें हिरण्कशिपु को ह्राद, अनुह्राद, संह्राद और प्रह्लाद नातक चार पुत्र क्रमशः उत्पन्न हुए। जिनमें सबसे छोटा प्रह्लाद जितेन्द्रिय और भगवान् विष्णु का ऐसा परम भक्त हुआ कि कोई भी दैत्य उसका नाश न कर सका। उस प्रह्लाद का विरोचन नामक पुत्र इतना दानी था कि उसने ब्राह्मण के रूप में इन्द्र द्वारा मांगे जाने पर अपना सिर काटकर दे दिया। उसका पुत्र बलि भी महा हुआ दानी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

निकला। उसने वामन रूप में अवतरित विष्णु के मांगे जाने पर उन्हें सारी पृथ्वी का दान कर दिया। उसी बलि का औरस पुत्र बाणासुर बड़ा ही दाता, बुद्धिमान, सत्यवक्ता और हजारों का दान देने वाला शंकर का परम भक्त हुआ। उसने अपने बल से तीनों लोकों के राजाओं को जीतकर शोणित नाम वाली नगरी बसा वहां राज्य करना आरम्भ कर दिया। एक समय पर उसने अपनी हजार भुजाओं के वाद्य से तांडव नृत्य कर शंकर जी को प्रसन्न किया। शंकरजी उस पर दया दृष्टि कर उसे वर देने आये तो उसने उन्हें उनके गणों सहित अपने पास निवास करने को कहा। भक्तों के प्रिय शंकर जी उसे यह वर दे अपने गणों, पुत्रों सहित प्रेमपूर्वक उसके पास रहने लगे। एक समय शिवजी ने उसकी शोणित नगरी के तट पर बहती हुई नदी के किनारे देवताओं तथा दैत्यों के साथ क्रीड़ा आरम्भ की जिसमें गन्धर्वों और अप्सराओं ने नृत्य गान किया और मुनियों ने आकर शिव को प्रणाम किया तथा जय-जय कहकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त की। शिवजी सब देवताओं और सिद्धों की जल क्रीड़ा देखने लगे। इसके बाद शिवजी भी जल क्रीड़ा में मग्न हो गये तथा नंदीश्वर को कैलाश भेज पार्वती को बुला भेजा। पतिव्रता पार्वती शृंगार कर शीघ्र ही शंकर के पास आने को तैयार हुईं। इधर पार्वती के आने से पहले ही शंकर को उन्मत्त तथा अत्यन्त उत्कंठित देख अप्सराओं ने यह सोचा कि इस समय जो पार्वती के आने से पहले ही शिवजी से जल विहार करने से अनुरक्त हो जाये उसे शिवजी सब स्त्रियों में दिव्य तथा रानी बना देंगे। इससे कूष्डमांड की पुत्री चित्रलेखा ने शिवजी को स्पर्श करने का उत्साह किया तथा पार्वती का रूप धारण कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लिया, इतने में पार्वती जी भी आ गईं। उन्होंने आते ही बाणासुर की पुत्री चित्रलेखा का सब भाव जान लिया तथा चित्रलेखा से कहा—तू इसी कार्तिक मास में ऋतुधर्म वाली हो जायेगी और वैशाख शुक्ल द्वादशी को आधी रात बीतने पर तुझ सोती हुई के साथ कोई पुरुष भोग करेगा और तू उसी की स्त्री होगी। ऐसा कह पार्वती शिव के साथ क्रीड़ा करने लगी। बाद में शिवजी वहां से अन्तर्ध्यान हो गए।

बावनवां अध्याय

(ऊषा के महान चरित्र की कथा तथा उसका अनुपम बुद्धिमति ज्ञानव्य होना।)

सनत्कुमार जी बोले—एक समय भाग्यदोष से घमंडी बाणासुर ने जब तांडव नृत्य कर शिवजी को प्रसन्न किया तो वह पार्वती सहित शिवजी को प्रसन्न हुआ जानकर कंधों को झुका कर बोला—हे शम्भु! आपके आशीर्वाद से ही मैं इतना बली हुआ हूं। आपने जो मुझे हजार भुजाएं दी हैं, इन्हें लेकर मैं क्या करूंगा। युद्ध के बिना इस पर्वत के समान भुजाओं का क्या लाभ। मैंने यम, कुबेर, इन्द्र, वरुण आदि सबको जीत लिया है अब आप ही शेष बचे हैं जिन्हें कोई जीत नहीं सकता। अतएव आप मुझे उस युद्ध का समय बताइये जब मेरी भुजाएं कट कर पृथ्वी पर गिरेंगी तथा मुझ बलशाली को कोई हरायेगा तथा मैं उसके साथ युद्ध कर अपनी युद्ध की प्यास बुझाऊंगा। सनत्कुमार जी कहते हैं—यह सुन शिवजी क्रोधित हो उठे तथा बोले—अरे अहंकारी तुझे धिक्कार है जो बलि जैसे धर्मात्मा के कुल में उत्पन्न होकर ऐसी बात करते हो। तू शीघ्र ही इस अहंकार से शांति पावेगा और मेरे ही समान किसी दूसरे बली से तेरा प्रचंड युद्ध होगा तथा यह तेरी पर्वत के समान भुजाएं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कट-कटकर पृथ्वी पर गिरेंगी। जब तेरी स्थापित शास्त्रशाला में वायु का उत्पात होगा तब समझना तेरा भयंकर समय आ गया है। यह सुन बाणासुर ने शिवजी की फिर स्तुति की तथा अपने घर आकर उस समय की प्रतीक्षा करने लगा। तब एक समय अचानक अपनी ध्वजा को स्वयं भग्न देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ तथा उन्मत्त हो युद्ध करने चला। उसकी समस्त सेना उसके साथ चली। वह सोचने लगा कि ऐसा कौन-सा योद्धा है जो मेरी इन काष्ठ के समान भुजाओं को काटेगा। इसी समय शिव प्रेरित काल वहां आ पहुंचा जहां बाणासुर की पुत्री सुन्दर वेष बनाये खड़ी थी। वैसाख का महीना था। जब वह रात्रि में विष्णु की पूजा कर स्त्री-भाव में प्राप्त गुप्त अन्तः-पुर में सो रही थी। तब दिव्य माया के वशीभूत तथा अनाथ के समान सोती हुई कन्या के पास पार्वती जी के भेजे हुए कृष्ण के पुत्र ने जाकर उससे बलात्कार किया तथा वापस द्वारका में चला गया। तब अपने को दूषित मान वह अपनी सखियों से कहकर शरीर को त्यागने चली। इस पर चित्रलेखा ने उसे उसकी पूर्व कथा सुनाई तो उसमें लुप्त पति को प्राप्त करने की इच्छा जाग पड़ी। चित्रलेखा ने एक वस्त्र पर सभी देवताओं, गंधर्वों, नागों आदि का चित्र बनाया। मनुष्यों में उत्तम आनेक, दुन्दुभि राम, अनिरुद्ध तथा कृष्ण का चित्र बनाया। तब अनिरुद्ध के चित्र को देखकर ऊषा लज्जित हो, नीचे मुखकर प्रसन्न हो गई तथा चित्रलेखा को बताया कि इसी पुरुष ने मेरा मन चुराया है। इस पर चित्रलेखा ने कृष्ण के कुलादि का वृत्तान्त सुनाया जिसे सुनकर बाणासुर की पुत्री मुग्ध हो गई तथा उन्हें पाने की उत्कंठा करने लगी। ज्येष्ठ कृष्ण चर्तुदशी को वह द्वारका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पहुंची। चित्रलेखा तामस योग से अन्धकार कर उसकी शैया उठा, सिर पर रख क्षणमात्र में ही शोणितपुर आ गई। परन्तु ज्यों ही उसने क्रीड़ा करना आरम्भ किया त्यों ही उसकी जानकारी सबको हो गई। द्वापर स्थित द्वारपालों ने इसकी सूचना बाणासुर को दी। कन्या का दूषण सुन बाणासुर को बड़ा आश्चर्य हुआ।

तिरेपनवां अध्याय

(बाणासुर का भगवान् श्री कृष्ण के साथ युद्ध तथा बाणासुर की पुत्री के कौमार्य का भंग होना।)

सनत्कुमार जी बोले—तब क्रोधित बाणासुर ने वहां जाकर अनिरुद्ध को देखा जो शरीर से सुन्दर एवं लीला युक्त अपनी पूर्व अवस्था में स्थित था। तब क्रोध युक्त बाणासुर ने अनिरुद्ध को मूर्ख तथा दुष्ट कहकर युद्ध के लिए ललकारा और कहा कि तूने मेरी पुत्री के साथ बलात्कार क्यों किया। उसने अपनी सेना को आज्ञा दी कि वे अनिरुद्ध को युद्ध में परास्त कर बांधकर उसके पास ले आवें। तब अनिरुद्ध ने अन्तःपुर के द्वार पर स्थित विकट परिघ को हाथ में उठा लिया और काल के समान ऊषा के गृह से निकल बाणासुर के सेवकों को मारकर फिर ऊषा के पास अन्तःपुर में लौट आया। बाणासुर ने तब अपने मंत्री कुष्मांड को बुला अनिरुद्ध से युद्ध करने भेजा। परन्तु अनिरुद्ध ने उन सबका भी संहार कर दिया। इस पर बाणासुर स्वयं युद्ध करने आया। उसने कभी कपट तथा कभी गुप्त युद्ध किया। इससे अनिरुद्ध आश्चर्य में पड़ गया। बाणासुर ने नागपाश में बांध उसे पिंजड़े में डाल दिया। उसने क्रुद्ध होकर उसका सिर काटने का आदेश दिया तथा कहा क्योंकि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इसने मेरे कुल को दूषित किया है इसके बलात्कार का यही फल है। उसी समय आकाशवाणी हुई—"हे बाणासुर! तुम शिव भक्त हो। तुम्हें इस प्रकार क्रोध नहीं करना चाहिए। शिवजी सबके ईश्वर हैं। उन्हीं के अधीन यह चराचर जगत है। वही सबके अन्तर्यामी, निर्विकार, अविनाशी, मायाधिपति और निर्गुण हैं। देर नहीं है, वे अभी शीघ्र ही तेरा नाश करेंगे।" यह आकाशवाणी सुन बाणासुर ने अनिरुद्ध को नहीं मारा पर उस को बंद कर दिया। स्वयं अन्तःपुर में जाकर मद्यपान करने लगा। तब प्रिया के बिना अतृप्त विचारों वाले अनिरुद्ध ने दुर्गा से प्रार्थना की। उसकी स्तुति से प्रसन्न हो श्री काली ने प्रकट हो उसके पिंजड़े को तोड़ दिया। अनिरुद्ध शिव-शक्ति से छूट बाणासुर की कन्या के पास गया। वहां पानीय पदार्थों को पान कर दुःखी हुआ। फिर लाल-लाल नेत्र कर बाणासुर की कन्या के साथ पहले सा व्यवहार किया।

चौवनवां अध्याय

(भगवान कृष्ण का प्रद्युम्न आदि को लेकर शोणितपुर को प्रस्थान करना तथा शिव और विष्णु का अनुपम एवं भीषण युद्ध।)

व्यास जी बोले—हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! जब कुष्मांड की पुत्री चित्रलेखा ने अनिरुद्ध का हरण कर लिया तब श्री कृष्ण ने क्या किया। कृपा करके इस कथा को विस्तार से कहिये। सनत्-कुमार जी कहने लगे—अनिरुद्ध के वहां न होने पर अन्तःपुर में स्त्रियों ने रोना शुरू कर दिया। श्री कृष्ण को इस पर बड़ा दुःख हुआ और सावन-भादों के चार महीने किसी प्रकार दुःख में व्यतीत कर दिये। तभी नारद जी ने आकर उन्हें उनके पौत्र का बाणासुर की पुत्री ऊषा द्वारा हरण किये जाने का समाचार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दिया। इसे सुन श्री कृष्ण सब यादवों के साथ जिनमें प्रद्युम्न, युधान, साम्ब, सारण, नंद, उपनंद तथा बलभद्र शोणितपुर पहुंचे। इस प्रकार एक विशाल सेना के साथ श्री कृष्ण ने शोणितपुर को घेर लिया। तब बाणासुर अपनी सेना ले उनके साथ युद्ध करने चला। साथ ही अपने भक्त की रक्षा के लिए भगवान् शिव अपने पुत्रों तथा गणों सहित नंदी पर आरूढ़ हो युद्ध करने आये। शिव तथा कृष्ण का लोमहर्षक युद्ध हुआ। कृष्ण का शिवजी से, प्रद्युम्न का कुम्भाण्ड से, कूप का कर्ण से, बाण-पुत्र का साम्ब से, बाण का सात्यकि से और गरुड़ का नंद से युद्ध हुआ। स्वयं शिवजी क्रोधकर बड़ा गम्भीर शब्द करते हुए युद्ध करने लगे। ब्रह्मास्त्र से ब्रह्मास्त्र लड़ पड़े। भयानक मार काट मची। श्री कृष्ण की सेना नष्ट हो रही थी। शिव जी के तेज के आगे वे खड़े न हो पा रहे थे। यह देख श्री कृष्ण ने वरुण सम्बन्धी अपने शीतलाख्य ज्वर वाले अस्त्र को छोड़ शिवजी पर चला दिया। उसे आता देख शिवजी ने अपना ज्वर छोड़ा। दोनों परस्पर युद्ध करने लगे। शिवजी के ज्वर से परास्त हो विष्णु ज्वर उनकी स्तुति करने लगा। यह देख शिव ने उसे छोड़ दिया। श्री कृष्ण बड़े भयभीत हुए। सबने मिलकर शिवजी की स्तुति की। श्री कृष्ण ने कहा मैं आपकी आज्ञानुसार अभिमानी बाणासुर की भुजाएं काटने आया हूं। आप संग्राम से लौट जाइये अन्यथा आपका शाप व्यर्थ हो जायेगा। श्री कृष्ण का यह वचन सुन शिवजी ने कहा—सत्य है मैंने बाणासुर को शाप दिया है। आप इसे मारिये। परन्तु मैं भक्तों के अधीन हूं मेरे होते आप बाणासुर को नहीं मार सकते। पहले आप मुझे श्रीम्भण अस्त्र से जृम्भण कीजिये फिर अपना

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कार्य कर सुखी होइये। श्रीकृष्ण ने शम्भुजी पर अपने घोर बाण बरसाकर उन्हें ज्रीम्भित कर दिया। जब शिवजी मोहित हो युद्ध से रुक गए तो श्री कृष्ण ने बाणासुर से विकट युद्ध शुरू कर दिया।

पचपनवां अध्याय

(बाणासुर तथा श्री कृष्ण का विकट तथा भीषण युद्ध। बाणासुर की भुजाओं का खंडन तथा अनिरुद्ध को बधु की प्राप्ति।)

सनत्कुमार जी कहने लगे—जब पुत्रों तथा गणों सहित शिवजी युद्ध भूमि में मोहित हो गये तब दैत्यराज बाणासुर श्री कृष्ण से युद्ध करने आया। वह घोड़े पर बैठ उनसे भयंकर युद्ध करने लगा। अब शिवजी का बल पाकर श्री कृष्ण बाणासुर को तिनके के समान जान अपना शार्ंग धनुष उठा उस पर बाण वर्षा करने लगे। परन्तु बाणासुर भी पराक्रमी था इस लिए उनके बाणों को पास न आने देता तथा बीच में काट डालता। उसने अपने चारों ओर के शत्रुओं को मार काट कर समाप्त कर दिया। सम्पूर्ण यादव कृष्ण का स्मरण कर मूर्छित हो गये। यह देख श्री कृष्ण क्रोधित हो सिंह के समान गर्जना करने लगे। उन्होंने शिव का स्मरण कर प्रचंड बाण चला बाणासुर के रथ घोड़े आदि को मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया। बाणासुर ने गदा से श्री कृष्ण को ताड़ित किया वे गिर पड़े। परन्तु शीघ्र ही उठकर शिवजी को स्मरण कर बाणासुर के साथ बहुत काल तक युद्ध किया। जब उसकी चार भुजाएं शेष रह गईं तो शिवजी ने उसकी कृष्ण के साथ मैत्री करा दी। बाणासुर श्री कृष्ण को अन्तःपुर ले गया। वहां अपनी कन्या को अनिरुद्ध को देकर रत्नादि सहित श्री कृष्ण जी का स्वागत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किया। श्री कृष्ण जी अपनी पौत्र वधु तथा पौत्र को साथ ले कुटुम्ब सहित द्वारका आ गये। वहां पर कई प्रकार के उत्सव किये गये।

छप्पनवां अध्याय

(बाणासुर द्वारा अपने अज्ञान को मानना तथा खेद प्रकट करना। इसके प्रश्चात शिव की स्तुति कर मुक्ति को प्राप्त करना।)

सनत्कुमार जी बोले—इसके पश्चात अपने अज्ञान को समझ बाणासुर बड़ा ही दुःखी हुआ। वह शिवजी के स्थान में जाकर अनेकों स्तोत्रों द्वारा ॐ से नमस्कार करता हुआ यथोचित हस्त-पादन्यास युक्त तांडव नृत्य करने लगा। उसने अनेकों नृत्य किये। अपने शरीर की रक्त की धाराओं से वहां की भूमि को सींचा तथा इस प्रकार शिवजी को प्रसन्न किया। शिवजी ने उसे वर मांगने को कहा। उसने शोणितपुर में अपनी पुत्री ऊषा के पुत्र का राज्य मांगा, विष्णु से मित्रता तथा दुष्ट दैत्यता का विनाश मांगा। शिव भक्तों से स्नेह तथा सभी प्राणियों से दया मांगते हुए शिवजी की स्तुति की। शिवजी ने प्रसन्न हो सभी वर दिये। शिवजी के प्रसाद से बाणासुर ने महाकाल तत्व प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त की।

सत्तावनवां अध्याय

(गजासुर नामक दैत्य का जन्म तथा उसका चरित्र। तथा उसका भगवान् शंकर द्वारा त्रिशूल से वध।)

सनत्कुमार जी बोले—हे व्यासजी! अब मैं आपको शिवजी के उस आख्यान को कहता हूं जिसमें उन्होंने गजासुर को त्रिशूल से मार दिया था। व्यासजी कहने लगे जब महिषासुर पुत्र गजासुर उग्र तप कर ब्रह्माजी से वर प्राप्त कर अपने स्थान को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वापस आया तो उसने सब दिशाओं तीनों लोकों सहित देवता, असुरों, गंधर्वों तथा मनुष्यों आदि सभी को जीत लिया। उसने देवताओं को अपने चरणों पर प्रणाम करने के लिए बाध्य किया। शास्त्रों का उल्लंघन कर अपनी बुद्धि को पापमय बना लिया तथा पृथ्वी पर तपस्वियों को क्लेश देने लगा। इस प्रकार जब वह एक बार काशी नगरी में आया तो उससे पराजित इन्द्रादि सभी देवता भाग कर शिवजी की शरण में गए तथा प्रणाम कर बड़ी ही स्तुति की। तब शिवजी कुपित हो उसे मारने दौड़े। उसने शिवजी से बड़ा ही विकट संग्राम किया तथा तलवार लेकर शिवजी के ऊपर दौड़ा पर शिवजी ने त्रिशूल उठा कर उसका सिर छेद दिया। गजासुर ने उसे अपना छत्र माना तथा शिवजी की अनेक स्तुति की। शिवजी शीघ्र ही प्रसन्न हो उसे वर देने लगे। गजासुर ने कहा यदि आप वास्तव में मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझे मार मेरी देह के चर्म से अपना ओढ़ना बनाइये तथा अपना नाम कृतिवास कीजिये। शिवजी ने तथास्तु कह उसके उस शरीर को काशी क्षेत्र में मुक्तिदायक ज्योतिर्लिंग बनाया। इससे शिवजी कृतिवासेश्वर कहलाये।

अट्ठावनवां अध्याय

(महावीर दैत्य निर्ह्रादि द्वारा ब्राह्मणों का संहार तथा शिवजी द्वारा उसका वध।)

सनत्कुमार जी बोले—हे व्यासजी! जब विष्णु जी द्वारा दिति का महाबली पुत्र हिरण्याक्ष दैत्य मारा गया तो उसके कारण दिति को बड़ा दुःख पहुंचा। तब दुन्दुभि निर्ह्रादि ने आकर दिति को बड़ा आश्वासन दिया और इस बात पर विचार किया कि किस प्रकार देवताओं को जीता जाए। उसने सभी से कहा कि इसमें मूल कारण ब्राह्मण हैं। क्योंकि देवता तो

CC-0. Manuj Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

योगी एवं भोगी हैं तथा योग वेदों से उत्पन्न हुआ है और उनका आधार ब्राह्मण है। इसलिए उसने ब्राह्मणों को नष्ट करने का निश्चय किया क्योंकि ब्राह्मणों के नष्ट होने से देवता स्वयं ही नष्ट हो जायेंगे। दुन्दुभि काशी में आकर ब्राह्मणों को मारने लगा। जो भी ब्राह्मण कुशा और समिधा लेने वन में जाते वह सबको वहीं खा जाता। वह कभी वनचर और कभी जलचर के रूप में विचरता। अदृश्य हो जाने पर देवताओं को भी नजर नहीं आता। दिन में मुनियों में ध्यान लगाकर मुनियों की तरह बैठ जाता तथा रात्रि में ब्राह्मणों की कुटियों में बाघ बन कर उनको फाड़ कर खा जाता। इस प्रकार उसने कितने ही ब्राह्मणों का नाश कर दिया। एक दिन शिवरात्रि में एक शिव का भक्त शंकर की पूजा कर रहा था। तब दुन्दुभि व्याघ्र का रूप धारण कर उसके मारने के लिए आया पर शिव का भक्त होने के कारण वह उस ब्राह्मण को न खा सका। इस पर भगवान शंकर कुपित हो उसका वध करने चले। भक्तों की रक्षा में सर्वदा तत्पर भगवान शंकर उसी पूजित लिंग से प्रकट हो गए। तब शिवजी को प्रकट हुआ देख वह दैत्य उसी रूप में इतना बढ़ा कि पर्वत के समान हो गया। परन्तु शिवजी ने एक ही मुष्टिक मार कर उसके जीवन का अन्त कर दिया। उसकी भयानक चिंघाड़ से दसों दिशाएं गूंजने लगीं। मुनियों ने एकत्रित हो जय-जयकार किया तथा शिवजी की स्तुति की।

उनसठवां अध्याय

(विदल तथा उत्पल नामक दैत्यों का उत्पात तथा पार्वती द्वारा उनका वध।)

श्री सनत्कुमार जी आगे कहने लगे—विदल तथा उत्पल नामक दो दैत्य थे। उन्होंने तप करके यह वर प्राप्त कर लिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Meskerii IFS (Retd) Collection Jammu

कि हम किसी भी पुरुष के हाथों न मरें। इस प्रकार का वर पाकर वे अभिमानी हो गए तथा अपनी भुजाओं के बल पर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को जीत लिया। उन्होंने देवताओं को भी परास्त किया। देवता इस प्रकार पराजित होकर ब्रह्मा जी के पास गए तथा स्तुति कर अपना दुःख निवेदन किया। यह सुन कर ब्रह्मा जी बोले ये दोनों जगत जननी पार्वती द्वारा ही मारे जायेंगे। एक दिन नारद जी उन दैत्यों के पास पहुंचे तथा पार्वती के रूप की प्रशंसा की। यह सब भगवान् शंकर की ही प्रेरणा थी। उनके रूप की प्रशंसा सुन दोनों दैत्य कामवेग के वशीभूत पार्वती के हरण की इच्छा करने लगे। एक दिन जब शिवजी विहार कर रहे थे तथा पार्वती अपनी सखियों के साथ गेंद उछाल रही थीं। तब इस दृश्य को देख वे दोनों दैत्य शिव के गणों का रूप धारण कर आकाश से नीचे उतरे तथा पार्वती पर कटाक्ष करने लगे। तब भगवान् शंकर जान गए कि ये तो विदल तथा उत्पल नामक महादैत्य हैं तथा गणों का रूप धार रखा है। शिवजी ने यह बात इशारे से पार्वती से कही। तब तो पार्वती ने खेलते-खेलते अपनी गेंद उन दैत्यों पर फैंकी, गेंद के लगने की देर थी कि वे दोनों दैत्य चक्कर काटकर पृथ्वी पर गिर पड़े तथा उनके प्राण निकल गए। तब वह गेंद लिंग रूप से दर्शन देने लगी। ज्येष्ठेश्वर के पास कन्दुकेश्वर नाम से यह स्थान प्रसिद्ध हो गया। उस समय वहां शिवलिंग प्रकट हो जाने से विष्णु ब्रह्मादि सभी देवता वहां आये और भगवान् शंकर द्वारा वरों की प्राप्ति करके अपने-अपने लोक में वापस चले गये।

॥ इति श्री रुद्र संहिता युद्ध खण्ड ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

रुद्र संहिता उत्तरार्द्ध खण्ड

पहला अध्याय

(सद्योजात आदि शिव अवतारों का अवतरण तथा इन्हीं में मोक्ष एवं भोग का सार दृष्टिगत होना।)

शौनक जी बोले—हे व्यास-शिष्य सूत जी! अब आप मुझे शिवजी के अवतारों की उस कथा को सुनाइये जिसे सुनकर सज्जन लोगों का कल्याण होता है। सूत जी बोले—हे मुनि श्रेष्ठ! अब आप ध्यान से सुनिये, मैं शिवजी के अवतारों का वर्णन करता हूं। श्वेत लोहित नामक उन्नीसवें कल्प में शिव जी का पहला सद्योजात नामक अवतार हुआ है। उस कल्प में परब्रह्म का ध्यान करते हुए ब्रह्मा जी की शिखा से लोहित कुमार उत्पन्न हुए। तब उन्हें सद्योजात शिव जानकर ब्रह्माजी प्रसन्न हो उनका बार-बार चिंतन करने लगे। तब उनके इस चिंतन से परब्रह्म स्वरूपी बहुत से कुमार उत्पन्न हुए। सुनंद, नंदन, विश्वनंदन इस प्रकार के उनके नाम थे। तब सद्योजात शम्भु ने ब्रह्मा जी को ज्ञान देकर सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी। इतने में रक्त नामक बीसवां कल्प आ गया और ब्रह्मा जी रक्त वर्ण हो गए। फिर उनके वैसा ही लाल वर्ण का एक पुत्र उत्पन्न हुआ। तब उसको वामदेव नामक शिव जान कर ब्रह्मा जी ने अंजलि बांधकर उनकी स्तुति की। इसके बाद उन लाल वस्त्रधारी को विरज, विवाह, विशाख और विश्व-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भानव नाम के चार पुत्र उत्पन्न हुए। पश्चात उन वामदेव शंभु ने ब्रह्मा जी को सृष्टि करने की आज्ञा दी। वामदेव का अवतार समाप्त हुआ। पश्चात इक्कीसवां पीतवास नामक कल्प आया और भाग्यवान ब्रह्मा जी ने पीला वस्त्र धारण किया। पुत्र की कामना करते ही एक महा तेजस्वी दीर्घ भुजा वाला कुमार उत्पन्न हो गया। फिर तो उसके समीप भी बहुत से दिव्य कुमार उत्पन्न हो गए। यहां तत्पुरुष अवतार समाप्त हुआ। इसके पश्चात शिव नामक कल्प हुआ और ब्रह्मा जी हजारों वर्षों तक फिर पुत्र की चिंता करते रहे। तब कृष्ण वर्ण के एक तेजस्वी कुमार ने जन्म लिया। तब इस अघोर और पराक्रमी कृष्ण एवं अद्भुत देवेश को देख ब्रह्मा जी प्रणाम करने लगे। इसके बाद अपनी प्रिय वाणी से उन्होंने उस अवतार की बहुत सी स्तुति की। तत्पश्चात उनके समीप कृष्ण वर्ण के चार कुमार प्रकट हुए जिनका नाम क्रमशः कृष्ण, कृष्ण शिख, कृष्णास्य और कृष्ण कंठधारी हुआ। ये सभी अव्यक्त नाम वाले तेजस्वी और शिवस्वरूप ही थे। इन्होंने भी ब्रह्माजी की सृष्टि विस्तार के लिए अद्भुत 'घोर' नामक योग को किया। इस प्रकार अघोर अवतार हुआ। इसके पश्चात अद्भुत विश्वरूप नामक कल्प हुआ जिससे ब्रह्मा जी के चिन्तन से सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। साथ ही वैसा ही वेष धारण किए हुए परमेश्वर भगवान ईश भी प्रकट हुए। तब उन अज विभु शिव को देख ब्रह्मा जी ने उन्हें प्रणाम किया। ईश्वर ने ब्रह्मा जी को सन्मार्ग का उपदेश दिया। फिर अपनी शक्ति से शुभ चार बालकों की कल्पना की। जटी, मुंडी, शिखन्डी तथा अर्द्ध मुंडी। परन्तु इन बालकों ने भी योग का मार्ग लिया। ईशान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अवतार समाप्त हुआ। इस प्रकार ईशान, पुरुष, अघोर, काम संज्ञक तथा ब्रह्मसंज्ञक शिव की पांच मूर्तियां विख्यात हुईं। जो पुरुष यत्न पूर्वक इन मूर्तियों की वंदना करता है तथा जो इस उत्पत्ति को पढ़ता या सुनता है उसे सब भोगों की प्राप्ति होती है और परम गति को प्राप्त होता है।

दूसरा अध्याय

(शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव शिव के आठ रूपों का वर्णन।)

नंदीश्वर बोले—हे तात! लोक में सब कार्यों को पूर्ण करने वाले शिवजी के अवतारों को सुनो। शिवजी की शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव ये आठ मूर्तियां सूत्र में मणियों के समान पिरोई हुई हैं और भूमि, जल, अग्नि, पवन, आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य और चन्द्र में क्रमशः अधिष्ठित हैं। शास्त्रों का कहना है कि शंकर, महेश, विश्वम्भर के रूप में इसी प्रकार चराचर जगत् को धारण कर रहे हैं। इसी प्रकार परमात्मा शिवजी भव रूप जलात्मक है जो संसार को जिलाने वाला है तथा इस विश्व को जो पालता तथा चलाता है वह शिव का उग्र स्वरूप है। शिवजी का एक आकाशात्मक भीमरूप है, जिससे राज समुदाय का भेदन होता है। यह सब आत्माओं का अधिष्ठाता है। फिर पशुपति नामक शिव का जो रूप है, वह समस्त पशु जीवों का पाश काटने वाला है तथा जो शिवजी का ईशान नामक रूप है वह सूर्यात्म होकर संसार को प्रकाश देने वाला है और जो आकाश में प्रसारित है। महादेव नामक जो शिवजी का रूप है वह अमृत किरणों वाला संसार का तृप्ति कर्ता है। आठवां मूर्त अमूर्त सब में व्यापक शिवजी का वह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

'आत्मा' नामक रूप है जिससे यह सारा संसार शिवरूप ही है। शिवजी अपनी इन आठ मूर्तियों में संसार में अधिष्ठित हैं। कल्याण के इच्छुक पुरुषों को चाहिए कि वह इनकी सेवा करता रहे तथा सर्वभाव से उनका भजन करता रहे।

तीसरा अध्याय

(शिव के अर्द्ध नारीश्वर रूप की कथा। इस कथा के अध्ययन से भोग, मोक्ष, दान, तप तथा भक्ति की प्राप्ति होती है।)

नंदीश्वर बोले—हे तात अब ध्यान से सुनो, अब शिवजी का अर्द्धनारीश्वर रूप का वर्णन करता हूं। जब ब्रह्माजी द्वारा रची हुई सृष्टि विस्तृत नहीं हुई तो वह बड़े चिन्तामग्न हो गए। उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि बिना शिवजी के प्रभाव से इस प्रजा का उत्पन्न होना संभव नहीं अतएव उन्होंने तप करने का विचार किया। निरंतर पार्वती के साथ ध्यान करने से शिवजी शीघ्र ही प्रकट हो गए। जब परम शक्ति युक्त शिवजी प्रकट हुए तो ब्रह्मा जी दण्डवत हो उनकी स्तुति करने लगे। शिवजी प्रसन्न होकर बोले—हे वत्स! मैं तत्व से तुम्हारे मनोरथ को जानता हूं। प्रजा वृद्धि के लिए तुमने तप किया। इससे प्रसन्न हो मैं तुम्हें वर देने आया हूं। ऐसा कह शिवजी ने अपने शरीर के भाग से शिवा देवी को पृथक कर दिया। उनके इस आश्चर्य जनक कार्य को देखकर स्तुति करते हुए ब्रह्माजी बोले—हे शिवे! देवों के देव! आपके इन्दी पति ने मेरी रक्षा की है। इनकी कृपा दृष्टि से ही समस्त सृष्टि का सृजन हुआ है। हे शिवे मैं बार-बार सब देवताओं को अपने मन में मनाता हूं परन्तु वे मेरी सृजित बुद्धि को नहीं धारण करते। इसी कारण मैं अब एक मैथुनी सृष्टि रचना चाहता हूं जो सृजन वृद्धि को प्राप्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

होवे। परन्तु इस कार्य के लिए नारियों की आवश्यकता है और जिस अत्यन्त श्रेष्ठ कुल के लिए मेरी शक्ति काम नहीं देती है। क्योंकि सारी शक्तियां तो तुम्हारी ही शक्ति से उत्पन्न हुई हैं, इस कारण तुम्हीं सबकी ईश्वरी हो। अतएव मैं तुम पराशक्ति से प्रार्थना करता हूं। हे शिवे! अब आप मुझे नारी कुल की सृष्टि करने की आज्ञा दीजिये। हे वर देने वाली! मैं एक वर तुमसे और मांगता हूं वह भी कृपा करके मुझे दीजिये। हे शिवे! आप अपनी उस एक ही सामर्थ्य से चराचर संसार की वृद्धि के लिए मेरे पुत्र दक्ष के घर पुत्री के रूप में जन्म लीजिए। तब ब्रह्मा की इस प्रकार की याचना को सुन देवी ने कहा 'ऐसा ही हो।' ऐसा कहकर वे फिर शिव में लीन हो गई। समर्थ शिवजी अन्तर्ध्यान हो गए। उसी दिन से संसार में स्त्री का भाग देना निश्चित हुआ। आनंद मग्न ब्रह्मा ने मैथुनी सृष्टि की रचना आरम्भ कर दी। जो व्यक्ति इस आनंददायक कथा को पढ़ता है वह अन्त में मोक्ष का भागी होता है।

चौथा अध्याय

(मन्वन्तरो का वर्णन तथा सद्गति को देने वाले श्री व्यास के विभिन्न जन्मों का सार संक्षेप।)

नंदीश्वर बोले—हे सर्वज्ञ! मैं स्वयं भगवान् श्रीशिव द्वारा कहा गया आख्यान तुम्हें दोहराता हूं। शिवजी बोले—हे ब्रह्मा! सातवें मन्वन्तर में बाराह कल्प होगा जिसमें कल्पेश्वर भगवान् प्रकट होकर सब लोकों के प्रकाश करने वाले होंगे और तुम वैवश्वत मनु के परपोते होओगे। उस मन्वन्तर में चार युग होंगे और द्वापर के अन्त में ब्राह्मणों के हितार्थ मैं उत्पन्न होऊंगा। हे ब्रह्मा! तब युग की प्रवृत्ति के अनुसार जब द्वापर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का प्रथम भाग आरम्भ होगा। तब उसमें व्यास जी स्वयं प्रभु होंगे और कलियुग के अन्त में मैं शिवा युक्त श्वेत नामक महा मुनि होऊंगा और हिमालय के छागल में ब्रह्मा जी मेरे शिखा-शिष्य होंगे और मुझ अव्यय को तत्व से जानकर और भी मेरे बहुत से भक्त होंगे। इसके बाद द्वापर में सत्य नामक प्रजापति होंगे और कलियुग में मैं 'सुतारि' नाम से प्रसिद्ध होऊंगा तथा उस युग में भी बहुत से वेद ज्ञाता ब्राह्मण मेरे शिष्य होंगे। जैसे दुन्दुभि, शतरूप, तृषीक और केतु। फिर चारों भी ध्यान योग से मेरे पुर को प्राप्त हो जायेंगे। इसी प्रकार जब द्वापर का तीसरा चरण होगा तब भार्गव व्यास होंगे और मेरे पुर के समीप ही वे दमन नाम से प्रसिद्ध होंगे तथा वहां मेरे विशोकादि चार-चार पुत्र उत्पन्न होंगे। ये व्यास जी के शिष्य होंगे तथा कलियुग में मैं इन्हें दृढ़ निवृत्ति का उपदेश करूंगा। तत्पश्चात द्वापर के चौथे भाग में अंगिराजी व्यास होंगे। उस समय मैं सुहोत्र नाम से प्रकट होऊंगा। वहाँ भी मेरे चार पुत्र होकर महात्मा हो जायेंगे तथा उनका नाम सुमुख, दुर्मुख, दुदर्भ और दुरतिक्रम होगा। उस समय भी मैं व्यास जी के शिष्यों की सहायता करूंगा। उसके पश्चात पाचवें द्वापर में सविता नामक व्यास और मैं कंक नामक योगी एवं तपस्वी होऊंगा तथा सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार ये चार पुत्र होंगे। फिर छटे द्वापर में लोकों के कर्त्ता वेद-विभाग कर्त्ता मृत्यु नामक व्यास होंगे और मैं लोकाक्षि नाम से व्यास जी की सहायता के अर्थ निवृत्ति मार्ग को प्रश्रय दूंगा। इसी प्रकार जब नवां द्वापर आयेगा तब सारस्वत नाम वाले व्यास जी होंगे और उनके ध्यान से मैं ऋषभ नाम से प्रकट होऊंगा तथा यहां

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भी मेरे पाराशर, गर्ग्य, भार्गव तथा गिरीश यह चार श्रेष्ठ योगी मेरे शिष्य होंगे जिनके साथ मैं योग मार्ग को ही दृढ़ करूंगा। मेरे इस ऋषभ अवतार से विश्व का बहुत अधिक कल्याण होगा।

पांचवां अध्याय

(शिव के अवतारों का पूर्ण विवरण। शिव द्वारा स्वयं सुनाना।)

शिवजी बोले—द्वापर के दसवें भाग में एक त्रिधामा नामक व्यास मुनि होंगे, जो हिमालय के उच्च शिखर पर भृंगु नामक स्थानों में रहेंगे तथा वहां पर मेरे भृगु, बलबंधु, नरामित्र और केतुशृंग नामक चार पुत्र होंगे। फिर ग्यारहवां द्वापर आयेगा। जिसमें त्रिवृत नामक मुनि व्यास होंगे और मैं कलिंग में गंगा के द्वार में तप नाम से प्रकट होऊंगा तथा वहां भी मेरे चार दृढ़ व्रतधारी पुत्र उत्पन्न होंगे। जब बारहवां द्वापर आवेगा जिसमें शततेजा मुनि व्यास होंगे और इस प्रकार द्वापर में व्यास जी के अट्ठाइस अवतार होंगे और प्रत्येक कलि के आरम्भ में योगीश्वरों का अवतार होता रहेगा तथा उनके चार पुत्र सर्वदा प्रत्येक अवतारों में होते रहेंगे। वे सभी योग मार्ग के प्रवर्तक तथा योग अविनाशी होंगे। वे हमेशा शिवजी के भक्त, शिष्य, पाशुपत व्रत रखने वाले, शरीर में भस्म लगाने वाले, रुद्राक्ष मालाधारी और ललाट पर त्रिपुंड लगाने वाले होंगे। ये सभी शिष्य धर्म में तत्पर वेद वेदांग के पारगामी, नित्य वाह्याभ्यंतर लिंगार्चन करने वाले होंगे। इनकी सर्वदा मुझ में भक्ति और ये योग द्वारा हमेशा ध्यानावस्थित रह जितेन्द्रिय रहेंगे जिनकी इन अट्ठाइस द्वापरों में कुल संख्या एक सौ बारह होगी। यहां मैंने मनु से लेकर कृष्ण पर्यन्त अट्ठाइस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

युगों के क्रम से सब अवतारों का वर्णन किया। इन सबके अन्त में जब कृष्ण-द्वैपायन व्यास होंगे तब ये श्रुतियों सहित ब्रह्म-लक्षणों युक्त वेदान्त शास्त्र का वर्णन करेंगे। ब्रह्मा जी से ऐसा कहकर उनके देखते-देखते शिवजी अन्तर्ध्यान हो गए।

छठवां अध्याय

(महान अवतार नंदीश्वर का अवतरण। तथा नंदीश्वर को पाने के लिए शलाद ऋषि का कठोर तप।

सनत्कुमार जी बोले—हे नंदीश्वर! अब आपके मुख से यह सुनना चाहता हूं कि आप शिवजी के अंश से किस प्रकार उत्पन्न हुए तथा शिव को मुक्ति देने वाले उस परम तत्व को आपने किस प्रकार जान लिया। नंदीश्वर ने कहा कि अगर आपको सुनने की इतनी तीव्र उत्कंठा है तो जरा सावधान हो और ध्यान से सुनिये। एक समय जब पुत्र की कामना से शिलाद ऋषि शिवजी का तप और ध्यान करते हुए शिवलोक को प्राप्त हुए तब देवताओं के राजा इन्द्र उसके समीप वर देने गए तथा बोले कि मैं तुमसे प्रसन्न हूं मांगो क्या वर मांगते हो। तब मुनिश्रेष्ठ शिलाद ने कहा कि अगर आप वास्तव में प्रसन्न हैं तो मुझे अयोनिज तथा मृत्यु हीन पुत्र दीजिए। इन्द्र ने कहा मृत्यु हीन तो कोई नहीं होता। हरि आदि भी मृत्यु के अधीन हैं तब देवताओं का तो कहना ही क्या। हां अगर देवेश्वर रुद्र प्रसन्न हो जायें तो तुम्हें अयोनिज मृत्यु रहित पुत्र दे सकते हैं। इन्द्र उस ब्राह्मण से कह देवलोक को वापस चले गए। इसके पश्चात शिलाद ने महादेवी की एक हजार वर्ष तक घोर अराधना की। उसके शरीर पर दीमकों ने मिट्टी चढ़ा दी। मांस, रुधिर तथा त्वचा हीन उसके शरीर में मात्र अस्थियां ही रह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गई। तब शिवजी ने उसे दर्शन दिए। देवताओं के अधिपति ने उसे वर देने को कहा। परन्तु समाधि में लीन शिवजी को उसे वाणी ही न सुनाई दी। तब भगवान् शिव ने अपने कर कमलों से स्पर्श किया तो उसकी समाधि टूटी। उसने नेत्र खोलकर देखा तो उमा सहित साक्षात शिवजी उसके सामने खड़े थे। भगवान् शंकर ने शिलाद से कहा कि मैं तुम्हें सर्वज्ञ और सर्व शास्त्रों में पारंगत पुत्र देता हूं। शिलाद ने गद्-गद् कंठ और सजल नेत्रों से हाथ जोड़कर कहा यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो अपने समान ही मृत्यु रहित तथा अयोनिज पुत्र दीजिए शिवजी ने कहा कि एवमस्तु अर्थात ऐसा ही हो। शिलाद ने अपने स्थान पर आकर अन्य ऋषियों से सारा वृत्तांत कहा। फिर वह यज्ञ के लिए आंगन खोदने लगा। उसी समय उनकी आज्ञा से मैं उसका पुत्र रूप होकर प्रलयाग्नि के समान देदीप्यमान होकर प्रकट हुआ। देवताओं ने फूल बरसाये। सभी देवता अपनी-अपनी पत्नियों सहित विष्णु शिव और अम्बिका उसी स्थान पर प्रकट हुए। बड़ा उत्सव हुआ अप्सरायें नाचने लगीं। और सब प्रसन्न हो मेरी लिंग मूर्ति स्थापित कर पूजा करने लगे। शिलाद की भी सबने प्रशंसा की। फिर शंकर पार्वती भी पधारे। मेरे पिता शिलाद ने मुझे तीन नेत्र वाला चतुर्भुज और जटा मुकुट धारी बालक देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। स्त्री ने प्रणाम किया। तब शिलाद ने कहा क्योंकि तुमने मुझे आनन्द दिया है इसलिए तुम्हारा नाम नंदी हुआ। इस प्रकार मेरे सहित शंकर जी को प्रणाम कर मेरे पिता अपनी कुटिया में गए तथा अति आनन्द को प्राप्त भये। फिर जब मैं शिलाद मुनि की कुटिया में गया तो वहां मैंने अपना सब स्व-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रूप त्याग साधारण रूप धारण कर लिया। तब मुझे साधारण मनुष्यों के रूप में देख मेरे पिता रोने लगे और उन्हें बड़ा दुःख हुआ। परन्तु पुत्र का प्रेम तो था ही। मेरे पिता ने मेरा सब जात कर्मादि करवा दिया। छोटी अवस्था में ही समस्त वेदों तथा शास्त्रों को सांगोपांग पढ़ा दिया। जब मैं साप्त वर्ष का हुआ तो मित्र लोग देखने आए। मेरे पिता ने उन्हें आदर सत्कार से बिठाया तो महात्मा मुझे बार-बार देखने लगे और पिता से बोले—यह नंदी तुम्हारा बालक तो बड़ी थोड़ी अवस्था वाला है, इसने इतने समय में ही समस्त शास्त्रों को कैसे पढ़ लिया। इसकी तो अब एक ही वर्ष की आयु शेष है। उस ब्राह्मण के ऐसा कहने पर पुत्र वत्सल मेरे पिता उच्च स्वर में रुदन करने लगे। तब मृतक के समान होते अपने पिता को रुदन करता देख वह प्रसन्न वदन बालक शिवजी के चरण कमलों का ध्यान करते हुए अपने पिता से बोला—हे तात! आप इतने दुःखी क्यों होते हैं, आपको कौन सा दुःख हो गया है। मुझे विस्तार से कहिये। पिता ने कहा—मैं तुम्हारी मृत्यु से दुःखी हूं। हा! मेरे इस दुःख को कौन दूर करेगा? मैं किसकी शरण में जाऊं। पुत्र बोला—मुझे देव, दानव, यमराज, काल तथा मनुष्य कोई भी नहीं मार सकता। मैं आपकी शपथ खाकर कहता हूं मैं तप से या विद्या से ही मृत्यु को दूर भगा दूंगा। केवल शंकर के ही भजन से मैं मृत्यु को जीतूंगा। इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। ऐसा कह मैं नंदी पिता की प्रदक्षिणा कर एक महावन की ओर चला गया।

सातवां अध्याय

नन्दीश्वर अवतार का अवतरण तथा उसके तैंतालीस जन्मों का उल्लेख और गणपति पद को प्राप्त करना।)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नंदी कहने लगे—वहां एकांत में जाकर मैंने कठोर तथा दुर्लभ तप करना आरम्भ किया। तब शिवजी ने वहां प्रकट होकर मुझसे कहा—हे शिलाद के पुत्र! मैं तुम्हारी तपस्या से अत्यधिक संतुष्ट हूं, तुमने बहुत श्रेष्ठ तप किया है, मैं तुमको वर देता हूं। तुम्हारे मन में जो हो, वर मांगो। यह सुन मैं जरा तथा शोक नाशक शिवजी की आराधना करने लगा। शंकरजी ने मुझे स्पर्श किया और कहा—हे वत्स! तुम्हारे लिए मृत्यु का कैसा भय? उन दोनों ब्राह्मणों को मैंने ही भेजा था। तुम तो मेरे ही समान हो। तुम सुहृदजनों के सहित अजर, अमर, दुःख रहित, अविनाशी, अक्षय और मेरे प्रिय हो। तुमको जरा और मृत्यु प्राप्त नहीं होगी। ऐसा कहकर शिवजी ने अपने सिर की एक माला खोलकर मेरे कंठ में बांध दी। उस माला को पहनते ही मानो मैं तीन नेत्र और दस भुजाओं वाला दूसरा शिव ही हो गया। तब परमेश्वर ने मुझे अपने हाथों से पकड़ कर कहा, कहो अब तुमको और क्या श्रेष्ठ वर दूं। ऐसा कह भगवान शंकर ने अपनी जटाओं से हार के समान निर्मल जल ग्रहण कर 'नंदी हो' ऐसा कहकर मेरे ऊपर छिड़क दिया। उससे जटोरका, त्रिस्त्रोता, वृषभध्वनि और जम्बु नदी यह पांच नदियां बह चलीं। उस स्थान का पंचनद नाम पड़ा जो अब तक जयेश्वर के समीप वर्तमान है। जो वहां पंचनद पर जाकर स्नान कर जाप्पेश्वर शिव की पूजा करता है। वह निःसन्देह शिव की मुक्ति पाता है फिर शिवजी ने पार्वती से कहा कि अब मैं नंदी को गणेश्वर पद पर अभिषिक्त करता हूं मैं इसको गणेन्द्र किया चाहता हूं, तुम इसमें अपनी सम्मति दो। तब पार्वती ने कहा—हे नाथ! इस नंदी को आप मुझे दे दीजिये। हे नाथ! यह शिलाद पुत्र आज

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से मेरा परम पुत्र हुआ। पश्चात परम स्वतंत्र भक्त-वत्सल शिवजी ने अपने समस्त गणों को बुलाकर कहा यह नंदीश्वर मेरा पुत्र है। इसे मैंने सब गणों का अधिपति बनाया है। यह मेरे प्रिय गणों में प्रमुख है। आज से यह तुम सबका स्वामी हुआ। इसके पश्चात सब बांधवों तथा पार्वती सहित शिवजी बैल पर चढ़ कर अपने घर की ओर चले। जो मनुष्य नंदी के इस आख्यान को श्रद्धा सहित पढ़ता और सुनता है वह संसार में परम सुख को भोग कर परलोक में भी उत्तम गति को प्राप्त होता है। इस प्रकार शिवजी के तैंतालिस अवतार हुए।

आठवां अध्याय

(वेदों द्वारा भगवान् शंकर के यश का वर्णन तथा भैरव अवतार की उत्पत्ति।)

नंदीश्वर बोले—हे सर्व को जानने वाले सनत्कुमार जी! अब मैं आपको भैरव की कथा कहता हूं जिसको सुनने मात्र से ही भगवान् शंकर की दृढ़ भक्ति उत्पन्न होती है।

एक समय सुमेरु पर्वत पर बैठे हुए ब्रह्मा जी के पास सब देवताओं ने जाकर उन्हें नमस्कार कर हाथ जोड़कर यह पूछा कि हे देवों के देव! अविनाशी तत्व क्या है? इसे आप यथार्थ बताइए। तब शंकर की माया से मोहित ब्रह्मा उस तत्व को न जानते हुए भी उस भाव को कहने लगे कि—हे श्रेष्ठियो! मैं उस अविनाशी भाव को यथार्थ रूप से कहता हूं, आप लोग सावधान होकर सुनिये। मुझ से बढ़कर कोई देवता नहीं है। मैं ही एक मात्र संसार उत्पन्न करने वाला, स्वयंभू, अज, एक मात्र ईश्वर, अनादि, भोक्ता, ब्रह्म और निरंजन आत्मा हूं। मैं ही संसार को प्रवृत्त करने वाला हूं। उस समय वार्ता के दौरान भगवान् विष्णु जी वहां उपस्थित थे। जैसे ही ब्रह्मा जी यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कह चुप हुए विष्णु जी ने उन्हें समझाते हुए यह कहा कि— हे ब्रह्मा! यह तुम क्या कह रहे हो? मेरी आज्ञा से ही तुम सृष्टि की रचना करते हो। मेरा अनादर करके तुम जी नहीं सकते। इस प्रकार ब्रह्मा तथा विष्णु परस्पर अपनी प्रधानता की स्थापना के लिए विवाद करने लगे तथा इसके प्रमाण में वेद शास्त्रों के वाक्यों को कहने लगे। चारों वेद मूर्त रूप धारण कर वहां उपस्थित हुए। तब महेश प्रभु शिव का स्मरण करते हुए ऋग्, यजु आदि चारों वेदों में पहले ऋग् ने कहा जिसके भीतर समस्त भूत निहित हैं तथा जिससे सब कुछ प्रवृत्त होता है और जिसको परम तत्व कहा जाता है वह एक रुद्र ही है। यजुर्वेद ने कहा—जिसके द्वारा हम भी प्रमाणित होते हैं तथा जो सम्पूर्ण यज्ञों तथा योग से भजन किया जाता है वह सबका दृष्टा एक शिवजी हैं। फिर सामवेद ने कहा—जो समस्त संसारी जनों को भरमाता है तथा जिसे योगी जन ढूंढ़ते हैं और जिसकी कान्ति से सारा संसार प्रकाशित होता है वह एक शिवजी हैं। फिर अथर्वेद ने कहा—जिसको भक्ति से साक्षात्कार होता है वह एक केवल शिवजी हैं जिनमें कोई दुःख नहीं है। तब वेदों के इस कथन को सुनकर ब्रह्मा विष्णु ने कहा—हे देवो! तुम्हारा यह अज्ञान ही है कि नित्य शिवा से रमण करने वाले, नंग रहने वाले, पीतवर्ण, धूलि से भरे हुए प्रमर्थनाथ शिव को परम तत्व कैसे कहा जाता है? जटाधारी निःसंग शिवजी परब्रह्म किस प्रकार हो सकते हैं। तब दोनों देवताओं के ऐसे वचन सुनकर सब स्थानों में अमूर्ता और मूर्तिमान स्थित रहने वाले ओंकार ने कहा—भगवान् शिव शक्ति धारी हैं। वे अपनी शक्ति के बिना रमण नहीं कर सकते। क्योंकि वे लीलाधारी हैं। वही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

परमेश्वर हैं तब ओंकार के इस प्रकार कहने पर भी शिव माया से मोहित ब्रह्मा विष्णु की बुद्धि नहीं बदली तथा वे विवाद करते ही रहे। तत्काल उन दोनों के मध्य में एक ऐसी विशाल ज्योति प्रकट हो गई जिसका आदि अन्त कुछ भी नहीं था। उससे ब्रह्मा का पंचम सिर जलने लगा। इतने में त्रिशूलधारी नीललोहित उसी क्षण वहां प्रकट हो गए और ब्रह्मा उनसे बोले—हे नीललोहित! हे चन्द्रशेखर! हे रुद्र! तुम भय मत करो मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं कि तुम पहले मेरे सिर से प्रकट हुए थे और रुदन करने के कारण ही मैंने तुम्हारा नाम रुद्र रखा था। हे पुत्र मेरी शरण में आओ मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। ब्रह्मा की इस अहंकार पूर्ण वाणी को सुनकर शिवजी को बहुत क्रोध आया। उन्होंने उसी क्षण प्रलय को कर देना चाहा। तब अपने क्रोध से भैरव नामक एक पुरुष को उत्पन्न करके कहा—हे काल भैरव! तुम इस ब्रह्मा पर शासन करो तथा सारे संसार का पालन करो। क्योंकि तुम साक्षात काल के समान हो। इस कारण तुम काल भैरव के समान हो। क्योंकि तुम तत्काल भक्तों के पाप का नाश कर दोगे इसीलिए तुम्हारा नाम पाप भक्षण भी होगा। हे कालराज! मेरी मुक्ति पुरी काशी सब पुरियों से बड़ी है मैं तुमको सर्वदा के लिए उसका आधिपत्य प्रदान करता हूं। उस पुरी में जितने भी पापी होंगे तुम उन्हें सर्वदा दण्ड देना और वहां के शुभाशुभ कर्मों को चित्र गुप्त सर्वदा लिखा करेंगे। शिवजी से ऐसा वर ग्रहण कर काल भैरव ने तत्काल ही अपनी बायीं उंगली के नखाग्र से ब्रह्मा का सिर काट लिया। ब्रह्मा का पांचवां सिर कट गया। भयभीत ब्रह्मा शतरुद्रिय का पाठ करने लगे। शतरुद्रिय मंत्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जपने लगे। ब्रह्मा तथा विष्णु को ज्ञान हो गया। दोनों ने शिव जी को परब्रह्म समझा। अहंकार दूर होकर ज्ञान का उदय हो गया। तब शिवजी ने ब्रह्मा तथा विष्णु को अहं रहित किया। तथा दोनों को अभय दान दिया। महादेव जी ने प्रसन्न हो दोनों को धैर्य दिया तथा अपनी कपर्दिनी भैरव मूर्ति से बोले—हे नीललोहित! तुम इन ब्रह्मा विष्णु को जानते हुए ब्रह्मा के कपाल को धारण कर इसी के आश्रित हो भिक्षावृत्ति करते हुए संसार में ब्रह्म हत्या के भय को दूर करो। ऐसा कह महादेव ने तुरन्त वहां ब्रह्म हत्या नामक एक कन्या उत्पन्न कर दी और कपर्दी से कहा—जब तक यह कन्या काशी में जावे तब तक इसके पहले ही तुम अपने भयंकर रूप से वहां चले जाओ और जब यह वहां पहुंचे तब इससे कहना कि तुम इस वाराणसी को छोड़ और चाहे जहां जाकर विचरण करो। पश्चात जब यह सब जगहों से घूमकर काशी आवेगी तब मुक्त हो जायेगी। इस प्रकार उस ब्रह्म हत्या से प्रवृत्त करा वहां से अन्तर्ध्यान हो गए।

नवां अध्याय

(भैरवजी के जन्म का आख्यान तथा उनकी कथा के माहात्म्य का वर्णन।)

नन्दीश्वरजी कहने लगे—हे सर्वज्ञ सनत्कुमार जी! अब मैं तुम्हें भैरवजी की दूसरी कथा सुनाता हूँ, जो सर्व प्रकार के पापों को हरण करने वाली है।

शंकरजी के समीप रहने से भैरवजी कालों के भी काल हुए। उन्होंने भगवान् महादेव की आज्ञा से कापालिक व्रत को धारण किया। वे हाथ में कपाल धारण किये काशी में आये। परन्तु तीन लोकों में विचरने वाली उस ब्रह्म हत्या ने उनको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पीछा न छोड़ा। एक समय भैरवजी कापालिक वेश धारण किये नारायण के स्थान को गये। जब महाकाल त्रिनेत्र शंकर के रूप में आते देखा तो देवताओं और मुनियों सहित उठकर उन्हें दंडवत किया और लाकर उच्चासन दे उनके मस्तक पर अंजलि बाँध कर उनकी अनेक प्रकार से स्तुति की। बाद में लक्ष्मी से कहा। हे देवि! आज हम तुम दोनों बड़े धन्य हैं क्योंकि जगत्पति शिव का दर्शन किया। यही वे प्रभु हैं जिन्होंने तीनों लोकों को धारण किया हुआ है। यही वह अनादि, शरण, शांत और छब्बीस तत्वों से युक्त हैं कि जो योगियों में ईश्वर, भूतों के स्वामी, सब प्राणियों के अन्तर्यामी और प्रत्येक को सर्वदा सब कुछ देने वाले हैं। इनके दर्शन मात्र से मनुष्य आवागमन के चक्कर से छूट जाते हैं। ऐसा कह कर विष्णुजी प्रसन्न हो शिवजी से बोले हे महामते आपकी यह कैसी क्रीडा हुई। हे भगवान् आप भिक्षा मांगने क्यों निकले हैं। मुझे यहां पर संशय हो रहा है। तब भगवान् भैरव ने हंसकर कहा, मैंने अपनी अँगुलियों के नाखूनों से ब्रह्मा का सिर काट लिया है। उसी पाप के पश्चाताप में मैंने इस शुभव्रत का अनुष्ठान किया है। यह सुन भगवान् विष्णु जी बोले—हे भैरवजी! आप तो समस्त विघ्नहर्त्ता हैं फिर भी जो चाहें क्रीड़ा करें। श्री विष्णु जी के ऐसा कहने पर लक्ष्मी ने अपनी मनोरथी नामक विद्या को उनके पात्र में छोड़ दिया। भैरव रूपधारी महादेवी जी प्रसन्न होकर भिक्षा के लिये दूसरी ओर चले गये। तब उनके पीछे ब्रह्महत्या को भी जाते देख विष्णु ने उसे बुलाकर कहा कि तू शिवजी का पीछा छोड़ दे। तब ब्रह्महत्या ने कहा—हे विष्णु जी। इसी बहाने मै शिवजी की सेवा करती हूँ। तब भैरवजी अविमुक्त क्षेत्र काशी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चले गये। भैरव के काशी पहुँचते ही ब्रह्महत्या हाहाकार करती हुई पाताल में समा गयी। उसी समय ब्रह्माजी का सिर भैरव के हाथ से छूटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और वहां कपाल मोचन तीर्थ हो गया। भैरव जी ने वहां बड़े आनन्द का नृत्य किया। भैरवजी के हाथ में ब्रह्मा का कपाल तब तक चिपटा ही रहा जब तक वे काशी नहीं पहुँचे थे इसी कारण काशी सदा सेवनीय है। जो मनुष्य कपाल मोचन का स्मरण करता है उसके इस जन्म तथा दूसरे जन्मों के पाप धुल जाते हैं। इस तीर्थ में जाकर सविधि पिंडदान करने से मनुष्य ब्रह्महत्या के पाप से भी छूट जाता है तथा जो नित्य भैरव जी के दर्शन करता है तथा काशी में रहकर कृष्णाष्टमी के दिन या मंगलवार के दिन कालराज का दर्शन नहीं करता उसके पुण्य क्षीण होते हैं। यदि कोई कारागार में पड़ा हो तो इस कथा को सुनकर सब कष्टों से मुक्त हो जाता है।

दसवां अध्याय

(भगवान श्री नरसिंह की लीला तथा शिव का शार्दूल अवतार। इस कथा के पठन-पाठन तथा मनन से भक्तों का कल्याण।)

नंदीश्वर बोले—हे भगवन् दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने वाले वीरभद्र नामक अवतार का वर्णन मैं पहले ही कर चुका हूं। अब शिव के शार्दूल नामक शिव के अवतार की कथा सुनो। देवताओं के कल्याण हेतु भगवान शिव ने शरभरूप भी धारण किया था। भक्तों के हित के लिए शिवजी ने अनेक बार अवतार लिया। उन अवतारों की गणना संभव नहीं है। जब आपने जय-विजय नामक द्वारपाल को श्राप दिया तब दोनों दिति पुत्र कश्यप से उत्पन्न हुए। उनमें एक का नाम हिरण्यकशिपु तथा दूसरे का हिरण्याक्ष पड़ा। जब इन दोनों ने बड़ा उपद्रव किया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तो ब्रह्मा के कहने पर विष्णु ने वाराह रूप धारण कर हिरण्याक्ष को मार डाला। उसके भाई हिरण्यकशिपु ने दस हजार वर्ष तक घोर तप करके ब्रह्माजी को प्रसन्न कर वर प्राप्त कर अवध्य हुआ। फिर अपने शोणित नगर में जाकर तीनों लोकों को वश में कर राज्य करने लगा। वह देवताओं तथा ऋषियों को कष्ट देता हुआ धर्मों का लोप करने वाला तथा ब्राह्मणों को पीड़ा देने वाला हुआ। तब विष्णु ने नृसिंह अवतार धारण कर सम्पूर्ण दैत्यों को मार डाला। परन्तु नृसिंह का क्रोध किसी प्रकार शान्त न हुआ। संसार व्याकुल हो गया। देवताओं को दुःख हुआ कि अब क्या होने वाला है? तब उनकी शान्ति के लिये देवताओं ने प्रह्लाद को उनके पास भेजा। उनकी स्तुति से प्रसन्न हो नृसिंह ने उनको हृदय से लगाया तथा उनका क्रोध कुछ शान्त हुआ। परन्तु पूर्ण शान्ति उनमें तभी भी न आई। तब दुःखी हो देवगण शंकरजी की शरण में गए तथा नृसिंह को शान्त करने की प्रार्थना की। भक्त वत्सल शिवजी ने देवताओं को अभयदान देकर कहा कि आप निश्चिन्त होकर जाइये मैं उन्हें शान्त करूंगा।

ग्यारहवां अध्याय

(भगवान् भैरव का नृसिंह को शान्ति पूर्वक समझाना तथा बाद में हरण करना। नृसिंह का निस्तेज होना और भगवान् शिव की शरण में जाना।)

नन्दीश्वर बोले—अब देवताओं से प्रार्थना करने के फल-स्वरूप भगवान् शंकर ने प्रलय कर भैरव रूप महाबली वीरभद्र को बुलाकर कहा कि हे भैरव! बिना कारण ही देवताओं को नृसिंह से भय उत्पन्न हो गया है अतः इस नृसिंहाग्नि को शान्त करो। पहले तो शान्ति से शान्त करो। अगर न माने तो अपना

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri Gangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

परम भैरव रूप दिखाकर उन्हें शान्त करो। शिवजी की आज्ञा से गणाध्यक्ष शान्त शरीर धारण कर नृसिंहजी के पास पहुँचे। उसी प्रकार नृसिंह को समझाते हुए बोले—हे माधव! आपने संसार के सुख और स्थिति के लिये ब्राह्मणों की प्रेरणा से अवतार लिया है। पहले मत्स्य रूप से अपनी पूँछ में नौका बांधकर प्रलय के समुद्र में मनुजी को घुमाया था। फिर वाराह रूप से पृथ्वी का उद्धार कर अब नृसिंह रूप से हरिण्यकशिपु को मारा है। आप ही ने बामन रूप धारण कर बलि को बांधा और आप ही सब प्राणियों के उत्पन्न कर्त्ता, स्वामी और अविनाशी हैं। आप ही संसार को दुःखों से रहित करने वाले हैं। आपने जिस लिये नृसिंह रूप धारण किया था। वह कार्य अब पूर्ण हो गया है। अब आप अपने इस भीषण नृसिंह रूप को शांत कीजिए। तब वीरभद्र की बात को सुनकर नृसिंहजी ने उस पर अत्याधिक क्रोध किया तथा दांत किट-किटाते हुए महाघोर कठिन वचनों में बोले—तुम यहां से चले जाओ। मैं उस चराचर जगत् का इसी समय संहार कर दूँगा। यहां सब जगह मेरा शासन है। मैं संहार कर्त्ता हूँ। मुझ पर किसी का शासन नहीं है। मैं ही सब शक्तियों का प्रवर्तक और निवर्तक हूं। सबका स्वामी मैं ही हूं। तब वीरभद्र को नृसिंह के इन अहंकार पूर्ण वचनों को सुन कर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने होंठ कंपाते हुए विष्णुजी से कहा—क्या आप संहार कर्त्ता शिवजी को नहीं जानते? आपमें केवल असत्य वाद-विवाद ही दिखाई पड़ता है। आपको यह ज्ञात होना चाहिए कि मैं तुम्हारे संहार के निमित्त ही उन रुद्र की प्रेरणा से यहां आया हूं। उन्हीं की शक्ति से युक्त हो एक राक्षस को मारा है। किन्तु आप उसका तत्व न जानकर अहं-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कार से गर्जते हो। आप न सृजन कर्त्ता, न पोषण कर्त्ता, न संहार कर्त्ता हो। आप तो शिव के अधीन होकर ही अवतार लेते हो। अब तक भी तुम कूर्म रूपधारी का जला हुआ कपाल शंकरजी की ही अस्थिमाला में विद्यमान है जिसे कोई धारण नहीं कर सका। दक्ष के यज्ञ में मैंने ही तुम्हारा सिर काटा था। अब भी तुम्हारे पुत्र का पांचवां सिर काटा गया और जो अब तक नहीं जमा है। क्या यह आप सब भूल गए। आदि से अन्त तक सारी शक्ति शिवजी की ही फैली हुई है, उसी से तुम शक्तिमान होकर चारों ओर तेज से मोहित हो रहे हो। हे नृसिंह! यदि तुम अपनी आत्मा को अन्तर्हित न कर लोगे तो इसी समय मुझ भैरव रूपी क्रोध वाले शंकर का बड़ा वज्र मृत्यु के समान तुम पर पड़ेगा।

बारहवां अध्याय

(नृसिंह का भगवान् शिव द्वारा दर्प दलन तथा नृसिंह जी के चर्म तथा मुख को अपनी मुंडमाला में मिलाना।)

नंदीश्वर बोले—जब वीरभद्र ने ऐसा कहा, तब नृसिंह अत्यन्त क्रुद्ध हो उन पर झपटे। फिर तो आकाश में व्याप्त शिवजी का कठिन तेज प्रकट हो गया और वीरभद्र जी ने नृसिंह जी को अपनी भुजाओं में बांधकर इस प्रकार पकड़ लिया कि वे अत्यन्त ही व्याकुल हो गए। फिर विष्णु जी को लेकर ऐसे उड़े कि भगवान् शिव के वृषभ के नीचे लाकर डाल दिया। विष्णु व्याकुल हो गए। सभी देवताओं और मुनिश्वरों ने शिव जी की स्तुति की। शिवजी से गृहीत तथा परवश विष्णु का शरीर दीन हो गया। वे अंजलि बांध अपने मनोहर वचनों द्वारा शिवजी की स्तुति करने लगे। आठ सौ नामों से उन्होंने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शंकर जी की स्तुति की। वीरभद्र ने उनके सम्पूर्ण अवयवों को अपने में लय कर लिया। सभी देवता उस कल्याणकारी परमेश्वर की स्तुति करने लगे। सब देवताओं के इन वचनों को सुनकर परमेश्वर उनसे बोले—आप घबराइये नहीं। इससे विष्णु की महत्ता कोई कम न होगी। वह अब भी मेरे भक्तों से नमस्कृत हुआ करेंगे। तभी से भगवान् शंकर नृसिंह जी के चर्मधारी हुए और अपनी मुंडमाला में उनके मुख को मिला लिया। जो भक्त इस वेद रस से पूर्ण आख्यान को पढ़ता या सुनता है उसके सब मनोरथ पूर्ण होते हैं तथा यह वृत्तांत धन, यश, आयु, आरोग्य और बुद्धि देने वाला तथा सब विघ्नों को शांत करने वाला है।

तेरहवां अध्याय

(विश्वानर का भगवान् शिव की स्तुति तथा शिव के समान पुत्र की प्राप्ति। तत्पश्चात गणपति पद को प्राप्त करना।

नंदीश्वर जी बोले—हे ब्रह्मा जी के पुत्र! अब शशिशेखर के उस चरित्र को सुनिये कि जो उन्होंने विश्वानर के घर अवतार लिया। पुराने जमाने में नर्मदा के तट पर नर्मपुर नामक एक रमणीक नगरी थी, जिसमें शिव भक्त विश्वानर नामक एक मुनि रहता था। वह सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता और शिव जी के चरणों में निपुण तथा लोकाचार मे चतुर था। पश्चात एक शुचिष्मती नामक ब्राह्मण की कन्या से उसका विवाह हुआ। एक समय उसकी पतिव्रता स्त्री ने उसकी बड़ी सेवा की। तब ब्राह्मण ने प्रसन्न हो उसे वर मांगने के लिए कहा। पत्नी ने कहा—यदि आप प्रसन्न हैं तो कृपया मुझे महादेव जी के समान पुत्र दो। तब उसके ऐसे वचन सुनकर वह व्रती ब्राह्मण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

समाधि में स्थित हो इस प्रकार विचार करने लगा कि स्त्री ने कितना दुर्लभ वर मांगा है। भगवान् शम्भु की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता। ऐसा विचार कर उस एक पत्नी व्रत में स्थित ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा कि विश्व के ईश्वर भगवान् शिव हैं। मैं वहां तप करने जाता हूं। तुम किसी बात की चिंता न करना। ऐसा कहकर वह काशी में मणिकर्णिका घाट पर उसके दर्शन कर अपने सैकड़ों जन्मों के पाप दूर किये तथा वहां के विश्वेश्वरादि शिवलिंगों का दर्शन किया। तब उसे ज्ञात हुआ कि वीरेश लिंग इसके लिए प्रशंसनीय है। इस प्रकार उस धीर व्रती ब्राह्मण ने उस वीरेश लिंग की यथाविधि पूजा की। एक वर्ष तक निराहार तथा जल पीकर अद्भुत तप किया। तब तेरहवें महीने में जब एक दिन वह प्रातःकाल गंगा के जल में स्नान करके लिंग का पूजन करने गया तो उसी समय तपोधन लिंग के मध्य भाग में स्थित हुए आठ वर्ष के सुन्दर बालक को देखा जो बहुत ही सुन्दर पीली जटा और मुकुट लगाये नग्न तथा हंसता हुआ उसकी ओर देख रहा था। तब उस बालक को प्राप्त कर मुनि के हर्ष की सीमा न रही। उन्होंने रोमांचित हृदय से उसे बार-बार नमस्कार किया तथा आठ पदों से युक्त उस परमानन्द शम्भु की स्तुति की। उस बालक ने प्रसन्न होकर कहा कि हे ब्राह्मण! मैं तुमसे प्रसन्न हूं, वर मांगो। इस पर विश्वानर ने कहा—हे प्रभो! आपसे कुछ भी छिपा नहीं है। तब उस बालक ने कहा कि तुमने जो शुचिष्मती से पुत्र होने का विचार किया वह शीघ्र ही पूरा होगा। मैं स्वयं ही तुम्हारी स्त्री में पुत्र रूप से प्रकट होऊंगा और वहां मेरा नाम गृहपति होगा। आपका कहा हुआ अभिलाषाष्टक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

स्तोत्र जो शिवजी के समीप से पाठ करेगा उसे एक वर्ष में सिद्धदायक होगा। यह वन्ध्या के भी पुत्र करने वाला अभिलाषाष्टक स्तोत्र है। पर इसे हर एक को नहीं देना चाहिए तथा बहुत यत्न से छिपाकर रखना चाहिए। इसे स्त्री हो या पुरुष कोई भी नियम पूर्वक शिव लिंग के समीप एक वर्ष तक जपेगा तो उसकी पुत्र कामना निश्चय पूर्वक पूर्ण होगी।

चौदहवां अध्याय

(विश्वानर के घर मे गृहपति का अवतरण तथा नारद के द्वारा उसके बीसवें वर्ष को अशुभ बताना।

नंदीश्वर बोले—अब उस ब्राह्मण ने अपने घर में आ अपनी स्त्री से सारा हाल कहा। समयानुसार उसकी स्त्री गर्भवती हुई। शुभ लग्न में चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाले पुत्र को शुचिष्मती ने जन्म दिया। देवताओं ने दुन्दुभि बजाई। दिशायें, नदियों के जल तथा प्राणियों के मन निर्मल हो गए। सब मनुष्यों की वाणी प्रिय तथा कल्याणमयी हो गई। रम्भा आदिक अप्सरायें, किन्नरियां हाथ में मांगलिक द्रव्य लिये मंगलकारी गीत गाने लगीं। मरीचि, पुलस्त्य आदि महामुनि और अन्य बहुत सी मुनि कन्यायें उस पुत्र की शान्ति के लिए विश्वानर के आश्रम पर आये। बृहस्पति सहित ब्रह्मा तथा विष्णु, नंदी और भृंगी गणों सहित शिव तथा महेन्द्र आदि देवता तथा पाताल-वासी नाग आदि भी आये। बिना समय के भी चांदनी हो गई। ब्रह्माजी ने बालक का जात संस्कार कर्म आदि किया तथा उसका गृहपति नामकरण किया। उसकी रक्षा का उपाय कर उसे बहुत आशीर्वाद दिया। फिर शिवादि देवता अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर अपने धाम को चले गए। इसके पश्चात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पिता ने समय-समय पर होने वाले सभी यथोचित संस्कार किये। पांचवें वर्ष में यज्ञोपवीत किया। फिर उपकर्म करके एक ही वर्ष में सांगपद कर्म से सब वेदों को पढ़ा दिया और जब बालक नौ वर्ष का हुआ तो नारद जी उसे देखने आए और कहा कि इसके सब भाग्य तो अच्छे हैं परन्तु बारहवें वर्ष में इसको बिजली तथा अग्नि से भय है। ऐसा कहकर नारदजी चले गए।

पन्द्रहवां अध्याय

(गृहपति द्वारा भगवान् शिव की घोर तपस्या तथा मृत्युञ्जय नामक वर को प्राप्त करना तथा गृहपति का अवतार होना।)

नंदीश्वर बोले—नारद जी के इन वचनों को सुन विश्वानर को स्त्री सहित महा संताप हुआ और वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। शुचिष्मती भी दुःख तथा भय से व्याकुल होकर हाहा-कार करने लगी। विश्वानर ने उठकर उसे संभाला और अपने पुत्र गृहपति की खोज की। पिता का शब्द सुनते ही वह दौड़ा आया और दोनों के रोने का कारण पूछने लगा। इसके बाद कहने लगा, आपके चरणों की रज के प्रताप से और कोई विघ्न तो क्या काल भी मुझे नहीं मार सकता। हे तात! आप इसकी चिन्ता न करें। यदि मैं आपका पुत्र हूं तो मृत्यु-विजयी शिव-मंत्र को जपकर मृत्यु से अपनी रक्षा कर लूंगा। इसे सुन माता पिता ने कहा—हे पुत्र! हां तुम भी उसी शिव की शरण में जाओ जो ब्रह्मादिकों का एक मात्र कर्त्ता, अविनाशी और विश्व की रक्षा रूप मणि के समान हैं। फिर तो बालक गृहपति ने माता पिता के चरणों की वंदना की तथा उन्हें बहु प्रकार से आश्वासन देकर विश्वेश-पालित काशी में आकर सविधि स्नान कर शिवजी का पूजन और दर्शन किया। वह शिवजी के लिंग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को देखकर बड़ा संतुष्ट हुआ। उसने भक्ति पूर्वक वहां एक और ही शिवलिंग की स्थापना कर घोर नियमों को ग्रहण कर गंगाजल के एक सौ आठ घड़ों से प्रतिदिन पवित्रता पूर्वक शिव जी को स्नान कराया और नीलों कमलों की माला समर्पित कीं तथा उसी प्रकार सभी शिव नियमों का पालन किया। फिर तो उसके जन्म से बारहवें वर्ष नारद जी के वचनों को सत्य करने की इच्छा हो वर मांगो। इन्द्र के ऐसे वचनों को सुन मुनि के पुत्र ने मधुर अक्षरों से उनकी स्तुति की और कहा कि मैं आपसे वर नहीं चाहता। मुझे तो केवल शिवजी वर देंगे। इन्द्र ने कहा मुझसे बड़ा शंकर नहीं है। लड़कपन त्याग मुझसे वर मांगो। मैं सभी देवताओं का स्वामी हूं। शीघ्रता करो। गृहपति ने कहा—हे अहल्याप के इन्द्र! आप जाइये। मैं शिवजी को छोड़कर अन्य किसी देवता से प्रार्थना नहीं करता। यह सुन इन्द्र को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने अपना वज्र निकाल बालक को डराया। बालक को बिजली से व्याप्त वज्र को देख व्याकुल हो मूर्च्छित होते देख पार्वती सहित साक्षात शिवजी वहां प्रकट हो गये और उन्होंने हाथों से पकड़कर उसे सजीव किया। गृहपति मानो सोते से उठकर सैकड़ों सूर्य के समान प्रकाशमान शंकर को देखने लगा। वह हर्षाश्रु से अवरुद्ध कंठ द्वारा गद्-गद् वाणी तथा रोमांचित शरीर से महादेव जी की स्तुति करने लगा। शिवजी हंसने लगे—बालक डरो मत यह तुम्हारी परीक्षा थी। मैंने ही इन्द्र को भेजा था। मेरे भक्त को इन्द्र तथा काल वज्र कोई भी नहीं मार सकता। तुमने जो मेरा लिंग स्थापित किया है, इसके तेज के आगे कोई नहीं ठहर सकता, इसी कारण इसका नाम आग्नीश्वर हुआ। यह आग्नी-

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

श्वर महादेव भक्तों को बिजली तथा अग्नि से बचाता रहेगा। ऐसा कह शिवजी ने उसके भाई तथा बन्धुओं को बुला, उनके देखते-देखते उसे आग्नीश्वर की दिशाओं का राज्य दिया तथा स्वयं उसके स्थापित लिंग में प्रवेश कर गये। इस प्रकार गृह-पति अवतार सम्पूर्ण हुआ।

सोलहवां अध्याय

(यक्षेश्वर अवतार का अवतरण। उनकी कथा का आख्यान तथा जिसके सुनने व मनन से जगत के पापों का नाश तथा शिव भक्तों का कल्याण।)

नंदीश्वर जी बोले—हे मुनीश्वर! अब आप शिवजी के उस अवतार का आख्यान सुनिये जो अहंकारी तथा अभिमानी जनों का अभिमान नष्ट करने वाला तथा सत्पुरुषों की भक्ति बढ़ाने वाला है। जब अमृत के लिए देवताओं और असुरों ने क्षीर सागर का मंथन किया तो पहले उसमें से हलाहल विष निकलकर सारे विश्व को भस्म करने लगा। उससे देव तथा दानव भयभीत हो विष्णु को साथ ले शिवजी के पास गये तथा अपना सारा दुःख कहा। शिवजी ने दया भाव से उठ सारा विष स्वयं पान कर लिया जिससे उनके कंठ में श्यामलता आ गई तथा वे नीलकंठ कहलाये। तत्पश्चात् देव तथा दानवों ने फिर समुद्र को मथा तो उसमें रत्न निकले तथा अमृत का प्रादुर्भाव हुआ। अमृत को केवल देवों ने पान कर लिया और दैत्यों को उसमें कुछ न मिला। इस पर देवों तथा दैत्यों में घोर संग्राम हुआ और राहु के भय से पीड़ित चन्द्रमा भाग गया। शिवजी ने चन्द्रमा को अपने सिर पर धारण कर उसकी रक्षा की। जब देवताओं द्वारा दैत्य पराजित हो गए तो देवों को इस बात पर बड़ा अभिमान हो गया कि वे बड़े पराक्रमी हैं। तब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उन्हें मिथ्या मद में चूर देखकर शिवजी यक्ष का रूप धारण कर उनके पास आये और पूछा कि तुम लोग यहां पर किस लिए स्थित हो, मुझे भली प्रकार बताओ। देवताओं ने कहा कि यहां पर भयंकर युद्ध कर हमने दैत्यों को मार भगाया है। हम बड़े ही बलवान हैं, हम इसी बात पर विचार कर रहे हैं। इस पर यक्षेश्वर ने कहा—हे देवताओ! तुम्हारा गर्व मिथ्या है, तुम्हारा निर्माण करने वाला स्वामी कोई अन्य है। लगता है तुम उस महादेव को भूल गए। यदि तुम्हें बल का ऐसा ही अभिमान है तो उसकी परीक्षा करो। मैं यहां एक तिनका स्थापित करता हूं तुम लोग अपने अस्त्रों से इस तिनके को काट दो। ऐसा कह यक्ष रूपी रुद्र ने देवताओं के आगे एक तिनका फेंक दिया। तभी सब वीर अभिमानी विष्णु आदि देवता अपना पुरुषार्थ कर उस पर अपने-अपने अस्त्र चलाने लगे। देवताओं के सर्व अस्त्र व्यर्थ गए। वे उस तृण को न काट सके। देवताओं को महान् आश्चर्य हुआ। तब वहां पर आकाश वाणी हुई। यह यक्ष सब गर्वों के विनाशक शंकर महादेव हैं। यही परमेश्वर, कर्त्ता, पालन कर्त्ता हैं। आकाशवाणी को सुन देवता आश्चर्य चकित हो उन यक्षेश्वर ईश्वर को प्रणाम करने लगे। तब यक्षनाथ सब देवताओं को समझाकर वहां से अन्तर्ध्यान हो गए। शिवजी का निर्मल रूपी आख्यान सब अभिमान नाशक तथा सज्जनों को मुक्ति तथा कामनाएं प्राप्त करने वाला है।

सत्रहवां अध्याय

(शिवजी के दस अवतारों का अवतरण। शंकर का महा आख्यान। भक्ति तथा मुक्ति प्रदान करने वाला सिद्ध।)

नन्दीश्वर बोले—हे महामुनि! अब शिवजी के दस अवतारों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की कथा का वर्णन करता हूं। उनमें पहला महाकाल नामक सज्जनों को भुक्ति तथा मुक्ति देने वाला है। उसकी महाकाली शक्ति भक्तों को हमेशा इच्छित फल देती है। दूसरा तारा नामक अवतार अपने सेवकों का सुख तथा मुक्ति दाता है। तीसरा बाल नामक भुवनेश अवतार और उसकी बाला भुवनेशी नामक शक्ति हुई। चौथे षोडष नामक विद्येश की षोडशी शक्ति हुई जो भक्तों को सुख और मुक्ति देने वाली है। पांचवां गिरजा नामक भैरवा शक्ति श्रेष्ठ उपासकों की कामनाएँ पूर्ण करने वाली हैं। छटवें छिन्न मस्तका की गिरजा नामक शक्ति भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करती है सातवां धूम्रवान नामक शम्भु का अवतार हुआ जिसकी धूमवती नामक शक्ति सज्जन उपासकों को फलदाता हुई। आठवाँ बगला मुख नामक सुखदायक शिव का अवतार हुआ जिसकी महा आनन्द दायिनी बगला-मुखी शक्ति हैं। नवां मातंग नामक शिव का अवतार हुआ और मातंगी शक्ति हुई। दसवां कमल नामक शिव अवतार हुआ, जिसकी कमला नामक शक्ति भक्त पालक हुई। भगवान् शंकर के ये दस अवतार तंत्र शास्त्र से सम्बन्धित हैं और इनकी शक्तियों की अद्भुत महिमा हैं। ये शक्तियां शत्रु के मरण आदि कार्यों में अधिक प्रयुक्त होती हैं तथा यह दुष्टों को नित्य दंण्ड देने वाली ब्रह्मतेज को बढ़ाने वाली हैं।

अठारहवां अध्याय

(एकादश रुद्रों की उत्पत्ति का वर्णन तथा उनके पठन, पाठन तथा मनन से पाठकों तथा भक्तों के कल्याण की गाथा।)

नंदीश्वर जी बोले—हे मुनिश्वर। अब शिवजी के ग्यारह अवतारों का वर्णन सुनो। एक समय में जब इन्द्र अमरावती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

छोड़कर भाग गए थे तब उनके शिव भक्त पिता श्रृष्टि कश्यप को अत्यधिक दुःख हुआ। उन्होंने इन्द्र को बड़ा समझाया तथा स्वयं शिव की नगरी काशी की ओर प्रस्थान किया। वहां पहुंच उन्होंने गंगा में स्नान कर शिवजी के लिंग की स्थापना की तथा प्रीति पूर्वक शिवजी का तप किया। जब तपस्या करते-करते उन्हें बहुत दिन व्यतीत हो गए तो उसे वर देने के लिए भक्त-वत्सल शिवजी प्रकट हो गए। तब कश्यप जी ने अनेक प्रकार से शिवजी की स्तुति की तथा कहा—हे महेश्वर मैं पुत्रों के दुःख से दुःखी हूं। मैं आपकी शरण हूं। मुझे सुखी कीजिये। आप पुत्र हों यह वर दीजिये। हे महेश! जिस प्रकार दैत्यों से दी हुई पीड़ा देवताओं को बाधा न दे ऐसा कोई उपाय कीजिये। कश्यप जी के ऐसा कहने पर शिवजी तथास्तु कहकर अन्त-र्ध्यान हो गए। कश्यप जी प्रसन्न हो गए। तब शंकरजी अपना वचन सत्य करने के लिए सुरभि में प्रकट हुए। उस समय बड़ा ही उत्सव हुआ मानो सब कुछ शिव मय हो गया। सब देवता कश्यप से बड़े ही प्रसन्न हुए। फिर तो कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, अपिर्बुर्ध्य, शंभु, चंड तथा मव इन ग्यारह रुद्रों ने सुरंभि से जन्म लिया। ये सभी शिव के रूप तथा साक्षात सुख के समान हैं। इन ग्यारह रुद्रों ने देवताओं के हित के लिए अनेक बार संग्राम किया तथा दैत्यों को मारा। अब तक ये कश्यप ग्यारह रुद्रों के रूप में द्युलोक में विराजमान हैं। उनमें भी करोड़ों रुद्र अनुचर हैं जो तीनों लोकों में सर्वत्र चारों ओर स्थित हैं। हे पुत्र! यह शिवजी के एकादश रुद्र के अवतार का सुखवर्णन सुनने मात्र से सब पापों का नाश हो जाता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उन्नीसवां अध्याय

(अत्रि तथा अनुसूया का प्रसंग तथा भगवान् शिव द्वारा दुर्वासा के रूप में जन्म तथा ऋषि के क्रोध का जगत् प्रसिद्ध होना।)

नंदीश्वर जी बोले—हे मुनियों में सर्वश्रेष्ठ! अब मैं शिव जी के उस चरित्र को सुनाता हूं जिसमें उन्होंने दुर्वासा जी का रूप धारण किया था। एक बार परम तपस्वी महर्षि अत्रि ने अपनी पत्नी अनुसूया के साथ पुत्र की इच्छा के लिए ऋक्ष नामक पर्वत पर ईश्वर की प्रसन्नता के लिए घोर तप किया तो उनके सिर से बड़ी तीक्ष्ण अग्नि की शिखा निकली। उसकी ज्वाला से सम्पूर्ण लोक भस्म होने लगे। तब इन्द्र को साथ ले सब देवता ब्रह्मा जी के पास गये। ब्रह्मा उन सबको साथ ले शिवलोक में शिवजी के पास गये। शिवजी ब्रह्मा, विष्णु के साथ बैठ सम्मति करने लगे तथा फिर अत्रि ऋषि को वर देने पहुंचे। अत्रि ने कहा—मैंने तो केवल एक शिवजी के ही पुत्र के कारण पत्नी सहित इनका ध्यान किया था। फिर आप तीनों देवता किस प्रकार यहां चले आये। कृपा करके मेरी शंका का समाधान कीजिए। ऐसा सुन तीनों देवताओं ने कहा आप ने जो संकल्प किया है वैसा ही होगा। हम तीनों देवता समान रूप से वर देने वाले हैं अतः हमारे अंश से तुम्हें तीन पुत्र प्राप्त होंगे। अत्रि मुनि वर पाकर बहुत ही प्रसन्न हुए। फिर तो अनुसूया से ब्रह्मा के अंश से चन्द्रमा, विष्णु के अंश से दत्त भगवान् तथा शिवजी के अंश से मुनिश्रेष्ठ दुर्वासा ऋषि हुए। दुर्वासा ऋषि ने अपनी दयालुता वश बहुत से लोगों की परीक्षा ली। सूर्य वंश में उत्पन्न राजा अम्बरीष की उन्होंने परीक्षा ली थी। महाराजा अम्बरीष एकादशी का दृढ़ व्रत रखते थे। जब दुर्वासा उनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नियम को जानकर उसे भंग करने गये। राजा ने थोड़ी सी द्वादसी पाकर पारण का विचार किया था और ज्योंही वे पारण पर बैठने वाले थे कि दुर्वासा जी वहां रुष्ट हो गये। उन्होंने कहा कि मुझे बुलाकर तुमने बिना भोजन कराये जल क्यों पी लिया? ऐसा कह ऋषि ने क्रोध कर राजा को अपना शाप दे भस्म करना चाहा। परन्तु उसी समय उसकी रक्षा के लिए राजा में स्थित सुदर्शन चक्र उनकी रक्षा करने आया। शिव की माया से मोहित मुनि को शिव रूप नहीं जाना और मुनि को जलाने चला। तब आकाशवाणी हुई और कहा कि दुर्वासा तो शिव के अवतार हैं सुदर्शन चक्र तो शिव ने ही विष्णु को दिया है फिर शिव पर कैसा वार? सुदर्शन चक्र शांत हो गया। राजा अम्बरीष ने दुर्वासा को शिव रूप जानकर उन्हें प्रणाम कर उनकी स्तुति की। दुर्वासा प्रसन्न हुए और अम्बरीष के घर इच्छित भोजन किया। इसी प्रकार दुर्वासा ने एक बार रामचन्द्र जी की परीक्षा ली। दुर्वासा जी ने नियम किया था कि हमारे तुम्हारे वार्तालाप में कोई दूसरा न आने पावे। जब एक समय वे दोनों एकांत में वार्तालाप कर रहे थे कि लक्ष्मण बीच में आ गये। इससे प्रतिज्ञा अनुसार रामचन्द्र जी ने शीघ्र ही लक्ष्मण का परित्याग कर दिया। रामचन्द्र के इस दृढ़ नियम से दुर्वासा जी प्रसन्न हुए और रामचन्द्र जी को वर दिया। इसी प्रकार इस महामुनि ने एक बार भगवान् श्री कृष्ण की कड़ी परीक्षा ली। जब भगवान् विष्णु कृष्ण जी के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए तो वे नियम पूर्वक ब्राह्मणों को जिमाते थे तथा उनके बड़े भक्त थे। जब श्री कृष्ण रथ जोतकर रुक्मिणी सहित चले तो दुर्वासा ने उन्हें वर दिया कि तुम्हारे सभी अंग वज्र के समान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो जावें। ऐसे ही एक बार दुर्वासा जी नग्न हो जल में स्नान कर रहे थे। द्रोपदी ने उन्हें देख लिया और तुरन्त अपनी साड़ी का वस्त्र फाड़कर उनके शरीर को ढकने को दे दिया। दुर्वासा जी ने उसे उठाकर उससे अपना गुप्तांग ढक लिया और द्रोपदी को उस वस्त्र के टुकड़े के स्थान पर वस्त्र बढ़ने का वर दिया, जो कि द्रोपदी के चीर हरण के समय काम आया। इस प्रकार दुर्वासा जी ने बहुत से अद्भुत चरित्र किये। जिसे सुनकर मनुष्य धन तथा आयु पाता है तथा परलोक में सुख प्राप्त करता है।

बीसवां अध्याय

(भगवान् शिव द्वारा विष्णु के मोहिनी रूप को देखकर काम पीड़ित होना तथा हनुमान का जन्म। हनुमान द्वारा भगवान विष्णु के अनेक कार्य सम्पन्न करना तथा जगत् में प्रसिद्धि को प्राप्त करना।)

नंदीश्वर जी आगे बोले—हे मुने! एक समय जब शिवजी ने विष्णु जी का परम मोहिनी रूप देखा तो लीलावश वे काम के वशीभूत हो गये तथा अपना वीर्यपात कर दिया। सप्तर्षियों ने उस वीर्य को पत्ते पर स्थापित कर गौतम की पुत्री में कर्ण द्वारा रामचन्द्र के कार्य के लिए उसे अंजनी में प्रवेश कराया। उस वीर्य से महाबली और पराक्रम युक्त बानर शरीर वाले हनुमान जी शिव से उत्पन्न हुए। हनुमान पैदा होते ही सूर्य को फल समझ कर खाने के लिये दौड़े। तब देवताओं ने विनती कर उसे ऐसा न करने के लिए कहा। देवताओं ने महाबली हनुमान को शिव का अवतार समझ कर बहुत से वर दिये। हनुमान प्रसन्न होकर अपनी माता के पास गए तथा सारा हाल कहा। इसके बाद वे अपनी माता की आज्ञा से सूर्य के अंश से उत्पन्न सुग्रीव से मिले। सुग्रीव अपने बड़े भाई द्वारा अपनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

स्त्री के हरण से अत्यधिक दुःखी था तथा ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था। हनुमान सुग्रीव के पास रहने लगे तथा उनके मंत्री हो गए। इधर अपनी पत्नी हरण के दुःख से दुःखी रामचन्द्र अपने भाई लक्ष्मण के साथ वहां पहुंचे। रामचन्द्र ने भाई की स्त्री को भोगने वाले पापी वीर बाली को मार डाला। फिर हनुमान ने बानरों को साथ लेकर सीताजी की खोज की तथा पता लगाया कि जानकी लंका में हैं। उन्होंने समुद्र को आकाश मार्ग से पार किया तथा वहां जाकर उन्होंने बड़ा अद्भुत चरित्र किया। सीता जी को उनके स्वामी का समाचार सुनाया तथा रावण की वाटिका को उजाड़ा। जब वे बहुत से राक्षसों को मार कर लौटने लगे तो रावण के दूतों ने उन्हें ब्रह्म पाश में फांस कर उनकी पूंछ में वस्त्र लपेट तेल गिरा उसमें आग लगा दी। इससे क्रोधित होकर उन्होंने सारी लंका नगरी में आग लगा दी परन्तु भगवान के भक्त विभीषण का घर छोड़ दिया। फिर वे रामचन्द्र के पास आए तथा सीता जी द्वारा दी गई सिर की मणि को रामचन्द्र को दे दिया। इसके बाद रामचन्द्र की आज्ञा से बानरों सहित समुद्र में पुल बांध कर लंका पर आक्रमण किया। वहां वीर हनुमान ने बहुत से दैत्यों को मार कर रामचन्द्र की सेना की रक्षा की तथा शक्ति से घायल लक्ष्मण को संजीवनी बूटी लाकर प्राण दिये। महाबली हनुमान ने कुटुम्ब सहित रावण को नष्ट किया और देवताओं को सुखी किया। इसके बाद अहिरावण को मार कर लक्ष्मण सहित राम को लाये तथा उन्हें हर प्रकार से सुखी किया। यह आख्यान धन-दायक, यश वर्धक और सर्व कामदायक है जो मनुष्य भक्ति-पूर्वक सावधान होकर सुनता है वह इस लोक में मोक्ष पाता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इक्कीसवां अध्याय

(भैरव का पार्वती को स्त्री की दृष्टि से देखना। पार्वती का कुपित होकर भैरव को शाप तथा उनका भूमि लोक में वेताल के रूप में जन्म लेना।)

नंदीश्वर जी बोले—हे शार्दूल मुनि! एक समय शिव पार्वती अपनी इच्छा से विहार करने लगे तो भैरव को द्वारपाल नियत कर ज्यों ही भीतर गये त्यों ही अनेक सुशील सखियां उनकी सेवा करने लगीं। परम स्वतन्त्र शिवजी कुछ ही देर में अनेक लीलाएं कर प्रसन्न हो गये। पर उन्मत्त पार्वती बाहर जाने लगी। द्वार पर भैरव द्वारपाल थे। पार्वती पर दृष्टि पड़ते ही उनके मन में विकार आ गया। तथा स्त्री भाव से देखते हुए वे उसे बाहर जाने को रोकने लगे। यह देख पार्वती को भैरव पर बड़ा क्रोध आया तथा उन्होंने उसे शाप दिया कि तूने मुझको स्त्री की दृष्टि से देखा है इस कारण तू पृथ्वी पर जाकर मनुष्य पन प्राप्त करेगा। भैरव को इसका बड़ा दुःख हुआ। तब शिवजी ने वहां आकर भैरव को अनेक प्रकार से आश्वासन दिया। परन्तु देवी का शाप सत्य तो होता। भैरव शीघ्र ही पृथ्वी पर आकर मनुष्य योनि में वेताल हो गये। पश्चात उनके स्नेह से पार्वती सहित शिवजी ने भी लौकिकी गति का आश्रय ले लीलावत पृथ्वी पर अवतार लिए। यहां शिवजी का नाम महेश तथा पार्वती का नाम शारदा हुआ। शिवजी का चरित्र धन दायक, सब गुणों को देने वाला, दुःखों को हरने वाला तथा मोक्ष देने वाला है।

बाईसवां अध्याय

(देवताओं तथा दैत्यों द्वारा समुद्र मंथन। समुद्र में से रत्नों की उत्पत्ति तथा अन्त में देवों तथा असुरों में महान् संग्राम।)

नंदीश्वर जी बोले—जब जरा और मृत्यु से व्याकुल हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देवता तथा दैत्य परस्पर रत्नों को लेने की इच्छा से क्षीर सागर का मंथन करने चले तो समुद्र किसके द्वारा मथा जाय इस पर विचार हुआ। तब आकाशवाणी हुई कि तुम इसके लिए मंदराचल को मथानी और वासुकी को रस्सी बनाओ। तब देवता और दानव मिलकर मंदराचल पर्वत को समुद्र में ले जाने के लिए उखाड़ने लगे तथा उसे अपनी भुजाओं से उठाकर क्षीर सागर में ले जाने लगे। परन्तु समुद्र में प्रवेश कराने में असमर्थ रहे तथा उनका बल क्षीण हो गया। मंदराचल देवों तथा दैत्यों के ऊपर गिर पड़ा और उनका बल क्षीण हो गया। चेतना आने पर उन्होंने शिव की स्तुति करनी शुरू कर दी। शिवजी ने उन्हें बल दिया। अब उन्होंने क्षीर सागर में मंदराचल को उठाकर डाल दिया। फिर वासुकी को रस्सी बनाकर क्षीर सागर का मंथन शुरू किया। सर्व प्रथम देवताओं की महेश्वरी भृगु की पुत्री लक्ष्मी निकली। फिर धन्वंतरि वैद्य, चन्द्रमा, पारिजात, कल्प वृक्ष, उच्चैःश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, मदिरा, हरि का धनुष, शंख, कामधेनु, कौस्तुभमणि तथा अमृत निकला। साथ ही कालकूट विष निकला और जब अमृत निकला तब उसके निकलते समय जो उसकी बूंदें बाहर निकलीं तो उनसे सुन्दर स्वरूप वाली स्त्रियां निकलीं। उनमें से लक्ष्मी, शंख, कौस्तुभ तथा खंग को विष्णु तथा उच्चैःश्रवा नामक सुन्दर घोड़े को सूर्य ने ग्रहण किया। इन्द्र ने पारिजात, कल्प वृक्ष तथा ऐरावत हाथी को लिया। परन्तु भक्तों के रखवाले भगवान् शिव ने कालकूट विष को अपने गले में उतारकर देवों तथा दैत्यों को भय मुक्त किया और बाद में भयभीत चन्द्रमा को सिर पर धारण किया। दैत्यों ने रमण कराने वाली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मदिरा ली तथा सभी मनुष्यों ने धन्वंतरि वैद्य को लिया। मुनियों ने कामधेनु गौ को ग्रहण किया तथा वे सभी स्त्रियां मोहिनी स्वरूप हो गईं। बाद में अमृत के लिए मलिन चित्त हुए देवता तथा दैत्यों में संग्राम हुआ तथा सूर्य के समान बलि आदि महान दैत्यों ने जबरदस्ती देवों को हराकर अमृत घट छीन लिया। तब दैत्यों से पराजित देवता शिवजी की शरण में गये। शिवजी की आज्ञा से विष्णु जी मोहिनी रूप धारण कर माया से दैत्यों से अमृत छीनकर देवों को पिला दिया। दैत्यों ने उस मोहिनी के निकट जाकर कहा कि हमको भी इस अमृत को पिलाओ तथा पंक्ति में भेद न होने पाये। शिवजी की माया से मोहित कपट वेष धारी विष्णु को देवताओं ने अमृत बांटने के लिए दिया। इसी समय दैत्यों ने अमृत से उत्पन्न सुन्दरियों को देखा तो वे उस ओर मुड़ गये और उन्हें अपने स्थान में ले जाकर रखा। शिव की माया से उनके बड़े से बड़े सुन्दर गुप्त स्थान बन गये। पश्चात उनकी रक्षा कर सभी दैत्य एक हो अमृत के लिए देवताओं से युद्ध करने लगे। देवताओं का दैत्यों के साथ भयंकर संग्राम हुआ जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ। विष्णु द्वारा रक्षित देवों ने विजय पाई तथा बहुत से दैत्य मारे गये। जो बचे वे पाताल के विवरों में समा गये। विष्णु उन भयभीत दैत्यों को हाथ में चक्र ले मारने के लिए पाताल में गये। वहाँ उन्होंने दैत्यों द्वारा स्थापित स्त्रियों को देखा। वे उनकी सुन्दरता पर मोहित हुए तथा अनेकों के साथ रमण किया। इससे उनके युद्ध दुर्भट पुत्रों ने जन्म लिया। जिन्होंने पाताल से लेकर पृथ्वी तक बड़ा उत्पात मचाया। इस कारण मुनियों तथा देवताओं को अनेक कष्ट पहुंचे। ब्रह्मा जी मुनियों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को साथ ले कैलाश पर शिवलोक गये। सबने शिवजी की स्तुति की। उस स्तुति से प्रसन्न होकर शिवजी ने वृषभ का रूप धारण किया। विष्णु को पाताल से लाने का आश्वासन दे देवताओं को विदा किया।

तेईसवां अध्याय

(शिव द्वारा वृषभ का रूप धारण करना, पाताल लोक को जाना तथा विष्णु के दर्प का दमन करना तथा जगत् को सुख प्रदान करना।)

नंदीश्वर बोले—शिवजी ने वृषभ रूप धारण कर गर्जते हुए पाताल के उस विवर में प्रवेश किया। उनकी प्रचंड गर्जना से नगर गिर कर नष्ट होने लगा। वृषभ रूपधारी शिव ने विष्णु के उन पुत्रों से संग्राम किया जिनका लड़ना स्वभाव बन गया था। रुद्र ने उन्हें अपने सींगों तथा खुरों से खूब मारा। जिससे कितने ही प्राणों से हाथ धो बैठे तथा कितने ही मूर्छित हो गए। अपने पुत्रों को मरते देख विष्णु अपने विवर से बाहर निकले तथा अपने दिव्य अस्त्रों तथा बाणों से वृषभ पर प्रहार किया, परन्तु शिव के आगे उनकी एक न चली तथा वे परास्त हो गए। तब वृषभ रूप धारी शिव को पहचान कर विष्णुजी बोले—हे महादेव मैं मूर्ख था जो आपकी माया से मोहित हो आप से युद्ध करने के लिए चल पड़ा। भला कोई अपने स्वामी से भी युद्ध करता है? तब शिवजी बोले—तुम पर्याप्त बुद्धिमान हो। अब तुम यहां रमण मत करो तथा इस विवर से निवृत्त हो जाओ। विष्णुजी लज्जित हो वहां से चलने लगे तो शिव ने उनका पुराना चक्र लेकर उन्हें सूर्य के समान चमकने वाला दूसरा सुदर्शन चक्र दिया। वृषेश्वर रूप भगवान शिव भी देवताओं का कल्याण कर कैलाश चले गए तथा इस प्रकार देवताओं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का दुःख दूर हुआ। जो मनुष्य इस वृषेश्वर अवतार की कथा को पढ़ेगा वह अत्यन्त ही मनोरथों को प्राप्त कर अन्त में मुक्ति को प्राप्त होगा।

चौबीसवां अध्याय

(शिवजी द्वारा मुनि पत्नी के गर्भ से पिप्पलाद का जन्म। इस अवतार से तीनों लोकों का कल्याण तथा मनुष्य मात्र को मुक्ति की प्राप्ति।)

नंदीश्वर जी बोले—हे मुनियों में सर्वज्ञ तथा श्रेष्ठ! अब तुम भक्ति सहित पिप्पलाद नामक महेश्वर अवतार की कथा सुनो। एक समय जब देवताओं ने वृत्रासुर को परास्त किया तो अपने सब आयुधों को दधीचि ऋषि के आश्रम में डालकर ब्रह्मलोक की यात्रा की। वहां पहुंच उन्होंने पितामह से सभी बातें कहीं। ब्रह्मा जी ने क्षण भर सोचकर कहा कि आप लोग महर्षि दधीचि के पास जाकर उनकी हड्डियों की याचना करो क्योंकि उन्होंने शिवजी की भक्ति कर अपनी हड्डियों को वज्र से भी अधिक कठोर होने का वर प्राप्त किया है। उनकी हड्डियां प्राप्त होने पर उसका वज्र निर्माण करो तथा उससे वृत्रासुर का वध होगा। ब्रह्मा जी की इन बातों को सुनकर देवताओं ने बृहस्पति को अपना नेतृत्व प्रदान किया तथा दधीचि के पास पहुंचे तथा हाथ जोड़कर उन्हें दण्डवत प्रणाम किया। देवताओं के आगमन का कारण पूछ ऋषि ने अपनी पत्नी सुवर्चा को आश्रम में भेज दिया तथा स्वयं देवताओं से वार्तालाप करने लगे। देवताओं की बातें सुन ऋषि ने कहा कि परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं। उन्होंने शिवजी का ध्यान करते हुए अपना शरीर त्याग दिया। देवता उनका त्याग देख विस्मित हो गये। इन्द्र ने कामधेनु द्वारा शीघ्र ही उनके शरीर से सब अस्थियां निकलवा लीं तथा त्वष्टा से उसका अस्त्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बनाने को कहा। विश्वकर्मा ने सुन्दर वज्रमय अस्त्र बनाया। इन्द्र ने वज्र से वृत्रासुर को मार डाला। फिर तो देवताओं ने बड़ा उत्सव मनाया। हे तात! अब शंकर के अवतार पिप्पलाद का वर्णन सुनो। जब दधीचि की पत्नी आश्रम में चली गई और सारे गृह कर्म करने के बाद बाहर आई तो उसे दधीचि सहित कोई भी देवता दिखाई न दिया तथा साथ ही कई प्रकार के अपशकुन भी हुए। उसने तप द्वारा सभी कुछ जान लिया तथा शोक पूर्वक देवताओं को पशु होने का शाप दिया। तभी उसे आकाशवाणी हुई कि तुम ऐसा न करो क्योंकि मुनीश्वर का तेज तुम्हारे शरीर में विद्यमान है तथा वेद की आज्ञा अनुसार सगर्भा स्त्री अपने शरीर को नहीं जला सकती। यह सुन सुवर्चा को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा उसने एक पत्थर उठा अपने गर्भ को विदीर्ण कर दिया। तभी गर्भ में से महा दिव्य शरीर वाला परम कान्ति युक्त एक सुन्दर बालक निकला। सुवर्चा ने उस बालक को शिव स्वरूप समझ प्रणाम किया तथा उस बालक के स्वरूप को अपने हृदय में स्थापित कर लिया। तत्पश्चात वे बोलीं—हे तात! मैं तो पतिलोक की इच्छुक हूं। तुम दीर्घ काल तक इस पिप्पल की मूल में निवास कर सबके सुखदायक बनो। सुवर्चा पुत्र से ऐसा कहकर परम समाधि लगाकर पतिलोक को चली गई। वहां जा अपने पति के साथ वह शिवलोक में पति की सेवा करने लगी। उधर मुनि पुत्र को शिव का अवतार समझ, ब्रह्मा विष्णु सहित सभी देवता आये तथा परम संतुष्टि से उसका संस्कार किया। ब्रह्मा जी ने उसका नाम पिप्पलाद रखा। महा प्रभु पिप्पलाद कितने ही काल तक लोक हितार्थ करते हुए उस अश्वत्थ वृक्ष की मूल में तप करते रहे।

CC-0. Deshmukh Library, JRP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पच्चीसवां अध्याय

(पिप्पलाद का पद्मा से विवाह तथा दस पुत्रों की प्राप्ति। शनि पीड़ा से मनुष्यों को मुक्ति तथा गाधि, कौशिक, पिप्पलाद आदि का स्मरण मात्र शनि पीड़ा नाशक।)

नंदीश्वर जी बोले—इस प्रकार पिप्पलाद ने संसार में विश्वास कर धर्म की स्थापना की। एक दिन पिप्पलाद मुनि पुष्पभद्रा नामक नदी में स्नान कर रहे थे तो उन्होंने एक सुन्दर तथा मनोहर युवती को स्नान करते देखा। वे उस पर मोहित हो गए तथा उसे प्राप्त करना चाहा। वह राजा अनरण्य की कन्या थी। महर्षि पिप्पलाद राजा अनरण्य के पास पहुंचे तथा कन्या की याचना की। यह सुन राजा चुप हो गया। राजा को संकोच में पड़ा देख पिप्पलाद ने कहा, या तो भक्ति पूर्वक कन्या मुझे दे दो या मैं तुम्हारे सहित सबको भस्म कर दूंगा। राजा ने भयभीत हो अपनी कन्या का विवाह उसके साथ कर दिया। पिप्पलाद विवाह कर अपने आश्रम में पहुंचे तथा उस पद्मा नामक स्त्री से आनन्द के साथ वास करने लगे। उन्होंने पद्मा से अपने समान दस पुत्र उत्पन्न किये। ऐसी ही कई प्रकार की लीलाएं उन्होंने कीं। संसार में किसी से निवारण न होने वाली शनिश्चर की पीड़ा को निवृत्त किया। उन्होंने यह प्रावधान किया कि जन्म से लेकर सोलह वर्ष तक तथा शिव भक्तों को अगर शनि पीड़ित करेगा तो स्वयं भस्म हो जाएगा। इसी प्रकार गाधि, कौशिक तथा पिप्पलाद ये तीनों महामुनि स्मरण मात्र से ही शनि पीड़ा को नष्ट करने वाले हैं। जो मनुष्य पद्मा सहित महर्षि पिप्पलाद के इस चरित्र को पढ़ता या सुनता है उसके सब मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

छब्बीसवां अध्याय

(सभी प्रकार के आनन्द, मोक्ष, भोग को प्रदान करने वाले शिव के वैश्वनाथ नामक अवतार का अवतरण तथा आख्यान।)

नंदीश्वर जी बोले—हे मुने! अब परमात्मा शिव के वैश्वनाथ नामक अवतार का चरित्र सुनिये। किसी समय में महानंदा नामक एक वेश्या रहती थी। वह बड़ी ही शिव भक्त थी तथा हमेशा ऐश्वर्य युक्त तथा अलंकारों से सज्जित वस्त्र पहना करती थी। वह गान विद्या में अति निपुण थी तथा उसके गायन को सुन राजा तथा रानियां हमेशा हर्षित रहती थीं। वह सर्वदा शिव तथा पार्वती की पूजा करती थी तथा हमेशा रुद्राक्ष धारण किये रहती थी। इस प्रकार शिव भक्ति में रत महानंद ने कितने ही वर्ष व्यतीत किये। तब एक दिन भगवान् शंकर वैश्य का रूप धारण कर उसकी परीक्षा लेने आये। उनके हाथ में रत्न जड़ित एक बड़ा ही सुन्दर कंकण था। उसे देख महानंदा मुग्ध हो गई। वैश्य रूप शिवजी उसके मन के लालच को समझ गए। उन्होंने कहा कि यदि तुम्हारा मन इस कंकण के लिए बेचैन हो रहा है तो तुम प्रसन्नता से इसे ले सकती हो। परन्तु यह कहो कि इसका मूल्य क्या होगा। महानंदा ने कहा कि मैं एक व्यभिचारिणी वेश्या हूं पतिव्रता नहीं। व्यभिचार ही मेरा कुल धर्म है। यदि आप मुझे कंकण दे देंगे तो मैं तीन दिन तीन रात तुम्हारे साथ बिताऊंगी। वैश्य ने कहा—हे पति वल्लभे! 'तथास्तु'। लो यह रत्न कंकण और तीन रात मेरी स्त्री रहो। इस व्यवहार में सूर्य और चन्द्रमा साक्षी हैं। तुम तीन बार 'सत्य है' ऐसा कहकर मेरे हृदय का स्पर्श करो। वैश्या ने कहा—हे प्रभो! मैं तीन दिन और तीन रात आपकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पत्नी रहकर सहधर्म का पालन करूंगी। यह सत्य है, यह सत्य है, यह सत्य है। वैश्य ने उसे कंकण देकर रत्नमय लिंग उसके हाथ में दिया और कहा—हे कान्ते! यह रत्न जड़ित शिवजी का लिंग मुझे प्राणों से भी प्यारा है। तुम सदैव इसकी रक्षा करना तथा इसे गुप्त रखना। तब 'ऐसा ही होगा' कहकर महानंदा ने रत्न जड़ित लिंग को नाटक के मंडप में रखकर घर को चली गई। रात्रि में उस वैश्य को कोमल गद्दे और तकियों से शोभित पलंग पर लेकर आनन्द से सो गई। अर्ध रात्रि में नाटक मंडप में आग लग गई। महानंदा को अग्नि का पता आकाशवाणी द्वारा चला। वह दौड़ कर बंधे हुए बन्दर और मुर्गे को छुड़ा लाई। इसी बीच लिंग खम्भे के साथ जलकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसे जला देख कर वह वैश्य तथा वैश्या बड़े दुःखी हो गए। उसने कहा—मेरा प्राणों से भी प्यारा लिंग जल गया अब मैं जी कर क्या करूंगा। हे भद्रे! तुम अपने भृत्यों से मेरी चिता बनवा दो। मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगा। यदि ब्रह्मा विष्णु महेश भी आकर रोकेंगे तो मैं नहीं मानूँगा। वैश्या ने अपने भृत्यों को आज्ञा दे चिता बनवा दी। परम चमत्कार करके शिवजी सबके देखते-देखते चिता में प्रवेश कर गये। वैश्या भी विस्मित हो गई। उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने कहा—मैं तीन दिन तक उस वैश्य के साथ रहने वाली थी पर मेरी थोड़ी सी असावधानी से वह शिव व्रती वैश्य मर गया। अतएव मैं भी इसी के साथ अग्नि में प्रवेश कर जाऊं तभी मेरी गति है। सत्य ही परम गति देने वाला है, सत्य ही स्वर्ग तथा नरक है। लोगों के मना करने पर भी उसने अपना सारा धन ब्राह्मणों को दान कर दिया तथा स्वयं प्रज्ज्वलित अग्नि में कूदने चली। उसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

समय करोड़ों सूर्यों के समान चमकने वाले तीनों लोकों के स्वामी साक्षात भगवान् शिव उसके सामने आ खड़े हुए। तब महानंदा अपलक उस कान्तिमान् शिव को देखने लगी। अत्यन्त भयभीत विह्वलमना कम्पित तथा मूर्ख सी हुई नंदा के नेत्रों से लगातार आंसू बहने लगे। तब शिव ने उसे धीरज दिया तथा सिर पर हाथ रखकर कहा—मैं तेरी सत्यता, धर्म, धैर्य और निश्चल भक्ति से प्रसन्न हूं। तेरी परीक्षा लेने के लिए ही मैं वैश्य के वेष में तेरे पास आया था। जो चाहो वर मांगो। वैश्या ने तब भगवान् भोले नाथ से कहा—मुझे न तो भोगों की इच्छा है और न स्वर्ग की। मैं तो केवल आपके चरण कमलों का स्पर्श चाहती हूं। मेरे साथ मेरे सारे भृत्यों को भी दर्शन दीजिए तथा मेरे सहित इनको भी परम पद दीजिए। शिवजी ने तथास्तु कह सबको परम पद प्रदान किया। यह वैश्य नाथ अवतार भक्तों को सर्वदा सुख देने वाला तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

सत्ताईसवां अध्याय

(राजा की परीक्षा लेने के लिए भगवान् शिव द्वारा द्विज का अवतार तथा राजा को परम पद की प्राप्ति।)

नंदीश्वर जी बोले—हे तात! पहले जिस भद्रायु राजा का वर्णन किया गया है तथा जिस पर ऋषभ रूप धारण कर भगवान् ने कृपा की थी उसी की परीक्षा के लिए शिवजी ने द्विजेश्वर अवतार धारण किया था। ऋषभ प्रभाव से प्रभु ने शत्रुओं को युद्ध में जीता और सिंहासन को प्राप्त कर भद्रायु को पैदा किया। समय आने पर चन्द्रांगद की पुत्री उसकी पत्नी हुई। एक समय में वह वसंत ऋतु में सघन वन में विहार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करने गया। तो भगवान् शिव पार्वती सहित द्विज दम्पति का रूप धारण कर उसकी परीक्षा हेतु वहां पहुंच गये। उन्होंने एकाएक माया के सिंह को प्रकट किया तथा भयभीत होने का नाटक करते हुए भद्रायु के पास भागते-भागते आये तथा कहा कि इस शार्दूल से हमारी रक्षा कीजिए। यह सुनते ही उस नृपति ने ज्यों ही अपना धनुष उठाकर उस सिंह को मारना चाहा त्यों ही माया के स्वरूप सिंह ने झपटकर ब्राह्मण की स्त्री को झपट लिया। वह स्त्री हे कान्त! हा शम्भो! हा महेश्वर! कहती ही रही। नृपति ने अपने तीक्ष्ण बाणों से सिंह पर प्रहार किया पर उसका कुछ न बिगड़ा और वह स्त्री को लेकर वन की ओर भाग गया। तब स्त्री के अपहरण हो जाने से ब्राह्मण बार-बार रोने लगा। फिर राजा भद्रायु से बोला—हे राजन्! तुम्हारे बड़े अस्त्रों को क्या हो गया। तुम्हारे पराक्रम का क्या फल हुआ। तुम जंगली जानवरों से तथा दुर्जनों से अपनी प्रजा की रक्षा करने में समर्थ नहीं हो। दुःख से रक्षा करना क्षत्रियों का धर्म है। जब कुलोचित धर्म ही नष्ट हो गया तो जीवित रहने से क्या लाभ। धर्मात्मा राजा अपने शरणागतों की धन तथा प्राणों से भी रक्षा करते हैं नहीं तो मृतक के समान हैं। जो दुःखित की रक्षा नहीं कर सकता उसके लिए मृत्यु श्रेष्ठ है। कृश, अनाथ और दीन की रक्षा न करने से बुद्धिमान को विष खा लेना या अग्नि में प्रवेश कर लेना अच्छा है। नंदीश्वर जी बोले—इस प्रकार ब्राह्मण द्वारा अपने सत्व की घोर निंदा सुन राजा भद्रायु अपने दुर्भाग्य के प्रति पश्चाताप करने लगे। उन्होंने कहा—आज भाग्यवश मेरा पौरुष नष्ट हो गया तथा मुझे घोर पाप लगा। मेरा कुलोचित क्षत्रिय धर्म भी नष्ट हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गया। अब मैं इस शोकाकुल ब्राह्मण को अपने प्राणदान देकर भी प्रसन्न करूंगा। ऐसा निश्चय कर उन्होंने ब्राह्मण के चरणों पर गिरकर क्षमा मांगी तथा अनेक प्रकार से उसे सान्त्वना दी। उसने कहा—मैं अपनी रानी सहित अपना राज पाट आपकी सेवा में न्यौछावर कर सकता हूं। इसके अतिरिक्त भी अगर आपकी कोई और इच्छा हो तो मुझे कहिए। ब्राह्मण ने कहा कि मुझे कुछ नहीं चाहिए क्योंकि मैंने अपनी स्त्री खोई है इस लिए तुम मुझे भी अपनी स्त्री दे दो। इस पर राजा ने कहा—मैं और सब कुछ तो दे सकता हूं पर अपनी स्त्री नहीं। वैसे भी पराई स्त्री भोगना तो घोर पाप है। ब्राह्मण ने कहा कि मैं अपने तपोबल से ब्रह्म हत्या तथा मदिरा सेवन से उत्पन्न घोर पाप भी धो सकता हूं फिर पराई स्त्री का उपभोग क्या पाप है? अतएव तुम्हारी स्त्री के अतिरिक्त मुझे अन्य कुछ नहीं चाहिए। यदि तुम भयभीतों की रक्षा नहीं करोगे तो अवश्य नरक में जाओगे। ब्राह्मण की बात से राजा चिन्तित तो हो गया पर फिर सोचने लगा—दीनों की रक्षा न करना निश्चय ही बड़ा पाप है। इससे तो यही अच्छा है स्त्री दान कर दूं। पाप से तो मुक्ति मिले। इसके बाद मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगा तथा संसार में मेरी कीर्ति होगी। ऐसा निश्चय कर राजा ने अग्नि प्रज्ज्वलित की और हाथ में जल ले उस ब्राह्मण को अपनी स्त्री का दान दिया। इसके बाद तीन बार अग्नि की परिक्रमा कर शिव का ध्यान करने लगा। तब अपने चरणों में ध्यान लगाते तथा अग्नि प्रवेश को तत्पर राजा को देख भगवान् शिव से न रहा गया। उन्होंने तत्काल भद्रायु को दर्शन दिये। एकाएक आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी तथा भक्ति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को बढ़ाने वाला अपूर्व समारोह हुआ। भद्रायु अपनी पत्नी सहित शिवजी की स्तुति करने लगा। उसकी स्तुति पर प्रसन्न होकर शंकर जी ने कहा कि तुम मुझ से इच्छित वर मांगो मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। मैं तो तुम्हारी परीक्षा के लिए द्विज दम्पति रूप धारण करके आया था तथा वह व्याघ्र भी मायाजाल था। तुम्हारे धैर्य की परीक्षा के लिए ही मैंने तुम्हारी स्त्री को मांगा था। यह सुन भद्रायु ने कहा—मैं सकुटुम्ब आपके चरणों की भक्ति चाहता हूं। मेरे पिता वज्रबाहू भी सपत्नीक आपके भक्त हों। पद्माकर नामक वैश्य और उसके पुत्र भी सभी आपके निकट के वासी हों। तब भद्रायु की पटरानी ने भी अपने पिता चन्द्रांगद तथा अपनी माता के लिए उनकी निकटता तथा भक्ति मांगी। भक्त वत्सल भगवान् शिव ने तथास्तु कह उन्हें इच्छित वर दिया तथा तुरन्त अन्तर्ध्यान हो गये। महादेव के आशीर्वाद से भद्रायु की सारी चिन्ता छूट गई तथा वह भक्ति पूर्वक महादेव की पूजा करता हुआ महादेव के पद को प्राप्त हुआ।

अट्ठाईसवां अध्याय

(भगवान सदाशिव के यति और हंस अवतार।)

नंदीश्वर जी बोले—हे बुद्धिमान तथा मुनियों में सर्वश्रेष्ठ मुनीश्वर! अब परमात्मा शिव के यतीनाथ नामक अवतार का आख्यान सुनो। अर्बुदाचल पर्वत के समीप भील वंश में उत्पन्न आहुक नामक एक भील था। उसकी पत्नी का नाम आहुका था। वे दम्पति बड़े ही शिवभक्त थे। एक समय शिव भक्ति में रत वह भील अपनी स्त्री के आहार के लिए बहुत दूर निकल गया। उसी समय यति के रूप में भगवान् शंकर सायंकाल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उसके घर जा विराजे। तब तक वह भील भी अपने घर लौट आया था और उसने यतीश का सविधि पूजन किया। यतिनाथ ने कहा—कि आज की रात्रि भर मुझे यहां स्थान दो। प्रातःकाल मैं चला जाऊंगा। भील ने कहा—मेरे पास बहुत थोड़ा स्थान है, इसमें आप कैसे रहेंगे? इस पर वह सन्यासी जाने लगा। तब भीलनी ने मन में विचार कर कहा कि ये अतिथि हैं, इन्हें विमुख न करो। गृहस्थ धर्म का विचार करो, अन्यथा धर्म का क्षय होता है। आप सन्यासी घर में रहिये मैं बाहर रह जाऊंगी। अपनी स्त्री की इस धर्म प्रेरित वाणी को सुनकर भील बोला—यह कैसे हो सकता है तुम अतिथि के सहित घर के भीतर रहो मैं घर के बाहर रात्रि व्यतीत कर दूंगा। ऐसा ही हुआ। परन्तु रात्रि में घर से बाहर गये भील को हिंसक पशुओं ने भक्षण कर लिया। प्रातःकाल सन्यासी ने घर के बाहर आकर देखा उन्हें भील की मृत्यु पर गहरा दुःख पहुंचा। भीलनी भी अति दुखित हुई। परन्तु स्वयं दुःख से कातर रहते हुए भी उसने सन्यासी को समझाया कि आप लेशमात्र भी दुःख न करें। अतिथि सेवा में प्राण विसर्जन करना मेरा परम धर्म है। मेरा क्या है, मैं अग्नि में पति के साथ प्रवेश कर सती हो जाऊंगी। यही स्त्रियों का सनातन धर्म है। वह चिता चुनकर उसमें जा बैठी। उसी समय भगवान् शंकर वहां प्रकट हो गए। वर देकर दूसरे जन्म में अपने ही रूप वाला सन्यासी और स्वयं हंस का रूप धारण करने का संयोग बनाया। शंकर के वरदान स्वरूप वह भील निषध नामक नगर में वीरसेन के यहां नल नाम से पैदा हुआ और उसकी स्त्री विदर्भ नगर में राजा भीम की पुत्री दमयन्ती हुई तथा बाद में मुक्ति को प्राप्त हुई। शिवजी लिंग रूप से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वहां अचलेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। शिवजी ने वहां हंस रूप धारण कर नल दमयन्ती का विवाह करवाया। शंकर का यह पवित्र आख्यान यतीश नाम से प्रसिद्ध है। जिसे सुनकर मनुष्य परम पद को प्राप्त करता हुआ लोक के सभी सुख भोगता है।

उन्तीसवां अध्याय

(दर्शन कृष्ण का अवतरण तथा उनके दर्शन मात्र से भोग, मोक्ष, बुद्धि का मिलना। राजा नभग को ज्ञान की प्राप्ति।)

नन्दीश्वर जी बोले—हे सनत्कुमार! अब राजा नभग तथा कृष्ण दर्शन अवतार की कथा सुनो। इक्ष्वाकु वंश में श्राद्धदेव की नवीं पीढ़ी में राजा नभग का जन्म हुआ था। जिसके पुत्र नाभाग और उसके विष्णु भक्त अम्बरीश हुए थे। अब उन्हीं अम्बरीश के पितामह नभग का चरित्र वर्णित करता हूं। जब नभग बहुत दिनों तक गुरुकुल में विद्या ग्रहण करते रहे तो उनके भाइयों ने राज्य का बंटवारा कर अपने भाग के साथ नभग के हिस्से को भी हड़प लिया। जब ब्रह्मचारी पूर्ण रूप से विद्या ग्रहण कर वापस लौटे तो अपना हक मांगा। भाइयों ने कहा विभाजन करते हुए हमें तुम्हारा ध्य न नहीं रहा इसलिए पिता के पास जाकर अपनी मांग रखो। नभग ने पिता के पास पहुंचकर सब समाचार कहा। पिता श्राद्धदेव को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने नभग से कहा कि तुम्हारे भाइयों ने तुम्हारे साथ छल किया है। परन्तु अब मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूं जिसके कारण तुम्हारे सभी कष्ट दूर हो जायेंगे। आज बुद्धिमान आंगिरस ब्राह्मण यज्ञ करते हैं जिसके प्रत्येक छटे दिन उन्हें मोह हो जाता है और उनका यज्ञ पूर्ण नहीं हो पाता। तुम विद्वान हो वहां जाकर उन्हें उपदेश दो तथा सूत्रों का ठीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उच्चारण कर यज्ञ को सम्पूर्ण करो। बुद्धिमान मनु पुत्र ने वहां पहुंचकर ऐसा ही किया। यज्ञ कर्म के पश्चात वे आंगिरस ब्राह्मण अपना यज्ञ का अवशिष्ट धन नभग को देकर स्वर्ग को चले गये। परन्तु उसी समय शिवजी कृष्ण दर्शन रूप में प्रकट होकर बोले—हे नभग! यज्ञ का अवशिष्ट धन तो मेरा है इसे तू कैसे ग्रहण कर सकता है। तुझे यहाँ किसने भेजा है यह बात सत्य रूप में कहो। नभग ने उत्तर दिया—यह धन मेरा है मुझे ऋषियों ने दिया है तुम बीच में बोलने वाले कौन हो। तब नभग के इस प्रकार के वचनों को सुन भगवान् ने कहा—हम दोनों के वाद विवाद का प्रमाण तुम्हारे पिता हैं। उनसे जाकर पूछो जैसा वे कहें वैसा ही हम मान लेंगे। यह सुन नभग अपने पिता के पास वापस लौटा। मनु श्राद्धदेव ने कहा—वह पुरुष देवता शंकर ही हैं। यज्ञ में बची वस्तु उन्हीं की है। यदि वे कृपा करें तो तुम उन्हें पा सकते हो। पहले अपने अपराध को स्वीकार कर उनकी स्तुति करो। नभग वापस शंकर के पास पहुंच विविध प्रकार से उनकी स्तुति करने लगे। अपने अपराधों के लिए बार-बार उनसे क्षमा मांगी। तब शिव रूप कृष्ण दर्शन ने प्रसन्न हो नभग से कहा—तुम्हारे पिता ने जो कहा है वह सत्य है तुम भी साधु हो इसमें संदेह नहीं। मैं तुम्हारे व्रत से प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें सनातन ब्रह्म ज्ञान देता हूं कि तुम शीघ्र ही महाज्ञानी होकर सब वस्तुओं को प्राप्त करो। विकार रहित हो तथा मेरी कृपा से ब्राह्मणों के साथ सद्गति को प्राप्त हो। जो मनुष्य इस चरित्र को सायंकाल स्मरण करेगा उस बुद्धिमान को काव्य रचना तथा मंत्र रचना की शक्ति प्राप्त होगी और वह मोक्ष का भागी होगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Moderii IFS (Retd) Collection Jammu

तीसवां अध्याय

(इन्द्र का गर्व नाश करने के लिए भगवान् शिव का अवधूतेश्वर के रूप को धारण करना तथा शिव के माथे के लवण से जलंधर की उत्पत्ति।)

नंदीश्वर जी बोले—हे ब्रह्मा के पुत्र! एक समय बृहस्पति और सब देवताओं को साथ ले इन्द्र शंकर जी के दर्शनों के लिए कैलाश को गए। शिवजी ने उन्हें आया जान उनकी परीक्षा ली। लीलाधारी प्रभु ने भयंकर अवधूत रूप धारण कर लिया तथा जाकर इन्द्र का मार्ग रोक लिया। इन्द्र ने मार्ग में अद्भुत आकार वाले भयंकर पुरुष को देखा। इन्द्र ने उसको न पहचाना तथा दर्प में आकर बोला—तुम कौन हो जो दिगम्बर तथा अवधूत आकार वाले हो। कहां से आये हो। शंकर जी अपने स्थान पर स्थित हैं या नहीं। मैं उनके दर्शनों को आया हूं। यह सुन कर दर्पनाशक शिवजी चुप रहे। इन्द्र ने बार-बार पूछा पर शिवजी फिर भी मौन रहे। तब इन्द्र ने ललकार कर कहा—क्यों रे मूर्ख! तू पूछने पर उत्तर क्यों नहीं देता? इसी कारण मैं तुझे अपने वज्र से मारता हूं। देखूं तुझे कौन बचाता है। ऐसा कह उन्होंने दिगम्बर को मारने के लिए वज्र उठाया। तब इन्द्र को हाथ में वज्र लिये देख शिवजी ने उसे स्तंभित कर दिया। इन्द्र की भुजा रुक गई। उसे बड़ा क्रोध आया। इतने में बृहस्पति ने समझ लिया कि यह परम तेजस्वी पुरुष साक्षात शिव ही हैं। उन्होंने शिवजी को प्रणाम कर अनेक प्रकार से उनकी स्तुति की। शिवजी प्रसन्न हो बृहस्पति को इन्द्र का जीवन दान प्राप्त कराने के कारण 'जीव' नाम से विख्यात हुए। शिवजी ने अपने मस्तक से क्रोध को उठाकर समुद्र में फेंक दिया। वह तुरन्त एक बालक बन गया और उसका नाम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जलंधर पड़ा। फिर देवताओं की प्रार्थना से शिवजी ने ही उसे मारा। इस प्रकार बृहस्पति सहित इन्द्र शिवजी के दर्शन कर अपने स्थान को लौटे। शिवजी का यह अवधूतेश्वर नामक आख्यान जो मनुष्य सुनता तथा सुनाता है वह सभी सुखों को भोग कर अन्त में शिव की पदवी को प्राप्त करता है।

इकत्तीसवां अध्याय

(शिशु रूप की रक्षा के कारण भगवान् शिव का भिक्षु के रूप में अवतार तथा मनुष्यों को भवसागर से पार कराने का उनका अद्भुत आख्यान।)

नंदीश्वर जी बोले—हे मुनि श्रेष्ठ! विदर्भ नगर में एक सत्यरथ नामक राजा था जो शिव भक्ति करके अपना समय व्यतीत कर रहा था। एक समय उसके नगर पर शत्रुओं ने आक्रमण कर दिया जिसमें सत्यरथ ने उनसे बड़ा युद्ध किया। परन्तु उसे विजय न मिली तथा शत्रुओं ने जंवा तोड़कर उसे मार डाला। उसकी पटरानी गर्भवती थी। जब उसने देखा कि नगर को शत्रुओं ने घेर लिया है तो वह लुक छिपकर नगर से बाहर चली गई तथा एक सरोवर के निकट एक वृक्ष के नीचे अपना आश्रम बनाया। वहां उसने सभी लक्षणों से परिपूर्ण एक बालक को जन्म दिया। इसके पश्चात जब उसकी माता सरोवर में पानी पीने गई तो उसे घड़ियाल ने पकड़ लिया। उधर माता पिता विहीन बालक को रोते देख शिवजी को दया आ गई और उन्होंने एक ब्राह्मणी को उस तरफ जाने के लिए प्रेरित किया। विधवा ब्राह्मणी ने वहां पहुंचकर देखा एक बालक जिसका नाल भी नहीं कटा था, अकेला पड़ा रो रहा था। भिक्षुणी को बड़ी दया आई पर अधिकार बिना वह उसे उठाना नहीं चाहती थी। इस पर शिवजी स्वयं भिक्षुक का रूप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

धारण कर वहां पहुंचे तथा ब्राह्मणी से बोले—अपने चित्त में संदेह मत करो, इस पवित्र बालक को अपने पुत्र के समान मान पालन करो। इस पर ब्राह्मणी ने भगवान् शिव को धन्यवाद दिया तथा कहा कि मैं तो इसका पालन करना चाहती थी पर शंका वश आगा पीछा कर रही थी। मैं आपसे यह जानना चाहती हूं कि यह बालक किसका है, आप कौन हैं, कहां से आये हैं? हे भिक्षुवर! हे प्रभो! क्या आप दया सागर शिवजी हैं। आपकी आज्ञानुसार मैं अवश्य इसका पालन करूंगी। तब शिवजी बोले—हे देवि! यह शिव भक्त विदर्भ नरेश सत्यरथ का पुत्र है इसका पिता शत्रुओं द्वारा मारा गया तथा माता को घड़ियाल ने निगल लिया है। यह सुन ब्राह्मणी बड़ी विस्मित हुई कि शिव भक्त होने पर भी ऐसा क्यों हुआ। शिवजी ने कहा कि सत्यरथ पहले जन्म में पाण्डु था जिसने सदैव शैव धर्म का पालन किया। एक समय जब वह राजा शिव पूजन में लगा हुआ था तो सहसा कुछ मंत्रियों से समाचार पा उसके मंत्री गण सामन्तों सहित राजा को सूचना देने पहुंचे तो राजा ने समझा कि शत्रु आ गये हैं। अतः उसने शिव पूजा त्याग तत्काल ही सभी मंत्रियों आदि का सिर काट दिया तथा रात्रि में भी शिवजी की पूजा समाप्त किये बिना भोजन कर लिया। फल स्वरूप जब वह विदर्भ में पैदा हुआ तो शिव पूजा के समाप्त न करने से सुखों के मध्य में ही मारा गया। इसकी माता ने अपनी सौत को छल से मार दिया था, इसीलिए इस जन्म में नक्र ने उसे खा लिया है। शिव की भक्ति तथा पूजा के प्राप्त न होने के कारण यह बालक दरिद्रता को प्राप्त हुआ है। यह कहकर शिवजी ने ब्राह्मणी को अपना असली स्वरूप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दिखा दिया। ब्राह्मणी शंकर के दर्शन पा उनकी भाव विभोर हो स्तुति करने लगी। उस पुत्र को उठाकर चक्रा नामक नगर में अपने पुत्र के साथ उसका भी पालन करने लगी। बड़ा हो वह राजपुत्र शाण्डिल्य मुनि की आज्ञा से शिव का पूजन करने लगा। कुछ दिन बाद उस राजपुत्र ने वन में जाकर एक गन्धर्व कन्या से विवाह कर लिया तथा अकंटक राज्य करने लगा। इस प्रकार उस राजपुत्र को शिवजी की कृपा से सब सुख प्राप्त हुए। जो मनुष्य शिवजी के इस भिक्षुक रूप अवतार को पढ़ता है वह सभी मनोरथों को प्राप्त करता है।

बत्तीसवां अध्याय

(उपमन्यु द्वारा पंचाक्षर शिव मंत्र का जाप तथा उपासना तथा भगवान् शिव के परम पद को प्राप्त करना।)

नंदीश्वर जी बोले—हे तात! व्याघ्रपाद का पुत्र उपमन्यु जो कई जन्मों से सिद्ध होकर इस जन्म में फिर कुमारपन को प्राप्त हुआ। अपनी माता सहित मामा के घर रहता था, देव-वश बड़ा ही गरीब हो गया। उसे मामा के घर दूध थोड़ा मिलता था इसलिए उसकी दूध की इच्छा बनी रहती थी। तब उसकी माता ने एक उपाय निकाला। कणों के बीनने से जो बीज मिलते उन्हें पीस कृत्रिम दूध बना बालक को पिलाती और पालन करती। एक दिन बालक ने कहा कि ये दूध नहीं है। तब उसकी माता रोकर कहने लगी। हम दरिद्रों के पास दूध कहां? शंकर जी की कृपा के बगैर दूध नहीं मिलता। तब अपनी माता के ऐसे वचनों को सुन मातृ वत्सल तथा शोकमग्न बालक बोला—मां शोक न कर, यदि भगवान शंकर कल्याण करने वाले हैं तो कल्याण ही होगा। मैं उनकी कृपा के लिए

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

साधना करूंगा। ऐसा कह वह बालक मां को प्रणाम कर विदा हो तप करने चला गया। उसने हिमाचल पर जाकर 'ॐ नमः शिवाय' इस पंचाक्षरी को जपते हुए परम तप करना शुरू किया। उस बालक उपमन्यु की तपस्या से भुवन प्रज्ज्वलित होने लगा। तब शिव और पार्वती, इन्द्र तथा इन्द्राणी का रूप धारण कर उस बालक के पास आये और बोले—मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हूं जो इच्छा हो वर मांगो। बालक ने कहा—मैं शंकर जी का भक्त हूं। उनकी भक्ति मांगता हूं। तब इन्द्र ने कहा—क्या तुम देवताओं के स्वामी इन्द्र को नहीं जानते। रुद्र का त्याग कर मेरी पूजा करो। यदि निर्गुण रुद्र की पूजा करोगे तो देव जाति से निकाल दिये जाओगे तथा पिशाच बन जाओगे। यह सुन उपमन्यु फिर जाप करने लगा तथा इन्द्र को अपने तप में विघ्न समझने लगा। उसने इन्द्र से कहा—कि शंकर जी कैसे पिशाच हैं? उन्हीं से तो ब्रह्मा, विष्णु उत्पन्न हुए हैं। वे प्रकृति से परे हैं। मैं तुम्हारे से तो क्या साक्षात विष्णु तथा ब्रह्मा से भी कुछ न मांगूंगा। यदि तुम मेरे सामने शंकर की निन्दा करोगे तो मैं तुमको शिव के अस्त्र से मार कर स्वयं शरीर त्याग दूंगा। ऐसा कह उपमन्यु ने दूध की इच्छा त्याग स्वयं मरने की इच्छा कर ली और इन्द्र को मारने के लिए तैयार हुआ। उसने भस्म उठा उसे अघोर मंत्र से अभिमंत्रित कर अपने इष्ट देव के युगल चरणों में ध्यान कर उसने अग्नि स्थापित कर इन्द्र पर छोड़ दिया। पर वे इन्द्र तो थे नहीं, वे तो साक्षात शंकर थे। शंकर जी ने तत्काल प्रत्यक्ष हो उस ब्राह्मण को दर्शन दिया और हजारों दूध, दही, के समुद्र तथा अन्य भक्ष्य और भोज्य पदार्थों के समूह दिखाये तथा पार्वती सहित उसे अपने दिव्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रूप के दर्शन दिये। उनके आलोक से दशों दिशायें आलोकित हो उठीं। यह देख उपमन्यु शिवजी को दंडवत प्रणाम करता हुआ पृथ्वी पर लेट गया। फिर तो भगवान शंकर ने उसका मस्तक सूंघ उसे वर दिया। पार्वती ने प्यार कर कुमार के समान ही अपना अक्षय कुमार पुत्र बनाया। शिवजी ने क्षीर-सागर के समान स्वादु युक्त एक अनश्वर सागर दिया। तथा अन्य भी वर दिये। उपमन्यु ने शिव की परम भक्ति भी मांगी। शिवजी ने इच्छानुसार उसे अजर अमर तथा सर्वदा दुःख रहित भक्ति दी तथा अक्षय गोत्र दिया। साथ यह भी कहा कि मेरा निवास हमेशा तुम्हारे आश्रम के समीप रहेगा। उपमन्यु शंकर से श्रेष्ठ वरों को प्राप्त कर मां के पास गया तथा सारा हाल कहा। मां उसे सुन बड़ी प्रसन्न हुई। इस प्रकार उपमन्यु सबका पूज्य बन गया तथा सभी सुखों का भागी बन गया। शिव का यह सुरेश्वर नामक अवतार स्वर्ग दायक, यश दायक, आयु वर्द्धक और सज्जनों को मुक्ति दायक है।

तेतीसवां अध्याय

(शिव का ब्रह्मचारी के रूप में अवतरण। पार्वती को दर्शन तथा बाद में उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करना।)

नंदीश्वर जी बोले—हे सनत्कुमार! जब दक्ष पुत्री सती अपने पिता से अपमानित हो उन्हीं के यज्ञ में शरीर त्याग कर हिमालय के घर मैना से उत्पन्न हुई। तब वन में जाकर शंकर को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तथा पवित्र तप करने लगी। अनेक वर्षों की कठिन तपस्या के बाद भगवान् शंकर उसकी परीक्षा के लिए निकले। पहले उन्होंने उसके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तप की परीक्षा के लिए सप्त ऋषियों को भेजा। परन्तु पार्वती के तप की परीक्षा मे उन्हें पूर्ण सफलता न मिली। तब शंकर ने स्वयं ही पार्वती के भाव की परीक्षा लने की सोची। उन्होंने इच्छाओं का दमन किया। जब इच्छा शांत हो गई तब अत्यन्त वृद्ध ब्राह्मण ब्रह्मचारी का वेष बनाया तथा पार्वती के समीप पहुंचे। पार्वती ने उस अलौकिक तथा कान्तियुक्त ब्राह्मण वृद्ध की पूजा की सामग्री उठा यथोचित पूजा की। सादर प्रेम पूर्वक कुशल पूछी तथा उनका परिचय प्राप्त करना चाहा। ब्रह्मचारी ब्राह्मण बोला—मैं स्वेच्छा से विचरण करने वाला एक ब्रह्मचारी ब्राह्मण तपस्वी हूं जो दूसरों को सुख देता हूं। ऐसा कह वे पार्वती के समीप जा बैठे और बोले—हे महादेवी! क्या कहूं? कुछ कहा नहीं जाता। बड़ा अनर्थकारी महा विकृत वृत्तांत दिखाई दे रहा है। तुम इस नवीन अवस्था में जब सुन्दर भोगों को भोग सकती हो, व्यर्थ में तप कर रही हो। तुम कौन हो? किसकी पुत्री हो? उनके वचनों को सुन पार्वती हंसकर बोली—हे विप्रवर! ध्यान से सुनो। मेरा जन्म इसी भारत वर्ष में हिमालय के गृह में हुआ था और इसके पूर्व मैं दक्ष प्रजापति के घर में जन्मी थी तथा शंकर मेरे पति थे। परन्तु जब मेरे पिता ने मेरे पति की निंदा की तो मैंने योग द्वारा यह शरीर त्याग दिया। इस जन्म में बड़े भाग्य से मुझे शिवजी मिले तो सही पर वे काम को भस्म कर मुझे त्याग चले गये हैं। इस कारण मैं गुरू वचनों से बृद्ध लज्जित हो अपने पिता के घर से यहां तप करने चली आई हूं। मैंने अपने मन, वचन तथा कर्मों से शंकर को पति भाव किया है। यद्यपि यह दुर्लभ है पर फिर भी मैं प्रयत्नशं मुझे इन्द्रादिक देवताओं सहित

CC-0. Vanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विष्णु ब्रह्मा की भी जरूरत नहीं। तब पार्वती के इस प्रकार के वचनों को सुन लीलामय भगवान् बोले—हे देवि! तुमने यह कैसी बुद्धि स्वीकार की है। क्या उचित है कि तुम इतने देवताओं का त्याग कर शिव के लिए इतना कठिन तप करो। मैं उस रुद्र को जानता हूं। वह वृषभ को वाहन के रूप में रखता है। तथा सर्वथा विकृतात्मा तथा जटाधारी है, वह सदैव अकेला रहने वाला तथा विरागी है। अतः तुम्हारा शिव में मन लगाना कदापि उचित नहीं है। ऐसा कह परीक्षा हेतु ब्राह्मण ब्रह्मचारी ने और अनेक प्रकार से शिव की निंदा की। तब उन वाक्यों को असह्य जान पार्वती अत्यन्त क्रोधित हो उठी तथा उस ब्रह्मचारी से कहने लगी—मैंने तो सोचा था कि तुम कोई धन्य पुरुष हो। पर तुम तो शिव निंदक हो और वध के योग्य हो। रे वहिर्मुख! तुम शिवजी को नहीं जानते। मुझे पश्चाताप है कि मैंने तुम्हारी पूजा की। रे दुष्ट! तूने यह जो कहा कि मैं शंकर को जानता हूं अक्षरशः झूठ है। तब देवी के कठोर वचनों को सुन ब्रह्मचारी ज्यों ही उत्तर देने को हुआ त्यों ही पार्वती ने अपनी सखी विजया से कहा—हे सखि! यह ब्राह्मणाधम फिर कुछ कहना चाहता है अतः इसे मना करो क्योंकि शिव निंदक को ही नहीं उसके सुनने सुनाने वाले को भी पाप लगता है। अतः यह सर्वथा त्यागनीय तथा न देखने योग्य है। मैं इस स्थान को छोड़ अन्यत्र चली जाती हूं। हे मुनीश्वर! पार्वती ने ज्यों ही चलने को अपना पग उठाया शिव ने उसका हाथ पकड़ लिया। फिर पार्वती जिस रूप में उनका ध्यान करती थी उसी रूप में उसे दर्शन दिये। शिवजी बोले—हे शिवे! हे देवि! तुम कहां जाती हो। मैं तुमको त्यागकर कहां जाऊंगा। मैं तो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तुम्हारी परीक्षा हेतु ब्राह्मण का वेष धारण कर आया था। जो इच्छा हो वर मांगो। आज से मैं तेरे तप से तेरा दास हूं। तुम्हारी सुन्दरता को बिना देखे एक-एक पल एक युग के समान व्यतीत होता है। हे प्रिये! तुम लज्जा त्याग दो क्योंकि तुम मेरी सनातन पत्नी हो। आओ मैं तुम्हारे साथ कैलाश चलता हूं। उनके ऐसे वचनों को सुन पार्वती अति प्रसन्न हुई तथा कठिन तप का सारा दुःख भूल गई। फिर बोली—हे देवेश! यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरे पति होइये। फिर तो शिवजी ने विधि सहित पार्वती का पाणि ग्रहण किया और कैलाश की यात्रा की। शिव के ब्रह्मचारी अवतार की कथा जो कोई सप्रेम सुनेगा वह उत्तम गति को प्राप्त होगा। इस प्रकार शिवजी के चौरासी अवतारों की कथा समाप्त हुई।

चौंतीसवां अध्याय

(शिव द्वारा नट-नर्तक के रूप में अवतरण तथा हिमराज के घर पार्वती सहित पदार्पण।)

नंदीश्वर जी बोले—हे सनत्कुमार जी! अब मैं परमात्मा शिव के नट नर्तक नामक रूप का वर्णन करता हूं। जब हिमालय की पुत्री शिव को पति रूप में पाने के लिए वन में तपस्या करने लगी तो शिवजी उनके भाव की परीक्षा लेने तथा वर देने वन में गए। वहां उन्होंने पार्वती को अपना स्वरूप दिखाया तथा वर मांगने को कहा। पार्वती ने उन्हें पति रूप में प्राप्त करने का वर मांगा तथा कहा कि आपकी आज्ञा से मैं पिता के घर जाती हूं आप भी कृपा कर वहां चलें और मेरे पिता से मुझे मांगें ताकि उनका गृहस्थ धर्म सफल हो जाये। हे विभो! आप तो सर्वदा विकार रहित और भक्त वत्सल हैं और मैं तो सदैव

CC-0. Vanaji Desmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से आपकी दासी हूं। शंकर ने 'तथास्तु' कहकर कैलाश की यात्रा की। पार्वती भी अपने पिता के घर चली गई। पार्वती का आगमन सुन मैना और परिवार सहित हिमाचल अपनी पुत्री को पहले देखने गया। मैना तथा हिमाचल ने ब्राह्मणों को धन आदि दिया। जब एक दिन मैना और हिमाचल गंगा स्नान को गए तो सुन्दर नट-नर्तक का वेष धारण कर शिवजी मैना के पास गए। उनके बांए हाथ में लिंग तथा दांए हाथ में डमरू विराजमान था। वे लाल वस्त्र पहने हुए थे तथा पीठ पर गुदड़ी पड़ी थी। शिवजी बड़े आनंद के साथ मैना के आंगन में जाकर अनेकों प्रकार के मनोहर नृत्य तथा गान करने लगे। वे अपने लिंग तथा डमरू को बड़ी ध्वनि के साथ बजाते, जिन्हें देखने के लिए सारी नगरी के नर-नारी वहां पर आ गये। सभी प्रसन्न हो गए। मैना भी प्रसन्न हो शीघ्र ही स्वर्ण के पात्रों में रत्नों को भर स्वयं उनको भिक्षा देने चली। पर शिवजी ने रत्नों को लेने से इंकार कर दिया और भिक्षा में पार्वती को मांगा। उनके इन वचनों से मैना को क्रोध आ गया तथा वे ताड़ित वचनों से उन्हें अपने घर से निकालने लगी। इसी समय हिमाचल भी लौट आये तथा आंगन में सारा वृत्तांत सुनकर कुपित हो गए तथा अपने अनुचरों को उन्हें बाहर निकालने की आज्ञा दी। अपनी लीलाओं में चतुर होने के कारण कोई भी उसे बाहर न निकाल सका। वह तत्क्षण गिरिराज को पहले विष्णु रूप में, फिर सूर्य रूप में पार्वती के साथ हंसते हुए अपने सुन्दर तेज में दिखाई पड़ा तथा भिक्षा में फिर पार्वती को मांगा और कुछ भी ग्रहण करने से इंकार कर दिया। पश्चात गुप्त हो पार्वती की आज्ञा से अपने धाम को चले गए। इस आश्चर्य को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देख मैना सहित गिरिराज को ज्ञान प्राप्त हुआ तथा वे पश्चाताप करने लगे कि हमें सुन्दर पार्वती को उन्हें दे देना चाहिये था। विचारते-विचारते वे भी शिव की परम भक्ति में लीन हो गए। भक्तों के सुखदाता ने महालीला करके प्रेम पूर्वक यथाविधि पार्वती से विवाह किया। शिव का यह सुनट-नर्तक अवतार नामक आख्यान सर्व पाप नाशक तथा परम गतिदायक है।

पैंतीसवां अध्याय

(भगवान् शिव द्वारा ब्राह्मण का रूप धारण कर शिव की निंदा करना तथा हिमाचल और मैना की मति को विभ्रम करना।)

नंदीश्वर बोले—हे सर्वज्ञ सनत्कुमार जी! अब भगवान् शंकर के उस द्विज अवतार की कथा कहता हूं जिसमें उन्होंने साधु वेष भी धारण किया था। जब मैना और हिमाचल की भगवान् शिव में परम भक्ति स्थापित हो गई तो इसे जान कर देवताओं में चिंता व्याप्त हो गई। वे विचार करने लगे कि यदि गिरिराज अपनी एकांग भक्ति से शिवजी को अपनी कन्या देगा तो निश्चय ही शिव के निर्वाण पद को प्राप्त करेगा। अगर कहीं अनन्त रत्नों का आधार शैल मुक्त हो गया तो फिर पृथ्वी रत्नगर्भा किस प्रकार कहलायेगी। तब तो इसका नाम ही व्यर्थ हो जायेगा। फिर यह पर्वत स्थावर रूप को त्याग दिव्य रूप धारण कर लेगा और शिवजी को कन्या दे शिवलोक को प्राप्त कर लेगा। यह सोचकर देवता बृहस्पति के पास गये और उनसे कहा कि आप महादेव की निंदा करने हिमाचल के घर जाइये, जिससे हिमाचल शिव भक्ति से विरत हो जाये ताकि वह शिव के परम पद को प्राप्त न कर मुक्ति प्राप्त कर पृथ्वी पर ही रह जाये। बृहस्पति ने इस कार्य के लिये अपने को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

असमर्थ बताया। तब देवता ब्रह्माजी के पास गये तथा सारा हाल कहा। ब्रह्माजी ने भी कहा कि मैं दुःख देने वाली और कलह प्रदान करने वाली शिव की निंदा नहीं करूँगा। तुम स्वयं ही कैलाश जाकर स्वयं शिव को ऐसा करने के लिये हिमाचल के पास भेजो। क्योंकि पर निंदा विनाशक है और यदि कोई अपनी निंदा स्वयं करता है तो यश का भागी होता है। यह सुन सब देवता कैलाश पर शिवजी के पास गये और सारा वृत्तान्त सुनाया। शिवजी ने हसंकर इसे स्वीकार किया तथा देवताओं को आश्वासन देकर भेज दिया। शिव ने भक्ति पूर्वक विष्णु का नाम जपते हुए साधु का रूप धारण कर ब्राह्मण रूप में हिमाचल के घर की ओर प्रस्थान किया। हिमाचल ने साष्टांग प्रणाम कर उस साधु का नाम तथा परिचय पूछा—तो उस साधु ने कहा कि मैं एक परोपकारी ब्राह्मण हूँ तथा सब का परोपकार करता हूँ, मैंने अपने योगबल से जान लिया है कि तुम अपनी कन्या का विवाह शिवजी के साथ करना चाहते हो। तुम को शिवजी का कुल और गोत्र ज्ञात नहीं। तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया है। पहले तो शिव का कोई बांधव नहीं है। फिर भी तुम अपने भाई तथा मैना से पूछो। उसे सदैव कुपथ्य ही भाता है। उसका तो नाम सुनते ही लोग तुम्हारी हंसी उड़ायेंगे। शिव तो सर्वदा आश्रय हीन एकाकी, विरूप, निर्गुण, अव्यय, श्मशानवासी, विकट सर्पधारी और दिगम्बर है। वह तो सर्वदा शरीर में धूल लपेटे रहता है। ऐसा कहकर शिवजी देवताओं का कार्य सिद्ध कर चले गये क्योंकि मैना तथा हिमाचल की बुद्धि विपरीत हो गई। वे विचारने लगे कि अब क्या करें? शिवजी का आख्यान जो पढ़ता या सुनता है, उसके पापों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का नाश हो जाता है तथा यह आख्यान स्वर्गदायक, आयुवर्द्धक और कल्याण दायक है। यहाँ छियासी अवतारों की कथा स्थापित हुई।

छत्तीसवां अध्याय

(शंकर का द्रोणपुत्र अश्वत्थामा के रूप में अवतरण तथा महाभारत के युद्ध में अनेक प्रकार के कौतुकों का करना।)

नंदीश्वर जी बोले—हे सर्वज्ञ सनत्कुमार जी! देवर्षि बृहस्पति के पुत्र भारद्वाज और भारद्वाज के द्रोण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। जो धनुषधारियों में सर्वश्रेष्ठ, महा शूरवीर, महा तेजस्वी और अस्त्र विशारद था। जिसे लोग धनुर्वेद तथा वेद में निष्णात कहते थे। ये द्रोण अपने बल बुद्धि से कौरवों के आचार्य हुए तथा उनके मध्य छः महारथियों में भी विख्यात हुए। इन्होंने कौरवों की सहायता के लिए शिवजी का कठोर तप किया ताकि एक पुत्र की प्राप्ति हो सके। उसके तप से प्रसन्न होकर शिवजी ने दर्शन दे वर माँगने के लिए कहा। इस पर अत्यन्त नम्रता से द्रोणाचार्य ने शिव के अंश से पैदा होने वाला महाबली पुत्र मांगा। शिवजी ने 'तथास्तु' कहा। कालान्तर में सबका संहार करने वाले शिव के अंश से द्रोण को अश्वत्थामा नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। वही महाबली महाभारत के युद्ध में पिता की आज्ञा से कौरवों का सहायक हुआ। उस महावीर विद्वान अश्वत्थामा का बल पाकर कौरव इतने अजेय हो गये कि सम्पूर्ण पांडव भी उसे जीतने में सफल न हो सके। तब कृष्ण के आदेशानुसार अर्जुन ने तप कर सब अस्त्रों को प्राप्त कर उन्हें समर में जीता। शिवजी के अंश में उत्पन्न होने के कारण अश्वत्थामा इतना वीर हुआ कि यत्न पूर्वक शिक्षित पांडवों के सभी पुत्रों को मार डाला तथा श्री कृष्ण भी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उन्हें रोक न सके। परन्तु जब पुत्र शोक से व्याकुल अर्जुन रथ पर चढ़ अश्वत्थामा से युद्ध करने चला तो वह भयभीत हो भाग चला और उस पर अपना ब्रह्मास्त्र नामक अस्त्र छोड़ा। जिसके प्रचंड वेग से दिशाएं भी जलने लगीं। तब प्राणों पर आई विपत्ति देख उसने श्री कृष्ण से इसका निवारक पूछा तो कृष्ण ने कहा कि यह अश्वत्थामा का दारुण अस्त्र है जिसके समान घातक कुछ भी नहीं। अब यही एक उपाय है कि तुम शीघ्र शंकर का स्मरण करो और उस पर शैवास्त्र का प्रयोग करो। ऐसा कह अर्जुन सहित कृष्ण शिवजी का ध्यान करने लगे। अर्जुन ने शिव का स्मरण कर जल स्पर्श कर प्रणाम करके अपना शैवास्त्र छोड़ा। यद्यपि ब्रह्मास्त्र निष्फल नहीं हो सकता, पर शैवास्त्र के सामने पड़कर शांत हो गया। तब अश्वत्थामा ने इस संसार को पांडवों से सर्वथा रहित करने हेतु उस अस्त्र को उत्तरा के गर्भ स्थित बालक पर छोड़ दिया। श्री कृष्ण उसका आशय समझ गये। उन्होंने अपना सुदर्शन चक्र भेज उत्तरा के गर्भ की रक्षा की। शिवजी की आज्ञा से गर्भ का कुछ न बिगड़ा। शिव भक्त श्री कृष्ण ने पांडवों को ब्राह्मण श्रेष्ठ अश्वत्थामा के चरणों में गिरवाया। अश्वत्थामा ने प्रसन्न हो कृष्ण सहित पांडवों को अनेक वर दिये। इस प्रकार महेश्वर ने द्रोण रूप से पृथ्वी पर अवतार ले परम लीला की। जो मनुष्य भक्ति पूर्ण इस आख्यान को सुनेगा उसके सभी मनोरथ पूरे होंगे तथा अन्त में वह शिव पुर को जायेगा।

सैंतीसवां अध्याय

(महर्षि व्यास द्वारा पांडवों को नित्य प्रति शिवजी की पूजा अर्चना के लिए प्रेरित करना तथा पांडु पुत्रों का उनके कथन पर अमल करना।)

नंदीश्वर जी बोले—जब श्रेष्ठ पांडवों को दुर्योधन ने युद्ध

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

में हरा दिया तो वे अपनी साध्वी स्त्री को साथ ले द्वैत वन में जाकर सूर्य से प्राप्त स्थली पर आनन्द पूर्वक रहने लगे। तब दुर्योधन ने पांडवों को कष्ट देने हेतु दुर्वासा ऋषि को हजारों विद्यार्थियों सहित उनके यहां भोजन के लिए भेज दिया। तब द्रोपदी ने श्री कृष्ण का स्मरण किया तो श्री कृष्ण तत्क्षण वहीं उपस्थित हो गये और स्वयं शाक को खा उनको तृप्त कर दिया। दुर्वासा अपने शिष्यों को तृप्त जान चले गये। इस प्रकार पांडवों का संकट टल गया। श्री कृष्ण पांडवों को शिव की आराधना बताकर स्वयं द्वारका नगरी चले गये। एक दिन पांडवों ने दुर्योधन के गुणों की परीक्षा करने के लिए भील को भेजा। दुर्योधन के पास जा उसमें गुणोदय को जान पांडवों के पास आया। दुर्योधन के गुणों से सभी पांडव बड़े दुःखी हुए। युद्ध का विचार किया परन्तु उपयुक्त समय न जानकर मौन रहे। पश्चात जटा जूट विभूषित, रुद्राक्षधारी भस्म लगाये व्यास जी 'नमः शिवाय' पंचाक्षरी मंत्र जपते हुए उनके पास आये। व्यास जी को देख पांडवों ने खड़े हो उनकी अभ्यर्थना की और विविध प्रकार से पूजा की। पांडवों ने व्यास जी से ऐसे उपदेश का निवेदन किया जिससे उनके सारे कष्ट दूर हो जायें। महामुनि व्यास ने प्रसन्न होकर कहा—हे पांडवो! तुम कष्ट के योग्य नहीं हो क्योंकि तुमने सत्य का लोप नहीं किया। अतः तुम धन्य और कृतकृत्य हो। हमारे लिए तुम और कौरव समान हो तो भी धर्मात्माओं के लिए बुद्धिमानों का पक्षपात होता ही है। पहले धृतराष्ट्र ने स्वयं लोभ वश धर्म का त्याग कर दिया तथा तुम्हारा राज्य अपहरण कर लिया। उसने अपने पुत्र दुर्योधन को भी अनर्थ के लिए मना नहीं किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किन्तु वह दुष्ट है और तुम सत्यवादी अतएव कल्याण तुम्हारा ही होगा। यह सब सुन पांडवों ने कहा–हे नाथ! यह तो आपने सत्य ही कहा क्योंकि वे दुरात्मा यहां वन में भी हमें नाना प्रकार के कष्ट पहुंचाते रहते हैं। फिर भी हे विभो! हमारे अशुभ को नष्ट करो और शुभ दान दो। पहले श्री कृष्ण ने भी हमें शंकर का जाप करने के लिए कहा था पर प्रमाद वश हमने ऐसा नहीं किया। अतएव अब आप हमें उस मार्ग का उपदेश दीजिए। तब व्यास जी बोले–हे धर्म बुद्धि पांडवो! श्री कृष्ण का कथन सत्य था। मैं स्वयं भी शिव का आराधक हूं। तुम लोग बड़े प्रेम से शिवजी का सेवन करो इससे तुम्हें अतुल सुख की प्राप्ति होगी। शिवजी की सेवा न करने से ही सारे दुःख प्राप्त होते हैं। पश्चात व्यास जी ने अर्जुन को शिवजी की आराधना के लिए इन्द्र सम्बन्धी विद्या का उपदेश कर पार्थिव पूजा का विधान बताया। अर्जुन इन्द कील पर्वत के निकट गंगा जी के तट पर तप करने चले गये। जब व्यास जी ने युधिष्ठिर से कहा कि तुम हमेशा धर्म में स्थित रहना इससे तुम्हें निसंदेह श्रेष्ठ सिद्धि प्राप्त होगी।

अड़तीसवां अध्याय

(शिवजी का किरात के रूप में अवतरण तथा व्यास जी द्वारा हरिश्चन्द्र व नल की कथा को पांडवों को सुनाना।)

नंदीश्वर जी बोले–अब शिव मंत्र के अतुल तेज के कारण अर्जुन प्रकाशमान हो गए। ऐसा देख पांडवों को अपनी विजय निश्चित दिखाई दी। उन्हें अपने में विपुल तेज दिखाई दिया। जब अर्जुन शिव के तप के लिए चले तो पांडवों सहित द्रोपदी ने उन्हें बड़े दुःख से विदा किया, पर उन्हें व्यास जी का उपदेश याद आया और अपना कल्याण नजर आया। परन्तु अर्जुन के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वियोग से उन्हें कभी शान्ति प्राप्त न होती थी। तब उनके दुःख को देख व्यास जी फिर उनके पास पहुंचे तथा उनके सुख के लिए कुछ समय के लिए वहां ठहर गए। एक दिन युधिष्ठिर ने व्यास जी से पूछा—हे महा प्राण! क्या ऐसा कष्ट पहले भी किसी ने पाया है या मैं ही ऐसा हतभागी हूं। यह सुन व्यासजी ने कहा—नहीं औरों ने भी एक से एक कठिन दुःख पाये हैं। निषध देश का स्वामी नल तो आपसे भी अधिक दुःख पा चुका है। राजा हरिश्चन्द्र ने भी बड़ा दुःख पाया है। रामचन्द्र को भी इसी प्रकार का दुःख हुआ है। ऐसा कौन है जो शरीर पाकर दुःखी न हो। पहले तो माता के गर्भ में जन्म ही दुःख का कारण है। बाल्यावस्था भी कष्ट कारक है। युवावस्था में दुःख रूपी कामनायें सताती रहती हैं। वृद्धावस्था में मरण रूप महा दुःख का कारण होता है। अतएव यह सब मिथ्या है। तुम सत्य का आचरण करो। शिवजी सत्य से ही प्रसन्न होते हैं, अतः मनुष्य को वही करना चाहिये। इधर यह अवस्था थी उधर अर्जुन मार्ग के अनेक कष्टों को पार कर इन्द्रकील पर्वत पर गंगा नदी के तट पर पहुंचे। फिर व्यास जी के उपदेशानुसार उन्होंने अपने वेषादि बनाये। इन्द्रियों को वश में कर तीनों काल स्नान कर विविध प्रकार से शिवजी की उपासना करने लगे। उस उपासना से अर्जुन के सिर से तेज निकलने लगा, जिसे देख जीवों को भय होने लगा। न जाने यह तेज कब शान्त होगा। इन्द्र अर्जुन के कठिन तप का वृत्तांत सुन उनकी परीक्षा लेने ब्राह्मण के वेष में वहां पहुंचे। तब उन्हें अपनी ओर आते देख अर्जुन ने उनकी पूजा की और पूछा कि इस समय वे कहां से आ रहे हैं। इन्द्र ने अर्जुन से अपना परिचय देने की अपेक्षा यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कहा कि तुम इतनी थोड़ी अवस्था में तप क्यों कर रहे हो ? यह तुम्हारा तप सर्वथा मुक्ति के लिए है या जप के लिए। अर्जुन ने अपना सारा मंतव्य कहा। यह सुन ब्राह्मण वेषधारी इन्द्र ने कहा—तुम्हारा यह तप क्षात्र धर्म के अनुरूप नहीं क्योंकि यह तप तो मुक्ति दाता है और इन्द्र मोक्ष का नहीं सुख का दाता है। यह सुन अर्जुन क्रोधित हो बोले—मैं न तो राज्य के लिए न मुक्ति के लिए पर व्यास जी के वचनों के लिए तप कर रहा हूं। हे ब्रह्मचारी जी ! आप यहां से चले जाइये। आप मुझे पतित करना चाहते हैं। इस पर इन्द्र ने अपना वास्तविक रूप दिखाया। अर्जुन लज्जित हो गये तथा अर्जुन को आश्वासन देकर इन्द्र ने कहा वर मांगो। अर्जुन ने शत्रुओं पर विजय मांगी। इस पर इन्द्र ने दुर्योधन सहित भीष्म, द्रोण और कर्णादि वीरों को दुर्जय कह अश्वत्थामा को शिवजी का अंश बताते हुए अपनी असमर्थता व्यक्त की। फिर कहा इसके लिए एक मात्र समर्थ शिवजी हैं। पार्थिव विधान से अनेक उपचारों युक्त सर्व भाव से शिव की सेवा करो। तुमको अचल सिद्धि प्राप्त होगी। अर्जुन से ऐसा कह इन्द्र उनकी रक्षा के लिए अनुचरों को नियुक्त कर शिवजी का ध्यान करते हुए अपने लोक को चले गये। अर्जुन संग्राम में विजय पाने के लिए वहां रह उसी विधि से शिवजी को प्रसन्न करने के लिए तप करने लगे।

उन्तालीसवां अध्याय

(भगवान् द्वारा किरात का रूप धारण कर अर्जुन को दर्शन देना तथा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति। मूक नामक दैत्य का वध।)

नंदीश्वर जी बोले—अब अर्जुन ने व्यास द्वारा बताई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गई विधि के अनुसार शिव की पूजा की। एक पांव के तलवे से पृथ्वी पर मुनियों के समान खड़े एक मात्र दृष्टि से सूर्य की ओर तकते हुए तप करने लगे तथा पंचाक्षरी जाप करने लगे। अर्जुन का तप तेज इतना प्रकाशित हो गया कि देवता भी आश्चर्य करने लगे। इस समय दुष्ट दुर्योधन का भेजा हुआ मूक नामक दैत्य शूकर का भेष धारण कर वहां आया। वह अपने वेग से पर्वतों को तोड़ता, वृक्षों को उखाड़ता अनेक प्रकार के शब्द करता हुआ बड़े वेग से चला। अर्जुन उसे देख कर शंकित हो गया कि कहीं यह दुर्योधन का सखा तो नहीं। यह सोच अर्जुन ने वहीं बैठे-बैठे बाण चला दिया। उसी समय अर्जुन की परीक्षा और रक्षा हेतु भगवान् शिवजी भी वहां पहुँच गये। उन्होंने किरात का वेष बना लिया। ऐसे स्वरूप में भीलों का सा शब्द करते हुए चले। उधर शूकर भी भयंकर शब्द कर रहा था। जब अर्जुन ने अपने धनुष पर फिर बाण चढ़ाया तो उनके और शिवजी के बीच पर्वताकार शूकर आ गया। अर्जुन तथा शिवजी ने एक साथ ही बाण छोड़ा। शिव का बाण शूकर की पूंछ तथा अर्जुन का मुख पर लगा। बाण उसके मुख से पार निकल कर पृथ्वी में समा गया तथा शूकर मर गया। शिवजी सन्तुष्ट हुए तथा अर्जुन को सुख प्राप्त हुआ। मरते समय दैत्य ने और भी अद्भुत रूप दिखाया जिसे देखकर अर्जुन ने कहा—अहो तो यह मुझे मारने आया था, भगवान् शिव ने मेरी रक्षा की है। अर्जुन और दृढ़ता से पंचाक्षरी का जप करता हुआ शिवजी की स्तुति करने लगा।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चालीसवां अध्याय

(किरात तथा अर्जुन का परस्पर संवाद तथा दोनों का युद्ध के लिए तैयार होना।)

नंदीश्वर जी बोले—हे सर्वज्ञ सनत्कुमार जी! उसी समय शिव ने अपने सेवक को भेज अपना बाण मंगाया। अर्जुन भी उसी समय अपना बाण लेने चले, जिससे दोनों में वाद विवाद हो गया। गण ने कहा कि ये दोनों बाण हमारे हैं, हमें दे दो। अर्जुन ने शिव की स्तुति की। गण ने कहा—तू झूठा तपस्वी है। बाण मेरा है यदि तेरा है तो उसका फल दिखा और मुझे इसकी पहचान करा। अर्जुन ने कहा—बाण के फल पर मेरा नाम अंकित है। तुझे क्या दिखाऊं, अपने स्वामी को भेज उसे ही दिखाऊंगा। अर्जुन के ऐसा कहने पर वह गण शिव के पास गया और सारा हाल कहा। इसे सुन किरात रूपी शिव सेना सहित पहुंचे। अर्जुन ने भी किरात की सेना को देख धनुष बाण ले सामने स्थित हो गये। तब शिव ने अनुचर द्वारा कहलाया—हे तपस्वी! सेना को देखो और बाण दे दो। थोड़े से कार्य के लिए क्यों मरना चाहते हो? तेरे भाइयों तथा स्त्री को दुःख होगा। ऐसा कहते हुए भगवान् शिव उसके और निकट आ गये। अर्जुन ने भीलराज से कहा—कि अगर मैं अपना बाण वापस दे दूंगा तो निश्चय ही कुल कलंकी कहलाऊंगा। मेरे भाई बेशक दुःखी हो जायें, मैं तुम्हारे साथ युद्ध अवश्य करूंगा। शृंगाल से सिंह भयभीत नहीं होता। वनचर से राजा नहीं डरता। यह सुन किरात रूपी महादेव अर्जुन के अति निकट आ गये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इकतालीसवां अध्याय

(किरात रूपी शिव तथा अर्जुन का युद्ध। अर्जुन के युद्ध की शिव द्वारा सराहना तथा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का होना।)

नंदीश्वर बोले—फिर तो किरात को पास आया देख अर्जुन ने भगवान् शिव का स्मरण किया और भयंकर युद्ध आरम्भ कर दिया। गणों सहित किरात तथा उसके गणों ने अर्जुन को बड़ी पीड़ा दी। अर्जुन ने भी उन बाणों को काटते हुए शिव पर अनेक बाण बरसाये, जिससे भयभीत होकर गण भागने लगे। पराक्रमी अर्जुन अपने तीव्र बाण चला शिव से युद्ध करने चले। शिव पर उनके बाणों का कोई असर न हुआ। यह देख भक्त वत्सल शिवजी हंसने लगे। फिर तो भक्त के वश शिव ने अर्जुन को अपना सुन्दर रूप दिखाया। जिसे देख अर्जुन को बड़ी लज्जा आई। उन्होंने कहा—ये तो साक्षात मेरे प्रभु हैं। हा मैंने इन त्रिलोकी नाथ से युद्ध क्यों किया। भगवान् की बलवती माया जो न चाहे कर डाले। अर्जुन अपनी बुद्धि में ऐसा विचार कर, हाथ जोड़ बार-बार शंकर जी को साष्टांग प्रणाम करने लगा। फिर खिन्न होकर बोला—हे देवाधिदेव शंकर! हे करुणा के सागर सर्वेश! मेरे अपराध क्षमा कीजिए। हे प्रभो! आपने यह क्या किया। इस प्रकार पश्चाताप करते हुए अर्जुन शंकर के पांवों पर गिर पड़ा। तब अर्जुन को आश्वासन देते हुए शंकर जी बोले—हे पार्थ! तुम खेद मत करो, यह तो मैंने तुम्हारी परीक्षा ली थी। तुम्हारी भक्ति पर मैं इतना प्रसन्न हूं कि तुम्हारे ये प्रहार मेरी पूजा तथा अर्चना थे। यह तो सब मेरी प्रेरणा से ही हुआ है इसलिए तुम अपराधी की भावना को निकालो। अर्जुन आश्वस्त हो अनेक प्रकार से शिव की स्तुति करने लगा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तथा उसने अनेक नामों से भगवान् शिव को पुकारा। अन्त में उसने कहा—हे महेशान्! हे शंकर! आपके गुणों को वेद भी बखान नहीं सकते तो मेरा क्या बस है। आप कृपा कर मुझे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का वर दीजिए। स्वामी शंकर ने प्रसन्न हो उसे अपना दुर्जय पाशुपत अस्त्र प्रदान कर दिया और कहा इस अस्त्र से तुम्हारी विजय होगी। इसके अतिरिक्त मैं श्री कृष्ण को भी कह दूंगा जो तुम्हारी विजय को निष्कंटक बना देंगे। ऐसा कह शिवजी अन्तर्ध्यान हो गये। शंकर जी से पाशुपत अस्त्र प्राप्त कर अर्जुन अपने आश्रम को गया तथा भाइयों और द्रोपदी सहित सुख को प्राप्त हुआ।

बयालीसवां अध्याय

(द्वादश ज्योतिर्लिंग की कथा। इस आख्यान को सुनने मात्र से मुक्ति तथा जगत् में सम्मान का मिलना।)

नंदीश्वर बोले—हे मुनि श्रेष्ठ! अब सर्व व्यापक शंकरजी के ज्योतिर्लिंग स्वरूप उनके बारह संख्या वाले अवतार का चरित्र सुनो। सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्री शैल में मल्लिकार्जुन, उज्जयिनी में महाकालेश्वर, ओंकार में अपरेश्वर, हिमालय पर्वत पर केदार, डाकिनी में भीम शंकर, काशी में विश्वनाथ, गौतमी तट पर त्र्यंम्बक, चिता भूमि में वैद्यनाथ, दारुण वन में नागेश, सेतुबंध में रामेश्वर तथा शिवालय में घुश्मेश्वर ये बारह अवतार हैं। जो मनुष्य इनके दर्शन और स्पर्श करता है उसे ये परम आनन्द देता है। प्रथम सोमनाथ चन्द्रमा के दुःख का नाश करने वाले हैं। इनके पूजन से क्षय तथा कष्ट रोग दूर हो जाते हैं। दूसरे लिंग के दर्शन से महासुख तथा महामुक्ति मिलती है। तीसरे उज्जयिनी में महाकाल नामक लिंग के दर्शन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से सब कामनायें पूर्ण होती हैं तथा अन्त में उत्तम गति प्राप्त होती है। ओंकार लिंग भक्तों को इच्छित फल देने वाला है। केदारेश नामक ज्योर्तिलिंग भगवान नर नारायण का रूप है जो इसका दर्शन तथा पूजन करता है उसे अभीष्ट फल प्रदान होते हैं। शिवजी का छटा अवतार भीम नामक असुर को मारने से भीमशंकर ज्योर्तिलिंग हुआ जिसमें उस दैत्य को मार शिवजी ने कामरूप देश के राजा की रक्षा की। यह भक्तों के सब मनोरथों को पूर्ण करने वाला और उस खंड का स्वामी है। इसी प्रकार विश्वेश्वर नामक सातवां अवतार काशी में हुआ जो समस्त ब्रह्मांड का स्वरूप तथा मुक्ति तथा भक्तिदायक है। इसकी पूजा विष्णु आदि सभी देवों ने की है तथा यहां कैलाशपति भैरव रूप से वहां पर स्थित हैं। जो काशी के विश्वनाथ को जपते हैं वे मोक्ष को प्राप्त करते हैं। शिवजी का त्र्यम्बक नामक ज्योर्तिलिंग आठवां अवतार गौतमी के किनारे गौतम ऋषि की प्रार्थना और कामना से हुआ है। इस लिंग के स्पर्श तथा दर्शन से सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं। नवां वैद्यनाथ अवतार हुआ जो रावण का दर्प दलन के लिए हुआ था। इसके माहात्म्य को अनुशासन से जो पढ़ता या सुनता है उसे ये भक्ति या मुक्ति प्रदान करते हैं। दसवां नागेश्वर अवतार अयोध्यापुरी में हुआ। शिवजी के इस लिंग के दर्शन तथा पूजन करने से महापातकों का समूह नष्ट हो जाता है। शिवजी का ग्यारहवां अवतार रामेश्वर में हुआ जिसने रामचन्द्र का प्रिय कार्य किया तथा इसकी स्थापना रामचन्द्र ने की थी। ये रामेश्वर भोग तथा मुक्ति देने वाला है। इसी प्रकार शंकर का घुश्मेश्वर नामक बारहवां अवतार हुआ, जिसने घुश्मा को

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आनन्द दिया। दक्षिण दिशा के निकट सरोवर में घुश्मा प्रिय करने वाले शंकर प्रकट हुए। जिन्होंने सुदेह्य दैत्य से मारे हुए घुश्मा के पुत्र को उसकी भक्ति से संतुष्ट होकर उसकी रक्षा की। इस लिंग के दर्शन से इहलौकिक सुख की प्राप्ति होती है। इस प्रकार शिव के ज्योतिर्लिगों की कथा को जो सुनता या पढ़ता है वह सब पापों से छूट भोग तथा मोक्ष को प्राप्त होता है। यह सौ अवतारों की शतरुद्र नामक संहिता सब कामनाओं का फल देने वाली है। जो इसे मन लगा कर पढ़ता या सुनता है उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं तथा अन्त में वह मोक्ष को प्राप्त होता है।

॥ इति श्री रुद्र संहिता उत्तरार्द्ध खण्ड ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

कोटि रुद्र संहिता खण्ड

(सदाशिव के बारह ज्योतिर्लिंग एवं उपलिंगों का आख्यान)

पहला अध्याय

(ज्योतिर्लिंग तथा शिवलिंग, उपलिंग का महान सरस आख्यान। इनके स्मरण मात्र से सदाशिव द्वारा सभी मनोरथों को पूर्ण करने का वचन।)

ऋषियों ने सूतजी से कहा—कि हे महाप्रभो! आपने लोक हित महादेव की परम पवित्र अनेकों कथाएँ सुनाईं। अब इसी प्रकार की और महिमा युक्त भगवान् शंकर की कथाओं को सुनाओ। अतः आप जगत् के कल्याण के लिए पृथ्वी भर के तीर्थ स्थानों में परम श्रेष्ठ सदा शिवलिंग एवं अन्य प्रसिद्ध लिंगों की कथाओं का वर्णन कीजिए। यह सुन शिव भक्त सूतजी बोले कि आपने जगत् कल्याण हेतु अति सुन्दर प्रश्न किया है और आप का शिव कथा प्रेम भी अद्भुत है। अब मैं आप को यथा शक्ति शिव कृपा से कुछ न कुछ सुनाता हूं। भगवान् शिव के लिंगों का कौन वर्णन कर सकता है। वे तो सारे विश्व में फैले हुए हैं। अतः मैं मुख्य-मुख्य शिव लिंगों की कथा सुनाता हूँ। सौराष्ट्र देश में सोमनाथजी, श्री शैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओंकार में परमेश्वर, हिमालय के शिखर पर केदार जी, डाकिनी देश में भीमशंकर, काशी में विश्वनाथ जी, गौतमी नदी के तट पर श्री त्र्यम्बकेश्वर जी, चिता भूमि में वैद्यनाथ जी, दारुण वन में नागेश्वर जी, सेतुबंध में रामेश्वर जी एवं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शिवालय में घुश्मेश्वर जी ये बारह ज्योतिर्लिंग कहलाते हैं। जो भी व्यक्ति प्रातः काल उठ कर उन बारह ज्योतिर्लिंग की पूजा अर्चना करते हैं उनके सभी पाप ताप नष्ट हो जाते हैं तथा वे अनेक मनोरथों को प्राप्त करते हैं। इन ज्योतिर्लिंगों पर चढ़ाया हुआ नैवेद्य खानेपर कोई दोष नहीं। जो किसी भी लिंग की पूजा करता है। उसको पुनर्जन्म नहीं होता। बधिक, कसाई, शूद्र, नीच जाति, पतित से भी पतित कोई भी ज्योतिर्लिंगों में किसी भी लिंग का दर्शन कर लो तो मोक्ष को प्राप्त करता है। इन ज्योतिर्लिंगों की महिमा विष्णु ब्रह्मा आदि देवता भी पाने में असमर्थ हैं। समुद्र एवं पृथ्वी के मिलाप वाले स्थान पर श्री सोमेश्वर जी का उपलिंग अन्नकेश नामक लिंग है। मल्लिकार्जुन से प्रकट हुआ उपलिंग रुद्रेश्वर नाम से प्रसिद्ध है। नर्मदा नदी के तट पर महाकाल नामक शिवलिंग से प्रकट हुआ दुग्धेश नामक उपलिंग है। अहंकार से प्रकट हुआ कर्दमेश्वर नामक उपलिंग है। वह बिंदू सरोवर में सब प्रकार के मनोरथ देने वाला उपलिंग है। भूतेश्वर नामक उपलिंग यमुना तट पर विद्यमान है। इसका दर्शन सब पापों से मुक्त कराता है। भीम शंकर से प्रकट उपलिंग बल बुद्धि को बढ़ाता है, उसका नाम भीमेश्वर है। वह सह्य पर्वत पर प्रसिद्ध है। नागेश्वर शंकर का उपलिंग मल्लिका सरस्वती के तट पर विद्यमान है। श्री रामेश्वर का उपलिंग गुप्तेश्वर नामक है। घुश्मेश नाम का उपलिंग व्याघ्ररेश्वर नाम से प्रसिद्ध है। ये सभी लिंग और उपलिंग पापों को भस्म कर भक्तों को अनेकों फल प्रदान करते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दूसरा अध्याय

(पूर्व दिशा के शिव लिंगों का आख्यान। गोपेश्वर, नागेश और कृतिका, सुकेश आदि लिंगों की महिमा का वर्णन।)

सूत जी बोले—हे ऋषियो! पतित पावनी भागीरथी गंगा जी के तट पर मुक्ति देने वाली प्रसिद्ध नगरी काशी है। वहां भगवान् शंकर का निवास है। इसी पुरी में कृतिका वासेश्वर नाम का शिवलिंग है जो कि बालक वृद्ध आदि सभी को समान रूप से मुक्ति देने वाला है। इसी तरह से भांडेश्वर दशाश्वमेध आदि लिंग हैं। कौशिकी नदी के किनारे अन्य दो लिंग हैं। जिनका नाम भूतेश्वर तथा नारीश्वर प्रसिद्ध हैं गांडवी नदी के तट पर बटुकेश्वर लिंग है तथा फाल्गुनी नदी के तट पर पूरेश्वर लिंग है जो सर्व प्रकार से सुख देने वाला है। उत्तर प्रदेश में केवल दर्शन मात्र से ही मनुष्यों को मोक्ष देने सिद्ध नाथेश्वर तथा दूतेश्वर नाम दो लिंग विद्यमान हैं। ऋषि दधीचि के युद्ध स्थल पर शृंगेश्वर वैद्यनाथ तथा जप्पेश्वर लिंग हैं। इसी तरह गोपेश्वर, रंगेश्वर, वानेश्वर, नागेश्वर, कामेश, विमलेश्वर, व्यासेश्वर, सुकेश भांडेश्वर, हुंकारेश, सुरोचन, भूतेश्वर, संगमेश आदि नाम वाले लिंग सभी तरह के पाप के नाशक हैं। तृप्तका नदी के तट पर कुमारेश्वर, सिद्धेश्वर, सैनेश, रामेश्वर, कुम्भेश, नदीश्वर, पुंजेश नामक शिवलिंग हैं। प्रयाग में दशाश्वमेध नामक तीर्थ पर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि के देने वाले ब्रह्मेश्वर नामक शिवलिंग हैं इनको ब्रह्मा जी ने स्थापित किया था। इसी स्थापन पर सभी दुःखों के विनाशक सोमेश्वर, ब्रह्म तेज वर्द्धक भारद्वाजेश्वर संसार के सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाले शूलटंकेश्वर एवं भक्तों की रक्षा

CC-O. Nanji Shrimali Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करने वाले माधवेश्वर लिंग हैं। अयोध्या में रघुवंशी राजाओं को सुख देने वाले नागेश नामक लिंग हैं। पुरुषोत्तम पुरी में शुभ सिद्धि दाता भुवनेश नामक लिंग सभी आनन्द के देने वाले लोकेश महा शिवलिंग हैं। लोक हित के लिए स्थापित कानेश्वर परम शुद्धि कर्त्ता गणेश, शुक्रेश्वर एवं शुक्र सिद्धि आदि लिंग हैं। मनुष्य मात्र के सभी मनोरथों को पूर्ण करने तथा सभी पापों को नष्ट करने वाले बटेश्वर, कृपालेश, बक्रेश शिवलिंग हैं ये सभी सिंधु नदी के किनारे स्थित हैं। धूत-पापेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर यह लिंग अंश से परमेश्वर हैं। नंदीश्वर जी तो संसार भर को ज्ञान देने वाले हैं एवं महा-पुराण रूप नागेश्वर शिवलिंग हैं। इसी प्रकार रामेश्वर, विमलेश्वर, कंटकेश्वर तथा समुद्र के किनारे धनुर्केश आदि लिंग महा प्रसिद्ध हैं। चन्द्रेश्वर लिंग चन्द्रमा के समान कान्ति देने वाले हैं एवं सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले सिद्धेश्वर लिंग हैं। विश्व में मशहूर विश्वेश्वर लिंग हैं। लोक हित के लिए भगवान् शंकर अपने अंश रूप में ही विराजमान हैं। इसी कारण उनका नाम शरणेश्वर प्रसिद्ध है। अर्बुदाचल पर्वत पर कर्दमेश लिंग है एवं कोटीश तथा अचलेश नाम से ये लिंग सुख कारक हैं। कौशिकी नदी के तट पर नागेश्वर एवं कल्याण पात्र अन्तेश्वर महा शिवलिंग हैं। योगेश्वर, वैद्यनाथेश्वर, कोटीश्वर, सप्तेश्वर, भद्र नामक सदा शिव चंडीश्वर, संग-मेश्वर लिंग पूर्व दिशा में विद्यमान हैं। इन सबका नाम तथा महिमा का वर्णन मैंने अभी-अभी किया है।

———

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तीसरा अध्याय

(महर्षि अत्रि तथा उनकी पत्नी अनुसुइया के तप का चरित्र। अनुसुइया की अद्भुत पतिव्रता।)

सूत जी ने कहा—हे ऋषियो! अब आप श्री महादेव जी के सब लिंगावतारों की कथा सुनिए। ऋषि बोले—हे सूत जी! तेज से परिपूर्ण अत्रीश नामक शिवलिंग की किस प्रकार उत्पत्ति हुई कृपा करके विस्तार पूर्वक बताइये। सूत जी बोले—हे ऋषियो! दक्षिण की ओर चित्रकूट पर्वत के समीप कामदा नामक महावन है। ब्रह्मा जी के पुत्र अत्रि महर्षि ने अपनी पत्नी अनुसुइया के साथ निवास कर यहां बहुत काल तक तपस्या की। एक समय वर्षा होने पर भी उस वन में वर्षा न हुई तथा धीरे-धीरे सौ वर्ष में अकाल पड़ गया। अन्न जल का अभाव हो गया, वनस्पति सूख गई, लोग भूख से मरने लगे। तब अनुसुइया दुःखी होकर अपने पति से बोली—मैं इन प्राणियों का दुःख नहीं देख सकती, कृपा करके कोई उपाय कीजिए। यह सुन महर्षि पद्मासन लगाकर प्राणायाम द्वारा वायु ब्रह्माण्ड में जाकर शिव के ध्यान में मग्न हो गये। उन्हें सुध बुध भूल गई तथा भगवान् शिव की सारी ज्योति ने उनके शरीर में प्रकाश भर दिया। अत्रि की समाधि देख उनके शिष्य भूखे प्यासे ही वहां से भाग लिये। तब तो अकेली अनुसुइया पति सेवा में तत्पर हुई। सती ने मंत्रों द्वारा पार्थिव प्रतिमा की रचना की। फिर नियम पूर्वक उसके पूजन अर्चन में लग मानस उपचारों के द्वारा शिव को प्रसन्न करने लगी। हाथ जोड़कर अपने पति तथा शिव की परिक्रमा करना उसका नित्य का काम था। साध्वी अनुसुइया अपने पतिव्रत तेज के कारण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अत्यन्त प्रभाव वाली थी। उसके तेज से देव, दानव, दैत्य, मनुष्य सभी डरते थे। महादेव उन दोनों की तपस्या से प्रभावित होकर ऋषि, मुनि तथा देवगणों को साथ लेकर उनकी परीक्षा के लिए चल पड़े। और सभी देवी देवता तो उनके तप की प्रशंसा करते हुए चले गये कि ऐसा तप किसी ने नहीं किया है परन्तु भगवान् अपने अंश भाव से अन्त तक वहीं विराजमान रहे। पतित पावनी गंगा भी इसीलिए वहीं रुकी रही कि जब तक अनुसुइया को अनुगृहीन न कर लूँ जाऊंगी नहीं। अनावृष्टि चौवन वर्ष तक वहीं रही पर महर्षि अपनी तपस्या में लीन रहे। इसी तरह अनुसुइया भी पृथ्वी पर वर्षा न होने तक अपने तप में लगी रही। अब उनकी प्रतिज्ञा किस प्रकार पूर्ण हुई इसका वर्णन मैं आगे करूंगा।

चौथा अध्याय

(गंगा ने पृथ्वी पर भगीरथी के तप के कारण अवतरण किया था। उसी प्रकार अत्रीश्वर के प्रताप तथा अनुसुइया के तप के कारण मंदाकिनी का अवतरण।)

सूत जी बोले—हे ऋषियो! इस प्रकार तप करते-करते तप की समाधि से जागकर महर्षि ने अपनी पत्नी से कहा—हे प्रिये मुझे तो जोरों से प्यास लगी हुई है कहीं से जल लाओ। इतना सुनते ही पतिव्रता अनुसुइया कमंडल उठा कर जल लेने के लिए चल पड़ी। तब श्री गंगाजी अद्भुत शृंगार कर अत्यन्त रूपवती हो अनुसुइया के पास आ मधुर वाणी में बोली—मैं आप से बहुत ही प्रसन्न हूं। कहिये इस समय आप कहां जा रही हैं। उसकी मधुर वाणी सुन अनुसुइया चकित हो बोली—हे भगवती आप कौन हैं तथा कहां से आ रही हैं। श्री गंगा बोली—हे पतिव्रता देवि! मैं गंगा हूं केवल आपके दर्शन हेतु आई हूं तथा तुम्हारे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पतिव्रत धर्म तथा भक्ति के कारण तुम्हारे ही पास आ रही हूं। मैं तुम्हारा कुछ हित करना चाहती हूं। इस लिए मुझसे वर मांगो। गंगा जी के इस प्रकार के कथन को सुन अनुसुइया बोली—हे दिव्य देवी अगर आप प्रसन्न हैं तो कृपया सबसे पहले मेरे इस कमंडल को जल से भर दें। गंगा जी बोली आप पृथ्वी पर पहले एक गड्ढ़ा खोदिये। तब अनुसुइया ने ऐसा ही किया और गंगाजी उस गड्ढ़े में समा गई। अनुसुइया जी ने विस्मित हो अपना कमंडल उस जल से भर लिया तथा कहा—हे पतित पावनी गंगे अगर तुम वास्तव में प्रसन्न हो तो तब तक इस गड्ढ़े में रहो जब तक मेरे पति आकर तुम्हारे दर्शन न कर लें। गंगा जी वहीं स्थित हो गई। अनुसुइया जल भर कर अपने पति के पास पहुंची तथा उन्हें जल दिया। ऋषि प्यासे तो थे ही जल को ग्रहण किया। फिर कहने लगे—यह जल तो बहुत मधुर तथा शीतल है उन्हें वर्षा न होने के कारण सभी पेड़ पौधे भी सूखे दिखाई दिए। उनके आश्चर्य की सीमा न रही। फिर पत्नी से सारा हाल पूछा। पत्नी के द्वारा सारा हाल जानने के पश्चात ऋषि गंगा के दर्शन करने चल पड़े। उसी गड्ढ़े में महारानी गंगाजी अपनी तरल तरंगों से लहराती हुई दिव्य दर्शन दे रही थी। तब महर्षि ने धन्य-धन्य कह उनकी स्तुति की। दोनों पति-पत्नी ने मिलकर गंगा स्नान किया। उसी समय गंगा की इच्छा भी पूर्ण हुई। तथा ऋषि दम्पत्ति से जाने की आज्ञा मांगी। इसे सुनते ही अनुसुइया जी नम्रता से बोली—हे पतित पावन गंगा जी यदि आप वास्तव में प्रसन्न हैं तो आप यहां विराजें तथा इसी तपोवन से आपका प्रवाह चले। गंगाजी बोली अगर आप मुझे तपोवन के समीप रखना चाहती हो तो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आपने जो अपने पति के लिए निर्वाचन किया है उसका एक वर्ष का फल मुझे दे दो। तभी मैं ऋषि मां, मुनियों के कल्याण हेतु यहां निवास करूंगी। अनुसुइया जी ने ऐसा ही किया। इसके बाद भगवान् शिव अनुसुइया जी के सेवा, धर्म, प्रताप से प्रसन्न हो लिंग रूप में वहां प्रकट हो गए तथा अपना साक्षात दर्शन दिया। अनुसुइया से बोले—मैं तुम्हारी भक्ति से अति प्रसन्न हूं, वर मांग लो। तब ऋषि दम्पति ने भगवान् शंकर के दर्शन किये और विधि पूर्वक अर्चना करते हुए स्तुति करते हुए बोले—हे स्वामी यदि आप वर देना चाहते हैं तो यह वर दीजिये कि आप जगदम्बा पार्वती के साथ इसी तपोवन में विराजें। फिर वर्षा द्वारा अन्न आदि वहां उत्पन्न हो तथा चराचर का कल्याण हो। भगवान् शंकर ने तथास्तु कहा। फिर अत्रीश्वर से इस तपोवन में विराजमान हुए तथा गंगा जी भी मंदाकिनी नामक नाम धारण कर सदा के लिए उस कुंड में विराजित हो गईं। यह कुंड केवल हाथ जितना गहरा था पर गंगाजी उसी कुंड से माया द्वारा अभी भी प्रवाहित हो रही है। ऋषि का आश्रम हरा-भरा हो गया तथा सभी लोग आनन्द को प्राप्त हुए। अत्री तथा पतिव्रता अनुसुइया की कथा को ध्यान पूर्वक सुनने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

पांचवां अध्याय

नन्दीकेश्वर लिंग की महिमा का आख्यान तथा इस चरित्र के मनन तथा श्रवण मात्र से लोकों तथा चराचर का कल्याण।

सूत जी बोले—ऋषिवर कालंजर पर्वत पर श्री नील कंठेश्वर भक्त जनों का कल्याण करने वाला शिवलिंग है। वहाँ एक सुन्दर कुंड है जिसमें स्नान करने से सभी पापों का श्रमण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो जाता है। रेवा नदी के किनारे श्री शिव के असंख्य लिंग हैं। रेवा नदी भी विनाशनी है। वैसे तो श्री शंकर के लिंगों की महिमा अनन्त है फिर भी साथ-साथ लिंगों के नाम व महिमा सुनाता हूं। वहाँ एक आर्तेश्वर नामक ज्योतिर्लिंग है जो सभी पापों का नाश कर देता है। परमेश्वर तथा सिद्धेश्वर नामक दो अन्य लिंग और हैं। रेवा के तट पर रामेश्वर, कुमारेश्वर, पुंडरीकेश्वर एवं मंडपेश्वर नामक अन्य लिंग भी हैं। इनके दर्शन मात्र से जीवों के पाप नष्ट हो जाते हैं। नर्मदा के किनारे धुन्धेश्वर, शलेश्वर, कुम्भेश्वर, सोमेश्वर नील कंठेश्वर, मंगलेश्वर आदि बहुत से लिंग हैं। श्री महावीर द्वारा महा कपीश्वर लिंग भी विद्यमान है जो अनन्त फलों को देने वाला है। हे सूत जी! अब कृपा करके नंदीकेश्वर लिंग की महिमा सुनाइये। चारों वर्णों से सेवित इसी रेवती नदी के तट पर एक पवित्र कर्णि नगरी है। उसमें एक ब्राह्मण रहते थे जो कि उच्च कुल थे, उनके दो पुत्र थे। जब ब्राह्मण वृद्ध हुए तो पत्नी को पुत्रों के अधीन कर स्वयं काशी में निवास करने लगे। कालान्तर में उसकी वहीं मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु का वृत्तांत सुन उसके पुत्र वहां पहुंचे तथा वहां उसकी अन्त्येष्टि संस्कार आदि किये। उसके बाद ब्राह्मणी अपने पुत्रों का पालन पोषण करती रही। उसके पास जितना धन था उसमें से कुछ रखकर बाकी अपने पुत्रों को बांट दिया। समय पाकर ब्राह्मणी की मृत्यु निकट आई। पुत्रों ने उसे बचाने के लिए उपाय कर दान पुण्य किये पर उसका कष्ट कम न हुआ। अन्त समय निकट जान ब्राह्मणी अपने पुत्रों से बोली—मैंने तुम्हारे पिता की तरह इच्छा की थी कि प्राण काशी में छोड़ूँ पर ऐसा नहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो सका। मेरे मरने के बाद मेरे श्राद्ध पिंड आदि काशी में करना तथा मेरी अस्थियां भी काशी में गंगा में प्रवाहित करना। पुत्र ने वचन दिया कि सभी बातें माता की इच्छानुसार होंगी। उसके बाद ब्राह्मणी ने शिव का ध्यान करते-करते प्राण छोड़ दिये। सुवाद अकेला माता की अस्थियां लेकर काशी की ओर चल पड़ा। एक दिन में उसने बीस योजन का मार्ग तय कर लिया। जब सूर्य अस्त होने लगा तो किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण के घर में रात्रि गुजारी। प्रातःकाल होने पर शिव की पूजा अर्चना की। अगले दिन की रात्रि को उसने एक अद्भुत बात देखी।

छठवां अध्याय

(नंदीकेश्वर का ध्यान तथा स्तुति करने से ब्राह्मणी की सद्गति। नंदीकेश्वर का आख्यान, गाय तथा ब्राह्मण का श्रेष्ठ चरित्र।

सूत जी बोले—हे ऋषियो! उस घर का स्वामी ब्राह्मण शाम को बाहर जाने के लिए निकला तो उसे ध्यान आया कि आज उसने गाय की धार नहीं निकाली। वह अपनी स्त्री से बोला दूध का बर्तन लाओ तथा खूंटे से बछड़ा खोलो। भार्या ने पति को दूध दुहने का पात्र दे दिया तथा बछड़ा खोल गाय के पास ले गई। यह सोच कि बछड़ा दूध न पी जाये उसने गाय के स्तनों से बछड़े को हटा दिया। रोकने पर बछड़ा उछल कूद करने लगा। तो ब्राह्मण के पांव पर चोट आ गई। उसे क्रोध आया और वह गुस्से में डंडा ले उसे पीटने लगा। यह देख मूक गाय रोने लगी। वह कर भी क्या सकती थी। बछड़े को मार पीट ब्राह्मण ने दूध निकाल लिया। गाय अति विलाप करती रही। उसे इस प्रकार दुःखी देख बछड़ा बोला—तुम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दुःखी क्यों होती हो यह तो सारा कर्मों का खेल है। जो जैसा करता है वैसा भरता है। मुझे इस प्रकार मारने का फल ब्राह्मण को अवश्य मिलेगा। गाय बोली—यह बात जानती हूं पर माया वश तेरा दुःख नहीं देख सकती। मुझे शान्ति तभी मिलेगी जब इस ब्राह्मण को बदला दूंगी। मेरी तरह ब्राह्मण भी दुःख भोगेगा। बछड़ा बोला—हम पूर्व जन्मों के कर्म के कारण पशु हुए हैं। फिर भी तुम अपने ऊपर ब्रह्म हत्या का पाप ले रही हो। यह सुन गाय बोली—तुम मुझे ज्ञान की बात बता रहे हो पर गाय को पीटने का फल भी ब्राह्मण को मिलना चाहिये। मैं प्रातःकाल इसका सर्वनाश कर दूंगी। ब्रह्म हत्या के पाप का निवारण मैं जानती हूं। बछड़ा यह सुन शांत हो गया। इधर सुवाद ब्राह्मण जो माता की अस्थियां लेकर जा रहा था। उसने सारा वृत्तांत सुना और सोचने लगा कि किस प्रकार गाय प्रातः काल ब्राह्मण से बदला लेगी। प्रातःकाल होने पर गृह स्वामी ने अपने पुत्र से कहा बेटा मुझे कहीं बाहर जाना है इसलिए गाय को तुम्हीं दुह लेना। ब्राह्मण के पुत्र ने बछड़े को खोला। फिर रात वाला कांड हुआ। ब्राह्मण पुत्र ने बछड़े को पीटा। फिर तो गाय को बहुत क्रोध आया। उसने अपने दोनों सींग ब्राह्मण पुत्र की बगल में घुसेड़ दिये वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा। उसकी माता ने बड़ा शोर मचाया। लोग इकट्ठे हो गये। उस बालक का पिता भी वहां पहुंच गया तथा पुत्र की दशा देख रोने लगा। थोड़ी देर में पुत्र ने प्राण त्याग दिये। ब्राह्मण ने गाय को पीटा तथा बाहर निकाल दिया। उसके पीछे-पीछे उसका बछड़ा भी चल दिया। ब्रह्म हत्या के कारण सफेद गाय का रंग काला पड़ गया जिसे देख लोग हैरान रह गये। सुवाद

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ब्राह्मण धीरे-धीरे गाय के पीछे चल दिया। गाय चलती-चलती नर्मदा नदी के किनारे पहुंची तथा नदी में तीन गोते लगाये जिससे उसका श्याम रंग धुल गया। सुवाद यह देख विस्मित हो गया तथा धन्य-धन्य कह गाय को प्रणाम किया। गाय जल से निकल अपने पहले स्थान पर चली गई पर दुष्ट ब्राह्मण के घर न गई। यह सब देख सुवाद ने अपने सेवक सहित नर्मदा में स्नान किया तथा नित्य कृत्य करता हुआ उस तीर्थ की प्रशंसा करने लगा। वह काशी की ओर चल पड़ा। मार्ग में उसे एक युवती मिली जिसने असंख्य अलंकार धारण किये हुए थे। वह मंद-मंद मुस्कराती हुई ब्राह्मण पुत्र से बोली—कि तुम अत्यन्त प्रसन्न दिखाई दे रहे हो कहां जा रहे हो। सुवाद ने उसे सारा वृत्तांत सुनाया और कहा कि मैं माता की अस्थियां काशी में प्रवाहित करने जा रहा हूं। यह सुन वह स्त्री बोली—हे ब्राह्मण कुमार! तुम बड़े भोले हो, भला इस तीर्थ को छोड़ कर कहां जा रहे हो। यह तीर्थ अत्यन्त प्रवित्र है। अपनी माता की अस्थियां इसी नदी में प्रवाहित कर दो। प्रति वर्ष बैशाख शुक्ल पक्ष की पंचमी को गंगा की धारा इसी नदी में मिलती है और आज वही शुभ दिन है। देर मत करो, तुम्हें अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार वह युवती वहां से अन्तर्ध्यान हो गई। ब्राह्मण पुत्र ने प्रसन्न हो माता की अस्थियां निकाल श्री गंगा का ध्यान कर नदी में प्रवाहित कर दीं। उसे वहां एक आश्चर्य जनक दृश्य दिखाई दिया उसे लगा कि उसकी माता दिव्य रूप धारण किये उसकी जय-जय-कार कर रही है कि हे पुत्र तुम धन्य हो। तुमने मेरी सद्गति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर दी। तुमको धन धान्य की कभी कमी न होगी। तुम्हारा वंश बढ़ेगा और सभी दीर्घायु होंगे। इस प्रकार माता पुत्र को आशीर्वाद दे शिवलोक को चली गई।

सातवां अध्याय

(संसार में नंदीकेश्वर लिंग की पूजा तथा अर्चना से घोर-से-घोर पापों का नाश तथा मनुष्यों द्वारा इसकी पूजा पर परम पद की प्राप्ति।)

इस कथा को सुन ऋषि बोले—हे सूतजी वैशाख शुक्ल को पंचमी को गंगा किस कारण नर्मदा नदी में आती है। सूतजी बोले—हे मुने सुनो। किसी ब्राह्मण की पत्नी का नाम ऋषिका था, वह नर्मदा के किनारे रहा करती थी। उसका पति पूर्व जन्म के पाप के कारण युवावस्था में मर गया था। वह बाल विधवा नंदीकेश्वर की भक्त हो गई। उसने पार्थिव लिंग स्थापित किया। उसने कठोर तपस्या की। उन्हीं दिनों कोई महाअसुर उधर घूमता हुआ आ निकला। वह अत्यंत बलवान तथा मायावी था। वह बाल विधवा तपस्विनी के रूप पर मोहित हो गया। काम से अन्धे हो उसने तपस्विनी को नाना प्रकार के प्रलोभन दिये। तब उससे रक्षा पाने हेतु तपस्विनी ने शिव को स्मरण किया। यह देख पापी अधिक क्रोध में आ गया। उसने भयंकर रूप दिखाया। तब ब्राह्मणी डर के मारे शिवलिंग से चिपट गई तथा अपने धर्म की रक्षा के लिए शिव को पुकारने लगी। उसी लिंग से भगवान् प्रकट हो गए तथा त्रिशूल द्वारा पापी असुर को भस्म कर दिया। तब सौम्य रूप में ब्राह्मणी को दर्शन देते हुए बोले—हे तपस्विनी मैं तुम पर प्रसन्न हूं। जो चाहे वर मांगो। यह सुन भगवान् शंकर के रूप पर मुग्ध हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगी तथा कहा कि अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तो पार्थिव लिंग में आप हमेशा विराजमान रहें तथा मेरी भक्ति आप में दृढ़ रहे। भगवान् ने प्रसन्न हो कहा कि तेरी अभिलाषा पूर्ण होगी। आकाश से देवों ने भी ब्राह्मणी को आशीर्वाद दिया। तभी पतित पावनी गंगा भी आकर बोली—हे कल्याणी मैं भी प्रतिज्ञा करती हूं कि प्रति वर्ष वैशाख शुक्ल की पंचमी के दिन यहां आया करूंगी। क्योंकि जहां शिव का सदा के लिए निवास हो जाए वहां मेरा आना परमावश्यक है। उसी दिन से यह तीर्थ संसार में नंदीकेश्वर के नाम से विख्यात हुआ है। तीर्थ में स्नान से ब्रह्महत्या के घोर पाप भी नष्ट हो जाते हैं तथा शिवपद की प्राप्ति होती है।

आठवां अध्याय

(कपिला नगरी में महासिद्धेश्वर लिंग की महिमा का आख्यान। इस लिंग में साक्षात शिव का निवास।)

सूत जी बोले—हे ऋषियो! अब पश्चिम दिशा के सदाशिव के पार्थिव लिंगों का वर्णन करते हैं। कपिला नगरी में कालरामेश्वर नामक शिव लिंग है। पश्चिमी समुद्र की ओर सिद्धेश्वर नामक पार्थिव लिंग है। समुद्र के किनारे गोकर्ण नामक क्षेत्र में स्नान करने से ब्रह्महत्या नामक पापों का भी नाश हो जाता है। हे मुनियो महाबली गोकर्ण जो सातों रसातल एवं गुफाओं में भ्रमण करते हैं वे कलिकाल के लगने पर कुछ-कुछ लय को प्राप्त हो जायेंगे। फिर अपने पराक्रम से शिव पूजन कर शिव रूप को प्राप्त करेंगे। इस गोकर्ण तीर्थ में सभी नक्षत्र शिव रूप हो जाते हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, वसु, चंदा, सूर्य एवं नक्षत्र अपने-अपने वाहनों पर चढ़ उसके पूर्व की ओर भ्रमण करते हैं। यमराज, चित्रगुप्त, काल अग्नि, पितर अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विभूतियों के साथ दक्षिण की ओर भ्रमण करते हैं। सागरपति वरुण देव गंगा, सिन्धु आदि नदियों के साथ पश्चिम की ओर भ्रमण करते हैं। कुबेर, भद्रकाली, भूत, चंडिका आदि को साथ ले भवानी उत्तर की ओर भ्रमण करते हैं। सारे देव, देवता, गंधर्व, चारण, सिद्ध, विद्याधर, किन्नर, किंपुरुष, गुह्यक, खग, वेताल, पिशाच, बलि, दिति के पुत्र दैत्य, सर्पगण तथा मुनि-गण आदि सभी सदाशिव के पवित्र दर्शन करके अपनी सभी कामनाएं पूर्ण करते हैं। वहां महाबली सदाशिव की मूर्ति प्रत्यक्ष रूप से मोक्ष दायिनी है। यहां पर हर एक वर्ष में माघ कृष्ण पक्ष की चर्तुदशी के दिन सदाशिव का पूजन होता है। इसके पूजन से एक चांडाली के पाप समाप्त हो गए तथा वह परम पद को प्राप्त हुई।

नवां अध्याय

(चांडाली की मुक्ति का आख्यान। कामासक्तता से दग्ध चांडाली द्वारा शिव के स्मरण मात्र से शिवलोक तथा परम पद को प्राप्त करना।

सूतजी बोले--वह चांडाली पूर्व जन्म में एक ब्राह्मण कन्या थी। विवाह के योग्य होने पर पिता ने एक श्रेष्ठ ब्राह्मण से उसका विवाह कर दिया। विवाह होते ही वह विषय विलास में पड़ गई तथा अत्यधिक विलास से उसने अपने पति को रोगी बना दिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। विधवा होने पर भी उसकी भोग लालसा समाप्त न हुई। अपनी कामाग्नि को बुझाने हेतु वह वेश्या बन गई। यह देख उसके परिवार वाले उसे मारते पीटते निर्जन वन में छोड़ आये। घूमते-घूमते वह अत्यन्त शूद्र के दरवाजे पर पहुंच गई। वह उस पर कामासक्त हो गया। उसे तो यही चाहिये था। वह उसकी पत्नी बन वहीं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रहने लगी तथा माँस मदिरा का भक्षण करने लगी। एक लड़की को जन्म भी दिया।

एक दिन वह शूद्र कहीं बाहर गया था तो उस स्त्री को मांस खाने की इच्छा हुई। उसने मद्यपान किया तथा हाथ में नग्न तलवार लिए मेढ़े को मारने निकली। परन्तु पास में ही गाय बंधी हुई थी। रात का समय था, मद्यपान के कारण उसे पूर्ण होश भी न था। उसने मेढ़े के स्थान पर बछड़े को काट डाला। घर आकर उसे पहचान हुई। पश्चाताप भी हुआ। पर माँस खाने की प्रबल इच्छा के कारण उसे भून कर खा गई। समय पाकर जब वह मृत्यु को प्राप्त हुई। यमराज ने उसे गौ हत्यारी समझ कर अनेक प्रकार की यातनायें नरक में दीं। उसके बाद उसका जन्म किसी शूद्र चांडाल के घर हुआ। उस नरकागत चांडाली को भयंकर कोढ़ हो गया तथा वह जन्मी भी अन्धी थी। कोढ़ के कारण कोई भी पास न फटकता था। वह भूखी-प्यासी भटकने लगी। एक दिन उसने कुछ यात्रियों को देखा तो खाने के लिए मांगा। उस समय वे सदाशिव के बारे में बातें कर रहे थे कि माघ कृष्ण चतुर्दशी को शिव का दर्शन अवश्य करना चाहिये। यह सुन चांडाली ने भी शिव दर्शन का निश्चय किया। भीख मांगती-मांगती वह गोकर्ण तीर्थ पर पहुंच गई तथा माघ चतुर्दशी की प्रतीक्षा करने लगी। जब एक दिन बाकी रह गया तो भूखी-प्यासी एक बनिये के द्वार पर पहुंची। उस समय बनिये के हाथ में बैल मंजरी थी। भिखारिन की आवाज सुन बनिये ने उसकी झोली में मंजरी उलट दी। भिखारिन ने दुःखी होकर वह मंजरी दूर फेंक दी जो सीधे जाकर महाबल सदाशिव के लिंग के ऊपर गिरी।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उस मंजरी के सदाशिव के मस्तक पर लगने की देर थी कि उसके सारे पाप नष्ट हो गए। माघ कृष्ण चतुर्दशी का शुभ दिन भी आ पहुंचा। किसी के द्वारा भिक्षा न देने पर उसका चतुर्दशी का निराहार व्रत भी पूर्ण हो गया। भूख के कारण रात भर जगती रही तो जागरण भी पूर्ण हो गया। भगवान सदाशिव उस पर प्रसन्न हो गए। उसे आत्म शान्ति प्राप्त हुई। शिव इच्छा से उसकी मृत्यु उसी दिन हो गई तथा वह शिव लोक को प्राप्त हो गई। सूतजी बोले—ऋषियो अगर भूल से भी कोई सदाशिव का दर्शन तथा पूजन कर ले तो उसके सारे पाप धुल जाते हैं फिर अगर भक्ति भाव से महाबल सदाशिव की अर्चना करने से मोक्ष का पद प्राप्त होता है।

दसवां अध्याय

(मित्रसह का महाबल सदाशिव की आराधना तथा भवसागर से छुटकारा प्राप्त करना।)

सूत जी बोले—हे ऋषियो! इक्ष्वाकु कुल में मित्रसह नामक धनुष धारी अत्यन्त पुण्यात्मा राजा हुआ है। उसकी पति परायणा तथा पतिव्रता स्त्री का नाम दमयन्ती था। एक दिन जब राजा शिकार खेलने वन में गया तो उसने देखा कमठ नामक दानव महात्मा मण्डप जी को दुःख दे रहा है। राजा ने उसे बाण से मार दिया। उसका छोटा भाई राजा से बदला लेने का उपाय सोचने लगा। राजा लौटकर राज कार्य में लग गए। कमठ के छोटे भाई ने कपट का वेष बनाकर राजा के रसोइये की नौकरी प्राप्त कर ली। इस प्रकार राजा के घर कई दिनों बाद गुरु जयन्ती का पर्व आया। राजा ने गुरु वसिष्ठ को निमन्त्रण भेजा। तब उस कपटी ने अच्छा अवसर जान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

साग में मांस पकाकर वसिष्ठ जी के सम्मुख परोस दिया। गुरुदेव जान गए तथा एकदम क्रोध में आकर बोले—अरे पापी राजा! मुझे भी पापी बनाना चाहता है। देख तूने मुझे भोजन में मांस परोसा है। मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुम राक्षस हो जाओ। यह कहकर विचारने लगे कि इसमें राजा का तो कोई दोष नहीं। यह तो कपटी रसोइये दैत्य का काम है। तब बोले—हे राजन्! तुम्हारा अपराध नहीं तूने विचार कर रसोइये को नहीं रखा यह तो दैत्य है। मेरा शाप हट तो नहीं सकता पर तू बारह वर्ष राक्षस रहेगा। ऐसा कह गुरु जी चले गए। शाप वश राजा राक्षस बन गया तथा वन में चला गया और जीवों को मार-मार खाने लगा। एक दिवस उसने एक किशोर मुनि को देखा और पकड़ने दौड़ा। और पकड़कर खाने के लिए तैयार हो गया। मुनि पत्नी ने रोकर मुनि के प्राणों की भीख मांगी पर उसने एक न सुनी तथा मुनि को मारकर खा गया। मुनि पत्नी ने रो-रो पति की हड्डियां चुनीं तथा चिता में सती हो गई। सती होते-होते उसने शाप दिया—हे नीच राक्षस! तूने मेरा पति मार दिया है। जा तू भी कभी स्त्रियों के साथ विहार करने लगेगा तो उसी समय तेरी मृत्यु होगी। बारह वर्ष बाद राजा को अपना पहले वाला शरीर मिल गया। राजा ने घर पहुंच अपनी पत्नी को मुनि पत्नी का शाप सुनाया। उसकी पत्नी रति इच्छा रखते हुए भी उसे अपने पास न आने देती थी। सन्तान हीन राजा अति दुःखी हो गया। एक दिन सब छोड़ वन में निकल गया। रास्ते में भयानक रूप वाली ब्रह्म हत्या ने उसको देख लिया तथा उसके पीछे पड़ गई। राजा अत्यन्त व्याकुल हो गया। इतने में परम पवित्र मुनि गौतम को

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

राजा के दर्शन हो गए। राजा दौड़कर मुनि के चरणों में जा गिरा तथा सारा हाल कहकर उनसे रक्षा की प्रार्थना करने लगा। गौतम मुनि को दया आ गई। वे बोले—राजन्! पश्चिमी समुद्र के मध्य में गोकर्ण नामक तीर्थ में सदाशिव का ज्योतिर्लिंग है तुम उसी तीर्थ पर जाकर शिव अर्चना तथा स्नान कर इस ब्रह्म हत्या के पाप से छुटकारा पाओ। हे ऋषियो राजा ने ऐसा ही किया तथा पापों का नाश कर शिवलोक में परम पद को प्राप्त किया।

ग्यारहवां अध्याय

(पशुपति नाथ शिवलिंग का आख्यान तथा पृथ्वी पर चारों दिशाओं में स्थित शिवलिंग की महिमा का वर्णन।)

सूत जी बोले—हे ऋषियो! अब मैं उत्तर दिशा के शिव ज्योतिर्लिंगों की महिमा सुनाता हूं। एक और भी गोकर्ण नामक तीर्थ है। जो सम्पूर्ण पापों का नाशक महा पवित्र स्थान है। वहां रमणीक महावन में शिव का चन्द्रभाल नामक ज्योतिर्लिंग है जिसे रावण ने स्थापित किया था। इसी प्रकार अन्य भी ज्योतिर्लिंग हैं। मिश्रर्षि नामक सुन्दर तीर्थ है उसमें ऋषि दधीचि द्वारा स्थापित दधीचेश्वर नामक ज्योतिर्लिंग है। नैमिष नामक तीर्थ में सारे ऋषियों द्वारा स्थापित ऋषिश्वर नामक ज्योतिर्लिंग है। इसके दर्शन मात्र से पातकों के पाप नष्ट हो जाते हैं। हत्या हरण नामक पवित्र तीर्थ में अघापह नामक शिव लिंग है। नेपाल नगर में सब प्रकार के मनोरथ देने वाला तथा केवल सिर का ही दर्शन देने वाला पाशुपति नामक ज्योतिर्लिंग है। इनके समीप ही भोग मोक्ष देने वाला मुक्ति-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नाथ नामक शंकर का ज्योतिर्लिंग है। हे ऋषियो इस प्रकार पृथ्वी के चारों ओर शिव के लिंग ही लिंग विद्यमान हैं जिनके वृत्तांत को मैंने अभी तुम्हें सुनाया है।

बारहवां अध्याय

(सदाशिव भगवान् द्वारा लिंग रूप धारण करने का कारण तथा भोग और मोक्ष की प्राप्ति का उपाय।)

ऋषिगणों ने प्रश्न किया कि श्री पार्वती जगत माता शिव प्रिया बाण रूप हैं। उसका प्रयोजन और कारण क्या है। यह सुन सूत जी बोले—हे मुनिवर! सुनिये प्राचीन समय की बात है। दारुक नामक वन के समीप भगवान् शिव का शिवालय है वहां शिव भक्त तीनों काल प्रार्थना किया करते हैं। एक समय जब प्रेम से पाठ हो रहा था तो बहुत से ऋषि सघन वन में समिधा लाने पहुंचे। उस समय भक्तों की परीक्षा हेतु भगवान् ने विकराल रूप धारण कर लिया। नग्न होकर कामी पुरुषों की भांति हाथ में लिंग धारे वहां पहुंचे। उनके इस रूप को देख ऋषि पत्नियां भी कामवश हो गईं तथा परस्पर आलिंगन करने लगीं। इतने में ऋषि वहां पहुंच गये। उन्होंने देखा यह स्त्रियों का आचरण दूषित करने वाला कौन है? अपनी स्त्रियों के प्रति उन्हें बड़ा क्रोध आया। वे उस विकराल पुरुष से उसका परिचय पूछने लगे। इस प्रकार बार-बार पूछने पर भी जब उस दिगम्बर ने उत्तर न दिया तो क्रोध में आकर ऋषि उसके कार्य को अनुचित ठहराने लगे। तुमने वैदिक धर्म का लोप किया है इसलिए हम शाप देते हैं कि तुम्हारा लिंग पृथ्वी पर गिर पड़े। ऋषियों के ऐसा कहते ही भगवान् शिव का लिंग पृथ्वी पर गिर पड़ा तथा प्रज्ज्वलित अग्नि की भांति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इधर उधर भ्रमण करता जीव तथा जन्तुओं को पीड़ित करने लगा। ऐसा देख समस्त ऋषि घबरा गए तथा ब्रह्मा जी के पास पहुंच सारा हाल कहा। तभी ब्रह्मा जी समझे कि ये सभी ऋषि भगवान् शंकर की माया से मोहित हो गये हैं। वे बोले—हे ऋषियो! यह तुमने शंकर जी के साथ वैर मोल लेकर अच्छा नहीं किया है। मनुष्य मात्र का धर्म है कि मध्यान्ह काल में घर में आये अतिथि का समुचित सत्कार करे। अन्यथा वह पाप का भागी होता है। अब जब तक शिवजी का लिंग एक जगह स्थापित नहीं हो जाता इसी तरह उपद्रव होते रहेंगे। संसार के हित के लिए शंकर के ज्योतिर्लिंग का चिन्तन करो और उस लिंग की स्थापना के लिए सर्व प्रथम जगदम्बा पार्वती की स्तुति करो। तुम्हारी प्रार्थना पर पार्वती योनि रूप हो जाएं तो उसके बाद भगवान् शंकर जी प्रसन्न होकर उस योनि में स्थिर हो जाएं तब जाकर विश्व का कल्याण होगा। इसलिए तुम माता पार्वती को प्रसन्न करने हेतु अष्ट दल की रचना करो तथा शास्त्रानुसार उस पर घट स्थापित करो। फिर उसे दूर्वा के साथ पवित्र तीर्थ जल से भरो। सदाशिव का ध्यान करके उसकी विधि पूर्वक पूजा करो। उसके बाद शतरुद्री मंत्रों का पाठ करते-करते उसी कलश जल से लिंग को स्नान कराओ तथा अर्चना आदि करके शांत करो। फिर योनिरूप पार्वती को बाण रूप से स्थापित कर उसी पर सदाशिव के ज्योतिर्लिंग को स्थापित कर दो। इसके बाद चदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि षोडषोपचार पूजन द्वारा शंकर को प्रसन्न करते हुए प्रणाम, स्तोत्र, पाठ, स्तुति आदि करो। तब जाकर संसार का मंगल होगा। सूत जी बोले इस प्रकार ब्रह्म आज्ञा के अनुसार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ऋषियों ने जाकर मातेश्वरी पार्वती तथा भगवान् शंकर की विधि पूर्वक आराधना तथा पूजा की। तब पार्वती प्रसन्न हो योनि रूप हुईं और उस पर ज्योतिर्लिंग स्थापित किया गया तथा विश्व में शान्ति हुई। वही ज्योतिर्लिंग संसार में हाटकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस ज्योतिर्लिंग के अर्चन आराधना से इस लोक तथा परलोक के सभी सुख प्राप्त होते हैं।

तेरहवां अध्याय

(बटुकनाथ का अवतरण तथा भगवान् सदाशिव तथा अन्धक का भीषण संग्राम।)

सूतजी बोले—हे ऋषियो! सुनो पूर्वकाल में अन्धक नामक एक दानव हुआ है जो समुद्र के किसी गड्ढे में रहता था तथा महाबली था। उसने अपने पराक्रम से सारे विश्व को दुःखी कर रखा था। तब देवताओं ने भगवान शंकर को अनेक प्रकार से प्रसन्न कर अपना दुःख सुनाया। तब शिव ने कहा कि मैं अवश्य तुम्हारी सहायता करूंगा। तुम सेना लेकर युद्ध करने चलो मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे आता हूं। तब देव सेना को जान वह दैत्य उस गड्ढे से निकल आया तथा उनके साथ भयानक युद्ध किया। युद्ध में अन्धकेश्वर पीड़ित हुआ और अपने गड्ढे में छिप गया। तब शंकर जी ने उस गड्ढे में अपना त्रिशूल बांध दिया। उस त्रिशूल से छटपटाते हुए वह दानव बोला—हे सदाशिव मैंने सुना था कि मरते समय आपके दर्शन से मुक्ति मिल जाती है। मैं भी आपके दर्शन से कृतार्थ हो गया। भगवान् शिव उससे प्रसन्न हो गए तथा वर मांगने के लिए कहा। तब उस दानव ने अविचल भक्ति मांगी। दूसरा आपका इस स्थान पर निवास हो। इस प्रकार दानव के वचनों में बंधे शिव वहीं ज्योतिर्लिंग के लय में स्थित हो गए। सूतजी बोले—इस ज्योति-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लिंग का लगातार छः मास तक पूजन करने पर सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। वहां यथामति देवलोक भी हो जाता है। तब ऋषियों ने देवलोक के बारे में पूछा। तब सूतजी बोले—सुनो। प्राचीन काल में दधीचि नामक विप्र हुए हैं। वे वेदों के ज्ञाता तथा परम शिव भक्त थे। उनके पुत्र का नाम सुदर्शन था। वह भी पिता के समान सर्व गुण सम्पन्न था। किन्तु उसकी पत्नी उच्च कुल की नहीं थी तथा उसका नाम टुकूला था। उसने आते ही पति को अधीन कर लिया। उसके चार पुत्र हुए। एक दिन दधीचि ने अपनी जाति वालों से मिलने किसी गांव में जाना था। उसने पुत्र को बुलाकर कहा—कि मुझे कुछ कार्य है तुम भगवान शिव का पूजन करो। वहां जाति वालों के आग्रह से उन्हें रुकना पड़ा। इधर सुदर्शन शिव पूजन करता रहा। कुछ समय बीत जाने पर शिव रात्रि का पर्व आ गया। सुदर्शन ने दिन को उपवास किया तथा भगवान शंकर की विधिवत पूजा की। कार्यवश दिन में उसे घर जाना पड़ा। वहां उसे पत्नी ने कामवश कर लिया। विलास के बाद वह बिना शरीर शुद्धि के शिव मन्दिर में पहुंच शिव का पूजन करने लग गया। शिव तो अन्तर्यामी हैं बोले—हे अज्ञानी मूर्ख! शिवरात्रि के महा पर्व पर भी तूने अशुद्ध होकर पूजन किया है इसलिए मैं शाप देता हूं कि तू मूर्ख हो जा। शाप के कारण सुदर्शन पागलों जैसी जड़मति वाला हो गया। कुछ समय बाद जब पिता दधीचि लौटे तो उन्हें सारा हाल मालूम हुआ। वे सिर पीट कर रह गए कि पुत्र ने कुल का नाश करा दिया। तब विचार कर जगदम्बा की आराधना करने लगे। विधि पूर्वक आराधना से जगदम्बा संतुष्ट हुईं। तब दधीचि की प्रार्थना से जगदम्बा ने भगवान शंकर से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कहा कि यह सुदर्शन तो मेरा पुत्र है। यह कह उसे नया जनेऊ पहना कर सोलह अक्षरों वाली शिव गायत्री की दीक्षा दी। तब सुदर्शन ने उस मन्त्र का कठोर जाप किया तथा शिव को प्रसन्न किया। शिव ने दर्शन देकर कहा कि अब मैं तुमसे प्रसन्न हूं। मेरी तुम पर पूर्ण कृपा है। मेरे में समर्पण किये धन, धान्य, घृत, तेल सभी पदार्थ तेरे लिए हैं। इन सबका उपभोग तुम कर सकोगे। तुम निरन्तर स्नान करने वाले त्रिपुण्ड, तिलकधारी शिव संध्या, गायत्री जपन कर्त्ता हो जाओ। मैंने तुम्हारे सभी अपराध क्षमा कर दिये। यह कह भगवान् शिव ने सुदर्शन तथा पुत्रों का बटुक रूप में अभिषेक किया तथा कहा—हे पुत्रो! तुममें जो भी मेरा पूर्ण रूप बटुक होगा वह विजय पाकर संसार में पूज्य होगा। संसार में तुम्हारे पूजन करने वाले का अपना पूजन मानूंगा। तुम लोग अपने-अपने कार्यों में लगे रहो। इस प्रकार सुदर्शन ने अपने पुत्रों सहित वरदान प्राप्त किया। इस लिए शुभ एवं अशुभ दोनों कर्मों में बटुक पूजने चाहिए।

चौदहवां अध्याय

(सोमेश्वर नाथ की उत्पत्ति तथा उसके दर्शन मात्र से मुक्ति तथा भक्ति की प्राप्ति।)

सूत जी बोले—भगवान् शिव के जितने भी ज्योतिर्लिंग हैं, उनमें सोमेश्वर प्रसिद्ध है तथा मुख्य है। अब आप उनकी महिमा को सुनो। चन्द्रमा को दक्ष प्रजापति की सत्ताईस पुत्रियां पत्नी रूप में प्राप्त हुईं। उसका रोहिणी से अधिक प्रेम था। बाकी स्त्रियां दुःखी होकर पिता के पास पहुंचीं तथा अपना दुःख सुनाया। यह सुनकर दक्ष चन्द्रमा के पास पहुंचे तथा उन्हें समझाने लगे कि उत्तम वंश में उत्पन्न हो उन्हें इस प्रकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विषमता नहीं करनी चाहिए। पर चन्द्रमा ने दक्ष की बात पर ध्यान नहीं दिया। उसकी पुत्रियां फिर उसके पास पहुंचीं तो दक्ष ने चन्द्रमा को शाप दिया कि तुम क्षीणता को प्राप्त हो जाओ। चन्द्रमा मलीन तथा क्षीण हो गया तथा अपना दुःख देवताओं को कहा। जिन्होंने ब्रह्मा जी को सब वृत्तांत कह सुनाया। सुनकर ब्रह्मा जी बोले—ये चन्द्रमा महा दुष्ट है पहले गुरु पत्नी तारा को भगा ले गया, फिर दैत्यों के पास पहुंच गया तथा उनमें और देवों में युद्ध करा दिया। इस प्रकार चन्द्रमा अपनी दुष्टता तो छोड़ता नहीं इसके लिए मुझे कुछ मत कहो। हां तुम्हारे कहने से यह उपाय बताता हूं कि वह प्रभाष नामक तीर्थ पर जाकर भगवान् शंकर का पूजन करे। मृत्युंजय जप करे तो प्रसन्न हो शंकर अवश्य उसका मंगल करेंगे। ब्रह्मा की बात सुन ऋषि तथा देवता चन्द्रमा के पास गए फिर उसे लेकर प्रभाष नामक तीर्थ पर गए। सरस्वती आदि तीर्थों का आवाहन कर मृत्युंजय विधान के साथ भगवान् शंकर का पूजन कराया। दस करोड़ तक मृत्युंजय जपन किया गया तो प्रसन्न हो शंकर ने चन्द्रमा को दर्शन दिये तथा इच्छित वर मांगने के लिए कहा। चन्द्रमा ने अपना क्षय रोग दूर होने का वर माँगा। शिवजी ने कहा कि प्रजापति दक्ष का शाप दूर तो नहीं हो सकता। पर कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिनों तक तेरी कलायें क्षीण होती रहेंगी तथा शुक्ल पक्ष के पन्द्रह दिनों तक बढ़ती रहेंगी। भगवान शंकर के इस वर से चन्द्रमा तथा देवता बहुत ही प्रसन्न हुए तथा हाथ जोड़कर भगवान् से प्रार्थना की कि वे पार्वती तथा शंकर के साथ वहीं निवास करें। तब शिव पार्वती सहित वहीं विराजे तथा सोमेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। सब

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देवताओं ने मिलकर एक कुंड भी वहां बनाया जिसका नाम चन्द्र कुंड पड़ा। इस कुंड में स्नान से सभी पाप निवृत्त हो जाते हैं।

पन्द्रहवां अध्याय

(यह जानकर कि श्री स्वामी कार्तिक तथा श्री गणेश जी में से उसका विवाह पहले होगा, जो पृथ्वी की परिक्रमा करके पहले भगवान् शिव और श्री पार्वती जी के पास पहुँचेगा। स्वामी कार्तिक का पृथ्वी की परिक्रमा के लिए जाना और श्री गणेशजी ने वेद आज्ञा मानकर भगवान् शिव तथा पार्वती जी की परिक्रमा करके अपने आप को विजयी सिद्ध करना। स्वामी कार्तिक का क्रुद्ध होना।)

सूत जी बोले—हे मुनिवर्य! अब आप लोग मल्लिकार्जुन शिवलिंग की उत्पत्ति की कथा सुनिये। श्री पार्वती जी के बड़े पुत्र स्वामी कार्तिक तथा श्री गणेश जी को भगवान् सदा शिव की आज्ञानुसार सर्व प्रथम विवाह करने की बात को ध्यान में रखकर पृथ्वी की परिक्रमा करनी थी। स्वामी कार्तिक अपने वाहन पर पृथ्वी की परिक्रमा के लिए चल दिये। लेकिन श्री गणेश जी ने इस बारे में वेद भगवान् की आज्ञा मानना उचित समझा और भगवान् सदा शिव तथा मां पार्वती की सात परिक्रमायें करके अपने को पृथ्वी की परिक्रमा करने वालों में विजयी सिद्ध कर लिया। चुनांचि वेद आज्ञा मानकर भगवान् सदाशिव और भगवती पार्वती ने श्री गणेशजी का विवाह स्वामी कार्तिक के विवाह से पहले कर दिया। इस पर स्वामी कार्तिक के क्रोध का वार-पार न रहा और वह क्रोध में भर कर, माता-पिता के रोकने पर भी क्रौंच पर्वत पर चले गये। उनके जाने के पश्चात् श्री शिवा पुत्र-विरह से बहुत ही दुःखी रहने लगीं। उनको इस प्रकार दुःखी देखकर भगवान् सदा शिव श्री पार्वती जी को साथ लेकर स्वामी कार्तिक को मनाने के लिए क्रौंच

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पर्वत पर गये। उनका आना सुन कर स्वामी कार्तिक उस पर्वत से सौ योजन दूर चले गये। उनके आगे जाने के बारे में सुनकर भगवान् सदा शिव पार्वती के साथ ज्योतिर्लिंग रूप हो कर वहीं पर बस गये। वह ज्योतिर्लिंग मल्लिकार्जुन के नाम से प्रसिद्ध है। जिसके दर्शन, पूजन तथा आराधना से मनुष्य की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं और उसके पाप-ताप मिट जाते हैं।

सोलहवां अध्याय

(अवन्तिकापुरी पर दूषण नामक दैत्य का चढ़ाई करना और वहां की प्रजा को अत्यन्त दुःखी करना। एक शिवोपासक ब्राह्मण का भगवान सदाशिव की तपस्या करना। भगवान सदाशिव का महाकाल के रूप में प्रकट होकर दूषण और उसकी सेना को मार डालना।)

श्री सूत जी बोले—हे मुनियो! अब मैं आप लोगों को महा काल भगवान ज्योतिर्लिंग की उत्पत्ति की कथा सुनाऊंगा। ध्यान पूर्वक सुनिये। अवन्ती नाम के नगर में एक वेदपाठी सदाचारी और भगवान सदाशिव के भक्त ब्राह्मण रहते थे। वह नित्य प्रति नियम पूर्वक तथा विधिवत भगवान श्री सदा शिव की पार्थिव मूर्ति का पूजन किया करते थे। उनके यहां देवप्रिय, प्रियमेधा, सुकृत और धर्मबाहु नाम के चार पुत्र थे। उन चारों पुत्रों में अपने पिता के सभी गुण विद्यमान थे। वह चारों भगवान सदाशिव के परम उपासक थे। अवन्ती नगर के समीप ही रत्नमाल पर्वत था। उस पर्वत पर दूषण नाम का एक राक्षस रहता था। उसने अपनी तपस्या द्वारा श्री ब्रह्मा जी से वर पाकर संसार को अत्यन्त दुःखी कर दिया था। उसने सभी देवताओं को स्वर्ग में से निकाल दिया था। वेद धर्म एवं स्मृति धर्म को पूर्ण रूपेण नष्ट कर दिया था। तीर्थों पर भी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उसने बड़ा ऊधम मचा रक्खा था। एक अवन्ती नगर ही ऐसा था जो कि अभी तक उसकी दृष्टि से बचा हुआ था। लेकिन एक दिन वह उस नगर पर भी अपनी सेना के साथ आन चढ़ा। उसने अपने चार सैनिकों से कहा—"वह शिवोपासक ब्राह्मण मेरी आज्ञा नहीं मानते। मैंने उनको दण्ड देना है। तुम लोग उनके पास जाओ और उनको कहो कि वह शिव पूजा छोड़ देवें और वैदिक धर्म भी छोड़ देवें। यदि वह मेरी आज्ञा न मानें तो तुम उन लोगों को भारी दण्ड दो। और समाप्त कर डालो।" दैत्य नगर में गए और प्रजा को पीड़ा देने लगे। लोग अत्यन्त दुःखी होकर उस शिवोपासक के पास पहुंचे और उसको दैत्यों के आगमन तथा पीड़ा देने के सम्बन्ध में कहा। उसने कहा—देखो मेरे पास न तो कोई अस्त्र-शस्त्र ही है और न ही मैं इतना बलवान हूं जो कि उन दैत्यों को दण्ड दे सकूं। हां आप लोगों से इतना जरूर कह सकता हूं कि भगवान सदाशिव हम सबकी रक्षा करेंगे। अब वह ब्राह्मण अपने चारों पुत्रों सहित शंकर भगवान की आराधना में लग गए। इतने में वह चारों दैत्य हा-हू करते हुए उन ब्राह्मणों के पास पहुंच गए। उसको अपने स्वामी का संदेश दिया और साथ ही मार डालने की धमकी भी दी। ब्राह्मणों ने उनकी बात सुनी अनसुनी कर दी। इस पर दैत्यों को ताव आ गया और वह उस शिवोपासक ब्राह्मण तथा उसके चारों पुत्रों को मारने के लिए लपके। ज्यों ही वह आगे बढ़े वैसे ही भगवान सदाशिव के स्थान पर शब्द के साथ एक गर्व हो गया। उस गर्व में से भयंकर "महाकाल शिव" प्रकट हुए और केवल अपनी हुंकार ही से दूषण तथा उसके सैनिकों को भस्म कर डाला। आकाश से पुष्प वर्षा हुई

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी देवों ने भगवान सदाशिव की स्तुति की। ब्राह्मण तथा उसके पुत्रों की भक्ति व प्रेम को देखकर भगवान सदाशिव ने उनसे वर मांगने के लिए कहा। तब उस शिवोपासक ब्राह्मण ने प्रार्थना की—आप अवन्तिका पुरी की रक्षा के लिए यहां पर ही विराजिये। भगवान सदाशिव ने उस ब्राह्मण तथा उसके पुत्रों को मुक्ति का वरदान दिया और स्वयं अवन्तिका पुरी की रक्षा के लिए वहां पर ही विराजमान हो गए। तभी से भगवान सदाशिव का नाम "महाकाल" प्रसिद्ध है।

सत्रहवां अध्याय

(उज्जयन नगरी के महाराजा चन्द्रसेन को महाकालेश्वर का पूजन करते देखकर एक गोप बालक का उनका अनुकरण करना। महाकालेश्वर भगवान् सदा शिव का प्रसन्न होकर गोप बालक को दर्शन देना। हनुमान जी का प्रकट होकर सब को बतलाना कि इस गोप बालक के कुल में भगवान् श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज अवतार लेंगे।)

सूत जी बोले—हे ऋषियो! श्री महाकालेश्वर की उत्पत्ति की पवित्र व पावन कथा तो मैंने आप लोगों को सुना दी है। अब आप महाकालेश्वर की पवित्र महिमा सुनिये। उज्जयन नगरी में चन्द्रसेन राजा राज्य करते थे। राजा चन्द्रसेन की भगवान् सदा शिव के एक मुख्य सेवक मणिभद्र के साथ घनी मित्रता थी। एक बार मणिभद्र राजा चन्द्रसेन पर अत्यन्त प्रसन्न हो गये और प्रसन्न होकर उन्होंने अपनी सूर्य के समान चमकती हुई कौस्तुभ मणि उनको प्रदान कर दी। बस फिर क्या था, राजा उस मणि को अपने गले में धारण करके सूर्य के समान चमकने लगा। उस मणि को राजा के पास देखकर अन्य राजे-महाराजे मन से ईर्ष्या करने लगे। और विविध उपायों से उसे हड़प करने की चेष्टा करने लगे। उन्होंने राजा के पास

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आकर वह मणि माँगी भी मगर राजा ने उनको ऐसी झाड़ डाली कि वह अपना-सा मुंह लेकर रह गए। मगर मणि हथियाने की अपनी कोशिशों में उन्होंने किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी और उन लोगों ने अपनी-अपनी सेना लेकर राजा पर चढ़ाई कर दी। महाराजा चन्द्रसेन यह देखकर भगवान महा कालेश्वर के चरणों में गिर पड़ा। ठीक उस समय वहां पर एक गोपी आई जिसकी गोद में पांच वर्ष का एक बालक था। गोपी विधवा थी। गोपी और उसका बालक दोनों वहाँ बैठकर राजा चन्द्रसेन को शिव पूजन करते हुए देखने लगे। शिव पूजन को भली प्रकार देखकर गोपी अपने बालक को लेकर अपने घर वापिस लौट आई। उस पांच वर्ष के बालक के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि जिस प्रकार राजा भगवान सदाशिव का पूजन करता था, उसी तरह भला मैं क्यों न करूं? बस फिर क्या था वह कहीं से एक पत्थर ढूंढ लाया और उसे घर में स्थापित करके गन्ध, पुष्प, धूप, नैवेद्य का मन में विचार करके ठीक राजा की तरह भगवान कालेश्वर का पूजन करने लगा। इतने में गोपी ने स्नेह करके उसे भोजन के लिए बुलाया परन्तु बालक तो शिव पूजन कर रहा था माता को क्या मालूम था कि बालक क्या कर रहा है। बालक ने माता का बुलाना सुना ही नहीं। तब माता बालक के लिए स्वयं पहुंची तो देखा कि बालक आँखें बन्द किये आसन पर बैठा है। गोपी ने उसे पकड़कर खींच लिया और उसे फटकारने लगी बालक के सामने रखे हुए पूजा के पत्थर को उठाकर कहीं फेंक दिया और उसे खींचकर घर में ले गई तब तो वह पांच साल का बालक व्याकुल होकर शिव-शिव कहता हुआ दुःखी होकर पृथ्वी पर गिर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पड़ा और उसके होश जाते रहे। उसकी माता ने जब पुत्र की यह दशा देखी तो उसके भी होश जाते रहे। कुछ समय बीत जाने पर जब बालक को चेतना आई और उसने आंखें खोलीं तो उसने देखा कि मैं महाकाल भगवान के एक अत्यन्त सुन्दर मन्दिर में बैठा हूं। उसने देखा कि मन्दिर के ठीक मध्य में भगवान सदाशिव का रत्नमय ज्योतिर्लिंग स्थित है। यह देख कर बालक अत्यन्त प्रसन्न होकर मन ही मन भगवान सदाशिव को बार-बार प्रणाम करने लगा। इसके पश्चात वह भगवान सदाशिव का ध्यान करता हुआ अपने घर को लौटा। वह यह देखकर आश्चर्य चकित रह गया कि अब उसके छोटे से मकान के स्थान पर एक गगन चुम्बी अट्टालिका खड़ी है। फिर उसने मां की ओर देखा वह बहुमूल्य गहने पहने हुए एक रत्न जड़ित पलंग पर सो रही थी। बालक ने मां को जगाया और भगवान सदाशिव की कृपा का सारा हाल सुनाया। गोपी सारी कथा सुनकर प्रसन्न हो गई। उधर जब राजा का पूजन का नियम पूर्ण हो गया तो वह अपने मंत्री मंडल को साथ लेकर गोपी के घर पहुंचा और जब वहां जाकर उसने भगवान सदाशिव की कृपा का हाल देखा तथा सुना तो दंग रह गया। राजा ने गोपी के मकान पर बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया। प्रातः काल यह समाचार सारे नगर में फैल गया कि गोपी पर भगवान सदाशिव की विशेष कृपा हुई है। नगर के लोग गोपी के यहां भगवान सदाशिव के दर्शन करने के लिए आने लगे। वह राजे महाराजे जो राजा चन्द्रसेन के शत्रु थे उन्होंने भी राजा चन्द्रसेन पर भगवान सदाशिव की विशेष कृपा का हाल सुना। वह समझ गए कि राजा पर श्री सदाशिव की विशेष कृपा है अतः

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हमें उसे बिल्कुल न छेड़ना चाहिए। यदि हम उज्जैन नगर पर चढ़ाई करेंगे तो हमें मुंह की खानी पड़ेगी। महाराजा चन्द्रसेन भगवान महा कालेश्वर भगवान श्री सदाशिव का अत्यन्त भक्त है। अतः हम सबको उसके साथ मित्रता कर लेनी चाहिये। इसी में हम सबका कल्याण है। ऐसा विचार करके राजा चन्द्र-सेन के शत्रु राजे महाराजे शत्रुता त्याग कर गोपी के मकान पर भगवान महा कालेश्वर श्री सदा शिव के दर्शनों के लिए गये। वहां पर बालक की शिवभक्ति और ज्योतिर्लिंग देखकर सब को अपार आनन्द हुआ। फिर राजा चन्द्रसेन से सब ने मित्रता कर ली। फिर वहां पर महाबीर श्री हनुमान जी ने सब को दर्शन देकर आनन्दित किया। सब ने प्रेमपूर्वक उनका पूजन किया। हनुमान जी ने बालक को अपने गले से लगाया और राजाओं महाराजाओं तथा भक्त मंडल को सम्बोधित करके कहा—हे राजाओ तथा प्रभु भक्तो! सभी प्राणियों का कल्याण करने वाले तो भगवान सदाशिव हैं। देखिये इस गोपी के बालक ने केवल राजा चन्द्रसेन को पूजन करते हुये देखा था। उसने अपने घर आकर राजा की पूजा का अनुकरण किया। उसका फल क्या यह आप सब लोग अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देख रहे हैं। भगवान सदा शिव के पूजन से इस का परम कल्याण हुआ है। यह इस संसार के सब सुख भोगने के बाद, मोक्ष को प्राप्त होगा। इसके कुल में आठवां महाराज पुरुष होगा। उसका नाम नन्दन होगा और वह बड़ा पुन्यात्मा होगा। उसके घर में भगवान श्री विष्णु का अवतार होगा। उसके पुत्र भगवान श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज होंगे। आज से गोप कुमार का नाम "श्रीकर" प्रसिद्ध होगा। इतना कहकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

महाबीर श्री हनुमान जी अन्तर्ध्यान हो गए। राजा चन्द्रसेन ने सभी राजाओं महाराजाओं का सत्कार किया। उसके पश्चात सभी राजा-महाराजा अपनी राजधानियों को वापिस लौट गए। श्रीकर और महाराजा चन्द्रसेन ने अब विधि पूर्वक भगवान कालेश्वर का पूजन आरम्भ कर दिया। वह जब तक जीवित रहे इस संसार के सभी सुख भोगते रहे। अन्त में मोक्ष को प्राप्त हुए।

अठारहवां अध्याय

(श्री नारद जी का भगवान् शंकर का पूजन करना और पूजन के उपरान्त विन्ध्याचल पर्वत पर जाना। श्री नारद जी का विन्ध्या का अभिमान तोड़ना। विन्ध्या का भगवान् सदा शिव का पूजन करना। भगवान् का उसे दर्शन देकर मन चाहा वर प्रदान करना।)

श्री सूत जी बोले—हे ऋषियो! अब हम आप के सन्मुख परमेश नामक शिव ज्योतिर्लिग की कथा कहेंगे, ध्यान पूर्वक सुनिये। यह परमेश नाम का शिव ज्योतिर्लिग ओंकार नामक पवित्र तीर्थ में विराजमान है। कथा इस प्रकार है—प्राचीन काल में देव ऋषि श्री नारद ने गोकर्ण नामधारी भगवान् शंकर का पूजन किया था। पूजन के बाद वह विन्ध्याचल पर्वत पर गये। जहां पर कि विन्ध्या ने उनका भली प्रकार आदर सत्कार किया। फिर उनको अभिमान हो गया। देव ऋषि नारद ने कहा—यह हम मानते हैं कि सभी पर्वत तुम्हारे अन्दर व्याप्त हैं, लेकिन याद रहे कि सुमेरु पर्वत तुम्हारे अन्दर व्याप्त नहीं है और सुमेरु पर्वत सब पर्वतों में मुख्य है और तुम सब गुणों में सम्पन्न होने पर भी उसके सामने छोटे हो। विन्ध्या से इस तरह कह कर देव ऋषि नारद वहां से चले गये। नारदजी की बात से दुःखी होकर विन्ध्या अपने आप को धिक्कारने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लगा और कहने लगा कि मेरा तो जीवन ही व्यर्थ है। मैं तो निन्दा का पात्र हूं। अब मैं अपने सुधार के लिये भगवान शंकर की तपस्या करूँगा। इस प्रकार निर्णय करने के पश्चात् उसने ओंकारेश्वर के पास पहुंचकर भगवान् शंकर का पार्थिव लिंग बनाया। पार्थिव लिंग बनाने के बाद वह लिंग के सन्मुख बैठकर निरन्तर छः मास तक तप करता रहा। उसके तप से प्रसन्न होकर भगवान् सदाशिव ने प्रकट होकर उसको दर्शन दिये और उससे कहा—ऐ विन्ध्या! मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूं। मन चाहा वर मांगो। विन्ध्या ने भगवान् सदाशिव को साष्टांग प्रणाम करके कहा—हे प्रभो! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो मेरी बुद्धि को शुद्ध करके, श्रेष्ठ विचार प्रदान करें। यह सुनकर भगवान् सदाशिव ने कहा—हे विन्ध्या! तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। इसके बाद ऋषि महर्षि वहां पहुंचे और सबने भगवान् सदाशिव का पूजन किया और भगवान् श्री सदाशिव से प्रार्थना की—प्रभो! आप कृपा करके यहां विराजमान हों। भगवान् सदाशिव ने ऋषियों-महर्षियों की प्रार्थना स्वीकार कर ली और परमेश्वर के नाम से वहां पर विराजमान हो गये। और इसी नाम से प्रसिद्ध हुए। सूतजी बोले—हे विप्रगण! ओंकारेश्वर और परमेश्वर दोनों भिन्न नहीं हैं बल्कि एक ही हैं। यह दोनों स्वर्ग मोक्ष आदि के प्रदान करने वाले हैं। इसके बाद ऋषि-महर्षि मन चाहा वर पाकर वहां से विदा हो गये और विन्ध्या भी सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उन्नीसवां अध्याय

(भगवान् विष्णु के अवतार नर-नारायण का बद्रिकाश्रम में जाकर तप करना। भगवान् सदाशिव का प्रकट होकर वर मांगने के लिये कहना। नर-नारायण का भगवान् सदाशिव को श्री बद्रिकाश्रम में सदा-सदैव के लिये विराजमान होने के लिये कहना। भगवान् सदाशिव का उनकी प्रार्थना स्वीकार करना और बद्रिकाश्रम में केदारेश्वर के नाम से विराजमान होना। पाण्डवों को भगवान् सदाशिव के दर्शन होना और उनको मन चाहा वर प्राप्त होना।)

श्री सूत जी बोले—हे विप्रगण! आप लोग यह तो जानते ही हैं कि भगवान् श्री विष्णु के अवतार रूप श्री नर-नारायण ने श्री बद्रिकाश्रम में जाकर तपस्या की। भगवान् सदाशिव उनके पूजन को स्वीकार करते हुए नित्य ही पार्थिव लिंग के रूप में प्रकट होकर उनको दर्शन देते रहे। जब नर-नारायण को इस प्रकार पूजन करते हुए बहुत-सा समय व्यतीत हो गया तो भगवान् सदाशिव ने नर-नारायण को वर मांगने के लिए कहा। उनकी बात सुनकर नर-नारायण ने कहा—प्रभो! यदि आप प्रसन्न हैं तो फिर आप साक्षात् स्वरूप से यहीं पर विराजमान हो जायें। भगवान् श्री सदाशिव ने नर-नारायण की प्रार्थना स्वीकार कर ली और ज्योतिर्लिंग रूप से सदा सदैव के लिये वहीं पर विराजमान हो गये और संसार में केदारेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। वह लोग जो केदारेश्वर के दर्शन करते हैं तथा उनका पूजन करते हैं, भगवान् सदाशिव उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। एक समय पाण्डवों ने आपको महिषरूप में देखा। आप पाण्डवों को देखकर भाग खड़े हुए। पाण्डवों ने भी आपका पीछा किया और दौड़कर आपकी पूंछ पकड़ ली। और आपसे प्रार्थना की कि प्रभो! आप यहां पर सदा सदैव के लिये विराजमान हों आप वहां पर पाण्डवों की प्रसन्नता के लिये विराजमान हो गये। पाण्डवों ने विधिपूर्वक आपका पूजन किया जिससे कि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उनके सब दुःख दूर हो गये और उनको अपनी-अपनी इच्छानुसार वर की प्राप्ति हुई। श्रीसूतजी बोले—हे मुनीश्वरो! भगवान् सदाशिव सदा ही अपने भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण किया करते हैं। वह मनुष्य जो कि मोक्ष की प्राप्ति के इच्छुक हों, उनको भगवान् केदारेश्वर के दर्शन तथा उनका पूजन अवश्यमेव करना चाहिये।

बीसवां अध्याय

(कुम्भकर्ण के पुत्र भीम का भगवान श्रीविष्णु से अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए श्रीब्रह्माजी की तपस्या करना और उनसे मनचाहा वर प्राप्त करके संसार को पीड़ित करना। देवताओं का भीम के उपद्रवों से दुःखी होकर भगवान सदाशिव की शरण में जाना और उनसे भीम के उपद्रवों के सम्बन्ध में कहना। भगवान सदाशिव का उनको वचन देना कि मैं शीघ्र ही संकटों से तुम्हारी रक्षा करूंगा।)

श्रीसूतजी बोले—हे विप्रगण! अब मैं आपको भीम शंकर शिव की पवित्र कथा सुनाऊंगा। ध्यान पूर्वक सुनिये। एक समय रावण के छोटे भाई कुम्भकर्ण ने कर्कटी नामक राक्षसी से भीम नामक दानव उत्पन्न किया। उसके पश्चात भगवान श्री रामचन्द्रजी महाराज ने लंका पर चढ़ाई की थी। युद्ध में कुम्भकर्ण मारा गया था। उसकी मृत्यु के बाद उसकी पत्नी कर्कटी अपने पुत्र भीम को लेकर सह्य पर्वत पर चली गई थी। भीम जब जरा बड़ा हुआ तो उसने अपनी मां से पूछा—माता जी! आप इस पर्वत पर अकेली क्यों रह रही हो और मेरे पिताजी कहां हैं? इस पर कर्कटी ने कहा—तुम्हारे पिता महाबली रावण के छोटे भाई कुम्भकर्ण थे। उनसे पहिले मैं विराध राक्षस की पत्नी थी। विराध को भगवान श्री रामचन्द्रजी महाराज ने पहिले ही मार डाला था। विराध की मृत्यु से मैं अत्यन्त दुःखी हो गई थी। चुनांचि मैं अपने मायके चली गई।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लेकिन मेरे दुर्भाग्य ने वहां पर भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। एक दिन मेरे माता-पिता अगस्त्य ऋषि के शिष्य को खाने के लिए उनके आश्रम में गए। लेकिन महर्षि अगस्त्य ने उनको अपने श्राप द्वारा भस्म कर डाला। मैं फिर अकेली रह गई। इन्हीं दिनों इस पहाड़ पर पराक्रमी कुम्भकर्ण आये। उन्होंने मुझ से सम्भोग किया। फिर मेरे यहां तुम उत्पन्न हुए। अपनी मां से यह सारी कथा सुनकर भीम को भगवान श्री विष्णु से द्वेष उत्पन्न हो गया। उसने भगवान श्री विष्णु से बदला लेने का निर्णय कर लिया और वह उग्र तप करने लगा उसने श्री ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए पूरे एक हजार वर्ष तक कठोर तप किया। एक हजार वर्ष तक तप करने के बाद भीम के मस्तक से भयंकर तेज निकलकर चहूं ओर फैल गया और संसार को पीड़ित करने लगा। उसके पीड़ित करने से सब देवता इकट्ठे होकर श्रीब्रह्माजी के पास पहुंचे और उनसे प्रार्थी हुए कि वह शीघ्रातिशीघ्र ही वर प्रदान करें नहीं तो उसके मस्तक में से निकला हुआ तेज संसार को बहुत दुःखी कर देगा। इस पर श्रीब्रह्माजी ने भीम को साक्षात दर्शन दिये और उससे मन चाहा वर मांगने के लिए कहा। भीम श्री ब्रह्माजी के दर्शन करके अत्यन्त प्रसन्न हुआ और नत मस्तक होकर कहने लगा—प्रभो! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अत्यन्त बलवान होने का वर प्रदान कीजिये। इस पर श्री ब्रह्माजी ने तथास्तु कहकर उसे वर प्रदान किया। वर पाकर भीम अपने घर पहुंचा और अपनी मां से कहने लगा—मां! मैंने श्रीब्रह्माजी से वर प्राप्त कर लिया है। अब मैं भगवान श्री विष्णु तथा उनके साथियों से अपने पिता की मृत्यु का भयंकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बदला लूंगा। अपनी माता से इतनी बात कहकर भीम वहां से चल दिया और स्वर्ग में जाकर देवताओं को युद्ध के लिए ललकारा। उनसे भयंकर युद्ध किया और उन सबको जीतकर स्वर्ग से बाहर निकाल दिया। उसके बाद उसने भगवान श्री विष्णु को भी पराजित कर दिया। अब उसने सारे संसार को अधीन करने का विचार किया और कामरूप देश पर चढ़ाई कर दी। घोर संग्राम करके उसने राजा पर विजय पाई और राजा को बन्दी बनाकर बन्दीखाने में डाल दिया। राजा ने बन्दीखाने में ही भगवान सदाशिव का पूजन आरम्भ कर दिया। उसने जेलखाने में ही एक पार्थिव शिवलिंग बनाकर "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का जाप करते हुए भगवान सदाशिव की पूजा आरम्भ कर दी। उधर उसकी पत्नी ने घर पर पार्थिव सदाशिव का विधि पूर्वक पूजन आरम्भ कर दिया और निरन्तर अपने पति के छुटकारे के लिए प्रभु से प्रार्थना करने लगी। दानव भीम अभिमान के नशे में चूर होकर यज्ञ उपासना आदि धर्म, कर्म, पुण्य आदि सभी का विनाश करने लग गया। उसके उपद्रवों से दुःखी होकर भगवान विष्णु तथा अन्य देवताओं ने महाकेशी नदी के तट पर भगवान सदाशिव के पार्थिव लिंग की स्थापना की और विधि पूर्वक उसकी पूजा आदि करके भगवान सदाशिव की स्तुति भी की। तब भगवान सदाशिव ने प्रसन्न होकर सबको दर्शन दिये और कहा—हे देवताओ तथा ऋषियो-महर्षियो! आप सबको इस समय क्या दुःख है, मुझे ठीक-ठीक बतलाओ मैं हर प्रकार से तुम लोगों की रक्षा करूंगा। तब देवता बोले—प्रभो! कुम्भकर्ण का पुत्र दानव भीम इस समय संसार का नाश करने पर तुला हुआ है। उस दुरा-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चारी ने घोर तप द्वारा श्रीब्रह्माजी से वर प्राप्त कर लिया है और इस समय वह अपने उपद्रवों से सारे संसार को पीड़ित कर रहा है। सम्पूर्ण धर्म कर्म आदि सभी का विनाश कर रहा है। प्रभो! आप शीघ्र ही उसका वध कीजिए और धर्म, संसार तथा हमारी सबकी रक्षा कीजिए। देवताओं की बात सुनकर भगवान सदाशिव ने कहा—हे देवताओ तथा ऋषियो! मैं तुम्हारा यह काम शीघ्र ही कर दूंगा। अब तुम सब कामरूप देश में जाकर राजा से कहो कि भगवान शंकर शीघ्र ही तुम्हारे वैरी का नाश कर देंगे यह सुनकर सभी देवता भगवान शंकर से आज्ञा लेकर और उनको प्रणाम करके कामरूप देश में जा पहुंचे और राजा को भगवान सदाशिव की आज्ञा सुनाई।

इक्कीसवां अध्याय

(भगवान सदाशिव का कामरूप देश में आकर छिप कर रहना। भीम और राजा कामरूप का युद्ध। भगवान सदाशिव का प्रगट होकर भीम दानव को मार डालना और संवा सदैव के लिए कामरूप देश में स्थित हो जाना।)

श्री सूतजी बोले—हे ऋषियो! इसके पश्चात भगवान सदा शिव अपने गणों के साथ कामरूप देश में पहुंचे और वहां पर छिप कर रहने लगे। राजा भगवान सदाशिव की भक्ति में ऐसा लीन था कि उसको भगवान सदाशिव के आने का कुछ पता न चला। उधर किसी ने जाकर भीम से कहा कि कामरूप देश का राजा तुम्हें समाप्त करने के लिए छिपे तौर पर कुछ अनुष्ठान आदि उपाय कर रहा है। यह सुन कर भीम को बड़ा क्रोध आया और वह तुरन्त कामरूप देश में आकर राजा से कहने लगा—हे दुष्ट राजा! तू छुपे तौर से क्या अनुष्ठान आदि उपाय कर रहा है और क्यों कर रहा है? सच-सच बता नहीं तो अपनी तलवार से अभी तेरे टुकड़े उड़ा दूंगा। यदि तू सच-सच बता

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देगा तो मैं तुझसे वायदा करता हूं कि मैं तुझे छोड़ दूंगा। दानव की बात सुनकर राजा ने मन-ही-मन भगवान सदाशिव का ध्यान किया और कहा—प्रभो! अब तो आपका ही आश्रय है। प्रार्थना करके राजा निर्भय हो गया और उसने भीम को ललकार कर कहा—'ओ नीच दानव! मैं तो भगवान श्री सदाशिव का ध्यान कर रहा हूं। यह सुनकर अभिमानी दानव ने गरज कर कहा—ओ नीच राजा! मैं उस शिव को जिसकी कि तू आराधना कर रहा है, भली प्रकार जानता हूं। तू उसके द्वारा मुझे जीतने का विचार कर रहा है किन्तु वह तो मेरा बाल भी बांका नहीं कर सकता। तू उसकी पूजा-आराधना करना छोड़ दे, अन्यथा मैं तुझे भारी दण्ड दूंगा। इस पर राजा ने कहा—मैं और भगवान सदाशिव का पूजन छोड़ दूँ। यह कभी नहीं हो सकता। मैं तुमसे बिल्कुल नहीं डरता। राजा की बात सुनकर भीम के क्रोध का वार-पार न रहा, उसने क्रोध में भर कर तलवार भगवान सदाशिव के पार्थिव लिंग पर चला दी। उसी समय पार्थिव लिंग में से भगवान सदाशिव प्रकट हो गए। उन्होंने भीम की तलवार पकड़ कर उसके टुकड़े-टुकड़े करके दूर फेंक दी। इस पर भीम ने अपना त्रिशूल उनकी तरफ फेंका। भगवान सदाशिव ने अपने त्रिशूल द्वारा उसके बीसियों टुकड़े करके भूमि पर फेंक दिये। भीम ने अपनी सेना को लेकर भगवान सदाशिव के साथ घोर युद्ध किया। ऐसा भयंकर युद्ध कि धरती और आकाश तक कांप उठे। ऋषि-महर्षि और देवतागण उस युद्ध को देख कर चकित रह गए थे। युद्ध हो ही रहा था कि इतने में देव ऋषि नारद वहां आन पहुंचे और भगवान सदाशिव से प्रार्थी हुए—प्रभो! आप शीघ्राति शीघ्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इस दानव को मार डालिये। नारद जी की प्रार्थना पर भगवान सदाशिव ने हुंकार शब्द किया। जिससे कि अग्नि की एक ज्वाला प्रकट हुई और देखते-ही-देखते उसने भीम तथा उसकी सेना को भस्म कर डाला। सूतजी बोले—हे विप्रगण! उस ज्वाला द्वारा वन में सैकड़ों प्रकार की औषधियां उत्पन्न हो गईं जो कि समस्त रोगों का नाश करने वाली तथा सबका मंगल करने वाली हैं। भीम और उसकी सेना की समाप्ति के बाद ऋषि-महर्षि और सभी देवता भगवान सदाशिव के पास पहुंचे और प्रार्थी हुए प्रभो! इस जगत के कल्याण हेतु आप सदा सदैव के लिए यहां रह जाइए। भगवान सदाशिव ने ऋषियों-महर्षियों तथा देवताओं की प्रार्थना स्वीकार कर ली और वह सदा के लिए कामरूप देश में स्थित हो गए। तभी से उनका नाम भीमशंकर जगत का कल्याण करने वाला तथा दुःखों का नाश करने वाला प्रसिद्ध है।

बाईसवां अध्याय

(काशीपुरी में शिवागमन, विश्वेश्वर माहात्म्य।)

श्रीसूतजी बोले—भगवान सदाशिव ने स्त्री-पुरुष के भेद से स्वरूप धारण करके प्रकृति तथा पुरुष को पैदा किया। उसने सोचा कि हमारे माता-पिता कौन हैं जो कि दिखाई नहीं देते। और यह विचार करके वह अत्यन्त व्याकुल हो गए। तब आकाशवाणी हुई—तप करने से जगत उत्पन्न होता है अतः तुम भी तप करो। तब उन दोनों ने कहा—प्रभो! तप तो हम अवश्य-मेव करेंगे, किन्तु कहां बैठकर करेंगे। हमें तो यहां पर कोई स्थान भी तो दिखाई नहीं देता? श्रीसूतजी बोले हे ब्राह्मण गणवृन्द! प्रकृति-पुरुष इस प्रकार कह ही रहे थे कि भगवान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सदाशिव ने सभी सामग्रियों तथा सामानों से भरपूर एक परम सुन्दर नगर रचकर उन दोनों के सामने कर दिया। अब वह दोनों भगवान सदाशिव का नाम लेकर उस सुन्दर नगर में बैठ कर तप करने लगे। वह बहुत दीर्घ काल तक तप करते रहे। एक दिन उनके शरीर में से पसीना बहने लगा। जब उन्होंने चकित होकर अपना सिर हिलाया तो उनके कानों में से एक मणि टपक पड़ी। इसी कारण उस स्थान का नाम मणि कर्णिका प्रसिद्ध हुआ। पांच वर्ग कोस का यह विशाल नगर जल में बहने लगा। उस समय भगवान सदाशिव ने अपने त्रिशूल को नोक पर उसे दृढ़ कर लिया। उसके बाद तप के अधिक परिश्रम के कारण भगवान विष्णु तथा उनकी पत्नी प्रकृति उसी नगर में सो गए। तब भगवान शंकर की प्रेरणा हुई तो भगवान विष्णुजी की नाभि कमल से ब्रह्माजी प्रकट हो गए। ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना आरम्भ कर दी। पचास करोड़ योजन लम्बा तथा इतना ही चौड़ा ब्रह्माजी ने ब्रह्माण्ड रचा भगवान शंकर ने विचार किया कि सम्पूर्ण जीव तो कर्मों के बन्धनों में जकड़े रहेंगे तो वे मुझे किस प्रकार पा सकेंगे, ऐसा सोचकर उन्होंने अपने त्रिशूल से पांच कोस नगरी उतारकर ब्रह्माण्ड से अलग रखी फिर उसी में अपनी अविमुक्ति ज्योतिर्लिंग की स्थापना कर दी तब मुक्ति की अभिलाषा वालों को इस काशी का सेवन करना चाहिये। इस प्रकार की आज्ञा शंकरजी ने की। हे ब्राह्मणो! यह काशीजी तो ब्रह्माजी के दिन व्यतीत करने पर भी प्रलय काल में नष्ट नहीं होगी। करोड़ों प्रकार की हत्यादिकों के पाप महापाप इसी के सेवन से नाश हो जाते हैं मोक्ष देने में तो यह पुरी प्रसिद्ध एवं सर्व श्रेष्ठ है इसकी महिमा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सहस्त्रों वर्ष तक तो कही नहीं जा सकती। सूतजी बोले--यह तो मैं संक्षेप में अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ कहता हूं जो परमात्मा समस्त प्राणियों के मध्य में तो सत्व रूप से है और बाहर तामस रूप से है वही कैलाश के स्वामी हैं। तब सत्वादि गुणयुक्त होते हुए भी गुणातीत कालाग्नि रूप रुद्रजी ने स्तुति करते हुए कहा--हे स्वामिन विश्वनाथ! मैं आपके अंश से उत्पन्न हुआ हूं। आप मुझ पर कृपा करें, जगत् का कल्याण करना आपके आधीन है। इसी निमित्त से मातेश्वरी पार्वतीजी के साथ इस पवित्र काशीपुरी में आप सदा सर्वदा विराजें। हे ऋषियो! तब विश्वनाथ शंकर भगवान श्रीरुद्रजी की प्रार्थना पर समस्त विश्व के कल्याणार्थ उसी काशीपुरी में विराजमान हुए।

तेईसवां अध्याय

(काशी तथा काशीनाथ जी का माहात्म्य)

सूतजी बोले--हे मुनियो! पार्वती जी ने काशी में विद्यमान जिस अविमुक्त शिवलिंग की महिमा एक बार सदाशिव से पूछी थी उसे मैं आपको सुनाता हूं। इस सम्बन्ध में भगवान शंकर जी ने पार्वती से जो कुछ कहा उसे ध्यान पूर्वक सुनिये। शंकर भगवान बोले--हे प्रिये! काशी मेरा स्थान है जो कि समस्त पृथ्वीतल पर सर्वोत्तम माना जाता है तथा सिद्ध, योगी पुरुष यहां आकर मेरे द्वारा बनाये गए नियमों का आचरण करते हुए मेरे विभिन्न रूपों का वर्णन करते हैं। मेरे भक्त तथा अन्य ज्ञानी पुरुष अन्य तीर्थ स्थानों पर जायें या न जायें परन्तु काशी तो सभी को मोक्ष प्रदान करने वाली है तथा सभी पापों से मुक्त करने वाली है। वे चाहे कहीं पर भी मृत्यु को प्राप्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करें परन्तु उनके लिए तो मुक्ति अत्यन्त सुलभ एवं प्राप्य है। हे पार्वती! इस पवित्र क्षेत्र की महिमा सुनो। इस काशीपुरी में चाहे किसी अधम से अधम अथवा किसी भी अवस्था के प्राणी की मृत्यु हो उसे मोक्ष की ही प्राप्ति होती है इस काशी धाम की इतनी महिमा है कि इसमें चाहे कोई स्त्री शुद्ध हो या अशुद्ध, सुहागन हो या विधवा, रजस्वला कन्या हो या प्रसूता इस प्रकार संस्कारहीन स्त्री को भी मुक्ति अत्यन्त सुलभता से प्राप्त होती है यदि वह काशीधाम में मृत्यु को प्राप्त करती है। इस काशीपुरी में किसी उत्तम या उच्च जाति, वर्ण ज्ञान, कर्मकाण्ड, दान, संस्कार, ईश्वर स्मरण, मेरा भजन पूजन स्तुत्यादि किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती। यहाँ पर तो केवल मृत्यु को प्राप्त करना ही पर्याप्त है और जो भी जन यहां पर आकर मृत्यु को प्राप्त करता है उसे मुक्ति प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं होती उसके लिए मुक्ति तो स्वतः सिद्ध होती है। यह काशीधाम अत्यन्त गोपनीय है ब्रह्मा विष्णु महेश आदि देवता भी इसकी महिमा नहीं जान पाये। योगीराज जन, ऋषि मुनि अनेक जन्मों की कठिन तपस्या के बाद भी जिस मुक्ति लाभ से वंचित रह जाते हैं वह केवल काशी में शरीर त्यागने से ही प्राप्त हो जाती है। कोई भी मनुष्य कैसा भी दुष्कर्म करके पाप का भागी क्यों न बन जाये, कितना भी अधर्मी क्यों न हो, इस काशीपुरी में मृत्यु को प्राप्त कर आवागमन के बंधन से भी मुक्त हो जाता है। यदि कोई प्राणी एकाग्रचित्त होकर मेरा स्मरण करता है, शुद्ध हृदय से मेरी अर्चना करता है, आराधना करता है तथा कठोर तपस्या करते हैं उनके पुण्यों की महिमा तो है

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कल्याणी ! मैं भी वर्णित नहीं कर सकता। वे पुरुष अत्यन्त तेजस्वी व पुण्यवान होते हैं। मेरा स्मरण भजन पूजा अर्चना वन्दना व आराधना करने पर वे मेरे रूप में ही लय हो जाते हैं, स्वयं ब्रह्मस्वरूप, ब्रह्ममय हो जाते हैं। अतः यह तीर्थ स्थान मुक्ति को प्रदान करने वाला है। यदि कोई अधम या पापी मनुष्य यहाँ पर आकर मृत्यु को प्राप्त नहीं होते हैं तो वे आवागमन के चक्र में फंसे रहते हैं और उन्हें अनेक योनियों में जन्म लेकर अपने कर्मों के फल भोगने के बाद ही मुक्ति प्राप्त हो पाती है। इस पवित्र काशीधाम में आकर यदि कोई मनुष्य नीचकर्म जाने अनजाने कर बैठता है तो उसे मृत्यु के उपरान्त दस हजार भैरवी नरकों की यातना को भोगना पड़ता है तब उसे मुक्ति की प्राप्ति होती है अन्यथा नहीं। ऐसे पवित्र काशीधाम में मनुष्य को अत्यन्त सोच विचार कर निवास करना चाहिए। उचितानुचित का विचार करके ही यहां निवास करना सर्वोत्तम है क्योंकि यह तो निश्चित ही है कि ऐसे सर्व श्रेष्ठ व पवित्र काशीधाम में किये गये शुभ या अशुभ, श्रेष्ठ व अधम कर्मों का फल करोड़ों वर्षों तक भोगना पड़ता है तब कहीं जाकर मनुष्य जन्म की प्राप्ति होती है। उत्तम कोटि के कर्मों के फलस्वरूप जीवात्मा को उत्तम घर तथा उच्चजाति में जन्म मिलता है तथा नीच एवं अशुभ कर्मों के कारण नीच, दरिद्री एवं दीन-हीन घर में जन्म मिलता है।

शंकर भगवान पार्वती से कहते हैं—हे कल्याणी ! कर्म तीन प्रकार के होते हैं। १. पहले वे हैं जो पूर्व जन्म के संचित होते हैं २. दूसरे वे जो इस जन्म में किए गए हैं इन्हें क्रियमाण कहते हैं। ३. तीसरे प्रकार के कर्म वे हैं जो इन दोनों के फल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

स्वरूप इस शरीर से भोगे जा रहे हैं। इन्हें प्रारब्ध कर्म कहते हैं। उपर्युक्त कर्मों में से संचित तथा क्रियमाण कर्म तो दानादिक कर्मों से नष्ट भी हो जाते हैं, समाप्त हो जाते हैं परन्तु प्रारब्ध कर्म जो कि इस शरीर द्वारा भोगे जाते हैं वे बिना भोग किये नाश नहीं होते। संचित तथा क्रियमाण कर्म भी काशीपुरी को छोड़कर अन्य किसी स्थान पर पूरी तरह से नष्ट नहीं होते हैं। जिन प्राणियों ने पूर्व जन्म में विचार पूर्वक काशीधाम में निवास किया है केवल वे ही दूसरा जन्म प्राप्त कर काशी में अपने शरीर का त्याग कर पाते हैं अन्य पुरुष नहीं। काशीपुर में बहने वाली परम पावन गंगा के जल के स्नान मात्र से ही संचलित एवं क्रियमाण कर्मों का नाश हो जाता है। प्रारब्ध कर्मों का नाश भी काशीपुरी में निवास करने मात्र से ही हो जाता है। काशी में निवासी यदि अज्ञानता वश कोई दुष्कर्म या पाप कर बैठता है तब भी इस समस्त पृथ्वीतल पर सर्वश्रेष्ठ काशी के पुण्य प्रताप से पुनः काशी में जन्म लेकर पापों से विनिर्मुक्त हो जाता है। उसके समस्त पाप इस कलिकाल में नष्ट हो जाते हैं। इस पवित्र काशीपुरी में यदि कोई मनुष्य किसी ब्राह्मण को बसाता है उसे परम पुण्य की प्राप्ति होती है। वह अत्यन्त तेजस्वी होकर वैकुण्ठ को प्राप्त करता है। यदि किसी प्राणी ने पहले काशी में निवास किया और फिर किसी सिद्धि को प्राप्त करने हेतु प्रयागराज चला जाता है और वहां जाकर अपना शरीर त्याग देता है तो उसे काशी निवास का फल प्राप्त नहीं होता है। यदि कोई मनुष्य बिना किसी मनोरथ सिद्धि के प्रयागराज में जाकर निवास करने लगता है और वहां पर मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसे पुण्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की प्राप्ति नहीं होती। सारांश यह है कि किसी भी प्राणी को काशी निवास पुण्य फल तभी प्राप्त होता है जब वह काशी में ही मृत्यु को प्राप्त होता है। हे कल्याणी! मेरी प्रेरणा से मेरी इच्छानुसार ही भगवान विष्णु सृष्टि का निर्माण करके इच्छित फल प्रदान करते हैं। अर्थात् संसार की सृष्टि विश्व का सृजन मेरी प्रेरणा से ही होता है।

चौबीसवां अध्याय

(गौतम-प्रभाव)

प्राचीन काल में गौतम नामक अत्यन्त तेजस्वी ऋषि हुए हैं। अहिल्या नाम की अत्यन्त पतिव्रता, शील एवं स्नेह स्वभाव की स्वामिनी उनकी धर्मपत्नी थीं। गौतम ऋषि दक्षिण में ब्रह्म पर्वत पर सिद्धि हेतु दस हजार वर्षों से तपस्या कर रहे थे। उस समय सौ वर्ष पर्यन्त वर्षा न हुई। वृक्षों आदि की तो बात ही क्या जीवित रहने के लिये भी मनुष्यों को जल मिलना दुर्लभ हो गया। इस संकटकालीन समय को व्यतीत करने के लिये बहुत से ऋषि मुनियों ने समाधि लगा ली ताकि वे अकाल की यातनाओं से अपनी रक्षा कर सकें। उस संकटकालीन अवस्था में महर्षि गौतम ने वरुण जो कि जल के देवता हैं को प्रसन्न करने हेतु कठोर तपस्या की। छः माह पश्चात् वरुण देवता प्रसन्न हो गये। वरुण देवता ने गौतम ऋषि को साक्षात्कार दर्शन दिये तथा उन्हें इच्छित वर मांगने के लिये कहा। तब गौतम ऋषि ने कहा—हे जल देवता वरुण! इस समय अकाल के कारण चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है। मनुष्य त्राहि-त्राहि कर रहे हैं अतः उन्हें सुखी करने हेतु वर्षा दान दीजिए। यह सुनकर वरुण देवता बोले कि हे महर्षि! इस कार्य के लिये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ मैं तो सदाशिव शंकर के आधीन हूँ। वर्षा के लिये भगवान् शंकर से आज्ञा मिलना अत्यन्त आवश्यक है अतः आप कुछ और मांग लीजिये। यह सुनकर गौतम ऋषि बोले—हे प्रभो! मुझे अन्य किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। आप यदि मुझसे प्रसन्न हैं तो कृपया जलदान दीजिए क्यों कि इससे बढ़कर तो कोई और पुण्य है ही नहीं। तब गौतम ऋषि की नम्र प्रार्थना को सुनकर वरुण देवता फिर बोले कि आप सत्य कहते हैं परन्तु यह मेरे अधिकार क्षेत्र से बाहर है। यदि आप जल चाहते हैं तो एक गड्ढा खोदलें मैं उसे जल से भर दूंगा जो कभी भी खाली नहीं होगा। इसके बाद महर्षि गौतम ने तुरन्त एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा गड्ढा खोदा और वरुण देवता ने उसे तुरन्त ही जल से भर दिया और बोले—हे गौतमजी! इस पवित्र स्थान में दान, हवन, देव पूजन, तप, पितृ श्राद्धादि किये गये सभी कर्मों का कई हजार गुणा फल मिलेगा। इतना कहकर वरुण देवता अन्तर्ध्यान हो गये। इस प्रकार अपनी कठोर तपस्या के कारण महर्षि गौतम ने समस्त जगत का परोपकार किया। सूतजी बोले—आपत्कालीन स्थिति में ऋषि मुनियों तथा उच्चकोटि के मनुष्यों की शरण में जाने पर दुःखों के पारावार से प्राणी विनिर्मुक्त हो जाता है तथा उनकी शरण में जाने पर वे महान् पद को, उच्चस्थान को प्राप्त करते हैं और यह बात बड़े लोग ही भली-भांति जानते हैं।

सूतजी बोले—तत्पश्चात् महर्षि गौतम ने वरुण देवता द्वारा प्रदत्त जल से स्नान किया तथा नित्य कर्मों से निवृत्त होकर हवन के लिए जौ आदि अन्न पैदा किये। इसी जल के कारण चारों ओर फलों, फूलों से लदे हरे भरे वृक्ष, पेड़-पौधे आदि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लहराने लगे। चहुँ ओर हरीतिमा का साम्राज्य छा गया। इस आश्चर्यजनक घटना को सुनकर सब ऋषि मुनि वापिस लौट आए। महर्षि गौतम की अपार अनुकम्पा से वह स्थान सर्वश्रेष्ठ माना गया तथा ऋद्धि सिद्धियों से युक्त सम्पूर्ण प्राणियों को सुखदायक हुआ।

पच्चीसवां अध्याय

(महर्षि गौतम को गौहत्या का दोष)

सूतजी बोले—हे मुनियो! एक बार गौतम ऋषि के आदेशानुसार शिष्यगण उस गड्ढे पर जल लेने गए। उसी समय कुछ ऋषि पत्नियां भी वहां पर जल भरने के लिए आई थीं। ऋषि पत्नियों ने गौतम के शिष्यों को कहा कि पहिले वे उन्हें जल भरने दें फिर अपना कमण्डल भरें। ऐसा सुनकर गौतम ऋषि के शिष्य बिना जल भरे ही आश्रम में लौट गए और उन्होंने सब बात अहिल्या को जाकर बताई। अहिल्याजी उन्हें समझा बुझाकर धैर्य बंधाकर स्वयं जल लेने चली गईं। अब नित्य प्रति अहिल्या ही गौतम ऋषि के लिए जल लाने लगीं। महर्षि गौतम उसी जल से स्नानादि नित्य कर्म करते। इसी प्रकार एक दिन उन दुष्ट स्वभाव वाली स्त्रियों ने अहिल्या को भी बुरा भला कह दिया और अपने पतियों को भी जाकर अहिल्या की शिकायत की कि वह उन्हें पानी नहीं भरने देती और कहती है कि यह मेरे पति ने वरुण देव से वर मांग कर प्राप्त किया है। इस पर तुम्हारा क्या अधिकार है। अपनी पत्नियों से इस प्रकार के वचन सुनकर सभी ऋषि मुनि महर्षि गौतम पर क्रोधित हो उठे तथा उन्हें दुःख पहुंचाने हेतु श्री गणपतिजी की आराधना करने लगे। तब गणपति प्रसन्न हो उठे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

और उन्होंने ऋषियों को साक्षात्कार दर्शन दिये और बोले—मैं तुम्हारे विधिपूर्वक किये गए पूजन से अत्यन्त प्रसन्न हूं। वर मांगो। तब ऋषि बोले—हे गणपति! यदि आप हम पर प्रसन्न हैं तो हम चाहते हैं कि यह गौतम ऋषि इस स्थान को त्यागकर अन्यत्र चले जाएं। यह सुनकर गणेशजी मुनियों की कुटिलता पर मुस्करा दिये और बोले—हे मुनियो! महर्षि गौतम निरपराध हैं और उन्हें इस प्रकार दण्डित करना अनुचित है और इसमें तुम्हारा ही अमंगल है। वे अत्यन्त परोपकारी हैं और उन्होंने तुम्हारा कितना भला किया है। इस प्रकार उनसे द्वेष, ईर्ष्या करना तज दो। इस प्रकार गणेश भगवान ने उन्हें बहुत समझाया किन्तु वे तो अपनी बात पर अटल थे। तत्पश्चात् गणेश जी ने कहा कि ठीक है। यदि तुम ऐसा चाहते हो तो ऐसा ही होगा। यह कहकर गणपति जी अन्तर्ध्यान हो गए।

इस प्रकार वर देने के पश्चात अपने कथन को सत्य करने के लिए गणेशजी ने एक अत्यन्त निर्बल गाय का रूप धारण किया और वह गाय महर्षि गौतम द्वारा उपजाये जौ आदि का भक्षण करने लगी। गौतम ऋषि ने देखा कि वह गाय उनकी खेती को नष्ट कर रही है तब वह एक तिनका उठाकर उसे खेत से बाहर करने लगे। तृण से ताड़ित होकर वह गाय पृथ्वी पर गिर पड़ी और उसकी मृत्यु हो गई। यह सब देखकर गौतम ऋषि को अत्यन्त पश्चाताप हुआ और वे अपनी पत्नी अहिल्या को बुलाकर बोले—न मालूम भगवान शंकर हम पर क्यों क्रुद्ध हो गए हैं जिससे यह गऊ हत्या का पाप मुझ पर लगा है। उसी समय वे छली-कपटी ऋषि मुनि भी उसी स्थान पर पहुंच गए और महर्षि गौतम उनकी पत्नी अहिल्या तथा उनके शिष्यों की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भी निंदा करने लगे और बोले—हे गौतम ऋषि ! तुम गऊ माता के हत्यारे हो। अब तुम लोग इस स्थान पर रहने योग्य नहीं हो। अतः अपनी पत्नी तथा शिष्यों को लेकर अन्यत्र चले जाओ। सूतजी बोले—इस प्रकार कर्णकटु शब्दों को कहकर भी उनकी तृप्ति नहीं हुई और वे उन्हें पत्थर मारने लगे। तब खिन्न मन से महर्षि गौतम अपनी पत्नी तथा शिष्यों सहित अन्यत्र स्थान पर आकर रहने लगे। जब वहां रहते हुए उन्हें लगभग १५ दिन बीत गए तो गौतम ऋषि पुनः उन्हीं ऋषियों के पास पहुंचकर अपनी पाप निवृत्ति का उपाय पूछने लगे। उन ऋषियों ने उनसे कहा कि आप प्रायश्चित करो। इसके बिना पाप की निवृत्ति नहीं होगी। इसके लिए सर्वप्रथम तुम्हें इस पाप को जग में प्रसिद्ध करना होगा और समस्त पृथ्वी की तीन बार परिक्रमा करनी होगी। पुनः यहां आकर एक मास का व्रत रखना होगा तथा ब्राह्मणों और पर्वत की एक सौ एक बार परिक्रमा करनी होगी। यदि इस प्रकार भी प्रायश्चित न हो तो तप करना और उनके द्वारा गंगाजी को प्रकट करके उसमें स्नान करके एक करोड़ शिव पार्थिव लिंग रचकर श्रद्धा-पूर्वक विधि विधान से उनका पूजन करना होगा। तभी जाकर आप उस महापाप से विनिर्मुक्त हो पाओगे। सूतजी बोले—हे महर्षि गौतम इस प्रकार के वचनों को सुनकर जो आज्ञा कह-कर वहां से चल पड़े। सर्व प्रथम उन्होंने ब्रह्मगिरि की परिक्रमा की। तदुपरान्त शिव पार्थिव लिंग रचकर वे विधि विधान से शिवपूजन करने लगे। उनकी पत्नी अहिल्या भी मनोयोग से एकाग्रचित्त होकर पूजन करने लगीं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

छब्बीसवां अध्याय

(गौतमी गंगा का प्रकटीकरण)

सूतजी बोले—हे मुनियो! गौतम ऋषि तथा अहिल्या पति-पत्नी ने मिलकर शिव की अर्चना, वन्दना, पूजा आराधना आदि की तब प्रसन्न होकर शंकर भगवान अपने गणों सहित साक्षात प्रकट हुए और उन्होंने वरदान के लिए कहा। तब गौतम तथा अहिल्या ने अत्यन्त सौम्य, अद्भुत रूपधारी सदा-शिव शंकर का दर्शन किया तथा पुनः-पुनः प्रणाम एवं स्तुति करने लगे। शंकर बोले—तुम इस गौ हत्या के पाप से निर्दोष हो। यह सब तो उन दुराचारी पाखण्डी तथा कुटिल ऋषियों की माया थी जिसके फलस्वरूप तुम्हें इतना अधिक कष्ट भोगना पड़ा है। वे दुष्टात्मा, कुटिल, छली ऋषि मुनि ही वास्तव में हत्यारे हैं, पापी हैं। ऐसा सुनकर गौतम ऋषि बोले कि स्वामी! उन्होंने तो मुझे दुःख पहुंचाने के लिए मेरा बुरा किया परन्तु इस बुराई से भी मेरा तो भला ही हुआ क्योंकि मैंने आपका दर्शन प्राप्त किया अन्यथा आपके तो दर्शन भी दुर्लभ हैं। तब सदाशिव शंकर भगवान बोले—मैं तुम्हारे तप, पूजनादि से अत्यन्त प्रसन्न एवं संतुष्ट हूं अतः तुम वर मांगो। तब गौतम ऋषि ने अपनी प्रतिज्ञा को ध्यान में रखकर गंगा के प्रकटीकरण के विचार को मन में रखकर कहा—हे स्वामी! आप कृपा कर पतित पावनी गंगा को प्रकट करें ताकि सभी प्राणियों का कल्याण हो। तब भगवान शंकरजी ने गौतमजी को गंगाजल ला दिया। श्री गंगाजी के दर्शन करके गौतमजी ने प्रणाम स्तुति की और बोले—हे मातेश्वरी! तुम सबको भक्ति देने वाली हो, मुझे भी पवित्र कर नरकों से मेरी रक्षा करो। फिर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान शंकर गंगाजी से बोले–हे गंगे ! मेरी आज्ञा से गौतम जी को सकुटुम्ब पापरहित कर दो। गंगाजी बोलीं–प्रभो ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। इन्हें पवित्र करके मैं आपके लोक में प्रस्थान करूंगी। तब शंकरजी बोले–हे कल्याणी ! कलियुग के अट्ठाईसवें मन्वन्तर तक तुम्हें पृथ्वी पर रहना होगा। तब गंगाजी ने कहा–स्वामिन् ! यदि आप पार्वतीजी के साथ मेरे पास निवास करें और संसार में मेरी कीर्ति हो तो मैं पृथ्वी पर रहूंगी। शंकरजी बोले–हे देवी ! ऐसा ही होगा मैं तुम्हारे समीप ही निवास करूंगा। तब परमेश्वर शंकर त्र्यम्बकेश्वर नाम से तथा श्री गंगाजी श्री गौतमी गंगा नाम से वहां विराजे। गौतमी गंगाजी पर तो पुष्करराज सरोवर एवं गंगा आदि तीर्थ, विष्णु आदि देवता सभी का निवास है।

सत्ताईसवां अध्याय

त्र्यम्बकेश्वर माहात्म्य

ऋषियों ने पूछा–हे तात सूतजी ! जलस्वरूप श्री गंगाजी का जन्म कैसे हुआ। इसके साथ यह भी बताएं कि महिमा किस प्रकार प्रसिद्ध हुई। उन ऋषियों का क्या हुआ जिन्होंने गौतम जी के साथ कपट किया था। यह सब भली-भांति वर्णन करें। सूतजी बोले–हे ऋषियो ! गौतम महर्षि ने श्री गंगाजी को जलरूप में जब दर्शन देने के लिए कहा तो तब ब्रह्मगिरि पर खड़े हुए गूलर वृक्ष की शाखा से निकल कर गंगा जलरूप में बहने लगी। इस प्रकार की गंगाजी का दर्शन करके महर्षि ने शिष्यों के साथ उसमें स्नान किया। तत्पश्चात् श्री गौतमजी के साथ शत्रुता रखने वाले भी जब स्नान करने की इच्छा से आए तो गंगाजी लुप्त हो गईं। तब आश्चर्य चकित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

होकर गौतमजी स्तुति करने लगे—हे मातेश्वरी गंगे! आप कृपा करके स्नान की इच्छा से आए इन लोगों को चाहे ये दुर्जन हैं अथवा सज्जन, मेरी तपस्या के फल स्वरूप अपना दर्शन दें। इस प्रकार गौतमजी के स्तुति करने पर आकाशवाणी हुई—हे मुनिवर! ये लोग मेरे दर्शनों के लिए योग्य अधिकारी नहीं हैं। ये तो महादुराचारी व परोपकार का नष्ट करने वाले हैं। फिर गौतमजी ने कहा—हे माता! महात्मा व ज्ञानीजन तो सज्जन व दुर्जन दोनों के प्रति समान भावना रखते हैं। अतएव कृपा करके आप इन्हें भी दर्शन प्रदान करें। तब पुनः आकाशवाणी हुई—हे महर्षि! आप का कहना यथार्थ है किन्तु इन दुराचारी लोगों को भी तो अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहिए। इसके बिना ये मेरा दर्शन प्राप्त न कर सकेंगे। आकाशवाणी को गौतमजी के साथ उन लोगों ने भी सुना। फिर उन लोगों ने तुरन्त गौतम जी के चरण पकड़कर उनसे अपने अपराधों के लिए क्षमा याचना की। तब महर्षि के कहने पर उन्होंने ब्रह्मगिरि की परिक्रमाएं कीं और श्री गंगाजी के दर्शन प्राप्त किए। तब से उस स्थान का नाम कुशावर्त प्रसिद्ध हुआ। इसे सुनकर ऋषियों ने कहा—हे सूतजी! हमने तो जैसा सुना है उसके अनुसार तो गौतमजी ने उन लोगों को श्राप दे दिया था। कृपा कर आप हमारी शंका का समाधान करें। सूतजी बोले—हे ऋषियो! जब उस नकली गाय की श्री गौतमजी से मृत्यु हो गई थी तब उन ऋषियों ने सर्वत्र यह फैला दिया था कि गौतम ने गौहत्या कर दी। जब महर्षि गौतम ने अपने ज्ञान से उस नकली गाय का रहस्य जान लिया तो उन्हें क्रोध आ गया। क्रोध में आकर वे श्राप देने लगे—हे दुष्टो! नीच ब्राह्मणो! तुम लोगों ने मुझे कपट से अपमानित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करने का प्रयास किया है अब मेरे श्राप से तुम लोग वेद विद्या से रहित, शिव-भक्ति से रहित अधर्म परायण हो जाओगे। तुम शिव-पूजन से रहित होकर शिवपर्वों से विमुख होओगे। सूतजी ने कहा—तब श्राप देकर गौतमजी अपने निवास स्थान पर शिव जी का ध्यान करने लगे। तब गौतमजी के श्राप से मुनि लोग शिव-भक्ति से विमुख होकर कांची नगरी को चले गए।

अट्ठाईसवां अध्याय

(रावण का अपने नौ मस्तक काटकर भगवान शिव को अर्पित करना और भगवान शिव का प्रसन्न होकर उसे वर देना। रावण का वर प्राप्त करके तीनों लोकों को जीतने के सम्बन्ध में विचार करना। रावण की वर प्राप्ति के विषय में जानकर देवताओं महर्षियों का व्याकुल होना व नारदजी का उन्हें धैर्य देना।)

सूतजी बोले—हे ऋषियो! प्राचीन काल में यश प्राप्ति के इच्छुक लंकाधिपति रावण कैलाश पर पहुंचा वहां जाकर उसने श्रद्धा से सदाशिव को प्रणाम किया किन्तु जब इससे शंकरजी प्रसन्न न हुए तब उन्होंने एक गड्ढा खोदकर उसमें अग्नि को स्थापित किया तथा उसके समीप शिवजी को स्थापित करके, गर्मी में पंचाग्नि में तपकर वर्षा शीत आदि को समान भाव से सहन करके कठिन तप करने लगा। इतना करने पर भी जब शिवजी प्रसन्न नहीं हुए तो वह अपने मस्तक काटकर चढ़ाने लगा। फिर भी सदाशिव उसको प्रसन्न होते दिखाई न दिये। इस पर वह अपना दसवां मस्तक काटने के लिए तैयार हो गया। यह देखकर भगवान सदाशिव सन्तुष्ट हो तुरन्त प्रकट हो गए और उन्होंने अपनी कृपा से उसके सभी कटे हुए मस्तक एक बार फिर पहिले जैसे कर दिये और उसे पराक्रम भी प्रदान किया। जब रावण ने भगवान सदाशिव को अत्यन्त प्रसन्न देखा तो नतमस्तक होकर प्रार्थना की—प्रभो! यदि आप मुझ पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रसन्न हैं तो आप मेरे साथ लंका पधारिये और मुझे कृतार्थ कीजिये। इस पर भगवान सदाशिव बोले—हे लंकेश्वर! तुम मेरा यह ज्योतिर्लिंग अपने साथ लंका में ले जाओ। ध्यान रहे कि मार्ग में तुमने इसे किसी स्थान पर रखना नहीं है। यदि तुम इसे किसी स्थान पर रखोगे तो यह वहीं का हो जायेगा और आगे बिल्कुल नहीं जायेगा। श्रीसूतजी बोले—हे ब्राह्मणो! इस प्रकार भगवान सदाशिव के आदेशानुसार रावण उनका प्रदान किया हुआ ज्योतिर्लिंग उठाकर लंका के लिए चल दिया। मार्ग में उसको एक स्थान पर लघुशंका की इच्छा हुई। चुनांचि उसने वह लिंग किसी ग्वारिये को सौंपा और आप लघुशंका करने के लिए बैठ गया। उस ग्वारिये ने दो घड़ी तक तो उस लिंग को थामा, किन्तु बोझ अधिक होने के कारण वह उसे सम्भाल न पाया और उसने उसे पृथ्वी पर रख दिया। बस फिर क्या था, भगवान सदाशिव के कथनानुसार लिंग वहीं स्थिर हो गया। रावण अब क्या कर सकता था। उसने भगवान सदाशिव की स्तुति की। उनसे वरदान मांगा और फिर लंका की ओर चल दिया। वह लिंग फिर वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जोकि सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला तथा भोग और मोक्ष का देने वाला है। रावण ने अपने महल में पहुंच कर भगवान सदाशिव की प्रसन्नता तथा उनके वरदान देने का सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी रानी को सुना दिया। रावण को भगवान सदाशिव से वरदान की प्राप्ति हुई है। यह सूचना पाकर देवता तथा ऋषि-महर्षि अत्यन्त दुःखी हो गए कि वह दुष्ट जो कि पहिले से ही हमारा शत्रु है अब भगवान सदाशिव से वर की प्राप्ति के पश्चात हमको पूर्व की अपेक्षा और भी अधिक दुःखी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करेगा। इससे बचने का केवल एक ही उपाय है कि इससे छिप कर रहा जाये। देवता तथा ऋषि मंडल अभी इस समस्या पर विचार ही कर रहा था कि इतने में नारायण! नारायण!! का कीर्तन करते हुए देवर्षि नारद वहां आन पहुंचे और उन्होंने देवताओं तथा ऋषियों-महर्षियों को व्याकुल देखकर कहा--देवता तथा ऋषियो! आप लोग धैर्य धारण कीजिये। मैं अभी भगवान सदाशिव के पास जाकर इसका उपाय करता हूं।

सूतजी बोले--हे मुनियो! इतना कहकर नारदजी लंका में गये। रावण ने उनको आया देखकर उनका आदर-सत्कार किया। उन्हें आसन पर बिठाया। आसन पर बैठकर श्रीनारद जी बोले--हे लंकेश्वर! आप भगवान सदाशिव के पूर्ण भक्त तथा मंगल स्वरूप हैं। अब आप मुझे यह बतलाइये कि आपको इस प्रकार की सिद्धि किस प्रकार प्राप्त हुई है। रावण ने श्री नारदजी की बात सुनकर सिद्धि प्राप्ति का सारा वृत्तांत कह सुनाया। फिर बोला--नारदजी! अब तो मैं भगवान सदाशिव को अपने अनुकूल जानकर तीनों लोकों को अपने वश में करने के बारे में विचार कर रहा हूं। श्री नारदजी बोले--हे लंका-पति! मैं तुम्हारे हित की बात कहता हूं। यदि मेरी बात मानोगे तो अत्यन्त सुखी होवोगे। सुनो--शिव का वर बिल्कुल बेकार चीज है क्योंकि आज तक उनका कथन कभी सच तो हुआ नहीं। इसलिए तुम सबसे पहले शिव को हानि पहुंचाने का यत्न करो उसके बाद तुम तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर सकोगे। श्रीसूतजी बोले--हे ऋषियो-महर्षियो! रावण को नारदजी की बात अपने लिए हितकर जान पड़ी। वह उसी समय कैलाश पर्वत पर पहुंचा और कैलाश पर्वत को हिलाकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपने दोनों हाथों पर उठा लिया। कैलाश पर्वत को हिलता देखकर भगवान सदाशिव चकित होकर बोले—आज यह कैलाश पर्वत हिल क्यों रहा है? भगवान सदाशिव की बात सुनकर श्री पार्वतीजी हंस पड़ीं उन्होंने कहा—प्रभो! रावण को पराक्रम प्रदान करने का आपको फल मिल रहा है। श्री पार्वतीजी से ऐसा सुनकर भगवान शंकर रावण से बोले—अरे मन्दमति नीच रावण! इतना अभिमान करना अच्छा नहीं। याद रख मेरा अपराध करने वाली तेरी इन भुजाओं को काटने वाला कोई न कोई बलवान पुरुष जन्म लेने वाला है। सूतजी बोले—इस प्रकार भगवान शंकर के शाप देने पर रावण प्रसन्न होता हुआ अपनी लंका में पहुंचा। तब उसने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली कि मैं त्रिलोकी को वश में करके छोड़ूंगा। तब अपने पराक्रम से देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, मानव आदि सभी को अपने वश में कर लिया।

उन्तीसवां अध्याय

(दारुक नामक दानव का वृत्तांत। दारुक का जनता को अपने उपद्रवों से अत्यन्त दुःखी करना। लोगों का महर्षि और्व के पास जाकर रक्षा के लिए प्रार्थना करना। महर्षि और्व का उनको धैर्य देकर आप जगत के कल्याण के लिए तपस्या आरम्भ करना। देवताओं का युद्ध के लिए दारुक पर चढ़ाई करना। दारुक का समुद्र के मध्य में जाकर निवास करना।)

सूतजी बोले—हे ब्राह्मणो! अब मैं आपको नागेश्वर नामक ज्योतिर्लिंग की कथा सुनाऊंगा। तनिक ध्यान पूर्वक सुनिये। प्राचीन काल में एक दारुक नामक राक्षस हुआ है। उसकी पत्नी का नाम दारुका था। दोनों पति-पत्नी भगवती दुर्गा के प्रदान किये हुए एक सुन्दर वन में रहा करते थे। यह वन पश्चिम के समुद्र के समीप था। यह चौसठ कोस लम्बा और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लगभग उतना ही चौड़ा था। उस वन के निवासी राक्षस तथा राक्षसी के आये दिन के उपद्रवों से अत्यन्त दुःखी हो गए और एक दिन महर्षि और्व के आश्रम में पहुंचकर उनको अपना सारा हाल सुनाया और कहा—प्रभो! हम लोगों को दारुक और उसकी पत्नी दारुका ने अत्यन्त दुःखी कर रक्खा है। अब हम आपकी शरण में आये हैं। आप हमारी रक्षा कीजिए। इस पर महर्षि और्व बोले—आप लोग डरो मत। जब भी वह दानव जीवों की हिंसा तथा यज्ञ विनाश करने लगेंगे तभी उनकी मृत्यु हो जायेगी। श्रीसूतजी ने कहा—हे ब्राह्मणो! महर्षि और्व ने इस प्रकार उस वन के रहने वालों को धैर्य देकर आप जगत के कल्याण के लिए तपस्या करने लगे। देवताओं को जब मालूम हुआ कि महर्षि और्व जगत के कल्याण के लिए तपस्या कर रहे हैं तो वह दारुक दानव से लड़ने के लिए अपने अस्त्र-शस्त्र सम्भालकर युद्ध-भूमि में आ गए। देवताओं को युद्ध के लिए आया जानकर दारुक विचार करने लगा कि अब उसको क्या करना चाहिए। उसको दुःखी देखकर उसकी पत्नी दारुका ने कहा—नाथ! आपको दुःखी होने की आवश्यकता नहीं है। मैं इस नगर को तुम्हारे सहित उठाकर जल के मध्य में रख दूंगी। यह सुनकर दारुक और उसके साथी राक्षस निर्भय हो गये। फिर दारुका ने नगर को उठाया और समुद्र के मध्य में ले जाकर रख दिया। वहां जाकर राक्षस सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने लगे। एक दिन दारुका ने देखा कि मनुष्यों से भरी हुई एक नाव समुद्र में तैरती चली आ रही है। उसने उसी क्षण राक्षसों को सूचित किया, वह मनुष्यों को उठाकर अपने नगर में ले गए। और सबके पैरों में बेड़ियां डालकर जेलखाने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji JFS (Retd) Collection Jammu

में डाल दिया। नाव के उन यात्रियों में एक बनिया भी था जो कि भगवान सदाशिव का अनन्य भक्त था। उसने कारागार में ही भगवान सदाशिव का पूजन आरम्भ कर दिया अन्य बन्दियों को भी अपने साथ पूजन में लगा लिया। सब भगवान सदाशिव का पूजन करने लगे। हे ब्राह्मणो! इस तरह से पूजन करते हुए उन्हें छः मास बीत गये।

तीसवां अध्याय

(सुप्रिय को कारागार में भगवान सदाशिव का पूजन करते देखकर दारुक का आग बबूला हो जाना और उसको मारने की तैयारी करना। भगवान सदाशिव का प्रकट होकर दारुक तथा उसके साथियों को मार डालना। भगवान सदाशिव का तथा श्री पार्वतीजी का ज्योति स्वरूप होकर नागेश्वर के नाम से वहां पर स्थित होना।)

श्रीसूतजी बोले—एक दिन की बात है कि दारुक दानव के किसी सेवक ने कारागार में सुप्रिय को भगवान सदाशिव का पूजन करते हुए देख लिया उसने दारुक के पास पहुंचकर इस सम्बन्ध में शिकायत की। इस पर दारुक सुप्रिय के पास पहुंचा और उससे पूछा—ओ बनिये! तू मुझे सच-सच बता दे कि तू किस देवता की आराधना कर रहा है? देख, यदि तू सच-सच बता देगा तो मैं तुझे छोड़ दूंगा, नहीं तो तुझे मार डालूंगा। सूतजी बोले—हे मुनीश्वरो! उस दानव के इस प्रकार सख्ती से पूछने पर भी बनिये ने अपना भेद प्रगट नहीं होने दिया। इस पर दारुक ने क्रोध में भरकर अपने आदमियों से कहा कि इस बनिये को तुरन्त मौत के घाट उतार दो। दारुक की बात सुनकर सुप्रिय ने भगवान सदाशिव का ध्यान किया और आंखें बंद कर मन-ही-मन प्रार्थना की—हे तीनों लोकों के स्वामी! मैं आपकी शरण में हूं। मुझे आप इस संकट से बचाइये। सुप्रिय की प्रार्थना सुनकर भगवान सदाशिव तुरन्त प्रकट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो गये। उनके दर्शन करके सुप्रिय ने उनका पूजन तथा स्तुति की। भगवान सदाशिव ने उसके पूजन तथा स्तुति से प्रसन्न होकर पाशुपतास्त्र उठाया और उन समस्त राक्षसों को मार डाला। राक्षसों का नाश हो जाने पर भगवान सदाशिव ने सुप्रिय से कहा—अब यह वन सदा-सदैव के लिए निर्भय हो गया। अब यहां धर्म पर चलने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि वर्ण निवास करेंगे। अधर्म का अन्त हो गया। यहां पर धर्म का उपदेश करने वाले मेरे भक्त निवास करेंगे।

दारुक राक्षस की मृत्यु से अत्यन्त दुःखी होकर उसकी पत्नी श्री दुर्गाजी के पास पहुंची और बड़ी नम्रता पूर्वक उनसे कहने लगी—हे भगवती! आप मेरे परिवार की रक्षा करो। मैं भी आपके भक्तों तथा उनके वंशियों की रक्षा किया करूंगी। इस पर श्री पार्वतीजी को उसे दिया हुआ अपना वर याद आया और वह क्रोध में भर गईं। इस तरह उसे क्रोध में भरा हुआ देखकर भगवान सदाशिव बोले—अब तुम अपनी इच्छा से जो चाहो सो कर सकती हो। श्री सदाशिव की बात सुनकर श्री पार्वतीजी हंस पड़ीं फिर कहने लगीं—प्रभो! आपका कहना अवश्यमेव सच होगा किन्तु इस युग के बीत जाने पर। इस समय तो यहां राक्षसों का ही निवास होगा और मेरी शक्ति-रूपा यह दारुका ही उन पर शासन करेगी। इस पर भगवान सदाशिव बोले—देवी! तेरी इच्छा पूर्ण हो, किन्तु मैं भी अपने भक्तों की रक्षा के लिए यहां पर विराजमान रहूंगा। यदि कोई मनुष्य अपनी जाति तथा धर्म के अनुकूल आचरण करता हुआ प्रेम व भक्ति सहित मेरा दर्शन करेगा तो वह अवश्यमेव चक्रवर्ती राजा हो जायेगा। श्रीसूतजी ने कहा—इस प्रकार कहकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान सदाशिव व भगवती पार्वती ज्योति स्वरूप होकर नागेश्वर के नाम से वहीं पर स्थित हो गये। श्रीसूतजी ने कहा—अब मैं आपको राजा वीरसेन की कथा सुनाऊंगा। एक समय राजा वीरसेन ने बारह वर्ष तक पार्थिव लिंग का पूजन करते हुए घोर तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान सदाशिव वहां पर प्रकट हो गये और बोले—हे राजन्! मैं तुमको लकड़ी की एक मछली देता हूं जो कि रांगे से मढ़ी हुई है उसे मैं योगशक्ति से शक्ति वाली कर दूंगा। उस मछली को लेकर तू अपनी सेना सहित शिवर में पहुंच जायेगा। वहां जाकर मेरे स्वरूप नागेश्वर का पूजन करेगा। उससे तुझे पाशुपतास्त्र की प्राप्ति होगी। उसके द्वारा तू दानवगणों का नाश कर सकेगा। मेरे इस दर्शन से तुम्हें किसी प्रकार की कमी न रहेगी। इतना कहकर भगवान सदाशिव अन्तर्ध्यान हो गये। भगवान सदाशिव का वर पाकर राजा वीरसेन उनकी परम कृपा से उस कार्य के करने में सामर्थ्यवान हुआ।

इकत्तीसवां अध्याय

(सूतजी का मुनियों को रामेश्वर शिवलिंग की उत्पत्ति की कथा सुनाना। लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व भगवान् श्री रामचन्द्रजी महाराज का पार्थिव लिंग का पूजन। भगवान् सदाशिव का ज्योति स्वरूप लिंग से प्रकट होना और भगवान् श्री रामचन्द्रजी महाराज को विजय का वरदान प्रदान करना।)

सूतजी बोले—हे ब्राह्मणो! अब मैं आपको रामेश्वर के शिव-लिंग की कथा सुनाता हूं। भगवान् विष्णु ने जब रघुवंशी दशरथ के घर श्री रामचन्द्रजी के नाम से अवतार ग्रहण किया तब उनका प्रयोजन रावण आदि दानवों का नाश करना था। उनकी पत्नी सीताजी हुईं। अपने पिता की आज्ञा से राम अपनी पत्नी व भाई सहित चौदह वर्ष के वनवास के लिए चले गए। वहां

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रावण ने अपनी माया का जाल फैलाकर कपट से उनकी पत्नी सीता का अपहरण कर लिया। सीताजी के वियोग में व्याकुल श्रीराम उन्हें ढूंढ़ते-ढूंढ़ते किष्किधा पहुंचे। वहां वानरपति सुग्रीव से मित्रता करके उन्होंने उसके भाई बाली का वध किया फिर हनुमान आदि वानरों को लेकर सीताजी की खोज में चल पड़े। तब श्रेष्ठ बानर हनुमान ने लंका में जाकर श्री सीताजी को खोज लिया। सीताजी को श्रीराम का संदेश देकर चूड़ामणि लेकर हनुमानजी लौटकर रामचन्द्रजी के पास आ गए और सब हाल कह सुनाया। फिर रामचन्द्रजी अठारह हजार वानरों की सेना लेकर श्रीराम दक्षिणी समुद्र के किनारे पहुंच गए। वहां अथाह समुद्र को देखकर श्रीराम चिन्तित हो गए कि इसे कैसे पार करेंगे। तब वे विचार करने लगे कि प्रिया का पता पाकर भी मैं उससे मिल नहीं सकता, कितने दुःख की बात है। इस समुद्र को कैसे पार करूंगा, यह वानरों की सेना समुद्र के पार कैसे जायेगी। इस प्रकार विचार कर श्रीराम व्याकुल हो गये तब अंगद आदि वानरों ने उन्हें सांत्वना दी। तब श्रीराम को प्यास लग गई। उन्होंने लक्ष्मणजी को जल लाने के लिए कहा। लक्ष्मणजी ने वानरों को भेजकर जल मंगाया। जलपान करते हुए श्रीराम ने सोचा मैं शंकरजी के दर्शन किए बिना जलपान कर रहा हूं। फिर जल पीकर उन्होंने शंकरजी के पार्थिव लिंग का पूजन करने का विचार किया। तथा आवाहन आदि सोलह उपचारों के साथ शिवजी का पूजन व स्तुवन करके कहा—हे नाथ! मैं अपनी सेना लेकर इस अथाह समुद्र को कैसे पार करूंगा और महाबली राक्षस रावण के साथ युद्ध करके विजय कैसे प्राप्त करूंगा। हे सदाशिव! मैं आपकी शरण में हूं आप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ही मेरी सहायता करने में समर्थ हैं। सूतजी बोले—उस समय भगवान् शंकर सन्तुष्ट होकर अपने परिवार सहित उस शिव-लिंग से प्रकट हुए और कहने लगे—हे राम! तुम्हारा कल्याण हो, तुम मुझसे वर मांगो। शिवजी का दर्शन पाकर कृतार्थ श्री राम ने उनकी स्तुति की तथा प्रणाम करके बोले कि मैं रावण पर विजय प्राप्त करूं यह वर दें। शंकरजी बोले—हे राम! तुम युद्ध में विजयी होओगे। तुम्हारा कल्याण होगा। तब श्रीराम ने कहा—हे शंकरजी! आप अपनी इच्छा से संसार के कल्याण के लिए यहां विराजमान हों। तब श्रीराम की प्रार्थना सुनकर सदाशिव उस स्थान पर लिंगरूप से आसीन हो गए। तब से वह स्थान लोक में रामेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह तीर्थ परम पवित्र मोक्ष व भोग को देने वाला है।

बत्तीसवां अध्याय

(श्रीसूतजी का मुनीश्वरों को घुश्मेश नामक शिव ज्योतिर्लिंग की महिमा सुनाना। सुधर्मा नामक अग्निहोत्र आदि कर्म, अतिथि सेवा, शिवपूजन आदि करने वाले भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण पर भगवान सदाशिव की कृपा का वृत्तान्त। सुदेहा और घुश्मा दो बहनों पर भगवान सदाशिव की कृपादृष्टि की कथा।)

सूतजी बोले—हे मुनियो! अब मैं तुम्हें घुश्मेश नामक शिव ज्योतिर्लिंग की महिमा का वर्णन सुनाता हूं। दक्षिणी दिशा में एक सुन्दर देव नामक पर्वत है। उसकी भारद्वाज गोत्र की सुन्दर पत्नी थी। सुधर्मा उत्तम ब्राह्मण था नित्य प्रतिदिन अग्नि होत्रादि कर्म अतिथि सेवा शिव पूजन आदि परायण था। शिव-भक्त उसका बहुत सा समय शिवभक्ति में व्यतीत होता रहा। उसकी कोई सन्तान नहीं थी। सुधर्मा को तो इसकी कोई चिन्ता नहीं थी किन्तु उसकी पत्नी सदा इसकी चिन्ता करती रहती थी। उसे पुत्र प्राप्ति की बहुत इच्छा थी। वह बार-बार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपने पति से इस विषय में कहती। उसका पति महा ज्ञानी उसे समझाता कि पुत्र प्राप्ति से क्या प्रयोजन है। सभी सम्बन्धी स्वार्थी होते हैं। फिर हमने माता-पिता मित्र आदि सबको देख लिया है। इस प्रकार समझाकर कभी-कभी फटकार भी देते थे। सूतजी बोले—अपनी स्त्री के कहने पर ध्यान नहीं दिया और आप सुखपूर्वक शिव-भक्ति में लीन रहते। एक दिन सुधर्मा की पत्नी सुदेहा अपनी सहेलियों के साथ मन बहलाने को कहीं चली गई। वहां कई स्त्रियों के साथ इसका झगड़ा भी हो गया। उस झगड़े में उन स्त्रियों ने कहा—अरी बाँझ! तू भी इतना गर्व कर रही है। हम जानते हैं तू धनवान है लेकिन तेरा धन तो राजा छीन लेंगे। यह धन तेरे किस काम का है। देख हमारे तो पुत्र हैं हमारा धन तो हमारे पुत्रों के काम आ जाएगा। यह सुनकर सुदेहा अत्यन्त व्याकुल होती हुई घर लौट आई। आते ही अपने पति को उन स्त्रियों की बात रो-रोकर सुनाने लगी। सुनकर सुधर्मा दुःखी न हुए बल्कि अपनी स्त्री को धैर्य देते हुए बोले—हे प्रिये! जो कुछ होना है वह तो अवश्य होगा उसमें व्याकुल नहीं होना चाहिए। जो कुछ भी कोई कहता है उसे कहने दो। दुःख करने की आवश्यकता नहीं। तब सुदेहा बोली—हे प्राणनाथ! या तो आप मुझे किसी प्रकार पुत्र-वती बना दो अथवा मुझे मार दो। नहीं तो मैं स्वयं आत्महत्या कर लूंगी। सूतजी बोले—सुदेहा के ऐसे वचन सुनकर उस ब्राह्मण देवता ने शिवजी का स्मरण करते हुए दो पुष्प अग्नि की ओर फेंके। उनमें दाहिना पुष्प पुत्र प्रदान करने वाला होगा। ऐसा विचार करते हुये उन्होंने अपनी पत्नी से कहा—पुत्र की इच्छा से तुम एक पुष्प उठा लो। तब शिवजी की माया से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मोहित होकर सुदेहा ने बांई ओर वाला पुष्प उठा लिया। यह देखकर सुधर्मा ने खिन्न चित्त होकर अपनी पत्नी से कहा—हे कल्याणी! अब तुम भगवद्-भक्ति में ध्यान लगाओ। तुम्हारे भाग्य में पुत्र का सुख नहीं है।

इस प्रकार उसे समझा-बुझाकर सुधर्मा शिवपूजन में लीन हो गए। कुछ समय बीत जाने पर एक बार फिर पुत्र की इच्छा से सुदेहा ने अपने पति से कहा—हे प्राणनाथ! यदि मेरे गर्भ से आपको पुत्र की प्राप्ति नहीं हो सकती तो आप दूसरा विवाह कर लीजिये। यह मेरी अपनी इच्छा है। तब ब्राह्मण बोला—हे प्रिये! हम दोनों इस समय बन्धन से मुक्त हैं। इसलिये भगवद् भक्ति द्वारा क्यों न अपना उद्धार करें। यदि फिर विपत्ति में पड़ गये तो उपद्रव होगा। इस विवाह के जंजाल में मुझे मत बांधो। इस प्रकार सुदेहा को पुनः सुधर्मा ने मना कर दिया। सूतजी बोले—तब भी सुदेहा ने अपनी छोटी बहन को घर बुला कर पति से कहा—हे नाथ! आप मेरी बहन के साथ अवश्य विवाह कर लें। यह सुनकर सुधर्मा ने पुनः कहा—हे कल्याणी! तुम मुझे इस जंजाल में बांधने का कोई यत्न मत करो यदि मैं इससे विवाह कर भी लूं तो यह तुम दोनों बहनों के लिए भी उचित न होगा। तब सुदेहा ने विनती करके कहा—मैं क्यों इसके साथ झगड़ने लगी। आप चिंता न करें। इस प्रकार समझा-बुझाकर सुदेहा ने अपनी छोटी बहन घुश्मा के साथ विवाह कर दिया। विवाह के बाद सुधर्मा ने सुदेहा से कहा—हे प्रिये! यह तुम्हारी सौत तुम्हारी बहन भी है इसे प्रेम से रखना। फिर घुश्मा से कहा—तुम इसकी व अपने पति की आज्ञा का पालन अवश्य करना। तब वह दोनों अपने पति के साथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IES (Retd) Collection Jammu

सुख पूर्वक रहने लगीं। घुश्मा अपने पति की आज्ञा से नित्य प्रतिदिन एक सौ पार्थिव लिंगों की षोडषोपचार पूजा करके तालाब में बहा देती। इस प्रकार यह उसका नित्यकर्म था। एक दिन पुत्र प्राप्ति के लिए शिवजी के पार्थिव लिंग का पूजन किया। इस प्रकार के शिवलिंगों की संख्या एक लाख हो गई। तब शिवजी की असीम कृपा से उसे सुन्दर गुणी पुत्र की प्राप्ति हुई। पुत्र को पाकर सुधर्मा अत्यन्त प्रसन्न हुए। किन्तु इसके साथ ही सुदेहा अपनी पुत्रवती बहन से ईर्ष्या करने लगी।

तेंतीसवां अध्याय

(सुदेहा का अपनी बहन के पुत्र को मारकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके तालाब में डाल देना। भगवान् सदाशिव का प्रकट होकर ब्राह्मण कुमार को पुनर्जीवित करना, घुश्मा की प्रार्थना पर भगवान् शिव का घुश्मेश के नाम से ज्योतिर्लिग रूप होकर देव नामक पर्वत पर निवास करना।)

सूतजी बोले—हे ऋषियो! तब कुछ समय के बाद वह घुश्मा का पुत्र बड़ा हो गया। उसे विवाह योग्य देखकर सुधर्मा ने उसका विवाह एक सुन्दर ब्राह्मण कन्या के साथ कर दिया। तब घुश्मा ने अपने पुत्र तथा पुत्रवधू को सुदेहा के पास ले जाकर कहा—हे पुत्री! यह तुम्हारी माता है इनकी सेवा करना तुम्हारा धर्म है। इस प्रकार माता के वचन सुनकर घुश्मा का पुत्र तथा उसकी पत्नी दोनों ही सुदेहा की सेवा के लिए तत्पर हो गए। किन्तु सुदेहा की ईर्ष्या बढ़ती ही गई। उसका व्यवहार प्रतिदिन कटु व ईर्ष्यालु होता गया। उसने सोचा मेरे हृदय की जलन तभी शांत होगी जब पुत्र के वियोग में दुःखी घुश्मा की आंखों से जल की धाराएं निकलेंगी। अब मुझे ऐसा ही करना चाहिए। सूतजी बोले—ईर्ष्या व शत्रुता के वशीभूत पुरुष को अच्छे बुरे का विवेक नहीं रहता यह तामसिक भाव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उनकी बुद्धि को आवृत्त कर लेते हैं। इस प्रकार अपनी सौत के पुत्र को मारने की इच्छुक सुदेहा ने एक बार रात्रि में सबके सो जाने पर हाथ में छुरी उठा ली तथा उसने सोते हुए सुधर्मा के पुत्र को मार दिया। फिर उसके टुकड़े-टुकड़े करके उसी तालाब में डाल दिए जिसमें घुश्मा नित्य शिवजी के पार्थिव लिंग बहा आती थी इस प्रकार उसे मारकर घर आकर सो गई। प्रातःकाल घुश्मा व सुदेहा दोनों नित्य के कार्य में लग गईं। जब उधर घुश्मा की पुत्रवधू सोकर उठी तो उसने पति के रुधिर व शरीर के टुकड़े देखे। यह देखकर वह व्याकुल होकर अपनी सास के पास आकर बताने लगी और बोली— ऐसा प्रतीत होता है किसी ने उनका वध कर दिया है इस प्रकार कहकर जोर-जोर से विलाप करने लगी। यह देखकर घुश्मा भी व्याकुल होकर रोने लगी। सुदेहा भी नकली दुःख प्रकट करती हुई रोने लगी। किन्तु अपनी सौत को पुत्र वियोग से दुःखी देखकर मन ही मन प्रसन्न हो रही थी। जब सुधर्मा पूजन से निवृत्त हो आए तो सब वृत्तांत जाना। यह देखकर उन्होंने कहा—शोक करना व्यर्थ है। जिसने यह पुत्र दिया था वही उसके रक्षक हैं। घुश्मा तुम अपना नित्य कर्म मत त्यागो। पति के वचन सुनकर धैर्य धारण करके घुश्मा प्रतिदिन की तरह शिवलिंग का रूप लेकर उसी तालाब पर नहाने चली गई। वहां नहाकर जब लौटने लगी तो उसे तट पर अपना पुत्र खड़ा दिखाई दिया। वह तुरन्त अपनी माता के समीप पहुंचकर बोला—मातेश्वरी! तुम्हारे पुण्य प्रताप एवं शिवजी की कृपा से मैं मरकर भी जी रहा हूं। अपने पुत्र को जीवित देखकर घुश्मा अत्यन्त प्रसन्न हुई। और प्रतिदिन के अनुसार शिव पूजा में लग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गई। उसी समय उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर शिवजी ने उसे अपने दर्शन दिए और बोले—हे घुश्मा! तुम्हारे इस पुत्र को सुदेहा ने मार दिया था अब मैं उस दुष्टा का वध करूंगा। मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। तुम कोई भी वर मांगो। तब घुश्मा ने प्रणाम करके शिवजी से कहा—हे भगवन्! यदि आप मुझे वर देना ही चाहते हैं तो मेरी बहन को अभय दान दें। सदाशिव ने कहा—उसने तो तुम्हारे साथ बुरा किया फिर तुम उसका भला क्यों करना चाहती हो। तब घुश्मा ने कहा—हे पार्वतीनाथ! क्या मैं बुरी हूं जो बुरा करने वाले का बुरा चाहूं। हे सदाशिव! यदि आप वर देना ही चाहते हैं तो यही वर दें। सदाशिव प्रसन्न होते हुए बोले—अच्छा ऐसा ही होगा। इसके अतिरिक्त भी यदि कुछ मांगना चाहो तो मांगो। घुश्मा ने कहा—हे स्वामी! आप जनकल्याण एवं पालन के लिए यहां विराजमान हो जाएं यही मेरी प्रार्थना है। तब सदाशिव ने कहा—हे पुत्रवे! मैं घुश्मेश नाम से ज्योतिर्लिंग रूप होकर यहां निवास करूंगा यह तालाब लिंग स्थल हो जायेगा। यह त्रिलोकी में शिवालय के नाम से विख्यात होगा। इसके दर्शन से लोगों के मनोरथ सिद्ध होंगे। सूतजी बोले—इस प्रकार कह कर सदाशिव वहां सदा के लिए स्थिर हो गए। इतने में सुदेहा व सुधर्मा वहां आ पहुंचे। तब सबने मिलकर एक सौ परिक्रमा करके शिवजी की पूजा की। सबका परस्पर प्रेम हो गया। घर जाकर सब सुखपूर्वक रहने लगे। सूतजी बोले—हे ऋषियो यह जो हमने आपको बारह शिव ज्योतिर्लिंगों की उत्पत्ति व उनकी महिमा का वर्णन सुनाया है यह शिव भक्तों के लिए अत्यन्त सुखकारक तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चौंतीसवां अध्याय

(दैत्यों का प्राणियों को दुःख देना और धर्म का विनाश करना। देवताओं का दुःखी होकर भगवान श्रीविष्णु की शरण में जाना और दुःख दूर करने के लिए प्रार्थना करना। भगवान श्रीविष्णु का कैलाश पर्वत पर जाकर पार्थिव लिंग का पूजन करना। उनकी तपस्या से भगवान सदाशिव का सन्तुष्ट होकर भगवान श्रीविष्णु को सुदर्शन चक्र प्रदान करना। भगवान श्रीविष्णु का चक्र द्वारा दैत्यों को मारना।)

ऋषियों ने कहा—हे सूतजी! अब हमें आप हरीश्वर नामक ज्योतिर्लिगों की कथा सुनाइये। क्योंकि इसी हरीश्वर शिवलिंग का पूजन करके विष्णुजी ने सदाशिव से सुदर्शन चक्र प्राप्त किया था। अतएव इसे जानने की हमें विशेष इच्छा है। सूतजी बोले—हे मुनियो! प्राचीन काल में अत्यन्त बलवान दैत्य हुए हैं जो सभी प्राणियों को दुःख देते थे तथा धर्म का समूल नाश करने के लिए तत्पर थे। उन्हीं राक्षसों से दुखित होकर देवगण विष्णुजी के पास पहुंचकर और अपना दुःख जाकर सुनाने लगे।

यह सुनकर भगवान विष्णु ने कहा—हे देवताओ! तुम भय मत करो। मैं भगवान शंकर का पूजन करूंगा। बस उसी पूजन के द्वारा तुम्हारे सब दुःख दूर हो जायेंगे। सूतजी बोले—हे ब्राह्मणो! भगवान श्रीविष्णु के इस प्रकार के परम शान्ति देने वाले वचन सुनकर सभी देवता प्रसन्न हो गए और निर्भय होकर अपने-अपने लोकों को वापिस लौट गए। देवताओं के अपने-अपने धामों को वापिस लौट जाने के पश्चात भगवान श्रीविष्णु सदाशिव के पूजन के लिए कैलाश पर्वत पर पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने एक हवन कुण्ड का निर्माण किया और उसके मध्य में अग्नि स्थापित की। इसके बाद उन्होंने विधि अनुसार पार्थिव लिंग का पूजन आरम्भ कर दिया। भगवान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विष्णु ने महा निर्णय कर लिया था कि मैं भगवान सदाशिव को सन्तुष्ट करके ही अपनी इस तपस्या को छोड़ूँगा। जब तक भगवान सदाशिव सन्तुष्ट नहीं होंगे। मैं यहां से बिल्कुल नहीं हिलूँगा। भगवान श्रीविष्णु को इस प्रकार कठोर तपस्या करते हुए एक लम्बी अवधि बीत गई किन्तु सदाशिव प्रसन्न न हुए। इस पर श्रीविष्णु ने शिव सहस्र नाम का पाठ आरम्भ कर दिया और एक-एक मंत्र का उच्चारण करने के पश्चात कमल का एक-एक पुष्प चढ़ाने लगे। भगवान सदाशिव ने भगवान श्रीविष्णु की परीक्षा के लिये, उनके चढ़ाये हुये एक हजार पुष्पों में से एक पुष्प इधर-उधर कर दिया। एक पुष्प कम है यह जानकर भगवान श्री विष्णु को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पुष्प तलाश करने लगे। जब पुष्प कहीं पर भी न मिला तो उन्होंने कमल के समान अपना नेत्र निकालकर उसे भगवान सदाशिव को अर्पण कर दिया। इस पर भगवान सदाशिव अत्यन्त प्रसन्न हुए और साक्षात प्रकट होकर कहने लगे—विष्णुजी! मैं तुम्हारी इस भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न हूं। तुम अब मन चाहा वर मांग सकते हो। इस पर भगवान श्रीविष्णु बोले—प्रभो! इस समय राक्षसों ने बड़ा उपद्रव मचा रक्खा है। उनके मारने के लिये मेरे पास अस्त्र सामर्थ्य नहीं है, बस इसीलिए मैं आपकी शरण आया हूं। सूत जी बोले—हे मुनिश्वरो! भगवान श्रीविष्णु की बात सुनकर उनको एक अत्यन्त सुन्दर चमक तथा दमक वाला सुदर्शन चक्र दिया। बस उसी चक्र से भगवान श्रीविष्णु ने दैत्यों का नाश किया और संसार का दुःख दूर किया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पैंतीसवां अध्याय

(विष्णु सहस्र नाम जिनका उच्चारण भगवान श्री विष्णु ने किया और एक एक नाम पर एक-एक कमल पुष्प चढ़ाकर भगवान श्री सदाशिव को प्रसन्न किया। भगवान सदाशिव ने भगवान श्री विष्णु को सुदर्शन चक्र प्रदान करके कहा कि हे विष्णु जी! यह चक्र तुम्हारे सब प्रकार के भय निर्मुक्त करता रहेगा।)

श्रीसूतजी ने कहा—हे ब्राह्मणो! अब मैं आपको भगवान सदाशिव के सहस्र नाम सुनाऊंगा जिनका कि उच्चारण भगवान श्री विष्णु ने करके भगवान श्री सदाशिव को प्रसन्न किया था। ध्यान पूर्वक सुनिये। विष्णु जी बोले—हे सदाशिव! सृष्टि के हर्ता, सुख के दाता, दुःखों के हरने वाले, पुष्टि नेत्रधारी आपकी धर्म, काम और मोक्ष को चाहने वाले सदा सेवा किया करते हैं श्रेष्ठ आचरणवान् प्रजा के सुखदाता एवं संहार कर्ता ॥१०॥ सबके ईश, पारब्रह्म परमात्मा, मस्तक पर चन्द्रमा से शोभायमान, दुष्ट स्वरूप, विश्व के पालक, वेदान्त तत्व के ज्ञाता, कपाली, लाल-लाल एवं श्याम २ जटाधारी, अविनाशी, ध्यान के आधार स्वरूप ॥२०॥ पार्वतीनाथ, प्रमथादि गुणों के स्वामिन्, आकाशादि अष्ट मूर्तियों वाले, विश्व स्वरूप, धर्म, अर्थ, काम स्वर्गादि की प्राप्ति के साधन, विज्ञान के पूर्ण ज्ञाता, देवाधिदेव, त्रिनेत्रधारी, विपरीत वेष ॥३०॥ सारे देवताओं में महादेव, परम चतुर कुशल एवं रक्षक, पुष्ट बलवान, विश्वरूप, त्रिनेत्रि, वाणी के अधिपति, सारे देवों में बड़े, सब प्रमाणों के ज्ञाता, वृक्ष लक्षणों वाले ॥४०॥ वृषभ के सवार, सर्वेश्वर, पिनाक धनुष वाले, नयहांग, आयुधधारी, अद्भुत वेष वाले, त्रिकालाबाधित, अज्ञानमय अन्धकार के नाशक, महायोगी, रक्षक, ब्रह्माण्ड हर्ता ॥५०॥ जटाधारी, कालों के भी काल, व्याघ्र आदि का चर्म वस्त्रों की भांति धारण करने वाले, उत्तम,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विभव वाले, ओंकार स्वरूप, पापियों को दण्ड देने वाले, सभी प्राणियों में निवास करने वाले, सेवा के एवं भजन योग्य, दुर्वासा का अवतार ग्रहण करने वाले, त्रिपुर दैत्य के विनाशक ॥६०॥ श्रेष्ठ अस्त्र धारक, कार्तिकेय स्वामी के पिता, परब्रह्म, प्रकृति से परे, आदि अन्त एवं मध्य से रहित, पर्वतों के स्वामी, उमानाथ, कुबेर के भ्राता सुन्दर कण्ठधारी, सर्वश्रेष्ठ लोक तथा वर्ण वाले ॥७०॥ सीधे स्वभाव, समाधिगम्य, धनुर्धारी, नीलकण्ठ, अद्भुत, प्रकाशवान, विशाल नेत्र, सृष्टि तथा संहार के मृगरूप, जीवों के लिए शिवकारी, देवेश, सूर्य के प्रचण्ड ताप की तरह दुष्टों को तापित करने में समर्थ, धर्म के स्वामी ॥८०॥ सहनशक्ति, शीतल, प्रकृति, वैभवों के स्वामी, भगवान के नेत्र निकालने वाले, क्रोधी, जीवों के नाथ, गरुड़दाता, भक्तों के प्रेमी, उत्तम तपस्वी, सबके दाता, दया सागर ॥९०॥ परम चतुर, जटाजूट धारक, काम के दण्डदाता, श्मशानवासी, सूक्ष्मरूप से सब में रहने वाले, सर्व समर्थ, सृष्टिकर्ता, मृगरूप जीवों के नाथ, पंचमहाभूतों के रचयिता ॥१००॥ संसार को आवागमन से छुड़ाने में महौषध, सोमरस पीने वाले, अमृतपान करने वाले, नम्र, महा तेजस्वी, उत्तम, कान्तिमान, प्रकाशमय, जलरूप, मृत्यु रहित, अन्नरूप, प्रतापी ॥११०॥ अमृत स्वामी, संसार से पार करने वाले, स्वर्ग, पृथ्वी, पशु, वाणी, जल एवं इन्द्रियों के स्वामी, रक्षक, विज्ञान से प्राप्य समय से अविनाशी, नीतिज्ञ, उत्तम नीति रूप, शुद्ध अन्तःकरण, चन्द्ररूप ॥१२०॥ सोमरस में श्रेष्ठ, सदा सुखी, अजात शत्रु, स्वयं प्रकाश, माननीय, देवताओं को हानि पहुंचाने के लिए अग्निरूप, लोक रचयिता, वेद तथा यज्ञ रचयिता, अनादि कालरूप ॥१३०॥ सब वेदों के जानने वाले,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जगत को प्रकाशित करने वाले, त्रिनेत्रधारी, पिनाक धनुष वाले, पृथ्वी के धारक, प्रकाशक, भक्तों के मनोरथ पूरक, ब्राह्मण स्वरूप, महामंगल, सुन्दर बुद्धि सम्पन्न ॥१४०॥ सबके नाथ, वेद तथा ब्रह्मा के रचयिता, विश्वकार, सृष्टिरूप, सर्व ज्ञाता, कनेर पुरुष प्रिय, शाखनामधारी, विशाखनाम, वेद शाखामय, त्रिगुण भिन्न ॥१५०॥ उत्तम वैद्य, प्रवाहित गंगा जल सम निर्मल, कांतिमय, श्रेष्ठ, सृष्टि रचयिता, स्थिर रूप, आत्मा को वश में रखने वाले, आत्मा के विधाता, जीवमात्र को कर्म फल देने वाले, गण सेवित ॥१६०॥ निर्मलकीर्ति, निः संशय, कामस्वरूप, इच्छा पूरक, भस्मधारी, भस्म के प्रेमी, भस्म की शैया वाले, कामनाओं के प्रेमी, वेद रचयिता ॥१७०॥ संसार चलाने वाले, आत्मनिवृत्त रहित, धर्म समूह तथा मंगल रूप, निष्पाप, पवित्र आत्मा, चतुर्भुज, दुष्टों के लिए असह्य, दुर्लभ, कठिनता से ज्ञेय, ॥१८०॥ महा कठिन, अस्त्रों-शस्त्रों में चतुर, विद्याओं के निधान, अध्यात्मयोगी, संसार के आधार, सृष्टि वर्द्धक, सुन्दर अंगों वाले, भ्रमरों की भांति लोकतत्व ज्ञाता, जगदीश संहार करने वाले, भस्म द्वारा पतिव्रता करने वाले ॥१९०॥ अभय, आत्मबली, शुद्ध शरीर, कठिनता से लभ्य, सज्जनों से भजनीय, हनुमान स्वरूप, अग्नि रूप, पुराण रूप, शत्रु विनाशक, महाबली ॥२००॥ महाकुण्ड रूप, अपार मायाधारी, देवसिद्धि, गण वन्दनीय, व्याघ्र चर्म, गण सर्पों के भूषणधारी, महाविराट उत्पादक, सम्पूर्ण जीवों के कोष, अमर, वायुरूप, स्वात्मसुख रूप, अमृतपान कर्त्ता, शोभामय ॥२१०॥ पच्चीस तत्वों के मध्य में स्थिर, अग्नि रूप, कल्प वृक्ष, सुलभता से जाति एवं आश्रमों के चालक, ब्रह्मचारी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥२२०॥ शत्रुओं को जीतने वाले, आश्रम रूप, परिश्रम के दूर कर्ता, परम ज्ञानी, पर्वतों के नाथ, प्रमाण रचयिता, कठिन लभ्य, गरुड़ रूप, वायु पर सवार ॥२३०॥ धनुषधारी, धनुर्वेदज्ञ, उत्तम स्नान, सत्यरूप, सत्य सेवा पर दीनता रहित, धर्म पृथ्वी तथा धर्म स्वरूप, पृथ्वी तथा धर्म के शासक, अपार दृष्टि वाले, दण्डरूप, दमन तथा निग्रह कर्त्ता, ॥२४०॥ अभिचारी तथा मायाधारी, विश्व की रचनाओं में चतुर, राग द्वेष विनाशक, भक्तों को नम्र करने वाले, तपस्वी जीवों के वर्द्धक, मतवाले, छिपे काम पर विजय पाने वाले, विष्णु पर प्रेम वाले, उत्तम स्वभाव, सबसे प्रथम ॥२५०॥ सभी लोगों की मन की गति जानने वाले, वेगवान, उद्धारक, बुद्धिमान, मुख्य, परमात्मा, अविनाशी, लोकपालक, अन्तर्यामी, सब में रहने वाले, कल्पों के आदि, कमल नेत्र ॥२६०॥ वेदशास्त्र के अर्थ एवं सार के ज्ञाता, नियम रहित, नियम आश्रित, आनन्ददायक, चन्द्रदायक, चन्द्रमास्वरूप, सूर्यस्वरूप, शनिरूप, धूमकेतु रूप, उत्तमांग मूंगे के समान शोभित, शक्ति से वश में होने वाले ॥२७०॥ परब्रह्म मन की भांति वेगवान, अनघ, निष्पाप, पर्वतरूप, पर्वत बासी प्रिय श्रेष्ठ आत्मा, जगत के पिता, सभी कर्मों के स्थान, सदा प्रसन्न मंगलमूर्ति, मंगलसेवित ॥२८०॥ महातपस्वी, दीर्घतपस्वी, अतिस्थूल, वृक्ष स्वरूप, स्थिर दिन, वर्णकाल, सर्वव्यापक प्रमाणरूप, उत्तम ॥२९०॥ ऋतु सत्यरूप, संवत्सर कर्ता, मन्त्रों के आधीन, सबके तारक, अजन्मासर्वेश्वर, निवृत्त एवं निष्यन्तरूप, महातेजस्वी, अति बलवान, योगसिद्ध ॥३००॥ अति पराक्रमी, सफलस्वरूप, सबके आदि, अधर्मीजन अज्ञेय, कुबेररूप, प्रकाशमय, मनस्वी, सत्यस्वरूप, पाप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विनाशक, सुन्दर कीर्ति शोभामय ॥३१०॥ मालाधारक, वेद वेदांगज्ञाता, मुनि प्रकाश, प्रकृतिरूप, भोजन के भोक्तापुरुष-रूप, लोकनाथ दुष्टजनों से आराधनारहित, नित्य अमृतमय, शान्तरूप बाणहस्त ॥३२०॥ परम प्रतापी, कमण्डलुधारक, धनुर्धर, मनवाणी से परे, इन्द्रिय रहित, अत्यन्त मायाधारी, सर्वव्यापक, चार मार्गों वाले समय में प्राणियों को प्रवृत्तकर्त्ता, महाउत्साही ॥३३०॥ महाबली, श्रेष्ठ बुद्धि, महावीर, भूतगण सेवित, त्रिपुरदैत्य विनाशक, रात्रि में विचरने वाले, शक्ति शाली, महाकान्त, अज्ञेयशरीर, शोभामय ॥३४०॥ सभी आचार्यों के मन की गतिज्ञता, शास्त्र रचयिता, विधिमाया रचयिता, नियत तथा स्थिर आत्मा, चररूप, तेजों के तेजरूप, कान्तिरूप सबके ॥३५०॥ ओंकार अक्षररूप, ज्ञानवान, मन्त्र रूप, समभाव, तत्वरूप, नौकारूप, सत्ययुगाति, युग प्रवर्तक, अति गम्भीर वृषभवाहन, सर्वमहान् ॥३६०॥ महात्माओं के प्रिय, सुलभ तत्वशोधक, तीर्थस्वरूप, तीर्थनाम, तीर्थों में देखने योग्य, तीर्थों में आपका सागररूप, प्राणियों के स्थान, अजेय ॥३७०॥ विजयज्ञाता, प्रशंसनीय, प्रमाणज्ञाता, सुवर्ण कवच के धारक, देवरूप, विद्यास्वामी, बिन्दु के आश्रय, वायु स्वरूप, त्रितापनाशक, पापनाशक ॥३८०॥ निर्मल प्रपंची विस्तारक, कठिन माया द्वारा स्वरूप छिपाने वाले, साधक कारणमय, स्वयं सर्वकर्ता, सभी बन्धनों से मोचक सतचित् मात्ररूप ॥३९०॥ व्यवस्थापक, स्थानदाता, ब्रह्मस्वरूप, शत्रुओं को खंड-खंड करने वाले सर्व सुन्दर, द्वैताद्वै तपस्वरूप, सदा नूतन आत्मा में स्थित, वीर स्वामी, वीर भद्रगणरूप ॥४००॥ वीरों के आसन, विधान में गुरु, शूरवीर शिरोमणि, सर्वदाता, अति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रानन्दरुप, नन्दीश्वररुप, जगतरुप सन्तान को नित्य धारण करने वाले, त्रिशूल धारक, विष्णु रुप से युगोंपर्यन्तस्थित कल्याण बालखिल्य स्वरुप ॥४१०॥ अतीव पराक्रमी, ताप वाले किरणों के स्थान सूर्य स्वरुप, श्रोत्र इन्द्रियरहित आकाश में विचरण करने वाले, सुन्दर एवं आनन्द युक्त, सुन्दर शरण वेदज्ञों पर प्रेमकर्ता, अमृतस्वामी, इन्द्ररुप विश्वामित्र स्वरूप ॥४२०॥ प्रकाशमान, प्राणियों के अन्त में सभी कार्यों के साधक, मस्तक पर नेत्रधारी, सम्पूर्ण विश्व-शरीर, तत्वरूप, संसार चक्रधारक, सफल दण्डदाता, सबके अन्तर्गत प्रलय में संसार के संहर्ता ॥४३०॥ ब्रह्मतेज स्वरूप, मुक्तिदाता, माया से परे, एकत्रित कर्ता, व्याघ्र के कोमल चर्म के धारक, छविमय अतिदीप्त वाले वैद्यरूप, वाणी के नाथ, दिवाकर ॥४४०॥ रसग्रहणकर्ता, अग्निरूप, अग्निरूप से स्रव तथा वायुरूप, शोषणकर्ता, शासन के लिए यमरूप, युक्ति से उन्नत कीर्तिमय, प्रेमस्थान, शत्रु विजेता कैलाशनाथ, सुन्दर जगत रचियता ॥४५०॥ सूर्यनेत्र, श्रेष्ठ विश्वरूप, निर्भय, विश्वपालक, कर्मों के फलदाता, जन्म-मरण रहित, मंगल स्वरूप पवित्र श्रवण कीर्तन प्रसिद्ध, विश्वनाशक ॥४६०॥ ध्येय दुःस्वप्न नाशक संसार सागर से उद्धार करने वाले पापियों के नाशक, भली-भाँति ज्ञेय सहन न कर सकने वाले पराक्रमी, उत्पत्ति रहित अनादि पृथ्वी स्वर्ग की शोभा, किरीट धारक ॥४७०॥ स्वर्ग के स्वामी जगत रक्षक विश्वरक्षक अनेक गति-युक्त उत्तम, बाजूबन्द धारक, जन उत्पादक जगत के जन्मादि कारण प्रेम युक्त, नीति युक्त, नीतिज्ञ सर्व स्वामी ॥४८०॥ वशिष्ठरूप, कश्यपरूप, प्रकाशमय भयंकर, भयानक, पराक्रमी,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ॐ रूप, उत्तम मार्ग पर आचरण करने वाले, महाकोष उत्तम धन जन्म के स्वामी ॥४९०॥ सबसे बड़े देव, सभी वेदों के पूर्ण ज्ञाता सबके साररूप तत्वज्ञ, एक रूप सबमें व्यापक विष्णु विभूषण ऋषि एवं ब्राह्मण रूप परमवैभव जन्म जरामरण से रहित ॥५००॥ पंचतत्वोत्पादक विश्वेश्वर, मंगल कर्त्ता आदि अन्तरहित सबके कारण सर्वप्रिय पांचों भक्तों के साथ लोकों के धारण कर्ता, शिव गायत्री प्रेमी पवित्र किरण धारक विश्व व्यापी ॥५१०॥ दिनकर्मा बालकरूप कैलाश पर्वत प्रिय, संसार के राजादेव, शत्रु विनाशक, नेमि रहित एवं इच्छित नेम, आनन्ददाता सर्व ताप रहित, स्व प्रकाशमान परम प्रकाश ॥५२०॥ परम शरीर व्याघ्र चर्मधारी, पिंगल वर्ण की दाढ़ी-मूंछों वाले मस्तक पर नेत्रधारी वेदरूप विज्ञान रूप अमृतदाता जगत के जन्मदाता दुष्टों को दुःख देने वाले जग विश्वान एवं आदित्यरूप, संसार से परे ॥५३०॥ बृहस्पति रूप, मंगल एवं गुण रूप नामधारी, पापी नाशक, पवित्र दर्शन, उदार यशस्वी, उद्यमकर्ता, नित्य योगी, सत्य रक्षक, असत्य नाशक, आकाशरूप उसमें शवनक्षत्र माला रूप, स्वर्ग के स्वामी ॥५४०॥ स्वात्म-पद के आधार, शुद्ध स्वरूप, अघनाशक मणिप्रदाता, आकाश विहारी, हृदय कमल में स्थित इन्द्रस्वरूप, शान्तिरूप, अचंचल धर्म, तापयुक्त गृह स्वामी ॥५५०॥ कृष्णरूप सर्व समर्थ अत्याचार विनाशी, अधर्म के शत्रु, अगम्य अनेकजनों से आराधनीय, वेद स्थान महानगर्भ स्थानधारी धर्म की उत्पत्ति के स्थान, धन के आगम रूप ॥५६०॥ जगत के हितैषी मोहन कर्ता बुद्ध अवतार बालरूप आनन्ददाता सुवर्ण प्रकाशमान प्राणियों में रमण कर्ता नारदरूप रोग रहित नेत्रस्वामी विश्वामित्ररूप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥५७०॥ धन के स्वामी महानतेजस्वी एवं अत्यन्त तेजस्वी परम उत्तम सबके माता-पिता पवनरूप सर्पों की मालायें धारण करने वाले पुलस्त्य ऋषिरूप, पुलहस्वरूप अगस्त्यरूप ॥५८०॥ जातुकर्ण्यऋषिरूप पराशररूप मायामय आवरण से रहित ब्रह्माजी के पुत्र विष्णु रूप आत्मस्वरूप अनिरुद्धस्वरूप अत्रिरूप विज्ञानरूप महायशस्वी ॥५९०॥ लोकवीर शिरोमणिशूर क्रोधी सफल पराक्रम नागसर्प धारक महाकल्परूप कल्पवृक्षस्वरूप कलाधारी अधिक तेजस्वी स्थावर ॥६००॥ कान्तिमान पराक्रमी उन्नत आयु एवं शब्द के स्वामी वाचाल दुष्टनाशक अग्नि सारथी अस्पृश्यरूप अतिथिरूप शत्रु विनाशक वृक्ष के नीचे आसनधारी ॥६१०॥ उत्तम श्रवणकर्ता पितृश्वरों प्रति खीर प्रापक अग्निरूप उत्तम तपस्वी विश्व को भोजन दाता भजनीय जरा आदि रोग विनाशक बड़े अश्व के वाहन वाले आकाश के कारण सुन्दर अंग वाले ॥६२०॥ अज्ञान अन्धकार के निवर्तक ग्रीष्मरूप निर्मल मेघरूप शत्रु पर विजेता सुखदायक वायुरूप संहार कर्ता आनन्ददाता शिशिररूप बसन्तरूप वैशाख मासरूप ॥६३०॥ ग्रीष्मभाद्रपरूप धान्यप्रापक शरदहेमन्तरूप अंगिरा-ऋषि रूप दत्तात्रेयस्वरूप निर्मलविश्ववाहन पापरहित पुर विजेता इन्दु रूप वेदत्रयी ज्ञाता नूतन गज की भांति मद वाले मन एवं बुद्धिरुप ॥६४०॥ अहंकारस्वरुप क्षेत्रज्ञ क्षेत्ररक्षक जम-दग्निरुप सागररुप सर्व मुक्ति अमृतवान पिलाने वाले विश्व में गालवरुप भयंकरता रहित सबमें बड़े यज्ञरुप ॥६५०॥ शुभ कल्याण दाता पर्वतरुप गगन कुन्दवत् शोभा वाले दैत्यशत्रु शत्रु-नाशक रात्रि रचयिता बुद्धिमान लोक एवं कल्प के धारक, ऋग, यजु, साम, अथर्व रुप ॥६६०॥ धर्म आदि चार भाव कुशल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चतुर पुरुषों के प्रेमी वेदों के रूपस्वरूप तीर्थ के देवता, तीर्थ स्नान, शिव स्थान वाले अनेक बलों से युक्त विशालकाय, सर्व स्वरूप चराचर रूप, न्याय कर्ता रचयिता तथा नेता ॥६७०॥ न्याय से पहिचानने के योग्य अति आनन्द उत्पादक हजार शिरों वाले, देवों के राजा, सभी शस्त्रों के नाशक मुण्डित सिर, सुन्दर स्वरूप, श्रीवत्सस्वरूप धारक इन्द्रिय दमन कारक ॥६८०॥ शब्द रूप, उत्तमगुणरूप, पिंगलवर्ण के नेत्रों वाले, अनेक नेत्रधारी, नीलकण्ठ दुःख रहित, सहस्त्र भुजाधारी, सबके स्वामी, भक्तों के शरणदाता, सर्वलोकधारक, ॥६९०॥ पदमासन लगाने वाले, परम तेजस्वी, नित्य फलदायक, पदमगर्भ, महागर्भ, विश्वगर्भ वाचाल, सर्वज्ञाता, वरदाता, वर्णनीय ॥७००॥ महानाद रूप सुरासुर गुरु, सुरदैत्य नमनीय, देव दानव मित्र, ईश्वर, स्वामी, अलौकिक रूपवान, देवदानव आश्रय, परम देव निश्चिन्त ॥७१०॥ ब्रह्मादिक देवों की आत्मा, शीघ्र प्रकट होने वाले, महा असुरों के मारने में व्याघ्र रूप, देवों में सिंह, विनकर्ता, देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु ब्रह्मादि से श्रेष्ठ, अपने ही ज्ञान में रमणकर्ता, शोभायुक्त चूड़ाधान ॥७२०॥ श्री पार्वती के प्रेमी, वज्र हस्त तलवार धारक, नृसिंह मद विनाशक, ब्रह्मचारी, स्वरूप लोकों में विचरण करने वाले, धर्म का आचरण करने वाले, धन के स्वामी नन्द के ईश्वर ॥७३०॥ अन्त रहित, नग्न रहने वाले, व्रतधारी, अवगुण रहित लिंग स्वामी, देव स्वामी, युग स्वामी, युग नाशक, स्वर्गवासी, स्वर्ग के पवन ॥७४०॥ षट जाति सात स्वरों के चालक, वाणी के स्वामी, बीज उत्पादक, कार्यकर्ता, धर्म संचालक कपट रूप धारक, लालच से रहित, उत्तम स्वभाव, सर्वस्वामी, श्मशानवासी, त्रिनेत्रधारी ॥७५०॥ सेतु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

स्वरूप, मूर्ति आकार से रहित, सबके ऊपर रहने वाले, त्र्यम्बक सर्प आभूषणधारी, अन्धकासुरशत्रु, मयदानवशत्रु विष्णु स्कन्ध को गिराने वाले, दोष रहित, नित्य गुणवान ॥७६०॥ दक्ष के शत्रु, पूषा के दांत तोड़ने वाले, सर्व सम्पन्न कर्ता, पवित्र, श्रेष्ठ कुमार वाले, सुन्दर नेत्रधारी, उत्तम मार्ग रक्षक, भक्तों के प्रेमी, धतूरे के सेवन कर्ता, पवित्र यशवान ॥७७०॥ व्याधि रहित मन से भी तीव्र, तीर्थकर्ता जटाधारी नियतिरक्षक, स्वामी जीवन को समाप्त करने वाले, अपरिछिन्न, स्वर्ण समान वीर्य धारी, धनदाता, श्रेष्ठ गति ॥७८०॥ सिद्धिदाता, सत्चित् रूप, उत्तम जाति, दुष्ट नाशक, कलाधारी महाकालरूप, प्राणियों के सत्व में स्थित, लोकों में लावण्यता युक्त, सबको सुन्दरता देने वाले सुख स्थान, चन्द्रसंजीवनी रूप ॥७९०॥ परमशासक, सृष्टि तथा प्रलय में ग्राह स्वरुप, महेश्वर, संसार बन्धु तथा स्वामी, जीवकृत, शुभ अशुभ ज्ञाता, चर्म अम्बर से शोभित, अविनाशी, अक्षर रूप प्रिय ॥८००॥ सभी शास्त्रों के ज्ञाताओं में अग्रणी, तेजस्वी, कान्तिमय, लोक मान्य, कृपासागर मन्द-मुस्कान युक्त प्रसन्न मन अजेय कठिन पराक्रमी प्रकाशमय ॥८१०॥ जगन्नाथ निराकार जल स्वामी, तूमा की वीणा वाले, विशालकाय, शोक रहित, शोक नाशक, त्रिलोकी रक्षक, त्रिलोकी नाथ, पवित्रकर्ता ॥८२०॥ जिनसे ज्ञान प्रकट होकर संसार को मिलता है वे उत्तम, ज्ञान, गुप्त लक्षणों वाले, देवरूप, स्वरूप, स्पष्ट अस्पष्ट रूप, सभी प्रजा के स्वामी, संसार से परे, मंगलमय धन, घ्राण सत्व, मान धन ॥८३०॥ संयम रूप, ब्रह्मा विष्णु रूप प्रजापालक, योगी, योगियों की गति, पक्षी रुप, विश्व रचयिता, कर्म फल दाता, जगत धारक ॥८४०॥ रचने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वाले, विनाशक, चतुर्भुज, कैलाश की शिखर के निवासी, जगत व्यापक नित्य गतिरूप, हिरण्यगर्भ, पारब्रह्म, जीवपालक, पृथ्वी-नाथ ॥८५०॥ ब्राह्मणों के प्रेमी, देवप्रिय, देवताओं के नाथ, देवों में वायु, ब्रह्मा एवं सूर्यसमान, देवगण चिन्तनीय, त्रिनेत्र-धारी, विषमने वाले ॥८६०॥ उपदेशदाता, धर्मक, समता रहित, निरभिमान, निर्मोह, निरूपद्रव, अभिमानियों के अभि-मान नाशक, सदा प्रसन्न, जगत के प्रसन्न कर्ता, सभी अर्थों के धारण करने वाले एवं हजारों किरणों वाले ॥८७०॥ भस्मरूप भूषण से शोभित सरल आकार सम्पन्न, वामदेव, भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों काल के स्वामी जगत बनाने वाले, शत्रुओं के धन नाशक, सबके कारण, इच्छा रहित बड़े खजाने वाले, मुक्तिदाता, निष्कंटक ॥८८०॥ नित्यानन्द रूप, कपट रहित, कपट के नाशक बली उद्यमी सत्व रहित, सत्य स्नेह कर्ता शास्त्र रचयिता निष्कल्पगुणज्ञ सर्व आत्मा अनेक कार्यकर्ता सुन्दर प्रेमी ॥८९०॥ सुखदाता लघुरूप धारी सुन्दर भुजा वाले दक्षिणी पवनरूप नन्दी एवं स्कन्द के धारकसर्वज्ञ प्रकट होने वाले प्रीतिवर्धक किसी से न हारने वाले सहन करने में समर्थ ॥९००॥ गौओं के स्वामी सच्ची सवारी वाले किसी के आश्रम पर न रहने वाले अपने गौरव पर निर्भर, पूर्ण पवित्ररूप यशरूप धन वाले वाराह के दन्तरूप सींग वाले बल एवं सेना वाले सर्प के नेता ॥९१०॥ वेद प्रकाशक वेदरूप जगत् के बन्धु अनेकों रूप धारने वाले विष्णु के कल्याण के आरम्भक सज्जन कल्याण कर्ता समान यशस्वी भूशायी सबके शृ गार सबकी सम्पत्ति ॥९२०॥ जीवों को रचने वाले जीवों को बढ़ाने वाले अचल भक्तों जैसे शरीर वाले काल के क्षीण करने वाले कलानाथ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सत्यव्रती महात्यागी सदाशान्त रूप धन तथा आजीविका दाता भंडारी ॥९३०॥ रागादि सहित चतुर शुभकर्ता सुन्दर नामधारी शुभरूप वाहना रहित संसार दृष्टा अकर्ता गुण ग्रहण कर्ता स्वर्ण समान सुन्दर मंगलरूप मध्यस्थ न्याय कर्ता ॥९४०॥ शीघ्रगामी शीघ्रया नाशक शिखाकवच त्रिशूल धारक जटाधरी सर्प के कुण्डलों वाले सदा अमर रहने वाले समदृष्टि प्रकाश मय मणि-स्वरूप गणनारहित अपरिमित शरीर परम पराक्रमीज्ञेय॥९५०॥ विशिष्ठ योगीवर अपर मुनिजन स्वामी सबसे उत्तम कोमल एवं प्रिय शरीर धारी देव स्वामी ध्यान के योग्य समस्त शब्द रूप श्रेष्ठ तपस्वी सहायक समय काल के भी काल ॥९६०॥ शुभकर्ता वासुकी सर्प के रचयिता उत्तम धनुष धारक पृथ्वी धारने वाले निष्कलंक बन्धन रहित दिन के मणि पार करने के लिये नौका रूप सफल साधना सिद्धिदाता माया युक्त विशाल छाती वाले ॥९७०॥ विशाल भुजाधारी संसार के कर्ता सन्तान रहित नर नारायण के प्रेमी निर्लेप माया रहित विशिष्ठ अंगों वाले व्याधाओं के नाशक स्तुतिमय स्तुति से प्रसन्न होने वाले ॥९८०॥ स्तुति के योग्य सर्वव्यापक व्याकुलता रहित निरवधस्वरूप मुक्ति दाता विद्याओं के भंडार उत्तम कर्मकर्ता शान्तबुद्धि अपराजित संग्रह कर्ता सर्व सुन्दर ॥९९०॥ व्याघ्र चर्म धारी, पृथ्वी स्वामी संकल्प ऋषि रूप रात्रि के स्वामी, परमार्थ रूप मुक्ति के गुरु भक्तजन अर्पित भेंटों को स्वीकार करने वाले शरणागत, रक्षक विद्वानों पर दयालु पार्वतीजी के साथ रहने वाले रस के स्वादज्ञाता वीर्य दाता समस्त तत्व के आश्रित भगवान् शंकर सदाशिव मेरी रक्षा करो ॥१०००॥

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

छत्तीसवां अध्याय

(शिव सहस्र नाम की महिमा। भगवान सदाशिव का भगवान विष्णु को दिव्य सुदर्शन चक्र प्रदान करना और कहना कि जो कोई पुरुष प्रातःकाल उठकर मेरा पूजन करते हुए, मेरे हजार नामों का पाठ करेगा उसे सभी सिद्धियां अवश्यमेव प्राप्त होंगी।)

श्रीसूतजी बोले—हे मुनीश्वरो! इस प्रकार भगवान विष्णु ने शिव-सहस्र नाम का पाठ करके एक-एक नाम पर एक-एक कमल पुष्प चढ़ा-चढ़ाकर भगवान सदाशिव का पूजन किया। भगवान विष्णु के द्वारा इस प्रकार किये गये पाठ एवं पूजन से भगवान सदाशिव ने साक्षात प्रकट होकर भगवान विष्णु को सुदर्शन चक्र प्रदान करते हुए कहा—विष्णुजी! आपने अपने भय-हरण के लिये जो मेरा हजार नामों का जाप तथा पूजन किया है उससे मेरी कृपा द्वारा आपके सभी मनोरथ पूरे हो जाएंगे। यह सुदर्शन चक्र आपके हर प्रकार के भय को समाप्त कर देगा। आप इसे धारण कीजिये। जो कोई प्रातःकाल उठकर मेरा पूजन करेगा तथा खड़ा होकर मेरे इन हजार नामों का पाठ करेगा उसको सभी सिद्धियां प्राप्त हो जायेंगी। विष्णुजी! मैं आप पर बहुत प्रसन्न हूं। अब आप अपनी इच्छानुसार वर मांगिये। भगवान विष्णु बोले—प्रभो! आप इस दास पर सदा-सदैव अपनी कृपा बनाये रखिये। मैं सदा आपकी भक्ति में लगा रहूं। बस आप यही वर मुझे प्रदान कीजिये। भगवान सदाशिव ने कहा—आप सभी देवताओं से श्रेष्ठ होकर स्तुति के योग्य विश्वम्भर कहलाओगे। श्रीसूतजी ने कहा—हे मुनीश्वरो! इस प्रकार कहकर तथा भगवान विष्णु को सुदर्शन चक्र प्रदान करने के पश्चात भगवान सदाशिव अन्तर्ध्यान हो गए। और उनके जाने के बाद भगवान विष्णु उनके ध्यान में लीन हो गए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सैंतीसवां अध्याय

(शिव भक्त महाराजा सुद्युम्न की कथा।)

श्रीसूतजी ने कहा—हे मुनीश्वरो! प्राचीन काल में जिन-जिन देवताओं, ऋषियों-महर्षियों तथा राजाओं ने भगवान सदाशिव का पूजन किया था। अब मैं आपको उन पवित्र मन-मोहक तथा प्रेरणादायक कथायें सुनाता हूं। ध्यानपूर्वक सुनिये, पहले-पहल यह कथाएं श्रीब्रह्माजी ने देव ऋषि नारद को सुनाई थीं। श्रीब्रह्माजी ने कहा—हे नारदजी! आप भगवान सदाशिव की पवित्र कथा सुनिये। भगवान सदाशिव का पूजन मैंने तथा भगवान विष्णु ने लक्ष्मी सहित किया था। जिससे कि भगवान सदाशिव ने हमारी समस्त कामनाएं पूर्ण कर दी थीं। आज भी भगवान सदाशिव का पूजन सभी ऋषि-महर्षि दुर्वासा, विश्वामित्र, शक्ति, दधिचि, गौतम, कणाद, भार्गव, बृहस्पति, वैश्म्पायन, पाराशर, व्यास, उपमन्यु, याज्ञवल्क्य, जैमिनी गर्ग आदि किया करते हैं। यह मुनीश्वर भगवान सदाशिव के परम भक्त हैं। इसी प्रकार शुक, शौनक आदि भी भगवान सदाशिव का पूजन किया करते हैं। अदिति ने बधू के साथ श्रद्धा भक्ति-पूर्वक शिव पार्थिव लिंग का पूजन किया। इन्द्र आदि लोकपाल वसुक हाराजिक देवता, साध्य गन्धर्व किन्नर तथा अन्य उप-देवता भी भगवान सदाशिव का पूजन करते हैं। हिरण्यकशिपु, हिरण्याक्ष, प्रह्लाद, विरोचन, वाणासुर, हिरण्याक्षवाण, पुत्र वृषपार्वादनु, दानव आदि सभी भगवान सदाशिव के भक्त हुए हैं। शेष, वासुकि, तक्षक, गरुड़ आदि पक्षीगण भगवान सदा-शिव के अनन्य भक्त हैं। सूर्य, चन्द्र स्वायम्भुव सभी मनुराजा प्रियव्रत उतानपाद ध्रुव ऋषभ भरत एवं इनके सभी भाई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान सदाशिव के अनन्य भक्त हुए हैं। महाराजा दिलीप रघु नीतिज्ञ अज गुरु वसिष्ठ की आज्ञा से राजा दशरथ आदि सभी सूर्यवंशी राजा-रानियों के साथ भगवान सदाशिव के पूजन में लगे रहे। तभी तो भगवान सदाशिव की कृपा से महारानी कौशल्या के गर्भ से भगवान विष्णु के अवतार भगवान श्रीरामचन्द्र जी महाराज, सुमित्रा से लक्ष्मणजी, शत्रुघ्न एवं कैकेई से भरत यह चार पुत्र उत्पन्न हुए। भगवान श्रीरामचन्द्र जी महाराज भगवान सदाशिव के अनन्य भक्त तथा रुद्राक्ष एवं भस्मधारी थे। शिव-पूजन के कार्य में लगे रहते थे। श्री वसिष्ठजी ने अपनी तपस्या के बल द्वारा सुघुम्न को पुत्र हो जाने का वर दिया। सुघुम्न एक दिन उस वन में गए जहां जाने पर पुरुष स्त्री भाव को प्राप्त हो जाता है। ऐसा भगवती पार्वती को प्रसन्न करने के लिए भगवान सदाशिव ने कह रक्खा था। बस उस वन में जाकर सुघुम्न स्त्री हो गए। इसके बाद सुघुम्न ने भगवान सदाशिव का विधिवत पूजन किया। भगवान सदाशिव ने प्रसन्न होकर उसे एक महीने तक स्त्री तथा एक महीने तक पुरुष रहने का वर दिया। पश्चात महाराजा सुघुम्न अपना राज्यपाट अपने पुत्रों को देकर बन में जाकर शिव भक्ति करने लगे और परम पद को प्राप्त किया। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने बद्रीगिरी पर्वत पर जाकर निरन्तर सात महीने तक भगवान सदाशिव की भक्ति की। भगवान सदाशिव उन पर अतीव प्रसन्न हुए। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने उनसे वर पाकर सकल ब्रह्माण्ड को अपने वश में कर लिया। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज के कुल में प्रद्युम्न साम्ब आदि भी भगवान श्रीसदाशिव के अनन्य भक्त हुए हैं। श्रीसूत

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जी बोले—हे मुनिवृन्द ! इस प्रकार अनेक देवताओं, ऋषियों, मुनियों, मनुष्यों तथा राक्षसों ने भगवान सदाशिव की भक्ति की है।

अड़तीसवां अध्याय

(श्रीसूतजी का मुनियों को भगवान सदाशिव के शिवरात्रि के व्रत की विधि बतलाना और इस व्रत की महिमा सुनाना।)

मुनियों ने कहा—हे ब्राह्मण ! जिस व्रत के द्वारा भगवान सदाशिव प्रसन्न होते हैं अब आप कृपा करके उसके सम्बन्ध में हमें बतलाइये। श्रीसूतजी ने कहा—हे मुनीश्वरो ! प्राचीन काल में यह प्रश्न श्री पार्वतीजी ने भगवान सदाशिव से किया था। श्री पार्वतीजी ने शिवजी से कहा—प्रभो ! आप किस व्रत से प्रसन्न होकर अपने भक्तों को भोग तथा मोक्ष प्रदान किया करते हैं ? भगवती पार्वती का प्रश्न सुनकर भगवान सदाशिव बोले—हे कल्याणी ! मुझे सन्तुष्ट करने के लिए तो मनुष्य अनेकों व्रत किया करते हैं किन्तु ऋषियों-महर्षियों ने दस उपवासों को सर्वोत्तम बताया है। इन दस उपवासों को ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा वैश्यों को विधिवत करना चाहिए। इस व्रत की विधि सुनो—प्रत्येक महीने की अष्टमी को उपवास करके रात को व्रत खोलना चाहिए। किन्तु कालाष्टमी को जो व्रत किया जाये उसे रात्रि के समय न खोलना चाहिए यानि उस व्रत को रखकर उस रात्रि को भोजन न करना चाहिए। प्रत्येक महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी को व्रत न रखना चाहिए। दिन के समय भोजन कर लेवे और रात को उपवास करे। शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के व्रत में तो व्रती को रात भर निराहार रहना चाहिए। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के व्रत में रात के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

समय भोजन करे। कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष के सोमवारों के व्रतों में रात्रि के समय भोजन करें। इन सब व्रतों में शिवरात्रि का व्रत उत्तम कहा गया है। उसका फल अन्य सभी व्रतों के फल से अधिक है। यह व्रत फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष में होता है। हे प्रिये! अब तुम इस व्रत का नियम सुनो। व्रती प्रातःकाल उठे। नित्य कर्म से निवटकर स्नान करके पवित्र हो शिवालय में आकर विधि पूर्वक भगवान सदाशिव से प्रार्थना करे—प्रभो! मैं आज शिवरात्रि का व्रत-उपवास धारण करना चाहता हूं मैं चाहता हूं कि आपकी कृपा से यह कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाये। काम क्रोधादि शत्रु मेरा कुछ भी न बिगाड़ पायें। आप प्रत्येक प्रकार से मेरी रक्षा करें। इतना कहकर भगवान सदाशिव की मूर्ति के सामने प्रतिज्ञा संकल्प करे। उसके पश्चात रात्रि होने पर पूजन की सभी सामग्री अपने पास एकत्रित करके उस शिवालय में पहुंचे जहां पर कि शिवलिंग शास्त्रों द्वारा सिद्ध हो। जिसकी प्राण-प्रतिष्ठा शास्त्रों के द्वारा की जा चुकी हो। शिवालय में पहुंचकर समस्त सामग्री शुद्ध स्थान पर रखकर स्नान करे और शुद्ध वस्त्र धारण करके उत्तम आसन पर बैठे। फिर भगवान सदाशिव की पूजा आरम्भ करे। हे विष्णुजी! शिव भक्त को चाहिए कि वेद मन्त्रों के द्वारा चारों पार्थिव लिंगों की रचना करके पांच वस्तुओं से भगवान सदाशिव का पूजन करे। एक सौ आठ बार शिव मन्त्र का उच्चारण करके जल धारा चढ़ावे। जल धारा चढ़ाने से पूर्व लिंग पर से पहले चढ़ाई हुई सब वस्तुएं नीचे उतार लेनी चाहिए। बाद में काले तिलों द्वारा भगवान सदाशिव का पूजन करके शर्व रुद्र, पशुपति उग्र, महान, भीम तथा ईशान इन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आठ नामों को बोलकर कमल पुष्प तथा कनेर के फूल भगवान सदाशिव पर चढ़ाये। उसके पश्चात धूप, दीप, पका हुआ अन्न नैवेद्य आदि निवेदन करे फिर नमस्कार करे। "ॐ नमः शिवाय" इस पंचाक्षर मन्त्र का भी जाप करना चाहिए। जप के बाद धेनुमुद्रा दिखाकर निर्मल जल से भगवान सदाशिव का तर्पण करे। फिर अपनी सामर्थ्य के अनुसार भोजन का संकल्प करे और पूजन का फल भगवान सदाशिव के अर्पण करे।

यह पूजन विधि तो रात के पहले पहर के लिए है। दूसरे पहर में भी उपरोक्त सामग्री भगवान सदाशिव का पूजन करके दो सौ सोलह पंचाक्षर मन्त्रों द्वारा शिवलिंग पर जल चढ़ाना चाहिए। दूसरे पहर में प्रत्येक वस्तु भगवान सदाशिव पर चढ़ाते समय मन्त्र एक बार की अपेक्षा दो बार उच्चारण करे। तिल, जौ, चावल, बेलपत्र, अर्घ्य, बिजौर आदि वस्तुओं से भगवान सदाशिव का पूजन करना चाहिए। खीर का नैवेद्य चढ़ाकर नमस्कार करना चाहिए। उसके बाद पहले पहर में जितना भी मन्त्रों का जाप किया था उससे दुगना जप करना चाहिए। ब्राह्मण भोजन का संकल्प करके पूजा का फल भगवान सदाशिव के अर्पण करके विसर्जन करना चाहिए। तीसरे पहर का पूजन भी पहले पहर के पूजन जैसा ही होना चाहिए। इसमें जौ के स्थान पर गेहूं और फूलों के स्थान पर आक के फूल पूजा में रखने चाहिए। अनेकों प्रकार के धूप, दीप जलाने चाहिएं। नैवेद्य पुए का होना चाहिए साथ में शाक भी चढ़ाना चाहिए। कपूर द्वारा आरती उतारनी चाहिए। अर्घ्य अनार चढ़ाना चाहिए फिर पहिले की अपेक्षा दुगना जप करके विसर्जन कर देना चाहिए। पश्चात चौथा पहर लगने पर भगवान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सदाशिव का आवाहन करके उड़द, कंगनी, मूंग, सातों धातुएं या शंख फूल एवं विल्वपत्र आदि से मन्त्रों का उच्चारण करके विधि पूर्वक भगवान सदाशिव का पूजन करना चाहिए। उसके पश्चात उड़द से बनाये गए पकवान तथा नाना प्रकार के स्वादिष्ट मिष्ठान भगवान सदाशिव को अर्पण करने चाहिएं। सुन्दर तथा उत्तम प्रकार से पके हुए फल एवं ऋतु के अनुसार बड़े प्रेम के साथ भगवान सदाशिव को समर्पित करने चाहिएं। फिर जितना जप पहिले किया था उससे दुगना जप करना चाहिए फिर यथा शक्ति ब्रह्मभोग का संकल्प करना चाहिए। भगवान सदाशिव को नमस्कार करना चाहिए। सूर्योदय तक इसी प्रकार उत्सव मनाते रहने चाहिएं एवं भगवान सदाशिव के प्रेम में मग्न रहना चाहिए। उसके बाद स्नान करके भगवान सदाशिव का पूजन करना चाहिए। फिर रात्रि के समय जितने ब्राह्मणों के भोजन का संकल्प किया था उतने ब्राह्मण तथा यतियों को बुलाकर उनको बड़े प्रेम के साथ भोजन करवाना चाहिये। उसके बाद भगवान सदाशिव को नमस्कार करके हाथों में फूल लेकर नम्रता के साथ प्रार्थना करे।

प्रभो! मुझे आप अपनी भक्ति का वरदान दीजिए कि मैं सदा-सदैव आपकी भक्ति में लीन रहूं। जो कुछ भी जाने अनजाने मैंने आपका पूजन किया है। आप उसे स्वीकार कीजिये। हे दया निधान! जहां पर भी मेरा जन्म हो वहां सबके सब आपके अनन्य भक्त हों। उन्हीं के बीच मेरा वास हो। ऐसा कहकर शिवलिंग पर पुष्पांजलि समाप्त करनी चाहिए। फिर ब्राह्मणों से तिलक करवाना चाहिये और उनका आशीर्वाद प्राप्त करके भगवान शंकर का विसर्जन करे। हे विष्णु! इस विधि के अनु-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सार शिवरात्रि का व्रत करने का बहुत महत्व है। इसका वर्णन करना कठिन है। इस व्रत को करने से शिवजी की असीम कृपा की प्राप्ति होती है। उसे कभी दुःख की प्राप्ति नहीं होती। उस महीने यदि किसी से अनायास ही व्रत हो जाए तो उसको भी मोक्ष की प्राप्ति होती है। सूतजी बोले—भगवान शंकरजी से इस व्रत का वर्णन व विधि विधान विष्णुजी ने भी सुना। सुन कर प्रसन्न होकर भगवान बिष्णु अपने निवास स्थान को चले गए और फिर उन्होंने लोक कल्याण के लिए इस व्रत को किया।

उन्तालीसवां अध्याय

(श्रीसूतजी का मुनीश्वरों को शिवरात्रि के व्रत के उद्यापन की विधि बताना, शिवभक्त को उस दिन निराहार रहना चाहिए। रात्रि के समय शिवालय जाकर भगवान सदाशिव के समीप गौरी तिलक नामक मण्डप की रचना करनी चाहिए। उसके मध्य में लिंगतोभद्र सर्वतोभद्र आदि मण्डप बनाने चाहिएं। फिर प्रजापत्य नाम के कुम्भों को लेकर वस्त्र फल दक्षिणा आदि उन पर स्थापित करनी चाहिए। इस प्रकार विधि-विधान से किया गया व्रत सफल होता है और सब मनोरथों को पूर्ण करता है।)

श्रीसूतजी बोले—हे ब्राह्मणो! अब हम आपके सन्मुख शिवरात्रि के व्रत की उद्यापन की विधि कहेंगे। दत्तचित होकर सुनिये। शिव भक्त को चौदह वर्ष तक शिवरात्रि का व्रत करते रहना चाहिये फिर उद्यापन करना चाहिए। जब त्रयोदशी आवे तो उस दिन केवल एक ही बार भोजन करना चाहिए। शिव चतुर्दशी को निराहार व्रत धारण करना चाहिए। रात्रि के समय में शिवालय में जाकर भगवान सदाशिव के समीप गौरी तिलक नामक मण्डप की रचना करनी चाहिए। उसके बीच में लिंगतोभद्र, सर्वतोभद्र, आदि सुन्दर मण्डपों की रचना करके प्रजापत्य नाम के कुम्भों को लेकर दक्षिणा आदि उन पर धारण करके उनको स्थापित कर देना चाहिए। सोने अथवा चांदी का एक कलश मण्डप के मध्य में धरना चाहिए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

फिर पलमात्र या अपनी सामर्थ्य के अनुसार भगवान सदाशिव तथा गौरी की मूर्ति बनवाकर उस कलश के ऊपर स्थापित करनी चाहिए। बांए भाग में श्री पार्वतीजी की मूर्ति होनी चाहिये और दांये भाग में भगवान सदाशिवजी की मूर्ति होनी चाहिए। फिर ऋत्विजों के साथ आचार्य का वरन करके, आचार्य के आदेश के अनुसार भगवान सदाशिव के आवाहन से लेकर विसर्जन तक रात के चारों पहर भगवान सदाशिव का पूजन करना चाहिये। रात भर पूजन के साथ-साथ भगवान सदाशिव के नाम का कीर्तन भी होना चाहिए। फिर प्रातःकाल होने पर स्नान आदि नित्य कर्मों से निवृत होकर भगवान सदाशिव का पूजन भक्ति एवं श्रद्धा के साथ करना चाहिए। शास्त्र विधान के अनुसार हवन भी करना चाहिये। उसके ऋतु के अनुसार वस्त्रों से सजाकर बच्चे वाली गौ, अन्य सामान के साथ आचार्य को दान में देनी चाहिए। फिर प्रार्थना करनी चाहिए कि इससे भगवान सदाशिव मुझ पर प्रसन्न हों। फिर मण्डप की सारी सामग्री भी आचार्य को दान कर देनी चाहिए। उसके बाद बड़ी नम्रता के साथ हाथ जोड़कर भगवान सदाशिव से प्रार्थना करनी चाहिए। हे देवाधिदेव! शरणागतों की रक्षा करने वाले महादेवजी! मुझ पर दया करें यह आपकी परम कृपा है। मैं इस व्रत को तो पूर्ण कर सकता हूं। मेरा किया गया यह साधारण भी व्रत हो तो उसे सफल करें। इस प्रकार कहकर बार-बार सदाशिव को दण्डवत एवं प्रणाम करें और अपराधों के लिए क्षमा मांगें। सूतजी बोले—इस विधान से किया गया व्रत सफल होता है और सभी मनोरथों को पूर्ण करता है।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चालीसवां अध्याय

(गुरुद्रुह नामक भील को शिवरात्रि के पवित्र दिन खाने को कुछ न मिलना। इस प्रकार उसका अपने आप शिवरात्रि का व्रत हो जाना। भील का हिरनों को मारने के लिए धनुष पर बाण चढ़ाना और वृक्ष पर से जल और बेलपत्र झड़कर भगवान सदाशिव पर गिरना। भगवान सदाशिव का तुरन्त प्रगट होकर भील को अभय दान देना और उसको मोक्ष प्रदान करना।)

सूतजी बोले—हे ऋषियो! प्राचीन समय में एक प्रदेश में गुरुद्रुह नामक एक भील अपने परिवार के साथ रहा करता था वन के पशुओं का वध तथा चोरी करना ही उसका नित्य का काम था इसी प्रकार करते-करते एक समय शिवरात्रि के व्रत का पवित्र दिन आया। उस दिन उस पापी के घर कुछ भी नहीं था उसके परिवार के सदस्य माता-पिता सभी भूखे मर रहे थे। उन्होंने उससे कहा कि कहीं से खाने के लिए लाओ हमारे तो मारे भूख के प्राण निकले जा रहे हैं जल्दी खाने के लिए कुछ लाओ। घर वालों को भूख से व्याकुल देखकर भील ने अपना धनुष-बाण उठाया और शिकार के लिए वन की ओर रवाना हो गया। वह सारा दिन वन में मारा-मारा फिरता रहा, मगर उसके हाथ कोई शिकार न लगा। रात हो गयी। वह बेचैन हो गया। अब वह यह सोचने लगा कि मैं खाली हाथ घर कैसे वापिस जाऊं? और घर जाकर उनको क्या खिलाऊं? वह लोग मारे भूख के मर रहे होंगे और मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। अतः मैं अब इस तालाब के किनारे बैठ जाता हूं। कोई-न-कोई अवश्यमेव जल पीने के लिए आयेगा बस मैं उसी का शिकार करूंगा और उसे ले जाकर भूख से व्याकुल घर वालों का पेट भरूंगा ऐसा विचार करके भील धनुष-बाण तथा कुछ जल लेकर बेल वृक्ष पर चढ़ गया। रात्रि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के प्रथम पहर में वहां पर एक हिरनी पानी पीने के लिए आई। भील ने उसको देखकर धनुष पर बाण चढ़ाया। उसका ऐसा करना था कि बेल-वृक्ष के कुछ पत्ते और जल के कुछ बिन्दू वृक्ष के नीचे विद्यमान भगवान श्री सदाशिव के ज्योतिर्लिंग पर जा गिरे, बस उस भील द्वारा भगवान सदाशिव का पहिले पहर का पूजन हो गया। और भील के समस्त पाप-ताप नष्ट हो गये। धनुष की टंकार का शब्द सुनकर हिरनी ने कहा—हे भील! यह तुम क्या करने जा रहे हो? भील ने उत्तर दिया—मेरे परिवार वाले सबके सब भूखे मर रहे हैं। उनकी भूख मिटाने के लिए मैं तुम्हारा शिकार करूंगा। हिरनी बोली—तुम लोग बड़े अन्याई हो दया का नाम तक नहीं जानते। यदि मेरा वध करने से तुम्हारे परिवार वालों की भूख मिट जाये तो इस से मेरा जन्म सफल हो जायेगा। वह लोग प्रशंसा के योग्य हैं जो कि संसार में दूसरों के लिए कष्ट उठाते हैं। और उनका कष्ट दूर करते हैं। तुम थोड़ी देर के लिए रुक जाओ मैं अपने बच्चों को अपनी बहन के हवाले करके अभी-अभी वापिस आती हूं। फिर तुम मुझे मारकर अपने घर वालों के पास ले जाना और उनकी भूख मिटाना। भील ने हिरनी को घर जाने की आज्ञा दे दी। वह चली गई और पेड़ पर बैठे हुए भील को जागते हुए रात्रि का दूसरा पहर बीत गया। जब तीसरा पहर लगा तो उस समय एक मोटा तगड़ा हिरन वहां आ पहुंचा। उसे देखकर भील ने एक बार फिर धनुष पर बाण चढ़ाया जिससे एक बार फिर शिवलिंग पर जल व बेल के पत्ते झड़कर गिरे इससे उसके तीसरे पहर की पूजा हो गई। हिरन ने उसके चढ़े हुए बाण को देखकर पूछा कि आप यह क्या करने लगे हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उस हिरन के प्रति भी उसने वही उत्तर दिया जो कि प्रथम कह चुका था। तब हिरन ने अनुनय विनय से कहा कि हे भीलराज! मैं अपने बच्चों को धैर्य देकर अभी लौटकर आता हूं। यह मैं शपथ पूर्वक कहता हूं आप विश्वास रखिये। भील ने यह सुनकर उसे भी जाने की आज्ञा दे दी। हिरन जल पीकर घर की ओर चला गया उसे भील ने जल्दी लौट आने के लिए कह दिया। तब वे तीनों घर जाकर एकत्रित हुए आपस में अपना-अपना वृत्तांत सुनाकर बोले—हमने भील के आगे वापिस लौटने की शपथ ले रखी है। इसी कारण हमें वहां अवश्य जाना चाहिए। तब उन्होंने अपने बच्चों को धैर्य दिया और आप चलने को तैयार हो गये तब उस हिरनी ने कहा जो कि प्रथम प्रतिज्ञा करके आई थी। वह बोली—प्राण-नाथ! आप अपने बच्चों को सम्भालें और यहां रहें। मेरी छोटी बहिन भी आपके साथ रहेगी। मैं अब भील के पास जाना चाहती हूं। क्योंकि मैंने उससे वायदा किया हुआ है। उसकी बात सुनकर छोटी हिरनी ने कहा—बहिन! मैं तो आप की दासी ठहरी। इसलिए मैं क्यों न जाऊं। उसकी बात सुनकर हिरन ने कहा—प्राणप्रिय! माता के बिना बच्चे नहीं पाले जा सकते। अतएव तुम दोनों बहिनें यहां रहो और बच्चों की देखभाल करो और मुझे जाने दो। हिरन की बात सुनकर दोनों हिरनियां बेचैन हो गईं। हिरनी बोलीं—स्वामिन! विधवाओं का जीवन भी भला कोई जीवन होता है। यदि आप ही न रहे तो फिर हम भला किस प्रकार जीवित रह सकती हैं? इसलिए हम भी वहां अवश्य जायेंगी। और आपस में इस प्रकार समझौता करके तथा बच्चों को समझाकर वह तीनों चल दिये। बच्चों ने जब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देखा कि हमारे माता-पिता जा रहे हैं तो सोचा कि हमें भी उनके बिना यहां नहीं रहना चाहिए। चुनांचि यह सोचकर वह भी उनके पीछे-पीछे हो लिए। फिर वह सब-के-सब भील के पास जा पहुंचे। भील ने उनको देखकर धनुष पर बाण चढ़ाया। धनुष पर बाण चढ़ने की देर थी कि जल तथा बेलपत्र झड़कर भगवान सदाशिव पर गिर पड़े और उसके चौथे पहर की पूजा हो गई और उसके सभी पाप-ताप नष्ट होकर उसको सदज्ञान की प्राप्ति हो गई। हिरन व हिरनियों ने उससे कहा—कृपया शीघ्रातिशीघ्र हमारा वध करो ताकि हमारी यह देह सफल हो जाये। भील को चूंकि अब भगवान सदाशिव की कृपा से ज्ञान प्राप्त हो चुका था, अतः वह सोचने लगा कि देखो मुझसे यह पशु ही हजार गुना अच्छे हैं जो कि परोपकार परायण होकर अपना शरीर तक दे रहे हैं। और एक मैं इतना पापी हूं कि जो मनुष्य जन्म पाकर भी इतना बड़ा हत्यारा बन चुका हूं। आज तक मैंने किसी का भी तो भला नहीं किया। भगवान जाने मुझे कौन सी गति प्राप्त होगी। सूतजी बोले—इस प्रकार विचार करके भील उन हिरन व हिरनियों से कहने लगा—हे मृग-मृगियों! तुम धन्य हो। तुम्हारा जीवन सफल है। मैं अब तुम्हें नहीं मारूंगा। तुम्हें अब डरना नहीं चाहिए। बस भील का इतना कहना था कि वहां पर भगवान सदाशिव प्रकट होकर बोले—हे भीलराज! मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूं। तुम अब मुझ से अपना मन चाहा वर मांग सकते हो। भगवान शंकर की अपने ऊपर इतनी कृपा देखकर भील की आंखों में आंसू आ गये वह भगवान सदाशिव के चरणों में गिर पड़ा। भगवान सदाशिव बोले—हे भीलराज! मैं तुम पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अत्यन्त प्रसन्न हूं ! तुम अब श्रृंगवेरपुर की राजधानी में जाकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करो। एक दिन तुम्हारे यहां भगवान श्री रामचन्द्रजी महाराज पधारेंगे। उनके साथ तुम्हारी मित्रता हो जायेगी। इतना कहकर भगवान सदाशिव अन्तर्ध्यान हो गये। भील भगवान सदाशिव के आदेशानुसार श्रृंगवेरपुर में आकर बस गया। उसने इच्छित भोग प्राप्त किये और सभी प्रकार के भोग भोगकर भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज के आग्रह से उसने परम पद प्राप्त किया। सूतजी बोले—हे मुनियो ! जब बिना जाने एक पापी भील से शिव चतुर्दशी का व्रत हो गया और उस व्रत के उपवास से उसे मोक्ष की प्राप्ति हो गई। तो फिर जो लोग ज्ञानी हैं उन्हें भला इस व्रत के धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति क्यों न होगी ? अवश्य होगी।

इकतालीसवां अध्याय

(भक्ति एवं ज्ञान का वर्णन। ब्रह्मा एवं विष्णु धर्म, अर्थ, काम प्रदान कर सकते हैं किन्तु मुक्ति केवल भगवान सदाशिव ही दे सकते हैं। भक्ति के प्रकार श्रवण, कीर्तन आदि भेदों से नौ प्रकार की भक्ति।)

ऋषि बोले—हे सूतजी ! अब आप कृपा करके बतायें मुक्ति क्या वस्तु है ? तब सूतजी बोले—हे ऋषियो ! इस प्रकार भगवान शंकर के उपवास व्रत करने से सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। व्रत को उत्तम सुखदायक, सारूप्य, सालोक्य और सायुज्य चारों प्रकार की मुक्ति प्राप्त हो जाती है। धर्म, अर्थ, काम यह तीनों श्रीब्रह्मा, भगवान श्रीविष्णु भी प्रदान कर सकते हैं किन्तु मोक्ष देने वाले तो केवल भगवान सदाशिव ही हैं। श्री ब्रह्मा भगवान श्रीविष्णु रुद्र यह तीन देवता सत्व, रज, तम इन तीन गुणों के स्वामी हैं। मगर भगवान सदाशिव तो परब्रह्म

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। भगवान सदाशिव प्रकृति से परे हैं। हे ऋषियो! भगवान सदाशिव विज्ञानमय, अव्यय, सर्वदृष्टा, ज्ञानलभ्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों के दाता हैं। हे मुनीश्वरो! कठिनता से प्राप्त होने वाली कैवल्य नाम की पांचवीं मुक्ति भी है। जिससे सारी सृष्टि उत्पन्न होती है तथा उस सृष्टि का पालन होता है, मैं अब उसका स्वरूप एवं गुण कहूंगा। भगवान श्री सदाशिव का स्वरूप सकल एवं निष्फल भाव से दो प्रकार का है। यह स्वरूप तो श्री ब्रह्मा, भगवान श्रीविष्णु, कुमार, नारद, शुकदेव, व्यास आदि मुनिजन कोई भी भली प्रकार नहीं जान पाये। वही भगवान शंकर सच्चिदानन्द सत्य, ज्ञान, अन्त रहित, अव्यय अविनाशी हैं। यह स्वरूप मन वाणी से अतीत है। मन वाणी यहां पर आ करके लौट जाती है। भगवान सदाशिव पूर्ण ब्रह्म हैं यह ज्ञान सूक्ष्म बुद्धि से केवल शिव भक्ति द्वारा प्राप्त होता है। ज्ञान तथा भजन इन दोनों में से ज्ञान मनुष्य के लिये अत्यन्त सरल है। इसी लिए मुक्ति के वास्ते ज्ञान द्वारा शिव भजन करना चाहिये। भगवान सदाशिव भजन से मुक्ति के दाता हैं और उनकी कृपा से ही मुक्ति की प्राप्ति सुलभ हो जाती है। प्रेम का अंकुर रूप प्रेम लक्षण भक्ति है। यह भक्ति कई प्रकार की है—गुण युक्त तथा गुण रहित। इसकी व्याख्या करना अथवा इसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। भक्ति के प्रकारों में से जो भक्ति वैद्यी एवं स्वाभाविक है, वह सर्वोत्तम कही गई है। वह भी अनैष्टिकी भेद से दो प्रकार की है। उन दो प्रकारों में से अनैष्टिकी तो एक प्रकार की है और नैष्टिकी छः प्रकार की है और उसके बाद वह विहित एवं अविहित भेद से कई प्रकार की है। जैसा कि मैं पहिले कह चुका हूं, इसकी व्याख्या अत्यन्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कठिन है और उपरोक्त श्रवण तथा कीर्तन आदि भेदों से नौ प्रकार की है। जिसके अनुसार मुक्ति की प्राप्ति भी अत्यन्त सुलभ हो जाती है। हे मुनीश्वरो! इस प्रकार मुक्ति एवं ज्ञान में कोई भेद नहीं रहता। यह दोनों एक हो जाते हैं। भगवान सदाशिव यही कहते हैं। इसलिये यह दोनों अलग-अलग नहीं हैं। भक्ति एवं ज्ञान के मार्ग पर चलने वाले सदा सदैव सुखी रहते हैं।

बयालीसवां अध्याय

(श्रीसूतजी का मुनीश्वरों को बतलाना कि सृष्टि के आरम्भ में निर्गुण परमात्मा भगवान् सदाशिव ही थे। उन्हीं से प्रकृति व पुरुष यह दोनों हुए। उन दोनों ने जल के नीचे तपस्या की। विष्णु जी का जल में सोना और उनके नाभि कमल से पितामह ब्रह्मा का उत्पन्न होना।)

ऋषि बोले—हे सूतजी! हम यह जानना चाहते हैं कि शिव, हरि, रुद्र एवं ब्रह्मा यह कौन हैं और चारों में से कौन निर्गुण है। यह आप हमें विस्तृत रूप से समझाने की कृपा करें। सूतजी ने कहा—हे मुनिश्वरो! सृष्टि के आरम्भ में जो निर्गुण परमात्मा था वही भगवान सदाशिव हैं। उन्हीं से प्रकृति व पुरुष ये दोनों हुए। वह दोनों जल के नीचे तपस्या करने लगे। उस स्थान को पंचकोशी कहते हैं, जो कि अब काशी के नाम से प्रसिद्ध है। यह समस्त विश्व जल से ही व्याप्त है। भगवान श्री विष्णु यही जानकर जल में सो गये। इसी कारण वह नारायण नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी माया ही नारायणी कहलाती है। नारायण के नाभि कमल से श्री ब्रह्माजी उत्पन्न हुए। ब्रह्माजी ने तप करके भगवान श्री विष्णु के दर्शन किये। उसके बाद दोनों में विवाद छिड़ गया उस झगड़े को मिटाने के लिए जो देव प्रत्यक्ष हुए, वह महादेव कहलाये। उपरान्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

श्री ब्रह्माजी के कपाल से भगवान शिव रुद्र नाम से प्रकट हुए। जिस तरह सोने के सभी गहने सोना ही हैं उसी प्रकार निर्गुण भगवान् शिव तथा सगुण रुद्र में कोई भी भेद नहीं है। यह दोनों एक ही स्वरूप होकर अनेक कर्म करने वाले हैं अनेक मायाओं से युक्त हैं। यह अपने भक्तों को मोक्ष प्रदान कराते हैं। इसलिए पराक्रमी रुद्र शिव स्वरूप है। यह इसी रूप में विष्णुजी तथा ब्रह्माजी की सहायता के लिए प्रकट हुए हैं। अन्य देवताओं के भक्त मनुष्य अपने देवताओं में विलीन होते रहते हैं। जब वह रुद्र देवता में विलीन होते हैं तभी जाकर उन देव भक्तों का रुद्र में लय होता है उसमें बहुत समय लगता है। जो साक्षात् रुद्रजी के भक्त हैं वे तो जल्दी से जल्दी ही रुद्र रूप हो जाते हैं क्योंकि उन्हें किसी देवता की अपेक्षा नहीं रहती। हे ऋषियो! विज्ञान एक प्रकार का है और अज्ञान अनेक प्रकार का। ब्रह्मा से लेकर तिनके तक सभी शिव स्वरूप हैं इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार की कल्पना असत्य है वह नहीं करनी चाहिए। सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति संहार का कारण केवल शिव हैं। इस लोक में रहने वालों के लिए शून्य व अपने में लीन होने पर भी वे स्थित हैं। सदाशिव ने ही विष्णुजी को सनातन नित्य वेद प्रदान किए। इसी प्रकार बहुत से वर्ण भाव ध्यान एवं अपना पूजन आदि सभी समझाया। इसी प्रकार सभी वेदों व विद्याओं के स्वामी सबकी आयु एवं काल रचना एवं काल संहार कर्त्ता शिव ही हैं। और सबकी आयु व काल के कारण हैं किन्तु स्वयं शिव महाकाली के आश्रित होते हुए भी काली के काल हैं। ब्राह्मणों का कहना है कि रुद्र के समान काली हैं। रुद्र तथा काली को सत्यलीला से तभी कुछ अपनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इच्छानुसार प्राप्त है। सूतजी बोले—हे ऋषियो! यही शंकरजी का ज्ञान तत्व है जो आपको हमने सुनाया है इस तत्व ज्ञान को तो ज्ञानी मनुष्य ही जान सकते हैं। अन्य कोई इस कार्य में समर्थ नहीं है।

तेतालीसवां अध्याय

(श्रीसूतजी का मुनीश्वरों को बताना कि शौनक, नारद, कुमार, व्यास, कपिल आदि ऋषियों महर्षियों ने एक समय सभा की और यह निश्चय किया कि ब्रह्माण्ड शिव रूप है। भगवान् सदाशिव की इच्छानुसार ही जगत् की रचना होती है। वह स्वयं जगत के भीतर भी हैं और बाहर भी। सब जीवों के रचयिता चेतन अचेतन के स्वामी भगवान् सदाशिव इन सब में व्याप्त हैं।)

ऋषियो ने कहा—हे तात! अब हम से उस ज्ञान का वर्णन करें जिसे जानकर मनुष्य शिव स्वरूप हो जाता है। इस प्रकार के यह सर्वव्याप्त शंकरजी किस प्रकार के हैं? यह जानने की हमें तीव्र इच्छा है। सूतजी बोले—हे मुनियो! शौनक, नारद, कुमार, व्यास, कपिल आदि ने एक समय एक सभा का आयोजन किया। उस सभा में यह निश्चय किया गया कि सारा ब्रह्माण्ड शिव रूप है। जब भगवान सदाशिव की इच्छा होती है तभी जगत की रचना होती है। भगवान सदाशिव इस जगत के भीतर भी हैं और बाहर भी। भगवान सदाशिव चित्स्वरूप है। सबको शुभ स्वरूप मालूम होते हैं। उनके सिवाय और कुछ भी तो नहीं है। अज्ञान का अर्थ तो चित्त की भांति है। जब अनेक देवताओं की ओर ध्यान दिया जाता है तो मनुष्य की बुद्धि मन्द पड़ जाती है। किन्तु वेदान्त जानने वाले सब-के-सब सदा सदैव ऐसा कहा करते हैं कि भगवान सदाशिव परब्रह्म हैं। भगवान सदाशिव के अंगरूप प्राणी अज्ञान से मोहित होकर हम अन्य हैं ऐसा मान बैठते हैं। किन्तु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान सदाशिव उस अज्ञान से परे हैं। सब जीवों के स्वामी भगवान सदाशिव उन सब में व्याप्त हैं। बुद्धिमान उनको देखने का ही प्रयत्न किया करते हैं। पण्डित जन वेदान्त के अनुसार ही ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात भगवान सदाशिव का दर्शन पाते हैं। भगवान सदाशिव और कुछ भी तो नहीं हैं। भ्रम के कारण ही भगवान सदाशिव अनेक रूपों में दृष्टिगोचर होते हैं। कारण तथा कार्य में कोई भी तो भेद नहीं है और केवल अज्ञान के कारण ही दोनों भिन्न-भिन्न दृष्टिगोचर होते हैं। और जब मनुष्य का अज्ञान मिट जाता है फिर कोई भेद नहीं रह जाता। अनेक पनको को प्राप्त होने वाले वृक्ष का बीज ही तो कारण है। वही बीज वृक्ष बनकर समाप्त हो जाता है लेकिन फिर भी उसका नाश नहीं होता। बस, बिल्कुल इसी प्रकार ज्ञानी तो बीज है और विकृति वृक्ष है। और जब इससे मुक्ति पा जाये तो फिर ज्ञानी-ही-ज्ञानी है। इस कारण सभी भगवान सदाशिव का ही रूप हैं और भगवान सदाशिव सभी का रूप हैं इसमें कोई संशय नहीं है। जिस प्रकार सूर्य का जल में प्रति-बिम्ब पड़ने से कई रूप दिखाई देते हैं, उसी प्रकार भगवान सदाशिव के एक होने पर भी उनके कई रूप दिखाई देते हैं। और सुनिये—प्रत्येक प्राणी अहंकार द्वारा अपने कर्मों का फल भोगता है। भगवान सदाशिव तो अहंकार रहित, निर्लेप तथा महान हैं। उनके लिए कोई कर्म फल नहीं है। मनुष्य को चाहिए कि इसी ज्ञान की प्राप्ति के लिये किसी योग्य गुरु का सहारा लेवे। भक्ति भाव से ज्ञान प्राप्त करके भगवान सदाशिव का पूजन ध्यान आदि करे। बस इसके बाद उसकी पाप रूप मैल दूर हो जाती है और अज्ञान नष्ट होकर ज्ञान की प्राप्ति हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जाती है। उसके बाद उसका अहंकार नष्ट हो जाता है। फिर निर्मल बुद्धि होकर वह मनुष्य भगवान सदाशिव की कृपा से शंकर रूप ही हो जाता है। वह जीवन मुक्त हो जाता है और इस मानव देह को त्याग कर भगवान सदाशिव में ही मिल जाता है। इस संसार में ज्ञानी मनुष्य वही है जिसको हर्ष है न विषाद। वह भलाई में सुख नहीं मानता और बुराई में उसको क्रोध नहीं आता है। उसके लिये सुख-दुःख दोनों बराबर हैं। मुक्ति का इच्छुक व अधिकारी जब तत्वों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है तब अपना शरीर भगवान सदाशिव में विलीन कर देता है और फिर वह इस संसार के दुःखों से सदा-सदैव के लिये छुट-कारा हासिल कर लेता है। हे मुनीश्वरो! वचन, ज्ञान, मैंने आप लोगों को सतसंग में से सुनकर सुना दिया है। जिसको कि मनुष्य को अपने चित्त में भली भांति धारण करना चाहिये। यह ज्ञान सबसे पहिले भगवान सदाशिव ने भगवान विष्णु को दिया था। भगवान विष्णु ने देव ऋषि नारद को दिया था। उसके बाद यही ज्ञान भगवान वेद व्यास ने मुझे दिया जो कि मैंने आपको सुनाया है। अब आप इसे लोकों के हित के लिये भली भांति धारण करें। लेकिन याद रहे कि यह ज्ञान नास्तिक, अश्रद्धालु, शठ, एवं भगवान सदाशिव के अभक्त को कभी न देना चाहिये। भगवान श्री वेदव्यास ने इतिहास, वेदों एवं शास्त्रों को बार-बार पढ़कर, उनका तत्वरूप यह परम ज्ञान मुझे प्रदान किया था। इसीलिये मैं कह रहा हूं कि यह अधि-कारी को देना ही उचित है। इस ज्ञान के केवल एक बार ही श्रवण करने से मनुष्य के सब पाप-ताप धुल जाते हैं। अभक्तों को इससे शिव भक्ति प्राप्त होती है। भक्तों में से शिव भक्ति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की वृद्धि होती है और भक्ति की प्राप्ति के बाद फिर और कुछ भी पा लेना बाकी नहीं रह जाता। प्राचीन काल में राजा तथा ब्राह्मण इसे पांच बार श्रवण कर चुके हैं। जो मनुष्य श्रद्धा के साथ इसका श्रवण करेंगे उनको निश्चय ही शिव ज्ञान की प्राप्ति होगी।

श्री व्यासजी बोले—इस प्रकार श्रीसूतजी से यह कथा सुनकर मुनीश्वरों ने प्रेम सहित उनका आदर सत्कार किया और उनका पूजन किया। नमस्कार करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। चूंकि अब उनके सभी संशय मिट चुके थे, इस लिये भगवान सदाशिव को सब देवताओं में बड़ा मानकर उनके भजन व पूजन में लग गए।

॥ इति श्री रुद्र संहिता कोटि खण्ड ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection, Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

उमा संहिता खण्ड

पहला अध्याय

(श्रीसूतजी का मुनीश्वरों को बतलाना कि उमा नाम की संहिता पहिले श्रीसनत कुमारजी ने भगवान श्री वेदव्यासजी को सुनाई थी। भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज का पुत्र प्राप्ति के लिए तप करने के वास्ते कैलाश पर पहुंचना और श्री उपमन्यु का उनको शिव महिमा सुनाना।)

मुनीश्वरों ने भगवान सदाशिव से कहा—हे ब्राह्मण! आप बड़े उच्चकोटि के शिव भक्त हैं। आपको हमारा बारम्बार नमस्कार है। अब आप हमें नाना प्रकार की कथाओं से युक्त भगवती उमा नाम की संहिता सुनायें जिसमें कि भगवान सदा शिव की लीलाओं का वर्णन है। यह सुनकर सूतजी बोले—हे मुनीश्वरो! आपके प्रश्न के अनुसार अब आप उमा संहिता सुनिये और भगवान सदाशिव की अद्भुत लीलाओं का श्रवण कीजिये और आनन्दित होइये। यह लीलायें पहले-पहल श्री सनतकुमारजी ने भगवान श्री वेदव्यास को सुनाई थीं। श्रीसनत-कुमारजी ने कहा—भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज एक समय पुत्र-प्राप्ति के लिये यज्ञ करने के वास्ते कैलाश पर्वत पर पहुंचे। वहां उन्होंने श्रीउपमन्यु जी को तप करते देखा। भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज उनके पास पहुंचे। हाथ जोड़कर नम-स्कार करके कहा—हे शिव भक्त उपमन्युजी! मैं यहां कैलाश पर्वत पर पुत्र-प्राप्ति के हेतु यज्ञ करने के लिए आया हूं। आप मुझे शिव महिमा सुनाइये, जिसे सुनकर मैं भक्ति व श्रद्धा के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

साथ तपस्या कर सकूं। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज की बात सुनकर श्री उपमन्युजी बोले—हे श्रीकृष्णजी! एक बार तप करते हुए भगवान सदाशिव के दर्शन किये। ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता उनकी सेवा कर रहे थे। भगवान सदाशिव का समस्त परिवार विद्यमान था। मैंने भगवान सदाशिव के पास पड़े हुए उनके दिव्य अस्त्र-शस्त्र त्रिशूल आदि देखे, जिनके समान इस संसार में अन्य कोई अस्त्र नहीं हैं। भगवान सदाशिव का त्रिशूल तो समुद्र का पानी सुखा देने की शक्ति रखता है और संसार भर के अन्य सभी अस्त्रों-शस्त्रों को नष्ट कर देने की शक्ति रखता है। उसी त्रिशूल से भगवान सदाशिव ने अभिमानी हैहय तथा लवणासुर का वध किया था। उन दैत्यों का बध करके वह त्रिशूल दोबारा उनके पास आ गया था। वहां पर मैंने एक फरसा भी देखा था जिसकी तीन शिखायें, भौहों के समान थीं। सूर्य व चन्द्र के समान चमक रहा था। उसकी धार अत्यन्त तीक्ष्ण थी। वह अग्नि के समान जल रहा था। भगवान सदाशिव ने यही फरसा परशुराम को प्रदान किया था, जिसके द्वारा उन्होंने पृथ्वी को तीन बार क्षत्रियों से रहित कर दिया था। फिर मैंने सुदर्शन चक्र भी देखा। उसके एक हजार मुख थे, दो हजार हाथ, दो हजार नेत्र और एक पैर था। वह करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश कर रहा था। मैंने भगवान सदाशिव का सौ धार वाला चमकता हुआ बज्र भी देखा। पिनाक नामक उत्तम धनुष भी देखा। शक्ति, तलवार, तेजवान पाश, अंकुर, बड़ी गदा भी देखी। भगवान सदाशिव की दाईं ओर हंस जुते हुए विमान में बैठे हुए श्री ब्रह्माजी को देखा। शंख, चक्र, गदा, पद्म सहित भगवान विष्णु को भी गरुड़ पर सवार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देखा। भगवान विष्णु भगवान सदाशिव की बाईं ओर थे। स्वायम्भुव नन्दी त्रिशूल लिये बैठा था। इसी तरह भूतगण मातृका आदि सभी भगवान सदाशिव के दरबार में विद्यमान थे और वह सब लोग अनेक प्रकार की स्तुतियां कर रहे थे। मैंने भी हाथ जोड़कर भगवान श्रीसदाशिव की स्तुति की। तब भगवान सदाशिव ने प्रसन्न होकर मुस्कराते हुए मुझसे कहा—तुमको तो मेरी अनन्य भक्ति प्राप्त है। मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूं। तुम मुझसे मन चाहा वर मांग सकते हो। तब मैंने हाथ जोड़कर कहा—प्रभो! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे भूत, भविष्यत्, वर्तमान तीनों कालों का ज्ञान तथा अपनी असीम भक्ति प्रदान करें और मैं अपने परिवार सहित दूध भात का भोजन सदा प्राप्त करूं ऐसा वरदान दीजिए। यह सुनकर शिवजी ने कहा—हे उपमन्यु! मेरे वर से तुम अजर-अमर बनकर अपनी इच्छा से भ्रमण करते हुए सब मुनियों में ऐश्वर्यवान हो जाओगे। उसी का अमृतमय दूध तुम बन्धु-बांधवों सहित प्राप्त करते रहोगे। जिसके पास तुम सदा रहोगे। तथा तुम वैवस्त कल्प को देखते रहोगे। हे मुने! मैं सदा तुम्हारे समीप रहूंगा। जब-जब तुम मेरा स्मरण करोगे मैं तुम्हें अपना दर्शन दूंगा। हे कृष्णजी! इस प्रकार मुझे कहकर भगवान सदाशिव अन्तर्ध्यान हो गए। इस प्रकार मैंने भोग व मोक्ष के दाता भगवान शिव के परिवार सहित दर्शन किये और आपकी कृपा से सभी वरदान मुझे प्राप्त हुए। भूत, भविष्यत्, वर्तमान तीनों कालों का ज्ञान भी मुझे प्राप्त है। भगवान शिव सभी तत्वों के ज्ञाता, दृष्टा व प्रधान तत्व ईश्वर हैं। हे कृष्णजी! यदि तुम पुत्र चाहते हो तो शिवजी की पूजा करो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दूसरा अध्याय

(श्रीसूतजी का मुनियों को बतलाना कि हिरण्यकशिपु ने तपस्या करके दस लाख वर्ष तक निष्कंटक और ऐश्वर्यशाली राज्य किया। नन्दन का शिवजी से वरदान प्राप्त करके दस हजार वर्षों तक अपना दास बनाए रखना। सतमुख नामक दानव से दस हजार पुत्र प्राप्त करना आदि।)

श्रीकृष्ण बोले—हे उपमन्यु! शिवजी की आराधना करने से जो शिव भक्त सिद्ध हुए हैं कृपया उनका भी वर्णन करें। उपमन्यु कहने लगे—हे कृष्णजी! हिरण्यकशिपु ने तपस्या के द्वारा शिवजी को प्रसन्न करके उनसे वर प्राप्त किया कि वह दस लाख वर्ष पर्यन्त निष्कंटक तथा ऐश्वर्यवान- राज्य का भोग करे। हिरण्यकशिपु के पुत्र नंदन ने भी शंकरजी की कृपा से युद्ध में विजय प्राप्त की। तब शक्तिशाली होकर उन्होंने इन्द्र को दस हजार वर्षों तक अपना दास बनाए रखा। सतमुख नामक राक्षस ने भी शिवजी को प्रसन्न करके दस हजार पुत्र प्राप्त किए। याज्ञवल्क्य ऋषि शिवजी की कृपा से वेदज्ञाता ऋषि व महाज्ञानी हुए। इसी प्रकार महर्षि व्यासजी ने भी शिवजी की आराधना से वेद, पुराण, इतिहास आदि का ज्ञान प्राप्त किया। जब प्राचीन काल में शिवजी को क्रोध उत्पन्न हुआ तो सारी पृथ्वी भर का पानी सूख गया तब देवताओं ने उनकी बड़ी स्तुति की। तब प्रसन्न होकर शंकरजी ने अपने कपाल से जल प्रकट कर दिया। चित्रसेन भी शिवजी के भक्त हुए हैं। शिव पूजन से शत्रुओं से निर्भय होकर शिवपूजन करते हुए इसी चित्रसेन को देखकर गोपी का बालक श्रीकर भी शिवपूजा में तत्पर हुआ। इसी पूजा द्वारा परम सिद्धि प्राप्त की। सीमन्तिनी पत्नी के शिव के सोमवार के व्रत के प्रभाव से उसके चित्रांगद के राजा यमुना में डूबकर भी मृत्यु को प्राप्त न हुए। यमुना में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

डूबकर चित्रांगद नागलोक पहुंचे। वहां नागों से मित्रता करके बहुत-सा धन घर में लाए। चंचला व्यभिचारिणी स्त्री ने अचानक गोकर्ण तीर्थ पर जाकर शिव कथा सुनी। उससे उसके सब पाप नष्ट हो गए। शिव पूजन से उसे शिवलोक की प्राप्ति हुई। फिर अपने दुराचारी विन्दुग पति को भी दया करके सद्गति प्राप्त कराई। महाकाल नामक हिंसा करने वाले व्याध ने शिव-भक्ति से सद्गति प्राप्त की। महामुनि दुर्वासा ने शिवजी की कृपा से मोक्षदायक शिव भक्ति का सिद्धान्त संसार में स्थापित किया। परमपिता ब्रह्माजी ने शिव आराधना करके ही ब्रह्माण्ड में प्रजापति पद को प्राप्त किया व सृष्टि की रचना की। मार्कण्डेयजी ने इन्हीं शिवजी की कृपा से दीर्घायु होकर अद्भुत शोभा व शक्ति प्राप्त की। इसी प्रकार शिवजी के वरदान से ही शाण्डिल्य जगत प्रसिद्ध एवं पूजनीय हुए। हे श्री कृष्ण! इस प्रकार और भी बहुत से भक्तों ने शिवजी की पूजा करके मोक्ष प्राप्त किया।

तीसरा अध्याय

(उपमन्युजी का भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज को दीक्षा देना और अथर्व शीर्ष का शिव महामन्त्र पढ़ाना। भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज का जटाजूट धारण करके पन्द्रह महीनों तक कठिन तपस्या करना। फिर भगवान सदाशिव का श्री पार्वतीजी के साथ प्रकट होना।)

भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने श्रीउपमन्यु जी से पूछा—हे ब्राह्मण! क्या मुझे भी भगवान सदाशिव दर्शन देंगे? श्रीउपमन्यु ने कहा—अवश्यमेव! आप शीघ्र ही भगवान श्री सदाशिव के दर्शन पायेंगे और सिद्धि प्राप्त करेंगे। मैं अभी-अभी आपको एक अद्भुत मन्त्र प्रदान करूंगा जिसके द्वारा आपको अवश्यमेव भगवान श्रीसदाशिव के दर्शन हो जायेंगे और आप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को पुत्र रत्न की भी प्राप्ति होगी। मनुष्य के सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला स्वर्ग अपवर्ग देने वाला यही 'ॐ नमः शिवाय' पंचाक्षर मन्त्र, सब मन्त्रों से उत्तम है। श्री सनतकुमारजी बोले—इस प्रकार भगवान सदाशिव की महिमा तथा पंचाक्षर की महिमा कहते-कहते उपमन्युजी को आठ दिन तथा दो घड़ियों का समय लग गया। उसके बाद नवें दिन श्रीउपमन्यु ने भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज को दीक्षा दी और अथर्व शीर्ष का शिव महा मन्त्र पढ़ा दिया। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने श्रीउपमन्यु जी से सारी विधि भली प्रकार समझ ली। फिर जटाजूट धारण करके पैर के अंगूठे पर खड़े होकर पन्द्रह महीने तक कठिन तप किया। तब सोलहवें महीने भगवान सदाशिव ने श्री पार्वतीजी सहित प्रकट होकर उनको दर्शन दिये। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने उनको प्रणाम किया। उनकी स्तुति की। एक बार प्रसन्न मुद्रा से मुस्कराते हुए भगवती पार्वती की ओर देखा और भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी से कहा—हे श्रीकृष्णजी! मैं यह भली प्रकार जानता हूं कि आप मेरे अनन्य भक्त हैं और दृढ़ व्रती हैं। मैं इस समय आपको मनचाहा वर देने को तैयार हूं। आप वर मांग सकते हैं। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने कहा—प्रभो! मैं आपसे आठ वर मांगता हूं—(१) मेरी बुद्धि सदा धर्म में लगी रहे। (२) मैं सारे संसार में अक्षय यश प्राप्त करूं। (३) मेरा निवास आपके समीप हो। (४) आप में मेरी दृढ़ भक्ति बनी रहे। (५) मुझे दस पराक्रमी पुत्रों की प्राप्ति हो। (६) युद्ध में मैं घमण्डी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करूं। (७) मेरे समस्त शत्रु नाश हो जायें। (८) मैं समस्त योगियों का प्यारा बनूं। भगवान श्री

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कृष्णचन्द्र जी महाराज के वचन सुनकर भगवान सदाशिव बोले—हे श्रीकृष्णजी 'तथास्तु' मैंने आपको सभी वरदान प्रदान कर दिये। इसके बाद श्री पार्वतीजी बोलीं—हे श्रीकृष्णजी! मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूं। मुझसे तुम मनवांछित वर मांगो। इस पर भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज ने निवेदन किया—हे देवी! मैं सदा-सदैव ब्राह्मणों की सेवा करता रहूं तथा अपने माता-पिता का भक्त बनूं। श्री पार्वतीजी ने कहा—हे श्रीकृष्ण जी! मैंने तुमको सब वर दे दिए। उसके पश्चात भगवान सदा शिव तथा भगवती पार्वतीजी अन्तर्ध्यान हो गए। तब भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज अपने सभी मनोरथ पूरे होने के बाद श्री उपमन्युजी के पास पहुंचे और उनको भगवान सदाशिव के दर्शन पाने और उनसे वर पाने का सारा वृत्तान्त कह सुनाया। श्रीउपमन्यु ने कहा—हे बंसीधर! भगवान सदाशिव से बढ़कर दूसरा कोई और अन्नदाता नहीं है। उनकी लीलाओं का क्या कहना। उनकी लीलाएं अनगिनत हैं और ऐश्वर्य भी अनन्त हैं। इसलिए आप सदा-सदैव उनका ध्यान करते रहना। इसके बाद भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी श्रीउपमन्यु जी को प्रणाम करके श्री द्वारकाजी को लौट गए। भगवान रामचन्द्र जी महाराज ने भगवान सदाशिव का पूजन करके उनसे दिव्य अस्त्र प्राप्त करके, लंका पर चढ़ाई की थी। उन्होंने समुद्र पर पुल भी बांधा था और रावण को उसके कुल सहित नष्ट करके श्रीसीताजी को प्राप्त किया था।

हे ब्राह्मण! सहस्रार्जुन ने कामधेनु को पाने के वास्ते महर्षि जमदग्नि को मार डाला। यह समाचार जब परशुराम ने सुना तो उन्होंने अपने पिता के वध का बदला लेने के लिए भगवान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

श्री सदाशिव को प्रसन्न करके उनसे दिव्य अस्त्र परशु पाकर न केवल सहस्रार्जुन को ही मारा बल्कि इक्कीस बार युद्ध करके संसार भर के क्षत्रियों को समाप्त किया। चाक्षुष नामक मनु के पुत्र, महर्षि वसिष्ठ के शाप से मरुस्थल में मृग हुए। किन्तु भगवान सदाशिव के नाम का जाप करना नहीं छोड़ा और दण्डक वन में जाकर रहने लगे। जब उनको दण्डक वन में रहते-रहते बहुत समय बीत गया, तो एक दिन भगवान सदाशिव ने उन पर कृपा की। उन्हें श्री गणेशजी का गण बना दिया और इस प्रकार उनको जीवन-मरण से छुटकारा मिल गया। महर्षि गार्ग्य की पूजा व भजन से प्रसन्न होकर भगवान सदाशिव ने उनको अपनी सर्व दुर्लभ मुक्ति, काल ज्ञान, उनके विचरने के योग्य भूमि, सरस्वती पार होने के लिए सामर्थ्य एवं हजार पुत्र पैदा होने का वरदान दिया। एक बहुत ही दरिद्र ब्राह्मण था, उसने अपनी दरिद्रता से तंग आकर अपना गालव नामक पुत्र अपने गुरु की कुटिया में छिपा दिया था। दरवाजे पर भिखारी आकर उसे तंग न करे, इसके लिए उसने अपनी पत्नी से कह दिया कि जो कोई भी घर के द्वार पर आवे उसे कह देना कि मैं घर में नहीं हूं। मैं अपने पति की आज्ञा के बिना आप लोगों का सत्कार नहीं कर सकती। स्त्री से इस प्रकार कह कर वह घर में छिपकर बैठ गया। एक दिन उस ब्राह्मण के द्वार पर एक भिक्षुक आया। ब्राह्मण पत्नी ने उससे कहा कि उसका पति घर में नहीं है। भिक्षुक ने अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा देखा कि उसका पति घर पर ही है। तब उसने उस ब्राह्मणी से कहा—हे ब्राह्मणी! तू क्यों झूठ बोलती है, तेरा पति तो घर में छिपा बैठा है और वहीं मर चुका है। इस प्रकार कहकर वह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भिक्षुक वहां से चला गया। उसके बाद उस ब्राह्मण के पुत्र गालव को विश्वामित्र द्वारा यह वृत्तांत मालूम हुआ तो वह घर में पहुंचा। अपनी माता से शाप का वृत्तान्त सुनकर उसने शंकरजी की भयंकर तपस्या व सेवा की। जिससे प्रसन्न होकर सदाशिव ने उसके पिता को फिर से जीवित कर दिया।

चौथा अध्याय

(श्री सनत्कुमार जी का भगवान श्री वेदव्यासजी को बताना कि भगवान् सदाशिव समस्त प्राणियों के ईश्वर एवं जगत् में व्यापक सर्व समर्थ परमात्मा हैं। आठ देव योनि, एक मानव योनि एवं पाँच दक्ष योनि। इस प्रकार से चौदह योनियां भगवान् सदाशिव से उत्पन्न हुई हैं। संसार में ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य आदि देवता, दानव नाग, किन्नर, गन्धर्व, मानव आदि सभी योनियों में भगवान् सदाशिव ही स्थित हैं।)

व्यासजी बोले—हे सनत्कुमार जी! कृपया अब आप लीलामय यश के अद्भुत चरित्र सुनाइये। हमें उसे जानने की बड़ी इच्छा है। यह सुनकर श्री सनत्कुमार जी बोले—हे व्यास जी! सुनिये भगवान सदाशिव ही समस्त प्राणियों के ईश्वर और जगत में व्यापक सर्व सामर्थ्य परमात्मा हैं। यह चौदह योनियां, आठ देव योनियां, एक मानव योनि और पांच पक्षी योनियां यह सब भगवान सदाशिव से ही पैदा हुई हैं। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि सभी देवता, नाग, किन्नर, गन्धर्व, मानव आदि सभी योनियों में भगवान सदाशिव ही स्थित हैं और इसी प्रकार चराचर जगत में भगवान सदाशिव की ही माया फैली हुई है। भगवान सदाशिव की माया सभी को अपने वश में किये हुए है। कामदेव ने जो ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि सभी देवताओं को अपने अधीन कर रक्खा है। यह सब भी भगवान सदाशिव की माया है। इन्द्र ने जो महर्षि गौतम की पत्नी अहिल्या पर आसक्त होकर उसके साथ व्यभिचार किया था,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

यह भी भगवान सदाशिव की ही माया थी। और अहिल्या एवं इन्द्र को महर्षि गौतम ने जो शाप दिया था वह भी भगवान सदाशिव की ही माया थी। भगवान सदाशिव की माया ने ही विष्णु को पर स्त्री विहारी बना दिया था और काम से पीड़ित होकर चन्द्रमा अपनी गुरु पत्नी को लेकर भाग गये, लेकिन उन पर भगवान सदाशिव की बहुत बड़ी कृपा हुई जो कि वह इस घोर पाप से बाल-बाल बच गये। मित्र और वरुण भी उर्वशी पर आसक्त हो गये थे। मित्र ने तो अपना वीर्य घड़े में त्याग दिया था जिससे महर्षि वसिष्ठ उत्पन्न हुए थे और वरुण ने अपना वीर्य जल में त्याग दिया। वड़वानल जैसे तेजस्वी अगस्त्य पुत्र उत्पन्न हुए। शिव माया से मोहित ब्रह्माजी चार बार मोह को प्राप्त हुए। एक बार तो ब्रह्माजी अपनी कन्या के साथ भोग करने को तैयार हो गए थे। गौतम ने शारद्वती को नग्न देखा तो उससे चिपट गए और अपने स्खलित वीर्य को द्रोण घट में डाल दिया। उससे अस्त्र धारियों में महा पराक्रमी द्रोणाचार्य उत्पन्न हुए। विश्वामित्र ने काम पीड़ित होकर मैनका के साथ संभोग किया। इसी विश्वामित्र के साथ वसिष्ठ ने विरोध किया। किन्तु शिवजी की कृपा से विश्वामित्र ब्राह्मण हुए। वैश्रवा का पुत्र रावण सीता पर आसक्त हुआ और उसे चुराकर घर ले आया इसी से उसका नाश हुआ। मुनि श्रेष्ठ बृहस्पति जी अपने भ्राता की पत्नी के साथ संभोग कर बैठे। जिससे भारद्वाज उत्पन्न हुए। हे व्यासजी शिवजी की माया ऐसी ही है मैं कहां तक कहूं उनकी माया से मोहित होने वाले अनेक ऋषि मुनि हैं। यह सब तो मैंने संक्षेप में कहा। इसके बाद आपको जो कुछ जानने की इच्छा हो कहें।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पांचवां अध्याय

(भगवान श्री वेदव्यासजी को श्रीसनत्कुमारजी का बतलाना कि शरीर, मन, वाणी से बारह प्रकार के पाप हुआ करते हैं। इस प्रकार के जो पाप हुआ करते हैं वे दुःखदायक हैं।)

श्रीव्यासजी बोले—हे मुनीश्वर! हम आपसे नरक के बारे में विस्तारपूर्वक सुनने की इच्छा रखते हैं। यदि आपकी कृपा हो जाए तो इस पर श्रीसनतकुमार जी बोले—हे व्यासजी! सुनिये, शरीर, मन और वाणी से बारह प्रकार के पाप हुआ करते हैं पर स्त्री की इच्छा करना, पर धन के हथियाने के बारे में सोचना, दूसरों के लिए बुरे भाव, उनकी बुराई सोचना, अधर्म में प्रवृत्ति। यह चार प्रकार के पाप मन से होते हैं। रजस्वला स्त्री से वार्तालाप करना, झूठ बोलना, कठोर बोलना, दूसरों की चुगली खाना, यह चार पाप वाणी द्वारा होते हैं। न खाने की वस्तु खाना, हिंसा करना, बुरा करना, दूसरों का माल छीन लेना। यह चार पाप शारीरिक होते हैं। आगे इनके भी कई भेद हैं जोकि सबके-सब बड़ा ही भयंकर फल देने वाले हैं। भगवान शंकर का ज्ञान कराने वाले गुरु की तथा माता पिता की निन्दा करने वाले महा पापी अवश्यमेव नरक को जाते हैं और कड़ा दण्ड पाते हैं, चीखते हैं, चिल्लाते हैं, पछताते हैं, मगर कुछ भी तो नहीं कर पाते हैं, कर्मों का फल तो भोगना ही पड़ता है। जैसी करनी वैसी भरनी। मन्दिर में से सामान चुराना, ब्राह्मण का माल असबाव नष्ट करना, भगवान सदाशिव के सम्बन्ध में लिखे गए धार्मिक ग्रंथों एवं पुस्तकों को चुराना अथवा उनको नष्ट करना यह सब पाप मनुष्य को नरक की ओर धकेलने वाले हैं।

ऐसे मनुष्य जिनको कि भगवान सदाशिव का पूजन नहीं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भाता, जिनको कि उनमें कोई रस नहीं आता, जो शिवलिंग को नमस्कार नहीं करते, न ही भगवान शिव की स्तुति ही करते हैं, शिव मन्दिर में अपने गुरु से बुरा व्यवहार करते हैं, वह महा नरकों में डाले जाते हैं। गुरु पूजा के बिना ही शास्त्र सुनने की इच्छा करने वाले, भक्ति एवं श्रद्धा के साथ गुरु की सेवा न करने वाले, गुरु के घर के सदस्यों, गुरु के सम्बन्धियों एवं गुरु मित्रों का अपमान करना यह सब-के-सब मनुष्य नरकों में डाले जाते हैं। ब्रह्महत्या करने वाले, मदिरापान करने वाले, गुरु शैया पर सोने वाले, गुरु पत्नी को भोगने वाले महापापी हैं। ब्राह्मण को दान करके वापिस ले लेने वाले भी ब्रह्महत्यारों के समान ही होते हैं। गौ, ब्राह्मण एवं मन्दिर के लिए दान की गई भूमि को, निर्धन हो जाने के कारण वापिस लेने वाले मनुष्य भी महापापी होते हैं और उनको नरक में डाला जाता है। बुरे कामों द्वारा धन इकट्ठा करने वाले मनुष्य भी ब्रह्महत्या करने वाले के समान ही पापी हैं। वेदों के पढ़ने के बाद जो ब्राह्मण शिव ज्ञान का त्याग कर देता है या उपवास, नियम, पूजन आदि आरम्भ करके बीच में ही छोड़ देता है वह भी अवश्यमेव नरक में डाला जाता है। गौ के मार्ग में, वन में, नगर में, आग लगाने वाला, निर्धनों का धन हड़पने वाला, पुरुष, स्त्री, हाथी, घोड़ा, गाय, पृथ्वी, चन्दन, अगर, कपूर, कस्तूरी, पट्टे, पीढ़े, आसन आदि बिना संकट के बेच देने वाला, दूसरे की अमानत में ख्यानत करने वाला, स्वर्ण की चोरी करने वाला यह सबके सब महा-पापी हैं। विवाह योग्य कन्या का योग्य वर के साथ विवाह न करने वाले, पुत्र-वधु, बहन, भौजाई (भाविज) के साथ व्यभि-चार करने वाला, यह सभी महापापी हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

छटवां अध्याय

(श्रीसनतकुमार जी का भगवान श्री वेदव्यासजी को बतलाना कि पराया भाग मिटा देने वाले अभिमान, क्रोध, कपट एवं कृतघ्नता करना, विषयों में फंसे रहना। साधुओं से द्वेष करना, श्रेष्ठ कन्या पर कलंक लगाना, शिवालय के वृक्ष तथा बगीचे अथवा घर में लगे हुए वृक्ष, फूल, टहनियां उजाड़ डालना आदि पाप करने वाले नर हों या नारियाँ सभी पापी कहे गए हैं।)

सनत्कुमारजी बोले—हे व्यासजी ! भाग मिटा देना, अभिमान, क्रोध, कपट, कृतघ्नता, विषयों में लीन रहना, सज्जनों से ईर्ष्या करना, श्रेष्ठ कन्या को कलंकित कहना, शिवालय के वृक्ष, फल, फूल, टहनियां उजाड़ फेंकना, अपने नौकर कुटुम्बी पड़ौसी का धन लूट लेना, धान्य तथा पशु चुरा लेना, यज्ञ, बाग, कुंआ आदि के जल को अपवित्र कर देना, स्त्री पुत्रादि को बेच डालना, स्त्री के कमाए धन से जीवन यापन करना, स्त्री के अधीन रहना, उसकी रक्षा करने में समर्थ न हो सकना, समयानुसार दान आदि न करना, धान्य तथा वर्षा के आधार पर रहना, व्यापार करते हुए असत्य बोलना, मारण, मोहन, उच्चाटन आदि का प्रयोग करना, वैद्यक करना, शास्त्रीय व्रत त्यागना, शास्त्रीय आचार छोड़कर मनमानी करना, नास्तिक शास्त्र को मानना, व्यर्थ में वाद-विवाद करना, देव गुरु, ब्राह्मण एवं चक्रवर्ती राजा की उसके सन्मुख या पीठ पीछे निंदा करना, पितृ तथा देवयज्ञों का न करना, मधुर व्यवहार न करना, नास्तिकता, उत्तम पर्व तथा अनुपर्व के बारे में विचार न करके पर-स्त्री, स्वस्त्री, रजोधर्म वाली स्त्री से यौन समागम करना, स्त्री, पुत्र आदि की अभिलाषा त्याग देना, तालाब एवं कुंए आदि को नष्ट करना, एक पंक्ति में भोजन करने वालों से भेद करना इत्यादि-इत्यादि पुरुष हों अथवा स्त्रियां सभी ही महा पापी कहे गए हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पर स्त्री के बारे में गन्दे विचार रखना, उसके सम्बन्ध में सोच-सोचकर दुःखी होना, दुकानदार होकर कम तोलना, ब्राह्मण होकर शूद्रों से व्यापार करना, बांस, लकड़ी, ईंट, सींग आदि से मार्ग रोकना, दूसरों की हद से पार की जमीन हथिया लेना, झूठे मुकद्दमे लड़ना, नौकरों व पशुओं पर दया न करना, उनको कठोर दण्ड देना, स्वामी, मित्र और गुरु से शत्रुता करना, दूसरों को भूखा बिठा कर आप खा लेना, इन्द्रियों का दास बने रहना, सन्यासी होकर गृहस्थियों के घर में ठहरना, भगवान की मूर्तियों का खण्डन करना, पशुओं पर अधिक बोझ लादकर उनको पीड़ित करना, भोजन न देकर पशुओं को हल इत्यादि में जोतना, भूख से व्याकुल गाय-बैल की ओर ध्यान न देना, बूढ़े बैल कसाइयों को देना आदि जितने भी पाप हैं इनके करने वाले नरक में जाते हैं। भूखे, प्यासे, थके हुए, भिखारी, दीन, वृद्ध, दुर्बल, रोगी, भोजन की इच्छा से आए हुए अतिथि को निराश करना, शरणागतों पर दया न करना, इन पापों के करने वाले सीधे नरक को जाते हैं। मरने के बाद मनुष्य का साथी उसका धर्म है।

बकरी तथा भैंस का व्यापार करने वाले, नीच स्त्री का पति, शूद्र या क्षत्रियों जैसी आजीविका व्यतीत करने वाला ब्राह्मण भी नरक में जाता है। जो राजा ब्राह्मणों से कर लेते हैं अथवा अन्याय से एकत्रित किया हुआ धन ब्राह्मण को दान में देते हैं वह भी नरक में डाले जाते हैं। ब्राह्मण होकर बढ़ई, सुनार आदि का काम करने वाले भी नरक में डाले जाते हैं। वह राजा जो पर स्त्री पर आसक्त रहे या पर स्त्री को अपने घर में डाल लेवें। वह भी नरकगामी होते हैं। वह राजा जो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अच्छे को बुरा और बुरों को अच्छा कहता है और उनको दण्ड देता है और नीति का विचार नहीं करता वह भी नरक में डाला जाता है। घी, तेल, अन्न, पीने की वस्तुएं, शहद, मांस, मदिरा, कमण्डल, तांबा, सीसा, रांगा, हथियार, शंख, आदि की चोरी करने वाले भी नरक को जाते हैं। कोई भी पापी चाहे वह देवता क्यों न हो नरक में डाला जाता है। पशु पक्षी, मनुष्य आदि पापियों के एवं स्त्रियों का अपहरण करने वालों, अन्याय करने वालों तथा छिपकर पाप करने वाले सभी का निर्णय करने वाले यमराज हैं। पापियों को अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहिए। यदि, मनुष्य अपने पापों का प्रायश्चित नहीं करता तो उसका पाप का फल भोगे बिना बिल्कुल छुटकारा नहीं हो सकता। वह लोग जोकि आप पाप करते हैं, वह लोग जोकि दूसरों को पाप के रास्ते पर चलाते हैं, सभी को पाप का फल भोगना पड़ता है।

सातवां अध्याय

(श्री सनत्कुमार का महर्षि वेदव्यास को बतलाना कि सभी पापी लोग यमलोक में पहुंचकर पाप का फल अवश्यमेव भोगते हैं। पुण्यात्मा यमराज के पास उत्तर के मार्ग से और पापात्मा दक्षिण मार्ग से पहुंचाये जाते हैं। पापियों के यमलोक में पहुंचने के मार्ग में बड़े नुकीले कांटे बिछे रहते हैं। बड़ी गरम बालू होती है और छुरियों के समान पैने कंकड़ पड़े रहते हैं। उस मार्ग में कीचड़, ऊंचे-नीचे जंगल, लोक शंकु, सुइयें, अंगारों के समान तपी पृथ्वी इत्यादि-इत्यादि रहते हैं।)

श्री सनत्कुमारजी वेदव्यासजी से बोले—हे महर्षि! सभी पापी लोग यमलोक में पहुंच कर पाप का फल अवश्य भोगते हैं। इसमें भेद इतना है कि पुण्यात्मा यमराज के पास उत्तर के मार्ग से पहुंचाये जाते हैं और पापात्मा दक्षिण मार्ग से। वैवस्वत नगर यहां से छयासी हजार योजन दूरी पर है। धर्मात्मा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लोग तो सुगम प्रकार से पहुंच जाते हैं और पापी कठिनता से पहुंचते हैं। पापियों के लिए जो नरक में पहुंचने का मार्ग है उसमें बड़े नुकीले कांटे बिछे रहते हैं, गरम-गरम बालू बिछी रहती है। छुरियों जैसे पैने कंकर बिछे रहते हैं। मार्ग में कीचड़ भी होता है और ऊंची-नीची जगहें भी, अंगारों के समान तपती हुई पृथ्वी, बांस के वृक्षों की लम्बी-लम्बी नुकीली डालियां लम्बे-चौड़े वन, चहूं ओर अंधेरा-ही-अंधेरा, वन में लगी हुई आग, बर्फ से अटे हुए मार्ग, कड़ाके की सर्दी, गन्दा पानी, सिंह, भेड़िये, व्याघ्र, मच्छरों आदि से व्याप्त वन, बड़ी-बड़ी जोकें, मदमस्त हाथी, पैने दांतों वाले सूअर, बड़े-बड़े सींगों वाले जंगली भैंसे, बड़े-बड़े भयंकर जीव, चोर, डाकिनी, भूत-प्रेत, पापियों के नरक को जाने वाले मार्ग में यह सभी घूमते-फिरते रहते हैं और मार्ग चलते हुए पापियों को बुरी तरह से सताते रहते हैं। बस पापी इन महान कष्टों को झेलता हुआ यमपुर में पहुंचता है। मार्ग में उसे अपना मित्र भाई कोई भी तो नहीं मिलता। उसका रूप प्रेत जैसा हो जाता है। शरीर नंगा, पानी न मिलने के कारण होंठ व तालु सूखे, तीव्र प्यास, उस पर यमदूतों के डण्डों का पड़ना। पैर बेड़ियों से जकड़े हुए और घसीटते हुए यमदूत। भयभीत है, उसको भूख सता रही है, प्यास के मारे उसका दम निकला जा रहा है, इस बात की किसी को भी परवाह नहीं है। यमदूत रस्सों से बांधकर घसीटते लिए जा रहे हैं। किसी पापी पर अंकुश का प्रहार किया जाता है। किसी को कांटों एवं अंगारों से भरे मार्ग पर खींचा जा रहा है। किसी की जीभ में छेद करके उसमें बारीक रस्सी डालकर, घसीटा जाता है। जीभ में अंकुश चुभोये जाते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किसी के हाथ, किसी के पैर, किसी की नाक, किसी के कान, किसी के होंठ, किसी की लिंगेन्द्रि, किसी के अण्ड और इसी प्रकार किसी के अन्य-अन्य अंगों को काट-काटकर उनको यातनाएं पहुंचाई जाती हैं। इस प्रकार की कठोर यातनाएं सहते हुए पापी बुरी तरह से चिल्लाते हैं। इधर-उधर दौड़ते हैं। उनका शरीर फट जाता है। उसमें से रक्त व पीप बहती है। उस रक्त व पीप को पीने के वास्ते बड़े-बड़े कीड़े पापियों के शरीर से चिपट जाते हैं। भूखे, प्यासे यातनाएं सहते हुए पापी फिर याचनाएं करते हैं। लेकिन उनकी याचनाओं को वहां सुनता ही कौन है। यमदूत उनको मारते हुए, घसीटते हुए ले जाते हैं। जिन मनुष्यों ने कुछ दान पुण्य किया हुआ होता है उनके पास कुछ खाने-पीने के लिए रहता है और वह मार्ग में खाते-पीते भी जाते हैं। पापी, यमपुरी में बड़ी कठिनता से पहुंचते हैं। यमदूत उन्हें यमराज के पास पहुंचाते हैं।

हे मुनीश्वरो! जो प्राणी श्रेष्ठ कर्म करने वाले होते हैं, उनका यमराज आदर करते हैं और उनको विमानों में बिठाकर स्वर्ग में ले जाया जाता है। लेकिन उनको उनके पापों का भी थोड़ा बहुत फल अवश्यमेव मिलता है। वह मनुष्य जो कि निरन्तर पाप करने वाले होते हैं उनको भयंकर डाढ़ों वाले, विकराल भौहों से द्वार पर देखते हुए, अनेकों प्रकार के भयंकर अस्त्र-शस्त्र धारण किये हुए, अठारह हाथों वाले, भैंसे पर सवार, जलती अग्नि के समान लाल-लाल आंखों वाले, प्रलय की अग्नि के समान तेजस्वी, भयंकर यमराज दृष्टिगोचर होते हैं वह उन पापियों को बुरी तरह से फटकारते हैं और चित्र गुप्त अपनी बहियां खोल कर उनका खाता देखते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आठवां अध्याय

(चित्रगुप्त का पापी राजाओं से कहना कि तुम सदा-सदैव पाप करते रहे हो। अब उसका फल भी भोगो। तुम प्रजा को बड़े-बड़े कष्ट पहुंचाते रहे हो। अनुचित शासन करते रहे हो। मनमानी करते रहे हो। अब अपनी करनी का फल भोगो।)

चित्र गुप्त कहते हैं—हे पापियो! तुम सदा-सदैव पाप में रत रहे हो। अब तुम अपनी करनी का फल भोगो। पाप आत्मा राजाओं से आप कहते हैं—अरे ओ अभिमानी राजाओ! तुम लोगों को थोड़े से समय के लिए राज्य-सुख प्रदान किया गया था। तुम उसको हमेशा-हमेशा के लिए अपना समझ बैठे। बस अपने सुख को ही देखा। प्रजा का दुःख न देखा। चार दिन के लिए सिंहासन प्राप्त करके तुम लोग अन्याय पर तुल गए। बड़ा दुःख पहुंचाया तुम लोगों ने जनता को। वह कौन सा दुःख था जो कि तुमने अपनी प्रजा को नहीं दिया। अब तुम अपनी करनी का फल भोगो। अब उन राजाओं के मैल को मिटाने के लिए धर्मराज ने अपने यमदूतों को आज्ञा दी—हे चण्ड एवं महा-चण्ड! तुम दोनों इन अभिमानी राजाओं को केशों से पकड़कर अग्निकुण्ड में डाल दो। ताकि इनके पापों का मैल जल जाए। धर्मराज की आज्ञा पाकर यमदूतों ने उन पापी राजाओं को बलपूर्वक उठा-उठाकर अग्निकुण्ड में फेंकने लगे। वह उनको [illegible]ती हुई भट्टियों में फेंककर ऊपर से उन पर वज्रनी पत्थर फेंकने लगे। उनके कानों में से रुधिर बहने लगता है। वह बेहोश हो जात हैं। जब उनको शीतल वायु लगती है तो वह पुनः जीवित हो जाते हैं। फिर यमराज उनको नरकों में पटक देते हैं। वह नरक पृथ्वी के नीचे, सात पर्दों के नीचे है। वहां अंधेरा-ही-अंधेरा है। वह नरक २८ कोटि हैं—

१. घोरा कोटि, २. सुघोरा कोटि, ३. अति घोरा, ४. महा-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

घोरा, ५. घोर रूपा, ६. तलातला, ७. भयानक, ८. कालरात्रि, ९. भयोत्तरा, १०. चण्डा महा चण्डा, ११. चण्ड कोलाहल, १२. प्रचण्ड, १३. चण्ड नायका, १४. पद्मा, १५. पद्मावती, १६. भीता, १७. भीमा, १८. भीषण नायका, १९. कराला, २०. विराकला, २१. वज्रा, २२. त्रिकोपा, २३ पंचकोष, २४. सुदीर्घ अखिलार्दित, २५. सम, २६. भीमसव लाभ, २७. उग्र, २८. दीप्त।

प्रायः इस प्रकार से पापात्माओं को यातना पहुंचाने के लिए अट्ठाईस नरक कोटि कही गई हैं यही सौ रौरव एवं चालीस सौ महा नरक मण्डल कहे गए हैं।

नवां अध्याय

(नरक वर्णन)

(जैसे खोटे सोने को अग्नि में डालकर शुद्ध करते हैं, इसी प्रकार जीवात्माओं के पाप के मैल को दूर करने के लिए उनको नाना नरक अग्नियों में डाल-डालकर शुद्ध किया जाता है।)

जिस प्रकार खोटे तथा मैले सोने को आग में तपाकर शुद्ध किया जाता है उसी प्रकार जीवात्माओं के पाप मैल को दूर करने के वास्ते, उनको विभिन्न नरकों में डाल-डालकर शुद्ध किया जाता है। पहिले पापियों के दोनों हाथों में रस्सियां बांध कर उनको किसी ऊंचे पेड़ की ऊंची डाली से लटका दिया जाता है। फिर उनको बड़े जोर का झोटा दिया जाता है। फिर उनके पैरों में बड़ा वजनी लोहा बांध दिया जाता है, जिससे कि वह अत्यन्त दुःखी होकर बार-बार अपनी करतूतों को याद करते हैं। उसके बाद हथौड़ों से उनके अंग फोड़ते हैं। फिर उबलते हुए तेल के कढ़ाहों में उनको बैंगन की भांति पकाते हैं। फिर उनको विष्ठा के कुएं में फेंका जाता है। जहां पर सहस्रों कीडे उनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शरीर से चिपट कर उनको नोंचते हैं। पैने डंकों वाले बड़े-बड़े कीड़े, कठोर चोंच वाले कौए, कुत्ते व भेड़िये चहुं ओर से उन्हें घेर कर उन्हें नोंच-नोंचकर खाते हैं और भी नाना प्रकार के जंगली जीव आकर उनको सताते हैं। इस प्रकार की यातनाएं उन पापियों को पहुंचाई जाती हैं और उसके बाद उनको अन्य नाना नरकों में फेंका जाता है जहां पर कि उनकी पीठ पर दहकते हुए लाल हथौड़ों से चोटें पहुंचाई जाती हैं और कईयों को तो पैनी धार वाले आरों से चीरा जाता है और कई बार उन पापियों को अपना ही मांस खाने को, और रक्त पीने को बाध्य किया जाता है। इस प्रकार उन पापियों को नाना कष्ट भोगने पड़ते हैं लेकिन वह मरते नहीं। उनका शरीर दुःख भोगता है। फिर उनको निरुध्वास नामक नरक में भी श्वास लेने के बिना पापात्मा प्राणी बहुत समय तक पड़ा रहता है वहां रेत के ही घर होते हैं जिनसे उसकी पीड़ा व कष्ट और अधिक बढ़ जाता है। रौरव नरक में प्राणियों के पैर, मुख, गुदा, शिर, आंखें, माथा आदि पर खूब गरम हुए अंकुश एवं कठोर घनों का तड़ा-तड़ प्रहार किया जाता है। फिर बार-बार उसे गरम रेत व गन्दे कीचड़ में फेंका जाता है। तत्पश्चात् कुम्भीपाक नरक में उसे खौलते हुए तेल में गरम किया जाता है। फिर लाजाभक्ष सूचीपत्र लोहा कुम्भ आदि नरकों में डालकर धीरे-धीरे श्वास लेने लगते हैं। फिर उन्हें तीखे महाज्वाल क्षार कूप नरक में फेंका जाता है। जहां दुष्ट पापी लोग भीषण गर्मी से भयभीत होकर इधर-उधर भागते हैं। फिर यमदूत इनके कन्धों को झुलस देते हैं। पीछे की तरफ से इनका सिर लगा देते हैं। फिर वज्र के समान मुक्कों से इन पर प्रहार करते हैं। महाज्वाल नरक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

में सब पापियों को एक रस्सी में बांध कर कीचड़ में लपेट देते हैं फिर उन्हें तीव्र अग्नि में पकाते हैं। इस प्रकार दुष्ट लोग बहुत बड़ी-बड़ी यातनाएं अपने पापों के कारण झेलते हैं।

दसवां अध्याय

(नरक वर्णन नास्तिक द्विज हाख्य नामक नरक में डाले जाते हैं वहां उन पर बड़े-बड़े पैने फलों वाले हल चलाए जाते हैं। माता-पिता तथा गुरु को फटकारने वालों के मुख विष्ठा से भर दिए जाते हैं।)

उसके बाद उनको नास्तिक द्विज हाख्य नामक नरक में डाला जाता है जहां पर कि उनके शरीर पर लम्बी तथा पैनी फालों वाले हल चलाये जाते हैं। जिन पापियों ने माता-पिता एवं गुरु को गालियां दी होती हैं, उनके मुखों में विष्ठा डाला जाता है और ऊपर से उनको धान की भांति कूटा जाता है। जिन पापियों ने शिवालय, बावली, तालाब, कुएं, बगीचे, ब्राह्मण के घरों को तोड़ा-फोड़ा हो या वह पापी जिन्होंने उक्त स्थानों में व्यभिचार किया हो या कामांध होकर वहां पर अपने शरीर पर उबटन मला हो, पान खाया हो, जुआ खेला हो या विषय-भोग किया हो उनको कोल्हू में पेरा जाता है और सृष्टि-संसार के संहार तक उन्हें नरकाग्नि में जलाया जाता है। इसी प्रकार पर स्त्री के साथ भोग-विलास करने वाले विलासियों को भी यमदूत पहले तो तरह-तरह की यातनायें देते हैं बाद में उनको लोहे की तपाई हुई स्त्री के साथ चिपटा देते हैं। उन पापियों, जो कि महात्माओं की निन्दा सुनते हैं, उनके कानों को गलाये हुए रांग, सीसा, गरम दूध या गरम तेल से भर दिया जाता है। नारियों को आंख मारने वाले तथा अश्लील संकेत करने वाले पापियों की भी आंखें नष्ट कर दी जाती हैं। कुदृष्टि (नजरे बद) से पराई स्त्रियों को देखने वाले पापियों की आंखों में गरम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की सुइयां चुभोई जाती हैं एवं उनमें गरम-गरम राख भर दी जाती है। जो पापी लालच से अन्धे होकर देवताओं के बाग में से फूल तोड़ते हैं या उन्हें सूंघते हैं या मालायें बनाकर अपने गले में पहनते हैं, नरक में उनके सिर पर लोह-शंकु ठोंके जाते हैं। उन महापापियों को जो कि महात्माओं के उपदेशों की देवता, गुरु, धर्म-शास्त्रों आदि की निन्दा किया करते हैं, उनकी छाती, पीठ, कण्ठ, जीभ, तालु, होंठ, नाक, सिर आदि में तीन-तीन नोंकों वाली कीलें ठोकी जाती हैं और ऊपर से उन पर मुगदरों की मार मारी जाती है। दूसरों का धन छीनने वालों तथा ब्राह्मणों को पैर लगाने वाले पापियों को भी नरक भोगना पड़ता है। भगवान सदाशिव के पूजन की सामग्री, गौ तथा ज्ञान-शास्त्रों को जो व्यक्ति पैरों तले रौंदते हैं उनको सभी नरक भोगने पड़ते हैं। वह महापापी जो देव मन्दिरों के पास तथा बगीचों में मल-मूत्र त्याग किया करते हैं, उनके अण्डकोषों तथा लिंगेन्द्रिय पर मुगदरों से चोटें दी जाती हैं और उनकी लिंगेन्द्रिय के छिद्र में तथा गुदा में गरम-गरम बालू भर दी जाती है। जो लोग किसी प्रकार का भी दान नहीं करते उनकी इन्द्रियों को पीड़ित किया जाता है। जो घर में आए अतिथि की टहल-सेवा न करके उसे बुरी तरह से फटकार कर घर से निकाल देते हैं उन पापियों को नरक में बहुत बुरी गति होती है। जो शिव भक्त शिव पूजन करने के बाद, शिव मन्त्र बोल कर, यम मार्ग कोटों के रखने वाले, दो श्याम एवं शबल श्वानों को, तथा पश्चिम, वायव्य, उत्तर, नैऋतु दिशाओं के वासी कौओं को बलि दिया करते हैं, उनको यमदूतों द्वारा बिल्कुल पीड़ित नहीं किया जाता बल्कि वह सीधे स्वर्ग में जाते हैं। इस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कारण, प्रतिदिन मनुष्य चार हाथ का मण्डप निर्माण करके, उसके ईशान में धन्वन्तरि, पूर्व में इन्द्र, पश्चिम में सुदक्षोम, दक्षिण में हम, तथा पितृश्वर पूर्व में सूर्यद्वार पर धाता-विधाता इन सबको बलि देवें। कुत्तों, श्वपच एवं कौओं के लिए बलि पृथ्वी पर रख देनी चाहिए। स्वाहाकार, स्वधाकार, वषट्कार पाप कर्मों के कारण नरक भोगने के बाद भी उनको सुख नहीं मिलता। ऐसे पापी जन्म पाकर भी दुःख से व्याकुल रहते हैं। पुण्यवान् पुरुष तो श्रेष्ठ गृहस्थ में जन्म पाकर धनवान् होकर दुःख का अनुभव भी नहीं करते।

ग्यारहवां अध्याय

(अन्नदान की महिमा—धर्मात्मा बिना कष्ट के यमपुर पहुंच जाते हैं। ब्राह्मणों को जूते खड़ाऊं आदि पहनाने वाले मनुष्य घोड़ों पर सवार होकर यमपुर पहुंचते हैं। फूलों की वाटिकाएं लगाने वाले पुरुष विमान पर बैठकर यमपुर पहुंचते हैं। मन्दिर संन्यासियों के लिए मठ, निर्धनों के लिए घर बनवाने वाले पुरुषों को विश्राम के लिए सुन्दर भवन मिलते हैं। अन्नदान सब दानों से उत्तम दान है। अन्नदान को स्वर्ग में सुख रूप फल प्राप्त होते हैं।)

परम दयालु शुभ धर्म कर्मा पुरुष उस भयानक रास्ते से बिना रुकावट के यमपुर पहुंच जाते हैं। छाते के दानी, छाते के साथ शैया एवं आसन दान करने वाले दानी, बगीचे वृक्ष आदि लगाने वाले मनुष्य वृक्षों की छाया में स्वर्ग पहुंचते हैं। फलों का बाग लगाने वाले, पुरुष-विमानों में बैठकर स्वर्ग जाते हैं। देव मन्दिर, संन्यासी-मठ तथा निर्धनों को घर बनाकर देने वाले मनुष्यों के स्वर्ग के मार्ग में विश्राम के लिए सुन्दर भवन मिलते हैं। देवताओं, अग्नि, गुरु, ब्राह्मणों एवं माता-पिता की सेवा करने वालों को आदर व सम्मान मिलता है। मार्ग में दीप जलाकर दूसरों का पथ-प्रदर्शन करने वाले सदा-सर्दव निरोग

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

एवं सुखी रहते हैं। गुरु की सेवा करने वालों, गरीबों और ब्राह्मणों को दान देने वालों को स्वर्ग जाते हुए मार्ग में घर जैसा आराम मिलता है। गौ-दान करने वाले मन चाहा सुख भोगते हैं। अन्न तथा जल का दान करने वाले अन्न तथा जल प्राप्त करते हैं ब्राह्मणों के चरण धोने वाले घोड़ों पर सवार होकर स्वर्ग को जाते हैं ऐसे पुरुषों को यमराज फटकारा नहीं करते। सोना-चांदी के दान करने वाले मनुष्य बड़े-बड़े किलों को पार कर जाते हैं चांदी का दान सुख देने वाला है। अन्नदान सब दानों से उत्तम माना गया है। यही अन्नदान प्राणियों में उत्साह प्रसन्नता, बल, बुद्धि, रक्त, मांस, चर्बी वीर्य आदि को बढ़ाने वाला है। अन्न न मिलने से अनेकों प्रकार के सुख, चैन, वैभव, विलास आदि मनुष्यों को जीवित नहीं रख सकते। इस कारण अन्नदान करने वाले सभी सुख प्राप्त करते हैं। दान में दिए अन्न खाने से शरीर पुष्ट होता है। उस शरीर से धर्म होता है। उस धर्म का आधा भाग अन्नदाता को मिलता है, यह शरीर ही तो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष साधक है। अतः इस शरीर के लिए अन्न बल एवं प्राण है। अतः अपने खर्च में से कुछ बचाकर भिक्षुओं को दान देना श्रेयकर है। इस लोक एवं परलोक में सुख चाहने की इच्छा से घर पर आए अतिथियों का यथा शक्ति अन्न धनादि द्वारा सत्कार करना कल्याणकारी है। यही अन्न-दान श्रेष्ठ फलदायक फलदार वृक्ष है। अन्नदाता को स्वर्ग में सुख रूप फल प्राप्त होते हैं। वे स्वर्ग में आनन्दस्वरूप ब्राह्मण होते हैं। अन्नदान की महिमा वाले इस अध्याय को जो पढ़ता है श्रद्धापूर्वक इसका श्रवन करता है उसे धन-धान्य व ऐश्वर्य सुख की प्राप्ति होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बारहवां अध्याय

(चित्रगुप्त जी ने जलदान की महिमा का वर्णन करते हुए कहा—जलदान भी उत्तम दान है। कुआं खोदने वाले मनुष्यों के आधे पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस मनुष्य के बनवाए तालाब व कुएं का जल गौ, ब्राह्मण, साधु, महात्मा पीते हैं उसकी सारी वंशावली का उद्धार हो जाता है।)

जलदान को भी उत्तम दान कहा गया है। जल सब प्राणियों के जीवन का आधार है और सन्तुष्टि प्रदान करने वाला है। कुआं खुदवाने वाले मनुष्य के सब पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रभु भक्त एवं दानवीर व्यक्ति के खुदवाये हुए तालाब का पानी गौ, ब्राह्मण, साधु-महात्मा पीते हैं उसके अगले पिछलों का उद्धार हो जाता है। जिस तालाब का पानी गर्मियों में भी नहीं सूखता उस तालाब के बनवाने वाला सदा-सदैव सुखी रहता है। देवता, राक्षस, गन्धर्व, नाग, चर-अचर सभी प्राणी जल के ही आश्रित हैं। तालाब जीवन एवं लक्ष्मी प्रदान करने वाले हैं। जिस तालाब में बरसात का पानी रहता है उसके बनवाने वाले को अग्निहोत्र जैसा फल प्राप्त होता है। शीत काल में तालाब के पानी से भरे रहने का फल उसके बनवाने वाले को हजार गौ-दान का-सा प्राप्त होता है। हेमन्त तथा शिशिर ऋतु में तालाब, यदि जल से भरा रहने का फल अविरत्रि अतिरित्र अश्वमेध यज्ञ करने जैसा प्राप्त होता है। इसीलिए शास्त्रकारों ने तालाब खुदवाने के शुभ कार्य को अत्यन्त पुण्य का देने वाला तथा कल्याण करने वाला माना है। इसी प्रकार वृक्ष एवं बागीचे लगाने का भी फल प्राप्त होता है। कठोर मार्ग में वृक्ष लगवाना बहुत बड़े फल को देने वाला है। ऐसे वृक्ष लगवाने वाले का अपना, उसके पितरों का तथा आने वाले वंश सभी का उद्धार हो जाता है। वृक्ष लगवाने वाला मृत्यु के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बाद अक्षय लोक में जाता है। वृक्ष पुत्रों के समान हैं। अतः मोक्ष की चाहना करने वालों को वृक्ष अवश्यमेव लगवाने चाहिये। फलदार वृक्ष अत्योत्तम होते हैं। फूलों से देवता, फलों से पितर, छाया से यात्री सुखी होते हैं। वृक्ष देवता, राक्षस, सर्प, किन्नर, मनुष्य सभी को सुख पहुंचाते हैं। सत्य सबसे उत्तम है। परब्रह्म, चेतन, धैर्य, देवता, ऋषि, पितर आदि का पूजन जल, विद्यादान, ब्रह्मचर्य, परमपद आदि सभी सत्य रूप हैं। इस भूमि का आधार सत्य ही तो है। अतः मनुष्य-को सदा सदैव सत्य बोलना चाहिये। सत्य बोलने वाला परम तपस्वी, सत्य धर्म का प्रेमी, सिद्ध पुरुष होता है। स्वर्ग में अप्सरायें उसकी सेवा करती हैं। उसको अप्सरायें व गण विमान में बिठा कर स्वर्ग को ले जाते हैं। यदि वेदों का ज्ञाता, यज्ञादि का करने वाला भी झूठ बोलने वाला हो तो उसकी विद्या तथा यज्ञ आदि करना सब निष्फल जाते हैं। अतः सच बोलना ही अत्यन्त फलदायक है। अब आप तप का फल सुनिये। तप भी महान श्रेष्ठ तथा फल का देने वाला है। तपस्वी देवताओं के साथ देवताओं का-सा सुख भोगते हैं। तपस्या द्वारा मनुष्य को स्वर्ग, यश, मुक्ति, कामना, ज्ञान-विज्ञान, सम्पत्ति, सौभाग्य, रूप आदि तथा सांसारिक पदार्थ भी प्राप्त होते हैं। उसके मनोरथ सदा-सदैव पूर्ण होते रहते हैं। तपस्या के बिना न ही तो ब्रह्मलोक की प्राप्ति हो सकती है और न ही शिवलोक की। जाप द्वारा मदिरापान, ब्रह्महत्या, गुरु पत्नी के साथ भोग करना आदि महापापों से छुटकारा मिल जाता है। जाप सारे संसार को सुख पहुंचाता है। सुख की प्राप्ति के लिए तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए मनुष्य को अवश्यमेव तप करना चाहिये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तेरहवां अध्याय

(श्री वेदव्यासजी को श्री सनत्कुमारजी का बतलाना कि जो ब्राह्मण स्वयं वेद शास्त्र पढ़कर दूसरों को सुनाते हैं उन्हें दुगना फल मिलता है। और जो ब्राह्मण पुराण सुनाकर सबको नरकों की कथाएँ सुनाकर सावधान करते हैं वह पण्डित पुराण ज्ञाता होते हैं।)

जो ब्राह्मण स्वयं वेदाध्ययन करके दूसरों को इसका ज्ञान कराते हैं उन्हें इसका दुगना फल प्राप्त होता है। जो ज्ञानी पुराण पढ़कर सभी लोगों को नरकों की कथाएं सुनाकर सावधान करते हैं वे लोग ही पण्डित पुराण के वास्तविक ज्ञाता हैं। लोगों को नरक में जाने से सावधान करने वाले सुपात्र हैं। यह मनुष्य साधारण नहीं होते। वे तो जगत् का उद्धार करने के लिये प्रकट होते हैं। अपने ज्ञान से दूसरों को मोक्ष प्राप्त कराते हैं। इस लोक तथा परलोक के सुख की चाहना से इस प्रकार के ज्ञानी पुराणवेत्ता श्रेष्ठ ब्राह्मणों को धन, अन्न, भूमि, स्वर्ण, गौ, रथ, वाहन, हाथी, घोड़ा एवं सुन्दर वस्त्र-आभूषण आदि यथा शक्ति दान देवे। ऐसे सुपात्र को दान देने से मनोवांछित सुख तथा अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य फल प्राप्त होता है। धान्य आदि उत्पन्न करने वाले जुते हुए खेत दान करने से दस पीढ़ियां पहली एवं दस आने वाली पीढ़ियां संसार सागर को पार कर स्वयं इस संसार के भोग-भोगकर सुन्दर विमान पर चढ़कर शिवलोक को पहुंचते हैं। जो पुरुष शिवालय तथा विष्णु सूर्यादि देवों के मन्दिरों में पुराणों की कथा रखाकर सुनते हैं वे राजसूय यज्ञ एवं अश्वमेध यज्ञादि का पुण्य प्राप्त करके सूर्यलोक होते हुए ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं। देवताओं के समीप पुराणों की कथा कराने से हजार अश्वमेध यज्ञ जितना फल प्राप्त होता है। मोक्ष के इच्छुक पुरुषों को श्रद्धापूर्वक शिव-पुराण की कथा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नित्य सुननी चाहिए। यदि निरन्तर बैठकर कथा न सुन सके तो दो घड़ी ही बैठकर नित्य श्रवण करे। यदि यह भी न कर सके तो महीने में एक बार तो अवश्य श्रवण करे इसके श्रवण से बन्धनों से मुक्ति होती है। शिव भक्त को चाहिए कि जब तक ज्ञान प्राप्त न हो निरन्तर योग शास्त्रों शिव पुराण आदि का अध्ययन करता रहे। इससे उसके पापों का नाश होगा तथा बुद्धि पवित्र व निर्मल होगी। इसके अतिरिक्त छब्बीस पुराणों में से यदि कोई किसी एक पुराण का श्रद्धा से पठन व श्रवण कर ले तो निश्चय ही उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

चौदहवां अध्याय

(श्री सनत्कुमारजी का श्री वेदव्यासजी को बतलाना कि दान सुपात्र को देने से ही कल्याण होता है। स्वर्ण, गौ आदि का दान देने वाले तथा दान लेने वाले दोनों के लिए हितकारी है।)

बड़े-बड़े दान सुपात्रों को देने से ही मनष्य का कल्याण होता है। सोना, जमीन, गौ आदि का दान देने तथा लेने वाले दोनों के लिए कल्याण का करने वाला है। गौ, पृथ्वी, विद्या तथा तुला दान यह चार दान बहुत ही उत्तम कहे गये हैं। दान की इच्छा से आये हुए ब्राह्मणों को दूध देने वाली गौ, सुन्दर तथा बहुमूल्य वस्त्र, छाता, जूते, अन्न, भोजन आदि बड़ी श्रद्धा के साथ संकल्प करके दान करना चाहिये। ब्राह्मणों तथा दीन-दुखियों को दान देने से दाता का अवश्यमेव कल्याण होता है। सोना, तिल, हाथी, कन्या (जमाता को), दासी (जमाता को) घर, रथ, मणि, कपिला गौ, अन्न यह दस प्रकार के दान देने वाले सहज ही भवसागर से पार उतर जाते हैं। राजा रघु के समान सोने, जमीन, मणि का दान सबसे उत्तम कहा गया है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जो सोने से मढ़े हुए सींगों तथा खुरों वाली, साथ में अनेक पदार्थ भी हों, ऐसी कपिला गाय बछड़े सहित किसी विद्वान ब्राह्मण को दान में देता है वह मोक्ष भी प्राप्त करता है और इस जन्म में मृत्यु पर्यन्त सदा-सदैव सुखी रहता है और वैसी ही गौ वैसे ही सामान के साथ जैसा कि उसने दिया था, प्राप्त होती है। अपनी प्रिय वस्तु का दान सब दानों में उत्तम कहा गया है। उसी दान से दोनों लोकों में उसी वस्तु की प्राप्ति होती है। तुला दान की तो बहुत ही महिमा कही गई है। तराजू के एक पलड़े में स्वयं बैठे और दूसरे को अपनी शक्ति के अनुसार किसी द्रव्य से भरकर अपने भार के बराबर तोलकर किसी सुपात्र ब्राह्मण को यह कहकर दान करे कि हे भगवान शंकर! मेरे अगले पिछले सब पाप क्षमा कर दिये जायें। इस प्रकार का तुला दान करने से मनुष्य सभी पापों से छुटकारा पाकर चौदह इन्द्रों के राज्य समय तक स्वर्ग में निवास करके दिव्य भोगों को भोगता है।

पन्द्रहवां अध्याय

(श्री सनत्कुमारजी का श्री व्यासजी के सम्मुख ब्रह्माण्ड का वर्णन करना, उन्हें बतलाना कि ब्रह्माण्ड जल के मध्य में है। इसको भगवान् सदाशिव के अंश श्री शेषनाग जी धारण किए हुए हैं। भगवान् विष्णु इसका पालन करते हैं, सिद्ध, देवता, ऋषि, महर्षि श्री शेषनाग का नित्य पूजन किया करते हैं। इनके बड़े बल, एवं रूप को देवता लोग भी नहीं जान सकते और न ही भली प्रकार कह सकते हैं। पाताल लोकों को सिद्ध, दानव, मनुष्य, नाग आदि परम तप करके ही भोगते हैं।)

सनत्कुमार बोले—हे व्यासजी! अब ब्रह्माण्ड का वर्णन करते हैं। ब्रह्माण्ड कितने विस्तार का है इसका वर्णन अब हम आपसे करते हैं। ब्रह्माण्ड जल में है। इसको शिवजी के अंश शेषनागजी धारण करते हैं। विष्णु इसका पालन करते हैं सिद्ध, देवता, ऋषिगण इन्हीं शेषनाग का निरन्तर पूजन किया करते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। यही शेष सिर एवं अनन्त नाम से प्रसिद्ध है अनन्त गुण कीर्ति सम्पन्न स्वर्ण मूसलाधार जैसे परम तेजस्वी हैं। नाग कन्याएं जिनकी पूजा करती हैं। यह संकर्षण रूप रुद्र है। इनका बल एवं रूप देवता लोग भी नहीं जान सकते और न भली भांति कह सकते हैं। पृथ्वी के नीचे भाग में अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, पाताल ये सात लोक हैं। प्रत्येक दस दस हजार योजन लम्बे-लम्बे व्यास के तथा बीस हजार योजन ऊंचे हैं। इन सब में रत्न स्वर्ण की पृथ्वी व आंगल है। दैत्य महा नाग यहीं निवास करते हैं। सूर्य चन्द्रमा का प्रकाश धाम सर्दी आदि कुछ भी नहीं व्यापती। अमूल्य मणियों का प्रकाश है। सभी प्रकार के सुख यहां विद्यमान हैं। कमलों वाले निर्मल जल के तालाब हैं। जिनमें सदा भंवरे गुञ्जन किया करते हैं। नदियां जलाशय हैं। सुन्दर अलंकार धारण किए सुगन्धित उपवन वेणु वीणा मृदंग अप्सरा गायन देव दानवों की कन्याएं अद्भुत वैभव विलास सभी विद्यमान हैं। पाताल लोक को तो सिद्ध, दानव, मनुष्य नाग आदि परम तप करके प्राप्त करते हैं।

सोलहवां अध्याय

(श्री सनत्कुमारजी ने श्री वेदव्यास जी से कहा कि पापात्मा रौवर, शूकर, महा ज्वाला, तप्त कुण्ड, लवण विलोहित, वैतरणी नदी कृमि, कृमि भोजन, कठिन असि पत्रवन, पत्रवन, लाल भक्ष, दारुण संवेष, काल सूत्र, रौरव, शाल्मलि आदि बहुत ही दुःख-दायक नरकों में अनेक यातनाएं पाते हैं।)

और उन्हीं लोकों के ऊपरी भाग में रौरव, शूकर, महा ज्वाला, तप्त कुण्ड, लवण, विलोहित वैतरणी नदी, कृमि-कृमि भोजन, कठिन असिपत्रवन, लाल भक्ष, दारुण संदेश, काल सूत्र, रौरव, शालमलि आदि अत्यन्त दुःखदायक नरक हैं। पापियों को इन नरकों में आनकर अनेकों यातनाएं सहन करनी पड़ती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। जो कोई झूठ बोलता है वह अवश्यमेव नरक में डाला जाता है। गर्भ का गिराने वाला, बालक की हत्या करने वाला, सोने का चोर, सोने का छीनने वाला, गौ का मार्ग रोकने वाला, धोकेबाज, विश्वासघात करने वाला, मदिरापान करने वाला और इन लोगों के साथी, पापकर्म में इनकी सहायता करने वाले, गुरु की हत्या करने वाले यह सब-के-सब पापी कुम्भी नामक नरक में डाले जाते हैं। बहिन, कन्या, माता, गाय, अपनी पतिव्रता स्त्री को बेचने वाला, केश (बाल) बेचने वाला, ब्याज खाने वाला इत्यादि पापी तप्त लोह नामक नरक में डाले जाते हैं। नौकर को व्यर्थ के लिये डांटने व मारने वाला, गुरु का अपमान करने वाला, घर के सदस्यों से या पंक्ति में बैठकर सबसे पहिले खाने वाला, देवताओं की निन्दा करने वाला, अभोग्य स्त्री के साथ भोग करने वाला आदि पापी सात बल नामक नरक में डाले जाते हैं। चोर, गौ की हत्या करने वाले, अपने कुल की मर्यादा मिटाने वाले, देवताओं तथा पितरों से बैर रखने वाले, रत्नों में खोट मिलाकर उनको खोटा बनाने वाले ऐसे मनुष्य कृमिभक्ष नरक में डाले जाते हैं जहां उनको कीड़े नोच-नोचकर खाते हैं। पितर, देवता, ब्राह्मण और अतिथि आदि को भोजन न देकर स्वयं खाने वाले, गलत कुन्द प्रकार के हथियार बनाकर बेचने वाले भक्ष नामक नरक में गिराये जाते हैं। नीचों की संगत करने वाले, अनुचित दान को लेने वाले, बिना घी के हवन करने वाले, अभक्ष्य वस्तुओं के खाने वाले, मदिरा बेचने वाले, ब्राह्मण रुधिरोध नरक में डाले जाते हैं। द्वार तोड़ने वाले, नगर का नाश करने वाले पापी वैतरणी नदी में डाले जाते हैं। युवा अवस्था में चूर होकर कुल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की मर्यादा व कुल की रीति को नष्ट करने वाले, स्त्री की कमाई खाने वाले पापीजन कृत्य नरक में गिरते हैं। अकारण ही वृक्ष उखाड़ने वाले असिपत्रवन नामक नरक में पड़ते हैं। क्षुर भृक मृगों का शिकार करने वाले शिकारी तथा अपना धर्म आचार त्याग देने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि वह्नि ज्वाला नरक में गिरते हैं। आग लगाने वाले श्वपाक नरक के व्रत नष्ट कर्ता आश्रम से भिन्न होकर रहने वाले पापी संदेह नरक में पड़ते हैं। स्वप्न में वीर्य गिराने वाले ब्रह्मचारी तथा अपनी सन्तान को विद्या न देने वाले मनुष्य श्व भोजन नामक नरक में पड़ते हैं। इसी प्रकार असंख्य नरक हैं। जिनमें दुष्ट पापी लोगों को यातनाएं भोगनी पड़ती हैं। पुरुष मन वाणी शरीर द्वारा जो पाप करता है उसे उसी प्रकार का नरक भोगना पड़ता है। स्वांयभुव मनु कहते हैं कि बड़े-बड़े पाप बड़े-बड़े प्रायश्चितों द्वारा तथा छोटे-छोटे पाप छोटे-छोटे प्रायश्चितों द्वारा निवृत्त किए जाते हैं। प्रत्येक पाप के लिए पृथक-पृथक प्रायश्चित का विधान है। इन सबसे बढ़कर प्रायश्चित है शिवजी का ध्यान व स्मरण करना। पापों व पुण्यों से मनुष्य को नरक स्वर्ग मिलते हैं। पाप दुःखों के कारण हैं पुण्य सुखों के। पाप दूर से सुख दिखाते हैं किन्तु वास्तव में वे दुःख के कारण होते हैं। इसी कारण सच्चा सुख होना संसार में कुछ भी नहीं है। सुख दुःख सभी मन की कल्पना है सबसे विशेष ज्ञान है। ब्रह्म को पहचानने के लिए ज्ञान ही सार है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सत्रहवां अध्याय

(श्री सनत्कुमारजी का श्री वेदव्यासजी के सम्मुख जम्बु द्वीप वर्ष का वर्णनकरना।)

श्री सनत्कुमारजी ने कहा—हे व्यासजी! अब मैं आपको सात द्वीपों के सात भूमण्डलों का विस्तार आपके सम्मुख कहूंगा आप ध्यान से सुनिये—जम्बु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर यह सात महाद्वीप हैं इनके चहूं ओर सात समुद्र हैं। यह सात समुद्र क्षार, जल, ईख, केशर, मद्य, घी, दूध, दही तथा मीठे जल से भरे हुए हैं। यह जम्बु द्वीप तथा प्लक्ष आदि छः द्वीपों के मध्य में हैं। इनके ठीक बीच में स्वर्ण का सुमेरू पर्वत है। यह पर्वत चौंसठ कोस नीचे तक चला गया है और तीन सौ छत्तीस कोस ऊंचा है। इसके शिखरों का विस्तार एक सौ अठारह कोस है। इसके दक्षिण की ओर निषध, हिमाचल, हेमकूट नामक तीन पर्वत हैं। यह सब पर्वत चालीस-चालीस कोस के विस्तार में हैं। भारत वर्ष चालीस हजार कोस के विस्तार वाला है। किंपुरुष एवं मरू के दक्षिण में हरि वर्ष है। उत्तर में रम्यक है। उसके पास ही हिरण्मय है। उधर की ओर भारत के समान ही कुरव देश है। यह सभी देश नौ-नौ हजार योजन के प्रमाण में हैं। इनके मध्य में इलावृत्त है। उसके मध्य में मेरू पर्वत नौ सहस्र योजन अर्थात छत्तीस हजार कोस ऊंचा स्थित है। इनके पूर्व में मन्दिर, दक्षिण में गन्धमादन, पश्चिम में विपुल एवं उत्तर में सुपार्श्व यह चार पर्वत शिखरों के समान इलावृत्त के साथ मिल रहे हैं। इनके ऊपर कदम्ब, जामुन, पीपल, बट आदि वृक्ष पर्वतों की ध्वजा की भांति ग्यारह सौ योजन अर्थात छत्तीस हजार चार सौ कोस के विस्तार में हैं। जम्बु द्वीप में जो जामुन के वृक्ष हैं वह हाथी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के समान फैलाव वाले हैं। और उन पर से ढेरों फल गिरते हैं। उन ढेरों जामुनों में से रस निकलकर धारा के रूप में पर्वत के चहूं ओर बहता है, वही जम्बु नदी है। वहां के निवासी वही जल पिया करते हैं। मेरू के पूर्व में भद्राश्व, पश्चिम में केतु-माल देश है। उन दोनों के बीच में इलावृत्त देश है। पूर्व दिशा में चैत्र रथ वन है। दक्षिण में गंधमादन है। पश्चिम में विश्राज है। उत्तर में नन्दन वन है। उरुणोद, महाभद्र, शीतोद एवं मानस यह चार सरोवर भी हैं। मेरू के पूर्व में शीताञ्जन, कुरुंग, कुरर तथा माल्यवान पर्वत हैं। दक्षिण में चित्रकूट, शिखिर, पलंग रूचक, निषध, कपिल आदि हैं। पश्चिम में सिनी, वास, कुशुम्भ, कपिल, नारद, नाग आदि हैं। उत्तर में शंखचूड़, ऋषभ हंस, काल जरा आदि केशराचल पर्वत हैं। सुमेरू के शिखर पर श्री ब्रह्मा की चौदह हजार कोस लम्बी चौड़ी शातकौंणपुरी है। उसके पास ही देवराज इन्द्र, अग्नि आदि लोकपालों की अमरावती, तेजोवती, संयमनी, कृष्णांगना, श्रद्धावती, गन्धवती, यशोवती नामक आठ पुरियां हैं। श्री ब्रह्मा जी की पुरी के ठीक बीच में भगवान विष्णु के चरणों में से प्रकट हुई परम पावनी गंगा नदी चन्द्रमण्डल को भेदकर गिरती है। वही गंगा नदी फिर आगे आकर चार भागों—सीता, अलकनन्दा, चक्षु तथा भद्रा में बंटकर चहूं ओर बहती है।

ब्रह्मलोक के पूर्व में जो पर्वतमाला है वहां से होती हुई सीता नदी फिर समुद्र में आन गिरती है। अलकनन्दा दक्षिण में आकर समुद्र से मिलती है। चक्षु पश्चिम से एवं भद्रा उत्तर की ओर होती हुई समुद्र में आ गिरती है। सुनील, विरोध, निषध माल्यवान गन्धमादन यह चार पर्वत समेरू को चहूं ओर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से कलियों की भांति घेरे खड़े हैं। लोकपद्म, भारत, केतुमाल, भद्राश्च, कुरव, मर्यादा लोक पर्वत पत्तों की भांति खड़े हैं। दक्षिण तथा उत्तर के विस्तार में देवकूट पर्वत, मध्य तथा पूर्व पश्चिम की ओर गन्धमादन कैलाश कली के समान स्थित हैं। वहां पर केवल धर्मात्मा पुरुष ही जाकर रह सकते हैं। पापी वहां पर बिल्कुल नहीं जा सकते। किंपुरुष आदि आठ देशों के निवासियों को रोग, शोक, व्याकुलता, भूख आदि कुछ भी व्याकुल नहीं कर सकते वे लोग निरोगी, निःशंक होकर सभी कष्टों से मुक्त सतयुग त्रेता की भांति बारह हजार वर्ष की आयु वाले होते हैं।

अठारहवां अध्याय

(भारत वर्ष का वर्णन, जहां पर कि बुरे भले अपने कर्मों के अनुसार नरक अथवा स्वर्ग को प्राप्त करते हैं। भारत वर्ष के नौ खण्डों इन्द्रद्युम्न, कसेरू, ताम्रवर्ण, गभस्तिमान, नाग द्वीप, सौम्य, गन्धर्व, वारुण, भारत वर्ष का विस्तृत वर्णन, भारत वर्ष के सात पर्वतों में से वेद, स्मृति, पुराणादि सद्ग्रन्थ प्रकट हुये हैं। जिनके अध्ययन से सभी पापों का नाश होता है।)

जम्बुद्वीप—यह भारत वर्ष है हिमालय के दक्षिण की ओर समुद्र से उत्तर की तरफ नौ हजार योजन के प्रमाण का है। इसे कर्म-भूमि कहते हैं। यहां बुरे भले अपने कर्मों के अनुसार मनुष्य नरक अथवा स्वर्ग फल पाता है। इस भारत वर्ष के नौ खण्ड हैं। इन्द्रद्युम्न, कसेरु, ताम्रवर्ण, गभस्तिमान, नाग द्वीप, सौम्य, गन्धर्व, वारुण यह आठ खण्ड हैं। इनके अतिरिक्त सागर में से निकला हुआ हजारों योजन तक दक्षिण से उत्तर की तरफ विस्तार वाला नौवां भारत खण्ड है। इसी के पूर्व की ओर किरात, दक्षिण में यवन तथा उत्तर में ऋषि-मुनियों का निवास है। इस देश के मध्य में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र वर्ण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के लोग रहते हैं। जो कि युद्ध में कुशल, व्यापार एवं सेवा आदि में चतुर हैं। यहीं पर मलय, महेन्द्र, सह्य, सुदामा, ऋण, विन्ध्याचल, पारियात्र नामक सात पर्वत हैं। इन सात पर्वतों में से वेद, स्मृति, पुराण आदि सद ग्रन्थ प्रकट हुए हैं। जिनके पठन एवं श्रवण से समस्त पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं। विन्ध्याचल में से सात नदियां सुगन्धा, नर्मदा आदि निकलकर देश भर में फैली हुई हैं। जिनमें स्नान करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इनके अतिरिक्त भारत-खण्ड में और भी छोटी-छोटी नदियां बह रही हैं।

ऋण पर्वत से पाप-ताप हरने वाली गोदावरी, भगीरथी, ताप्ती आदि नदियां बहती हैं। सह्य पर्वत से कृष्णा वेणी आदि नदियां एवं मलयाचल से कृतमाला ताम्रपर्णा आदि महेन्द्र पर्वत से त्रिमाया, ऋषिकुल्या कुमारी आदि नदियां निकलती हैं। इन नदियों के किनारों पर बहुत से नगर तथा ग्राम बसे हुए हैं। वहां के रहने वाले इन नदियों का जल पीने एवं अन्य कार्यों के लिये प्रयोग करते हैं।

प्लक्ष द्वीप—यह द्वीप समुद्र से घिरा हुआ सौ योजन में फैला हुआ है। इस द्वीप में गोमन्त, चन्द्र, नारद, दर्दुर, सोनक, सुमन, वैभ्राज नामक पर्वत हैं। अनुतप्त, शिखी, पापघ्नी, त्रिदिवा, कृपा, अमृता, सुकृमा नामक सात नदियां हैं। यहां के पर्वतों के बीच चहूं ओर देवगण, गन्धर्व तथा अन्य जातियां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि निवास करती हैं। यह देश सदा-सदैव त्रेता युग जैसा प्रभाव रखता है। लोकों के हित के लिए यहां पर सदा भगवान विष्णु एवं श्री ब्रह्माजी भगवान सदाशिव का पूजन किया करते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शाल्मलि द्वीप—यह द्वीप प्लक्ष से दुगना माना गया है। इसको मदिरा का सागर लपेटे हुए है। इस द्वीप के बीचों बीच सेमल का एक बहुत बड़ा वृक्ष है। बस, इस कारण इसका नाम "शाल्मलि" है। इस द्वीप में सात पर्वत हैं—श्वेत, हरित, जीमित, रोहित, वैकल, मानस, सुप्रभ नामक और शुक्ला, रक्ता, हिरन्या, चन्द्रा, शुभ्रा, विमोचना, निवृत्ता नामक शीतल जल वाली नदियां बहती हैं। यह द्वीप कृत समुद्र से घिरा हुआ तथा कुश समूह से संयुक्त है। इस द्वीप में कुशेशय हरिद्युतिमान पुष्पमान, मणिद्रुम, हैमशैल एवं मंदराचल यह सात पर्वत हैं। और द्युतिमान, शिवा, पवित्रा, समिति, विद्या, दम्भा, मही महा नदी आदि। इनके अतिरिक्त सोने के समान चमकती हुई बालू वाली तथा निर्मल जल वाली हजारों नदियां हैं। यहां पर मनुष्य, राक्षस, देवता, गन्धर्व, यक्ष अपने-अपने काम में लगे हुए भगवान सदाशिव का पूजन किया करते हैं।

क्रौंच द्वीप—यह द्वीप घृतोद समुद्र के बाहर है और दधि समुद्र से चहूं ओर से घिरा हुआ है। इसमें क्रौंच, वामन, अंशकारक, दिवावृत्ति, मन, पुण्डरीक, दुन्दुभि नामक पर्वत हैं। गौरी, कुमुद्वती, सन्ध्या, रात्रि, मनोजवा शान्ति, पुण्डरीका नामक सात शीतल तथा निर्मल जल वाली गहरी महा नदियां बह रही हैं। इनके अलावा स्वच्छ जल वाली हजारों नदियां बह रही हैं।

शाक द्वीप—यह द्वीप दुग्ध सागर से घिरा हुआ है। इस द्वीप में शाक का एक बहुत बड़ा वृक्ष है। उदयाचल, जलधार, अविकेश आदि पर्वत हैं। सुकुमारी, कुमारी, नलिनी, वेणुका, इक्षु, रेणुका, गभस्ति नामक बड़ी नदियां हैं। इनके अतिरिक्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हजारों छोटी-छोटी नदियां इस द्वीप में बह रही हैं। यहां के रमणीक स्थलों में चारों वर्ण रहते हैं। स्वर्ग के रहने वाले भी इस द्वीप में आकर भ्रमण करते रहते हैं।

पुष्कर द्वीप—यह द्वीप क्षीर सागर से बाहर है। और मधुर जल वाले सागर से घिरा हुआ है। इस द्वीप के मध्य प्रदेश की ऊंचाई पांच हजार योजन है और पांच लाख योजन की गोलाई है। इस द्वीप में मानस नामक पर्वत है। इस द्वीप के रहने वालों को जरा, रोग, शोक, राग-द्वेष, अधर्म, मृत्यु आदि बिल्कुल नहीं सताते। यहां के निवासी सच बोलते हैं, दस हजार वर्ष की आयु पाते हैं। उनके रंग तपाये हुए सोने के समान होते हैं। इस द्वीप के ठीक बीचों बीच महाबीच घातकी नामक खण्ड में श्री ब्रह्माजी निवास करते हैं। देवता और मनुष्य सदा-सदैव उनका पूजन करते रहते हैं। इस द्वीप के निवासियों को यथा समय भोजन अपने आप मिल जाया करता है। भोजन प्राप्ति के लिए उनको हाथ पैर हिलाने नहीं पड़ते। इससे आगे कोई भी तो स्थान ऐसा नहीं है कि जहां पर मनुष्य रह सके।

उन्नीसवां अध्याय

(श्री सनतकुमार जी का श्री वेदव्यास जी को राशि गृह मण्डल एवं लोकों के सम्बन्ध में बतलाना।)

पृथ्वी के जिस भाग में सूर्य चन्द्रमा का प्रकाश पड़ता है उसे भूलोक कहते हैं। इस भूमि से एक लाख योजन के फासले पर हजारों योजन के विस्तार में सूर्य-मण्डल है और सूर्य-मण्डल से लाख योजन ऊपर चन्द्र-मंडल है। चंद्र मंडल से दस हजार योजन ऊपर नक्षत्रों तथा ग्रहों का मंडल है। इन मंडलों से एक लाख योजन ऊपर सात ऋतुओं तथा ऋषियों का मंडल है और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उस मंडल से एक लाख योजन ऊपर ध्रुव-मंडल है। ध्रुव मंडल पृथ्वी से ऊंचा है और ध्रुव मंडल से लगभग एक करोड़ योजन नीचे (भूः भवः स्वः) यह तीन लोक हैं। उसके नीचे कल्प निवास ऋषि हैं। ध्रुव से ऊपर महर्लोक है। वहां पर सनक सनन्दन, सनातन, कपिल, असुर बोढ़ु पंचशिख सात ब्रह्मा के पुत्र निवास करते हैं। इनसे दो लाख योजन ऊपर शुक्र और उससे दो लाख योजन नीचे बुध, बुध से दस लाख योजन ऊपर मंगल, मंगल से दो लाख योजन ऊपर बृहस्पति, यहां से भी दो लाख योजन ऊपर शनिश्चर मंडल है। सभी ग्रह अपनी-अपनी राशियों में स्थित रहते हैं। इन ग्रहों के ऊपर ग्यारह लाख योजन के फासले पर सात ऋषि रहते हैं और उससे तेरह लाख योजन ऊपर ध्रुव निवास है। जनलोक से छब्बीस लाख योजन की दूरी पर तपलोक है। उससे छः गुना फासले पर सत्यलोक है। भूलोक में सत्यवादी, धर्मात्मा तथा संयमी रहते हैं। भुवः लोक में ऋषि-महर्षि, साधु तथा देवताओं का निवास है। स्वर्ग लोक में आदित्य पवन, वसु, अश्वनिकुमार, विश्वदेवा, रुद्र, साध्य, नाग पक्षी, नवग्रह और वीतराग ऋषिगण रहते हैं। हे व्यास जी! यह ब्रह्मांड चहुं ओर से अंड कटाह से घिरा हुआ है। यह जल से दस गुणा अग्नि, पवन, आकाश, अन्धकार तथा महा भूतों से घिरा हुआ है जिसे ब्रह्मांड नायक पुरुष महत्ती, अव्य प्रधान शक्ति से लपेटे हुए स्थित हैं। परब्रह्म गुण, संख्या, नाम आदि परिमाण से रहित है। इसी लिए तो उसे अनन्त कहा जाता है। उसी से हजारों ब्रह्मांडों का जन्म हुआ करता है। कण्ठ में अग्नि, दूध में घृत, तिलों में तेल की भांति ईश्वर ब्रह्मांड भर में व्यापक है। वह आदि बीज है। उसी से अन्य अंड उत्पन्न होते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IAS (Retd) Collection Jammu

जिनसे कि सब प्रकार की सृष्टि होती है। जब शिव एवं शक्ति का मिलाप होता है, तभी सब देवगण प्रकट होते हैं। हे व्यास जी! देखिये ब्रह्मांड से आगे बैकुंठ है, जहां पर कि भगवान विष्णु रहते हैं। बैकुंठ से ऊपर कुमार आदि लोक हैं, जहां पर कि शिव-पुत्र स्वामिकार्तिक रहते हैं। उसके बाद उमा लोक है जहां पर कि शिव-शक्ति का निवास है। उससे आगे अक्षय शिवलोक है, जहां पर कि भगवान सदाशिव रहते हैं। उस लोक के पास गोलोक है जहां पर कि भगवान सदाशिव की सुशीला नामक गौ रहती है। और जिसकी रक्षा के लिए भगवान शिव ने भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज को गोलोक का अध्यक्ष बना दिया है वह भी उसी लोक में निवास करते हैं। यहां की सृष्टि को भगवान श्री सदाशिव और जगत जननी पार्वती अपनी इच्छा से भक्तों के निमित करते रहते हैं।

बीसवां अध्याय

(श्री सनतकुमार जी का श्री वेदव्यास जी को तप द्वारा मुक्ति का उपाय बतलाना।)

श्री वेदव्यास जी ने पूछा—हे सर्वज्ञ सनतकुमारजी! अब आप मुझे उस लोक के बारे में बतलाइये जहां पर कि शिवभक्त जाते हैं और जहां-जहां जाकर फिर उनको वापिस लौटना नहीं होता। श्री सनतकुमार जी बोले—हे व्यास जी! यदि मनुष्य को शिव कृपा अभीष्ट हो तो उसके लिए तप करना ही सर्वोत्तम साधन है। बिना तपस्या के शिवलोक की प्राप्ति अत्यन्त कठिन है। जो मनुष्य नित्य पवित्र हृदय से भगवान सदाशिव की उपासना करते हैं वह बन्दनीय हैं। तपस्या परम पवित्र साधन है। जिसे देखकर स्वर्ग के देवता प्रसन्न होते हैं। ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने तपस्या करके ही उच्च पदों की प्राप्ति की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

है। तप सात्विक, राजस, तामस—तीन प्रकार होते हैं। जो मनुष्य जिस भावना से तप करता है, उसको उसकी उसी भावना के अनुसार ही फल की प्राप्ति होती है। देवता, सन्यासी एवं ब्रह्मचारी सात्विक तप करते हैं। दानव राजस तप करते हैं। राक्षस और क्रूर कर्म करने वाले मनुष्य तामस तप करते हैं। जो तप फल की इच्छा न करके किया जाता है वह तप सात्विक है और लोक व परलोक के सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। जो तप किसी कामना को सन्मुख रखकर किया जावे वह तप राजस है। और जो तप कि अपने शरीर को पीड़ा देकर किसी सिद्धि की प्राप्ति के लिए किया जावे वह तप तामस है। सात्विक तप सबसे उत्तम कहा गया है। इसमें धर्म, बुद्धि स्थिर रहती है। मनुष्य, हिंसा रहित हो, स्नान, पूजा, हवन, मानसिक शारीरिक पवित्रता, अहिंसा व्रत, उपवास, मौन, इन्द्रियों का निग्रह, ज्ञान, विद्या, सत्व, क्रोध न करना, दान देना, क्षमा करना, दया, बावली, कुआं, तालाब बनवाना, चन्द्रायण व्रत रखना, यज्ञ करना, तीर्थ भ्रमण और आश्रमों में रहकर जीवन व्यतीत करना, इन सद्गुणों को अपनाये—यह सब भगवान सदाशिव की भक्ति के लिए उत्तम कहे गए हैं। यह सब साधन मनुष्य को सच्चा सुख देने वालें हैं। मेष, संक्रांति, तुला, संक्रांति के दिन एकांत में स्थिर हो, शिव भक्त रंचक, पूरक और कुम्भक प्राणायाम द्वारा परम ज्योति का ध्यान करे। उस समय उसको नाड़ी की गति का ज्ञान और प्रत्याहार विधि के अवरोध का ध्यान करना चाहिए। फिर तुरीय ब्रह्म का ध्यान करे। उस समय साधक की बुद्धि अणिमा, महिमा, आठ सिद्धियों की ओर झुकती है। यह साधक के लिये ज्ञान प्राप्ति के लिये उत्तम साधन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। स्त्री, पलंग, पेय पदार्थ, वस्त्र, धूप ताम्बूल भक्षण आदि वस्तुएं राजाओं के वैभव हैं। स्वर्ण भार, तांबा चमर, रत्न, गाय, गति नृत्य, आभूषण, शंख, मृदंग, सितार, छत्र, मोर, हाथी, घोड़ा, रथ और वेद शास्त्री ज्ञान। यह सब भोग के ही रूप हैं। इन्हीं में मोहित होकर मनुष्य मोह करता है और वह तेली के बैल की भांति कोल्हू के चक्कर लगाता रहता है। वह सब कुछ जानता हुआ भी अपने हित के सम्बन्ध में विचार नहीं करता। वह संस्कारवश ही काल के सहारे मनुष्य जन्म पाकर भी वह यदि अपने उद्धार के लिये कोई भी उपाय नहीं करता तो उससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा? यह भारत भूमि कर्म और फल की भूमि है। इस भूमि पर मनुष्य जैसे कर्म करता है उसके अनुसार उसको भोग भोगने पड़ते हैं। मनुष्य को चाहिए कि जब तक उसका शरीर स्वस्थ है तब तक उसे अपने कल्याण के लिए धर्म का नित्य संचय करता रहना चाहिए क्योंकि वृद्धावस्था आने पर यह शरीर रोगग्रस्त तथा बिल्कुल बेकार-सा हो जाता है। याद रहे कि यह देह नश्वर है और धर्म अनश्वर है। ध्रुव धर्म के नाश होने पर अध्रुव देह का नाश स्वयंमेव हो जाता है। मनुष्य को यह पता भी नहीं चलता कि कब काल आवेगा और उसे बांधकर ले जायेगा। इसलिए मनुष्य को अपने सुख के साधन के लिए निरन्तर पुण्य दान करना आवश्यक है। दान पुण्य करने वाले यम मार्ग को सुख से तय कर लेते हैं। सद् के पालन करने वाले मनुष्यों को पग-पग पर सुख एवं लाभ की प्राप्ति होती है। भगवान सदाशिव की आज्ञा का पालन करने वाले मनुष्यों को कभी भी यम एवं नरक के दर्शन नहीं हो पाते। संसारियों के लिए 'शिव' अथवा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

'हर' सांसारिक रोगों के दूर करने के लिए महौषधि है जिसके सेवन करने से अपने आप मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। सब प्रकार तम तथा पाप-ताप छुड़ाने वाला केवल भगवान सदा-शिव का नाम ही है।

इक्कीसवां अध्याय

(श्री वेदव्यासजी का जीव के जन्म के बारे में पूछना और श्री सनत्कुमारजी को उनका बतलाना कि शिव के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य एवं चरणों से शूद्र की उत्पत्ति होती है। उनको यह भी बतलाना कि पाप कर्म से मनुष्य अपने स्थान से गिर जाता है। श्रेष्ठ मनुष्य शुभ कर्म करके अपने स्थान की रक्षा किया करते हैं।)

व्यासजी बोले—हे सनत्कुमारजी! ब्राह्मण जन्म मिलना बहुत कठिन है, शिवजी के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य एवं चरणों से शूद्र की उत्पत्ति हुई। अब आप बताएं कि नीच स्थान से मनुष्य किस प्रकार स्थिति पाते हैं। सनत्कुमारजी बोले—हे व्यासजी! पाप कर्म करके मनुष्य अपने स्थान से गिर जाता है। इसी कारण श्रेष्ठ मनुष्य शुभ कर्म करके अपने स्थान की रक्षा करते हैं। जो मनुष्य ब्राह्मण न होकर क्षत्रिय जन्म पाता है यह उसके पापों का ही फल है। इसलिए श्रेष्ठ मनुष्यों को चाहिए कि विपत्ति पड़ने पर भी बुरे कर्मों का आश्रय न ले। इस प्रकार रहने वाले ही अपना स्थान बचा लेते हैं। जो शूद्र अपने कर्म उचित रीति से पूर्ण करते हुए तीनों वर्णों की सेवा में तत्पर रहते हैं। वह शूद्र दूसरा जन्म वैश्य वर्ण में पाता है। वैश्य होकर विधिपूर्वक धन खर्च करके हवन यज्ञ करता है और अग्निहोत्र द्वारा अवशिष्ट अन्न का भोजन करता है वह निःसन्देह क्षत्रिय कुल में जन्म पाता है। जो क्षत्रिय विपुल दक्षिणा वाले यज्ञों द्वारा परमात्मा की सेवा में तत्पर रहता है, धर्म से पृथ्वी का पालन करता है, प्राणीमात्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के प्रति दया का भाव रखता है, संग्राम से कभी विमुख नहीं होता वह अवश्यमेव ब्राह्मण के घर जन्म लेता है। ब्राह्मण यदि विधिपूर्वक यज्ञ करता हैं, अपने धर्म में स्थिर रहता है तो वह देवताओं का प्रिय होता है और स्वर्गामी होता है।

श्री सनत्कुमारजी ने कहा—हे वेदव्यासजी! अब आप युद्ध का माहात्म्य सुनिये। क्षत्रिय को विपुल-से-विपुल यज्ञ करने पर भी जो फल प्राप्त नहीं होता वह फल उसे संग्राम द्वारा प्राप्त होता है। जो क्षत्रिय युद्ध में शत्रुओं को तो हरा न सके किन्तु युद्ध करता हुआ शरीर छोड़ जावे तो उसको निश्चय ही विष्णुलोक प्राप्त होता है। युद्ध क्षत्रियों के लिए विशेष हितकर है। यहां तक कि यदि कोई वेदान्त जानने वाला ब्राह्मण भी उसे शस्त्र लेकर मारने के लिए आवे तो उसे मारने पर भी ब्रह्महत्या का पाप नहीं लगता। क्योंकि वह तो युद्ध भूमि है। यदि मरता हुआ आदमी पानी मांगे और क्षत्रिय उसे मार देवे तो उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है। रोगी, दुर्बल, बालक, स्त्री, टूटे हुए धनुष वाले को मारने से ब्रह्महत्या होती है। युद्ध में शरणागत को कभी नहीं मारना चाहिए।

बाईसवां अध्याय

(श्री सनत्कुमारजी का श्री वेदव्यासजी को जीव के जन्म, गर्भ की स्थिति एवं जीव के वैराग्य के विषय में बतलाना। जीव को उसके पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार सुख दुःख निद्रा स्वप्न आदि प्राप्त होते हैं।)

व्यासजी बोले—अब कृपा करके हमें आप जीव के जन्म, गर्भ की स्थिति एवं जीव के वैराग्य के विषय में बताएं। सनत्-कुमारजी बोले—हे व्यासजी! पकने वाले बर्तन में जल व अन्न दोनों अलग हैं। प्रथम अग्नि द्वारा जल गरम होता है फिर अन्त में पकता है और वह दोनों भागों में बंट जाता है। एक तो रस

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रूप है दूसरा मैल रूप। रस रूप शरीर में व्याप्त हो जाता है जिससे शरीर पुष्ट होता है। मैल रूप बारह प्रकार से शरीर से बाहर हो जाता है। कान, नेत्र, नासिका, जिह्वा, दन्त, लिंग, गुदा, मलाशय, कफ, स्वेद, विष्ठा, मूत्र इस प्रकार से यह बारह मल स्थान हैं। सब नाड़ियां हृदय कमल से जुड़ी हुई हैं। इनके द्वारा शरीर भर में रस पहुंचता है। प्राण वायु इस रस को नाड़ियों के मुखों में स्थापित करती है। उसके बाद नाड़ियां उसको समस्त देह में पहुंचा देती हैं। फिर नाड़ियों के मध्य भाग में स्थित रस आत्मा से परिपक्व होता है। जब पक जाता है तो वह त्वचा बनकर सारे शरीर पर लिपट जाता है। रक्त से रोम, बाल, स्नायु, अस्थि, मज्जा, नख पैदा होते हैं। भक्षित और परिपक्व अन्न से जननात्मक वीर्य की उत्पत्ति होती है। वही वीर्य फिर ऋतुकाल में स्त्रियों की योनि में प्रविष्ट होता है। वही वीर्य वायु से प्रेरित होकर स्त्री के रक्त में मिलकर देह के रूप में बदल जाता है। एक दिन में वह कलिल कहलाता है। फिर पांच रातों में वह बबूले के समान हो जाता है। और सात रातों के बाद वह मांसपेशी के रूप में बदल जाता है। दो महीने के अन्दर-अन्दर ग्रीवा, कन्धे, पीठ, छाती, पेट, हाथ, पैर बन जाते हैं। तीन मास में सब संधियां अंकुर रूप में प्रकट होने लगती हैं। चार महीने में क्रम से उंगलियां निकलने लगती हैं। पांच महीने में मुख, नासिका, कर्ण, दांत-पंक्ति, गुह्य स्थान और नाखून उत्पन्न होने लगते हैं। छः महीने के भीतर कर्णों में विवर हो जाते हैं। सात महीने के भीतर पायु, मेढ़, उपस्थ, नाभि और शरीर में सन्धियां उत्पन्न होने लगती हैं। इस प्रकार से वह जीव माता के गर्भ में अंग तथा प्रत्यंगों से पूर्ण हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जाता है जैसे-जैसे जीव का शरीर बढ़ता जाता है वैसे-वैसे उसको पूर्व जन्म के दुःख-सुख निद्रा तथा स्वप्न और पूर्व कृत कर्मों का स्मरण हो आता है। तब वह पछताता है कि मैं बहुत बार जन्म मरण पा चुका हूं। अनेकों योनियों में दुःख भोग चुका हूं। अब मैं सद्-कर्म, शिवार्चन करके अपनी आत्मा के उद्धार के लिए कोई-न-कोई उपाय करूंगा जिससे फिर मुझे जन्म व मृत्यु प्राप्त न हो। इस प्रकार वह जीवात्मा गर्भ स्थित हो उपाय विचारता रहता है। वहां वह पहाड़ से दबे हुए के समान होता है। जरायु से बंधा रहता है। सुइयों से छेदने के समान वह गर्भ में कष्ट पाता है। गर्भ के दुःख से अधिक कोई और पीड़ा नहीं है। इसी कारण धर्मात्मा लोग सातवें महीने में जन्म ले लेते हैं। और पापी दस महीनों तक गर्भ में रहकर जन्म लेता है। वह बालक रोम तथा नखों से ढका विष्ठा मूत्र के गर्त रूप में पड़ा होता है। उसकी देह में तीन सौ पैंसठ पेशियां होती हैं। तीन करोड़ नाड़ियां दृश्य तथा अदृश्य दोनों प्रकार के शरीर को वेष्टित करती हैं। शरीर में बत्तीस दांत बीस नाखून होते हैं। शरीर में पित्त, कफ चार सेर तथा चर्बी दो सेर और एक सेर कपिलस्व तथा पांच तोले मैदा तथा तीन पल जितना महा रुधिर होता है। मज्जा इससे चौगुनी होती है। वीर्य आधा पाव होता है। जो शरीर का बल होता है। हजार पल मांस, सौ पल रुधिर तथा चार अंजलि विष्ठा एवं मूत्र होता है। इसे प्रकार शरीर होता है।

तेईसवां अध्याय

(श्री सनत्कुमारजी का श्री वेदव्यासजी को शरीर की अपवित्रता तथा बालपन के दुःखों के सम्बन्ध में बतलाना।)

श्री सनतकुमार जी ने कहा—हे व्यासजी! इस शरीर का,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शुक्र और रज से संयोग निर्माण होता है। यह शरीर मल व मूत्र से भरा रहता है। इसलिए यह अपवित्र है। पंचगव्य, हवि और कुश जल से साफ किये जाने पर भी यह शरीर पवित्र नहीं होता। काली चीज कभी सफेद नहीं होती, उसी प्रकार यह शरीर भी कभी पवित्र नहीं होता। संसार इतना मूर्ख है कि अपनी दुर्गन्ध सूंघते हुए तथा अपना मल देखते हुए भी उसको वैराग्य नहीं होता। यह शरीर गंगाजल व मिट्टी से आयु पर्यन्त साफ करने पर भी कभी पवित्र नहीं होता। तीर्थ स्नान से, दान से, तप से और अग्नि में प्रविष्ट होकर भी भाव दूषित नर कभी शुद्ध नहीं हो पाता। देखिये व्यासजी! भावों की शुद्धि से चित्त और बुद्धि शान्त एवं निर्मल रहती है। शुद्ध चित्त वाला मनुष्य इस संसार में ही जीवन मुक्त हो जाता है। मनुष्य अपने में ज्ञान के कारण दुःख सहन करता है। मोह-ममता में फंसा हुआ मनुष्य अवश्यमेव दुःख सहन करेगा। जब गर्भस्थ जीव को ज्ञान हो जाता है, तो वह फिर योनि यन्त्र की पीड़ा से मुक्त हो जाता है, किन्तु माता के गर्भ से, बाहर आते के साथ ही वह बाह्य मण्डल में आकर सब कुछ भूल जाता है। तब वह अपने कर्म छोड़कर, ज्ञान भूल जाता है। ईश्वर तक को पहचान नहीं पाता।

कान रखते हुए भी जीव अपने कल्याण की बात नहीं सुनता। नेत्रों के रहते हुए भी अपना कल्याण नहीं देखता और वह पग-पग पर बुरी तरह से ठोकरें खाता है। वह अपने लोभ-वश संसार में क्लेश-ही-क्लेश भोगता रहता है। भगवान सदा-शिव ने अपना यह अपूर्व शास्त्र—शिव महापुराण लोक हित के लिये ही तो रचा है। मनुष्य को चाहिए कि वह इससे ज्ञानार्जन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करे। बचपन में जीव चाहना रहने पर भी कुछ कर नहीं पाता। उसके बचपन में असंख्य बाल-रोगों की महान पीड़ायें सहनी पड़ती हैं। युवावस्था में प्राणी की समस्त इन्द्रियां उत्तेजित हो उठती हैं। काम, क्रोध आदि जाग उठते हैं। रात-दिन का चैन चला जाता है। स्त्रियों में आसक्त होकर अपने शरीर में से, निकलने वाले वीर्य के निकास को ही अपना सच्चा सुख मान बैठता है। वृद्धावस्था आने पर उसकी इन्द्रियां समस्त रोगों को निमन्त्रण दे देती हैं। स्त्रियों का यौवन अब उसे अप्रिय हो जाता है। फिर भी यदि वह इस वृद्धावस्था में स्त्री प्रेमी रहे तो भला उससे बढ़कर और कौन मूर्ख है।

चौबीसवां अध्याय

(पंचचूड़ा नामक अप्सरा को श्री नारदजी का स्त्रियों के दोष बताना—नारियों का स्वभाव बड़ा गूढ़ होता है। पतिव्रता एवं कुलीन स्त्रियां भी मर्यादा से नहीं रहतीं और यह बात सब पापों का मूल है। भय से, धमकाने से, धन से भी वह मर्यादा में स्थिर नहीं रहतीं। व्यभिचारिणी स्त्रियों की कुसंगति में पड़कर कुलीन एवं अच्छी स्त्रियां भी बिगड़ जाती हैं।)

व्यासजी बोले—हे सनत्कुमार जी अब कृपा करके पंचचूड़ा मणि अप्सरा ने जो स्त्रियों के कुत्सित अर्थ कहे हैं उनका वर्णन करें। सनत्कुमार जी बोले—हे व्यासजी! सुनिये सब लोकों में विचरण करने वाले नारदजी की भेंट एक बार पंचचूड़ा नामक अप्सरा से हुई तब वे उससे कहने लगे—हे सुन्दरी! आप कृपा करके स्त्रियों के स्वभाव के विषय में बताएं। यह सुनकर अप्सरा ने उत्तर दिया—हे नारद जी! मैं स्वयं स्त्री होकर भला स्त्रियों की निन्दा कैसे कर सकती हूं। आप स्त्रियों के स्वभाव को तो जानते ही हैं फिर मुझसे न पूछिए। यह सुनकर नारदजी बोले—हे सुन्दरी! असत्य भाषण पाप है, सत्य बोलने में कोई

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पाप नहीं लगता इसलिए आप जो बात सत्य हो, वह मुझसे कह दीजिये। तब पंचचूड़ा ने स्त्रियों के स्वभाव का वर्णन करते हुए कहा—नारदजी! स्त्रियां चाहे पतिव्रता हों या कुलीन घराने की, वह मर्यादा में नहीं रहतीं। बस यही बड़ा अवगुण है उनमें। यही दोष सब पापों का मूल है। सबसे बड़ी बुराई उनमें यह है कि निन्दित तथा पापी पुरुष भी उनकी प्रशंसा, सेवा और उनसे प्रार्थना करके उनको फुसला लेता है, और वह उसको अपना सर्वस्व समर्पित कर देती हैं। भय, धमकी तथा बन्धन भी उनकी गति को नहीं रोक सकते। आभूषण, शृंगार साधनों की इच्छुक स्त्रियां व्यभिचारिणी स्त्रियों की कुसंगति में पड़कर बिगड़ जाती हैं। काम चेष्टा तथा चंचल स्वभाव वाली स्त्रियां बड़े-बड़े राजाओं-महाराजाओं, पण्डितों, विद्वानों तथा ज्ञानियों को भी पथभ्रष्ट करके उनका सम्मान, उनकी प्रतिष्ठा, उनकी इज्जत सब धूल में मिला देती हैं।

प्राणियों को मारने से जैसे काल कभी सन्तुष्ट नहीं होता वैसे ही स्त्रियों की काम-पिपासा कभी तृप्त नहीं होती। अधिक क्या कहूं नारदजी! यम, मृत्यु, पाताल, बड़वानल, क्षुरधारा, विष, सर्प, अग्नि आदि भी स्त्रियों से अधिक भयंकर तथा दुःखदायी नहीं हैं। ईश ने पंच महाभूतों की रक्षा की। सम्पूर्ण लोक रच डाले। स्त्री-पुरुषों की रचना की। अन्य प्राणियों में गुण भी रचे किन्तु स्त्रियों में केवल अवगुण भर दिए। हे नारदजी! स्त्रियों की कुटिलताएं मैं कहां तक बताऊं। श्री सनत्कुमारजी बोले—हे व्यासजी! इस प्रकार पंच चूड़ामणि के मुख से स्त्रियों के स्वभाव के विषय में सुनकर नारदजी को स्त्रियों के प्रति वैराग्य हो गया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पच्चीसवां अध्याय

(श्री सनत्कुमारजी का श्री वेदव्यासजी को काल-ज्ञान के सम्बन्ध में विस्तार से बतलाना।)

व्यासजी बोले—हे मुनिराज! अब हम काल ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। उनकी इच्छा सुनकर सनत्कुमारजी बोले—यही जिज्ञासा एक बार पार्वतीजी ने महादेवजी से करी थी। देवी ने कहा था हे देव! मैंने विधिपूर्वक मन्त्रों द्वारा पूजन विधि तो जान ली है अब आप मुझे काल के विषय में ज्ञान कराएं। शिवजी ने कहा—हे पार्वती! मैं उस शास्त्र को सुनाता हूं जिससे विद्वान काल ज्ञान प्राप्त करते हैं। तुम ध्यान से सुनो। मृत्यु काल का ज्ञान इस प्रकार होता है। जब अचानक ही शरीर पीला पड़ जाये और ऊपरी भाग में लालिमा दिखाई दे तो उस नर की छः महीने के अन्दर ही मृत्यु हो जाती है। जब मनुष्य की जिह्वा, कान, मुख, आंखें स्तब्ध हो जायें तो उसकी मृत्यु भी छः मास के अन्दर ही हो जाती है। जो नर लोगों के शोर की ध्वनि नहीं सुन पाता उसकी मृत्यु छः महीने के भीतर ही हो जाती है और वह व्यक्ति जो कि सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि को न देख सके तथा जिसे सब कुछ काला-काला ही दिखाई देवे वह भी छः महीने तक ही जीवित रहता है। जिस मनुष्य की बायीं बांह सात दिन तक फड़कती रहे उसकी मृत्यु एक मास के भीतर हो जाती है। जिसकी देह अकड़ती हो और तालू सूखता हो वह एक महीने तक भी नहीं जी सकता। जिसकी जिह्वा मोटी हो जाये और दांत भीगे रहें उसको आप केवल छः महीने तक जीवित रहने वाला ही समझिये। जो मनुष्य अपनी छाया तक न देख सके वह केवल एक मास तक जीवित रहेगा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ध्रुव मण्डल को न देख सकने वाला व्यक्ति केवल एक महीने तक जीवित रहेगा। रात के समय इन्द्रधनुष एवं दोपहर को उल्कापात् तथा अपने समीप गीध तथा कौए देखे वह छः मास से अधिक नहीं जी सकता। जिसको रात्रि में आकाश में स्वर्ग मार्ग तथा सप्त ऋषि दिखाई नहीं देते वह भी छः मास तक ही जीता रहेगा। यदि मनुष्य अपनी छाया को सिर से अलग देखता है तो उसकी छः महीने तक मृत्यु होती है। हे कल्याणी! यह तो मैंने सब शारीरिक मृत्यु के चिन्हों का वर्णन किया है। अब तुम मृत्यु के वाह्य चिन्हों को सुनिये—यदि मनुष्य को सूर्य तथा चन्द्र मण्डल किरणों से हीन तथा पटलाकार दिखाई देवे तो वह मनुष्य अवश्यमेव पन्द्रह दिन के भीतर मर जायेगा। जिस व्यक्ति को आकाश में अरुन्धती नक्षत्र और तारे दिखाई नहीं देते वह एक मास में समाप्त हो जायेगा। हे प्रिये! आत्म विज्ञान चार प्रकार का है—क्षण, त्रटि, लव, कष्ट, मुहूर्त, दिन, रात्रि, पक्ष, मास, ऋतु, वर्ष, युग, कल्प, महाकल्प। इनके अनुसार, इस तरह से तीन मार्ग हैं। पांच दिनों से आरम्भ करके पच्चीस दिनों तक वाम गति द्वारा नाद का प्रमाण होता है। माया चरण नाद में भूत रन्ध ध्वजा है। यदि उसमें ऋतु विकृत भूतों के गुण हों तो दक्षिणी नाद समझना चाहिये। जब पांच दिन, दस दिन और पन्द्रह दिनों तक प्राण-वायु इड़ा आदि नाड़ियों में प्रवाहित होती रहे तो मनुष्य की आयु बस अब एक वर्ष शेष समझनी चाहिये। प्राण-वायु का प्रवाह वाम नाड़ी की ओर बीस दिन तक चलने से मनुष्य की आयु छः मास की, पच्चीस दिन तक प्रवाह चलने से आयु केवल तीन मास की, छब्बीस दिनों तक प्राण वायु का प्रवाह चलने से दो मास की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आयु और सत्ताईस दिन तक प्राण-वायु आहिस्ता-आहिस्ता चले तो मनुष्य की आयु केवल दो मास की समझनी चाहिये। भगवान सदाशिव बोले—हे कल्याणी! यह तो मैंने वाम संचार कहा है अब आप दक्षिण संचार सुनिये। यदि अट्ठाईस दिन तक प्राण वायु दक्षिण नाद से चले तो मनुष्य की आयु पन्द्रह दिन की होती है। दस दिन तक प्राण-वायु चलने से केवल दस दिन की आयु, तीस दिन तक चलने से केवल पांच दिन की आयु शेष रहती है। इक्कतीस दिन तक चलने से केवल तीन दिन का जीवन शेष रह जाता है। और बत्तीस दिनों के संचार से दो दिन की आयु है। यह सब दक्षिण की ओर से संचार का फल सुना दिया। अब आपसे मध्यस्थ के प्रकार का वर्णन करता हूं। जब वायु का प्रवाह मुंह के एक हिस्से में गमन करता है ऐसा अनुभव में आए तो उसकी एक ही दिन में मृत्यु हो जाती है। हे कल्याणी इस प्रकार यह मैंने नष्ट आयु पुरुषों के लिए काल, ज्ञानियों के लिए काल चक्र का वर्णन किया है।

छब्बीसवां अध्याय

(काल चक्र से बचने के उपाय)

पार्वतजी ने फिर कहा—हे देव! आपने यथार्थ रूप से काल चक्र वर्णन किया अब कृपा करके इससे बचने का भी उपाय बताइये। यह सुनकर शंकरजी ने कहा—हे देवी! भगवती! जगत् के उद्धार के लिए इसका भी संक्षेप में वर्णन करता हूं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश इन पांच महाभूतों के संयोग से इस भौतिक जगत् की उत्पत्ति होती है। इसमें व्यापक आकाश में सब वस्तुएं लीन हो जाती हैं। क्योंकि यह सब आकाश से ही उत्पन्न होती हैं। आकाश के वियोग से विलीन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

होती हैं। संयोग से स्थिर होती हैं। वह जो स्वर्ग का भी स्वामी है और जिससे आकाश भी नष्ट हो जाता है। घोर रूप कराल काल को तो आपने जला डाला फिर जब आप स्तुतियों द्वारा प्रसन्न हुए तब कहीं जाकर वह फिर अपनी प्रकृति में स्थिर हुआ। अब वह काल किस प्रकार नष्ट किया जा सकता है। किन्तु ध्यान करने वाले योगीजन ही इसका नाश कर सकते हैं। तब पार्वतीजी ने कहा—हे नाथ! उसे जीतने का कोई उपाय बताइये। भगवान सदाशिव ने कहा—शुभे! इस काल को कोई मार नहीं सकता। केवल शरीर धारण किये हुए ध्यान तत्पर योगी ही इस काल का नाश कर सकते हैं। श्री पार्वतीजी ने कहा—हे नाथ! अब आप मुझे यह बताइये कि योगी जिस मन्त्र द्वारा या जिस ध्यान द्वारा काल पर विजय पाते हैं। वह क्या है? कौन सा है? शंकर भगवान मुस्कराये और कहने लगे—देवी! जिस समय सारी प्रजा सो जाए। अन्धेरे स्थान में सुन्दर आसन पर बैठकर योगी योग साधन करे वह अपनी तर्जनी उंगलियों द्वारा एक घण्टे के लिए अपने दोनों कानों को बन्द कर लेवे। उस योगी को अग्नि से उत्पन्न एक शब्द सुनाई देगा। जो योगी दो घड़ी तक नित्य ही इस कर्म को करने लग जाए है उमा! वह अपनी इच्छानुसार मृत्यु पाता है। उसको सभी सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। काल के पाशों में जकड़े हुए सांसारिक जन भला इस शब्द ब्रह्म को कैसे पहचान सकते हैं। अधिक क्या कहूं कल्याणी! वर्षा ऋतु के आकाश की गर्जन को सुनकर योगी संसार बन्धन से शीघ्र ही मुक्त हो जाता है और सूक्ष्म-से-सूक्ष्म बन जाता है। जिस प्रकार धान्य का वाचक धान्य के ऊपर की बालियों को पृथक कर देता है ठीक उसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रकार शब्द ब्रह्म ज्ञाता अपने आपको संसार बन्धन से पृथक कर लेता है। शब्द ब्रह्म को पाकर जो अन्न की इच्छा करते हैं वह स्वयं ही भूख-प्यास के फेर में पड़कर शब्द गुण-आकाश का नाश कर लेते हैं। यह शब्द आनन्ददायक मोक्ष का दाता है और इससे समस्त व्याधियां दूर हो जाती हैं। वंशी तथा आकर्षक उत्तम नाद है। दूसरा कांस्य शब्द है जो जीवों की गति को रोककर विष, भूत-प्रेत और समस्त ग्रहों को रोक देता है। तीसरा शृंग शब्द है जिसको अभिचार में और उच्चाटन मारण के लिए किया जाता है। चौथा घण्टा है जिसका उच्चारण परमेश के द्वारा होता है। पांचवाँ वीणा शब्द है जिसे कि योगीजन सुना करते हैं। छठा वंशी शब्द है जिससे कि सब तत्वों का ज्ञान होता है। सातवाँ दुन्दुभि शब्द है इसका ध्यान करने से योगी बुढ़ापे एवं मृत्यु से छुटकारा पा लेते हैं। हे देवी! आठवां शंख नाद है जिससे कि योगी इच्छानुसार अपना रूप बदल सकता है। नौवां मेघ गर्जन है जिससे कि योगी को किसी भी विपत्ति का सामना नहीं करना पड़ता। हे कल्याणी! जो कोई भी सावधान मन से ओंकार का ध्यान करता है उसके लिए कुछ भी तो असाध्य नहीं रह जाता उसको सब कुछ अपने आप प्राप्त हो जाता है।

सत्ताईसवां अध्याय

(श्री सदाशिव का पार्वतीजी को बताना कि ज्ञान, विज्ञान, उत्साह आदि सभी वायु द्वारा प्रवृत्त हुआ करते हैं। अतः जिसने पवन पर विजय प्राप्त कर ली उसने सम्पूर्ण जगत् पर विजय प्राप्त कर ली है। वायु का अभ्यास परिपक्व हो जाने पर योगी के हजारों नेत्र एवं हजारों हाथ हो जाते हैं फिर वह सब ग्रन्थियां फेर कर दस अंगुल ऊपर उठ जाता है।)

पार्वतीजी ने कहा—हे महादेव! श्री आप मुझ पर प्रसन्न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं तो कृपया बताएं कि योगी वायु का पाद कैसे प्राप्त कर सकता है। यह सुनकर शंकरजी ने कहा—हे सुमुखि सुनो! देहली में रखे दीपक के समान हृदय में स्थित वायु अन्दर तथा बाहर दोनों तरफ प्रकाश करता है। ज्ञान, विज्ञान, उत्साह आदि सभी वायु द्वारा प्रवृत्त हुआ करते हैं। अतएव जिसने पवन पर विजय पा ली हो, सम्पूर्ण जगत् पर विजय प्राप्त कर ली। योगी को लुहार के समान फूंकनी मुंह में रखकर वायु भरता हुआ अपने काम में लगा रहना चाहिए। इस प्रकार अभ्यास करते हुए परिपक्व हो जाने पर योगी के हजारों नेत्र एवं हजारों हाथ-पैर हो जाते हैं। वह समस्त ग्रंथियों को घेरे हुए दस अंगुल ऊपर उठ जाता है। व्याहृतियों के साथ गायत्री मन्त्र शिर से जपते हुए, तीन बार प्राण वायु को, रोकने को प्राणायाम कहते हैं। हे देवी! प्रतिदिन, केवल प्राणायाम की धारणा से वह फल प्राप्त होता है, जो सौ साल तक जप करते हुए एवं कुशा के अग्र भाग से जल पीने वाले ब्राह्मण को प्राप्त होता है। हे कल्याणी! अब मैं तुमको तेज किस प्रकार सिद्ध है, उसका वर्णन करता हूं। योगी को चाहिए कि वह कोलाहल से दूर किसी एकान्त स्थान में जाकर बैठे। यह स्थान ऐसा होना चाहिये जहां पर कि सूर्य व चन्द्र का प्रकाश हो। वहां वह साव-धान होकर अपनी दोनों भौंहों के मध्य में वह्नि तेज का दर्शन करे। हाथों की अंगुलियों से अपनी दोनों आंखों को बन्द करके एक घण्टा तक लगातार तेज का ध्यान करे। फिर तो उस अंधेरे में भी ईश्वर की ज्योति दिखाई देती है। वह साधक कभी शान्त, कभी आवेश में और कभी दूसरे के शरीर में प्रवेश करता है। मन द्वारा देखना, छिप जाना आदि सभी कुछ उसे प्राप्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो जाता है। तब वह परमात्मतत्व को जानकर मृत्यु पर विजय पा लेता है। इससे बढ़कर मोक्ष पाने का और कोई सरल मार्ग नहीं है। हे शिवे! ध्यान योगी सदैव तुरीय गति को प्राप्त होते हैं। अब उससे आगे की विधि सुनो—साधक शरीर को ऊंचा करके अंजलि बांध ले और मुख को चोंचाकार बनाकर शनैः शनैः वायु का पान करे। फलस्वरूप उसी क्षण उसके तालू से जीवनदायक जल, टपक पड़ता है। उसको नित्य पान करने से साधक दिव्य शरीर वाला होकर भूख, प्यास से रहित होकर कभी भी मृत्यु के वश में नहीं होता।

अट्ठाईसवां अध्याय

(भगवान सदाशिव का भगवती पार्वती को छाया पुरुष के विषय में बतलाना। खेचरा विद्या की व्याख्या अभ्यास द्वारा योगी को सभी सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। अभ्यास द्वारा ज्ञान एवं मोक्ष की भी प्राप्ति हो जाती है।)

पार्वती जी बोलीं—हे नाथ! आपने काल वचन का वर्णन तो कर दिया अब कृपया छाया पुरुष के श्रेष्ठ ज्ञान का भी वर्णन करें। शंकरजी बोले—हे देवि! सुनिये! सूर्य अथवा चन्द्र को पीठ देकर श्वेत वस्त्र धारण किए हुए, धूप दीप आदि से सुगन्धित होकर सब फलदाता 'ओं३म् नमो भगवते रुद्राय' इस नवाक्षर मंत्र का स्मरण करता हुआ अपनी छाया देखे तो उसे ब्रह्म की प्राप्ति होती है। ब्रह्म हत्या आदि पाप कोई छू नहीं सकता यदि वह छाया मस्तक बिना दिखाई दे। वह छः महीने में मृत्यु पाता है। यदि उसका शुक्ल वर्ण हो तो धर्म बुद्धि होती है। कृष्ण वर्ण हो तो पाप है। रक्त वर्ण होने पर बन्धन, पीत होने पर शत्रु होता है। यदि छाया नासा के बिना हो तो विवाह बन्धु मृत्यु, भूख का दुःख होता है। यदि कटि न हो तो पत्नी का विनाश हो। हे पार्वती! उस छाया पुरुष को देखकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नवाक्षर मंत्र का मन-ही-मन जाप करें। इस प्रकार एक वर्ष तक जाप करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है।

अब कठिनता से प्राप्त होने वाली शक्ति का वर्णन करता हूं तुम ध्यान से सुनो। एक गुप्त विद्या है जो ब्राह्मणों के सिर पर विद्यमान रहती है। इस विद्या की स्तुति वेद भी करते हैं। सब विद्याओं की जननी यह विद्या सब जीवों में भी निवास करती है। यह खेचरा विद्या, दृश्या, अदृश्या, चला, अचला, नित्या, व्यक्ता, अव्यक्ता, सनातनी है। वर्णरहिता अथवा वर्ण सहिता यह बिन्दु मालिनी भी है। इसका सदा दर्शन कर्ता योगी सफल हो जाता है। वह फल योगी मालिनी के दर्शन द्वारा प्राप्त कर लेता है। इसी कारण बुद्धिमान् योगी ज्ञान का नित्य अभ्यास किया करें। अभ्यास द्वारा ही सब सिद्धियां प्राप्त की जा सकती हैं। योग की भी वृद्धि होती है। अभ्यास द्वारा ही ज्ञान व मोक्ष की प्राप्ति होती है। सूतजी बोले—हे ऋषियो! श्री व्यासजी के इन यथार्थ वचनों को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। फिर बारम्बार प्रणाम करके उसके बाद सनत्कुमार तथा महर्षि व्यासजी अपने-अपने निवास स्थान को चले गए।

उन्तीसवां अध्याय

(श्री ब्रह्मा सृष्टि उत्पन्न करते हैं विष्णुजी उनका पालन करते हैं और भगवान् सदाशिव उनका संहार करते हैं।)

श्री शौनक आदि ऋषि बोले—हम आपसे श्री सनत्कुमार और भगवान श्री वेदव्यासजी का सम्वाद सुनकर अत्यन्त सन्तुष्ट हुए हैं। अब आप कृपा करके हमें ब्रह्माजी की सृष्टि रचना के सम्बन्ध में बतलाइये।

श्री सूतजी बोले—हे मुनीश्वरो! सुनिये, सत्य असत्य रूप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

और नित्य सनातन प्रधान पुरुष श्री ब्रह्माजी ने ही संसार की रचना की है। सृष्टि के रचने वाले श्री ब्रह्माजी हैं। विष्णु इस संसार के पालन कर्त्ता हैं और भगवान सदाशिव संसार का संहार करने वाले हैं। स्वयम्भू भगवान ने जब जगत् उत्पन्न करने की इच्छा की तो सबसे पहिले उन्होंने जल को उत्पन्न किया। फिर उसमें वीर्य (शक्ति) उत्पन्न किया। वह उत्पन्न हुआ जल नारा के नाम से प्रसिद्ध है। वह आप (जल) नर के पुत्र थे। उसमें पूर्व से ही अपन शब्द था। अतः दोनों शब्दों के योग से नारायण प्रसिद्ध हुए। जल के भीतर स्वर्ण जैसे रंग का अण्डा उत्पन्न हुआ। ब्रह्माजी उस अण्डे में से स्वयं उत्पन्न हुए। तभी तो उनका नाम स्वयम्भू हुआ एक वर्ष तक वह वहां रहे और फिर उन्होंने उसके दो भाग किए आकाश और पृथ्वी। फिर अधोभाग से चौदह भुवनों की रचना की। फिर मन, वाणी, काम, क्रोध, रूपरति की रचना की। उसके बाद उन्होंने मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ नाम के सात ऋषियों को मन से पैदा किया। फिर उन्होंने क्रोध द्वारा ग्यारह रुद्रों को जन्म दिया। उसके बाद बिजली, वज्र, मेघ, इन्द्रधनुष आदि की रचना की। श्री सनत्कुमार सबसे पहले उत्पन्न हुए थे। फिर श्री ब्रह्माजी ने यज्ञ की सिद्धि के लिए वेदों का निर्माण किया। ब्रह्मा के वक्षस्थल से पितर, जंघाओं से मानव, जंघाओं के निचले भाग से दैत्य तथा अन्य भागों से भूत उत्पन्न हुए। प्रजा का निर्माण करते हुए भी जब प्रजा की वृद्धि नहीं हुई तब श्री ब्रह्मा ने अपनी पत्नी रूपा तथा दूसरे से पुरुष हुए। श्री ब्रह्माजी ने इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नर नारायण भगवान से बनाई गई सृष्टि प्रजा अमैथुन तथा आयु कीर्तिमती यशस्विनी हुई।

तीसवां अध्याय

(शतरूपा ने सौ दिव्य वर्ष तक तपस्या करके तपस्वी पति प्राप्त करना। उसी पुरुष का स्वयंभुव से पैदा होकर मनु के नाम से प्रसिद्ध होना। उन्हीं से इकहत्तर मनुओं को मन्वन्तर संज्ञा कहलाती है। विराट पुरुष से वीरका का पैदा होना। और वीरका से प्रियव्रत उत्तानपाद का उत्पन्न होना। धर्म की पुत्री सुनीति के साथ उत्तानपाद का विवाह और ध्रुव भक्त का जन्म।)

सूतजी बोले—जब इस प्रकार से सृष्टि की रचना होने लगी। तब प्रजापति ने भी अयोनिजा शतरूपा नाम की पत्नी प्राप्त की। शतरूपा ने भी सौ दिव्य वर्ष पर्यन्त तपस्या करके ही तपस्वी पति प्राप्त किया। वही पुरुष स्वयंभुव से पैदा होकर मनु नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्हीं से इकहत्तर मनुओं की मन-वन्तर संज्ञा कहलाती है। फिर विराट पुरुष से वीरका पैदा हुई। इसी वीरका से प्रियव्रत उत्तानपाद उत्पन्न हुए। धर्म की पुत्री सुनीति के साथ उत्तानपाद का विवाह हुआ जिससे परम तेजस्वी ध्रुव उत्पन्न हुए। उन्होंने तीन हजार वर्ष तक कठोर तपस्या की। जिससे ब्रह्माजी ने ध्रुव को सप्त ऋषियों से भी ऊपर का स्थान दे दिया। ध्रुव के दो पुत्र पुष्टि और धान्य नामक हुए। पुष्टि के यहां उसकी पत्नी समुत्था से पांच पुत्र पैदा हुए जिनके नाम रिपु, रिपुंजय, विप्र, वृकल, वृष और तेजा थे। रिपु के यहां चाक्षुष नामक पुत्र हुआ। फिर चाक्षुष के यहां वरुण पुत्र उत्पन्न हुआ। फिर मनु ने लडवाला से दस पुत्र उत्पन्न किये। जो परु, मत्स, शतद्युम्न, तपस्वी, सत्यवित, कवि, अग्निष्टोम, अतिरात्र, अतिमन्यु और सुयशा नाम से प्रसिद्ध हुए। परु ने आगनेयी पत्नी से छः पुत्र अंग, सुमनस,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ख्याति, स्मृति, अंगिरस और गय उत्पन्न किए। अंग ने अपनी सुनीता नाम की पत्नी से बेन नामक पुत्र पैदा किया जो कि महान पापी था। ऋषियों ने उसे अपने हुंकार शब्द द्वारा ही मार डाला। उसकी माता सुनीता ने ऋषियों से सन्तान के लिए प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना पर ऋषियों ने बेन के शरीर का मन्थन किया। बेन के दाएं हाथ मन्थन से महाराजा पृथु उत्पन्न हुए। यह भगवान विष्णु का अवतार थे। राजसूय यज्ञों में अभिषित महाराजा पृथु आदि राजा थे। उनके यहां सूत तथा मागध नामक दो पुत्र हुए। महाराजा पृथु ने जनता के कल्याण के लिये पृथ्वी को दुहा; सौ यज्ञ भी किये। उनके दो पुत्र विजिता, हर्यश्व नामक भी हुए। जो जगत प्रसिद्ध हैं। शिखण्डिनी ने प्राचीन बर्हि नाम का पुत्र पैदा किया। उसने वृक्ष की कन्या वीर वर्णिनी से विवाह किया। उससे दक्ष प्रजापति की उत्पत्ति हुई। यह सोम के अंश से थे। जिन्होंने कि चर अचर, द्विपद तथा चतुष्पद अपने मन से पैदा किये। फिर मैथुनी सृष्टि का आरम्भ हुआ। दक्ष ने वीरण की वीरणी पुत्री से विवाह कर लिया और उससे दस हजार पुत्र उत्पन्न हुए। यह सब-के-सब नारदजी के आदेश से विरक्त हो तप के लिए चल दिए फिर दक्ष ने शबलाश्व नामक दस हजार पुत्र उत्पन्न किये वह भी नारदजी के उपदेश से भाईयों के मार्ग पर चल पड़े और वापिस लौटकर नहीं आये। यह सब जानकर दक्ष ने नारद जी को बड़ा क्रोधित होकर शाप दे दिया—हे कलह प्रिय नारद! तुम कहीं बैठ नहीं सकोगे। फिर दक्ष ने कन्याएं उत्पन्न कीं। इसमें से दस कन्या धर्म को ब्याह दीं तेरह कन्याएं कश्यप को दे दीं। दो कन्या ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा को दीं। एवं दो कृष्णाश्व

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को दीं। बाकी सब चन्द्रमा को ब्याह दीं। जिनकी नक्षत्र संज्ञा थी। दक्ष की कन्याओं से देव दानव आदि बहुत सी सन्तानें उत्पन्न हुईं। जिनसे यह सारा जगत भर गया। तभी से प्रजा मैथुन द्वारा पैदा होने लगी। शौनक बोले—हे सूतजी! आपने तो प्रथम कहा कि दक्ष ब्रह्मा के अंगूठे से पैदा हुए, अब फिर यह अचेता के पुत्र किस प्रकार हो गये? इस संशय को निवारण करें। सूतजी बोले—प्राणी तो नित्य ही मरते जन्मते रहते हैं। और हर एक कल्प में दक्ष आदि मुनि भी हुआ करते हैं। इसी कारण कल्प-कल्प की कथा होने के कारण कोई विरोध नहीं पड़ता।

इकत्तीसवां अध्याय

(वीरण प्रजापति का अपनी तपस्वनी कन्या तथा धर्म से सृष्टि की रचना करवाना। दक्ष का उससे पांच हजार पुत्र पैदा करना। उन पुत्रों का दिशाओं में घूमकर उपदेश के लिये जाना। किन्तु घर न लौटना। पाँच सौ और पुत्रों का पैदा करना। जिनका नारद के उपदेश से उपदेश के लिए जाना किन्तु घर न लौटना। दक्ष का नारद को शाप देना। दक्ष का साठ कन्याओं को पैदा करना और उनसे फिर सृष्टि का आगे बढ़ना।)

शौनक बोले—हे सूतजी! अब आप देव, दैत्य, गन्धर्व आदि सृष्टि का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये। सूतजी ने कहा—हे मुनीश्वर! प्रजा के न बढ़ने पर वीरण ने अपनी कन्या तपस्वनी को बुलाकर उससे धर्म द्वारा मैथुन धर्म सृष्टि रचना करवाई जिससे कि दक्ष ने पांच हजार पुत्र पैदा किए। जिनको कि श्री नारदजी के उपदेश से वैराग्य हो गया और वह दस दिशाओं को ज्ञान देने के लिए चले गए और ऐसे गए कि फिर घर वापिस नहीं लौटे। फिर पांच सौ पुत्र और पैदा किये उनको भी नारदजी ने उपदेश दिया। वह दिशाओं को ज्ञान के लिए निकल गए और फिर घर वापिस नहीं लौटे। ऐसा होने पर नारदजी को

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

फिर दक्ष ने शाप दे दिया कि तुम जहां कहीं भी जाओगे वहां कलह हो पड़ेगा, इसलिये तुम कहीं पर भी ठहर नहीं पाओगे। इसके बाद उसने साठ कन्याएं उत्पन्न कीं। जिनमें से उसने दस धर्म को, तेरह कश्यप को, सत्ताईस चन्द्रमा को, चार अरिष्ट-नेम को, दो कुशाश्व को एवं दो ऋंगिरा को दे दीं। उन कन्याओं के नाम हैं—अरुन्धति, वसु, यामि, लम्बा, भानु, मरुवती, संकल्पा, मुहूर्ता, सन्ध्या, विश्वा। अब आप इनकी सन्तानों के नाम सुनिये—विश्व के विश्वदेवा, सन्ध्या से साध्य, मरुवती से मरुत्वान, वसु से आठ वसु, भानु से बारहभानु, मुहूर्तज, लम्बा से घोस, यामि से नाग, वीथी एवं अरुन्धती से पृथ्वी विषय पैदा हुए। संकल्पा से एक ही सत्यवक्ता संकल्प हुआ। वसु से अय, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूषा, प्रभाष, यह आठ पुत्र हुए। अय से वैतण्डश्रम एवं शान्त दो पुत्र हुए। ध्रुव का संसार प्रसिद्ध काल पुत्र हुआ। सोम से वर्चा भगवान हुए। धर के पुत्र द्रविण और हव्यवह हुए। मनोहरा से शिशिर प्राण और रमण हुए। शिवा पत्नी से अविज्ञात और गति दो पुत्र उत्पन्न हुए अग्नि पुत्र तथा कुमार स्वामी कार्तिक की उत्पत्ति सरकंडे वन में हुई उनसे शांख विशाख एवं नैगमेय नामी तीन पुत्र हुए एवं केवल के दो पुत्र बुद्धिमान हुए वृहस्पति की बहिन तो ब्रह्म-चारिणी थी जहां कहीं घूमने लगी। आठवां वसु जो वसु प्रभा था उससे विश्वकर्मा नाम के प्रजापति हुए। वे शिल्प विद्या में निपुण थे। देवताओं के आभूषण, विमान, गृह आदि वस्तुएं बनाया करते थे। रेवत अज, भव, मीम, वाम, अग्र, वृष, कपि अजै, कपाद, अहिर्बुघ्न, बहुरूप एवं महान, यह ग्यारह रुद्र प्रधान हैं। इसी प्रकार सरूपा के पुत्र पैदा हुये रुद्रों की संख्या

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तो करोड़ों है उनके नाम इस प्रकार हैं। अजैकपाद, अहिर्बुध्न, त्वष्टा रुद्र, वीर्यवान हर, बहु रूप, त्र्यम्बक, वृषाकपि, शम्भ, कर्पदि एवं रैवत यह ग्यारह रुद्र संसार के स्वामी हैं। इस प्रकार गिनते-गिनते तेजस्वी रुद्रों की संख्या सौ हो जाती है।

बत्तीसवां अध्याय

(महर्षि कश्यप द्वारा अदिति से तुषिता नामक बारह देवताओं का उत्पन्न होना। उसके बाद दक्ष कन्या से विष्णु तथा इन्द्र का पैदा होना। चाक्षुष-मन्वन्तर में बारह आदित्यों का पैदा होना। सोम की सत्ताईस पत्नियों की अति दीप्ति सन्तति। अरिष्ठ नेम के यहां सोलह पुत्रों तथा एक पुत्री का उत्पन्न होना इत्यादि-इत्यादि।)

श्री सूतजी बोले—हे मुनीश्वरो! अब महर्षि कश्यप की पत्नियों के नाम सुनिये—अदिति, दिति, सुरसा, अरिष्टा, इला, दनु, सुरभि, विनतातान्ना, क्रोधवशा, कद्रू और मुनि जी! अब आप इनकी सन्तानों के नाम सुनिये—प्रथम उत्तम वैवस्त मन्वन्तर में तुषिता नाम के बारह देवता उत्पन्न हुए। उन्होंने निर्णय किया कि हम अदिति की कुक्षि से जन्म लेकर लोकों का हित करेंगे। फिर दक्ष की कन्या, दक्ष और इन्द्र प्रकट हुए। तुषिता देवताओं के समय में बारह आदित्यों ने भी जन्म लिया। इस प्रकार अदिति की सन्तानें हुईं। अब आप सोम के सम्बन्ध में सुनिये। उसकी सत्ताईस पत्नियां थीं। उनसे सत्ताईस सन्तान हुईं। अरिष्ट नेमि से सोलह सन्तानें हुईं जिनमें से तेरह पुत्र एवं तीन कन्याएं थीं। अरिष्ट के पुत्र सब-के-सब विद्वान थे। कृशाश्व की पत्नियों से देव प्रहरण, धुम्रकेश और उनकी प्रधान भार्या स्वधा से पितर और सती से अंगिरा नामक पुत्र पैदा हुए। यह सब युगों के अन्त में पैदा होते रहते हैं। महर्षि कश्यप की पत्नी दिति से हिरण्यकशिपु तथा हिरण्याक्ष दो प्रतापी पुत्र पैदा हुए। विप्रचिति से सिंहका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नामक कन्या उत्पन्न हुई। हिरण्यकशिपु से चार प्रतापी पुत्र अनुह्लाद, ह्लाद, सह्लाद एवं प्रह्लाद नामक हुए। इनमें से चौथे पुत्र प्रह्लाद भगवान के अनन्य भक्त थे। हिरण्याक्ष के पांच पुत्र हुए कुकर, शकुनि, महानाद, विक्रान्त एवं काल। यह सब-के-सब बड़े पराक्रमी थे। यह सन्तानें दिति की थीं अब आप दनु की सन्तानों के बारे में सुनिये। उसके यहां सौ पुत्र हुए जिनमें से अयोमुख, शम्बर, कपालवामन, वैश्वानर, पुलोता, विद्रावण, महाशिर, स्वर्भानु, वृषपर्वा और विप्रचिति प्रसिद्ध हैं। सुलोमा की शची, वृषपर्वा की उपदानवी, हतशिरा, शर्मिष्ठा नाम की कन्याएं हुईं। वैश्वानर की पुलोमा एवं पुलोमक नाम की दो कन्याएं हुईं जो कि मरीचि ऋषि की पत्नियां हुईं। इन्हीं से साठ हजार दानव हुए जो बड़े पराक्रमी एवं दुःख दायक थे। उन दानवों के महा पराक्रमी पोलोम, काल खंज आदि पुत्र हुए विप्रचित्ति द्वारा सिंहिका के भी अनेकों पुत्र हुए। उनके नाम इस प्रकार हैं। राहु, शल्य, सुबलि, बल, महाबल, बातापि, नमुचि, इल्वल, स्वसृप, ओजक, नरक, कालनाम, शरमाण, शर, कल्प इत्यादि सब-के-सब वंश वर्धक हुए। विनिता के गरुड़-अरुड़ ये दो पुत्र हुए। गरुड़ पक्षियों में श्रेष्ठ थे। सुरसा से अत्यन्त तेजस्वी अनेकों भाषा ज्ञाता सर्प हुए। उन हजारों सर्पों में वासुकि, तक्षक, ऐरावत, महापद्म एवं दो कम्बल अश्वतरु ये तो प्रधान-प्रधान राजा हुए। वे सबके सब आकाश में विचरण करते थे। एला से पद्म कर्कोटक, धनंजय, महानील, महाकर्णा, धृतराष्ट्र बलाहक, कुहर, पुष्पदन्त, दुर्मुख, सुमुख, बहुश, खरेरामा, पाणि आदि-आदि पुत्र पैदा हुए। इसी प्रकार क्रोधवशा के बहुत गण हुए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जिनकी डाढ़ें थीं और अण्डे से पैदा होने वाले पक्षी एवं जीव जन्तु पैदा हुए। अनुसूइया के बलवान पचास पुत्र हुए। सुरभ से शशा एवं भैंसा पुत्र हुए। इला से बैल एवं वृक्ष हुए। शशा से यक्ष, राक्षस, अप्सरा एवं मुनिगण पैदा हुए अरिष्ठा से मनुष्य तथा सर्प हुए। इस प्रकार कश्यपजी के पुत्र आदि का वर्णन हुआ।

तेतीसवां अध्याय

(वैवस्वान सृष्टि का वर्णन। वैवस्वान मन्वन्तर ब्रह्माजी की सृष्टि में पहले-पहल सात ऋषि हुए। उन्हें श्री ब्रह्माजी ने अपना पुत्र माना। दिति को महर्षि कश्यप से गर्भ ठहरना। इन्द्र का उसके गर्भ में प्रविष्ट होकर उसके गर्भ के वज्र द्वारा सात टुकड़े करना इत्यादि इत्यादि।)

सूतजी बोले—हे मुनियो! इस प्रकार स्वारोचिष मन्वन्तर की सृष्टि का वर्णन है। अब वैवस्वान मन्वन्तर में ब्रह्माजी उस सृष्टि का वर्णन करते हैं जो कि हवन आदि करने वाली हुई। उस सृष्टि में पहिले-पहिले सात ऋषि हुए। उन्हें ब्रह्मा ने अपना पुत्र माना। तब उनके चले जाने पर दिति कश्यप ऋषि के पास पहुंचकर सेवा सुश्रषा एवं स्तुति आदि करने लगी। तब प्रसन्न होकर कश्यप ने उसे वर मांगने को कहा—दिति ने इन्द्र को मारने वाला पराक्रमी पुत्र प्राप्ति के लिए वर मांगा। तब कश्यपजी ने इन्द्र हन्ता पुत्र प्राप्ति का वर दे दिया। फिर दिति को ऋतुदान देकर कश्यप जी तप करने चले गए। इन्द्र ने इस बात को जान लिया। दिति के व्रत भंग करने की प्रतीक्षा करने लगा। जब एक वर्ष की अवधि रह गई तो इन्द्र को अवसर मिल गया क्योंकि एक दिन झूंठे मुंह से बिना हाथ पैर धोये दिति सो गई थी। तब इसी अपराध के कारण इन्द्र ने झट उसके गर्भ में प्रविष्ट होकर उसके गर्भ के वज्र द्वारा सात

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

टुकड़े कर डाले। किन्तु टुकड़े होने पर भी वे सभी जीवित रहे। सातों टुकड़े रो-रोकर इन्द्र से प्रार्थना करने लगे—हमें आप क्यों मारते हैं हम तो आपके भ्राता हैं। इतना सुनकर इन्द्र ने शत्रुता त्याग दी। तब उनचास होकर वे सभी मरुद्गण हुए।

ब्रह्मा ने बेन के पुत्र पृथु को आधा राज्य दिया। सोम को ब्राह्मण, वृक्ष, नक्षत्र, ग्रह एवं भूतों का राजा बनाया। वरुण जल के राजा हुए। विष्णु आदित्यों के राजा हुए। पावक वसुओं के, दक्ष प्रजापतियों के, इन्द्र मरुद्गणों के, प्रह्लाद दैत्यों के वैवस्वत यम, पितरों के राजा हुए। भगवान शंकरजी माता, वृतु, मंत्र, गौ, यज्ञ, राक्षस, सभी भूत प्रेत पिशाच आदि के राजा हुए। हिमालय पर्वतों के राजा हुए। समुद्र नदियों के, सिंह वन के पशुओं के, बट वृक्ष वनस्पति वृक्षों के राजा बने। इन सबको राजा बनाकर ब्रह्माजी ने अभिषेक किया। पूर्व दिशा में विभु विश्व यातने प्रजापति के पुत्र को आधिपत्य दिया। दक्षिण दिशा में कर्दम प्रजापति के पुत्र सुधन्वा का अभिषेक किया। पश्चिम दिशा में रजस के पुत्र अच्युत का अभिषेक हुआ। एवं पर्जन्य के पुत्र हिरण्य रोमा को राज्य सौंपा। उत्तर दिशा का दुर्धर्ष को अभिषेक करके राजा बनाया।

चौंतीसवां अध्याय

(मन्वन्तरों की उत्पत्ति)

(छटे वैवस्वत मन्वन्तर का वृत्तान्त सावर्णि, रोच्य, ब्रह्म धर्म सावर्णि, सावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि, इन्द्र सावर्णि, सभी मनुओं की कथा। भूत, भविष्य एवं वर्तमान मन्वन्तरों का वृत्तान्त।)

महर्षि शौनक ने कहा—हे सूतजी! जितने मन्वन्तर हुए हैं, उनका आप पुनः वर्णन कीजिये। यह मैं आपसे विस्तार पूर्वक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सुनना चाहता हूं। श्री सूतजी बोले—मैं स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, रैवत, चाक्षुष इन पांच मन्वन्तरों के बारे में आपको विस्तारपूर्वक बतला चुका हूं। अब छठे वैवश्वत मन्वन्तर के बारे में कहूंगा। ध्यानपूर्वक सुनिये—सावर्णि, रोच्य ब्रह्मा सावर्णि, धर्म सावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि और इन्द्र सावर्णि यह सभी मनु हैं। यह सब भूत, भविष्य एवं वर्तमान के मन्वन्तर कहलाते हैं। जिनका कि हजार युगों का कल्प कहलाता है। हे ब्राह्मण! महात्माओं के मुख से जैसा मैंने सुना था मैंने आपको बतला दिया है। इन मन्वन्तरों में सातों ऋषि, देवता और इन्द्र आदि समय के अनुसार होते रहते हैं। उनके नाम भी पहिले जैसे ही होते हैं। कहीं पर थोड़ा बहुत परिवर्तन हो जाता है। श्री सनत्कुमार जी ने भगवान श्री वेदव्यास जी को इसके बारे में विस्तार पूर्वक बतलाया था और कहा था कि यही मनु अपने धर्म तप के प्रताप से सहस्रशः युग पर्यन्त प्रजापालन करके ब्रह्म-लोक में जाते हैं। निःशेष कल्प के आते ही समस्त जीव ब्रह्मा और आदित्यों के साथ-साथ भगवान नारायण में प्रविष्ट हो जाते हैं। फिर श्री ब्रह्मा जीवों की रचना करते हैं और रुद्र संहार कर देते हैं और इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है।

पैंतीसवां अध्याय

(वैवस्वत मन्वन्तर)

(दक्ष कन्या से महर्षि कश्यप द्वारा विवस्वान सूर्य का पैदा होना। विवस्वान सूर्य की तीन पत्नियों का वृत्तान्त इत्यादि-इत्यादि।)

सूतजी कहने लगे—हे ऋषियो! प्रजापति दक्ष की कन्या से कश्यप ऋषि द्वारा विवस्वान् सूर्य उत्पन्न हुआ। उसका विवाह संज्ञा त्वष्ट्री और सुरेणुका से हुआ। सूर्य की यह पत्नियां

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

यौवन के मद में चूर थीं। पति के अक्षय तेज से भी वह सन्तुष्ट न हुईं। संज्ञा से सूर्य की तीन सन्तानें हुईं। श्राद्धदेव, मनु एवं प्रजापति यम, यम के साथ यमुना भी उत्पन्न हुई। तब संज्ञा सूर्य के तेज को सहन न कर सकी। उसने छाया को उत्पन्न किया। उत्पन्न होकर छाया ने भक्ति भाव से निवेदन किया—देवि! आज्ञा करें। मेरा क्या कार्य है। संज्ञा ने उत्तर दिया मैं अभी पिता के घर जा रही हूं तुम यहां रहकर मेरे बच्चों का पालन-पोषण करना। छाया ने अनुग्रहीत होकर कहा—देवि! आप चिन्ता न करें। मैं आपका भेद कष्ट सहकर भी केश ग्रहण तक किसी से नहीं कहूंगी। आप निश्चिन्त होकर जाएं। सूतजी कहने लगे इस प्रकार प्रबन्ध करके संज्ञा अपने मायके चली गई। वहां पहुंचने पर उसके पिता ने उसे बहुत फटकारा तो घोड़ी का रूप धारण करके संज्ञा कुछ देशों में विचरण करने लगी। संज्ञा के जाने के बाद उधर सूर्य ने छाया को संज्ञा जानकर उससे सावर्णि मनु पुत्र उत्पन्न किया। तब छाया अपने पुत्र को विशेष स्नेह करने लगी। संज्ञा की सन्तानों में उसका लगाव नहीं रहा। तब यह देखकर यम को उस पर क्रोध आ गया। उसने छाया पर लप्त से प्रहार करके फटकारा। छाया ने भी क्रोधित होकर यम को श्राप दे दिया कि तुम्हारा क्रोध से उठा हुआ यह पांव गिर पड़े। यम ने जाकर यह सब हाल पिता से कह सुनाया और कहा—हे तात! इस श्राप से मेरी रक्षा करो। मेरा पांव स्थिर रहे। तब सूर्य ने उसे सांत्वना देते हुए कहा—हे यम! इसमें कोई न कोई कारण अवश्य है जिससे धर्म रूप तुम भी क्रोधित हो उठे। किन्तु माता का श्राप तो असत्य नहीं होने का। इतना यम से कहकर छाया से बोले—हे चन्द्रिके! तुमने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

यह किस पाप बुद्धि से काम किया। सच सच बता इस पुत्र से तू क्यों विशेष प्रेम करती है। और इससे कम प्रेम क्यों है। तब भयभीत छाया ने घबराकर सच सच बतला दिया।

सूतजी बोले--उसके बाद छाया ने सूर्य को शनिचक्र बढ़ाया। इस प्रकार सूर्य का तेज कम कर दिया। इससे सूर्य का रूप और सुन्दर हो गया। तब भगवान् सूर्य ने योग दृष्टि से पत्नी संज्ञा को घोड़ी के रूप में देखा स्वयं घोड़े का रूप धारण करके उसके पास पहुंचे और मैथुन की इच्छा की। किन्तु पर पुरुष समझकर संज्ञा ने इन्कार कर दिया। तब घोड़े रूप सूर्य ने उसके मुख एवं नासिका के रास्ते अपना वीर्य निक्षिप्त किया। वीर्य नासिका के दो भागों से पड़ा था। तभी तो देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार दो होकर पैदा हुए। तब संज्ञा ने भी अपने पति को पहचान लिया। फिर प्रसन्न होकर उसके साथ घर लौट आई। यमराज इस कर्म से बहुत दुःखी हुए। स्वयं धर्म पूर्वक प्रजा का पालन करने लगे। इसी से धर्मराज कहलाने लगे। सावर्णि मनु बड़े तपस्वी थे, वे प्रजापति हुए। यही मनु सावर्णि नामक मन्वन्तर में मनु होंगे। अब तो सुमेरु पर्वत पर जाकर कठोर तप करने में लगे सूर्य की छोटी कन्या यमलोक को पवित्र करती हुई यमुना नामक नदी हुई।

छत्तीसवां अध्याय

(मनु पुत्रों के कुल का वृत्तान्त--मनु के यहां नौ पुत्रों का पैदा होना। मनुजी के पुत्रेष्ठि यज्ञ करने पर उनके यहाँ इला नाम की कन्या का पैदा होना। इला का मित्रा वरुण के यहाँ जाना। वहाँ से पिता के पास वापिस लौटना। बुद्ध से उसके यहाँ पुरूरवा नामक पुत्र का पैदा होना इत्यादि।)

सूतजी बोले--हे ऋषियो! वैवस्वत मनु के नौ पुत्र हुए। जो उसके समान ही पराक्रमी अपने धर्म के पालन में तत्पर थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कुक्ष्वाकु, शिविन, भाग, धृष्ठ, शर्याति, नरिष्तन्त, कुरूप, प्रियव्रत, नृग। मनु ने सन्तान प्राप्ति के लिए एक पुत्रेष्ठि नामक यज्ञ किया था जिससे उन्हें एक रूपवती इला नामक कन्या की प्राप्ति हुई जिसका इड़ा नाम भी प्रसिद्ध है। उसे देखकर मनु ने कहा—हे देवि! तू यहां मत आ। इड़ा ने उत्तर दिया—हे वक्ताओं में श्रेष्ठ! मैं प्रजापति मित्रावरुण के अंश से उत्पन्न हूं और अब वहां ही जा रही हूं। तब वहां से मित्रावरुण के पास जाकर नम्रता से इड़ा ने कहा—हे ऋषिवर! मैं आपके अंश से मनु के यज्ञ में उत्पन्न हुई और अब पुनः उसकी आज्ञा से आपके पास आ गई हूं। अब आप मेरा प्रयोजन कहें। इड़ा के वचन सुनकर प्रजापति ने प्रसन्नता से कहा—हे सुन्दरी! हम तुम्हारी विनम्रता, जितेन्द्रियता एवं सत्य भाषण से प्रसन्न हैं। जाओ तुम मनु वंश को वृद्धि देने वाले पुत्रों को प्राप्त करेगी। सुद्युम्न तेरा ही नाम होगा। सूतजी बोले—यह सुनकर इड़ा पिता के पास लौटी। किन्तु रास्ते में बुद्ध की प्रार्थना करने पर उसके साथ मैथुन किया। जिससे पुरूरवा नामक सुन्दर पुत्र की उत्पत्ति हुई। इसी की सुन्दरता पर मोहित होकर उर्वशी अप्सरा स्वर्ग से भी आकर इसी पुरूरवा के पास आकर रह गई। इसके बाद शंकरजी की कृपा से इड़ा ने पुरुषत्व प्राप्त किया। इस सुद्युम्न के परम धर्मात्मा तीन पुत्र हुए उत्कल एवं विनताश्च उत्कल से उत्कल देश के ब्राह्मण हुए। विनताश्च से पश्चिम देश के ब्राह्मण हुए। आनर्त का पुत्र रैम्य हुआ जो रैभत नाम से प्रसिद्ध था। कुशस्थली में उसका निवास हुआ, सौ पुत्र उसके हुए जिनमें कुकुद्मी सबसे श्रेष्ठ एवं धर्मज्ञ था। इसकी अत्यन्त सुन्दर कन्या हुई। जिसके वर के विषय में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कुकुद्मी ब्रह्मलोक में ब्रह्माजी से पूछने के लिये पहुंचा। ब्रह्माजी सुनकर हंसते हुए बोले—हे राजन्! तुमने जिन राजाओं को अपनी कन्या के वर के लिए विचारा है, उनमें से अब एक भी नहीं, सभी नष्ट हो गए। तेरी नगरी को भी यक्ष राक्षसों ने नष्ट भ्रष्ट कर दिया अब अट्ठाईसवां द्वापर करके विष्णु अन्धक, भोज, कुकुर आदि यादवों के साथ द्वारिका पुरी का निर्माण करके रह रहे हैं। उसी द्वारिका में महाबली बलदेवजी हैं जो कि वासुदेव के पुत्र हैं। उन्हीं को जाकर अपनी पुत्री रेवती प्रदान करो। वह ही तुम्हारी कन्या के योग्य पति हैं। सूतजी बोले—तब कुकुद्मी जान गए कि इस समय अनेकों युग बीत गए हैं। तब रेवती कन्या का विधिपूर्वक बलदेवजी के सौ पुत्र हुए श्री कृष्णजी के अनेकों पुत्र हुए दोनों कुल के पुरुष सारी दिशाओं में जाकर बस गए।

सूतजी बोले—अब मनुवंश का वर्णन सुनिये। मनु के पुत्र वृषघ्न को वशिष्ठजी ने गौ रक्षा के काम में लगाया। एक बार रात के समय शिकारी ने आकर गाय पर आक्रमण किया। गाय बिलबिला उठी। उसके शब्द को सुनकर हाथ में तलवार लिए वृषघ्न ने उस अन्धेरी रात में अपने सिंह पर वार किया। किन्तु दैवयोग से वह प्रहार गाय पर हुआ। सिंह तो भाग गया गाय का वध हो गया। जब प्रातः गाय को मरा हुआ देखा तो व्याकुल व चिन्तित होकर उसने यह वृत्तान्त जाकर गुरुजी को कह सुनाया। सब हाल सुनकर गुरुजी ने उसे शाप दिया कि तू शूद्र होजा। तब वह वृषघ्न विरक्त होकर वन में पहुंचा वहां दावाग्नि में प्रवेश करके अपना शरीर नष्ट कर लिया।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सैंतीसवां अध्याय

(मनुजी की नासिका द्वारा इक्ष्वाकु का पैदा होना। महाराजा कुवलाश्क का धुन्ध नामक राक्षस को मारना। प्रसेनजित का अपनी पत्नी को शाप देना और उसका बाहुदा नामक नदी होना। सत्यव्रत का पर स्त्री को हरना। उसके पिता का उसको त्याग देना। उसका चाण्डालों में जाकर रहना। इस कारण इन्द्र का बारह वर्षों तक वर्षा न करना महर्षि विश्वामित्र का समुद्र तट पर जाकर तपस्या करना।)

सूतजी कहने लगे—मनुजी की नासिका से एक इक्ष्वाकु नाम का बालक उत्पन्न हुआ। उसके सौ पुत्र हुए। उसमें ज्येष्ठ पुत्र का नाम विकुक्षि था। वह अयोध्या का राजा बना। यह राजा एक बार अपने पिता के श्राद्ध के लिये शिकार करने वन में गया। मार्ग में इसने एक शशा को पकड़ कर खा लिया। तब से इसका नाम शशाद प्रसिद्ध हो गया। अयोध के पुत्र ककुत्स्थ हुए। उसके पुत्र अरिनाम, अरिनाम के पुत्र पृथु, पृथु के विश्व-राट्, विश्वराट् के प्रजापति इन्द्र, इन्द्र के युवनाश्व, युवनाश्व के कुवलाश्व हुए। इन्द्र के पुत्र युवनाश्व के द्वारा प्रजापति श्राव हुए। उन्होंने श्रवस्ती का निर्माण किया। कुवलाश्व के सौ पुत्र हुए। वह अपना राज्य पुत्रों को सौंप कर वानप्रस्थी हो गया। मार्ग में उसकी भेंट उतंक मुनि से हुई। मुनि ने कहा—हे राजन्! आप इस समय प्रजापालन धर्म का पालन करें वन जाने का विचार छोड़ दें। मेरे आश्रम के समीप ही महापरा-क्रमी धुन्ध दानव है वह उग्र तपस्या द्वारा लोकों का नाश करना चाहता है आप जाकर उसका नाश करके लोकों की रक्षा करें। सूतजी बोले—तब कुवलाश्व ने अपने पुत्र को अर्पित करते हुए कहा—हे मुनि! मैं तो अस्त्र त्याग चुका हूं। मेरा यह पुत्र अवश्य ही धुन्ध राक्षस का नाश कर देगा। इस प्रकार कहकर राजा वन में चला गया। भगवान् विष्णु अपने तेज से कुवलुश्व में प्रविष्ट हुए कुश्लाश्व बहुत से पुरुषों को साथ लेकर धुन्ध का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नाश करने के लिए उतंक मुनि के साथ चल पड़ा। धुन्ध ने उसे देखकर क्रोधित होकर मुख से अग्नि प्रकट की, जिससे कुवलाश्व के साथी पुरुषों को भस्म कर दिया। केवल तीन शेष रहे, कुवलाश्व ने तुरन्त उसके समीप पहुंचकर अपने अग्नि बाण से धुन्ध की अग्नि को नष्ट कर दिया। फिर अपने पराक्रम द्वारा उसका वध कर दिया यह देखकर उतंक ऋषि ने उसे अक्षय धन प्राप्त करने का वर दिया तथा कहा—हे राजन्! तुम अजेय रहोगे। शेष तीनों पुत्रों में दृढ़ाश्व उत्तम निकला।

दृढ़ाश्व का हर्यश्व, हर्यश्व का निकुम्भ, निकुम्भ का सहताश्वा और सहताश्व का कृशाश्व व हेमवती नामक कन्या हुई। उसके पुत्र का नाम प्रसेनजित था। फिर बाद में प्रसेनजित ने अपनी गौर पत्नी को शाप दिया जिससे वह बाहुदा नामक नदी हुई। पुरुकुत्स का पुत्र जय्यारुणि उसका सत्यव्रत पुत्र हुआ इससे किसी दूसरे के मन्त्रों में विघ्न डालकर उसकी स्त्री का अपहरण कर लिया। तब अधर्मी समझकर इसके पिता ने इसे त्याग दिया। इसने कहा—हे पिता! मैं कहां जाऊं? तब पिता ने कहा कि तू चाण्डालों में जाकर निवास कर। तब पिता की आज्ञा से वह चाण्डालों में रहने लगा। इस अधर्म के कारण इन्द्र ने बारह वर्षों तक वर्षा नहीं की। महर्षि विश्वामित्र पत्नी का त्याग करके समुद्र के किनारे पहुंचे, वहां तपस्या करने लगे। इसकी पत्नी सौ गायों के बदले अपने पुत्र का गला बांधकर बेच आई। सत्यव्रत ने जाकर उसे मुक्त कर दिया और उसका पालन-पोषण करने लगा। गला बांधने के कारण इसका नाम गालिब हुआ।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अड़तीसवां अध्याय

(विश्वामित्रजी के तप के लिए जाने के बाद सत्यव्रत का भक्ति तथा श्रद्धा के साथ उनकी पत्नी व पुत्र का पालन पोषण करना। महर्षि विश्वामित्र का तप करके वापिस लौटना और सत्यव्रत को उसके पिता का राज्य वापिस दिलाना। राजा हरिश्चन्द्र, वृक, बाहु, सगर की कथा।)

सूतजी बोले—तब सत्यव्रत ने विश्वामित्र की पत्नी व पुत्र के साथ भक्ति व श्रद्धा के साथ पूर्णतया पालन पोषण किया। एक बार वह राजकुमार मांस न मिलने पर वसिष्ठजी की एक गौ को मारकर खा गया। इस वृत्तान्त को जानने पर वसिष्ठ जी क्रोधित हो उठे उन्होंने श्राप दिया—तूने एक साथ तीन पाप किये हैं अतएव तू त्रिशंकु हो जा। इस प्रकार कहते ही वह त्रिशंकु हो गया। तब तक विश्वामित्र भी तप करके वापिस आ गए। सत्यव्रत को अपनी पत्नी व पुत्र का पालन करते देख कर बहुत प्रसन्न हुए तब सत्यव्रत को उसके पिता का राज्य दिला कर यज्ञ कराया और देवताओं के समान उसे भी स्वर्ग पहुंचा दिया। उसकी कैकेई वंश की सत्यरथा नामक पत्नी हुई जिससे राजा हरिश्चन्द्र उत्पन्न हुए। राजा हरिश्चद्र जी के पुत्र रोहित, रोहित के वृक, वृक के बाहु। राजा बाहु ने ही और्व ऋषि के आश्रम में जाकर तालजंघाओं से रक्षा पाई। उसी स्थान पर जहर सहित इसका पुत्र पैदा हुआ जिससे इसका नाम सगर हुआ। सगर महर्षि ने भार्गव से आग्नेय अस्त्र की शिक्षा ग्रहण की हैहय ताल को मारकर उसने सारी पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर ली। उसके बाद शकवद्दक, पारद तगण, खश नामी देशों में धर्म का प्रचार किया। इसकी कथा इस प्रकार है—बाहु राजा के सब राज्य को हैहय व ताल जंघाओं ने अपहरण कर लिया था फिर अपनी स्त्री को लेकर बाहुराजा वन में चला

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गया और वहां जाकर प्राण त्याग दिये। तब उसकी पत्नी गर्भवती थी। इसकी पत्नी यादवी और्व ऋषि की आज्ञा से उनके आश्रम में रहने लगी। भगवान् शंकर की आराधना करते हुए वह ऋषि की भी सेवा करने लगी। कुछ समय बाद उसने महापराक्रमी पुत्र को जन्म दिया। इस बालक का नाम सगर हुआ। इसे और्वऋषि ने आग्नेय शस्त्र की शिक्षा देकर निपुण कर दिया। इस सगर ने आग्नेय अस्त्र द्वारा हैहय व ताल जंघाओं का नाश किया। वे अपने पिता वशिष्ठ की शरण में गए। महर्षि ने उन्हें अभयदान दिया तब सगर राजा ने अपनी प्रतिज्ञा तथा गुरु वचन को समझकर उसे सत्य करने के लिये शकों का आधा सिर मुड़वा दिया। यवन तथा कम्बोजों के सारे सिर का मुण्डन कर दिया। पारद एवं पाल्हवों को दाढ़ी मूछें रखाकर फिर सबको छोड़ दिया तब अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया फिर संस्कार से पवित्र करके घोड़ा छोड़ दिया। उस घोड़े को इन्द्र ने पकड़कर पृथ्वी के नीचे पाताल में जाकर छिपा दिया। सगर पुत्रों ने घोड़े को ढूंढते-ढूँढते उस स्थान को खोजा। वहां जाकर आदि पुरुष महर्षि कपिल के आश्रम में जाकर उपद्रव किया जिसे सुनकर कपिल देव ने अपनी दिव्य आंखें खोलीं जिनसे अग्नि ने प्रकट होकर उनको दग्ध कर दिया। उन सब साठ हजार में से केवल चार शेष रहे। हर्ष केतु, सुकेतु, धर्मरथ, शूरवीर पंचपन इन्हीं के द्वारा सगर का वंश चला। इसके बाद सागर के किनारे से यज्ञ का घोड़ा मिला। तब सगर ने सौ अश्वमेध यज्ञ किए।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उन्तालीसवां अध्याय

(महाराजा दिलीप, महाराजा भागीरथ की कथा। महाराजा भागीरथ का अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए श्री गंगाजी को स्वर्ग से उतारकर समुद्र तट तक लाना। अपने पूर्वजों का उद्धार करने के पश्चात महाराजा भागीरथ का श्री गंगाजी को अपनी पुत्री बनाना। जिससे श्री गंगाजी का नाम भागीरथी हुआ।)

शौनकजी बोले—हे सूतजी। अभी आपने सगर के पुत्रों का वर्णन किया। अब कृपा करके कहें कि यह सगर के पुत्र कहां से प्रकट हुए? सूतजी बोले—राजा सगर की दो पत्नियां थीं। दोनों ने ही और्वऋषि से पुत्र प्राप्ति के लिए वर मांगे थे। एक ने साठ हजार पुत्रों का वर मांगा तो दूसरी ने केवल एक ही अत्यन्त सुन्दर व बलशाली पुत्र का वर मांगा। पहली पत्नी से एक तूम्बा पैदा हुआ जिससे साठ हजार पुत्र हुए। उसने एक-एक को घी के घड़ों में रख दिया। कुछ समय पश्चात् अत्यन्त बलशाली होकर सभी राजकुमार बाहर निकल आए। ये ही साठ हजार कपिल देव की क्रोधाग्नि से भस्म हो गए हैं जिनका उद्धार करना आवश्यक था। इसी सगर के वंश में एक राजा दिलीप हुए उनके पुत्र भागीरथ हुए। यही भागीरथ अपने पूर्वजों के उद्धार के लियें स्वर्ग से गंगाजी को उतारकर लाए। गंगाजी का उद्धार करके इन्होंने उसे अपनी पुत्री बनाया जिससे गंगाजी का नाम भागीरथी पड़ा। भागीरथी का पुत्र श्रुतिसेन, श्रुतिसेन का नाभाग, नाभाग का अम्बरीष, उनका पुत्र सिन्धुद्वीप, उसका अयुतारिक, उसका ऋतुपर्ण, उसका अनुपर्ण, उसका सहमित्र, तथा उसका सर्वकर्मा पुत्र हुआ। सर्वकर्मा का अनरण्य, अनरण्य का मुडिद्रुह, उसका निषध, निषध का खटवांग, उसका दीर्घबाहु, उसका दिलीप, दिलीप का रघु, रघु का अज, अज का दशरथ, दशरथ के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीराम के लव कुश उसमें से कुश के निषध, निषध के नल, नल के नभ, नभ के पुण्डरीक, पुण्डरीक के क्षेमधन्वा, उसके देवानीक, उसके अहीनगु उसके सहस्वान, सहस्वान के वीर्यसेन, वीर्यसेन के हरियात्रा, हरियात्रा के बल, बल के स्थल, स्थल के यज्ञ, यज्ञ के अगुण, अगुण के विधृत, विधृत के हिरण्यनाभ, उसके याज्ञवल्क्य, उसके पुष्प, पुष्प के ध्रुव, ध्रुव के अग्नि वर्ण, उसका शीघ्र, शीघ्र का मरुत, मरुत का पृथुश्रत, उसका सन्धि, सन्धि का नाकर्षण, इसका भरुत्वा, इसका वृहद्बल हुआ। इसका वृहदरण, उससे प्रसेनजित, उससे तक्षण, उससे उरुक्रिय, उससे वृत्सवृद्ध, उसका प्रतिव्योम, उसका पुत्र भानु, उसका दिवाक दिवाक से सहदेव, उसका वृहश्व, उसका भानुमान, उसका प्रतिकाश्व उसका सुप्रतीक, उसका मरुदेव, उसका सुनक्षत्र, उसका अन्तरिक्ष, उसका सुतपा, उसका रुणक, रुणक का सुरथ, सुरथ का सुमित्र पुत्र होगा। इस प्रकार अद्भुत कार्य करने वाले इक्ष्वाकु कुल के राजाओं का वंश सुमित्र तक होगा।

चालीसवां अध्याय

(श्री सूतजी का मुनीश्वरों को बतलाना कि जो पुरुष पिता, पितामह, प्रपितामह इन तीनों का फल की इच्छा से नित्य ही श्राद्ध किया करते हैं। उन पुरुषों को धर्म एवं शुभ सम्मान की प्राप्ति होती है। भीष्म पितामह जी के अपने पिता के श्राद्ध करने पर उनके पिता का उनको वरदान प्रदान करना कि उनको कोई भी मार न सकेगा। पिण्डदान करने के बारे में एक अद्भुत कथा।)

शौनकादि ने कहा—हे सूतजी! आप कृपा करके श्राद्ध देवता विवस्वान् सूर्य की उत्पत्ति, श्राद्ध के महत्व व उसके फल का वर्णन करें। सूतजी बोले—हे ऋषि! जो मनुष्य पिता, पितामह, प्रपितामह इन तीनों पिण्डों का फल की इच्छा से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नित्य ही श्राद्ध किया करता है। फिर पुष्टि की इच्छा से पितृश्वर उन्हें पुष्टि देते हैं। युधिष्ठर जी ने भी एक बार पितामह भीष्म से यह प्रश्न किया था कि पितरों को श्राद्ध किस प्रकार प्राप्त होता है। कुछ लोग स्वर्ग को प्राप्त करते हैं तो कुछ अपवर्ग। यह भी सुना जाता है कि स्वर्ग में देवता लोग भी अपने पितरों का श्राद्ध किया करते हैं। आप इन सब बातों का तत्व क्या है, इसका वर्णन करने की कृपा करें। भीष्मजी ने उत्तर दिया—हे राजन्! मैंने भी एक बार अपने पिताजी का पिण्डदान किया था तब वे प्रकट होकर बोले—हे पुत्र! यह पिण्ड मेरे हाथ पर रख। मैंने विचार किया कि शास्त्रों में ऐसा नहीं कहा गया। तब मैंने कुशों पर पिण्ड रख दिया। इससे पिता ने सन्तुष्ट होकर कहा—हे पुत्र! तुम धर्म के अनुसार कार्य करने वाले हो। मैं तुम पर प्रसन्न हूं मैं तुम्हें अमर करता हूं त्रिलोकी में तुम्हें कोई भी मार नहीं सकता। तुम अपनी इच्छा से मृत्यु पाओगे इसके अतिरिक्त कोई अन्य वर भी मांग सकते हो। मैंने हाथ जोड़कर कहा—हे तात! मैं अनुग्रहीत हूं आप कृपया मेरी एक शंका का समाधान करें तो बहुत कृपा होगी। शान्तनु ने कहा—हे पुत्र! मैंने भी पितृ कल्प के विषय में मार्कण्डेय ऋषि से पूछा था तब उन्होंने कहा था—हे राजन्! एक बार मैंने स्वर्ग से उतरते हुए एक विमान को देखा था जिसमें कोई बालक शयन कर रहा था। मैंने उससे पूछा—आप कौन हैं? उस बालक ने कहा—मैं सनत्कुमार हूं सप्तर्षि मेरे छोटे भाई हैं। मुझ ब्रह्मा-पुत्र के दर्शन प्राप्त करने के लिए तुमने तपस्या की थी। इसलिए मैं यहां प्रकट हुआ हूं। अब तुम क्या चाहते हो। मार्कण्डेय जी ने कहा—हे स्वामिन्! पितरों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आदि के स्वर्ग के विषय में कुछ बताएं कि वह क्या हैं। उन्होंने कहा—ब्रह्माजी को छोड़कर देवताओं ने आत्म भजन किया। जिससे ब्रह्माजी ने उन्हें श्राप दिया कि तुम संज्ञा रहित मूढ़ हो जाओगे। संज्ञाहीन बनकर वे ब्रह्माजी से बोले—हे पितामह! हमारा अपराध क्षमा करें। तब ब्रह्माजी ने उन्हें इसका प्रायश्चित करने के लिए कहा फिर कहा—इस विषय में तुम अपने पुत्रों से भी पूछो। उन्होंने अपने पुत्रों से भी पूछा वे बोले—हे पुत्रकगण! तुम संज्ञावान् होकर प्रायश्चित करो। देवताओं ने ब्रह्माजी के पास आकर पूछा हमारे पुत्रों ने हमें पुत्रक क्यों कहा ब्रह्माजी ने उत्तर दिया—हे देवगणों! तुम ब्रह्मवादी नहीं इसी कारण तुम्हारे पुत्रों का कथन यथार्थ है। जो पुत्र अज्ञानी हैं वे तो बालक के समान ही हैं इसलिए अब तुम जाकर भजन करो फिर देवताओं ने पुत्रों से कहा कि तुम हमें पुत्रक कहने वाले हो इसी कारण तुम पितर होओगे। तब से वे देवपुत्र पितर नाम से प्रसिद्ध हुए।

इकतालीसवां अध्याय

(श्री सनत्कुमार जी का महर्षि वेदव्यासजी को बतलाना कि स्वर्ग में पितरों के सात गण हैं। जिनमें चार तो मूर्तिमान हैं एवं तीन अमूर्त हैं। जो मनुष्य श्राद्धों में पितृ तृप्ति कराते हैं, पितर भी उन्हें पुष्टि, आरोग्य एवं बुद्धि दिया करते हैं।)

श्री सनत्कुमारजी ने कहा—हे तपस्विन्! स्वर्ग में पितरों के सात गण हैं। जिनमें से चार मूर्तिमान हैं तो तीन अमूर्त हैं। आद्य देवता एवं ब्राह्मण उन्हीं का भजन करते हैं। वही पितर अपने योग द्वारा प्रथम सोम को तृप्त कराते हैं। अतएव श्राद्ध में ब्राह्मणों व योगियों को रजत पात्र में भोजन कराने को उत्तम कहा गया है। तथा चांदी के बर्तन ही उन्हें दान में भी देने चाहिये। श्राद्ध में पुरुष अग्नि, यम और सोम का आह्वान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करे। जो पुरुष श्राद्ध में पितरों को तृप्ति कराते हैं। उनके पितर भी उन्हें आरोग्य, पुष्टि, ज्ञान प्रदान करते हैं। मार्कण्डेय ने कहा—इस प्रकार ज्ञान देकर देव स्वामियों ने योग की गति प्राप्त की। इसलिए हे भीष्म जी! प्रथम योग्य आचरण करने वाले भरद्वाज पुत्र ब्राह्मण कुछ दुराचार में पड़कर पतित हो गए। बाग्दुष्ट, क्रोधन, हिंस्र, पिशुन, काव, स्वसृप, पितृवर्ती नामक विश्वामित्रजी के पुत्र गर्गजी के शिष्य थे। पिता की मृत्यु हो जाने से उन सब ने गुरुजी की आज्ञा से कपिला नामक गौ की सेवा की। एक बार उन पापियों ने मूढ़ता वश गौ की हत्या करने का विचार किया तथा आकर गुरुजी से कहा कि गाय को सिंह ले गया है। इस असत्य भाषण से गौहत्या पाप के कारण उन सातों भाईयों का जन्म एक लुब्धक के यहां हुआ। अपने धर्म के अनुसार वे पर्वत पर मृगों के समान विचरण करने लगे। कुछ समय बाद ज्ञान होने पर उन्होंने पाप से मोक्ष प्राप्त करने का विचार किया। तब उन्होंने तपस्वियों के घर जाकर भोजन किया। इसी कर्म में लगे हुए उन्होंने वन में प्राण त्याग दिये।

अभी तक उन व्याध पुत्रों का स्थान कालञ्जर नामक पर्वत पर दिखाई देता है। तब उसके पश्चात् उनकी शुभ अशुभ कर्मों से निवृति हुई। फिर उनका जन्म चकवे की योनि में हुआ। तत्पश्चात् क्रमशः जलचर व नभचर पक्षियों की योनियां प्राप्त करते हुए उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। एक बार पक्षी की योनि में उन्होंने उस वन में अपनी पत्नी के साथ आए नीप देश के राजा को देखा। उन्होंने सोचा ऐसा कौन सा पुण्य है जिससे हम भी इस प्रकार का सुख ऐश्वर्य प्राप्त कर सकें। तब दो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चक्रवाक पक्षी उनके पास आकर कहने लगे—हम दोनों आपके हितचिन्तक हैं। तभी वहां एक सुमना पक्षी आया और चक्रवाकों से बोला—हे चक्रवाक पक्षियो! जिसके मन्त्री तुम लोग बनना चाहते हो वह कापिल्य नगरी के राजा होंगे। और तुम उनके अमात्य बनोगे। यह कहकर ब्रह्मचारी सुमना प्रसन्न होकर उनसे कहने लगा—अब तुम्हारा श्राप भी समाप्त हो जायेगा। योग को प्राप्त होकर पितरों की कृपा से तुम्हें पुण्य मिलेगा। तुमने गौ का प्रोक्षण करके पितरों को अर्पित किया था। अतएव पुण्य की प्राप्ति होगी। इस प्रकार कहकर सुमना पक्षी चुप हो गया।

बयालीसवां अध्याय

(पितरों के प्रभाव का वर्णन। महाराजा विभ्राज का अपने पुत्र अनूप को राज्य देकर तपस्या के लिए वन में जाना और केवल पवनाहारी रहकर तप करना। चार शकुनों तथा तीन भोग भ्रष्ट पक्षियों का मृत्यु उपरान्त मनुष्य योनि का प्राप्त करना।)

पितामह भीष्म ने कहा—हे मार्कण्डेयजी! कृपा करके अब हमें आगे का वृत्तान्त सुनाइये। यह सुनकर मार्कण्डेयजी बोले—सुनिये! वे सात पक्षी अपने धर्मानुसार मानसरोवर में घूमते हुए केवल जल व वायु का सेवन करने लगे। वह राजा भी पत्नी के साथ अपनी नगरी को लौट आया। तब उस विभ्राज राजा ने अपने पुत्र अनूप को राज्य दे दिया और स्वयं वन में चला गया। उसी वन में पहुंचा जहां उसके सहचारी रहा करते थे। वह केवल पवनाहार लेकर तपस्या करने लगा। उसके तप के तेज से सारा वन जगमगा उठा। तब चार शकुनों तथा भोग-भ्रष्ट तीन पक्षियों ने शरीर छोड़ा। दूसरे जन्म में उन्हें कापिल नगर में मनुष्य का शरीर प्राप्त हुआ। इनमें तीन मोहित थे और शेष चारों को अपना पूर्वजन्म स्मरण था। इनके नाम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ब्रह्मदत्त आदि थे। पापरहित ब्रह्मदत्त को राजा ने राज्य प्रदान करके परमगति प्राप्त की। पंचाल व पुण्डरीक ने भी अपने पुत्रों को मन्दिर का अधिकार दे दिया। उन्होंने परम गति प्राप्त की। हे भीष्म जी! शेष चार में से एक उसी नगर के दरिद्र ब्राह्मण के यहां उत्पन्न हुए, वे चारों वेदों व शास्त्रों के ज्ञाता हुए। सदाशिव की भक्ति व आराधना करते हुए वन को गए वहां उन्होंने शंकरजी की कृपा से मोक्ष प्राप्त किया।

तेतालीसवां अध्याय

(सूतजी का मुनीश्वरों को आचार्य पूजन की विधि तथा नियम बतलाना। आचार्य को दान देने के बाद मनुष्य सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है।)

शौनकजी बोले—हे सूतजी! आप कृपा करके आचार्य पूजन की विधि का वर्णन करें। ग्रन्थ आदि सुनने के बाद क्या करना चाहिए। सूतजी बोले—सुनो! पुराणों की कथा का श्रवण करने के बाद आचार्य का पूजन बहुत आवश्यक है। आचार्य को प्रसन्नता से दान देना चाहिए। शिवाराधना समाप्त करके आचार्य को बछड़े सहित गाय दान दें। एक पल स्वर्ण का आसन बनाकर उस पर सुन्दर लिखे हुए ग्रंथ को स्थापित करके आचार्य को दान देने से बन्धनों से मुक्ति प्राप्त होती है। हे मुने! पुराण वक्ता आचार्यों को यथाशक्ति धन-धान्य ग्राम राज्य पशु आदि देने से कल्याण होता है। ग्रंथ के श्रवण का पूरा फल प्राप्त होता है।

चवालीसवां अध्याय

(महर्षि वेद व्यासजी के जन्म की कथा। महर्षि पराशर का नदी पार करने के लिए मत्स्यगन्धा की नाव में सवार होना। कामदेव द्वारा विवश होकर उनका मत्स्यगन्धा के साथ भोग करना। समय आने पर वेदव्यासजी का जन्म लेना। पैदा होते ही वन में तपस्या के लिए चले जाना। मध्येश्वरी लिंग का पूजन करना। भगवान् सदाशिव का दर्शन करके उनसे मनोवांछित वर प्राप्त करना।)

शौनकादि ने कहा—हे सूतजी! अब आप हमें वेदव्यासजी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के जन्म का वर्णन सुनाइये। इनकी माता सत्यवती है। उसके साथ तो राजा शान्तनु ने विवाह किया था और व्यासजी तो महायोगी पराशर जी के पुत्र कहलाते हैं। इस सब के पीछे क्या रहस्य है। सूतजी बोले--एक बार पराशर जी तीर्थ-यात्रा करते हुए यमुना तट पर आ गए वहां मल्लाह भोजन कर रहा था। उससे यमुना पार पहुंचाने के लिए कहा। उस निषाध ने मत्स्यगन्धा पुत्री से कहा-हे पुत्री! यह दृश्यन्ती के पुत्र श्री पराशरजी यमुना पार करना चाहते हैं। अब तुम इन्हें पार पहुंचा दो! तब उसने उन्हे नाव में बैठा लिया। और पार पहुंचाने लगी। उसी समय उस पर मोहित होकर उसका दाहिना हाथ पकड़ लिया। यह सब देखकर मत्स्यगन्धा हँस पड़ी और बोली--हे तपस्वी! आपको ऐसा घृणित कार्य शोभा नहीं देता। आप तो उत्तम वसिष्ठ के कुल में उत्पन्न हुए हैं। मुझ निषाद कन्या व ऋषिवर आपका क्या मेल? इस प्रकार के वचनों को सुनकर पराशर जी ने उसका हाथ छोड़ दिया। किन्तु नदी के पार पहुंचते ही कामाधीन होकर उन्होंने पुनः उसका हाथ पकड़ लिया। कांपती हुई मत्स्यगन्धा ने फिर कहा--ऋषि! मैं दुर्गन्धियुक्त कृष्णवर्ण की निषाद कन्या हूं और आप श्रेष्ठ योगी हैं। कांच व कनक में कैसा मेल? फिर शास्त्रों में भी संभोग की आज्ञा रात्रि में दी गई है। यदि आप भोग करना ही चाहते हैं तो रात होने दीजिए। यह सुनकर पराशर जी ने अपनी योग शक्ति से दिन में ही रात्रि के समान अन्धकार कर दिया। तब लज्जित व आश्चर्य चकित होकर वह बोली--हे ऋषि! आप तो चले जाएंगे। मेरा क्या होगा! आपका वीर्य अमोघ है मुझे गर्भ रह गया तो क्या होगा। यह सुनकर ऋषि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बोले—इस समय तो तू मेरे साथ संभोग कर अपनी कामना कह मैं पूर्ण करूंगा। मेरी आज्ञा पूर्ण करने के कारण तू सत्यवती कहलाएगी। तब वह बोली—मेरे इस कर्म को माता-पिता आदि कोई भी न जान सके। मेरा कन्या धर्म भी नष्ट न हो तथा आपके समान पूर्ण तपस्वी शक्तिमान पुत्र प्राप्त करूं। पराशरजी बोले—तुम्हारी सब कामनाएं पूर्ण होंगी। तुम्हारे गर्भ से विष्णु का अंश तेजस्वी यशस्वी पुत्र होगा इस प्रकार कहकर पराशरजी ने यमुना पर स्नान किया और चले गए। सत्यवती ने समय आने पर सूर्य के समान तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। पुत्र ने जन्म लेते ही माता को प्रणाम किया और कहा—हे माता! जब भी तुम्हें कोई काम पड़े मुझे याद करना मैं तुरन्त पहुंच जाऊंगा। इस प्रकार कहकर वह पुत्र अर्थात व्यासजी तप करने चले गए। पुत्र के वियोग में व्याकुल सत्यवती पिता के यहां पहुंची। इधर व्यासजी ने भी तपस्या पूर्ण की वेद की शाखाओं का विभाजन किया जिससे इनका नाम वेदव्यास हुआ। तत्पश्चात् वे तीर्थ यात्रा करने लगे। सभी तीर्थों की यात्रा तथा पिण्डदान आदि करके शिवलिंग बिचारा जिसकी पूजा से विधाएं करके मैं पुराण रचना की शक्ति प्राप्त करूं इस प्रकार विचार करके ध्यान मग्न हो गए। कुछ समय बाद उन्होंने ध्यान भंग किया और बोले—मुझे ज्ञान हो गया कि धमार्थ काम मोक्ष देने वाले इस क्षेत्र में मध्येश्वर लिंग है। इनके समान काशी भर में कोई और लिंग नहीं है। यह लिंग सभी कामनाओं को पूर्ण करते हैं इसलिए मैं इन्हीं की आराधना करूंगा और शक्ति प्राप्त करके पुराण की रचना करूंगा। इस प्रकार विचार करके व्यासजी ने गंगा स्नान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IES (Retd) Collection Jammu

किया और व्रत आरम्भ कर दिया कभी केवल पत्तों का भोजन कभी शाक कभी जल और कभी केवल वायु का सेवन करके मध्येश्वरी लिंग की पूजा की। एक बार जब वे गंगा स्नान करके आए तो उस ज्योतिर्लिंग में मध्येपेश्वर सदाशिव के दर्शन हो गए। साथ में पार्वती जी थीं इस प्रकार जटाधारी गंगाजी को जटाओं पर धारण करके मस्तक पर प्रकाशमान चन्द्रमा की कला को धारण किए हुए शंकरजी विराजमान हैं। उनका दर्शन पाकर व्यासजी प्रसन्न होकर स्तुति करके बोले—हे महादेव! आप मन वाणी की सीमा से परे हैं। वेद भी आपकी महिमा को नहीं जानते। जगत् की उत्पत्ति स्थिति व संहार का कारण आप हैं। हे सदाशिव! आप जन्म, मरण, देश, काल आदि रहित त्रिलोकी के ईश्वर हैं। तब उनकी स्तुति सुनकर शंकर जी बालक के रूप में प्रकट होकर बोले—हे व्यासजी! आप मनोवांछित वर मांगो। तब व्यासजी बोले—आप तो सर्वज्ञ अन्तर्यामी हैं फिर मैं क्या कहूं। यह सुनकर हंसकर शिवजी ने कहा—हे वेदव्यासजी! आपकी कामना अवश्य पूर्ण होगी। मैं तुम्हारी वाणी में स्थित होकर इतिहास पुराण आदि का निर्माण करूंगा। तुम्हारे पढ़े हुए इस स्तुति अष्टक का तीनों समय मेरे सामने स्तुति करेगा। उसे मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी।

सूतजी बोले—तब शंकरजी का वर पाकर व्यासजी ने जिन अठारह पुराणों की रचना की वे इस प्रकार हैं—ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत्, भविष्य, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, ब्रह्म-वैवत, लिंग, वराह, स्कन्द, कर्क, मत्स्य, गरुड़, वामन, ब्रह्माण्ड। इन पुराणों के श्रवण व पठन पाठन से श्रेयस की प्राप्ति होती है। यह मोक्ष प्रदान करने वाले हैं। सूतजी बोले—इस प्रकार

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mohan RS (Rota) Collection Jammu

पराशरजी का सत्यवती से संयोग हुआ फिर शान्तनु राजा को सत्यवती से प्राप्ति हुई। व्यासजी की उत्पत्ति अद्भुत होते हुए भी यह शिक्षा देती है कि विद्वान लोग बड़ों के गुण ग्रहण करें दोष नहीं। यह रहस्यमयी कथा भी पुण्य को देने वाली है। इसके कथन पठन श्रवण व परायण से पापों का नाश होता है।

पैंतालीसवां अध्याय

(महाराजा विरथ तथा समाधि नाम के वैश्य की कथा। घर से निकाले जाने पर दोनों का महर्षि मेधा की शरण में जाना। महर्षि का उनको मधु और कैटभ दो दैत्यों के जन्म की कथा सुनाना। महाकाली की उत्पत्ति। भगवान विष्णु का दोनों दैत्यों को सुदर्शन चक्र द्वारा मार डालना।)

मुनि बोले—हे ऋषि! अब आप कृपा करके जगत्माता उमा देवी के चरित्र का वर्णन करें जिसे सुनने की हमें बहुत तीव्र इच्छा है। सूतजी बोले—हे ऋषियो! तुम लोग धन्य हो जिन्हें उमा चरित्र सुनने का अवसर प्राप्त हो रहा है अब तुम लोग ध्यान से सुनो। स्वारोचिष नामक मन्वन्तर में विरथ नामक एक राजा हुआ था उसका सुरथ नामक पुत्र था। सुरथ अत्यन्त वीर व पराक्रमी था। दान शील, सत्यभाषी, महाबली वह राजा देवी का बहुत भक्त था। किन्तु एक बार अचानक नौ राजाओं ने मिलकर उस पर आक्रमण कर दिया। और उसे पराजित करके उसका राज्य छीन लिया व उसे बाहर निकाल दिया। वह राजा घोड़े पर सवार होकर शिकार के बहाने वन चला गया। वन में उसने एक अत्यन्त सुन्दर आश्रम देखा। उस आश्रम में सभी जीव जन्तु शान्त होकर विचरण कर रहे थे। वहां पहुंचने पर आश्रम के मुनियों ने उसका बहुत स्वागत किया। तब सुरथ ने कुछ दिन तक वहां निवास किया। एक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दिन उसके मन में विचार हुआ कि मैं बड़ा मन्द भाग्य हूं कि अपना राज्य खो बैठा हूं। उसी समय वैश्य भी वहां आ पहुंचा उसे दुःखी जानकर राजा ने उसका परिचय व दुःख का कारण पूछा उस वैश्य ने राजा को प्रणाम किया फिर आंखों में पानी भरकर बोला—मैं एक धनी कुल में उत्पन्न हुआ वैश्य हूं। मेरा नाम समाधि है। मुझे मेरें पुत्र पौत्र आदियों ने धन के लोभ में पड़कर घर से निकाल दिया है। जिससे मैं वन में आ गया हूं। यद्यपि मैं उन लोगों को अपना नहीं जानता और न ही उनका कुशल चाहता हूं फिर भी न जाने क्यों मेरा मन उन्हीं की ओर लगा रहता है जिन्होंने लोभ में आकर मुझे घर से बाहर निकाल दिया। राजा ने कहा तुम्हारा कथन सत्य है। इस प्रकार वार्तालाप करते हुए दोनों मेधा ऋषि के द्वार पर पहुंचे। उन्हें प्रणाम करके अपना-अपना हाल सुनाने लगे और प्रार्थना करने लगे कि हमारा मोह दूर करो। ऋषि बोले—सबके मन को आकर्षित करके मोहित करने वाली शक्ति महामाया है जो कि जगत् की उत्पत्ति स्थिति व संहार करती है। राजा ने कहा—हे महर्षि! विश्व को मोहित करने वाली यह मायादेवी कौन है। ऋषि बोले—हे राजन्! सुनिए। जिस समय प्रलय हुई योगिराज विष्णु शेषनाग पर योग निद्रा में सो रहे थे। तभी उनके कानों की मैल से दो भयानक दैत्य उत्पन्न हुए मधु तथा कैटभ। उन्होंने जब विष्णुजी की नाभि के कमल में ब्रह्मा जी को देखा तो उसे मारने दौड़े। और बोले—तू कौन है। ब्रह्माजी ने उस दैत्य को देखा फिर विष्णु तथा परमेश्वरी देवी की स्तुति करने लगे। बोले—हे महामाया! शरणागतों की रक्षा करने वाली देवी इन दैत्यों से आप मेरी रक्षा करो आपको प्रणाम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Meekerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो। आप इन दोनों दैत्यों को मोहित करके तथा नारायणजी को जगाकर मेरी रक्षा करें। मुनि बोले—ब्रह्माजी की प्रार्थना से महामाया फाल्गुन पक्ष की द्वादशी को प्रकट हुई तथा महाकाली के नाम से प्रसिद्ध हुई। आकाशवाणी द्वारा उन्होंने कहा—हे ब्रह्माजी! तुम भय मत करो मैं युद्ध में इन दोनों का संहार करके तुम्हारी रक्षा करूंगी। इस प्रकार कहकर विष्णु जी के मुख तथा नेत्रों से प्रकट होकर देवी ने ब्रह्माजी को अपने साक्षात् दर्शन दिए। तभी जनार्दन भगवान् जाग गए। उन दोनों दैत्यों को देखकर क्रोधित होकर विष्णुजी उनसे युद्ध करने लगे। फिर हजारों वर्षों तक दोनों बाहु युद्ध करते रहे। महामायाजी की माया से मोहित हुए वे दोनों दैत्य विष्णुजी से बोले—हे विष्णु! तुम मनोवांछित वर मांगो। तब विष्णुजी ने उनसे कहा—तुम हाथों से मारे जाओ। तब उन दोनों दैत्यों ने कहा—जिस पृथ्वी पर जल न दिखाई दे उस स्थान पर तुम हमें मार सकोगे। तब विष्णुजी ने उन्हें अपनी जंघाओं पर रखकर उनके सिर काट दिए।

छयालीसवां अध्याय

(रम्भासुर नामक दैत्य के यहां महिष नामक पुत्र का जन्म लेना और देवताओं को जीतकर इन्द्र का राज्य छीन लेना। भगवान् शंकर व विष्णु के मुख से महामाया का उत्पन्न होकर महिषासुर को मार डालना।)

ऋषि ने कहा—दैत्यों के कुल में रम्भासुर नामक एक श्रेष्ठ दैत्य हुआ था। उसका एक महिष नामक महाबली पुत्र हुआ। उस महाबली ने युद्ध में सब देवों को परास्त करके इन्द्र के सिंहासन पर अधिकार कर लिया और स्वयं स्वर्ग का राजा बन बैठा। उस दैत्य से पीड़ित होकर सब देवता ब्रह्माजी को लेकर विष्णु तथा भगवान् शंकर के पास पहुंचे। देवताओं की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji I.S (Retd) Collection Jammu

दुर्दशा का हाल जानकर शंकरजी व विष्णुजी क्रोधित हो उठे। तब क्रोधित हुए उन दोनों तथा देवों के शरीर से एक तेज प्रकट हुआ। वह सारा तेज मिलकर एक स्त्री के रूप में प्रकट हो गया। उसे देखकर सब देवता प्रसन्न हो गये तथा उन्होंने उसे शस्त्राभूषण प्रदान किए। तब देवी ने उन्हें धारण करके महान् अट्टहास से गर्जना की। इस गर्जन से पृथ्वी व आकाश कम्पित हो गए। दैत्यों ने भी उस गर्जना को सुनकर अपने-अपने आयुध उठा लिए। महिषासुर भी अपनी सेना को लेकर संग्राम करने वहां आ गया। महामाया को देखते ही देवी के प्रभाव से उनके करोड़ों आयुध नष्ट हो गए। तब उस महामाया ने अपनी शूल रूपिणी शक्ति आदि उठाकर अपने शस्त्रों से चिक्षु-रात्रि दैत्यों का विनाश कर दिया। अपनी सेना का विनाश देखकर महिषासुर देवी के श्वासों से उत्पन्न देवताओं को मारने लगा। उनको नष्ट करके दैत्य ने देवी के वाहन सिंह पर भी प्रहार किया। यह देखकर महामाया क्रोधित हो उठीं। वह महाबली दैत्य भी अपने खुरों से पृथ्वी तथा सींगों से पर्वतों को नष्ट करने लगा। महामाया ने उस दैत्य पर पाश से प्रहार किया। तब वह महिषासुर अपना स्वरूप त्यागकर सिंह के रूप में आ गया। उसी समय महामाया ने तलवार से सिर काट डाला किन्तु वह फिर हाथ में तलवार उठाकर खड़ा हो गया। देवीजी ने उसका हाथ काट दिया। वह फिर हाथी बन गया और अपनी सूंड से सिंह को मारने दौड़ा। देवीजी ने उसकी सूंड काट दी। फिर वह राक्षस अपने रूप में आ गया। इस प्रकार के युद्ध से सब त्रिलोकी कांप उठी। जीव दुःखी हो गए। देवीजी ने क्रोध में आकर उस दैत्य से कहा—अरे नीच!

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दुष्ट बुद्धि ! तू तो व्यर्थ ही मेरे साथ हठ कर रहा है त्रिलोकी भर में कोई भी मेरे सामने नहीं टिक सकता। यह कहकर माहामाया ने उछलकर अपने पैरों से कुचल डाला। और उसकी ग्रीवा में अपना त्रिशूल बींध दिया। जिससे वह पृथ्वी पर सदा के लिए सो गया। हा-हाकार करते हुए उसके सभी गण इधर-उधर भाग गए। इन्द्रादिक देवताओं ने आकर देवी की स्तुति की। गन्धर्व गाने लगे अप्सरायें नाचने लगीं।

सैंतालीसवां अध्याय

(शुंभ और निशुंभ दो परम पराक्रमी दैत्यों से दुःखी होकर सभी देवताओं का हिमालय पर जगत जननी श्री पार्वती के पास जाकर उनसे अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करना। श्री पार्वतीजी के शरीर से कौशिकी का प्रकट होकर शुंभ और निशुंभ के साथियों धुम्राक्ष, चण्ड, मुण्ड तथा रक्त बीज को मार डालना।)

ऋषि बोले—शुंभ व निशुंश नामक दो परम बलवान दैत्य हुए। उनके पराक्रम से सारा ब्रह्माण्ड कांप उठा। तब उन दैत्यों से पीड़ित होकर सब देवतागण हिमाचल पर शिवा के पास पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्हें प्रणाम करके स्तुति करने लगे तथा बोले—हे भगवती ! आपको नमस्कार है। आप हमारी रक्षा करें। उन देवताओं को देखकर गौरी ने कहा—हे देवताओ ! आप लोग किसकी स्तुति कर रहे हैं। इतना कहते ही पार्वतीजी के शरीर से एक कुमारी प्रकट हुई। सब देवताओं के सामने उसने पार्वतीजी को प्रणाम किया और कहा—हे जगदम्बा यह सब देवगण मेरी स्तुति कर रहे हैं मेरा नाम कौशिकी तथा मातंगी होगा। क्योंकि मैं आपके शरीर कोष से उत्पन्न हुई हूं तथा प्रकट हुई हूं। तब देवों को सांत्वना देते हुए उस कुमारी ने कहा—तुम्हें भय करने की आवश्यकता नहीं है मैं आपका कार्य स्वयं करूंगी। इस प्रकार कहकर वह अन्तध्यनि हो गई।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जब शुंभ-निशुंभ के सेवकों ने उस परम सुन्दरी को देखा तो मोहित हो गए। वहां से चलकर शीघ्र अपने दैत्यराज के पास पहुंचकर उसके रूप की प्रशंसा करने लगे कि एक परम सुन्दरी स्त्री सिंह पर सवार होकर हिमाचल पर निवास कर रही है। देव कन्याएं तो उसके सामने कुछ भी नहीं हैं। हे दैत्यराज! वह नारी रत्न तो आपके राज-महल में होनी चाहिए। यह सुनकर उन्होंने दैत्य सुग्रीव को बुलाकर उस सुन्दरी को बुलाने के लिए भेजा। वह सुग्रीव दैत्य हिमाचल पर जाकर जगदम्बा से बोला—हे देवि! इन्द्रादि देवताओं को भी अपने पराक्रम से पराजित करने वाले शुंभ-निशुंभ दैत्यों ने मुझे आपके पास भेजा है। आप तो स्त्री रत्न हैं। आप उन दोनों दैत्यों में से किसी एक के साथ विवाह कर लो। देवी ने अपना माया जाल फैलाते हुए कहा—हे दैत्यदूत! तुम सत्य कह रहे हो। शुंभ निशुंभ महाबली हैं। किन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा कर रक्खी है, जो वीर मुझे युद्ध में हरायेगा मैं उसी के साथ विवाह करूंगी। मेरा यह संदेशा तुम उनको पहुंचा दो। उस दैत्य ने शुंभ को सारा वृत्तान्त सुना दिया। इससे उसके क्रोध का वार-पार न रहा। उसने अपने सेनापति धूम्राक्ष को आदेश दिया कि तुम तुरन्त जाओ और उस पर्वतवासिनी नारी को मेरे पास ले आओ। यदि वह प्यार से काबू न आये तो लड़-भिड़कर जिस तरह से भी बन पड़े मेरे पास ले आओ। यह आदेश पाकर धूम्राक्ष हिमाचल पर पहुंचा और जगदम्बे से कहने लगा—हे देवि! तुम प्रेम पूर्ण हमारे स्वामी के पास चली चलो। अगर तुम मेरी बात न मानोगी तो मेरे पास इस समय साठ हजार दैत्य हैं मैं तुमको जबर्दस्ती पकड़कर अपने स्वामी के पास ले चलूँगा। इस पर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कल्याणी ने कहा—देखो वीर! मैं अपनी प्रतिज्ञा तोड़ नहीं सकती। हां यदि तुम चाहो तो लड़ाई में जीतकर मुझे अपने स्वामी के पास ले जा सकते हो। तब धूम्राक्ष शस्त्र उठाकर देवी की ओर लपका। जगदम्बा ने अपने हुकार के शब्द से ही उसे भस्म कर डाला। देवी का सिंह अब दैत्य की सेना की ओर बढ़ा उसने बहुत सों को काट-काटकर मार गिराया और जो शेष बचे वह रणभूमि से सिर पर पांव रखकर भाग निकले। जब शुंभ ने अपने सेनापति के मारे जाने के बारे में सुना तो उसने चंड मुंड तथा रक्त बीज को देवी के साथ युद्ध करने के लिए भेजा। तब सिंह पर सवार जगदम्बा को देखकर उन दैत्यों ने देवी के पास आकर कहा—हे देवी! तू शुंभ व निशुंभ दोनों में से किसी को अपना पति बना ले और शोभा को प्राप्त कर। जगदम्बा ने कहा—जिन परब्रह्म परमात्मा की विष्णु आदि देवता स्तुति करते हैं और जिनका तत्व वेद आदि भी नहीं जानते उनकी मैं एक सूक्ष्म प्रकृति हूं। फिर मैं भला किसी अन्य को किस प्रकार अपना पति स्वीकार कर सकती हूं। हे दैत्यो! यदि तुम्हारे अन्दर कुछ शक्ति है तो मुझसे युद्ध करके और मुझ पर विजय पाकर अपने साथ ले जाओ। दैत्यों ने कहा—हे देवी! हम तुमको एक अबला नारी समझकर मारना नहीं चाहते किन्तु यदि तुम स्वयं ही मरना चाहती हो इसलिए अब तैयार हो जा। इस प्रकार कहते हुए बाणों की वर्षा करने लगे। तब देवी ने चण्ड, मुण्ड, रक्त बीज आदि सभी दैत्यों का अपनी तलवार से वध कर दिया। देवी के शत्रु होने पर भी उन दैत्यों ने भक्तों की गति प्राप्त की।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अड़तालीसवां अध्याय

(चण्ड मुण्ड आदि के मारे जाने पर शुंभ निशुंभ ने कालकेय, मौर्य, दोहद नामक राक्षसों को देवी को मारने के लिए भेजना। उनका जाते के साथ ही देवी के हाथों मारा जाना। फिर शुंभ निशुंभ का युद्ध के लिए देवी के सम्मुख आना। देवी का उन दोनों को अपने त्रिशूल द्वारा मार डालना।)

राजा ने कहा—हे स्वामी! अब आप कृपा करके महामाया का अन्य चरित्र सुनाइए। कि चण्ड-मुण्ड के मर जाने पर शुम्भ ने क्या किया? ऋषि ने कहना आरम्भ किया—तब चण्ड-मुण्ड आदि दैत्यों का नाश सुनकर उस शुम्भ ने कालकेय, मौर्य, दोहद आदि बड़े-बड़े दैत्यों को युद्ध करने के लिए भेज दिया। स्वयं दैत्य भी रथारूढ़ होकर युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। युद्ध के नगाड़े बजने लगे। सभी योधा युद्ध के लिए तैयार होकर युद्ध स्थल में पहुंचने लगे। जगदम्बा शत्रुओं की सेना को देखकर धनुष बाण चढ़ाकर गर्जना करते हुए उन पर बाणों की वर्षा करने लगी। घण्टा बजा दिया। मां शेरां वाली का शेर भी गर्जने लगा। देवी को देखकर निशुम्भ ने कहा—हे कोमलांगिनी! तुम्हारे इस सुन्दर शरीर को देखकर दुःख होता है कि तू ऐसे कोमल शरीर के साथ किस प्रकार युद्ध कर सकेगी? मां जगदम्बे ने कहा—अरे नीच! तू ज्यादा बातें न बना। या तो मेरे साथ युद्ध कर, नहीं तो पाताल को चला जा! जगदम्बे की बात सुनकर निशुम्भ क्रोध में भर गया और कल्याणी पर बाण वृष्टि करने लगा। भगवती ने भी उस बाण-वर्षा का उत्तर अपने बाणों, परशु, त्रिशूल आदि से दिया। काल देवी ने अपने बाणों से शत्रु के सैकड़ों घोड़े काट डाले और माता के शेर ने असंख्य दैत्यों को मार डाला जिससे कि वहां पर रक्त की नदी बह निकली। अब निशुम्भ ने विचार किया कि यदि मैं एक स्त्री

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से पराजित हो जाऊंगा तो यह तो बड़ी लज्जा की बात होगी। इस नारी ने देखते-ही-देखते मेरी सेना को मूली-गाजर की तरह काट कर रख दिया है। अच्छा देखता हूं। इसके बाद वह एक अत्यन्त सुन्दर रथ में सवार होकर जगदम्बे के सामने आया और कहने लगा—हे देवी! यदि तूने युद्ध करना है तो मेरे साथ कर, इन बेचारे सैनिकों के मारने से भला क्या लाभ? इतना कहकर निशुम्भ ने मातेश्वरी पर बाणों की वर्षा आरम्भ कर दी। देवी ने उसके सारे-के-सारे बाण मार्ग में ही काट डाले। निशुम्भ ने अब तलवार व ढाल निकाल ली। किन्तु वह अभी देवी पर आक्रमण न कर पाया था कि देवी ने आगे बढ़ कर उसका सिर काट डाला और वह शीघ्र ही एक कटे हुए वृक्ष के समान भूमि पर गिर पड़ा। शुम्भ को जब पता चला कि उसका छोटा भाई भगवती के हाथों मर चुका है तो वह देवी से लड़ने के लिए अपने रथ पर सवार होकर स्वयं देवों की ओर बढ़ा। मातेश्वरी ने उसको देखकर भयानक अट्टहास किया जिसको सुनकर सभी दैत्यों के होश उड़ गए और वह बुरी तरह से घबरा गए। उस समय शुम्भ ने प्रज्वलित शक्ति से चण्डिका के ऊपर प्रहार किया। महामाया ने अपने बाणों से उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। क्रोध में आकर उसने त्रिशूल उसके वक्ष स्थल में भोंक दिया जिससे उसकी छाती फट गई। तब भी वह दैत्य चक्र उठाकर देवी को मारने दौड़ा। चण्डिका ने त्रिशूल से वह चक्र काट डाला तथा उसका शिर भी काट डाला। इस प्रकार मृत्यु पाकर उस दैत्य ने भक्तगति पाई। उसे नष्ट हुआ देखकर शेष दैत्य भी पाताल में भाग गए। सभी देवता हर्ष विभोर हो गए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उनन्चासवां अध्याय

(देवता-दैत्यों का भयानक युद्ध। उमा के प्रताप से देवताओं का विजयी होना, और उनको गर्व होना। उमा ने उनका गर्व मिटाना। देवताओं का उनसे क्षमा की याचना करना और उनकी आराधना करना।)

ऋषियों ने पूछा—हे सूतजी! उमादेवी के अवतार से सरस्वती जी कैसे प्रकट हुईं? इस सबका कृपया विस्तार से वर्णन करें। सूतजी बोले—हे ऋषियों! एक बार देवताओं व दैत्यों का भयानक युद्ध हुआ। तब इस माता के प्रताप से देवताओं की विजय हुई। इससे देवता गर्वित होकर अपनी प्रशंसा करने लगे। तब उन्हीं में से एक तेज प्रकट हुआ। उस तेज को देखकर देवता अत्यधिक घबरा गए। वह सबके-सब इन्द्र के पास गए और पूछा कि ग्रह क्या है? तब इन्द्र ने वायुदेव को उसकी परीक्षा लेने के लिए भेजा। उस तेज ने वायुदेव से पूछा—तू कौन है? वायुदेव ने कहा—मेरे द्वारा यह जगत चल रहा है मैं इस जगत का प्राण हूं। वायुदेव के वचन सुनकर तेज ने कहा—तो फिर तू अपनी शक्ति से इस तिनके को तो चलाकर दिखा। तब वायुदेव ने अपनी सारी शक्ति लगा दी, किन्तु वह तिनका अपने स्थान से तनिक भी न हिला। वायुदेव लज्जित होकर इन्द्र के पास पहुंचा और उसे अपनी पराजय का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। सारा हाल सुनकर इन्द्र ने अन्य देवताओं को उसकी परीक्षा के लिये भेजा लेकिन उसमें से कोई भी तो उस तेज पर विजय न पा सका। तब इन्द्र स्वयं वहां पहुंचा। इन्द्र को आया देखकर वह तेज अन्तर्ध्यान हो गया। उसके अन्तर्ध्यान होने पर इन्द्र ने सोचा कि जो तेज अपने अन्दर इतनी शक्ति रखता है मैं उसकी शरण में ही क्यों न जाऊं। ऐसा विचार करके इन्द्र मन द्वारा उसकी शरण में पहुंचा। जब इन्द्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मन द्वारा उस तेज की शरण को प्राप्त हुआ तो उस समय चैत मास के शुक्ल पक्ष की नवमी थी तथा मध्यान्ह का समय था। ठीक उसी समय सबका अभिमान मिटाने वाली एवं सबका कल्याण करने वाली देवी प्रकट हो गई। उसने इन्द्र से कहा—हे देवराज इन्द्र! ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि भी मेरे सामने गर्व नहीं कर सकते तो भला अन्य देवताओं में ऐसी सामर्थ्य कहां हो सकती है? मैं ब्रह्म प्रणवस्वरूप देवी हूं। केवल मेरी कृपा से ही तुम देवताओं ने दैत्यों पर विजय पाई है। हे देवताओ! अब तुम अपना अभिमान त्याग कर बड़ी नम्रता पूर्वक मेरा भजन करो। यह सुनकर देवताओं ने भगवती की स्तुति की और कहा—हे कल्याणी! इस समय तो आप हमें क्षमा प्रदान करें। आगे के लिए आप हमें ऐसा वरदान दें जिससे कि हमारे अन्दर फिर अभिमान पैदा न हो। श्री सूतजी बोले—तभी से देवताओं ने अभिमान त्याग कर उमादेवी की आराधना शुरू कर दी।

पचासवां अध्याय

(दुर्गम के उपद्रवों से देवताओं का भयभीत होना और उमा के पास जाकर अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करना। महाकाली और दस देवियों का दुर्गम को मार डालना।)

मुनि बोले—हे सूतजी! कृपा करके अब आप उमादेवी के चरित्र का वर्णन हमसे करें। क्योंकि इसे सुनने की हमें तीव्र उत्कंठा है। सूतजी बोले—हे ऋषियो! एक महाबीर व पराक्रमी रुद्र हुए उनका पुत्र दुर्गम था। ब्रह्माजी ने वर में उसे एक बार चारों वेदों को दे दिया और कहा था कि तुम्हें देवता भी पराजित नहीं कर सकते। तब तो यह वर प्राप्त कर वह पृथ्वी को पीड़ित करने लगा। उसके उपद्रव से स्वर्गवासी देवता लोग भी भयभीत हो गए। वेदों के न रहने से सब व्यवस्था नष्ट होने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लगी। ब्राह्मणों ने अपना धर्म आचार आदि त्याग दिए। जिससे समस्त संसार में कष्ट फैलने लगा। इस भयानक संकट को देखकर सब देवता शंकरजी के पास जाकर कहने लगे—हे नाथ! जिस प्रकार आपने शुंभ निशुंभ का नाश करके संसार की रक्षा की थी उसी प्रकार अब इस दुष्टा का वध करके आप हमारी रक्षा कीजिये। देवताओं की बात सुनकर तथा प्रजा को दुःखी देखकर देवी ने अपने नेत्रों को दया जल से भर दिया और इसके पश्चात नौ दिन तथा नौ रातों तक उस जल की हजारों धारायें बहती रहीं। उन धाराओं से सम्पूर्ण वृक्ष, औषधि आदि हरे-भरे हो गए। नदियां, तालाब, समुद्र आदि सभी जल से परिपूर्ण हो गए। देवता, ब्राह्मण आदि सभी सन्तुष्ट हो गए। फिर देवी ने देवताओं से पूछा—हे देवगण! अब मैं तम्हारा और कौन सा कार्य करूं। तब सभी देवताओं ने प्रार्थना की—हे महामाया! निवेदन है कि दुर्गम द्वारा चुराये हुए वेद हमें मिल जायें। इस पर कल्याणी ने प्रसन्न होकर कहा—तथास्तु! फिर कहने लगी—अब तुम लोग अपने-अपने धाम को चले जाओ, वेद तुम्हें मिल जायेंगे। ठीक उसी समय दुर्गम नगरी पर धावा बोल दिया और चहुं ओर से घेर लिया। महाकाली भी अपना चक्र लिए आगे बढ़ी। दोनों ओर से घोर युद्ध छिड़ गया। पैने बाण चलने लगे। इसी बीच में देवी के शरीर में से दस देवियां और प्रगट हो गईं जिनके नाम यह हैं—काली, तारा, छिन्नमस्तका, श्री विद्या, भुवनेश्वरी, भैरवी, बगुला, धूम्रा, त्रिपुरा, मातंगी। इन सभी देवियों ने सामूहिक रूप से दैत्य-सेना का नाश कर दिया। और दुर्गम दैत्य को समाप्त कर दिया। और इस प्रकार उसके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वध करके देवी ने उससे वेद प्राप्त कर लिए और देवताओं को दे दिये। तब देवताओं ने कहा—हे देवी! आपने हमारी रक्षा के लिए कई रूप धारे। इस कारण आपका नाम शताक्षी होगा और अपने शरीर से उत्पन्न किए गए शोक द्वारा लोक का पालन किया। इसी कारण शाकम्भरी नाम से प्रसिद्ध होओगी। दुर्गम का नाश करने वाली तुम्हारा एक अन्य नाम दुर्गा भी होगा। हे योगनिद्रे! महाबले! हे ज्ञानप्रदे! हे जगतजननी! हम सब आपको नमस्कार करते हैं। समय-समय पर आप हमारी रक्षा करती रहें। श्री दुर्गाजी ने कहा—तुम लोगों को भय नहीं करना चाहिए। मैं सदा की तरह तुम लोगों की दुष्टों से रक्षा करती रहूंगी। जब-जब भी दैत्य लोग उपद्रव फैलाएंगे तब-तब अवतार लेकर मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी। सूतजी बोले—सुप्रसिद्ध शताक्षीदुर्गा, शाकम्भरी दुर्गा ये एक ही दुर्गा के नाम हैं।

इक्यावनवां अध्याय

(श्री सूतजी का मुनीश्वरों को बतलाना कि जगतजननी ज्ञान योग, क्रिया योग एवं भक्ति योग इन तीनों योगों एवं भक्ति, मुक्ति की दाता हैं। माहेश्वरी का मन्दिर बनवाने वाले देवी भक्त को जन्म-जन्म में मान प्रतिष्ठा एवं वैभव की प्राप्ति होती है। जो पुरुष श्री देवी जी की मनोहर मूर्ति मन्दिर के मध्य में स्थापना करके उसके चहुं ओर पंचापना देवों की स्थापना करता है उसका पुण्य असंख्य है। जो मनुष्य उठते-बैठते "उमा" इन दो अक्षरों को रटते रहते हैं वह निश्चय ही दुर्गाजी के गण हो जाते हैं।)

मुनि कहने लगे—हे सूतजी! एक बार भगवान् वेदव्यास ने श्री सनत्कुमार जी से श्री पार्वतीजी के क्रिया योग के सम्बन्ध में पूछा था, सो वही क्रिया योग हम आपके श्री मुख से सुनना चाहते हैं। इस पर श्री सूतजी बोले—हे मुनीश्वरो! श्री वेदव्यास जी के पूछने पर श्री सनत्कुमार जी ने कहा था—क्रिया योग, भक्ति योग तथा ज्ञान योग तीनों योग ही भुक्ति, मुक्तिदाता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। चित्त का आत्मा के साथ संयोग ज्ञान योग है। आत्मा की एक भावना का नाम भक्ति योग है। जब इन योगों का संयोग होता है तो उसे क्रिया योग कहते हैं। कर्म से भक्ति पैदा होती है। हे मुनिवृन्द योग ही मुक्ति का मुख्य हेतु है। क्रिया योग ही योग का मुख्य साधन है। हे मुनीश्वरो! ध्यान पूर्वक सुनो। पत्थर, लकड़ी एवं मिट्टी से जो देवी का मन्दिर बनवाता है, वह जिस फल को प्राप्त होता है, अब मैं उस फल को कहता हूं। वह फल जो कि प्रतिदिन यज्ञ करने वाले को मिलता है वही फल मातेश्वरी का मन्दिर बनवाने वाले को प्राप्त होता है। मां भवानी का मन्दिर बनवाने वाले के हजार कुलों का उद्धार हो जाता है। मां का मन्दिर बनवाने वाले को जन्म-जन्म में मान प्रतिष्ठा एवं वैभव की प्राप्ति होती है। उस मन्दिर में जितने वर्षों तक, ईंटें टिकी रहती हैं, वह उतने ही वर्षों तक सुख भोगता रहता है। जिस देवी-भक्त ने श्री पार्वतीजी की मूर्ति बनवाई हो, वह निश्चित रूप से दुर्गा भवानी के लोक को प्राप्त होता है। त्रिलोकी की स्थापना पुण्य से भी कई गुणा पुण्य भगवती का मन्दिर बनवाने से होता है। जो मनुष्य मन्दिर बनवा कर उसके मध्य में भगवती की मूर्ति और उस मूर्ति के चहुं ओर पंचपना देवों की स्थापना करता है उसके पुण्य का क्या कहना। सूर्य ग्रहण के अवसर पर विष्णु सहस्र-नाम का पाठ करने से जिस फल की प्राप्ति होती है उससे सौ गुना फल केवल शिव नाम के जप करने से प्राप्त होता है और यदि मनुष्य उस समय भगवती के नाम का जप करे तो उसे उससे सौ गुना अधिक फल की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य चलते-फिरते, उठते बैठते उमा के नाम का जप करते रहते हैं वह भगवती दुर्गा के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गण हो जाते हैं। जो लोग नैमित्तिक कार्यों के करते हुए भी भगवती दुर्गा का धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करते रहते हैं और उसके मन्दिर को गोबर मिट्टी आदि से लीपते हैं या उसके मन्दिर में झाड़ू लगाते हैं वह भी निश्चय ही उमा के लोक को प्राप्त करते हैं। जो नित्य नियमपूर्वक भगवती महामाया का पूजन करते हैं उनको परम पद की प्राप्ति होती है। कृष्णपक्ष अष्टमी व नवमी तिथियों को श्री सूक्त देवी का सूक्त मन्त्रों द्वारा पूजन करना चाहिए। तुलसी कोण लेकर अन्य सभी पुष्प देवी पर चढ़ाने चाहिये। कमल पुष्प देवी को विशेष रूप से प्रिय हैं। जो मनुष्य देवी को सोना, चांदी, पुष्प आदि कुछ भी भेंट करता है वह परम गति को प्राप्त करता है। पूजन के पश्चात देवी से भूल-चूक के लिए क्षमा की याचना करनी चाहिए। देवी का ध्यान करके उस पर नैवेद्य चढ़ाना चाहिये उसके साथ-ही-साथ अनेकों फल भी देवी को चढ़ाने चाहिये। देवी का प्रसाद खाने वाला मनुष्य अपने पाप रूप कीचड़ को धोकर निर्मल हो जाता है। जो मनुष्य चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन मां जगदम्बे का व्रत करता है वह सब प्रकार के कर्म बन्धनों से मुक्त होकर मुक्ति को प्राप्त होता है। प्रति वर्ष उस दिन मां का महा उत्सव करना चाहिये। इस प्रकार के व्रत करने वाले भक्तों को मां सभी प्रकार के फल प्रदान करती है। वैशाख शुक्ल अक्ष्य तृतीया के दिन यथा शक्ति मातेश्वरी का रथोत्सव करना चाहिये। पृथ्वी रथ, सूर्य व चन्द्रमा को दो पहिये, वेदों को घोड़े और श्री ब्रह्माजी को सारथी समझना चाहिये। रथ निर्माण करके देवी भगवती की मूर्ति स्थापन करनी चाहिए। रथ को मणि मालाओं तथा फूल मालाओं से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सजाना चाहिये। भक्त को चाहिये कि रथ को आहिस्ता आहिस्ता चलाये और उसके साथ-ही-साथ अपने मुख से भगवती के नाम का भी उच्चारण करता रहे और देवी से प्रार्थना भी करता जाये—हे मातेश्वरी! हमारा पालन करो। इस प्रकार के वाक्यों द्वारा देवी को प्रसन्न करे और रथ को एक सीमा तक ले जावे। फिर रथ रोक करके सौ बार कल्याणी को प्रणाम करे। फिर उससे प्रार्थना करे। इस प्रकार जो मनुष्य रथ महोत्सव मनाता है वह अवश्यमेव मां भगवती के धाम को प्राप्त हो जाता है।

आसोज के शुक्ल पक्ष में नवरात्रि तक व्रत करने का विधान है। उससे मनुष्य के सभी मनोरथ पूरे हो जाते हैं। हे ऋषिराज! इस व्रत को विरथ के पुत्र महाराजा सुरथ ने किया था। और उसको इस व्रत के करने का फल यह मिला कि उसका खोया हुआ राज्य उसको फिर वापिस मिल गया। समाधि नामक वैश्य ने भी यह व्रत किया था और मोक्ष की प्राप्ति की थी। जो मनुष्य तृतीया, पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी आदि तिथियों में विधिपूर्वक मां भगवती का पूजन करता है तथा नवरात्रों में व्रत धारण करता है उसके सभी मनोरथ भगवती पूरे कर देती है। इसके अतिक्ति जो भी मनुष्य कार्तिक, मृगशिर, पौष, माघ, फाल्गुन महीनों की शुक्ला तृतीया तिथि में जगदम्बे का व्रत करता है तथा धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भगवती का पूजन करता है तो मंगलकारिणी देवी उसका मंगल करती है। स्त्रियों को अपने सौभाग्य की रक्षा के लिये यह व्रत अवश्यमेव करना चाहिए और पुरुषों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को भी विद्या, धन, पुत्र आदि की प्राप्ति के लिए अवश्य यह व्रत करना चाहिए।

अब उमा संहिता समाप्त हो रही है। यह संहिता परम पावन व शिव भक्ति को दृढ़ करने वाली है। यह अनेक पवित्र कथाओं से युक्त है। भोग व मोक्ष की दात्री इस संहिता को जो शुद्ध मन से सुनता है अथवा पढ़ता है उसे परम धाम की प्राप्ति होती है।

॥ इति श्री शिवमहापुराणस्य उमा संहिता सम्पूर्णम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji I.F.S. (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

कैलाश संहिता खण्ड

पहला अध्याय

(भगवान श्री वेदव्यास जी से शौनक आदि ऋषियों-महर्षियों की वार्ता ।)

कल्याणकारिणी आदि शक्ति माया से युक्त गणेशजी व स्वामी कार्तिकेय सहित परमतत्त्व सदाशिव को नमस्कार है। ऋषिगण बोले—अब तक तो आपने हमसे उमा संहिता का आख्यान सहित वर्णन किया। अब आप कैलाश संहिता का वर्णन करें। व्यासजी बोले—हे ऋषियो! मैं तुमको उस कैलाश संहिता का वर्णन सुनाता हूं जो कि परम दिव्य शिव-तत्त्व को बढ़ाने वाली है। एक समय की बात है जबकि हिमाचल में बसने वाले मुनीश्वरों ने काशी जाने के सम्बन्ध में विचार किया। वह लोग काशी पहुंचे और सबसे पहिले मणिकर्णिका में जाकर श्री गंगाजी में स्नान किया। स्नान के बाद वह लोग विश्वेश्वर के दर्शनों के लिए गए और भगवान सदाशिव को प्रणाम किया और फिर शिव रुद्रीक मन्त्रों द्वारा भगवान सदाशिव की स्तुति की और उनका ध्यान किया। फिर उन्होंने पंचक्रोशी देखने की इच्छा से वहां पर जब श्री सूतजी पधारे तो उन्हें देखकर सब मुनीश्वरों ने उनका यथोचित्त अभिवादन किया और सूतजी ने उनसे कुशल-मंगल पूछा। मुनीश्वरों ने उनसे अपना कुशल समाचार कहने के पश्चात उनसे निवेदन किया—प्रभो! आप धन्य हैं। आप तो ज्ञान के सागर हैं। इसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

लिये तो भगवान वेदव्यास ने आपको पुराणों में अभिषिक्त करके आपको पुराणों का ज्ञान एवं गुरु बना दिया है। आप पुराणों की पावन तथा पवित्र कथाओं का भण्डार हैं। उन पुराणों में वेद भरे पड़े हैं। वेद ओंकार से और ओंकार का रूप सदाशिव से है। जिसकी कि आप प्रतिष्ठा करने वाले हैं। इस समय हम आपके श्रीमुख से निकली हुई अमृत कथाओं का पान करना चाहते हैं कि जिससे हम ज्वर-रहित हो जावें। प्रभो! सत्य मानिये आपसे बढ़कर हमारा कोई दूसरा गुरु नहीं है अतः आप कृपा करके हमें महेश्वर का परम ज्ञान सुनाइये। मुनीश्वरों की यह बात सुनकर परम पौराणिक श्री सूतजी कहने लगे—हे मुनिवृन्द! आप बड़े ही भाग्यशाली और धन्य हैं जो कि आपको इन पावन व पवित्र कथाओं के सुनने में दृढ़ मति है। अतः मैं अब आपके सामने वह उपदेश जो कि मेरे गुरु भगवान वेदव्यासजी ने नैमिषारण्य के ऋषि मण्डल को दिया था, आपको सुनाऊंगा, ध्यानपूर्वक सुनिये। इस पावन व पवित्र उपदेश को सुनकर मनुष्य की भगवान सदाशिव के चरणों में दृढ़ भक्ति हो जाती है। जब स्वारोचिष मनु थे तब उसके अन्त में दृढ़व्रती तपस्वी ऋषियों ने नैमिषारण्य में सब सिद्धियों का प्रदान करने वाला सहस्र वार्षिक एक ऐसा यज्ञ किया कि जिससे समस्त ऐश्वर्य की जानकारी की प्राप्ति हो सके। उन्होंने भगवान श्री वेदव्यास जी को मन-ही-मन प्रणाम कर दिया। उन्होंने शिव भक्ति परायण हो भस्म तथा रुद्राक्ष धारण किया। यह देखकर भगवान श्री वेदव्यासजी वहां पर पधारे। मुनीश्वरों ने स्वर्ण के आसन पर उनको बिठाया और उनका पूजन किया। पूजन आदि हो जाने के पश्चात भगवान श्री वेदव्यासजी ने उन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

मुनीश्वरों से पूछा—हे मुनिवृन्द! कहिए आपके इस यज्ञ में सब तरह से कुशल मंगल है ना? आपने सम्यक प्रकारेण यज्ञपति का पूजन तो किया है ना? मुझे आप लोग यह भी बतलाइए कि आपने यह यज्ञ किस प्रयोजन से किया है? इस पर नैमिषारण्य के रहने वाले उन मुनीश्वरों ने कहा—प्रभो! हे नारायण के अंश से उत्पन्न कृपासागर! हे महाप्राज्ञ! आज हम आपके दर्शन पाकर कृतकृत्य हो गए हैं। हे ब्राह्मण! हमने यहां जो इस यज्ञ का आयोजन किया है उसका केवल एक यही कारण है कि ओंकार के अर्थ का प्रकाश होवे। हम परमेश्वर के उस परम भाव को सुनना चाहते हैं जो कि उस महेश्वर का परम रूप है। भगवन्! हम इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। प्रभो! हम आपकी शरण में हैं अतः आप हमारा संदेह दूर कीजिए। आप हमें विज्ञान-रूपी नौका में सवार कीजिए और तार दीजिए। जब मुनीश्वरों ने भगवान श्री वेदव्यासजी से इस प्रकार प्रार्थना की तो भगवान श्री वेदव्यासजी ने पहिले भगवान सदाशिव का पार्वती सहित ध्यान किया और फिर इस प्रकार कहा—

दूसरा अध्याय

(श्री वेदव्यासजी का मुनीश्वरों को बतलाना कि भगवान श्री सदाशिव का वास्तविक ज्ञान ही प्रणव अर्थ का प्रकाश करने वाला है और यह उसी को प्राप्त होता है जिस पर कि भगवान सदाशिव प्रसन्न होते हैं।)

व्यासजी बोले—हे विप्रो! आपका प्रश्न अत्युत्तम है जिसमें प्रणवाक्षर का अर्थ प्रकाशित करने वाले शिव का दुर्लभ ज्ञान निहित है। शिव तत्व का वास्तविक ज्ञान ही प्रणव अर्थ को प्रकट करने वाला है। यह ज्ञान केवल उस शिव भक्त को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ही प्राप्त हो सकता है जिसकी भक्ति से सदाशिव प्रसन्न होते है। शिव भक्ति से राहत जन इसे नही प्राप्त कर सकता। इस विषय मे आपको मैं एक कथा सुनाता हूं। यह पार्वतजी व शिवजी के सवाद में है। एक बार जब दक्षजो की पुत्री सती ने अपने पिता के यज्ञ मे शिव-निन्दा न सहते हुए शरीर त्याग दिया था। तब उसके बाद उसने हिमाचल के घर जन्म लिया उस जन्म मे नारदजी की प्रेरणा से शिवजी को प्राप्त करने के लिए तप किया और तब हिमाचल ने प्रसन्नता से उन दोनों का विवाह कर दिया। इस विवाह से शिव-शिवा ने असीम सुख प्राप्त किया। एक बार जब पार्वती शिवजी के पास शिखर पर बैठी हुई थीं तब उन्होने शिवजी से कहा—हे! नाथ! हे देव! महेश्वरजी! मैं आपकी जन्म जन्मान्तर से पत्नी हूं। पूर्व जन्म में मैं ही सती थी। अत अब आप मुझे मन्त्र आदि के विधान सहित विशुद्ध तत्व का ज्ञान दें। पार्वतीजी के ऐसे विचार जान कर सदाशिव ने कहा—हे देवि! तुम विशुद्ध तत्व का ज्ञान प्राप्त करना चाहती हो तो तुम्हें कैलाश पर्वत चलना होगा वहां मैं तुम्हे विशुद्ध तत्व का ज्ञान प्रदान करूंगा। फिर वहां से कैलाश पर्वत पर पहुंचकर शिवजी ने देवी पार्वतीजी को प्रणव मन्त्र से दीक्षित कर उन्हें शुद्ध आत्मा मे स्थित किया और उसके बाद श्री महादेवजी वहां से उठकर देवधाम में पधारे। जहां पर कि श्री पार्वतीजी को सखिया कल्पवृक्ष के नवीन पुष्पो द्वारा उनको अलंकत कर चुकी थीं। भगवान श्री सदाशिव भगवती पार्वती जी का सुन्दर मुख देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर भगवती पार्वती ने उनसे पूछा—हे देव! मैं यह जानने की इच्छुक हू कि प्रणव कैसे प्रकट हुआ? इसकी कितनी मात्रा है और वेद आदि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

में यह किस प्रकार कहा जाता है? इसके कितने देवता है? वेद आदि की भावना किस प्रकार की जाती है और उसमें कितने प्रकार की क्रिया है? तथा इसकी क्या व्यापकता है? इसकी कितनी कलायें हैं और इसके पवात्मकता क्या है? इसका कितना वाच्य-वाचक का सम्बन्ध है और स्थापन किस प्रकार का है? इसका विषय क्या है? इसका सम्बन्ध क्या है? इसका प्रयोजन क्या है और इसका उपासक उपासना का उपास्य वस्तु, उपासना का फल, अनुष्ठान विधि, पूजा का स्थान, मण्डल उनके ऋषि और न्यास की विधि का क्या क्रम है? हे प्रभो! यदि आपकी मुझ पर कृपा है तो आप मुझ यह सब बतलाइये। यह सब जानने की मुझे बड़ी इच्छा है। भगवती के इस प्रकार कहने पर भगवान सदाशिव ने इस तरह कहा—

तीसरा अध्याय

(भगवान सदाशिव का भगवती पार्वती को बतलाना कि जो मनुष्य प्रणव का अर्थ जान लेता है समझ लो कि वह मेरे ज्ञान को जान गया।)

शिवजी ने कहा हे देवी! अब मैं तुम्हारे द्वारा पूछे गए सब संशयों का निवारण करता हूं तुम ध्यान से सुनो। इस एकाक्षर प्रणव के श्रवण मात्र से जीव-शिव के समान हो जाता है। प्रणव अक्षर को जानने वाला ही मुझे जान सकता है। यह मन्त्र सब मन्त्रों का बीज है। बीज के समान ही सूक्ष्म तथा वृक्ष रूप में स्थूल, वेद से भी प्राचीन, वेद का सार और शिव-स्वरूप है। वह त्रिगुणातीत और कर्ता रूप है। इस प्रणवाक्षर 'ॐ' में शिवजी ही सर्वथा विद्यमान हैं। जो उद्यान के संयोग सब कुछ विराट रूप स्थावर जंगम दिखाई पड़ती है। सब प्रणव की ही माया है। यह एकाक्षर ही ब्रह्म और सब अर्थों का साधन है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

यह ॐ का आकार युक्त प्रणव शिवजी ही नहीं सर्व प्रथम जगत् का निर्माता है। शिव ही प्रणव रूप और प्रणव ही शिवरूप है। वाच्य वाचक इनमें कोई भेद नहीं है। मैं शिव ही ब्रह्मरूप परम-तत्व और एकाक्षर हूं। वाच्य वाचक इसके अभेद को केवल विद्वान ही जान सकते हैं। प्रणव ही सृष्टा रूप है। केवल मुमुक्ष जन ही इस निर्विकार परमेश्वर प्रणवाक्षर को जान सकते हैं। यही महामन्त्र सब मन्त्रों का मूल है। इस ओंकार का ज्ञान मैं काशी में प्राण त्यागने वाले को देता हूं। हे अम्बिके! सर्वप्रथम मैं प्रणवोद्धार का वर्णन करता हूं। इसके ज्ञान मात्र से परम-सिद्धि प्राप्त होती है। इसके लिए सबसे पहले कला का उद्धार करो। आकार की आश्रित निवृत्ति कला का उद्धार करे। फिर इकार में इंधन कला का, मकार में काल कला का, नाद में दण्ड और बिन्दु से ईश्वर कला का उद्धार करे। यह तीन मात्रा और बिंदु नादात्मक का जाप तो महा मुक्तिदायक है। श्री ब्रह्माजी से लेकर सब प्राणियों तक यह प्रणव ही सबका प्राण है और उकार मकार क्रम से यह तीन मात्रायें हैं और फिर यही ॐ हो जाता है और यही ॐ वेदों के आदि में कहा जाता है और हे अम्बिके! वह ओंकारात्मक मैं ही हूं। इस महान बीज के, अकार के, रजोगुण से ब्रह्मा और उकार जो प्रकृति योनि है उससे सत्य-गुण के पालन करने वाले 'हरि' तथा मकार पुरुष बीज तमोगुण से संहार कर्ता शिव उत्पन्न होते हैं और जब इन साक्षात महेश्वर को तिरोभाव होता है, जो कि बिन्दुरूप है और सब पर कृपा करने के हेतु नाद रूप भी हैं। शंकर भक्त जब ध्यान लगावे तो भगवान सदाशिव को मस्तक में धारण करके ध्यान लगावे, क्योंकि भगवान सदाशिव मंगल रूप हैं। यहां सर्वज्ञ, सत्य के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर्ता, सर्वेष्टा, निर्मल, अविनाशी, अद्वैत तथा परब्रह्म है। वही आकार की अपेक्षा में, सबमें व्यापक और उकार आकार के नीचे के भाग में व्याप्त हैं। शिव-भक्त इस प्रकार की भावना करता हुआ इन अकार आदि पांच वर्णों में, ब्रह्म को स्वरूप को देखे। हे महादेवी! सद्य, कामदेव, घोर, पुरुष, ईशान—यह पांचों मेरी ही मूर्तियां हैं।

चौथा अध्याय

(भगवान सदाशिव का भगवती पार्वती से कहना कि यती के लिए उचित है कि ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपने उस गुरु का ध्यान करे जोकि सहस्र दल वाले श्वेत कमल में बैठा हुआ है। उनकी पूजा करे। उनको नमस्कार करे। गुरु की आज्ञा से जितेन्द्रिय होकर आसन पर बैठकर प्राणायाम करे।)

शिवजी ने कहा—हे देवी! अब मैं तुमसे सन्यास और आह्निक कर्म का वर्णन करता हूं जो सम्प्रदाय का अनुरोध है। यती का कर्तव्य है कि वह सर्वप्रथम प्रातः काल उठे और उठकर उस गुरु का स्मरण करे जो सहस्र दल वाले कमल में स्थित हैं। इस प्रकार भक्ति भावना से उनका पूजन करे व नमस्कार करे और जो भी कुछ कार्य करे ऐसा विचार कर करे कि मैं जो कुछ कर रहा हूं वह आपके ही बल व प्रेरणा का फल है। हे गुरुदेव! आपकी पूजा है। गुरु से इस प्रकार कह कर आज्ञा लेकर जितेन्द्रिय हो आसन पर बैठकर प्राणायाम करे। मूल से लेकर ब्रह्मभाव तक के षड्चक्रों का स्मरण करे जिसमें अनन्त तेज निहित है। फिर उसके मध्य में वह मुझ सच्चिदानन्द निर्गुण ब्रह्म और अनामय रुद्र शिव का चिन्तन करे और उसके बाद टहलने के लिए दूर तक चला जावे और उसके बाद नैमित्तिक कर्मों को करे। फिर स्नान आदि करके शुद्ध होकर अपने गुरु से सारी विधियां सीखे और पंचाक्षरी मन्त्र का उच्चारण करता

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हुआ प्राणायाम करे। ओंकार रूपी ईश्वर का मन में ध्यान करना चाहिए और तीन अर्घ्य देने चाहिये। उसके बाद तीन सौ आठ बार मन्त्र जप कर बारह बार तर्पण करना चाहिए। और आचमन करके तीन बार प्राणायाम करना चाहिए। मौन होकर ऋषियों का स्मरण करना चाहिए। जब पूजा के मण्डप में जाना हो तो मौन होकर, आचमन करके जाना चाहिए। जब पूजा-स्थान से बाहर निकलना हो तो पहले दायां पैर उठाना चाहिए।

पांचवां अध्याय

(भगवान सदाशिव का भगवती पार्वती को बतलाना कि यती को चाहिए कि पृथ्वी को लीप कर चिकनी बनावे और चार वस्त्र लेकर चौकों की स्थापना करे। ताल पत्र लेकर उसके समान लम्बे और चौड़े तेरह सम भाग करके उसे लेकर, उसी चतुर्थ मण्डल में पश्चिम की ओर मुंह करके बैठे इत्यादि-इत्यादि।)

ईश्वर बोले—तब पृथ्वी को लीपकर दर्पण के समान शुद्ध व चिकनी बना ले और हाथ भरके चार वस्त्र ग्रहण करके चौकों के स्थान की कल्पना करे तथा ताल पत्र लेकर उसके बराबर आयत के तेरह भाग करके उस चतुर्थ मण्डल में पश्चिम की ओर मुख करके आसीन हो। पूर्व की ओर से सूत्र लेकर दक्षिण और उत्तर के क्रम से चौदह सूत्र बिछाये। जिससे एक सौ उनहत्तर कोण हो जाएंगे। जिनके बीच की कर्णिका के आठ कोष्ठ के बाहर उस समय काष्ठ का दलाष्टक होता है। इस प्रकार सभी श्वेत वर्ण के दल की कल्पना करके उसे पीला व लाल भी रंगे। हे सुरेश्वरी! तब इसके बाद उसकी दल सन्धि को भी लाल और काली करे। कर्णिका में प्रणव अर्थ को प्रकाशित करने वाला मन्त्र लिखकर उसके नीचे ऊपर व पार्श्व में श्रीकंठ लिखे। उसके ऊपर अमरेश, मध्य में महाकाल के सिर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के निकट दण्ड लिखकर फिर ईश्वर लिखना चाहिए। फिर सिंहासन को श्याम रंग से तथा श्रीकण्ठ को पीले रंग से चित्रित करके अमरेश को लाल और महाकाल को श्याम वर्णन से चिन्हित करे। इसी प्रकार दण्ड को धूम्र वर्ण व ईश्वर को धवल वर्ण से चित्रित करे। इस प्रकार का यन्त्र 'संध्योजा' मन्त्र से आक्षदान करे। तब इसके बाद उठे हुए नाद से ईशान को भेद कर अग्ने आदि के क्रम से उसी बाहरी पंक्ति का ग्रहण करे। उसके चार कोणों को श्वेत और लाल धातु से रंगकर चार द्वार बनाए और इधर-उधर के कोष्ठ पीले रंग से भर दे। दक्षिण के कोष्ठ के आगे आठ दल का कमल चित्रित करे। इस विधि के अनुसार पृथ्वी में जैसा गुरु एवं आचार्य बताएं सब दिशा मंडलों को चित्रित करके सूर्य की पूजा करें।

छटवां अध्याय

(सन्यास पद्धति का न्यास)

ईश्वर बोले—इस प्रकार कमल की रचना करके शक्ति कमल की रचना करे तथा चतुर्थी विभक्ति के साथ नमः का प्रयोग करके 'शक्ति कमलाय नमः' आदि का उच्चारण कर 'अग्नेक्रति भस्म आदि मन्त्रों से वस्तुओं को ग्रहण कर गुरु को प्रणाम करे। इसके पश्चात बाहर की तरफ त्रिकोण व्रत क्रम से चार बार प्रणाम करके ओं३म् अर्चनम्' मन्त्र से पीठ को धारण करके शंख की पूजा करनी चाहिए। प्रणव से शुद्ध करके सुगन्धित जल ग्रहण कर सात बार गन्ध पुष्प धूप आदि से प्रणव अक्षर का पूजन कर धेनु मद्रा दिखाकर शंख मुद्रा बनाए। इस प्रकार आत्म शुद्धि कर। तब तीन बार प्राणायाम करके ऋषि आदि का स्मरण कर फिर अगन्यास कर अस्त्र मन्त्र से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अग्नि कोण के कमल का पोषण करे। इस दक्षिण कमल का पूजन श्वेत पदार्थों से ही करे। इस प्रकार ऊपर नीचे व चारों ओर से पूजा करे। इसके बाद सौर नामक योग पीठ का पूजन करे और मूल मन्त्र से सिंहासन पर प्राण रोक कर आसन लगा कर बैठे व पिंगला नाड़ी के प्रवाह से शक्ति को उठाए। जहां पार्वती सहित भगवान् देव रुद्राक्ष की माला पहिने पाश, खट्वांग, कपाल, अंकुश, कमल और शंख धारण किए, चार मुख और बाहर नेत्रों से शोभित स्थित है। इसके बाद प्रकाश सहित सूर्य का आवाहन करता हूं इस प्रकार उच्चारण नमः लगाकर करे तथा मुद्रादिक की स्थापना करके मुद्रा दिखावे त ा 'हां हीं हूं' इन मन्त्रों से अंगन्यास करके तीन बार पूजे। कमल के केशरों में और छः अंगों में अग्नि, ईश्वर, राक्षस और वायु आदि की चारों मूर्तियों को आवरण में पूजे। पूर्व से उत्तर तक दल के मूलकों आदित्य, भास्कर, भानु, रवि को इन चारों नाम से पूजे तथा सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु, महेश और ईशान को तृतीय आवरण में पूजे। फिर भस्म लगाकर शिव भक्ति के लिए अंगन्यास कर नम्रता पूर्वक गुरु की पंचोपचार पूजा करके 'ओं३म् श्री गुरुवे नमः' कहते हुए नमस्कार करे। इसी प्रकार 'ओं३म् ब्रह्मात्मने नमः' के क्रम से ईशानादि का न्यास कर पंचकला क्रम से सद्योजात की कल्पना करें। इस प्रकार भक्ति पूर्वक प्रणवन्यास करके परमात्मा को बाधक हंसन्यास करें।

सातवां अध्याय

(भगवान सदाशिव का ध्यान पूर्वक पूजन और ध्यान।)

शिवजी ने कहा—इस प्रकार अपनी बांई तरफ चौकोण मंडल की रचना करके 'ओं३म्' अर्चन करे और उसे अस्त्रमन्त्र

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से सुशोभित करे। उसके आधार पर भी प्रणवाक्षर का ही पूजन करे। चन्दनादि तथा सुगन्धित जल से उसे पूर्ण करे। धेनु मुद्रा दिखाए। फिर उसके आगे चौकोण शंख मुद्रा अर्धचन्द्र और उसके पश्चात् त्रिकोण मुद्रा दिखाए। षड् मुद्र बनाए। उसमें पुष्प गन्ध आदि के साथ ओंकार का पूजन करे तथा उसमें पवित्र जल भरे। तत्पश्चात् गुरु के कथनानुसार गुरु प्रतिमा की कल्पना करे तथा 'गुरुभ्यः नमः' का उच्चारण करते हुए गुरु की प्रदक्षिणा करके उनका स्मरण करे। 'गणनांत्वा' आदि मन्त्रों के साथ मूर्ति की स्थापना करके देवता का आवाहन करे। तथा एकाग्रचित्त होकर ध्यान लगाए। षोडषोपचार से विधि-पूर्वक गणेश जी का पूजन करे उन्हें नमस्कार आदि से प्रसन्न करे। स्कन्दजी का भी पूजन करके आकाश मंडल में सूर्य चंद्रमा आदि का ध्यान करे। तदनन्तर सब आसनों पर कमल के श्वेत पुष्प चढ़ाए। आधार शक्ति से आरम्भ कर शुद्ध विद्या से आसन पर्यन्त उद्धार सहित चतुर्थी विभक्ति के अन्त में नमः लगाकर मन्त्र का उच्चारण करता हुआ विधि पूर्वक ईशानादि पंचब्रह्म का पूजन करे। फिर चैतन्यता पूर्वक मौन भाव से जगदम्बा गौरी जी की पूजा करे तथा मुद्रा दिखाए। हे देवी! जो जन इस विधि से मेरी व तुम्हारी पूजा तथा उपासना तथा प्रणवाक्षर का पूजन करता है, वह सिद्धि को प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए।

आठवां अध्याय

(वरण-पूजा)

ईश्वर ने कहा—हे देवी! इस तरह से शंकर भक्त को उचित है कि वह सबसे पहिले गणेश एवं कार्तिकेय की पूजा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करे। फिर वेद के आदि स्वरूप महेश्वर का आवाहन करे। पूर्व दिशा में स्थित होकर कमल की कर्णिका के ऊपर चारों ओर से पूजन करे और रुद्र का पूजन करे और कर्णिका के दलों में आवाहन करे। शिव का पूर्व दिशा में, हर का दक्षिण दिशा में, शिव का उत्तर दिशा में, भव का पश्चिम दिशा में पूजन करे। फिर ओं रां, ओं पा, ओं ज्ञा, ओं ला, ओं अर्पण पूर्वक अं, ओं, वां, ओं, सां और वेद के आदि में ओं श्री बीजं-इन दस बीजों से लोकपालों को पूजे। ईशान देव को दक्षिण भाग में पूजे। फिर ब्रह्मा, विष्णु की सविधि षोडशोपचार से पूजा करे तथा पंचम आवरण में देवेशिका का आवाहन करे। फिर देवेश की अर्चना करनी चाहिए और ओंकार सदाशिव का स्मरण करके गन्धादि उपचारों द्वारा शंकर भगवान का पूजन करके नैवेद्य चढ़ाना चाहिए और आचमनीय अर्घ्य आदि प्रदान कर भोजन की सामग्री और ताम्बूल निवेदन करना चाहिए। उसके बाद पूजा को विसर्जित करके देवो देव का ध्यान करके एक सौ आठ मन्त्र जपने चाहिए। फिर उठकर पुष्पाञ्जलि लेनी चाहिए। और उपनिषद की नारायणीय इन छः ऋचाओं का जाप "यो वेदादौ स्वरप्रोक्तः" तक करना चाहिए। फिर पुष्पांजलि अर्पित करके तीन प्रदक्षिणा करे और परम भक्ति से साष्टांग प्रणाम करना चाहिए और इस प्रकार प्रदक्षिणा करते हुए अनेकों प्रणाम करना चाहिए तथा आसन पर बैठकर भगवान सदाशिव के नाम का उच्चारण करके कहना चाहिए-हे भगवान सदाशिव! यह सब कुछ मैंने आप की ही आराधना की है। ऐसा कहकर शंख, जल और पुष्पों को चढ़ाना चाहिए और पूजन समाप्त कर देना चाहिए। फिर अर्घ्य सहित आठ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बार भगवान सदाशिव का नाम जपना चाहिए। हे कल्याणी! इसके आगे भी मैं भक्ति के सम्बन्ध में कहूंगा। ध्यानपूर्वक सुनो।

नवां अध्याय

(भगवान सदाशिव के आठ नामों—शिव, महेश्वर, रुद्र, विष्णु, पितामह, संसार-वैद्य, सर्वज्ञ और परमात्मा की विशेषता।)

ईश्वर बोले—हे देवी! भगवान सदाशिव के यह आठ नाम—शिव, महेश्वर, रुद्र, पितामह, संसार वैद्य, सर्वज्ञ और परमात्मा मुख्य हैं और प्रतिपादक हैं, फिर भी यह तीन नाम शिव, शंकर और महादेव शिवरूप हैं। उपाधियुक्त होने से भगवान सदाशिव अनेकों नाम धारण करते हैं। उन महादेव को शिव और गुणों का आधार होने पर उन ईश्वर को शिव तत्वों से परे प्रकृति से पच्चीसवां पुरुष कहते हैं। तत्वों वाच्य वाचक के भाव से वेद आदि में ओंकार कहते हैं और जो वेद से जाना जाता है आत्मा स्वरूप वेदान्त में प्रतिष्ठित और पर से भी परे है, वही परमेश्वर कहलाता है। तथा पुरुष और प्रकृति जिनके अधीन हैं और जो त्रिगुण तत्व की अविनाशिनी माया है वही प्रकृति तथा मायी महेश्वर है। सुनो! महेश्वर की प्राप्ति होने पर ही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त होता है। श्री महेश्वर का नाम दुखों को दूर कर देने के कारण ही पड़ा है और वही परम कारक शिव हैं। ऐसा सुनकर श्री ब्रह्माजी बोले—जब इस तरह भगवान सदाशिव ने कहा तो भगवती पार्वतीजी ने उनकी अनेकों स्तोत्रों द्वारा स्तुति की और भगवान सदाशिवजी के चरणों में नतमस्तक होकर बार-बार प्रणाम किया। वह अपने मन में बड़ी हर्षित हुईं। हे ब्राह्मणो! यह प्रणव अर्थ का प्रकाश

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करने वाला गुह्य विधान मैंने आपके सम्मुख कहा है जो कि सदा-सदैव दुःखों का नाश करने वाला है। सूतजी ने कहा—हे मुनिवृन्द! जब मुनि शार्दूल पराशर पुत्र भगवान श्री वेदव्यास जी कैलाश पर्वत को चले गए और मुनीश्वरों ने अपने अनुष्ठान किये हुए यज्ञ के अन्त में भगवान सदाशिव की परम भक्ति से पूजा की और उनका ध्यान किया। यह पावन कथा सबसे पहिले स्कन्द ने नन्दी से और नन्दी ने सनत्कुमारजी से और सनत्कुमार जी ने भगवान श्री वेदव्यासजी से कही थी। भगवान श्री वेदव्यासजी से कथा मैंने सुनी थी और अब मैंने आप सबको सुनाई है। इतना कहने के बाद पुराणों के ज्ञाता श्री सूतजी तीर्थ यात्रा करने के लिए चले गए और सभी मुनीश्वर भगवान सदाशिव का ध्यान करने तथा मुक्ति प्राप्त करने के लिए काशीजी को चले गए।

दसवां अध्याय

(मुनीश्वरों को सूतजी का उपदेश)

व्यासजी बोले—सूतजी के चले जाने के उपरान्त अन्य ऋषि-मुनियों को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और वे एक-दूसरे से कहने लगे कि सूतजी ने पहिले वर्णन किया था उसके एक प्रश्न को तो हमने भुला ही दिया। वामदेव का वह मत अत्यन्त कठिन तथा अबोध्य है। न जाने वह शुभ घड़ी अब कब आयेगी जब हमें उस श्रेष्ठ पुरुष के दर्शन होंगे। दर्शनोपरान्त उनसे इस विषय में पुनः पूछेंगे। इस प्रकार ध्यान चिंतन करते हुए हृदय में व्यासजी का स्मरण करके उनके दर्शनाभिलाषी होकर वहीं पर स्थित रहे। एक संवत्सर व्यतीत होने के पश्चात सूत जी का पुनः काशी में आगमन हुआ। सूतजी को आया देख

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सभी ऋषियों ने आनन्दित हृदय से सूतजी का अभिनन्दन कर बड़ा स्वागत किया। उन मुनियों द्वारा पूजित होकर सूतजी ने आसन ग्रहण किया और बोले—हे श्रेष्ठ मुनियो! तुम सब धन्य हो। तुम्हारे लिए जिस कारण से मैं यहां आया हूं वह वृत्तान्त सुनो। जब मैं तुमसे प्रणव का अर्थ एवं उपदेश देने के उपरान्त तीर्थ यात्रा करने गया तो दक्षिण सागर के तट पर पहुंचकर मैंने कुमारी शिवा देवी की वन्दना आराधना की। तदुपरान्त कालहस्तिशैल की ओर प्रस्थान किया। वहां पहुंचकर सुवर्ण मुख में मज्जन किया। ऋषियों द्वारा सन्तुष्ट व तृप्त सदाशिव शंकर का स्मरण भजन कर चन्द्रमा की आभा को भी लज्जित करने वाले, जिनका मुख पश्चिम की ओर है तथा जो पांच शीश धारण किए हैं, ऐसे अनुपम एवं अद्भुत कालहस्तिशैल को तृप्त किया। इनका एक ही बार दर्शन करने से प्राणी के सारे पापों की कालिमा धुल जाती है तथा मनुष्य पापों से विनिमुक्त हो जाता है। ऐसे अवर्णनीय कालहस्ति की पूजा कर मैंने उनके दक्षिण भाग में स्थित मां पार्वती का भी पूजन किया। तत्पश्चात एक सहस्र एक सौ एक बार पंचाक्षरी विद्या का जप किया और प्रदक्षिणा कर उन्हें नमस्कार किया। इस प्रकार नित्य प्रति उनकी प्रदक्षिणा करते हुए मैं कालहस्ति पर ही निवास करने लगा हूं। हे मुनियो! मुझे वहां पर लगभग चार माह व्यतीत होने वाले हैं। तत्पश्चात मुझे ज्ञानरूपिणी प्रसून कालिका महादेवी का प्रसाद प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त गुरु की आज्ञा से वहां से उठकर सदाशिव शंकर भगवान को श्रद्धापूर्वक नमस्कार कर उनकी प्रदक्षिणा करके पदयात्रा करते हुए चालीस दिनों में यहां पहुंचा हूं। हे श्रेष्ठ मुनियो! कृपया यह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बताओ कि अब मैं क्या करूं। सूतजी के ऐसे वचन सुनकर ऋषियों के हृदय में आनन्द का सागर उद्वेलित हो उठा और वे मन-ही-मन हर्षित हो उनसे कहने लगे–

ग्यारहवां अध्याय

(वामदेव ब्रह्म निरूपण)

ऋषि बोले–हे धन्यभाग सूतजी! आप हमारे अत्यन्त पूज्य हैं। हम वामदेव के मत को जानने के अत्याधिक इच्छुक हैं। अतः कृपा करके हमें बताइये कि वामदेव का मत क्या है। हमारी यह जानने की इच्छा अत्याधिक बलवती है। उनकी ऐसी इच्छा सुनकर सूतजी अत्यन्त गम्भीर वाणी में बोले–हे श्रेष्ठ मुनियो! आप सबका कल्याण हो क्योंकि अपनी मति सदा सर्वदा शिव भक्ति में ही रमी रहती है। पहले रूपयन्तर कल्प में वामदेव नाम के मुनि हुए जो गर्भ से उत्पन्न होते ही स्वयं शिव ज्ञान को जानने वाले, देव तथा असुर और मनुष्य सबके जन्म कर्म की जानकार थे। सारांशतः वे सर्वज्ञ थे। वे वामदेव मुनि समस्त शरीर पर भभूति रमाने वाले, जटाओं वाले केश धारण करे हुए, इच्छाओं से परे इन्द्र रहित थे तथा अहंकार तो उनसे कोसों दूर था, अर्थात अभिमान तो उन्हें छू भी नहीं सकता था। वे सदा दिगम्बर रहते थे, महान ज्ञानी थे। शिवस्वरूप अपने चरणों से पृथ्वी का कालुष्य मिटाकर, उसे पवित्र करते हुए यत्रतत्र विचरण किया करते थे और परब्रह्म परमेश्वर के चरणों में ध्यान लगाये रहते थे। उन्होंने एक बार मेरु पर्वत के दक्षिण में कुमार शिखर पर जाकर स्कन्ध जी से भेंट की। वहां स्कन्ध नामक एक सरोवर है जिसका जल अत्यन्त निर्मल, शीतल एवं स्वादिष्ट है। उस समय शिखर के ऊपर विराजमान, मुनियों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

द्वारा सेवित सदाशिव शंकर भगवान के पुत्र स्कन्द कुमार जो सूर्य के समान उदित प्रतीत होते थे, चतुर्भुज, सौम्य शरीर वाले मुकुट आदि से सुशोभित तथा दोनों ओर रत्नभूत दो शक्तियां उपासना कर रही थीं और जो मोर पर बैठे हुए थे, को देखकर वामदेव ने परम भक्ति से अत्यन्त मनोयोग पूर्वक उनकी पूजा अर्चना की और हाथ जोड़कर दिव्य स्त्रोत से उनकी स्तुति की। तदुपरान्त महेश्वर पुत्र स्कन्द जी प्रसन्न होकर बोले—हे मुनि! मैं तुम्हारी पूजा से अत्यन्त प्रसन्न हूं। तुमने अत्यन्त प्रेम तथा भक्ति से मेरी जो स्तुति की है उसके लिए मैं तुम्हारा क्या कल्याण करूं क्योंकि आप जैसे परिपूर्ण, निस्पृह मुनि को इस संसार की कोई वस्तु वांछनीय प्रतीत नहीं होती है फिर भी आप जैसे लोग लोक कल्याण के लिए इस पृथ्वी पर विचरण करते हैं। हे वामदेव! तुम्हारी जो इच्छा हो वह हम से कहो। तब स्कन्द जी के ऐसे वचन सुनकर वामदेव हर्षित हो उठे तथा आकाश के समान गम्भीर वाणी में बोले—हे प्रभो! आप सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वशक्तिमान्, अमर, अभय, नित्य तथा पवित्र हैं। हम जैसे अधम और तुच्छ जीव आपका गुणगान करने में सर्वथा असमर्थ हैं। यह तो आपकी कृपा है जो आप ऐसा कहते हैं। हे प्रभो! अब मैं आपसे जो पूछूं उसे आप क्षमा कीजिएगा। मेरा यह अतिक्रम है। प्रणव ही साक्षात् परमेश्वर वही देव पशुपति वाच्य है जो कि पशुओं का पाप मोचक है। यदि सदाशिव की प्रणव द्वारा उपासना करके उन्हें बुलाया जाये तो वे सब पापों को हर लेते हैं। इस प्रकार प्रणवोपासना ही पाप के कालुष्य को मिटाने वाली है अतः प्रणव की ही वाचकता स्वतः सिद्ध हुई और ओंकार ही सर्वस्वरूप है। इस प्रकार सबकी श्रुति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ही ब्रह्मस्वरूप है। हे देवेश! आपको बार-बार प्रणाम है। हे स्वामी! आप ही पतितों के स्वामी तथा सर्वशक्ति सम्पन्न एवं परिपूर्ण हैं। हे सेनापते! हमारे विचार से इस ब्रह्मांड में शिव के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है। सर्व व्यापक, कल्याणकर्ता तथा मंगलरूप वाले महेश्वर ही सब रूप वाले हैं। हमने सुना है कि समष्टि के भाव से यह सब कुछ प्रणवार्थ ही है।

बारहवां अध्याय

(सन्यास विधि)

स्कन्दजी बोले—हे धन्य भाग वामदेव जी! आप धन्य हैं। तुम सर्वश्रेष्ठ शिव भक्त हो और शिव ज्ञान जानने वालों में से सर्वोच्च हो। तीनों लोकों में से तुम्हें कुछ भी अविदित नहीं है। तुम तीनों लोकों के ज्ञाता हो। फिर मैं सर्वहित को दृष्टि में रखकर मैं तुमसे कुछ कहता हूं उसे तुम ध्यान से सुनो। इस लोक में प्राणी अनेक शास्त्रों के मोह जाल के बन्धन में बंधते जा रहे हैं जिसके फलस्वरूप वे उस अनन्त सर्वेश्वर, सर्व-व्यापक, सर्वान्तर्यामी, सृष्टिकर्ता की विचित्र माया को नहीं जान पाते हैं। सब कर्मकाण्ड करने के बाद भी वे उससे अनभिज्ञ ही बने रहते हैं। अतः प्रणव ही साक्षात परमेश्वर है जिसे शास्त्रों के बन्धन में बंधे मोहित प्राणी नहीं जान पाते। इस प्रकार वही देव सगुण निर्गुण और ब्रह्म इन तीनों को प्रकट करने वाला है। प्रणव का अर्थ तो साक्षात शिव ने स्वयं किया है और वेद, पुराण, स्मृति और शास्त्र तथा आगमों ने भी यही कहा है। इसे प्राप्त कर विद्वान कभी भयभीत नहीं होता है। ब्रह्मा, रुद्र तथा इन्द्र सहित समस्त जगत को वही उत्पन्न करते हैं। वह स्वयं कभी कहीं से भी उत्पन्न नहीं होता है क्योंकि वह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आदि अनन्त तथा अजन्मा है। उसमें सूर्य चन्द्र तथा विद्युत का कोई प्रकाश नहीं है तथा उसकी आभा से ही समस्त जगत प्रकाशित होता है। यह महेश्वर अत्याधिक ऐश्वर्यशाली है उसे सब कुछ प्राप्त है वही मुमुक्षुओं के ध्यान की वस्तु है वही सर्व-व्यापक, सर्वशक्तिमान, निर्गुण, निष्कल तथा शिवस्वरूप है। वह स्थूल से स्थूल तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म है। इन सबसे परे उसके तीन रूप और हैं वही सब देवाधिदेव, सनातन तथा ज्ञान क्रिया के स्वभाव वाले हैं और परमेश्वर भी कहे जाते हैं। वही देव-पंचक और पंचक भी हैं। उनका हृदय सदा सर्वदा स्फटिक मणि के समान, पवित्र, शुद्ध, निर्मल तथा शीतल रहता है। उनके पांच मुख, दस भुजायें तथा पन्द्रह नेत्र हैं। वह जो देव पुरुष मुकुट से सुशोभित, पुरातन पुरुष, कोमल हृदय वाला वामदेव रहस्यात्मक तथा प्रदेशवान है। वह वामदेव सद्यवान, तन्मूर्ति, साक्षात, सम्पूर्ण, निष्कल तथा मूर्ति यह छः प्रकार का शरीर धारण करने वाले हैं। शब्द की शक्तियों से भी वे स्फुटित होते हैं, सबके हृदयों में विराजमान रहते हैं तथा अपनी इच्छित शक्ति के अनुसार वाम भाग में शोभायमान हैं। जिनके मंत्रों के छः प्रकार के अर्थ मन्वादि से होते हैं तथा उपासना मार्गी समष्टि व्यष्टि भाव वाले और प्रणवात्मक अर्थ वाले हैं उनका अर्थ मैं तुमसे कहूंगा, ध्यानपूर्वक सुनो। सर्व प्रथम उपदेश का क्रम कहूंगा। हे मुनियो, लोक में वर्ण विख्यात हैं। इनमें से तीन के लिए वेदपाठ स्वीकार किया गया है। शूद्र वर्ण वाले वेद के पठन-पाठन के अधिकारी नहीं हैं! शूद्र का कार्य केवल सेवा करना कहा गया है। शेष तीन वर्ण अपने-अपने धर्मों का आचरण करें। इन्हें तो वेद पुराणों का पठन-पाठन कर धर्म का ही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अनुष्ठान करना चाहिए तथा कर्म काण्ड में रत रहना चाहिए, अन्य नहीं। इन्हें इसी से सिद्धि की प्राप्ति होगी। वेदमार्ग के बताने वाले तथा जिनके द्वारा लोक कल्याण हेतु वेदों की रचना की गई है उनकी यही आज्ञा है, ऐसा ही आदेश है। वेदों तथा पुराणों में बताये मार्ग के अनुसार वर्णाश्रम धर्म के नियमों का पालन करना चाहिए तथा वर्ण व्यवस्था के आचारों के द्वारा वह परमेश्वर की पूर्ण उपासना करे। इस पूजा के द्वारा कितने ही मुनियों को सर्वश्रेष्ठ सायुज्य भक्ति की प्राप्ति हुई, उन्हें मोक्ष मिल गया और वे स्वयं ब्रह्ममय ही हो गए।

तेरहवां अध्याय

स्कन्दजी बोले—ऐसा यती मध्यान्ह में प्रसन्नतापूर्वक मज्जन करके, फल, फूल, पुष्प तथा अक्षत आदि पूजा की सामग्रियों को एकत्रित करके पहले सकल संसार में पूजनीय शिवपुत्र गणेश की विधिपूर्वक पूजा करे, ध्यानपूर्वक पूर्णाहुति द्वारा हवन समाप्त करके गायत्री के जाप द्वारा अपराह्न में इस कर्म को समाप्त करे। इसके पश्चात पुनः सायंकाल में स्नानोपरान्त संध्याकाल की नियमपूर्वक संध्या करे तथा सद्योजात के पांच मन्त्रों से हवन करे। अन्त में उमा सहित भगवान शिव का अग्नि में ध्यान करे तत्पश्चात सावित्री के प्रथम पाद का तथा गायत्री के दूसरे पाद का उच्चारण करे पुनः तीन पाद का उच्चारण करे और सावित्री प्रवेशयामि ऐसा कर "भूर्भुवः सुवरोत्रः" ऐसा कहते हुए सदाशिव शंकर भगवान का स्मरण करे जो पांच मुख, दस भुजा तथा पन्द्रह नेत्रों के स्वामी हैं, जिनका शरीर अत्यन्त उज्जवल है तथा उन शंकर भगवान की त्रिलोक को उत्पन्न करने वाली त्रिगुण और निर्गुणमयी शिवा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

धर्म पत्नी हैं। ऐसा विचार करके बुद्धिमान पुरुष उस गायत्री देवी का पूजन करें उन्हीं का ही जप करें क्योंकि वह देवी त्रिपदा ब्राह्मणत्व का प्रदान करने वाली तथा अजा है। वही व्यक्तियों से उत्पन्न, उन्हीं में लीन होने वाली और वेद की आदि प्रणव और शिव पात्री है। वह गायत्री वेद मन्त्रों में सर्व श्रेष्ठ हैं तथा सब मन्त्रों का बीजरूप हैं, मूल हैं। प्रणव ही शिव और शिव ही प्रणव है। इसी मन्त्र द्वारा काशी में शरीर त्याग करते समय उपदेश देकर भगवान शिव उन्हें आवागमन के चक्र से मुक्त करते हैं। इस कारण उस परम कल्याणकारी देव श्रेष्ठ पुरुष को यति श्रेष्ठ मान कर हृदय कमल में धारण कर पूजें।

चौदहवां अध्याय

(प्रणव रूप भगवान सदाशिव)

वामदेव ने कहा—हे भगवन्! देवों के स्वामी सदाशिव के पुत्र! हे प्रणतारति भंजन! यह षड् प्रकार का अर्थ ज्ञान क्या है? यह षडार्थ कौन-कौन से हैं उनका ज्ञान क्या और कैसे होता है इसका प्रतिपादक कौन है। यह रहस्यमय ज्ञान कैसा है जिसके ज्ञान के बिना जीव शास्त्रों से विमोहित हो रहे हैं और मैं भी शिवजी की माया से मोहित हो रहा हूं। मैं आपकी शरण में हूं। कृपया आप मुझे उस ज्ञान के विषय में बताएं जिससे मेरा मोह दूर हो क्योंकि शिव पद अद्वैत है।

तब मुनीश्वरों की इस बात को सुनकर शक्तिधारी प्रभु शास्त्र विरोधकों के लिये यह महात्रास जनक वचन कहे—हे मुनि शार्दूल! जो कुछ आपने पूछा है वह समस्त प्रणवार्थ परि ज्ञान रूप है। मैं आपसे सादर कहता हूं कि जो समष्टि व्यष्टि के भाव से सर्वथा ही महेश्वर का है। हे सुव्रत! अब मैं आपके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सन्मुख छः प्रकार के अर्थों को रक्खूंगा। जिससे कि एक ही का परिज्ञान होता है। पहला मन्त्र रूप, दूसरा मन्त्र भाव, तीसरा देवार्थ, चौथा प्रपंचार्थ, पांचवाँ गुरु का दिखाया हुआ अर्थ, छटवाँ शिष्य आत्मानुरूप कार्य। यही छः प्रकार के अर्थ हैं जो कि पहले भी कहे जा चुके हैं। हे मुनियो में श्रेष्ठ! आप पहले उस मन्त्र स्वरूप को सुनिये—विज्ञानपात्र से मनुष्य ज्ञानी हो जाता है। पहला स्वर अकार है जिसके बाद पांचवां उकार पड़ता है और इसी प्रकार पवर्ग का अन्त मकार, यही बिन्दु और नाद है। इन पांचों को वेद में ओंकार कहा गया है और यही समष्टि रूप सबकी समष्टि है; और अकार, उकार, मकार यह बिन्दु सबके आदि में हैं। यही व्यष्टि रूप से सिद्ध हो ओंकार शिव का वाचक है। इन्हीं पांचों की समष्टि और बिन्दु आदि चार का समष्टि-कला प्रणव शिव का वाचक है और शिव जी उपदेश मार्ग से जो उसका विचार है वही मन्त्र रूप है। इसी को प्रणवराज कहते हैं, जो कि भगवान सदाशिव का ही रूप है।

पन्द्रहवां अध्याय

(उपासना-मूर्ति-वर्णन)

ईश्वर बोले—अब इसके बाद सृष्टि की पद्धति कहता हूं जो महेशादि चतुष्टय और सदाशिव कहलाती है। वही समष्टि प्रभु आकाश के अधिपति हैं और उन्हीं का महेशादि चार रूप इसी की व्यष्टि है जिन सदाशिव के सहस्रांश से महेश्वर की उत्पत्ति होती है और जो पुरुष अनन्त रूप होने से ही वायु के भी अधिपति हैं जिनके वाम में मायाशक्ति है और जो सब क्रियाओं के अधिपति हैं तथा जिनकी ईश्वरादि चतुष्टय व्यष्टि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

रूप है। ईश्वर, विश्वेश्वर, परमेश और सर्वेश्वर। यही श्रेष्ठ तिरोभाव चक्र है। यह तिरोभाव भी दो प्रकार का होता है। एक रुद्रादि गोचर दूसरा जीव समूह का शरीर रूप। यहां पाप पुण्य रूप शरीर जब तक स्थित है, तब तक वह रहता हैं और इसमें कर्म की सहायता है किन्तु यह एक ही होता है उसी एक में अनुग्रह करने की सामर्थ्य है और वही विभु भी है जिसमें तिरोभाव और कर्म की साम्यता है। उसी को साक्षात परब्रह्म, निर्विकल्प तथा निरामय इस प्रकार से इश्वरादि चार देवता कहे हैं। इसमें तिरोभाव का चक्र शान्ति कलामय है और इसी को उत्तम पद तथा महेश्वर से अधिष्ठित कहा जाता है। महेश्वर के चरणों की सेवा करने वाले इसी पद को प्राप्त होते हैं। महेश्वर के हजारवें अंश से रुद्र की उत्पत्ति होती है जो अघोर शरीर के होते हैं और जो समस्त तेज तत्व के स्वामी हैं तथा जो प्रभु अपने वाम भाग में गौरा शक्ति धारण किये और संहार करने वाले हैं। इन्हीं व्यष्टि रूप शिव, हर, मृड, भव ये चार शिवादि अद्भुत चक्र विदित हैं। सप्तावरण से रक्षित हैं और जो जिसके नीचे ऊपर दस गुना जल व्याप्त है इसी हिरण्यमय स्वरूप जल के मध्य में जो रहता है। उसी को श्रुति ने जल मध्य सायी कहा है। जिससे अपने अनुग्रह, तिरोभाव, संहार स्थिति और सृष्टि से युक्त हो निरन्तर एक शक्ति युक्त रहकर शिवजी लीला करते रहते हैं। हे मुनियो! अधिक कहने से क्या? मैं सार कहता हूं यही निश्चय जानो कि शिवजी ही सर्व शक्तिमान हैं।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सोलहवां अध्याय

(शिव-तत्व-विवेचन)

सूतजी बोले—जब इस प्रकार गुरु ने वेदार्थ उपदेश किया तो उसे सुनकर मुनिश्रेष्ठ को परमात्मा में सन्देह हुआ। तब उन्होंने कहा कि हे स्वामिन्! आपके मुख कमल से जो मैंने ऊँकार रूप अमृत का पान किया है उससे अब मेरा ज्ञान दृढ़ हो गया है और इस विषय में कुछ भी सन्देह न रहा। फिर भी मैं आपसे यह थोड़ा प्रश्न करता हूं कि सदाशिव से लेकर कीर्ति पर्यन्त यह जो जगत रूप की स्थिति है और जिसमें सर्वत्र स्त्री पुरुष रूप से दीखती है और जिसमें कुछ सन्देह नहीं है, इस प्रकार के रूपवान जगत के लिए वही सनातनदेव कारण है यही स्त्री पुरुष नपुंसक रूप और कोई है अथवा उसका क्या रूप है? विद्वान और शास्त्र को मोहित होकर उसे अनेक प्रकार से कहते हैं। परन्तु इसमें जो एक मत हो और जगत सृष्टा जैसे एक भाव को प्राप्त हो वह आप मुझे बताइये। क्यों कि मुझे ब्रह्मा, विष्णु आदिक देवता और सिद्ध होता है और वह देह इन्द्रिय मन बुद्धि तथा अहंकार से उत्पन्न होता है अथवा यह महान आत्मा का रूप है इसमें भी कुछ सन्देह नहीं है। परन्तु इन दोनों बातों में यह अद्भुत विवाद है और मेरे इस संशय रूप विष वृक्ष को उखाड़ कर ऐसा वर दीजिये कि जिसमें हमारे चित्त की भूमि शिव के अद्वैत कल्प वृक्ष जन्म योग्य हो जावे। हे देवेश! मुझे आशा है कि आपकी कृपा से मुझे दृढ़ ज्ञान प्राप्त होगा। जब मुनि ने इस प्रकार पूछा तो उपनिषद गर्भित इस रहस्य को समझकर प्रभु स्कन्दजी कुछ हंसते हुए बोले—कि हे मुने! इस गुह्य ज्ञान को शिवजी ने कहा है। हे

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वामदेव ! जिस समय शिवजी अम्बा से कह रहे थे उस समय मैं अम्बा का दूध पीता हुआ बड़े आनन्द से सब कुछ सुन रहा था और वह सब मुझें स्मरण है। हे पुत्र वामदेव ! अब उस परम रहस्य को मैं तुम पर दया करके कहता हूं ध्यान देकर सुनो। कर्मसत्ता से लेकर जितना कुछ शास्त्र वाद है वह सब ज्ञानदायक है। विचारवान् उसे विवेक पूर्वक सुनते हैं। भला आप लोगों के जैसा कौन है कि जो आपने इस बड़े विस्तार युक्त शास्त्रवाद का शिष्यों को उपदेश किया है। परन्तु जिनकी नीच बुद्धि है वे अभी तक कपिलादि शास्त्रों को पढ़कर भी ऐसा ही कहते हैं। ईश्वर नहीं है। ऐसे शिव निन्दक पहले से ही छः मुनियों के द्वारा शापित और अन्यथावादी हैं। अतएव उनकी वार्ता कदापि सुनने योग्य नहीं होती है और वे अन्य क्योंकि उन्हें तो क्षिति और अंकुरादि कर्ता जन्य देखने से भी और अनुमान प्रयोग से भी परमेश्वर का रूप सिद्ध नहीं होता और वे अन्य अवसर की प्रतीक्षा करते हैं। किन्तु जैसे उपरोक्त पंचायव युक्त धूम के देखने से पर्वत अग्नि वाला है ऐसे ही यह तो प्रत्यक्ष प्रपंच का दर्शन एवं अम्वलम्बन है परमेश्वर परमात्मा को जाने इसमें सन्देह नहीं। स्त्री-पुरुष रूप विश्व प्रत्यक्ष ही दिखाई पड़ता है। श्रुतियों ने ऐसा कहा है कि सच्चिदानन्द ब्रह्म इन रूपों से सत्य है और वही प्रपंच की निवृत्ति करने वाला शब्द तथा सदात्मा कहलाता है फिर वही अपने प्रकाश से चित् होकर जगत का कारण हो जाता है। परन्तु वह एक ही शिव शक्ति भाव को प्राप्त हुए हैं। जिन शिव शक्ति के संयोग से ही आनन्द की प्राप्ति होती है।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सत्रहवां अध्याय

(सृष्टि-क्रम-द्वैत-अद्वैत का ज्ञान)

वामदेव जी बोले—भगवान! पहले तो आपने यह कहा कि प्रकृति नीचे नियति और ऊपर पुरुष हैं, वह अब आप यह दूसरा क्या कहते हैं? माया से संकुचित रूप को तो आपने कहा है कि वह नीचे है अस्तु हे नाथ! मेरा यह संशय दूर कीजिये। स्कन्द जी बोले—हे मुने! यह अद्वैत शैववाद में किसी प्रकार भी द्वैत का समावेश नहीं है। यह नश्वर अविनाशी है। इस प्रकार वह एक ही शिव सच्चिदानन्द रूप वाले और ब्रह्म हैं जिन्हें सर्वज्ञ सबका कर्ता और त्रिवेदों का उत्पादक कहा जाता है। शिवजी ही अपनी माया और इच्छा से संकुचित रूप के समान पुरुष हो गए हैं जिनमें पांचों कला हैं और जो भोक्ता है। वही समष्टी और वही चित्त प्रकृति-तत्व है। सत्वादि भेद से प्रकृति के गुण-गुणों से बुद्धि और बुद्धि से तीन प्रकार का अहंकार उत्पन्न हुआ है। फिर उससे तेज और उससे मन बुद्धि तथा इन्द्रियों की उत्पत्ति हुई है और मन का रूप संकल्प विकल्पात्मक है इसी प्रकार बुद्धि, इन्द्रिय, कान, त्वच, चक्षु, जिह्वा, शब्द, रूप, स्पर्श, रस, गन्ध प्रकृति और बुद्धि तथा इन्द्रियों में श्रोत का क्रम कहा गया है और वैकारिक अहंकार से कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति हुई है जिन्हें तत्व दर्शी मुनियों ने सूक्ष्म कही है और कार्य सहित सब कर्मेन्द्रियां हैं और वाक् पाणि पाद, उपस्थ इस प्रकार बोलना, ग्रहण करना जानना और त्यागना जिनकी क्रिया है। फिर उनकी तन्मात्रायें हुई जिनसे शब्दादि रूप हुए और जिनसे आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी की उत्पत्ति हुई और जो पंच महाभूत कहलाये तथा अवकाश वहन पाचन

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वेग और धारा जिनके व्यापार हुए। सूतजी बोले—जब वेदान्त युक्त इस प्रकार का वचन स्कन्द जी ने कहा तो ऋषि वाम देव जी नम्र हो बार-बार पृथ्वी पर गिरकर उनको दण्डवत करने लगे। क्योंकि उनके चरणारविन्द में विहरते हुए उन्हें परम तत्व की प्राप्ति हो गई।

अठारहवां अध्याय

(गुरु और शिष्य। शिष्य करने की पद्धति।)

शौनकजी ने कहा—इस गूढ़ रहस्य को जानकर वामदेव जी ने महादेव के पुत्र से क्या कहा? वे वामदेवजी तो निश्चय ही प्रशंसनीय हैं, जिनके द्वारा इस पुण्यशील कथा का जन्म हुआ है। मुनियों के इस प्रकार भावातिरेक से भरे कथन को सुनकर महाज्ञानी सूतजी उन शिव-भक्तों से कहने लगे—हे ऋषियो! आप सब जो महादेवजी के भक्त हैं धन्य हैं। जो इस प्रकार संसार का कल्याण कर रहे हैं। अब मैं आप सबको दोनों महात्माओं में हुए वार्तालाप को सुनाता हूं। तब वामदेव जी ने स्कन्दजी से पूछा—हे भगवन्! हे सर्वतत्व ज्ञानी! अब आप मुझसे उस तत्व ज्ञान का वर्णन करें जिस उपदेश से जीवों को भोग मोक्ष आदि की सिद्धि की प्राप्ति होती है। जिन्हें उपदेश का अधिकार नहीं है उनके क्षौर कर्म और स्नान इस प्रकार क्यों हैं इस सबका वर्णन करके आप मेरे सन्देह का निवारण करें। तब स्कन्दजी ने उत्तर दिया—हे वामदेवजी! अब मैं एक परम गुप्त तत्व आपसे कहता हूं। आप ध्यानपूर्वक सुनिये। बैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, अगहन, माघ इन महीनों के शुक्ल पक्ष और शुभ दिनों में पंचमी या पूर्णमासी को स्नान आदि करके शुद्ध होकर गुरु के चरण धोने चाहिए। उनके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

निकट शंख में पुष्प रखकर प्रणव मन्त्र से आमन्त्रित करना चाहिये और गन्ध पुष्प आदि से पूजन करना चाहिए। दीपक दिखाकर मुद्रा से रक्षा करनी चाहिए। कवच मन्त्र से आच्छादित करना चाहिए। फिर उत्तम मण्डप निर्माण करके उसे सुगन्धित मन्त्र से पूजना चाहिए। आधार को शोधना चाहिए। फिर उन पर शुद्ध घट रखना चाहिए उस पर सूत लपेटकर उसे सुगन्धित जल से भरना चाहिए फिर आम, पीपल, पिलखन, जामुन और बड़ इन पांचों वृक्षों की छालें और पत्ते और हाथी, घोड़ों, रथ, बांबी और नदी के संगम स्थान की मिट्टी में सुगन्धित मिलाकर उस कलश पर लेपन करना चाहिए। फिर वस्त्र, आम के पत्ते, अग्र, नारियल और पुष्प मिलाकर इस प्रकार सब वस्तुओं से उस घट को अलंकृत करना चाहिए। उस घट में पंचरत्न डालने चाहियें। यदि पंचरत्न प्राप्त न हो सकें तो भक्ति सहित उसमें स्वर्ण ही डाल देना चाहिए। फिर नीलम, माणिक्य, स्वर्ण, मूंगा और गोमेद इन पांच रत्नों को लेकर "नृमलस्क" का उच्चारण करते हुए अन्त में "ग्लम" ऐसा उच्चारण करते हुए प्रेमपूर्वक सविधि पूजा करनी चाहिए। फिर खीर तथा ताम्बूल रखकर आठ नामों से पूजन करना चाहिए और फिर अभिनन्दन करना चाहिए। इस तरह गुरु कृपा से आत्मा निर्मल हो जाती है। क्योंकि गुरु ही शिव है। और जैसे गुरु आदेश दे वैसे ही उक्त प्रकार के अनुष्ठान सहित उनकी पूजा करनी चाहिए। इसके बाद गुरु को अपने शिष्य को 'हंस सोऽहं' मन्त्र का उपदेश देना चाहिए, जिसके आदि में "हे" के अर्थ सहित आत्मा स्वयं शिव है। इस प्रकार गुरु उपदेश दे, वह सोचे कि वही मैं शिव हूं। फिर वह शिव को भस्म का

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

परोक्ष ज्ञान दें तथा आदर से उसका अभिप्राय बाईस वाक्यों में बतावें।

उन्नीसवां अध्याय

(गुरु उपदेश)

स्कन्दजी बोले—इसके बाद गुरु इस तरह से कहे—१. मैं ब्रह्म हूं २. वह तू है ३. आत्मा ही ब्रह्म है ४. सारा जगत ईश्वर से अधीष्ठित है, ५. मैं ही प्राण हूं, ६. आत्मा ही ज्ञान है ७. प्रज्ञानात्मा जो यहां, ८. विरित अविसिस वह परे है, ९. वही तुम्हारा आत्मा अन्तर्यामी और अमृत है १०. वह एक ही पुरुष में अदित्य में है ११. परब्रह्म भी मैं ही हूं १२. सबसे परे सबका ज्ञाता वेदशास्त्र का गुरु और स्वयं आनन्द लक्ष्य मैं ही हूं, १३. वह एक सर्वभूतों के हृदय में मैं ही हूं, १४. तत्व और पृथ्वी का प्राण मैं ही हूं, १५. जल और तेज का भी प्राण मैं हूं, १६. वायु और आकाश का भी प्राण मैं हूं, १७. त्रिगुण का भी प्राण मैं हूं, १८. सर्वात्मक एक अद्वितीय मैं हूं, १९. यह सब कुछ ब्रह्मरूप ही है, २०. मैं सभी मुक्त रूप हूं, २१. जो यह है वही मैं हूं और हंस भी मैं हूं, २२. इसी प्रकार सबका ध्यान करो। यह कह कर स्कन्दजी वामदेव जी को और स्नान की विधि बतलाई।

बीसवां अध्याय

(यतियों को परम शुद्धि प्रदान करने वाली स्नान और क्षौर की विधि।)

स्कन्दजी ने कहा—हे वामदेव! अब मैं यतियों को परम शुद्धि प्रदान करने वाली स्नान और क्षौर की विधि कहता हूं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हे ब्राह्मण ! जब इस प्रकार शिष्य योग पद प्राप्त कर लेवे और पूर्ण व्रती हो जावे तो उसको पहिले क्षौर करा लेना चाहिए। क्षौर करवाने से पूर्व शिष्य को चाहि कि गुरु को नमस्कार करे और उनकी आज्ञा प्राप्त करे। फिर उस कपड़े को जो कि क्षौर के लिये नाई ने प्रयोग करना है नाई से कहकर उसे मिट्टी तथा स्वच्छ जल से धुलवाये तथा नाई के हाथों को मिट्टी से भली प्रकार धुलवाये और "शिव !" शिव !!" का उच्चारण करता हुआ दोनों हाथों की अनामिका उंगलियों तथा अंगूठों को अभिमन्त्रित करे। फिर नेत्र मूंद लेवे और अस्त्र मन्त्र पढ़े। फिर नेत्र खोले और भली प्रकार इस बात का निरीक्षण करे कि नाई के औजार उस्तरा, कैंची आदि तो स्वच्छ हैं ना ? उन औजारों को भी अस्त्र मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करे, प्रोक्षण करे और दाईं ओर से क्षौर करवाना आरम्भ करे। पहले आगे के कुछ बाल मुंडाने चाहियें बाद में सारा सिर मुंडा डाले। पश्चात कटे हुए बालों को एक पत्ते पर रखकर उनको कहीं दूर डाल आवे और मूँछें भी मुंडवा डाले। इसके बाद हाथ पर हाथ रख कर दोनों हाथों के नखों को कटवाये। फिर बेल, पीपल या तुलसी के नीचे की मिट्टी लेकर अपने पास रख लेवे। फिर बारह बार जल में डुबकी लगाये और किनारे पर बैठकर उस मिट्टी के तीन भाग करे और उसको प्रोक्षण कर अस्त्र मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। फिर उस मिट्टी के एक भाग से बारह बार हाथों को धोवे, और एक ही ढेले से सारे शरीर को मलकर दोबारा जल में प्रवेश करे। फिर मिट्टी का दूसरा भाग लेकर सारे शरीर पर मलकर जल में बारह डुबकियां लगावे। इसके पश्चात जल से बाहर निकलकर तट पर बैठकर सोलह बार कुल्ले

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करे। दो बार आचमन कर ॐ पूर्वक सोलह प्राणायाम करे। फिर मिट्टी जो कि बाकी बच रही है, के तीन भाग करके उसमें से एक भाग लेकर उससे कमर और पैर धोकर दो बार कुल्ला व आचमन करे। फिर मौन होकर ॐकार पूर्वक सोलह प्राणायाम करे। अब मिट्टी के दूसरे भाग को अपनी दोनों जंघाओं पर लगाये और प्रणव से तीन प्रोक्षण करे। फिर रखी हुई मिट्टी को सात बार अभिमन्त्रित करे और उससे अपने दोनों हाथ तीन बार धोवे। और सूर्य की ओर देखते हुए सिर से पैर तक मिट्टी लगावे और मिट्टी का तीसरा भाग है उसे लेकर पृथ्वी पर रखे हुए अपने दण्ड को उठाकर अपने गुरु को स्मरण करते हुए तीन बार साष्टांग प्रणाम करे। और जल में प्रवेश करके बार-बार डुबकियां लगावे और मुख से ॐ का उच्चारण करता हुआ संसार सागर से तारने वाले भगवान सदाशिव का ध्यान करे। हे मुने! यह क्षौर स्नानादि की विधि मैंने तुमसे स्नेह से कही है, अब तुम और जो कुछ जानना चाहो पूछ सकते हो।

इक्कीसवां अध्याय

(जिस मनुष्य का चित्त समाधि से परिचित न हो उसके मोक्ष का सरल उपाय। ऐसे मनुष्य गुरु के आदेश से योगाभ्यास करें, जिससे कि उन्हें तीनों पदार्थों का ज्ञान होकर वह शिवलोक को प्राप्त हो जायेंगे।

वामदेवजी ने कहा—प्रभो! मैंने सुना है कि यतियों का दाह कर्म नहीं होता और उनको केवल शुद्ध भूमि में दबा दिया जाता है। इसका क्या कारण है, सो आप मुझे बतलाइये। क्योंकि आप ही एक ऐसे वक्ता हैं जो यह सब कुछ बतला सकते हैं आपके समान दूसरा और कोई वक्ता नहीं है। श्री सूतजी बोले—हे मुनीश्वरो! जब श्री वामदेवजी ने यह प्रश्न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किया तो श्री स्कन्दजी ने कहा—हे ब्राह्मण! जो कुछ आपने पूछा है वह बड़ी गुह्य बात है। इससे पहिले एक बार यही प्रश्न भगवान सदाशिव से महर्षि भृगु ने भी किया था। जिसे भगवान सदाशिव ने एक कथा के रूप में वर्णन किया था। हे मुने वही कथा अब मैं तुमको सुना रहा हूं। सुनिये! यह ज्ञान हर एक को नहीं बांटना चाहिये। कोई उच्च कोटि का शांत चित्त वाला शिव-भक्त हो तो उसे ही देना चाहिये। वह इस लिए कि ऐसा महा धैर्यवान योगी जिसे कि समाधि की अवस्था प्राप्त हो चुकी हो वही शिव रूप से परिपूर्ण होता है। परन्तु जिसका चित्त समाधि से परिचित नहीं और जो प्रशान्त हो तथा अधीर हो, उसके लिये भी एक उपाय है ऐसे पुरुष को चाहिये कि वह गुरु के मुख से सुनकर, सदाशिव का ध्यान लगाकर, योगाभ्यास करे। योगाभ्यास से तीनों पदार्थों का ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार से त्रिपुटी में ध्यान करने के लिये यम नियम आदि का अभ्यास करना चाहिये। नित्य प्रणव में मन लगाना चाहिये। यदि कभी शरीर शिथिल पड़ जाये और शरीर न चले तो फिर केवल भगवान सदाशिव का स्मरण करे। इससे वह मनुष्य जिसका चित्त समाधि से परिचित नहीं और अधीर है, भगवान सदाशिव के प्रसाद नन्दी द्वारा प्रेरित होकर पुण्यात्माओं के लोक की प्राप्ति हो जाती है। जैसे भी हो उसे उत्तरायण की प्राप्ति हो जाती है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बाईसवां अध्याय

(स्कन्दजी का श्री वामदेवजी को एकादशी की विधि बतलाना। पांच देवताओं के पूजन का विधान। परमात्मा, अन्तरात्मा तथा आत्मा की पूजा की विधि। विष्टदान की विधि। बारह ब्राह्मणों के पूजन तथा उनको सन्तुष्ट करने की विधि।)

श्री स्कन्दजी ने कहा--हे ब्राह्मण! अब आप एकादशी की विधि सुनिये--ग्यारहवें दिन के आने पर जो विधि कही गई है, वही मैं आपको बतलाता हूं। एक वेदी भली प्रकार तैयार करके लीप-पोतकर उसमें पांच मण्डलों का निर्माण करे और देवेश्वरी अविवाहक जैसा कि मैं आपको पहिले बता चुका हूं, उसी के अनुसार पांच देवताओं का पूजन करे। भगवान सदाशिव के दिव्य रूप का ध्यान करे। भला भगवान सदाशिव की कृपा से कौन सी सिद्धि की प्राप्ति नहीं हो सकती? वह बड़े ही दयालु एवं कृपालु हैं। अब उन सब कार्य करने वाली दिव्य तथा अनुग्रह करने वाली पांच मूर्तियों के चरणों में शंख के जल बिंदू समर्पण करे। विधि अनुसार प्रत्येक प्रकार का पूजन करे। "ॐ भूर्भवः स्वहः" इस मन्त्र से प्रोक्षण करे और फिर धूप देकर प्रदक्षिणा और नमस्कार करे। सिर पर अंजलि धारण कर प्रार्थना करे--हे माताओ! तुम प्रसन्न होकर इस यति को शिव चरणों में रक्षित करो। ऐसी प्रार्थना के पश्चात प्रसाद बालकों में बांट दे या गऊंवों को खिला देवे या जल में डाल दे। अन्यत्र कहीं न डाले। इस प्रकार उसका श्राद्ध करे। क्योंकि यति का एकादिष्ट श्राद्ध नहीं होता। उसकी एक अलग विधि है इस विधि के अनुसार चार ब्राह्मणों को निमन्त्रण देवे और उनको अपने घर में बुलाकर उनके चरण धोकर उनका पूजन करे पश्चात उनको भगवान सदाशिव की मूर्ति के सामने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बिठाकर बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ भोजन करवाये। फिर फर्श को गोबर से लीपकर कुशासन पर बैठकर प्राणायाम करे और कहे कि मैं पिण्डों को दान करता हूं। ऐसा संकल्प करके तीन मण्डलों की अपने परमात्मा, अन्तरात्मा और आत्मा के लिए पूजा करे और चतुर्थी के अन्त तक इस बात का विचार करता रहे कि मैंने आत्मा को पिण्ड दिया है। इसके बाद पिण्ड देवे। उसके पश्चात कुश से जल छिड़ककर प्रदक्षिणा और नमस्कार करे। फिर उसी स्थान पर नारायण की बलि करे। इसके बाद भगवान श्री विष्णु की पूजा का अलग विधान है। अन्त में बारह वेद पाठी ब्राह्मणों को बुलाकर उनकी गन्ध, अक्षत और पुष्पों द्वारा पूजा करे। इन ब्राह्मणों के नाम 'क' से आरम्भ होने चाहिएं। यानी केशव आदि। फिर उन्हें उमानह तथा क्षत्र देकर प्रत्येक प्रकार से उनको सन्तुष्ट करे। कुशाओं पर पायस बलि करे। हे ब्राह्मण! यह एकादशी की विधि है, अब आप द्वादशी की विधि सुनिये।

तेईसवां अध्याय

(शिष्य का कर्त्तव्य। गुरु पूजन की विधि। यति, ब्रह्मा, विष्णु महेश और शिव का पूजन करते हुए जैसे नदियों को सागर की प्राप्ति हो जाती है वैसे ही मोक्ष पद को पाकर मुक्त हो जाते हैं।)

स्कन्दजी ने कहा—शिव भक्त यति बारहवें दिन प्रातः काल उठकर नित्य कर्मों तथा स्नान से निवृत्त होकर दुपहरी में शिव भक्त ब्राह्मणों को अपने घर पर बुलाकर उनको स्वादिष्ट भोजन करावे। फिर उन्हें परमेश के निकट बिठाकर उनका पंचोक्त पूजन करके मौन होकर उनको प्रणाम करे। फिर मन में गुरु पूजन का संकल्प करके उनके चरण छुवे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चरण छुने के पश्चात उनके चरण धोवे। अपने गुरु का ध्यान करे, उसके अतिरिक्त अपने पर गुरु का भी ध्यान करे। ब्राह्मणों के चरण धोने के बाद उनको आसनों पर बिठाये। कुशाओं से उनकी पूजा करे और उनको धूप दीप आदि दे और नमस्कार करे। "देवा" आदि मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अक्षतों को छोड़कर नमस्कार करे और सर्वत्र "अमृतस्तु" ऐसा कहे! फिर ब्राह्मणों को भोजन करवाये और अपने हाथ से उनके हाथ धुलवाये। हाथ धुलाने के पश्चात उनको ताम्बूल देवे और फिर दोबारा आसनों पर बिठाकर दक्षिणा में छतरी और खड़ावें देवे। पंखा, बैठने के लिए नई चौकी और वेणुदंड देवे। उनकी प्रदक्षिणा करे। उनको नमस्कार करे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करे फिर उनको प्रणाम करके अपने यहां से विदा करे। विदा करते समय उनसे कहे कि आप सदा शिवादि हैं। जैसी इच्छा हो, जाइये। ऐसा कहते हुए घर के मुख्य द्वार तक उनके साथ जावे। और जब ब्राह्मण उससे कहें कि जाओ तो वापिस लौट आये। फिर घर में बैठे हुए अतिथियों तथा द्वार के बाहर बैठे हुए दीनों तथा अनाथों को भोजन करवाये और सुखी होवे। शिव भक्त यति को चाहिये कि प्रति वर्ष इस गुरु पूजन को करता रहे। ऐसा करने वाला उत्तम साधक इस संसार के समस्त भोगों को भोगता हुआ सुखमय जीवन व्यतीत करता हुआ अन्त में शिवलोक को प्राप्त करता है। श्री सूतजी ने कहा—हे मुनीश्वरो! इस प्रकार श्री स्कन्दजी जो कि सदा ही तथा सब पर कृपा करने वाले हैं श्री वामदेव पर प्रसन्न होकर पुनः कहने लगे—जो कुछ नैमिषारण्य में व्यासजी ने ऋषि मण्डल से कहा है वही आदि गुरु श्री व्यासजी इस कथा को

CC-0. Vanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

फिर से कहेंगे। उनसे सुनकर इस कथा को श्री शुकदेवजी कहेंगे और फिर इसी कथा को उनके चार-चार शिष्य कहेंगे और धर्म की स्थापना करेंगे। श्री व्यासजी के चार शिष्यों के नाम हैं— वैशम्पायन, पैल, जैमिनि और सुमन्तु और आपके चार शिष्यों के नाम हैं वामदेव, अगस्त्य, क्रतु और पुलस्त्य। सनक, सनन्दन और सनातन सनत्कुमारयह चार शिष्य शिवप्रिय योगिवर्य सनत्कुमारजी के शिष्य हैं। यह मुनि मण्डल बड़ा ही अद्भुत और परम शिव का अधिष्ठान रूप है और वेदों के अर्थ और उनके विचारों को जानने वाला है। इस मुनी मण्डल ने विभाग से कल्पित पंचमहाभूतों से आवृत वेदान्त सिद्धान्त का परम निश्चय किया है जो कि मोहनाशक, ज्ञानदायक, संतोषदायक और जगत कल्याणकारक तथा लक्ष्मी का प्रदान करने वाला है। मुझसे सुनने के कारण विद्वान तथा पण्डित इसे वामदेव का मत कहते हैं और वह यति भगवान सदाशिव का ध्यान करते हुए शिवस्वरूप ही हो जाते हैं। जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश का ध्यान करते हुए नदियों को सागर की प्राप्ति हो जाती है उसी प्रकार वह यति भजन के प्रताप से मोक्षपद को प्राप्त कर लेते हैं। बस, इस प्रकार का उपदेश करके श्री स्कन्द जी अपने माता पिता के चरणों का ध्यान करते हुए कैलाश पर्वत पर चले गये। उनके जाने के पश्चात श्री वामदेवजी ने भी उनका ही अनुसरण किया और पर्वत पर जाकर भगवान सदाशिव तथा मातेश्वरी पार्वती के चरणों में सीस नवाया। बस फिर क्या था, वह उन पावन चरणों की भक्ति से सर्वांग पूर्ण हो गये। वह पृथ्वी पर गिरकर शरीर शून्य होकर बार-बार नमस्कार करने लगे और वेद शास्त्रों के आशय पूर्ण अनेक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

स्तोत्रों से उनकी स्तुति करने लगे। श्री वामदेवजी ने पार्वती तथा पुत्र सहित भगवान सदाशिव की बड़ी स्तुति की। देव देवी चरणों में बार-बार शीस नवाया और उनकी कृपा से वहीं रहने लगे हे ऋषियो! आप लोगों को चाहिए कि आप भगवान सदाशिव को जानकर सुख से उनके चरण कमलों में यहीं रहिये। भगवान सदाशिव वेदों के गुप्त सर्वस्व तारक मन्त्र देने वाले हैं अब मैं भी अपने गुरुदेव के चरण कमलों की सेवा के लिए बद्रिकाश्रम को जाऊंगा। देखिये आज के बाद हम फिर कब मिलते हैं। हे ब्राह्मणो! आपने जो कुछ पूछा था वह सब मैंने आपको बतला दिया है।

॥ इति श्री शिवमहापुराणस्य कैलाश संहिता सम्पूर्णम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

वायवीय संहिता खण्ड

पहला अध्याय

(सभी विद्याओं के रूप पुराणों के प्रकट होने की कथा। चार वेदों, छः शास्त्रों, मीमांसा, न्याय, धर्म शास्त्र चौदह विद्याओं का विस्तृत वृत्तान्त। भगवान शंकर का संसार को बनाने के लिए श्री ब्रह्माजी को उत्पन्न करना। उनको अठारह विद्याएं प्रदान करना। ब्रह्माण्ड की रक्षा के लिए भगवान श्री विष्णु को शक्ति प्रदान करना। सभी द्वापर युगों के अन्त में भगवान श्री विष्णु का भगवान श्री वेदव्यास के रूप में प्रकट होकर वेदादि विभाग करना। शिव आराधना करने से मनुष्यों तथा देवताओं को मोक्ष की प्राप्ति।)

श्री व्यासजी ने कहा—शिव गणेश और स्वामी कार्तिक तथा सृष्टि उत्पत्ति पालन तथा संहार करने वाले भगवान शंकर को मैं प्रणाम करता हूं। जिनकी शक्ति अद्वितीय और जो सब में गमन करने वाले तथा व्यापकता ही जिनका स्वभाव है, उन अजन्मा, विश्वकर्त्ता, अविनाशी, शिव महात्मा महादेव की मैं शरण हूं। जब महा गंगा-यमुना के संगम-स्थल प्रयाग तथा नैमिषारण्य में ऋषियों ने फिर यज्ञ का अनुष्ठान किया तो उन ऋषियों-महर्षियों के उस यज्ञ की महिमा सुनकर भगवान श्री वेदव्यासजी के सुपुत्र श्री सूतजी उस संगम स्थल पर पधारे। उनको देखकर समस्त मुनी-मण्डल खिल उठा। सभी मुनीश्वरों के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। उन्होंने विधिवत श्री सूतजी का आदर-सत्कार किया। फिर उन्हें सर्व श्रेष्ठ आसन पर बिठाकर प्रार्थना की—हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! हम सब

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आपका स्वागत करते हैं। आपका आगमन शुभ हो। जो कि आप सब इतिहासों को जानने वाले यहां हमारे बीच में पधारे हैं। आप भगवान श्री वेदव्यासजी के शिष्य हैं और सभी रहस्यों के जानकार हैं। कृपया हम सबको दिव्य कथारूप अमृत का पान करवाइये। इस प्रकार ऋषि-मण्डल की प्रार्थना सुन कर श्री सूतजी पहले भगवान श्री सदाशिव के पावन चरणों का, श्री गणेशजी के चरणों का फिर जगदम्बा पार्वतीजी तथा अपने गुरु के चरणों का ध्यान करके बोले—हे ब्राह्मणो! अब मैं आपको सभी पुराणों की उत्पत्ति का वृतान्त सुनाता हूं तनिक ध्यानपूर्वक सुनिये—पुराण क्यों हैं? श्व कल्प के समय वायु देव ने जो कुछ कहा था, उन्हीं शब्दों को पुराण कहते हैं। चार वेद, छः शास्त्र, मीमांसा, न्याय धर्म शास्त्र सभी पुराण इत्यादिकों में चौदह प्रकार की विद्यायें हैं। फिर आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्वेद अर्थशास्त्र यह चार उन चौदहों में युक्त कर देने से विद्या अठारह प्रकार की हो जाती है। इन अठारह विद्याओं के उत्पति कर्ता भगवान सदाशिव हैं। जगत की रचना करने के लिए भगवान सदाशिव ने सबसे पहिले श्री ब्रह्माजी को उत्पन्न किया। फिर उनको इस संसार की रचना के लिए यह अठारह विद्यायें प्रदान कीं। ब्रह्माण्ड की रक्षा के लिए भगवान शंकर ने शक्ति शाली भगवान श्री विष्णु को उत्पन्न किया। भगवान विष्णु तो श्री ब्रह्माजी की रक्षा करने वाले हैं। श्री ब्रह्माजी के चारों मुखों से चारों वेदों और समस्त शास्त्रों का प्रादुर्भाव हुआ। उसके बाद सभी शास्त्र पैदा हुए। हे मुनीश्वरो! इन पुराणों को प्रकट करने वाले स्वयं श्री ब्रह्माजी ही हैं। जब प्रजा वेदों तथा शास्त्रों के अर्थ समझने में अशक्त हुई तो कृपालु

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान सदाशिव के आदेश से स्वयं भगवान विष्णु द्वापर के अन्त में भगवान श्री वेदव्यास के रूप में प्रकट हुए। भगवान वेद ने इन विद्याओं को संक्षिप्त किया। इसी प्रकार भगवान श्री वेदव्यास सभी द्वापर युगों के अन्त में भगवान श्री विष्णु, भगवान श्री वेदव्यास के रूप में प्रकट होकर वेदों और पुराणों का निर्माण करते हैं। इस द्वापर की समाप्ति पर सत्यवती पुत्र कृष्ण द्वैपायन नाम से भगवान श्री वेदव्यासजी प्रकट हुए हैं। उन्होंने वेदों को चार भागों में विभक्त किया है। इसी से उनका नाम भगवान श्री व्यासजी से वेदव्यास प्रसिद्ध हुआ है। पुराणों के श्लोकों की संख्या चार लाख है। हे मुनीश्वरो! जब तक मनुष्य इन पुराणों को न पढ़ले तब तक उसे वेदों तथा उपनिषदों का कुछ भी ज्ञान नहीं हो सकता। कुल पुराण अठारह हैं जैसे कि--ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, श्रीमद्भागवत, भविष्य पुराण, नारद पुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्नि पुराण, ब्रह्मवैवर्त, लिंग पुराण, वाराह पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, स्कन्द पुराण इस प्रकार यह अठारह पुराण हैं। इनमें चौथा शिवमहापुराण शैवों की सभी कामनाएं पूर्ण करने वाला है। इसी शिव पुराणोक्त धर्म तथा विधि के द्वारा शिव आराधना करने से तीन वर्णों के मनुष्यों तथा देवताओं को शीघ्र शिवलोक की प्राप्ति होती है। शिवपुराण परम पवित्र ग्रन्थ है। इसमें सात संहिताएं हैं। इसका पठन-पाठन केवल शिव भक्त के लिए इस ग्रन्थ का पढ़ना ही ठीक है। हे ऋषियो! मुझे भगवान श्री वेदव्यास की कृपा से ही पुराणों की पवित्र निधि प्राप्त हुई है अतः मेरा उन्हें बार-बार प्रणाम है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दूसरा अध्याय

(ऋषियों-महर्षियों में परब्रह्म के विषय में विवाद छिड़ना। निर्णय न होने पर ऋषि मण्डल का श्री ब्रह्माजी के पास जाना और उनसे पूछना कि अविनाशी नित्य शुद्ध चित्त स्वरूप परिपूर्ण परब्रह्म परमात्मा कौन है ?

श्री सूतजी बोले—हे मुनिवृन्द ! अनेकों कल्पों के व्यतीत हो जाने पर जब बाराह कल्प का आरम्भ हुआ तब ऋषि-मण्डल में परब्रह्म के विषय पर विवाद खड़ा हो गया। जब ऋषि-महर्षि इस समस्या का हल न कर सके तो एकत्र होकर श्री ब्रह्माजी के पास पहुंचे और उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर श्री ब्रह्माजी ने उनसे पूछा—"हे ऋषियो ! आप लोग किस कारण से मेरे पास पधारे हैं ? मुनीश्वरों ने कहा—प्रभो ! हम सब अन्धकार के ज्ञान में पड़े हुए हैं। हम सब आपस में वाद विवाद के कारण अत्यन्त दुखी हैं। कृपा करके आप हमारा संशय दूर करें। आप को तो परम पुरुष जानते हो हैं बस आप हमें यह बतलाइये कि अविनाशी नित्य शुद्ध, चित्त स्वरूप परिपूर्ण परब्रह्म परमात्मा कौन है ? इस संसार की रचना करके इसका पालन तथा संहार करने वाला कौन है ? मुनीश्वरों का प्रश्न सुनकर श्री ब्रह्माजी ने भगवान श्री सदाशिव का ध्यान किया फिर ऋषियों से कहने लगे—

तीसरा अध्याय

(परब्रह्म के स्वरूप के सम्बन्ध में ऋषियों महर्षियों में आपस में वाद-विवाद। वास्तविकता को जानने के लिये ऋषियों-महर्षियों का ब्रह्मलोक में श्री ब्रह्माजी के पास जाना। श्री ब्रह्माजी का उनको एक हजार वर्ष के लिये यज्ञ करने का आदेश देना। ऋषियों-महर्षियों का यज्ञ करने के लिये नैमिषारण्य में जाना और यज्ञ आरम्भ करना।)

हे ऋषियो ! भगवान सदाशिव के पास हम मन व वाणी द्वारा भी नहीं पहुंच सकते। केवल उनका सच्चा भक्त ही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उनके दर्शन कर सकता है। ब्रह्माजी भगवान श्री विष्णु तथा रुद्र सबका जन्म भगवान श्री सदाशिव द्वारा हुआ है। पण्डित जन जिनकी कृपा से सदा प्रसन्न रहते हैं मेरे को भी उन्हीं की कृपा से परम प्रजापति पद प्राप्त हुआ है। जिनके द्वारा सारा ब्रह्मान्ड व्याप्त हो रहा है। जो सारे ब्रह्मांड पर शासन करते हैं बस वही भगवान सदाशिव परब्रह्म हैं। जो कोई तत्व द्वारा उनका ध्यान करता है, वह मृत्यु के पश्चात सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर परम पद को प्राप्त करता है। मैं अधिक क्या कहूं सूर्य, चन्द्र, अग्नि, बिजली आदि उनकी कृपा से ही चमकते हैं, ऐसा श्रुतियों का कथन है। काल को और समस्त चराचर को प्रेरणा देने वाले वही परब्रह्म हैं। भगवान सदाशिव अपने अन्दर से ब्रह्मांड उत्पन्न करते हैं और प्रलय काल में उसको अपने अन्दर ही विलीन कर लेते हैं। सारा ब्रह्मांड उनके अधीन है। वही मनुष्य आदि सभी प्राणियों को प्रपंच में लगाते हैं। अज्ञानी, दुष्ट, पतित अधम देख नहीं पाते। हां भक्तजन उनकी पूजा व आराधना करके अपने अन्दर तथा बाहर उनके दर्शन कर पाते हैं। भगवान सदाशिव तीन रूपों के मालिक हैं स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म। उनके स्थूल रूप को देवता ही देख सकते हैं। सूक्ष्म रूप को योगी देख सकते हैं। और उनका जो तीसरा सूक्ष्म-से-भी-सूक्ष्म रूप है, उसको केवल भगवान सदाशिव के अनन्य भक्त शिव व्रत के अनुकूल व्रती ही देख सकते हैं। भगवान सदाशिव वेदों में बतलाये गए साधनों द्वारा प्रसन्न होते हैं। उन वेदोक्त साधनों से पहिले जन्म में किये गए पाप पुण्य सब-के-सब समान हो जाते हैं। तब उन साधकों पर भगवान सदाशिव की कृपा शुरू हो जाती है। इस प्रकार धर्म के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विशेष होने पर और उसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के पाप नष्ट होने पर भगवान सदाशिव की ज्ञान सहित प्राप्ति होती है। उनके गुण समूहों को समझने के लिए पहले उनकी कृपा की आवश्यकता होती है। और उनकी वह कृपा साधनों द्वारा प्राप्त होती है। फिर जीव कर्म बन्धनों से छूट जाता है और निष्काम कर्म से शिव धर्म में प्रवृत्त होता है। धर्म दो प्रकार के कहे गए हैं। गुरु अपेक्षित तथा गुरु अनपेक्षित। गुरु अनपेक्षित धर्म से गुरु अपेक्षित धर्म सौ गुना अच्छा है। गुरु अपेक्षित धर्म के द्वारा ही मनुष्य को धर्म प्रवृत्ति होती है और शिव ज्ञान होता है और ऐसा होने के बाद उसको यह संसार असार दिखाई देने लगता है। और वह इस संसार के सभी विषयों को त्यागकर साधन में लग जाता है। भाव सिद्ध हो जाने पर उसकी ध्यान में निष्ठा हो जाती है। और उसके पश्चात मनुष्य योग में प्रवृत्त हो जाता है। योग से भक्ति की प्राप्ति होती है और भक्ति से शिवकृपा होती है और शिवकृपा के होने पर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। यानी मनुष्य शिवरूप होकर शिवलोक को प्राप्त कर लेता है। इसी कारण हे मुनिवृन्द! तुम सब मिलकर भगवान सदाशिव की कृपा की प्राप्ति के लिये हजार वर्ष का यज्ञानुष्ठान करो। आपके यज्ञ मन्त्रों की शक्ति से श्री वायुदेव पधारेंगे और आप लोगों को कल्याण का मार्ग बतलायेंगे। उसके पश्चात आप काशी नगरी में चले जाना। वहां पर भगवान सदाशिव और पार्वती अपने भक्तों का कल्याण करते हुए दृष्टिगोचर होंगे। देखो इस समय मैं अपना मनोमय नाम का चक्र छोड़ने वाला हूं। उस चक्र का नेमि जिस स्थान पर टूट जाये, वहीं पर आपने अपना महा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

यज्ञ करना। वही स्थान आपके लिए मुक्तिदाता सिद्ध होगा। ऐसा कहने के उपरान्त श्री ब्रह्माजी ने अपना चक्र छोड़ दिया। समस्त ऋषि महर्षि श्री ब्रह्माजी को प्रणाम करके चक्र की धुरी के पीछे-पीछे चल पड़े। धुरी एक दिव्य वन में जाकर गिरी और एक बड़ी भारी शिला के साथ टकराकर टूट गई। वह वन बाद में नैमिषारण्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ऋषियों-महर्षियों ने वहीं पर यज्ञ रचाने की योजना बनाई। एक दिन राजा पुरूरव अपनी रानी उर्वशी के साथ वहां आन पहुंचा। उस रमणीक भूमि को देखकर उसका मन ललचा उठा। मोह में आकर वह ऋषियों-महर्षियों से उनकी स्वर्ण वेदी तक छीनने के लिए तैयार हो गया। ऋषियों को भी क्रोध आ गया उन्होंने राजा पर कुशा का प्रहार करके उसे भूमि पर मार गिराया। इसी स्थान पर पूर्वकाल में श्री ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना आरम्भ की थी। इस भू-खंड को देख कर ऋषि लोग अत्यन्त आनन्दित हुए।

चौथा अध्याय

(ऋषियों का नैमिषारण्य में दस हजार वर्ष तक यज्ञ करना। यज्ञ के पूर्ण होने पर श्रीब्रह्माजी की प्रेरणा से वायुदेव का नैमिषारण्य क्षेत्र में आना। ऋषियों का वायुदेव को बतलाना कि वह यह यज्ञ भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए श्री ब्रह्माजी के आदेश से कर रहे हैं।)

सूतजी बोले—हे मुनिवृन्द! ऋषियों-महर्षियों ने उस नैमिषारण्य क्षेत्र में दस हजार वर्ष तक यज्ञ किया और जिस समय यज्ञ पूर्ण हो गया तो श्री ब्रह्माजी ने वायुदेव को वहां जाने का आदेश दिया। वायुदेव आज्ञा पाकर नैमिषारण्य में पहुंचे। ऋषियों ने उनका यथायोग्य आदर सत्कार किया। वायुदेव ने ऋषियों से पूछा—हे ऋषियो! आपके यज्ञ में किसी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दानव ने बाधा तो नहीं डाली ? आप लोगों को कोई प्रायश्चित तो नहीं करना पड़ा, किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं हुआ ? आप लोगों ने यथावत भाग देकर देवताओं और पितृ कर्मों से पितों को पूज, देवताओं तथा पितृों को प्रसन्न कर लिया है ना ! कहिये आपका क्या विचार है। वायुदेव की बात सुनकर ऋषियों ने कहा—प्रभो ! ध्यानपूर्वक सुनिये हम लोगों ने अपना अज्ञान अंधकार दूर करने के लिए यह महान यज्ञ रचाया था। हम अपना अज्ञान दूर करने के लिए श्री ब्रह्माजी के पास गए थे। श्री ब्रह्माजी ने हमें आदेश दिया था कि हम लोग भगवान श्री सदाशिव का पूजन करें। श्री ब्रह्माजी के यज्ञ के पूर्ण होने पर आप यहां पधारे। और आप इस समय उनके आदेश से ही यहां पधारे हैं आपके आने से हमारा दस हजार वर्ष तक यज्ञ करने की पूर्णता हुई है। आपके दर्शनों से बढ़कर हमारे लिए और कोई दूसरी वस्तु वांछनीय नहीं है। आपके दर्शन करने से हम लोग अपने आपको सफल एवं कृतार्थ समझ रहे हैं।

पांचवां अध्याय

(ऋषियों का वायुदेव से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के सम्बन्ध में पूछना। श्री वायुदेव का उनको बतलाना कि वेदों और वेदान्त शास्त्रों में ईश्वर को अन्तर्यामी कहा गया है। समस्त संसार की वस्तुएं उसी में हैं और वह शाश्वत परब्रह्म सर्वत्र विद्यमान है। मनुष्य कर्मों से सुख दुख का अनुभव करता है।)

ऋषियों महर्षियों ने श्री वायुदेव से पूछा—हे देव प्रवर ! आप हम लोगों को बतलाइये कि आपने वह ईश्वरी ज्ञान तथा शिव भाव कहां से तथा कैसे पाया ? ऋषियों की बात सुनकर वायुदेव ने कहा—हे ऋषिगो ! जब इक्कीसवां श्वेत रूप नामक कल्प लगा था तब श्री ब्रह्माजी ने भगवान सदाशिव को प्रसन्न करने के लिए कठोर तप किया। उनके तप से प्रसन्न

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

होकर भगवान सदाशिव ने सन्तुष्ट होकर उन्हें दर्शन दिये और उनको ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया। वही ब्रह्मज्ञान फिर मैंने श्री ब्रह्माजी से प्राप्त किया। ऋषियों ने श्री पवनजी से फिर पूछा—हे वायुदेव! आप यह बतलाइये कि वह कौन सा ज्ञान है जिसमें निष्ठा रखने से मनुष्य परम सुख को प्राप्त करता है। वायुदेव ने कहा—मैंने पहिले पशु पाशपति संज्ञक ज्ञान प्राप्त किया। सुख चाहने वाले मनुष्यों को उसमें परम निष्ठा रखनी चाहिए। अज्ञान से उत्पन्न हुआ दुःख, ज्ञान द्वारा ही दूर होता है। वस्तु दो प्रकार की है जड़ और अजड़। जीव चेतन है और प्रकृति जड़ है। इस प्रकार यह दो वस्तु हैं। इन दोनों का नायक ज्ञान है। पशु, पाश, पति, अक्षर, क्षर और क्षराक्षर का पति यह सब ज्ञान की ही श्रेणियां हैं। अब और सुनिये—क्षर प्रकृति है और अक्षर पुरुष है। इन दोनों का प्रेरक परम परमेश्वर है। प्रकृति तो माया है। माया से युक्त मूल कर्म का सम्बन्ध रखने वाला पुरुष है। इन दोनों के प्रेरक भगवान सदाशिव हैं। माया तो महेश्वर की शक्ति है। चिद्रूप माया से ढका हुआ है और उस चिद्रूप को ढक लेने वाला मल है। मल चित्त ज्ञान का छेदक है। स्वयं मन से पवित्र रहने वाला भक्त ही शिव प्राप्त करता है। कला, विद्या, राग, काल और नियति यह पांच प्रकार की व्यापक कला है। ईश्वर भी सर्वव्यापी है। पर सभी माया से घिरे हुए हैं। कर्म ही हेतु है। अतः मल क्षय हो जाने पर वह माया से पृथक हो जाते हैं। कलादिकों का भोक्ता पुरुष है। पुनीत कर्म करने वाले को सदैव सुख मिलता है और दूषित कर्म से दुख मिलता है। मल और भोग के नाश न होने तक जीव अज्ञान के आश्रित रहता है। भोग कर्मों के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IES (Retd) Collection Jammu

अनमूलन के लिए ही शरीर भोगों का साधन है। यह शरीर आदि व्यक्त अव्यक्त से भिन्न नहीं, जैसे कि मिट्टी का घट कार्य भिन्न नहीं। इसलिए अव्यक्त ही कर्मों का एक कारण है। उसके भोगने के योग्य कर्म शरीर आधार है। बुद्धि, इन्द्रिय एवं शरीर से व्यापी का व्यतिरेक तो है, पर आत्मा का कारण समझना दुर्बोध है। श्रेष्ठ पुरुषों ने आत्मा को इन्द्रिय शरीर आदि से भिन्न माना है। इसी कारण इनसे भिन्न ही आत्मा है। इसमें संशय नहीं है कि कर्मों का फल भोगता है। वेदों तथा वेदान्त शास्त्रों में ईश्वर को अन्तर्यामी कहा गया है। समस्त संसार की वस्तुएं उसी में हैं। वह देहों से भिन्न है। जो उसे भिन्न नहीं मानते वह अज्ञानी हैं। शरीर तो नश्वर पराश्रित दुःख की खान है। बार-बार नष्ट होता रहता है। जीव एक शरीर में स्थित नहीं रह सकता। जन्म-मरण के चक्र में पड़कर घूमता रहता है। इसी कारण इसकी वृत्तियां भिन्न-भिन्न भासती हैं। लेकिन वास्तव में वह एक हैं। यह आत्मा किसी की नहीं और नहीं इसका कोई है। आत्मा देह को देखता है पर देह आत्मा को नहीं। परब्रह्म दोनों को देखता है किन्तु यह दोनों उसको नहीं देख सकते। यह जीवात्मा ज्ञानहीन होकर परमेश्वर से प्रेरणा पाकर सुख भोगने के वास्ते स्वर्ग-नरक में जाता है।

छटा अध्याय

(श्री वायुदेव का मुनीश्वरों को बताना कि भगवान सदाशिव की भक्ति के बिना दुःख-ही-दुःख है। उनकी सच्ची भक्ति में कल्याण है। भगवान सदाशिव प्रकृति और पुरुष से परे हैं। केवल वही उपास्य तथा आराध्य हैं। भगवान रुद्र ही काल, रक्षक और विश्व के पति हैं। उनके जान लेने से ही प्राणी मरण-पाश से मुक्त होता है।)

मुनीश्वरों ने कहा—हे वायुदेव आपने पशु और पाश दोनों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का वर्णन किया है। कृपया यह बतलाइये कि इन दोनों का स्वामी कौन है ? श्री वायुदेव बोले—हे मुनिवृन्द ! पशु पाश का छुड़ाने वाला, संसार का निर्माता ईश्वर ही तो है। वह अनन्त गुणों का आश्रय है। बिना उसके इस संसार का निर्माण नहीं हो सकता। जगत का कर्त्ता और कार्य भी वही है। पशु पाश नहीं है। जैसे अन्धा व्यक्ति कुछ भी नहीं देख पाता उसी प्रकार प्राणियों को ईश्वर दिखाई नहीं देता। पशु यानी जीव कर्ता के रूप में दिखाई देता है, जबकि वह वास्तव में कर्ता नहीं है। प्राणियों के दिव्य नेत्र चूंकि माया से ढके हुए हैं, इसलिए उनको ईश्वर दिखाई नहीं देता। पशु पाश और पति इन तीनों का ज्ञान होने पर ही ब्रह्म ज्ञानियों को मुक्ति की प्राप्ति होती है। भोक्ता, भोग्य और प्रेरक यह तीनों ही जानने के योग्य हैं। विद्वान लोग इससे आगे कुछ नहीं जानते। नित्य योगाभ्यास करने वाला महात्मा सत्य और तप द्वारा परमेश्वर के दर्शन कर लेता है। वह सत्ता शिव है। विश्व की सृष्टि, स्थिति, संहार करने वाला है। सारा विश्व उस विराट पुरुष के नेत्र और चरण आदि हैं। आकाश, पृथ्वी आदि के रचयिता केवल भगवान शंकर हैं। हे मुनीश्वरो ! वह देव के आदि देव ब्रह्मा के भी रचयिता हैं। सभी देवों का पालन आदि कार्य भी वही करते हैं। नेत्रों के बिना ही सब कुछ देखते हैं, कानों के बिना सब कुछ सुनते हैं। छोटे बड़े अणु परमाणु सब में वही निवास करते हैं। अतः प्राण पुरुष हैं। समस्त संसार काल के वश में है किन्तु काल जगत के वश में नहीं है। काल केवल भगवान सदाशिव के वश में है। भगवान सदाशिव काल के वश में नहीं हैं। क्योंकि सदाशिव का अक्षय तेज ही काल में स्थित है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान सदाशिव अपनी शक्ति से अकेले ही इस जगत की रचना करते हैं और इसका नाश भी कर देते हैं। रचना और नाश करने वाली भगवान सदाशिव की शक्ति का नाम अजा है। उसका वर्ण लोहित शक्ल वाला तथा कृष्ण है। अपने समान रूप वाले दूसरे से सेवित उत्पन्न करते वाली है। उसी के साथ पुरुष सोता है। उपभोग करने के उपरान्त उसका त्याग कर देता है। संसार रूप वृक्ष की भांति अवस्था वाले जीवात्मा व परमात्मा रूप दो पत्ते हैं। इन दोनों में से जीवात्मा अपने कर्मों का फल भोगता है। परमात्मा उसका दृष्टा रहता है। भगवान सदाशिव अकेले हैं और अनेकों प्रकार से एक-एक को रचकर उसमें अपना अधिकार भी स्थापित करते हैं। दसों दिशाओं में अपना तेज प्रकाश फैला देते हैं इस पर भी वह उदासीन होकर रहते हैं। गुह्योपनिषद में लिखा है कि उस पर-ब्रह्म को केवल ऋषियों और देवताओं ने ही जाना है जो कि जगत के आदि ब्रह्मा को रचने वाले हैं और इसी भावना से प्राप्य अनीह भाव तथा अभाव एवं कला के रचने वाले हैं, उन्हें जानकर ही मनुष्य जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाता है। वह सबका पालन, स्थिति तथा संहार करने वाले हैं। उनका उत्पादन तथा उनका स्वामी कोई नहीं है। वह सबकी कामनाओं को पूर्ण करने वाले तथा मोक्ष के दाता हैं। मनुष्य को उन भगवान सदाशिव की भक्ति मोक्ष प्राप्ति की इच्छा करनी चाहिए। वह चर्म की भांति आकाश को ढके रहते हैं। हे मुनिवृन्द! मैं सत्य कहता हूं कि बिना भगवान सदाशिव के ज्ञान के मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए मनुष्य को सदा उन्हीं का ध्यान करना चाहिए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सातवां अध्याय

(वायुदेव का ऋषियों-महर्षियों को बताना कि वह काल जिसके अधीन होकर यह सारा विश्व, सारी सृष्टि, सृजन संहार क्रम से चक्र की भांति निरन्तर चलता है, भगवान सदाशिव की अशांश शक्ति है।)

ऋषियों-महर्षियों ने कहा—हे पवनदेव! अब आप हमें यह बतलाने की कृपा कीजिये कि वह कौन है जो कि इस सारे जगत को निरन्तर चलाता रहता है। जिसके द्वारा इस विश्व की उत्पत्ति तथा संहति होती है। जिसके द्वारा सभी कुछ पैदा होता है। और उसके पश्चात नाश भी होता है। वह किसके वश में है और उसके वश में कौन-कौन हैं? हम यह रहस्य जानना चाहते हैं। सो कृपा करके हमें बतलाइये। इस पर भी वायुदेव ने कहा—हे मुनिवर्य! यह समय का सूचक काल भगवान सदाशिव का तेज समझिये इस संसार में कोई भी इसका बाधक नहीं है। यह भयंकर प्रभु, यह भूत, वर्तमान और भविष्य द्वारा प्रजा को कुमार, यौवन, प्रौढ़ और वृद्धावस्था में बदलते रहते हैं। ईश्वर की इच्छा से ही यह अपने बल चराचर संसार को नियंत्रण में रखता है। भगवान सदाशिव का अंश ही काल भगवान में है किन्तु प्रभु आप स्वच्छ रहते हैं। यह समस्त संसार काल के वश में है किन्तु काल जगत के वश में नहीं है। इस काल में भगवान सदाशिव की शक्ति विद्यमान है। अतः इसको रोकना महा कठिन है। कोई भी तो इसको रोक नहीं सकता है। यह अपने बल से ही इस संसार पर अपना अखण्ड राज्य कर रहा है। समय समय पर वह दुःखी को सुखी सुखी, को दुःखी, धनवान को निर्धन, निर्धन को धनवान, स्वस्थ को अस्वस्थ, रोगी को स्वस्थ बना देता है। समय-समय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पर ही शीत उष्ण वायु चलाता है। समय के अनुसार ही मेघ जल बरसाते हैं। समय-समय पर ही सूर्य नारायण अपनी तीक्ष्ण किरणों से जगत को तृप्त करते हैं और फिर शान्त भी कर देते हैं। समय अनुसार ही खेतों में अन्न आदि पैदा होता है। समय अनुसार ही वृक्षों में फल फूल लग जाते हैं समय आने पर ही हमें सब वस्तुएं सफल दृष्टिगोचर होती हैं और समय आने पर ही उनका पतन हो जाता है। भगवान सदाशिव विलक्षण रूपधारी हैं। अतः काल, बन्धन, मोक्ष, प्रकृति और विश्व से पृथक ऐसे परमेश्वर भगवान सदाशिव को प्रणाम है। विरले महापुरुष अपनी विशिष्ठ बुद्धि से इस काल तत्व को तत्व रूप से समझ पाते हैं। वही इसका उल्लंघन कर सकते हैं। और जानने के पश्चात उनको भगवान सदाशिव के दर्शन हो जाते हैं।

आठवां अध्याय

(सूतजी का मुनीश्वरों को आयु का परिमाण एवं संख्या बताना। तीनों देवों की आयु का वर्णन करना। काष्ठा, कला, मूहूर्त, पक्ष, महीने, अयन, युगों की विस्तृत व्याख्या।)

ऋषियों ने श्री वायुदेव से पूछा—हे पवनदेव! अब हम यह जानना चाहते हैं कि आयु का परिमाण तथा संख्या क्या है? श्री वायुदेव ने कहा—हे मुनियो! इस काल में आयु का मान सर्व प्रथम निमेष मात्र ही कहा गया है। वैसे प्रलय काल तक ही संख्यात्मक काल की पूर्ण अवधि है। निमेष पलक मारने को कहते हैं। जब पन्द्रह निमेष व्यतीत हो जाते हैं तब काष्ठा आयु होती है। तीस काष्ठाओं के व्यतीत होने पर एक कला होती है। तीस कलाओं का एक मुहूर्त, तीस मुहूर्तों का एक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दिन-रात, पन्द्रह दिन रातों का एक पक्ष। फिर दो पक्षों का एक मास। दोनों पक्ष पितरों के दिन-रात हैं। कृष्ण पक्ष में पितरों की रात और शुक्ल पक्ष में पितरों का दिन होता है। लौकिक मान से जब छः महीने गुजरते हैं, दक्षिणायण और उत्तरायण होते हैं दक्षिणायण देवताओं की रात और उत्तरायण देवताओं का दिन होता है। लौकिक मान से जब छः महीने गुजरते हैं तो एक अयन होता है। और इसी प्रकार जब दो अयन होते हैं मनुष्यों का एक वर्ष होता है। मनुष्यों का एक साल देवताओं का एक दिन रात होता है। मनुष्यों के तीन सौ साठ वर्ष गुजरने पर देवताओं का एक वर्ष गुजरता है इस प्रकार देवताओं के वर्षों से युगों की गणना की जाती है। विद्वानों ने चार युग बताये हैं—सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग। देवताओं के चार सहस्र वर्षों का सतयुग होता है जिसमें चार सौ वर्ष की संध्या और चार सौ वर्ष का संध्यांश होता है। सतयुग को छोड़कर बाकी सभी युगों की संध्या एवं संध्यांश के साथ प्रमाण में एकपाद कम रहते हैं। जैसे कि तीस हजार वर्ष त्रेता के होते हैं। इसको तीन सौ वर्षों की संध्या और सन्ध्यांश होते हैं। द्वापर दो हजार वर्षों का होता है। कलियुग एक हजार वर्षों का और इसकी संध्या और संध्यांश एक सौ सौ वर्षों के होते हैं। इस प्रकार सतयुग से लेकर सन्ध्या और सन्ध्या के साथ-साथ सभी युगों का बारह हजार वर्षों का वर्ष प्रमाणित होता है। जब यह चारों युगों को एक हजार वर्ष गुजरते हैं तो एक कल्प हो जाता है। और इस प्रकार इकहत्तर चतुर्युगों का एक मन्वन्तर होता है। एक ही कल्प के मध्य में चौदह मनु हुआ करते हैं। इस प्रकार गणना करते-करते सैकड़ों हजारों मनु मन्वन्तर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कल्प आदि अब तक गुजर गए हैं जिनकी कि गणना नहीं हो सकती। कल्प श्री ब्रह्माजी का केवल एक दिन है। हजार कल्प श्री ब्रह्माजी का एक वर्ष होता है। जब आठ हजार वर्ष बीत जाते हैं तो ब्रह्मा का एक युग हो जाता है। हजार वर्षों का एक सवन होता है। और फिर इसी क्रमानुसार तीन हजार सवनों के निकल जाने पर श्री ब्रह्माजी की आयु पूर्ण हो जाती है। श्री ब्रह्माजी का एक दिन पूरा होने पर चौदह इन्द्र हो जाते हैं। यह इन्द्र ब्रह्मा के एक महीने में चार सौ बीस होते हैं। एक वर्ष में पांच हजार चालीस इन्द्र उत्पन्न होते हैं और समाप्त भी हो जाते हैं। इसी प्रकार ब्रह्मा की पूर्ण आयु विष्णु का एक दिन है। रुद्र का जब एक दिन होता है तो भगवान श्री विष्णु की आयु पूरी हो जाती है। ईश्वर का जब एक दिन होता है तो रुद्र की आयु पूरी हो जाती है। इस प्रकार काल की गणना की गई है। भगवान सदाशिव की पांच लाख चालीस हजार साल की आयु होने पर संसार की उत्पत्ति होती है। संहार भी होता है। सबका नाश हो जाता है, किन्तु सबका नाश होने पर भी भगवान सदाशिव का नाश नहीं होता। क्योंकि भगवान सदाशिव ही काल का रूप हैं। दिन में रचना होती है और रात में नाश होता है। यह वर्णन केवल लोकहित के लिये किया गया वस्तुतः भगवान सदाशिव का न कोई दिन है न रात।

नवां अध्याय

(मुनीश्वरों के पूछने पर पवनदेव का उनको बताना कि ब्रह्मा की आयु के दो भाग किये गये हैं प्रथम परार्द्ध तथा द्वितीय परार्द्ध और दोनों परार्द्धों की समाप्ति पर श्री ब्रह्मा की आयु समाप्त हो जाती है। उसके बाद समस्त भूतों की रचना अव्यक्त से फिर से होने लगती है।)

ऋषियों-महर्षियों ने श्री पवनदेव से कहा—हे वायुदेव!

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IES (Retd) Collection Jammu

अब संसार की रचना के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक हमें सुनाने की कृपा करें। श्री वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! ध्यानपूर्वक सुनो—सबसे पहिले सर्व शक्ति भगवान सदाशिव की शक्ति से उत्पन्न होती है। वह माया होती है। माया से फिर प्रकृति उत्पन्न होती है। और इस सबसे पहिले उत्पन्न हुई शक्ति के आगे शान्यतीत पद होता है, उसके विद्यापद, विद्यापद के आगे प्रतिष्ठा पद, उससे आगे निवृत्त पद और उससे आगे भगवान श्री सदाशिव की साधारण सृष्टि। इन सबकी अनुलोम से उत्पत्ति तथा प्रतिलोम से नाश होता है। इन पांचों पदों का उद्देश्य क्या है वह तो पर सृष्टा की भी इच्छा नहीं करता। तभी तो यह जगत पांच कलाओं से पूर्ण एवं अप्रकट कारण रूप है। इसके मध्य में स्थित सभी कुछ आत्मा सेअनुष्ठित है। महत आदि से आरम्भ करके विशेष तक रचना होती है। इसी कारण सर्वज्ञ, शक्तिमान, अनन्त, महेश्वर, भगवान सदाशिव ही सृष्टि रचना, पालन, संहारादि कार्य किया करते हैं, अन्वय से रहित हैं। सृष्टि की आदि से समाप्ति तक ब्रह्मा के सौ वर्ष गुजरते हैं। यह सौ वर्ष ब्रह्मा की पूरी आयु होती है। ब्रह्मा की आयु के दो भाग किये गये हैं प्रथम परार्द्ध और द्वितीय परार्द्ध। दोनों पराद्धों की समाप्ति में श्री ब्रह्मा की आयु पूर्ण होती है। तब अव्यक्त आत्मा अपने कार्य को ग्रहण कर लेता है। इससे विकार दूर हो जाते हैं तथा प्रधान और पुरुष दोनों अधर्म से रहित रहते हैं। तम और तत्व गुण परस्पर ओतप्रोत होकर मिले रहते हैं। अन्धकार के कारण कोई वस्तु दिखाई नहीं देती। शान्त पवन के कारण जल भी स्थिर हो जाता है। केवल भगवान सदाशिव ही अपनी महेश्वरी रूप रात्रि का सेवन करते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हैं। उसके पश्चात समस्त भूतों की रचना अव्यक्त से फिर से होने लगती है।

दसवां अध्याय

(वायुदेव का मुनीश्वरों को बताना कि ब्रह्माण्डों की रचना कैसे होती है। सबसे पहले ईश्वर की प्रेरणा से पुरुष रूप से जो अधिष्ठित हुआ है उस अव्यक्त से बुद्धि आदि से लेकर विशेष तक क्रमशः विकार उत्पन्न होते हैं। उन्हीं विकारों से तीन देवता ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र उत्पन्न हुए। और सर्व व्यापिनी अभेद्य शक्ति सभी अणिमादि वैभवों के साथ उत्पन्न हुए। इन तीनों देवताओं का कार्य रचना, रक्षा और संहार है।)

श्री पवनदेव ने कहा—हे मुनियो! अब मैं आपको ब्रह्माण्ड की रचना के बारे में बताऊंगा। सबसे पहिले भगवान सदाशिव की आज्ञा से उस अव्यक्त और पुरुष के योग से बुद्धि आदि विकार उत्पन्न हुए। उन्हीं विकारों से रुद्र, विष्णु, ब्रह्मा तीन देवता तथा अजय शक्ति, असीम ज्ञान अणिमा महिमा आदि सिद्धियां उत्पन्न हुईं। उन तीन देवताओं का कार्य क्रमशः सृजन, पालन एवं संहार था। इन तीनों देवताओं में ईश्वरत्व की भावना देखकर भगवान सदाशिव इन पर प्रसन्न हुए। एक कल्प के बीत जाने पर भगवान सदाशिव ने इन तीन देवताओं को सृजन, पालन और संहार का काम फिर सौंप दिया। यह तीनों एक दूसरे से उत्पन्न होकर एक दूसरे को धारण करते हैं। एक दूसरे से ही इनकी वृद्धि होती है और यह एक दूसरे का अनुसरण भी करते हैं। यह तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र कभी-कभी एक दूसरे की प्रशंसा भी करते हैं। और यह एक दूसरे से कम भी तो नहीं हैं। इनमें से कोई भी अपने को दूसरे से अधिक मानने वाला पिशाच तथा राक्षस योनि को प्राप्त होता है। यह तीनों पृथक-पृथक होने पर भी वास्तव में एक हैं। प्रधान से वृद्धि, ख्याति और बुद्धि (महतत्व) से तीन

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रकार का अहंकार उत्पन्न हुआ। सत्व प्रधान अहंकार सात्विक गुण पैदा हुआ वैकारिक सृष्टि एक साथ उत्पन्न हुई। वैकारिक सृष्टि है—पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां और ग्यारहवां मन। मन अपने गुणों के कारण दोनों प्रकार की इन्द्रियों के साथ रम जाता है। सम्पूर्ण प्राणियों में प्रथम आदि भूत होता है। भूत आदि अहंकार से शब्द गुण वाला आकाश पैदा हुआ। उस आकाश से स्पर्श गुण, स्पर्श से वायु, वायु से रूप, रूप से तेज, तेज से रस, रस से जल, जल से गन्ध, गन्ध से पृथ्वी उत्पन्न हुई। यह पांच महा अव्यक्त महेश्वरी की कृपा से पुरुष से अधिष्ठित रहते हैं। पुरुष के सहयोग से और अव्यक्त के अनुग्रह से महतत्व आदि विशेष ग्रहों से अण्डे को उत्पन्न करते हैं। ब्रह्मा ही अण्डे का कार्य है। अण्डे के भीतर वृद्धि पाकर ब्रह्मा नाम करके क्षेत्रज्ञ हो जाता है। यही प्रथम देहधारी पुरुष है। उसकी प्रकृति ज्ञान वैराग्य से युक्त है और बुद्धि धर्म और ऐश्वर्य की दात्री है। वह मन जो भी सोचता है वही होता है अतः आदि पुरुष ब्रह्मा अपने तीन रूप धारण कर लेता है। प्रथम चतुर्मुख वाला ब्रह्मा, दूसरा संहार के कारण रुद्र, तीसरा लोक-रक्षा के लिये हजारों सिरों वाला विष्णु। यही इसकी तीन अवस्थाएं हैं। ब्रह्मा में रजोगुण की प्रधानता है। रुद्र में तमोगुण की प्रधानता है। विष्णु में सत्व गुण की प्रधानता है। इनके कर्म भी पृथक-पृथक हैं। रचना, रक्षा और संहार। ब्रह्मा आदि पुरुष अज तथा प्रजापति नामों से प्रसिद्ध हैं। अण्ड के भीतर समस्त लोक विश्व, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, ग्रह और वायु आदि अन्तर्हित हैं। अधिक क्या कहूं अण्डे को जल, तेज, वायु और भूत आदि ढके रहते हैं। आठ प्रकृतियां भी इसी के समीप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विराजमान रहती हैं जो कि एक-दूसरे की रक्षा करती हैं। आधेयभाव वाले जितने विकारी हैं उनमें विकार रहता है। ठीक अपने अंगों को संकुचित तथा विस्तृत कर लेने वाले कछुए की भांति। यह अव्यक्त विकारों को रचते हैं और फिर उनको अन्दर ही लीन कर लेते हैं। समय के कारण गुण भी सम तथा विषम हुआ करते हैं। गुणों की समता में लय और विषमता में उत्पत्ति होती है। इसका समानत्व होने पर प्रलय हो जाती है। अतः यह अण्ड ब्रह्मा की योनि है। यही ब्रह्मा का निश्चयात्मक क्षेत्र है। तभी तो ब्रह्मा क्षेत्रज्ञ है। ऐसे ब्रह्माण्ड करोड़ों हैं। इन ब्रह्माण्डों ने ही चतुर्मुख विष्णु तथा रुद्र आदि की रचना की है। यह सब भगवान सदाशिव की समीपता पाकर स्थिर रहते हैं। अण्ड से उत्पन्न हुए ब्रह्मा ने इन लोकों की रचना की है। पहिले प्रवृत्त होने वाली प्रधान सृष्टि तथा प्रलय काल में सबका प्रलय यह दोनों कार्य तो केवल भगवान सदाशिव की लीलामात्र हैं। हे मुनीश्वरो! याद रहे कि लीला नामक भगवान सदाशिव के केवल संकल्प द्वारा ही यह सब कुछ होता रहता है।

ग्यारहवां अध्याय

(मन्वन्तरों और उनके कल्पों के भेद और उनमें उत्पन्न होने वाले जन-संघ का वर्णन।)

मुनीश्वरों ने कहा—हे पवनदेव! अब आप हमें ब्रह्माण्ड की रचना के बारे में बताइये। श्री वायुदेव बोले—हे ऋषियो! सबसे पहले ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं। उनके एक दिन में चौदह मन्वन्तर हो जाते हैं। उन मन्वन्तरों के असंख्य होने के कारण उनकी गणना नहीं हो सकती। इस समय बारह कल्प हैं और चौदह मन्वन्तर हैं। उनमें से सातों का स्वायंभुव तथा अन्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सातों का सावर्णिक नाम है। इन चौदह मन्वन्तरों में सातवां वैवस्तु मन्वन्तर (मनु) वर्तमान है। सारे मन्वन्तरों में एक जैसी रचना, रक्षा और संहार होता है। जब प्रथम कल्प की समाप्ति होने लगी तब भयानक प्रलय कारक पवन चली, जिसने कि वन वृक्ष एवं पर्वतों को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया। और तीनों देवताओं के मध्य में अग्निदेव उत्पन्न हो गए और उन्होंने त्रिलोकी को तिनके के समान जला दिया। वर्षा जल से पूर्ण होकर सागर उछल पड़े जिससे समस्त दिशाएं जल से भर गईं। उस समय ब्रह्माजी नारायण रूप होकर जल में सुखपूर्वक सो गए। ब्रह्मा नारायण क्यों बने? सुनिये—नारा शब्द पानी का वाचक है और जल नर का पुत्र है। जल-से-ही जल की उत्पत्ति है। अयन जल का स्थान है। अतः इसी से ब्रह्मा को नारायण रूप धारण करना पड़ा। जब सृष्टि का आदि काल होता है तो श्रुतियां जिस प्रकार ईश्वर को जगाती हैं उसी प्रकार योगनिद्रा में सोते हुए ब्रह्मा रूप भगवान सदा-शिव को भी प्रातः होने पर देवता तथा जन लोक निवासी सिद्धों ने हाथ जोड़-जोड़कर जगा दिया। नारायण ने जल शय्या से उठकर चहूं ओर देखा। आश्चर्य में पड़कर विचारने लगे कि विशाल धरित्री कहां चली गई जिस पर कि बड़े-बड़े पर्वत, नदियां, नगर और वन स्थित थे। तब उन्होंने अपने पिता भगवान सदाशिव को याद किया। उससे उनको ज्ञात हो गया कि पृथ्वी जल में डूब गई है। फिर उन्होंने पृथ्वी को जल में से निकालने के लिए वाराह रूप का स्मरण किया और स्वयं पर्वत के समान विशालकाय वाराह का रूप धरकर अपने दीर्घ निश्वासों द्वारा प्रलय समुद्र को झक-झोरते हुए श्री ब्रह्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जी वाराह रूप वाले जल के मध्य में से पृथ्वी को ढूंढकर अपने दांतों पर रखकर निकाल लाये और उसको यथा स्थान रख दिया और उस पर पूर्ववत चारों लोकों की रचना कर दी। उस समय उनकी अद्भुत शोभा देखकर यमलोक निवासियों ने प्रसन्न होकर उन पर पुष्प वर्षा की और नाचने लगे।

बारहवां अध्याय

(श्री ब्रह्माजी का सृष्टि की रचना का ध्यान करना। पक्षियों तथा पशुओं की सृष्टि उत्पन्न करना। देवताओं तथा मानवों की सृष्टि पैदा करना। सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार तथा ऋभु मानस पुत्रों का पैदा करना। भगवान सदाशिव द्वारा ग्यारह रुद्रों की उत्पत्ति। वेदों, छन्दों और अग्निष्टोम आदि यज्ञों की रचना।)

वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! उसके बाद श्री ब्रह्माजी सृष्टि की रचना का ध्यान करने लगे। बस, तब उनको तम, मोह, महामोह, अन्धतामिस्र और अविद्या ने दबा लिये। जिससे चहूं ओर अन्धेरा छा गया। अन्धेरे के छा जाने से चारों तरफ वृक्ष पैदा हो गये। किन्तु वृक्षों के पैदा होने से श्री ब्रह्मा जी प्रसन्न नहीं हुए। फिर उन्होंने पक्षियों की रचना की। किन्तु इससे भी उनको प्रसन्नता नहीं हुई। फिर उन्होंने पशुओं की सृष्टि की। इससे भी उनको कोई सन्तोष नहीं हुआ। इसके पश्चात उन्होंने सात्विक देवताओं तथा मनुष्यों की रचना की। देवताओं की सृष्टि भीतर बाहर से ज्ञान वाली थी तथा ब्रह्माजी के लिए सन्तोषकारक थी। मानव सृष्टि अन्दर तथा बाहर से प्रकाशमयी सूक्ष्म तमोगुण एवं विशेष कर रजोगुण वाली हुई। इसके अतिरिक्त अनुग्रह और कोमारों को जन्म दिया। अब श्री ब्रह्माजी ने अपने समान ही सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार तथा ऋभु यह मानस पुत्र पैदा किये। यह सब ईश्वर भक्त और योग मार्ग गामी हुए। उन्होंने सृष्टि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

की ओर कोई ध्यान न दिया और वनों को चले गये। यह देख कर ब्रह्माजी ने सृष्टि की इच्छा से फिर तपस्या की। किन्तु तपस्या से कुछ न हुआ। इससे उनको बड़ा क्रोध और दुःख हुआ और उनके नेत्रों से अश्रु प्रवाह होने लगा। उनके अश्रु जल से भूत प्रेत आदि पैदा हुए। इससे उनका क्रोध और भी बढ़ गया। इस भयानक सृष्टि को देखकर उनको आत्म-ग्लानि हुई और इस कारण उन्होंने देह का त्याग कर दिया। उस समय भगवान रुद्र श्री ब्रह्मा को पुनर्जीवित करने के लिए स्वयं उनके मुख द्वारा पैदा हो गये। फिर भगवान रुद्र ने अपने ही शरीर से ग्यारह रुद्र पैदा कर दिये और कहा—हे पुत्रो! मैंने आपको लोक हित के लिए उत्पन्न किया है। इसलिये आप प्रजा रचने के काम में लग जाओ। लेकिन भगवान की बात सुनकर वह ग्यारह रुद्र रोने लगे और भागना चाहा। इस पर भगवान रुद्र ने कहा—रुद्र ही प्राण हैं और प्राण ही रुद्र हैं। तुम्हारा जन्म लोकों की वृद्धि के लिए किया गया है रुद्र रुक गये। अब भगवान सदाशिव ने श्री ब्रह्मा की मृतक देह में प्राणों का संचार कर दिया और बोले—हे प्रजापते! डरो मत। मैंने तुमको पूर्ण जीवित कर दिया है अब तुम सुखपूर्वक उठ बैठो। इस पर ब्रह्मा जी उठकर बैठ गये और अपने सम्मुख भगवान सदाशिव को खड़े देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। बोले—प्रभो! यह आपकी मुझ पर अपार कृपा है जो आपने मुझको दर्शन दिये हैं। अब कृपया यह बतलाइये कि यह ग्यारह मूर्तियां कौन हैं? इस पर श्री रुद्र जी ने कहा—यह ग्यारह रुद्र आपकी रक्षा के लिये आये हैं। अब तुम अपनी मूर्च्छा का त्याग करो और पूर्ववत रचना-कार्य में लग जाओ। भगवान सदाशिव की बात सुनकर श्री ब्रह्माजी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान की स्तुति करने लगे। फिर हाथ जोड़कर प्रार्थी हुए— प्रभो! आपने कामदेव के नाश के लिए मेरी देह से जन्म लिया है। सृष्टि निर्माण का काम बहुत बड़ा है। अतः इस कार्य में आप भी मेरे सहायक बनें। आपकी सहायता से ही सृष्टि निर्माण का कार्य चल सकता है। श्री ब्रह्माजी की बात सुनकर श्री रुद्रदेव ने "तथास्तु" कहा। फिर उनकी आज्ञा से श्री ब्रह्मा ने अपने मन से मरीचि, भृगु, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, दक्ष, अत्रि, वशिष्ठ, रुद्र और ग्यारह रुद्र देव वृन्द और महर्षि उत्पन्न किये। उसके बाद मुख से देवताओं को, वक्षः-स्थल से पितरों को, जंघा से दैत्यों को, जननेन्द्रियों तथा उपस्थेन्द्रियों से राक्षसों को उत्पन्न किया। इसके साथ ही सर्प, दक्ष, गंधर्व, भूत, पक्षी, बकरी, अश्व, हाथी, गैंडा, गव्य, मृग, ऊंट, खच्चर, नेवले तथा अन्य जाति के पशु पैदा किये। फिर वेदों, छन्दों और अग्निष्टोम आदि यज्ञों की रचना की, श्री ब्रह्माजी ने अपनी पैदा की हुई प्रजा का उन्हीं के अनुकूल कार्य-विभाजन कर दिया। प्रजा अपने-अपने कर्मों के अनुसार जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़कर फल भोगने लगी।

वेद के वाक्यानुसार ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, वक्षः-स्थल से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और चरणों से शूद्रों का आविर्भाव हुआ। अब आप उनके विराट रूप के भी दर्शन कर लीजिये। अन्तरिक्ष उनका पूर्धा, आकाश उनकी भूमि, चन्द्र सूर्य उनके नेत्र, दिशाएं उनके कर्ण और भूमि उनके चरण हैं। हे मुनि वृन्द! यही विधि भगवान की रचना का मूल तारतम्य है।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तेरहवां अध्याय

(वायुदेव का ऋषियों को बताना कि ब्रह्मा, रुद्र और विष्णु तीनों एक दूसरे से ईर्ष्या रखते थे और अपने को महान बनाना चाहते थे। रुद्र ने तप द्वारा भगवान सदाशिव को प्रसन्न करके सर्वात्मा प्राप्त कर ली। विष्णु का वैभव देखकर ब्रह्मा का जलना। महेश का दोनों को वरदान प्रदान करना।)

महर्षियों ने श्री वायुदेवजी से पूछा—हे पवनदेवजी! आपने भगवान सदाशिव के मुख से सृष्टि के उत्पन्न होने के बारे में जो कुछ बताया है उसके लिये हम आप के धन्यवादी हैं। किन्तु हमारा एक संशय है कृपया उसे दूर कीजिये। आपने कहा है जब सृष्टि का आरम्भ होने लगता है तो पहले भगवान सदाशिव द्वारा ब्रह्मा तथा विष्णु पैदा होते हैं। भगवान सदाशिव अपनी लीला द्वारा इस समस्त जगत की रचना करते हैं। फिर प्रलय में अग्नि ब्रह्मा एवं विष्णु के साथ-साथ उनका नाश भी कर देते हैं। इस तरह भगवान सदाशिव का ब्रह्मा पुत्र असम्भव जान पड़ता है। हे पवनदेव! आप हमारे इस संदेह को दूर कीजिये। श्री वायुदेव ने कहा—हे मुनिवृन्द! रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा इन तीनों देवों को भगवान सदाशिव ने निर्माण, पालन तथा संहार के लिए उत्पन्न किया। उनको एक दूसरे से इसलिये ईर्ष्या पैदा हो गई कि उन तीनों ने ही यह सोचा कि बाकी दोनों से मैं बड़ा हूं। अब रुद्र भगवान सदाशिव को प्रसन्न करने के लिए तप करने लगे और उन्होंने पिता सदाशिव को प्रसन्न करके सर्वात्मा प्राप्त कर ली और यह भगवान सदाशिव की लीला है कि वह किसी कल्प में, तप द्वारा प्रसन्न होकर ब्रह्मा विष्णु को पहले उत्पन्न करते हैं और स्वयं उनके पिता बन जाते हैं। दूसरे कल्प में सदाशिव ब्रह्मा ही विष्णु रुद्र को पैदा कर देते हैं। किसी कल्प में विष्णु ब्रह्मा रुद्र को प्रकट कर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

देते हैं। इसी प्रकार कल्प भेद से ब्रह्मा विष्णु रुद्र एक दूसरे को प्रकट किया करते हैं। देखिये! जब मेघ वाहन कल्प लगा तो उस समय भगवान श्री विष्णु ने मेघ बनकर मेघ रूप धारण कर लिया। तब वह दस हजार वर्ष तक पृथ्वी को धारण किये रहे। उनके इस प्रभाव को देखकर भगवान सदाशिव ने उनको अमोघ शक्ति प्रदान की। अब उन्होंने ब्रह्मा के साथ मिलकर विश्व रचना का कार्य आरम्भ किया। उस समय श्री ब्रह्माजी भगवान श्री विष्णु के प्रभाव को देखकर जलकर बोले—मैं तुम्हारी इस रचना का समस्त कारण जान चुका हूं। इसलिए अब तुम चले जाओ। भगवान सदाशिव हम दोनों से अधिक बली हैं एवं हम दोनों के स्वामी हैं। अब मैं उनको तपस्या द्वारा सन्तुष्ट करना चाहता हूं। जिससे कि मैं सम्पूर्ण विश्व को तथा तुमको रच सकूं। इतना कहकर वह शीघ्र ही भगवान सदाशिव के पास पहुंच गये और प्रणाम करके व हाथ जोड़कर कहने लगे—प्रभो! देवाधीश! आपके वाम अंग से विष्णु और दक्षिण अंग से मैं पैदा हुआ हूं। वह अच्युत इतने पर भी मेरे साथ-साथ जगत की रचना कर रहा है। उसने मुझे फटकारा भी है। जब आप से ही हम दोनों का जन्म हुआ है क्या विष्णु मुझसे बढ़कर आपका भक्त है? भगवान श्री सदाशिव ने हंसकर श्री ब्रह्माजी को भी शक्ति दे दी। श्री ब्रह्माजी ने अब क्षीर सागर में शयन करते हुए भगवान श्री विष्णु को देखा तो ढीठता से बोले—अब मैं आपसे बदला लेने के लिए आपको मारूंगा। श्री ब्रह्माजी की बात सुनकर भगवान श्री विष्णु अर्थ-पूर्ण ढंग से हंस दिये। लेकिन इसके साथ ही श्री ब्रह्माजी ने उनको ग्रस लिया। परन्तु उसी क्षण भगवान श्री विष्णु उनको ही भ्रू

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से प्रगट हो गये। भगवान श्री सदाशिव भी उन दोनों की शक्ति देखने के लिए वहां पर उपस्थित हो गये। उनको देख कर दोनों ने उनको प्रणाम किया और स्तुति की। भगवान श्री सदाशिव ने अपनी अमोघ शक्ति से उन दोनों का क्रोध निवारण कर दिया और अन्तर्ध्यान हो गये।

चौदहवां अध्याय

(ब्रह्माजी का पैदा होकर देखना कि मेरी रची हुई सृष्टि बढ़ नहीं रही। तो भगवान सदाशिव से सृष्टि रचना के लिए प्रार्थना करना। भगवान का अनेकों रुद्रों का प्रकट करना।)

रुद्रदेव बोले—हे ब्राह्मणो! अब मैं आपको रुद्र भगवान की उत्पत्ति का कारण सुनाऊंगा। वह कारण जिसके द्वारा नई सृष्टि पैदा हो जाती है। श्री ब्रह्माजी अण्ड से प्रकट होकर जब देखते हैं कि मेरी सृष्टि बढ़ नहीं रही तो बहुत दुःख मानते हैं; और उनका यह दुःख मिटाने के लिये भगवान सदाशिव की इच्छानुसार उन कल्पों में श्री ब्रह्माजी से पुत्र रूप हो श्री रुद्रजी प्रकट हो जाते हैं और अपनी कृपा से श्री ब्रह्माजी की सृष्टि बढ़ाते हैं। जब भगवान श्री सदाशिव से श्री ब्रह्माजी ने सृष्टि बनाने के लिये प्रार्थना की तो भगवान सदाशिव ने अपनी कृपा से अपने जैसे जटाधारी कई रुद्र पैदा कर दिये। वह सारे संसार में छा गये। उन सबका बड़ा ही भयंकर रूप था। यह देखकर श्री ब्रह्माजी ने भगवान सदाशिव से कहा—प्रभो! आपको प्रणाम है। यह आपने क्या कर डाला है? हमें ऐसी भयानक सृष्टि की आवश्यकता नहीं है। आप ऐसी प्रजा की रचना कीजिये जो कि पैदा भी होती रहे और मरती भी रहे। इस पर भगवान सदाशिव ने हंसकर कहा—हे ब्रह्मदेव! मैं तुम्हारी इच्छित प्रजा की रचना नहीं कर सकता। मैं तो ऐसी ही प्रजा रचूंगा। इसलिए तुम अब अपनी मनचाही प्रजा रचो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पन्द्रहवां अध्याय

(श्री ब्रह्माजी का मैथुन द्वारा सृष्टि रचना का विचार करना और भगवान सदाशिव को सन्तुष्ट करने के लिए तप करना। भगवान सदाशिव का आधा रूप स्त्री व आधा रूप पुरुष का धरकर श्री ब्रह्माजी के सम्मुख प्रकट होना।)

श्री वायुदेव ने कहा—हे मुनीश्वरो! जब श्री ब्रह्माजी को प्रजा बढ़ती हुई दिखाई न दी तो उन्होंने मैथुन द्वारा सृष्टि रचना का विचार किया। किन्तु इससे पहिले स्त्री वंश की रचना ही न की गई थी। अतः उन्होंने भगवान सदाशिव को सन्तुष्ट करने के लिए कठोर तप करना आरम्भ कर दिया। उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान सदाशिव आधा रूप स्त्री और आधा रूप पुरुष का धारण करके श्री ब्रह्माजी के सम्मुख प्रकट हो गये। उनको देखकर श्री ब्रह्माजी ने अपने आसन से उठकर अनेकों स्तोत्रों द्वारा उनकी स्तुति की—प्रभो! सर्वगुण निधान महेश्वर जी तथा बड़ी-बड़ी अमोघ लीलाएं करने वाली जगन्माता को मैं प्रणाम करता हूं। हे ऋषियो! सदाशिव और शिवा अपने अर्धना ईश्वर स्तोत्र से अत्याधिक प्रसन्न हुए। अधिक क्या कहूं वह नरवर और युवति की देह को धारण करने वाले सदाशिव और शिवा सदा-सदैव प्रणाम करने के योग्य हैं।

सोलहवां अध्याय

(श्री ब्रह्माजी के प्रजा की वृद्धि हेतु किये गये तप से भगवान सदाशिव का प्रसन्न होना। उनका अपनी देह के भाग से दिव्यगुण वाली शक्ति को प्रकट करना। ब्रह्मा जी की इच्छानुसार शक्ति का दक्ष की पुत्री बनना। जगत में स्त्रियों के भोग की व्यवस्था प्रारम्भ होना।)

वायुदेव ने कहा—हे मुनीश्वरो! श्री ब्रह्माजी के इस प्रकार भगवान सदाशिव और शिव की स्तुति करने पर मन्द-मन्द

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हास्य करते हुए भगवान सदाशिव ने श्री ब्रह्माजी से कहा—हे ब्रह्मदेव! तुम मेरे पुत्र हो और मैंने तुम्हारी कामना को भली भांति समझ लिया है। तुमने सृष्टि की वृद्धि के लिए तपस्या की है। तुमको मैं तुम्हारा मन चाहा वर प्रदान कर रहा हूं। इतना कहकर भगवान सदाशिव ने अपने ही अंग से एक दिव्य शक्ति वाली परम शक्ति को प्रकट कर दिया। उसको देखकर श्री ब्रह्माजी ने उससे प्रार्थना की—हे भगवती! मैं सृष्टि रचना के लिये ही भगवान सदाशिव द्वारा उत्पन्न किया गया हूं। और उनके आदेश से ही मैंने देवता एवं ऋषि आदि उत्पन्न किये हैं। ऐसा करने पर भी सृष्टि बढ़ नहीं पा रही अतः अब मैं मैथुन के द्वारा अपनी प्रजा को बढ़ाना चाहता हूं। यह तभी हो सकता है जब कि नारी की रचना हो। इसलिये आप से प्रार्थी हूं कि आप एक अंश से मेरे पुत्र दक्ष के यहां पुत्री के रूप में जन्म लें। तभी आपके द्वारा सृष्टि की वृद्धि प्राप्त होगी। श्री ब्रह्माजी की प्रार्थना से प्रसन्न हो परम शक्ति ने अपनी भृकुटियों के मध्य से अपने जैसे तेज वाली एक और शक्ति को प्रगट किया। भगवान सदाशिव ने उस शक्ति को देखकर कहा—देवि! तुम तप द्वारा श्री ब्रह्मा को प्रसन्न करो और इनकी इच्छा को पूर्ण करो। उस देवि ने भगवान सदाशिव की आज्ञा मान ली और ब्रह्माजी की इच्छानुसार दक्ष की पुत्री होकर वहां रहने लगी। महादेवी श्री ब्रह्माजी को अपनी अतुल शक्ति देकर आप श्री सदाशिव की देह में प्रविष्ट हो गई। भगवान सदाशिव भी अन्तर्ध्यान हो गए और उसी समय से मैथुन सृष्टि चल पड़ी।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सत्रहवां अध्याय

(श्री व्रायुदेव का शौनक आदि ऋषियों को मनु की सृष्टि के सम्बन्ध में कथा सुनाना। श्री ब्रह्माजी ने अपने आधे शरीर से शतरूपा नामक नारी को उत्पन्न करना और आधे शरीर से स्वायम्भुव मनु पुरुष पैदा करके मैथुन सृष्टि की रचना करना।)

श्री वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! श्री शिवजी से परम शक्ति प्राप्त करके श्री ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के लिए अपने आधे भाग से शतरूपा नाम की नारी उत्पन्न की और आधे भाग से स्वायम्भुव नामक पुरुष पैदा किया। शतरूपा ने कठिन तपस्या द्वारा मनुजी को पति रूप में प्राप्त किया। फिर उन दोनों ने मैथुन द्वारा प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र उत्पन्न किये और आकूति, देवहूति, प्रसूति नाम की तीन कन्याएं पैदा कीं। मनु ने दक्ष को प्रसूति विवाह दी और आकूति रुचि को विवाह दी। आकूति से यज्ञ और दक्षिण नामक दो पुत्र पैदा हुए। प्रसूति से दक्ष प्रजापति ने श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, पुष्टि, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शांति सिद्धि, कीर्ति, ख्याति, सती, सम्भूति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनुसूया, ऊर्जा, स्वाहा, स्वधा नाम की चौबीस कन्यायें पैदा कीं। उनमें से श्रद्धा आदि तेरह कन्यायें धर्म से ब्याही गईं। ख्याति आदि दस कन्यायें भृगु, रुद्र, मरीचि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, अत्रि, वशिष्ठ एवं अग्नि के साथ ब्याही गईं। और शेष तीन ऊर्जा आदि पितरों ने ग्रहण कर लीं। धर्म ने श्रद्धा आदि तेरह पत्नियों से काम आदि तेरह पुत्र पैदा किये। अधर्म की पत्नी हिंसा ने अधर्म, लक्षण, वाण, दुखोन्तर, निकृति आदि पुत्र पैदा किये। यह सब पुत्र स्त्री हीन एवं धर्म के शत्रु थे। दक्ष की पुत्री सती श्री रुद्र को अपना पति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पाकर पिता के यज्ञ में, पिता द्वारा अपने पति की निन्दा सहन न कर सकी, अतः अपने को यज्ञ-कुण्ड में गिराकर भस्म कर डाला। फिर वह मैना व हिमालय की पुत्री हुई। नाम था उमा। वह कठिन तपस्या द्वारा भगवान रुद्र की ही पत्नी हुई। भगवान रुद्र ने असंख्य पुत्रों को रचा। महर्षि भृगु ने ख्याति नाम की पत्नी से लक्ष्मी और धाता विधाता नामक दो पुत्र और पैदा कर दिये। वह सब-के-सब स्वायम्भुव मन्वन्तर में भार्गव वंशीय कहलाये। महर्षि मारीच ने अपनी पत्नी स्मृति से चार कन्यायें और पौर्णमास नामक पुत्र पैदा किया। उसका वंश बहुत बढ़ा। महर्षि ने अपनी स्वभूति नाम पत्नी से आग्नींध्र तथा शरभ दो पुत्र पैदा किये और चार कन्यायें पैदा कीं। इनके आगे फिर हजारों पुत्र तथा पौत्र हुए। महर्षि पुलस्त्य की स्त्री से दन्तअग्नि पुत्र पैदा हुआ। जो स्वायम्भुव मन्वन्तर में पूर्वजन्म में महर्षि अगस्त्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी सन्तान पौलस्त्य कहलाई। पुलह ने अपनी पत्नी क्षमी से कर्दम, आसुरि एवं सहिष्णु तीन पुत्रों को पैदा किया जो कि त्रेताग्नि जैसे तेजस्वी थे। उनका वंश भी बहुत बढ़ा। क्रतु की स्त्री सन्नति नाम पत्नी ने बाल, खिल्य आदि साठ हजार पुत्रों को पैदा किया। यह सब-के-सब बाल ब्रह्मचारी हैं और सूर्यदेव को चहूं ओर से घेरे रहते हैं। महर्षि अत्रि ने अपनी पत्नी अनुसुइया से सत्य, नेत्र, हव्य, आपोमूर्ति, शनैश्चर और सोम नामक पांच पुत्र और श्रुति नामक एक कन्या पैदा की। यह सब-के-सब आत्रये कहलाये। श्रुति पूर्व जन्म में महर्षि शंख की माता थी। महर्षि वशिष्ठ ने अपनी पत्नी से पुण्डरीक, रज, गात्र, ऊर्ध्व बाहु, सवन, अनय, सुतया एवं शत्रु नामक सात पुत्र पैदा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किये। यह सात ऋषि कहलाये इनके नामों से इनकी सन्तान के गोत्र प्रसिद्ध हुए। स्वायम्भुव मन्वन्तर में इन पुत्रों से सैकड़ों हजारों पुत्र पौत्र पैदा हुए। हे मुनीश्वरो! यह मैंने आपके सामने ऋषि सन्तानों का वर्णन किया है। अब मैं दूसरों की सृष्टि का वर्णन करूंगा ध्यानपूर्वक सुनिये। श्री ब्रह्माजी को मन से उत्पन्न रुद्र रूप जो अग्नि हुए, उन्होंने अपनी पत्नी स्वाहा से पावक, पवमान एवं शुचि नाम के तीन पुत्र पैदा किये। पवमान मन्थन की अग्नि है और सूर्य की अग्नि शुचि कहलाती है। इसके अतिरिक्त हव्यवाह, कव्यवाह एवं सहरक्षा इन तीन अग्नियों से क्रमशः देवता, पितर और असुर पैदा हुए। उनके यहां फिर उनंचास पुत्र पैदा हुए। यह तो नित्य नैमित्तिक एवं काम्य इन तीनों कर्मों में स्थित हैं। तभी तो अग्नि में हवन किया हुआ पदार्थ रुद्र को प्राप्त होता है। हे मुनियो! अब आप पितृ वंश सुनिये। बसन्त आदि यह छः ऋतुएं पितरों के स्थान हैं। गृहस्थियों के दो प्रकार के पितर होते हैं—अयज्वान, अग्नि स्वान्त एवं यज्वान यह तो बर्हिषद हैं। स्वधा ने पितरों के योग से जगत प्रसिद्ध मैना वर्हिषद पितरों ने धारणी नामक कन्या पैदा की। अग्निस्वान्त पितरों ने मैना को हिमाचल से ब्याहा। मैना द्वारा हिमाचल ने मैनाक व क्रौंच नामक दो पुत्र तथा रुद्र पत्नी उमा व गंगा पैदा की। वर्हिषद ने धारणी कन्या मेरू को ब्याह दी। धारणी ने सुन्दर सुन्दर गुफाओं वाले तथा दिव्य औषधियों वाले मन्दराचल पुत्रों को पैदा किया। भगवान रुद्र के शाप से दक्ष प्रजापति भी चाक्षुष मन्वन्तर में उनके पुत्र हुए। धारणी ने इन पुत्रों के अतिरिक्त तीस कन्यायें भी पैदा कीं। जिनमें बेला, नियति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

और आयति प्रसिद्ध थीं। बेला का सम्बन्ध समुद्र से और आयति नियति का सम्बन्ध भृगु के पुत्रों के साथ हुआ। बेला ने सागर के सहयोग से सामुद्री नामक कन्या को जना। वह प्राचीन वर्हि की पत्नी हुई। उसने पति के योग से दस पुत्रों को जन्म दिया। वह सब आचेतस कहलाये जो कि धनुर्वेद शास्त्र के विद्वान थे। श्री वायुदेव ने कहा—हे मुनियो! यह धर्म आदि वंश का विस्तार मैंने तुम्हें सुनाया यह सब संक्षेप में है। पूरा वर्णन तो शायद सैकड़ों वर्षों में भी न किया जा सके।

अठारहवां अध्याय

(ऋषियों-महर्षियों, देवताओं एवं राक्षसों का भगवान सदाशिव के दर्शनों के लिए हिमालय के शिखर पर जाना। दक्ष का भी अपनी पुत्री व दामाद को देखने के लिए वहां पहुंचना। मुनियों व देवताओं के आतिथ्य-सत्कार में संलग्न होने के कारण भगवान सदाशिव व सती का उसकी ओर ध्यान न देना। दक्ष का यज्ञ रचना। सती का उस यज्ञ में सम्मिलित होना। दक्ष का भगवान सदाशिव का अपमान करना। सती का अपमान न सहन करना एवं अपनी जीवन-लीला समाप्त कर डालना। भगवान सदाशिव का मार डालना।)

मुनीश्वरों ने श्री वायुदेव से पूछा—प्रभो! हम अब यह जानने के इच्छुक हैं कि दक्ष की पुत्री सती ने अपना शरीर तो अपने पिता दक्ष के यज्ञ के हवन कुण्ड में गिरा कर अपने आपको भस्म कर डाला था तो फिर उसने दोबारा किस कारण से हिमाचल के घर जन्म लिया और दक्ष ने किस कारण से भगवान सदाशिव की निन्दा की थी? फिर दोबारा दक्ष का जन्म किस प्रकार हुआ? वायुदेव बोले—हे मुनियो! सुनो, जो कुछ भी आपने पूछा है वह सब मैं विस्तारपूर्वक आप लोगों को बताता हूं। एक बार देवता, दैत्य, ऋषि-महर्षि सब इकट्ठे होकर भगवान सदाशिव के दर्शनों के लिए हिमालय के शिखर पर पहुंचे। सबने सती सहित भगवान सदाशिव के दर्शन किये और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

गद्-गद् हो गए। संयोगवश दक्ष भी उस समय अपनी कन्या व जामाता को देखने के लिए वहां आन पहुंचा। सती चूंकि उस समय देवताओं के अतिथि-सत्कार में लगी हुई थी। वह एवं भगवान सदाशिव दक्ष की ओर ध्यान न दे सके। भगवती सती उसके आगमन की ओर ध्यान नहीं दे पाई यह देखकर दक्ष के क्रोध का वार-पार न रहा। अतः वह अपनी पुत्री का शत्रु बन गया और इस कारण से उसने भगवान शंकर और सती को यज्ञ में आमन्त्रित नहीं किया। उसने अन्य सभी कन्याओं और दामादों को तो यज्ञ में निमन्त्रित किया, किन्तु भगवान सदाशिव और सती को नहीं। संयोगवश देवर्षि नारद, इसी बीच में कैलाश पर्वत पर पहुंचे और भगवान सदाशिव को दक्ष के अन्य सभी कन्याओं और दामादों को यज्ञ में बुलाने का सभी समाचार सुनाया। सती भगवान सदाशिव से आज्ञा लेकर अपने पिता दक्ष के यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए तैयार हो गईं। वह अपने सैनिकों के साथ सुसज्जित होकर चल रही थीं। उनकी सखियां चौर छत्र उठाये हुए उनके साथ-साथ चलती हुई सती की शोभा बढ़ा रही थीं। ऋषि-मुनि नृत्य कर रहे थे। सिद्ध योगी आदि मारे हर्ष के फूले नहीं समा रहे थे। देवता अपने-अपने विमानों पर सवार होकर महारानी सती पर पुष्प वर्षा कर रहे थे। मार्ग में मिलने वाले सज्जन भी सब-के-सब इस शुभ यात्रा (जलूस) में सम्मिलित होते जा रहे थे। सती अपने पिता के भवन में जा पहुंची। दक्ष उसे देखकर प्रसन्न नहीं हुआ बल्कि उसे देखकर उसका पारा बुरी तरह चढ़ गया। उसने सती का सम्मान नहीं किया। बल्कि अपनी छोटी कन्याओं से उसका अपमान कराया। यह देखकर सती ने उचित शब्दों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

में उसको डांटा-फटकारा। सती ने कहा—पिताजी! सुनिये, मैं आपकी बड़ी कन्या हूं। आपने मुझे अपने यज्ञ में आमन्त्रित क्यों नहीं किया। क्या आप मुझ बड़ी कन्या को एकदम भुला बैठे हैं। ब्रह्मा से लेकर पिशाच तक सभी मेरे पतिदेव की आज्ञा का पालन करते हैं। आपने उनको यहां न बुलाकर बड़ा निंदनीय कार्य किया है। दक्ष सती के इतने शब्दों से आग बबूला हो गया। उसने कड़क कर कहा—सुनो! तुम्हारी सब छोटी बहनें तुमसे कहीं अच्छी और पूजनीय हैं। उन सबके पति भी सज्जन और मान्य हैं। एक तुम्हारा पति है जो कि तामसी एवं अभिमानी है क्योंकि तुम्हारा पति, तमोगुणी आलसी और निरुद्यमी है, अतः तुम भी वैसी ही बन गई हो और इस लिए तुम भी अपमान की पात्र हो। पिता की बात सुनकर भगवती को क्रोध आ गया। उसने अपने पिता से कहा—तुमने मेरे निर्दोष पति को बिना सोचे समझे दोष लगाया है। इस कारण तुम दण्डनीय हो। क्योंकि विद्या के चोर, गुरु निंदक, शिवद्रोही सबके सब दण्डनीय हुआ करते हैं। तुम चूंकि शिवनिंदक हो, इसलिए तुम शीघ्र ही अपने वंश का नाश समझो। इतना कहकर भगवती सती ने हवन-कुण्ड में छलांग लगा दी और सबके देखते-ही देखते भस्म हो गई। हे मुनीश्वरो! उस समय सती जैसी पुत्री पाने के लिए हिमाचल कठिन तपस्या कर रहे थे। अतएव उनकी तपस्या सफल करने के लिए, सती ने उनके यहां जाकर जन्म लिया और उनको अपनी इच्छा से अपना पिता निश्चित कर लिया। उधर वह शिवगण जो सती के साथ यज्ञ में गए थे उन्होंने जाकर भगवान सदाशिव को सभी वृत्तान्त सुनाया। भगवान सदाशिव तुरन्त दक्ष की यज्ञशाला में पहुंचे और वहां

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बैठे दक्ष, ऋषियों-महर्षियों एवं यज्ञ के सभी सभासदों को शाप दे डाला। उन्होंने कहा—ओ नीच दक्ष! निर्दोष सती का तूने भारी अपमान किया है और तुम ही उसकी मृत्यु का कारण हो अतः तुमको अपने इस नीच कर्म का फल अवश्यमेव भोगना पड़ेगा। तुम्हारी यह कन्याएं और उनके पति सब ब्रह्म यज्ञ में स्वायंभुव मन्वन्तर में अयोनिज उत्पन्न होंगे और तुम चाक्षुष मन्वन्तर में प्रचेता के पुत्र और प्राचीन वर्हिषद के नाती होकर जन्म लोगे। भृगु आदि यज्ञ के आचार्य भी वारूणी देह को धारण करके अपना काल यापन करेंगे। भगवान सदाशिव के श्राप से दक्ष का शरीर कटे हुए वृक्ष की भांति भूमि पर गिर पड़ा और तुरन्त ही उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

उन्नीसवां अध्याय

(भगवान सदाशिव और पार्वती का विवाह। दक्ष का वैवस्वत मन्वन्तर में गंगा द्वार पर यज्ञ करना। यज्ञ में भगवान सदाशिव को आमन्त्रित न करना। महर्षि दधीचि का दक्ष को फटकारना। भगवान सदाशिव और भगवती पार्वती का वीरभद्र तथा भद्र-काली को प्रकट करके दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने के लिए भेजना।)

ऋषियों-महर्षियों ने पूछा—हे वायुदेव! अब आप हमको यह बतलाइये कि धर्म एवं अर्थ में लगे हुए दक्ष के यज्ञ में भगवान सदाशिव ने विघ्न क्यों डाला? कृपया आप हमें यह कथा विस्तारपूर्वक सुनाइये। श्री वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! सुनिये। अपनी तपस्या के फलस्वरूप जगदम्बा ने हिमाचल राज के यहां पुत्री होकर जन्म लिया और हिमाचल ने प्रसन्न होकर उसका विवाह भगवान सदाशिव के साथ कर दिया। भगवान सदाशिव और पार्वती विवाह के उपरान्त बहुत समय तक लीलाएं करते हुए हिमालय के शिखर पर घूमते रहे। उसके बाद स्वायम्भुव मन्वन्तर के लगने पर जब दक्ष प्रजापति

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान सदाशिव के श्राप से मुक्त हुआ और प्रचेता का पुत्र हुआ तो उसने अश्वमेध यज्ञ रचाया। उसमें उसने भगवान सदाशिव को छोड़कर इन्द्र से सारे देवताओं आदित्य, वसु, रुद्र, साध्य, मरुदगण और विष्णु के साथ-साथ पितर अश्विनी आदि सभी पूज्य महर्षियों को बुलाया और जो भी यज्ञ भाग के अधिकारी थे सभी वहां पहुंचे। यज्ञ में भगवान सदाशिव को न देखकर शिव भक्त महर्षि दधीचि को बड़ा क्रोध आया उन्होंने दक्ष से गरजकर कहा—जहां पूजनीयों की पूजा न हो वहां महान पाप होता है। यहां इस यज्ञ में चराचर जगत के स्वामी भगवान सदाशिव का पूजन नहीं हो रहा। इस कारण उनके बिना यहां सभी अपूज्य हैं। जो अपूज्य नीचों का पूजन और पूज्यों का अपमान करता है उस मनुष्य का कभी कल्याण नहीं होता और उसके ऊपर दैव द्वारा कठोर-से कठोर वज्रपात होता है। हे दक्ष! भगवान सदाशिव का इस समय तुम पूजन क्यों नहीं कर रहे हो। इसका कारण कहो। इस पर दक्ष ने उत्तर दिया—हे ब्रह्म ऋषि! यहां इस यज्ञ में जटाजूट एवं त्रिशूल धारक ग्यारह रुद्र उपस्थित हैं फिर कौन अन्य रुद्र है यह बात हम नहीं जानते। यह सुनकर महर्षि दधीचि ने कहा—भगवान सदाशिव तो यज्ञपति हैं। उनका पूजन न करने से तुम्हें किसी प्रकार के फल की प्राप्ति नहीं होगी। यह भगवान सदाशिव चराचर के स्वामी, ब्रह्मा विष्णु आदि सभी देवताओं के पैदा करने वाले, सबके अधिष्ठाता हैं। ग्यारह रुद्र भी तो उन्हीं से उत्पन्न हुए हैं। इस पर दक्ष ने उत्तर दिया—अब तो यह मन्त्र हवि जो कि स्वर्ण पात्र में रखी हुई है, केवल भगवान विष्णु के लिए ही है। इस कारण इसका भाग कर आप हवन कराते जाएं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बहुत अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। दक्ष की बात सुनकर महर्षि दधीचि ने कहा—हे मुनीश्वरो! आप लोग भगवान सदाशिव का पूजन नहीं कर रहे हैं, इसलिए आपका यह यज्ञ सफल नहीं होगा। इतना कहकर वह क्रोध के आवेश में ही यज्ञशाला में से उठकर अपने आश्रम में चले गए। यह सम्पूर्ण वृत्तान्त भगवान सदाशिव को ज्ञात हो गया। अतः दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के लिए वीरभद्र और भगवती पार्वती ने भद्रकाली को प्रकट किया। उन्होंने अपने स्वामी के आदेश से दक्ष के यज्ञ को नाश करने के लिए तुरन्त प्रस्थान कर दिया। भगवान सदाशिव ने उनसे कहा—देखो! मैं पार्वती के साथ अपने आश्रम में बैठकर तुम्हारा एवं तुम्हारे साथियों का अजेय पराक्रम देखूंगा। उस समय भगवती पार्वती ने कहा—तुम दोनों मुझे पुत्र के समान प्रिय हो। अतः मेरी आज्ञा से शीघ्र ही जाकर दक्ष का यज्ञ नष्ट कर दो और दक्ष का भी हनन कर दो। इतना सुनकर वीरभद्र अपनी सेना के साथ दक्ष के यज्ञ में जा पहुंचे।

बीसवां अध्याय

(वीरभद्र ने दक्ष के यज्ञ में जाकर यज्ञस्थल को जलाना। यज्ञ पात्रों को तोड़-फोड़कर गंगा में बहाना। देवताओं को पीटना। यज्ञ-भूमि में अनेकों प्रकार के विघ्न उपद्रव करना।)

वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! वीरभद्र गणों के साथ यज्ञ में पहुंच गए। वहां पर यज्ञ के अधिकारी भगवान विष्णु और उनके साथ सभी देवता यजमान और याज्ञिक वृन्द उपस्थित थे। याज्ञिक वेद मन्त्रों के साथ यज्ञ करा रहे थे। यज्ञ में पहुंचते के साथ ही वीरभद्र ने सिंह गर्जना की। उनकी गर्जना से भूमि, पवन और समुद्र भी विचलित हो गए। अग्नि सूर्य ग्रह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तारे और नक्षत्र सभी कान्तिहीन हो गए। वीरभद्र अपने साथियों सहित यज्ञ की प्रधान वेदी पर पहुंच गए। उनको देखकर देवता इधर-उधर भागने लगे। दक्ष उनको देखकर क्रोध में भर गया। उसने उनसे पूछा—तुम कौन हो और यहां क्या करने आये हो? उसकी बात सुनकर वीरभद्र बोले—तुम्हारा मन और बुद्धि तमोगुण ने नष्ट कर दिये हैं। तुम लोगों की अक्ल मारी गई है। तुम सबको अभिमान हो रहा है। इसी लिए तुमने भगवान सदाशिव की पूजा और उनके भाग की ओर ध्यान नहीं दिया और इस प्रकार उनका अपमान किया है। अब मैं और मेरे गण तुम्हारा मद चूर्ण करने के लिए आये हैं। इतना कहते के साथ ही वीरभद्र ने अपने नेत्रों से अग्नि प्रकट की और उसके द्वारा वह सारे यज्ञ-मण्डप को जलाने लगे। उनके गणों ने सभी यज्ञकर्ताओं को यज्ञ स्तूपों के साथ बांध दिया। उन्होंने सब यज्ञपात्र तोड़-फोड़कर गंगाजी में बहा दिए। अन्नादि को दूषित कर दिया और देवताओं को पकड़-पकड़कर पीटने लगे। इस प्रकार वीरभद्र और उनके गण वहां पर अनेकों प्रकार के विघ्न उपद्रव करने लगे। स्त्रियां इस भयंकर दृश्य को देखकर करुणापूर्ण शब्दों में विलाप करने लगीं।

इक्कीसवां अध्याय

(वीरभद्र व भद्रकाली के भयंकर प्रहारों से डरकर सभी देवताओं का इधर-उधर भागना। क्रोध में भरे हुए वीरभद्र का सूर्य के मस्तक पर बाम चरण से प्रहार करना। खडग से अग्नि पर, फर से यम पर, प्रबल शूल से ग्यारह रुद्रों पर, मुगदर से वरुण पर, परिघ से निर्ऋति पर और वायुदेव पर टाकियों से प्रहार करना। शिव विरोधी ऋषियों महर्षियों को भी उनके कुकृत्य के अनुसार दण्ड देना। भगवान विष्णु का क्रोध में आकर सब देवताओं को साथ लेकर वीरभद्र के साथ युद्ध करने के लिए उद्यत होना।)

वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! वीरभद्र के भयंकर प्रहारों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

से डरकर सभी देवता वहां से भागने लगे। वीरभद्र का संकेत पाकर उनके साथियों ने उनका पीछा किया और उनको घेर लिया। उन्होंने सोचा कि यह सब दण्डनीय हैं। इनको अवश्य दण्ड मिलना चाहिए। यह सोचकर वह अग्नि के समान उन देवताओं के समूह में घूमने लगे। उन्होंने सभी देवताओं पर प्रहार करके उनके अंग उपांग खण्ड-खण्ड कर दिए। भद्रकाली भी अपने शूल से देवताओं को भेद रही थी। वीरभद्र ने सूर्य के मस्तक पर बांये चरण से प्रहार किया। उन्होंने खडग से अग्नि पर, फरसे से यम पर, प्रबल शूल से ग्यारह रुद्रों पर, मुगदर से वरुण पर, परिध से निक्तृति पर और टाकियों से मुझ (वायुदेव) पर प्रहार किया। जो ऋषि-महर्षि भगवान सदाशिव के विरोधी थे उनको, उनके कुकृत्य के अनुसार दण्ड दिया। उन्होंने मातृ समान पूज्य महिलाओं को भी नहीं छोड़ा। सरस्वती की नासिका का अग्र भाग, आदिती के हाथ का अगला भाग, अग्नि की बाहु और दो अंगुल जितनी जीभ, स्वाहा की नासिका का पुट एवं स्तन का अग्र भाग आदि काट दिये। भगदेव की आंखें निकाल लीं, पूषा के दांत तोड़ दिए। चन्द्रमा के पैर के अंगूठे को कुचल दिया। वीरभद्र ने दक्ष का माथा फोड़कर भद्रकाली को अर्पित कर दिया और वह उसे अपने हाथ में पकड़कर गेंद की तरह उछालने लगी। अन्त में सिर को हवन-कुण्ड में फेंक दिया। दक्ष की स्त्री वीरणी को भी मार डाला। अब वीरभद्र यज्ञ के समीप आए उनको अपनी ओर आता देखकर यज्ञ हिरण का रूप धारण कर वहां से भागा। वीरभद्र ने उसका पीछा किया और अपने एक ही बाण से उसका सिर काट डाला। ऐसा भयंकर दृश्य देखकर भगवान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विष्णु को क्रोध आया और वह वीरभद्र के साथ युद्ध करने को उद्यत हो, उसके साथ लड़ने लगे। मरने से बचे हुए इन्द्र आदि देवताओं ने प्राण-पण से भगवान विष्णु की सहायता की। वीरभद्र भगवान विष्णु और उनके साथियों को देखकर हंसने लगे।

बाईसवां अध्याय

(भगवान सदाशिव के आदेश से श्री ब्रह्माजी का वीरभद्र के लिए रण-भूमि में एक दिव्य रथ लाना। भगवान विष्णु एवं वीरभद्र में भयंकर युद्ध। वीरभद्र का देवताओं पर आक्रमण। देवताओं की हार। वीरभद्र का सभी देवताओं को भगवान श्री सदाशिव के पास ले जाना। देवताओं की प्रार्थना पर भगवान सदाशिव का उन सबको क्षमा करना। ब्रह्माजी का दक्ष के शरीर पर एक वृद्ध बकरे का सिर लगाकर उसको जीवित करना।)

वायुदेव ने कहा—हे मुनीश्वरो! देवताओं को युद्ध के लिए तैयार देखकर वीरभद्र हंस पड़े। तभी एक अत्युत्तम रथ आकाश से उतरा और वीरभद्र के पास आकर खड़ा हो गया। यह रथ श्री ब्रह्माजी लाए थे। उन्होंने वीरभद्र से हाथ जोड़कर कहा—वीरभद्रजी! यह दिव्य रथ मैं भगवान सदाशिव के आदेश से आपके लिए लाया हूं। आप इस पर सवार होकर युद्ध करें। रम्य आश्रम में बैठे हुए भगवान सदाशिव तथा भगवती पार्वती आपके इस पराक्रम को देख रहे हैं। श्री ब्रह्मा के कहने पर वीरभद्र उस दिव्य रथ पर सवार होकर शंख बजाने लगे। श्री ब्रह्माजी उसके सारथि थे। वीरभद्र उस समय चन्द्रमा की भांति शोभित थे। युद्ध देखने की इच्छा से यक्ष, गन्धर्व आदि सब-के-सब विमानों पर चढ़कर आकाश में आ गये। भगवान विष्णु ने अपने शार्ंग धनुष पर बाण चढ़ाकर वीरभद्र पर प्रहार किया। यह देखकर वीरभद्र ने जैतर नाम का धनुष हाथ में टंकोर किया। उसके शब्द से विशाल ध्वनि हुई। जिससे कि भूमि कम्पित हो उठी। वीरभद्र ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान विष्णु के ललाट पर एक बाण मारा। भगवान विष्णु ने उनकी भुजा पर बाण मारा। इस प्रकार दोनों में भयानक युद्ध होने लगा और जब वीरभद्र ने एक बाण भगवान विष्णु की छाती पर मारा तो वह भूमि पर गिरकर अचेत हो गए। किन्तु थोड़ी ही देर के बाद चेतना में आकर उन्होंने अजय बाण वीरभद्र को मारा। वीरभद्र ने मार्ग में उस बाण के टुकड़े टुकड़े कर दिए और एक बाण द्वारा गरुड़ के पंखों को काटकर गिरा दिया। अब भगवान विष्णु ने उन पर अपना सुदर्शन चलाना चाहा। किन्तु वीरभद्र चुपचाप खड़े रहे और भगवान सदाशिव के प्रभाव से वह चक्र भगवान विष्णु से हिला तक नहीं। भगवान विष्णु की शोचनीय दशा देखकर समस्त देवता अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र लेकर वीरभद्र पर चढ़ दौड़े। किन्तु वीरभद्र ने केवल अपने अट्टहास से ही उन सबके हाथों को स्तम्भित कर दिया। वह अब रण-भूमि में स्थिर न रह सके और उठ भागे। वीरभद्र ने उन भागते हुए देवताओं पर अपने पैने बाणों की वर्षा आरम्भ कर दी और अपने गणों को संकेत किया। उन्होंने सब देवताओं को बांध लिया उस समय श्री ब्रह्माजी ने नम्रतापूर्वक वीरभद्र से कहा—वीरभद्र! आप इन देवताओं को क्षमा कर दीजिए क्योंकि यह अपने किए का फल भोग चुके हैं। ब्रह्माजी के कथनानुसार वीरभद्र के संकेत पर उसके गणों ने देवताओं के बन्धन खोल दिए। सबने वीरभद्र को प्रणाम किया और उनकी स्तुति की। इसके बाद वीरभद्र सभी देवताओं को लेकर भगवान सदाशिव के पास पहुंचे। उनको आया देखकर भगवान सदाशिव मुस्कराये और बोले—हे देववृन्द! तुम डरो मत। तुम लोग मेरी ही सन्तान हो। मैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

तुम्हारे हित के लिए ही तुम्हें दण्ड दिया करता हूं, क्रोध से नहीं। भगवान सदाशिव के वचन सुनकर देवताओं का भय और संशय मिट गया। सब देवता हाथ जोड़कर भगवान सदाशिव की स्तुति करने लगे--प्रभो! आपने अपनी कृपा से चन्द्रमा को निरोग किया। सीमन्तिनी, शारदा और सैमिनी ने आपकी भक्ति में अपना-अपना यथेच्छ सौभाग्य प्राप्त किया। श्रीकर को आपने अपने गणों के पद पर नियुक्त कर दिया आपने सुदर्शन नृप की रक्षा की। भगवान विष्णु स्तुति करते हुए बोले--हे दयालु! आप ही तो रजोगुण, सत्वगुण एवं तमोगुण द्वारा उत्पत्ति, पालन, संहार आदि किया करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र आप के ही स्वरूप हैं। आप ही सबके भीतर बाहर रहने वाले चराचर के स्वामी, विद्याओं के भण्डार, अभिमानियों का मद चूर करने वाले सब पर कृपा करने वाले हैं। हम सब आपकी शरण में आए हैं, हमारे अपराध क्षमा करें। ब्रह्माजी ने कहा--प्रभो! आप तो दुखियों का दुःख दूर करने वाले हैं अतः दुःखी देवताओं को सुखी करें। बहुत से देवताओं के शरीर घावों से भरे पड़े हैं। कई देवता मर चुके हैं। आप ऐसी कृपा करें कि वह सब-के-सब स्वस्थ हो जाएं और जीवित हो जाएं। श्री ब्रह्मा जी की प्रार्थना सुनकर भगवान सदाशिव ने एक बार मुस्कराकर भगवती पार्वती की ओर देखा फिर सभी घायल तथा मरे हुए देवताओं और देव माताओं को पूर्ववत पूर्णरूपेण स्वस्थ कर दिया। उसके बाद स्वयं भगवान सदाशिव के संकेत पर अपने पुत्र दक्ष के शरीर पर एक वृद्ध बकरे का सिर रख दिया और शंकर-कृपा से वह भी जीवित हो गया। जीवित होने के पश्चात उसने अश्रु बहाते हुए भगवान सदाशिव की स्तुति करते हुए

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कहा—प्रभो! आपकी जय हो। आप ही सबके स्वामी हैं। विष्णु आदि जितने भी देवता हैं, वह सब आपके आज्ञाकारी सेवक हैं। आप मुझ जैसे पापी व अपराधी को क्षमा करें। उसकी प्रार्थना सुनकर भगवान सदाशिव बोले—तुम डरो मत! तुम ब्रह्माजी के पुत्र हो अतः उनके कल्याण की भावना से मैं तुमको अक्षय गणपति का पद देता हूं। फिर उन्होंने देवताओं से कहा—तुम लोग अपने कर्मों का फल भोग चुके हो। अब तुम अपने-अपने स्थान पर जाओ। इतना कहकर भगवान सदाशिव और भगवती पार्वती अन्तर्ध्यान हो गये। ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी देवता वीरभद्र के पराक्रम की प्रशंसा करते हुए अपने-अपने स्थानों को चले गये।

तेईसवां अध्याय

(शुम्भ और निशुम्भ का तपस्या करके श्री ब्रह्मा से वर प्राप्त करना कि हम किसी के द्वारा भी मारे न जा सकें। श्री ब्रह्माजी का उनको वर प्रदान करना। वर प्राप्त करने के पश्चात दोनों दानवों का मदोन्मत्त होकर देवताओं को जीत लेना। त्रिलोक का राज्य भोगना और धर्म मर्यादा को नष्ट करना। श्री ब्रह्माजी का दोनों दैत्यों के नाश के लिए भगवान सदाशिव से प्रार्थना करना।)

इतनी कथा सुनने के बाद मुनीश्वरों ने श्री वायुदेव से पूछा—हे वायुदेव! अब आप हमें यह बताने की कृपा कीजिए कि भगवान सदाशिव युद्धभूमि से अन्तर्ध्यान होकर कहां चले गए? किस स्थान को अपना निवास स्थान बनाया? वायुदेव ने कहा—हे मुनीश्वरो! मन्दराचल पर्वत भगवान सदाशिव को अत्यन्त प्रिय था, क्योंकि उसने कभी इस इच्छा से कि भगवान सदाशिव तथा पार्वती उस पर निवास करें, बड़ी भारी तपस्या की थी। इसी कारण मन्दराचल भगवान सदाशिव को बड़ा प्रिय था। अतः आपने मन्दराचल की कामना पूर्ण करने के लिए भगवती पार्वती के साथ अपने गणों को साथ लिए हुए वहां पर पधारे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पर्वत का सौन्दर्य अपूर्व था। वह अनेकों मणियों से चमक रहा था। अनेकों गुफाओं से शोभायमान था। श्री पार्वती को प्रसन्न करने के लिए भगवान सदाशिव ने उसको और भी रमणीक बना दिया था। भगवान सदाशिव वहां पहुंचकर श्री पार्वती के साथ अनेकों लीलाएं करने लगे। उस समय प्रजा बहुत बढ़ चुकी थी। उस समय शुम्भ और निशुम्भ दो दानव जन्म ले चुके थे। देवताओं को पीड़ित करने के लिए उन्होंने कठोर तपस्या की और श्री ब्रह्माजी को प्रसन्न कर लिया। जब श्री ब्रह्माजी ने प्रत्यक्ष होकर उनको वर मांगने के लिए कहा, तो उन्होंने कहा—प्रभो! यदि आप हमसे प्रसन्न हैं, तो आप हमें यह वर दीजिये कि हमको कोई भी न मार सके। श्री ब्रह्माजी बोले तुम्हें कोई भी न मार सकेगा। किन्तु जब तुम अयोनिज जन्म रहित जगदम्बा के अंश से उत्पन्न हुई, किसी भी पुरुष द्वारा अस्पर्श, कन्या की अभिलाषा करोगे, तभी तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। अतः तुम इस प्रकार की अभिलाषा ही नहीं करना। इतना कहकर श्री ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हो गए। यह वरदान प्राप्त करके शुम्भ व निशुम्भ ने देवताओं को जीत लिया और इन्द्रासन पर बैठकर त्रिलोकी पर अपना अधिपत्य जमा लिया। फिर तो वह दोनों दुष्ट धर्म मर्यादा नष्ट करने पर तुल गए। पुन्य आदि कर्मों का नाश होने लगा। उनके अत्याचारों और उत्पातों से प्रजा अत्यन्त दुःखी हो गई। चहुं ओर हाहाकार मच गया। यह देखकर श्री ब्रह्माजी भगवान श्री सदाशिव के पास पहुंचे और उनसे प्रार्थना व स्तुति की। उन्होंने कहा—हे भगवान! अब आप भगवती उमा को क्रुद्ध करने की चेष्टा कीजिए जिससे शुम्भ व निशुम्भ दोनों दानव नष्ट हो जाएं। इस समय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सारा संसार उनके अत्याचारों से अत्यन्त दुःखी हो रहा है। प्रभो! उनके नाश से संसार को सुख मिलेगा। श्री ब्रह्माजी की प्रार्थना पर भगवान सदाशिव मुस्कराये। फिर उन्होंने स्त्रियों की बुराई शुरू कर दी। इस पर भगवती पार्वती बहुत बिगड़ीं और उनके क्रोध का कोई वारपार न रहा। क्योंकि आप नारी थीं और आपके ही द्वारा नारी कुल उत्पन्न हुआ था। उन्होंने क्रोध में भरकर भगवान श्री सदाशिव से कहा—प्रभो! ऐसा जान पड़ता है कि मुझसे उत्पन्न हुए स्त्री कुल से आप अप्रसन्न हैं। यदि ऐसा ही है तो आपने मेरे साथ इतना समय किस प्रकार निकाला है? आपने मुझे पहिले क्यों नहीं बताया? यदि आपको मेरे साथ प्रेम नहीं था, तो आपने मेरे साथ विलास क्यों किया? फिर भी यदि आप नारी निन्दक हैं, तो मैं इस शरीर को त्याग देती हूं। मैं फिर किसी दूसरे कुल में पैदा हो जाऊंगी। वायुदेव बोले—हे मनीश्वरो! इतना कहकर जगत-जननी वहां से उठीं और तप करने का निश्चय कर लिया और भगवान सदाशिव से तप करने की आज्ञा मांगी। भगवान सदाशिव को संदेह हो गया कि अब हमारा प्रेम नष्ट होने को है, अतः उन्होंने श्री पार्वती से नम्रता के साथ कहा—हे प्रिये! तुम किस प्रकार की बातें कर रही हो? तुम मेरे आशय को समझे बिना ही कहां जा रही हो? मैं सारे संसार का पिता हूं और तुम सारे संसार की माता हो। मेरे और तुम्हारे संयोग से ही यह संसार पैदा हुआ है, काम द्वारा नहीं। काम ने मुझे साधारण देवता जानकर कुछ बाधा पहुंचाई थी, मैंने उसको अपनी दृष्टि द्वारा ही भस्म कर दिया था। अब मैं कोई अन्य कार्य करना चाहता हूं और वह कार्य केवल तुम्हारे क्रोध द्वारा ही

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो सकता है। मैं तो जैसा कि तुम जानती ही हो, तुम्हारे प्रेम के वशीभूत हूं। तुम मुझ पर किसी प्रकार का संदेह न करो। श्री पार्वतीजी बोलीं—हे स्वामी! मैं आपकी सभी बातें जानती हूं। आप पहिले भी मेरा त्याग कर चुके हैं अब भी उसी कारण से त्याग रहे हैं। इस संसार में वही स्त्री प्रशंसा के योग्य समझी जाती है, जो पति को प्यारी न लगने पर अपने शरीर का त्याग कर दे। मालूम होता है कि आपको मेरा काला वर्ण पसन्द नहीं है और न ही आपको मेरा बचपन का नाम काली ही पसन्द है। बस इस कारण मैं अब इस देह को तप द्वारा त्याग दूंगी। इस पर भगवान सदाशिव बोले—यदि तुम ऐसा ही चाहती हो तो मेरी या अपनी इच्छा से कोई और रूप धारण करो। देवी ने कहा—मैं आप द्वारा कोई रूप नहीं चाहती, मैं तो अब तप द्वारा श्री ब्रह्माजी को प्रसन्न करके गौरी बनूंगी। भगवान सदाशिव बोले—हे देवी! ब्रह्माजी को ब्रह्मपद मेरे अनुग्रह से ही प्राप्त हुआ है। मैं अभी उनको बुलाता हूं। तुमको तप करने की कोई आवश्यकता नहीं है। श्री उमा ने कहा—मैं यह जानती हूं कि समस्त देवताओं ने आपके अनुग्रह से ही उत्तम पद प्राप्त किया है। किन्तु फिर भी जब मैं दक्ष की पुत्री थी तो तप द्वारा ही मैंने आपको अपना पति चुना था। उसी प्रकार अब भी मैं तपस्या द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न करके गौरी होना चाहती हूं।

चौबीसवां अध्याय

(भगवती उमा का हिमालय पर्वत पर जाकर श्री ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए तपस्या करना। श्री ब्रह्मा का उनको दर्शन देना और उनसे शुम्भ व निशुम्भ के मारने के लिए प्रार्थना करना। भगवती उमा का कौशिकी शक्ति का उत्पन्न करना, कौशिकी शक्ति का शुम्भ व निशुम्भ को मारकर देवताओं को सुखी करना।)

मुनियों ने श्री वायुदेव से कहा—अब आप हमें देवी उमा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IPS (Retd) Collection Jammu

के तप की कथा सुनाइये। श्री वायुदेव बोले—भगवान शंकर से आज्ञा लेकर तथा उनकी परिक्रमा करके भगवती उमा हिमालय पर्वत पर पहुंची। पहिले अपने माता-पिता से मिलीं। फिर वह उसी स्थान पर गईं जहां पर कि उन्होंने पिछली बार तप किया था। वहां जाकर उन्होंने भगवान सदाशिव के चरणों का ध्यान किया और कठोर तपस्या में लग गईं। प्रतिदिन प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल तीनों समय स्नान आदि करके वन के पुष्प आदि लेकर वह भगवान सदाशिव का पूजन करतीं। मन में यह विचार था कि भगवान सदाशिव ही ब्रह्माजी की मूर्ति में विराजमान होकर यहां पधारें और मुझे मेरी तपस्या का फल प्रदान करें। इस प्रकार भगवती को तपस्या करते हुए बहुत समय व्यतीत हो गया। एक दिन वहां कहीं से एक सिंह आन निकला। भगवती के निकट आकर वह उसे खाने के लिये तैयार हो गया। किन्तु भगवती के तेज के सामने उसकी एक न चली। बस, वह मूर्तिवत उसकी ओर देखता रह गया। मानो खड़ा होकर उसकी पूजा कर रहा हो। भगवती ने सोचा कि शायद यह सिंह मेरा भक्त है और हिंसक जीवों से मेरी रक्षा करने के लिए यहां खड़ा है। ऐसा विचार करके भगवती ने उसके सभी फल नाश कर दिये। दैववश उसकी भूख प्यास सभी जाती रही। उसका जीवन सफल हो गया। उधर शुम्भ निशुम्भ के उपद्रव दिनों दिन बढ़ रहे थे। सारा संसार उनके अत्याचारों से दुखित हो रहा था। देवता तथा ऋषि-मुनी सब एकत्र होकर श्री ब्रह्माजी के पास पहुंचे और उनको अपना दुखड़ा सुनाया। देवताओं की कारुणिक कथा सुनकर ब्रह्माजी का हृदय भी पिघल गया वह देवताओं को साथ लेकर तप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करती हुई पार्वती की शरण में गए और उनको देवताओं की विपता का वृत्तान्त सुनाया। भगवती ने उनका आदर-सत्कार भी किया और उनको दिलासा भी दिया। जब ब्रह्माजी भगवती से आदर पाकर आसन पर बैठ गये तो भगवती से उन्होंने पूछा—आप तो स्वयं तपस्याओं का फल देने वाली हैं तो फिर आप यह कठोर तपस्या क्यों कर रही हैं? श्री पार्वती बोलीं—हे ब्रह्माजी! सृष्टि के आरम्भ होते ही आप भगवान श्री सदाशिव से उत्पन्न हुए तो इस कारण आप मेरे ज्येष्ठ पुत्र हुए। फिर प्रजा वृद्धि के लिये भगवान रुद्र आपके मस्तक में से उत्पन्न हुए इसलिये आप मेरे श्वसुर भी हैं। उसके बाद मेरे पिता हिमाचल आपके पुत्र हुए इस नाते से आप मेरे दादा हुए। अब मैं आपसे क्या कहूं, किन्तु कहना ही होगा कि मैं यह काले वर्ण का शरीर त्याग कर अब गोरी बनना चाहती हूं। उमा की बात सुनकर श्री ब्रह्माजी ने कहा—देवी! आप इस छोटे-से कार्य के लिए इतनी कड़ी तपस्या कर रही हैं मुझे आश्चर्य है कि आप सर्वशक्तिमयी होते हुए स्वयं ही इस प्रकार का रूप क्यों नहीं धारण कर लेतीं। यह आपकी लीला है। मातेश्वरी! आपकी यह लीला भी लोक हित के लिये है। श्री ब्रह्माजी की प्रार्थना पर भगवती ने अपना त्वचाकोष त्याग दिया तथा गौर वर्ण की गौरी हो गईं। तत्पश्चात उन्होंने अपने त्वचाकोष से मेघों के समान श्याम वर्ण की कौशिकी नाम की एक कन्या उत्पन्न की। भगवती स्वयं माया स्वरूपणी थीं। वह उत्पन्न हुई देवी अधिक सुन्दरी, अजय और मनुष्य के स्पर्श तथा रति से विमुख थी। भगवती ने वह शक्ति श्री ब्रह्माजी को दे दी। श्री ब्रह्माजी ने उसको शुम्भ व निशुम्भ को मारने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के लिए शक्ति प्रदान की और सवारी के लिए सिंह दिया। फिर वह शक्ति विन्ध्याचल पर पहुंची। वहां जाकर उसने उन दोनों भ्राताओं की देह को अपने तीव्र बाणों से छिन्न-भिन्न करके अपनी शक्ति का अलौकिक प्रदर्शन किया और सभी देवताओं को सुखी कर दिया।

पच्चीसवां अध्याय

(गौरी का शुम्भ व निशुम्भ की मृत्यु के पश्चात ब्रह्माजी से सिंह को अपने साथ मन्दराचल पर्वत पर ले जाने के लिये आज्ञा मांगना और उनको बताना कि यह सिंह उनके तपस्या के दिनों में हिंसक पशुओं से उनकी रक्षा करता रहा है और उनका परम भक्त है। श्री ब्रह्माजी का गौरी को सिंह को मन्दराचल पर्वत पर अपने साथ ले जाने की आज्ञा प्रदान करना।)

श्री वायुदेव बोले—हे ब्राह्मणो! गौरी ने कौशिकी को हिमालय पर्वत पर भेजने के बाद भगवती गौरी ने उस सिंह के बारे में श्री ब्रह्माजी से कहा—हे ब्रह्माजी! यह सिंह मेरा अनन्य भक्त है। जिन दिनों मैं तपस्या कर रही थी यह हिंसक पशुओं से मेरी रक्षा किया करता था। इसलिये यह अब सदा मेरे ही पास रहेगा और इसका निवास भी मेरे ही राज-भवन में होगा। अब मैं इसे साथ लेकर अपने घर जाना चाहती हूं। आप मुझे आज्ञा प्रदान करें। गौरी की बात सुनकर श्री ब्रह्मा जी बोले—हे देवी! ऐसा करके आप सांप को दूध पिलाना चाहती हैं। मुझे तो यह कोई कपटी दैत्य जान पड़ता है जो कि कई रूप धारण करके देवताओं तथा मुनीश्वरों को मारा करेगा। अतः आप इसे इसके कर्मों पर ही छोड़ दीजिये। गौरी ने कहा—आप ठीक कह रहे हैं किन्तु यह मेरी शरण में आ चुका है नित्य मेरी सेवा किया करता है, अतः इसे कैसे छोड़ा जा सकता है? ब्रह्माजी बोले—देवी! मैं तो इसे अपने कर्मों का फल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भोगने वाला समझ रहा था। मुझे मालूम न था कि यह आपका परम भक्त बन चुका है। यदि ऐसा है तो यह निष्पाप है और आपके भक्त का कभी नाश नहीं हो सकता। श्री वायुदेव बोले—हे मुनिवृन्द! श्री ब्रह्माजी इतना कहकर अन्तर्ध्यान हो गए। गौरी अपने माता-पिता से भेंट करने के पश्चात सिंह को साथ लेकर मन्दराचल पर्वत पर भगवान सदाशिव के पास पहुंच गई और उनके चरण कमलों की सेवा में लग गई।

छब्बीसवां अध्याय

(भगवती गौरी का अपने राज भवन में पहुंचना। भगवान सदाशिव से भेंट। उनको कौशिकी द्वारा शुम्भ व निशुम्भ के विनाश की कथा सुनाना। सिंह को अपना द्वारपाल बनाना और उसका नाम सोम नन्दी रखना।)

श्री वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! जब भगवती गौरी अपने राज भवन में पहुंचीं। तो सभी द्वारपालों ने उनकी स्तुति-वन्दना की। गौरी भवन के भीतर जाकर भगवान सदाशिव के चरणों में लेट गईं। भगवान सदाशिव ने तुरन्त उनको उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। फिर गौरी हंसते-हंसते शय्या पर जा बिराजीं। भगवान सदाशिव ने भी उनके साथ बैठकर उनको अपने अंग में बिठा लिया। फिर उनसे कहने लगे—हे प्राणेश्वरी! अब आपकी देह उत्तम हो गई है। अब तक आप अवश्यमेव अपने क्रोध का कारण भूल चुकी होंगी। आपने काले तथा गोरे रूप द्वारा मेरे मन को लुभा लिया है। देवी! हम दोनों का प्रेम साधारण जीवों के प्रेम जैसा नहीं है। इस कारण हम दोनों के बीच किसी प्रकार का विद्वैष नहीं होना चाहिए। यदि मेरे और तुम्हारे में प्रणय न हो तो फिर इस चराचर जगत की सत्ता कहां? और सुनो—मैं अग्नि हूं तो तुम सोम हो। तुम

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शब्द हो तो मैं अर्थ हूं। तुम विद्या हो तो मैं वेद्य हूं। हम दोनों ही अमृत हैं। तुम्हारी आज्ञा ही मेरी ऐश्वर्य है। तुम्हारी आज्ञा के बिना फिर मेरा वैभव कहां? मैं तो देवताओं के हित के लिए नित्य लीलाएं करता रहता हूं। तुम मेरी उन लीलाओं से अपरिचित थीं। अतः तुम बिना जाने मुझसे प्रसन्न हो गईं। भगवान सदाशिव के वचन सुनकर गौरी कुलज्जित हुईं। फिर कहने लगीं—आपकी कृपा से मैंने कौशिकी नाम की एक कन्या को जन्म दिया है। जो कि रूप, बल व पराक्रम से युक्त है, उसने विन्ध्याचल पर्वत पर जाकर शुम्भ और निशुम्भ नामक दैत्यों को मारा है। यह वह शक्ति है जिसकी आराधना से मनुष्य तुरन्त ही फल पायेंगे। इसके पश्चात गौरी ने अपनी सखियों द्वारा सिंह को बुलाया और उसको भगवान सदाशिव के सामने खड़ा करके कहने लगीं—प्रभो! इस अपने अनुचर सिंह को भी मैं अपने साथ ले आई हूं। यह तपस्या करते समय मेरी रक्षा किया करता था। अब आप इस पर यह कृपा करें कि यह द्वारपाल होकर मेरे भवन के द्वार पर बैठा रहे। भगवान सदाशिव ने उसे द्वारपाल बना दिया और उसका नाम सोमनन्दी रख दिया। उसके बाद भगवान सदाशिव ने गौरी का दिव्य आभूषणों द्वारा अपने हाथों से शृंगार किया।

सत्ताईसवां अध्याय

(वायुदेव का मुनीश्वरों को बताना कि भगवान सदाशिव का रूप तेज युक्त है। इसी कारण करोड़ अग्नि रूप और गौरीजी का कलेवर परम शांत, अमृतमय चन्द्र रूप है। यह विद्या एवं कला रस रूप सभी प्राणियों में सूक्ष्म रूप से विद्यमान है। अमृत अग्नि से पैदा होता है और अग्नि अमृत से वृद्धि पाती है। संसार में सुख की प्राप्ति के लिए अग्नि में अमृत की आहुतियां दी जाती हैं।)

श्री वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! अग्नि भगवान सदाशिव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का तेजमय शरीर है और सोम (चन्द्र) गौरी की शान्तिमय और अमृतमय देह है। तेज दो प्रकार का है सूर्य तथा अग्नि रूप। रस भी दो प्रकार का है जल तथा चन्द्र रूप। बिजली आदि पदार्थ तेज हैं और मधुरता आदि रस हैं। तेज और रस द्वारा ही यह चराचर जगत स्थित है। अग्नि से अमृत की उत्पत्ति और अमृत से अग्नि की वृद्धि होती है। इसीलिए तो अमृत की अग्नि में आहुतियां दी जाती हैं। संसार का हित अग्नि और सोम में ही निहित है। हवि के लिए अन्न की उत्पत्ति और अन्न की वृद्धि के लिए वर्षा और वर्षा से हवि की उत्पत्ति होती है। अग्नि के संयोग से चन्द्रमा अमृत बरसाता रहता है। कभी अमृत ऊपर और कभी अग्नि नीचे हो जाती है। और इसी प्रकार आप लोग यह समझ लीजिये कि शिव और शिव की शक्ति द्वारा ही यह संसार व्याप्त है। अग्नि से जगत जलकर भस्म रूप हो जाता है। इस भस्म से स्नान करने वाला योगी अमर हो जाता है। भगवान सदाशिव ने इस अग्नि और सोम के रूप में विश्व की रचना की है जिसे कि जगत कहा जाता है। इन दोनों से शिव और शिवा का आधार और आधेय सम्बन्ध है। इन्हीं के सहयोग से जगत की सत्ता स्थिर है।

अट्ठाईसवां अध्याय

(भगवान सदाशिव और शिवा का शब्द और अर्थ रूप। प्रकृति और परिणाम से शब्द और अर्थ की दो प्रकार की भावना। शब्द की स्थूल सूक्ष्म और परा। भेद से तीन प्रकार की विभूति। परा-शक्ति ज्ञान शक्ति के योग से ही पैदा होती है शब्द और अर्थ के छः प्रकार के भेद।)

श्री वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! अब मैं आपके सम्मुख भगवान सदाशिव तथा भगवती उमा के शब्द और अर्थ के रूप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

को विस्तारपूर्वक रक्खूंगा। ध्यान देकर सुनिये—शब्द और अर्थ कोई निरर्थक नहीं हैं। प्रकृति का परिणाम रूप भगवान सदाशिव तथा भगवती पार्वती का शब्द तथा प्राकृतिक एवं मूर्ति रूप होने से दो प्रकार का है। शब्द रूप वाली विभूति तो स्थूल, सूक्ष्म तथा परा इस प्रकार से तीन प्रकार की है। स्थूल तो चिन्तारहित है। इनसे परे शिवतत्व का आधार रूप पराशक्ति है। ज्ञान तथा शक्ति इन दोनों के योग द्वारा इच्छा के साथ सारी शक्तियों की समष्टि रूप एक ही शक्ति तत्व प्रसिद्ध है। सभी कार्यों को करने वाली जो शक्ति है वही प्रकृतितत्व को प्राप्त होती है। वही शुद्ध मार्ग रूप है। उसे परमा देवी कुण्डलिनी माया कहा जाता है। पराशक्ति शिव-तत्व का विषय है। यह ज्ञान शक्ति के योग से प्राप्त होती है। शब्द और अर्थ के मार्ग भिन्न-भिन्न छः प्रकार के हैं। उनके शुद्ध उच्चारण से मनुष्य लय और भोगों का अधिकारी बनता है। शब्द के भेद तन्त्र मार्ग, पद मार्ग और वर्ण मार्ग हैं। अर्थ के भेद—भुवन मार्ग, तत्व मार्ग और कला मार्ग हैं। इन सबका परस्पर व्याप्त व्यापक सम्बन्ध है। मन्त्रों में वर्ण पद और वाक्य होते हैं। अतः मन्त्र समस्त पदों से व्याप्त हैं। किन्तु वर्ण-समूह भुवन मार्ग से व्याप्त हैं। उनका परस्पर सम्बन्ध है। भुवन मार्ग का ज्ञान कभी वाह्य तत्वों से और कभी आन्तरिक तत्वों से होता है। तत्वों का ज्ञान पुराणों से होता है। इसके अतिरिक्त अन्य शिव शास्त्रों में प्रसिद्ध हैं जो कि पौराणिक हैं। सांख्य योग विख्यात जो तत्व हैं, अथवा शिव शास्त्र विख्यात अथवा इनके अतिरिक्त अन्य तत्व सब-के-सब कलाओं से परिपूर्ण हैं। जो प्रकृति उसके परिणाम रूप द्वारा निवृत पांच कला हैं वह सभी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उत्तरोत्तर के क्रम से व्याप्त हो रहे हैं। छः भागों में विभक्त परा शक्ति तो इनसे बाहर है। वह परा शक्ति के भाव सत्व से और शिव तत्व से परा शक्ति विद्यमान है। केवल भगवान सदाशिव ने शक्ति से लेकर भूमि तक की रचना की है। वही जगत में इस प्रकार व्याप्त हैं जैसे कि घड़ों में मिट्टी पूर्ण-रूपेण है। हे मुनीश्वरो! प्राणी शिव मार्ग के परम उत्तम स्थान को निर्दिष्ट छः मार्गों द्वारा ही प्राप्त कर सकता है। पांचों तत्वों पर विचार करने से शक्ति व्यापक और अव्यापक दोनों रूपों में है। पांचों तत्वों से सारा संसार भरा पड़ा है। साधक लोग इन तत्वों में ही समस्त जगत को देखते हैं। वह व्यक्ति जो कि शब्दार्थ के मार्ग को बिना जाने पवित्रता चाहता है वह वंचक है अतः वह शुद्धि का फल नहीं पा सकता। हे मुनियो! अधिक क्या कहूं इनसे इतर वह नरकगामी होता है। इसके अतिरिक्त शक्ति के योग ज्ञान बिना वह तत्वों को भी नहीं समझ सकता। देखिये! शक्ति आज्ञा परा और परमेश्वरी है। इसी के द्वारा भगवान सदाशिव सर्वत्र व्याप्त हैं। इसी से भगवान ग्रही पुरुष हैं। और पुरुष के संयोग से शक्ति ग्रहिणी स्त्री है। दोनों अपनी-अपनी मर्यादाओं में हैं। सूर्य की प्रभा के समान एक भी हैं और भिन्न-भिन्न भी प्रतीत होते हैं। यह परा शक्ति शिव आज्ञा द्वारा तीन गुणों वाली होती है। कार्यक्रम के भेद द्वारा तीन प्रकार की होती हुई छः मार्ग पैदा करती है। यह छहों शब्द तथा अर्थ रूप हैं। छहों सारे संसार में व्यापक हैं। इन छः मार्गों का विस्तृत वर्णन शास्त्रों में वर्णित है।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उन्तीसवां अध्याय

(भगवान सदाशिव के सगुण निर्गुण के भेद। भगवान सदाशिव सब पर कृपा करने वाले हैं। सबको दुष्कर्मों का दण्ड भी देने वाले हैं।)

मुनीश्वर बोले—हे वायुदेव! आपने हमारे सामने विचित्र चरित्रों का वर्णन किया है। भगवान श्री सदाशिव की लीलाएं अद्भुत-सी भी हैं और कठिन भी प्रतीत होती हैं। वह पूर्ण रूपेण समझ में नहीं आ सकतीं। भगवान सदाशिव के चरित्रों में किसी भी प्रकार का सांसारिक दोष नहीं है। इन दोनों क्रीड़ा में प्राकृतिक भाव दिखाई देता है। ब्रह्मा आदि देवता भी भगवान सदाशिव की कृपा से ही जगत की रचना, रक्षा और संहार कर पाते हैं। भगवान सदाशिव किसी की कृपा के वश में नहीं हैं वह तो स्वच्छन्द हैं। अतः उनका ही सर्वोपरि ऐश्वर्य है तब तो इनका वैभव स्वभाव से ही मूर्तिमान होगा। यदि बिना कारण मूर्ति भी कार्यरूप सिद्धि मानी जाये तो सर्वत्र परम भाव होगा और दूसरा अपरमभाव होगा तो फिर इन दोनों भावों का समावेश एक स्थान पर कैसे हो सकता है? भगवान सदाशिव तो परमेश्वर हैं। यदि यह कला रहित निर्गुण स्वभाववान हैं तो कला रहित सगुण विपरीत स्वभाववान क्यों हो? क्या सगुण निर्गुण यह दोनों पृथक-पृथक हैं? भगवान सदाशिव द्वारा सब में विद्यमान रहने वाला एक सूक्ष्म तत्व है। यदि मूर्ति स्वरूप ही शिव मूर्ति मान ली जाय तो क्या उस प्रतिमा में प्रतिमा वाला पराधीन हो सकेगा? यदि यह नहीं होने का तो अपेक्षा रहित मूर्ति क्यों स्वीकार की जाती है। मूर्ति में साध्य फल की चाहना से अपनी इच्छा द्वारा देह स्वाधीनता के लिए होता ही नहीं। यह इच्छा भी अपने-अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कर्मों के अनुसार हुआ करती है ब्रह्मा से आरम्भ करके पिशाचों तक अपने-अपने कर्मों के अनुसार आधीन रहते हैं क्या सब अपनी-अपनी इच्छा से जन्म विनाश होना मानते हैं। भगवान शंकर सब पर कृपा करने वाले कहे गए हैं सबको दुष्कर्मों का दण्ड भी देने वाले हैं शिव निन्दा करते हुए ब्रह्मा के पांचवें सिर को तभी तो काट लिया था। सिंह रूपधारी श्री विष्णु को अपने पैरों के नीचे दबाकर अपने पैने नखों से उनकी छाती चीर डाली थी। यक्ष के यज्ञ में जितने भी दोषी थे सबको वीर-भद्र द्वारा यमलोक भेज दिया था। अपने नेत्रों से प्रचण्ड अग्नि उत्पन्न करके आपने जिसके द्वारा त्रिपुर दानव की प्रजा तथा कुटुम्बियों को भस्म कर डाला। कामदेव भी आपकी क्रोधाग्नि द्वारा भस्म हुआ था। फिर अग्नि के अंश गंगा में समर्पित हुए। तारक नामक दैत्य का नाश करने के लिए आप श्री ब्रह्माजी की प्रार्थना पर भगवती शिवा के साथ मन्दराचल पर्वत पर गए और शिवा के साथ वहां पर आपने अनेक लीलाएं कीं और स्कन्द जैसे बली पुत्र को जन्म दिया। स्कन्द को देखकर सुरासुर सभी मोहित हो गए। आपने स्कन्द को क्रौंच-भेदनी शक्ति प्रदान की जिससे उसने तारक दैत्य को मार डाला। तारक दैत्य की मृत्यु पर विष्णु ब्रह्मा आदि सभी देवताओं ने स्तुतियां कीं शिव महिमा अपार है अपने भक्त ब्रह्मचारी मार्कण्डेय की थोड़ी आयु को बढ़ा दिया और चिरंजीव कर दिया। वह भी अकाल मृत्यु से छुटकर प्रणाम करने लगा। सदाशिव ने तो बड़वाग्नि को अपनी सवारी के लिए जा पकड़ा। वृषवाहन होते हुए भी गला उसका प्रलय के समान पकड़कर उस पर चढ़ बैठे इसलिए परमात्मा शिव सगुण तथा निर्गुण दोनों ही स्वरूप

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वाले हैं। प्रारब्ध के सभी कर्मजाल शिव ही निवृत्त कर सकते हैं और कोई भी देवता नहीं कर सकता है।

तीसवां अध्याय

(श्री वायुदेव का मुनीश्वरों को संशय नाशक नास्तिकता छुड़ाने वाला रहस्यमय ज्ञाना समझाना।)

वायुदेव बोले—हे ऋषियो! अब मैं आपको संशयनाशक नास्तिकता छुड़ाने वाला रहस्यमय ज्ञान समझाता हूं। सज्जन पुरुषों को यदि मोह होता है तो शिवशंकर में ही अन्यत्र कहीं भी नहीं। जिस विषय का ज्ञान हो उसे समझने के लिए संशय करके प्रश्न किया जाय तो यह कोई नास्तिकता नहीं। शिव विषय में प्रश्न करना तो आस्तिकता के लक्षण हैं। मैं अभी आप साधुओं को मोह को दूर करने वाले प्रमाण आपकी सेवा में उपस्थित कर रहा हूं। लेकिन इतना याद रहे कि दुर्जनों को संदेह उत्तरोत्तर बढ़ता ही है वह कब तक, जब तक कि उन पर प्रभु की कृपा नहीं हो जाती। भगवान सदाशिव के द्रोही को संसार में कहीं भी सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती और न ही उसका कोई सहायक ही होता है। हम प्रभु की साकार मूर्ति द्वारा निराकार मूर्ति के स्वरूप का ध्यान कर सकते हैं। जगत पर अनुग्रह करने के लिए ही भगवान सदाशिव ने साकार व निराकार मूर्तियों की कल्पना की है। योग और मोक्ष का बन्धन केवल आत्माओं के लिए है। योग कर्मों के अनुसार सुख एवं दुःख का दाता है। सुख-दुःखदायक कर्म भगवान सदाशिव में नहीं हैं, उन्हें भोग की इच्छा ही नहीं होती। भगवान सदाशिव का स्वभाव ही अनुग्रह शील है। प्रभु किसी को दण्ड नहीं देते। दण्ड के योग्य मनुष्यों में जो दोष होते हैं वह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भगवान सदाशिव में बिल्कुल नहीं हैं। आपने समय-समय पर ब्रह्मा आदि देवताओं को जो दण्ड दिये हैं उनमें संसार का हित निहित है। वह ब्रह्माण्ड के पूर्णरूपेण नायक और शासक हैं। यदि दण्डनीयों को दण्ड न दिया जाय तो राजा का अधिपत्य कहां रहा? विद्वान दण्ड की कभी निन्दा नहीं करता। दण्ड किसी द्वेष की भावना से नहीं दिया जाता। पिता भी तो अपने पुत्र को, उसके न पढ़ने पर दण्ड देता है। लेकिन द्वेष भाव से नहीं। यदि दोषियों तथा कृतघ्नों को दण्ड न दिया जाय तो वह दूसरों को भी अपने जैसा बनाने का प्रयत्न करते हैं और इस से सर्वत्र अराज्यकता व नास्तिकता फैल जाती है। हे मुनीश्वरो! आप इस बात को समझने की कोशिश कीजिये। सुनिये, वैद्य यदि रोगी की शल्य क्रिया करता है तो क्या आप उसके इस कार्य को उसकी कठोरता समझियेगा? नहीं वह उसकी कठोरता नहीं है वह तो रोगी के रोग को दूर करने का साधन है। रक्षा के योग्य प्रति योगी को भी उसके दोषों को दूर करने में ढील न करनी चाहिए क्योंकि उपेक्षा करने से उसका शीघ्र पतन हो सकता है। भगवान के बनाये गए शासन पथ पर भले-बुरे सबको चलना पड़ता है। यदि बुरा, बुरा कर्म करता है तो उसको अपने कर्म का फल भोगना पड़ता है। साम, दाम और भेद से एक दुष्ट व्यक्ति नहीं मानता तो उसके लिए अन्त में दण्ड का ही विधान है। देखिये! तांबे को अग्नि में डालने से अग्नि का रंग तो बिल्कुल नहीं बदलता हां तांबे का रंग अवश्य बदल जाता है। इसी प्रकार शोधनी आत्मा के संसर्ग से भगवान सदाशिव अपवित्र नहीं होते हां आत्मा अवश्यमेव शुद्ध हो जाती है। अधिक क्या कहूं भगवान सदा-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शिव कृपालु हैं एवं कल्याणकारी हैं। हितकारी हैं। इतना होने पर भी वह समान नहीं हैं। देखिये! सूर्य अपनी किरणों से कमलों को खिलाते हैं परन्तु वह कमल अपने-अपने स्वरूप के अनुसार समान भाव से नहीं खिलते हैं। मनुष्यों के लिए यह संसार रोग के समान है और उस रोग की चिकित्सा क्या हैं? केवल ज्ञान और ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले, ज्ञानियों को देने वाले भगवान सदाशिव ही हैं। वह बिना किसी प्रकार का दुःख दिए हम अज्ञानियों को अज्ञान से छुड़ा देते हैं। भगवान सदाशिव अपने भक्तों को कभी दुःख नहीं देते। यह संसार ही दुःखमय है। जिस प्रकार एक रोगी को वैद्य अपनी औषधि एवं दया से रोग मुक्त कर देता है उसी प्रकार मलिन और दुःखी मनुष्यों को भगवान सदाशिव अपनी ज्ञान रूपी औषधि द्वारा सुखी कर देते हैं। भगवान सदाशिव की आत्मिक शक्ति, शिव शक्ति उनके विचार के अनुसार जीवों को सत्य कार्य में लगा देती है। अज्ञान के मद में अन्धा हुआ जीव भगवान सदाशिव को ईश्वर नहीं मानता और वह अकल का अन्धा इसी अन्धेपन में अपना सारा जीवन नष्ट कर देता है। किन्तु जो मनुष्य शिव तत्व को जान जाते हैं बस, उन्हीं का जीवन सफल समझिये। जिनके पास बुद्धि पहुंच नहीं पाती, सूर्य-चन्द्र की गति पहुंच नहीं पाती, वहीं भगवान सदाशिव अपने भक्तों के पास उनकी भक्ति द्वारा आकर्षित होकर पहुंच जाते हैं।

श्री सूतजी बोले–हे मुनिवृन्द! जब श्री वायुदेव यह कथा सुना रहे थे तभी आकाश पर से आकाशवाणी होने लगी जिसे सुनते के साथ ही मुनीश्वर "ॐ" शब्द का उच्चारण करने लगे। ऋषियों-महर्षियों के सब संशय नहीं मिटे ऐसा जानकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वायुदेव ने कहा—हे मुनिवृन्द! ज्ञान दो प्रकार का है परोक्ष तथा अपरोक्ष। परोक्ष ज्ञान स्थिर नहीं है और सदा बना रहता है जब कि अपरोक्ष ज्ञान उपदेश द्वारा जाना जाता है। जिसका अर्थ प्रत्यक्षता कारक है वह अपरोक्ष होता है इसलिए प्रत्यक्षता के लिए ही प्रयत्न कीजिये तभी आपको मुक्ति सद्धि होगी।

इकत्तीसवां-बत्तीसवां अध्याय

(मुनीश्वरों का श्री वायुदेव से पूछना कि उस ज्ञान का अनुष्ठान किस प्रकार किया जाता है जिसके द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान होकर मनुष्य मुक्ति को प्राप्त हो जाता है? श्री वायुदेव का मुनियों को समझाना कि प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति के लिए केवल शिव अर्चन ही एक उत्तम अनुष्ठान है। भगवान सदाशिव की आराधना द्वारा ही मोक्ष प्राप्त हो जाता है। मनुष्य को चाहिए कि भगवान सदाशिव के आठ नामों का जप करता हुआ अर्धनारीश्वर भगवान सदाशिव के दर्शन अपने मस्तिष्क में करता रहे।)

मुनि बोले—हे वायु महात्मन्! उस ज्ञान का अनुष्ठान किस प्रकार किया जा सकता है जिसके द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान होकर मुक्ति प्राप्त हो जाये? अब कृपा करके हम लोगों को यही समझाइये। वायुदेव बोले—हे मुनियो! इस प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति के लिए तो शिव अर्चन ही एक उत्तम अनुष्ठान है। शिव आराधना द्वारा ही मोक्ष पद प्राप्त होता है। उस आराधना का अनुष्ठान पांच प्रकार का है। क्रिया, जप, तप, ध्यान, ज्ञान इन साधनों द्वारा किया जा सकता है। यह साधन हैं तो कठिन लेकिन जब शिव कृपा होती है तब यह सहज होने लगते हैं। इनके द्वारा सिद्धि पा लेना ही उत्तम धर्म है। जो मुक्ति देने वाला परोक्ष अपरोक्ष नाम से होता है। यह धर्म भी वेदों में वर्णित है और दो प्रकार का है एक उत्तम धर्म है दूसरा अधम। इन दोनों को बताने वाले वेद तथा उपनिषदों के योग से आरम्भ करके जो धर्म किया जाये वही परम धर्म है। भगवान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सदाशिव के परम धर्म एवं इसके संस्कारों अधिकारों का वर्णन शिव शास्त्रों तथा पुराणों में मिलता है। इस धर्म के प्रचारक चार महर्षि प्रसिद्ध हैं। रुद्र, दधीचि, अगस्त्य और उपमन्यु। इन्होंने पाशुपत अनुष्ठान का पालन किया था। इसके अतिरिक्त श्री ब्रह्माजी ने भगवान सदाशिव के आठ नामों के जाप तथा पूजन को मोक्ष का साधन बतलाया है। वह आठ नाम इस प्रकार हैं—शिव, महेश्वर, रुद्र, विष्णु, पितामह, संसार वैद्य, सर्वज्ञ और परमात्मा। इनमें आरम्भ के पांच नाम शांति अतीत कहलाते हैं। यह आत्मा के ही रूप हैं। तीन अवशिष्ट नाम संसार वैद्य आदि उपाधि द्वारा भगवान सदाशिव के सहयोग में रहते हैं। वह ईश्वर जगत का हित करने से शिव माया पुरुष की रचना से महेश्वर दुःख और उसके कारणों को दूर करने से रुद्र सर्वत्र व्याप्त रहने के कारण विष्णु जगत का पिता होने के कारण पितामह, संसार के रोगों को दूर करने से सर्व वैद्य, समस्त जगत की अन्तर्हित वस्तुओं के जानने से सर्वज्ञ और इन कहे हुए गुणों से मुक्त रहने के कारण परमात्मा कहलाते हैं। इन नामों के निरन्तर जप करते रहने से भक्त मोक्ष का अधिकारी हो जाता है। अहर्निश मानसिक पूजन ध्यान और अनुष्ठान आदि करने से भगवान सदाशिव प्रसन्न हो जाते हैं और उसे सदा अपने समीप रखते हैं। अधिक क्या कहूं अनुष्ठान कर्त्ता भक्त को चाहिए कि वह उक्त आठ नामों का उच्चारण करे। फिर निवृत्ति आदि कलात्मक ग्रन्थि विभेदन करके गुणों के अनुसार आवृत्ति करें उदान वायु द्वारा अपान वायु को दबावे फिर मूलाधर से वायु उठाकर उसके द्वारा मस्तक पर प्रहार करता हुआ प्राण वायु को चलाकर क्रमशः

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उसके हृदय, कण्ठ, तालु भृकुटियों के मध्य में ब्रह्म रन्ध्र के साथ आठ रूपों की पुरों को छेदकर सुषुम्ना नाड़ी द्वारा आत्मा को बारह दलों के मध्य में रहने वाले चन्द्र में ले जाकर उसके शिव का प्रहार है उसमें अपनी आत्मा को लय करके अपने बदन का संहार कर दे फिर शक्ति रूप अमृत से संचित शरीर में जन्म पाकर अमृत रूप अपने प्राणों को हृदय में बाह्य दल के मध्य में रहने वाले चन्द्र के आगे श्वेत कमल में विराजने वाले भक्तों पर कृपालु भगवान सदाशिव का ध्यान करे। शिव आदि आठ नामों का उच्चारण करे। भावमय पुष्पों द्वारा पूजो स्थिर चित्त होकर भगवान सदाशिव के आठ नामों का जप करना चाहिए। नाभि के मध्य में भगवान सदाशिव के आठ नाम धारण करके इस प्रकार आठ आहुतियां देकर फिर पूर्ण आहुति देकर प्रणाम करके आठ पुष्प चढ़ाने चाहिए। फिर बाली का पूजन करना चाहिए। पश्चात चुलुआ जल मार्ग द्वारा अपनी आत्मा भगवान सदाशिव को समर्पण करनी चाहिए। बस मैं अधिक क्या कहूं इतना कहना ही पर्याप्त समझता हूं कि अनुष्ठान कर्ता भक्त को चाहिए कि वह भगवान सदाशिव के आठ नामों का जप करता हुआ भगवान सदाशिव के दर्शन अपने मस्तिष्क में करता रहे।

तेतीसवां अध्याय

(पशुपत व्रत की विधि। उपासक का सही पथ-प्रदर्शन। पशुपत व्रत समूल पापों का नाश करने वाला है। व्रती के लिए आवश्यक निर्देशन। उसे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए। पापियों से दूर रहना चाहिए। प्रतिदिन स्नान करना चाहिए भस्म और त्रिपुण्ड भी प्रतिदिन लगाना चाहिए। इस व्रत का व्रती भगवान सदाशिव की कृपा से ज्ञानी हो जाता है।)

मुनीश्वरों ने कहा—हे वायुदेव! अब आप कृपा करके हमें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पाशुपत व्रत के बारे में विस्तृत रूप से बतलाइये। हमें बतलाइये कि ब्रह्मा आदि समस्त देवता क्यों पाशुपत कहलाते हैं ? श्री वायुदेव ने कहा—सुनिये अब मैं आपको अथर्व शिरस उपनिषद में आये हुए पाशुपत व्रत का रहस्य समझाता हूं। यह व्रत समस्त पापों को समूल नष्ट करने वाला है। अथर्व वेद में इसका वर्णन आया है। यह व्रत चैत्र की पूर्णिमा को करना चाहिए। व्रत शिव मन्दिर, पवित्र वन या किसी अन्य पवित्र स्थान में करना चाहिए। तेरस के दिन शिव भक्त पवित्र जल द्वारा स्नान करे। पश्चात गुरुदेव की पूजा करके उनसे व्रत करने की आज्ञा मांगे। फिर श्वेत वस्त्र पहनकर कुशासन पर बैठे। बाद में संकल्प करे। जब तक स्वास्थ्य माने तब तक व्रत में लगा रहे। हवन के लिए अग्नि जलाकर उसमें समिधा एवं चरू की आहुतियां डाले। फिर अग्निदेव से प्रार्थना करे—भगवन ! मेरी देह की सातों वस्तुओं को शुद्ध कीजिए। मेरे पंचभूत और तनमात्राएं बुद्धि मन सभी पवित्र कर दीजिए। उसके बाद गोबर की एक मूर्ति बनाकर अग्नि में रक्खे। उस दिन व्रती को हविष्य का भोजन करना चाहिए। अगले दिन भी उसको ऐसा ही करना चाहिए। उस दिन उसको भोजन न करना चाहिए। सारा दिन व्रत रखना चाहिए। पूर्णिमा को हवन कुण्ड की भस्म लेकर सारे शरीर में लगानी चाहिए। उसके बाद जटा, बल्कल, दण्ड और मेखला धारण करे। यदि लोक लज्जा न हो तो नग्न होकर कोपीन धारण कर लेवे। दोनों पैर धोकर और आचमन करके सारी देह पर भस्म रमावे मस्तक पर त्रिपुण्ड बनावे। इस भांति तीनों कालों में आचरण करने से मनुष्य पशुत्व से मुक्त हो जाता है। इसके बाद विधि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के अनुसार अर्चन करे। अर्चन में किसी वस्तु की कमी न रहनी चाहिए। इसके बाद व्रती गणेश आदि समस्त देवताओं का पूजन करे। उसके बाद लिंग की प्रतिमा में सदाशिवजी की मूर्ति का दर्शन करके उन्हें शय्या की सब वस्तुएं प्रदान करे। फिर शय्या दान की सब वस्तुएं अपने कुल गुरु को दे देवे। उसके बाद ब्राह्मणों व अनाथों को भली भांति भोजन करावे। व्रती यदि निराहार न रह सके तो फल-फूल खाकर रात्रि बितावे। उसको ब्रह्मचर्य व्रत का भी बड़ी सख्ती से पालन करना चाहिए। यह व्रत कर्ता की इच्छा पर निर्भर है कि वह कितने दिनों का व्रत करना चाहता है। देखिये, भस्म स्नान और त्रिपुण्ड प्रतिदिन लगाना चाहिए अधिक क्या कहूं भस्म भगवान सदाशिव का परम अस्त्र है, जिसे भूति तथा रक्षा भी कहते हैं।

चौंतीसवां अध्याय

(निर्धन व अबोध बालक उपमन्यु का अपने मामा के घर में दूध पीना और घर आकर अपनी माता से दूध पीने के लिए जिद करना। माता का उसे कृत्रिम दूध पिलाना और उसे बताना कि भगवान सदाशिव के प्रसन्न होने पर ही मनुष्य को दूध का भोजन, राज्य, स्वर्ग, मोक्ष तथा मणि-माणिक्य सब कुछ प्राप्त हो जाता है। उपमन्यु का वन में जाकर भगवान सदाशिव की उपासना करना।)

ऋषि बोले—हे वायुदेव! अब आप कृपा करके परम भक्त धौम्य के बड़े भाई उपमन्यु, जो बचपन से ही शिव भक्त हुए हैं उनकी कथा विस्तार से सुनावें। वायुदेव बोले—हे मुनियो! उपमन्यु बालकपन से ही परम तपस्वी हुए हैं। इनका पहिला जन्म भी सिद्ध था। उसी संस्कार से यह इस जन्म में भी सिद्ध तपस्वी हुए। ये परम तपस्वी व्याघ्रपाद मुनि के पुत्र थे। इन पर शिवजी की अपूर्व कृपा हुई जिससे ये तपस्वियों में अग्रणीय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सिद्ध हुए। भगवान शंकरजी ने अपने पुत्र गणेश एवं कार्तिक स्वामीजी के साथ-साथ उनको भी शरीर का समुद्र प्रदान कर दिया। शंकर की कृपा द्वारा ही सभी शास्त्र इनको अधिगत हुए ज्ञान प्राप्ति हुई। धारण शक्ति तो इन्हें बालकपन से सिद्ध थी। एक दिन बालकपन में उपमन्युजी ने दूध के लिए हठ किया किन्तु आश्रम में धन के न होने के कारण दूध कहां तब उपमन्यु के हठ करने पर माता रो उठी और पुत्र से बोली—हे पुत्र! दूध कहां है? उपमन्यु ने कहा अभी-अभी मेरे भ्राता ने भी तो दूध पी लिया है उसे कहां से मिल गया है इसलिए मुझे भी गाय का स्वादिष्ट दूध दो। किन्तु तब तो माता व्याकुल होकर अपने पुत्र को गोदी में लेकर बोली—पुत्र! घबरा नहीं दूध मिल जायेगा। इतना सुनकर बालक ने और विशेष हठ किया रोने लगा मुझे अभी दूध दो। किन्तु माता समझावे। वह बिचारी कल्पती हुई घर में पहुंची भुने हुए गेहूं को पीसकर उस चून को पानी में घोलकर ले आई और बोली—लो! यह दूध है। बालक ने उसके केवल दो-चार घूंट पिये फिर कहने लगा—माताजी! यह दूध अच्छा नहीं है। अतः मैं नहीं पियूंगा। वह फिर रोने लगा। तब माता ने उसकी आंखों से गिरते हुए आंसुओं को पोंछा और उसे बार-बार अपने सीने से लगाया। फिर उसने कहा—मेरे लाल! जब तक भगवान सदाशिव प्रसन्न न हों, किसी को दूध का भोजन प्राप्त नहीं होता। राज्य भोग, दूध का पीना, उत्तम पदार्थ, स्वर्ग सुख आदि केवल भगवान सदाशिव की कृपा से प्राप्त होते हैं। बेटे! तुम ही बताओ कि हम वनवासियों के पास दूध कहां से आये? मैंने तो केवल तेरे सन्तोष के लिए ही बीज पीसकर दूध तैयार किया था और तुम्हें

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पीने के लिए दिया था। तुम बार-बार माता के यहां का दूध याद करके दुःखी होते हो और मुझे भी दुःखी करते हो। जब हमने धन देने वाले भगवान सदाशिव की भक्ति ही नहीं की तो फिर हमारे पास धन कहां से आये? दूध कहां से आये? इसीलिए हम निर्धन हैं और मेरे बेटे! भगवान सदाशिव की भक्ति के उपलक्ष में जो वस्तुएं दी जाती हैं वही जन्मान्तर में प्राप्त होती हैं। वह वस्तुएं अन्य विष्णु आदि देवताओं की भक्ति द्वारा नहीं मिलतीं। माता की बात सुनकर उपमन्यु भी अन्तःकरण में पछताने लगे। फिर उन्होंने माता से कहा—हे माताजी! तुम अब रत्ति भर भी शोक न करो और न ही किसी प्रकार की चिन्ता ही करो। मैं अब भगवान सदाशिव को प्रसन्न करके ही दूध पियूंगा। यदि इस संसार में कहीं भगवान सदाशिव मौजूद हैं तो मैं अभी उस स्थान पर जाकर भगवान सदाशिव की आराधना करूंगा। माता पुत्र की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। उसने कहा—बेटे! भगवान सदाशिव हर जगह विद्यमान हैं। तुम जाओ देर न लगाओ, भगवान सदाशिव का पूजन करो। बस उनको पुकारना ही पर्याप्त है। वह झट प्रकट हो जाते हैं। तुम "ॐ नमः शिवाय" इस मन्त्र का जाप करो। इस मन्त्र से सभी सिद्धियां प्राप्त होती हैं। माता ने जब इस प्रकार समझाया तो उपमन्यु माता के पहलू में चुपचाप सो गए। माता भी सो गई। उपमन्यु की आधी रात को अपने आप ही आंख खुल गई। देखा कि भगवान सदाशिव उनकी चारपाई के पास खड़े हैं और दूध से भरा हुआ कटोरा उनके हाथ में है और वह संकेत द्वारा उपमन्यु को अपने पास बुला रहे हैं। उपमन्यु उठा और भगवान सदाशिव की ओर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बढ़ा वह दरवाजे की ओर बढ़े। उपमन्यु भी उनके पीछे-पीछे दरवाजे तक गया। दरवाजे के पास पहुंचा तो भगवान सदाशिव वहां पर मौजूद न थे। उपमन्यु दरवाजे से बाहर निकल कर उनको देखने लगे, किन्तु वह वहां भी मौजूद न थे। तब उपमन्यु बड़े ही व्याकुल हो गए। अन्त में उन्होंने यही निर्णय किया कि वन में जाकर तप करेंगे। माता से आज्ञा लेकर वह तप करने के लिए रवाना हो गए। जाती बार माता ने उनसे कहा—पुत्र! सभी देवता तुम्हारा कल्याण करेंगे। माता से विदा होकर उपमन्यु हिमालय पर पहुंचे। पहले तो वहां आठ ईंटों की बेदी बनाकर उसमें भगवान सदाशिव की मिट्टी की मूर्ति रखकर उसका पूजन करते रहे और "ॐ नमः शिवाय" मन्त्र का जाप करते रहे। बाद में उनका तप क्रमशः कठोर होता चला गया। इसी बीच में एक पिशाच उनके यज्ञ में विघ्न डालने के लिए आया मगर मन्त्र जप के प्रभाव से वह उपमन्यु का कुछ बिगाड़ न सका। हां उसका कल्याण अवश्य हो गया वह अपनी पिशाच योनि से छुटकारा पा गया। बालक उपमन्यु के तप से सारा संसार विकल हो उठा।

पैंतीसवां अध्याय

(उपमन्यु बालक के तप से सभी चर और अचर संसार का विकल हो जाना। सब देवताओं का तपाग्नि से दुःखी होकर भगवान विष्णु के पास जाना। भगवान विष्णु का उनकी दुःख गाथा सुनकर उनको मन्दरांचल पर्वत पर भगवान सदाशिव के पास ले जाना और उपमन्यु के तप के बारे में कहना। भगवान श्री सदाशिव का उनको संकट-मुक्ति का आश्वासन देना और आप श्री पार्वतीजी को साथ लेकर बालक उपमन्यु के पास पहुंचना। उपमन्यु का उनके दर्शन करके गद्-गद् होना और अनन्य भक्ति का वर प्रदान करने के लिए प्रार्थना करना। भगवान सदाशिव का उसको मनचाहा वर देना।)

श्री वायुदेव ने कहा—हे मुनीश्वरो! सब देवता तपाग्नि से

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दुःखी होकर बैकुण्ठ में भगवान विष्णु के पास पहुंचे और उनसे बालक उपमन्यु के तप के बारे में कहा। भगवान विष्णु उन सबको साथ लेकर श्री सदाशिव के पास पहुंचे और उनसे कहा—हे प्रभो! उस बालक को तपस्या से रोकिये। भगवान सदाशिव बोले—आप लोग निश्चिन्त होकर अपने-अपने धामों को लौट जाइये। मैं बालक उपमन्यु के पास जा रहा हूं। उसका तप पूरा हो चुका है। मैं उसका दुःख दूर करने के लिए प्रबन्ध कर रहा हूं। उसका दुःख दूर होते के साथ ही आप लोगों का दुःख भी दूर हो जाएगा। उसके तप के कारण संसार में जो दुर्भिक्ष पड़ रहा है, वह भी समाप्त हो जाएगा। भगवान सदाशिव के वचन सुनकर सभी देवता अपने-अपने धामों को चले गए। भगवान सदाशिव एवं भगवती पार्वती ने उनके जाने के पश्चात इन्द्र-इन्द्राणी के रूप में उपमन्यु के पास पहुंचे। उनको देखकर उपमन्यु ने कहा—हे देवेन्द्र! आपने यहां पधार कर मेरे आश्रम को पवित्र कर दिया है। यदि आप मुझे कुछ देने आये हैं तो मुझे भगवान-सदाशिव की भक्ति प्रदान कीजिए। इन्द्र बने हुए भगवान सदाशिव ने कहा मैं देवताओं का स्वामी इन्द्र हूं। शिव तो निर्गुण हैं। उनसे भला तुमको क्या लाभ हो सकता है? वह देवताओं से पृथक हैं और पिशाच हैं। उपमन्यु ने कहा—आप भगवान सदाशिव की व्यर्थ में निन्दा कर रहे हैं। मैं उनकी निन्दा सुनना नहीं चाहता और अब मैं भगवान सदाशिव के विरुद्ध एक शब्द नहीं सुनूँगा। यदि आप भगवान सदाशिव के विरुद्ध एक शब्द भी अपनी जिह्वा से निकालियेगा तो मुझे अपना शत्रु समझियेगा। मैं भगवान सदाशिव की निन्दा बिल्कुल नहीं सहन कर सकता। यदि अब आप उनकी निन्दा कीजियेगा तो मैं शिव के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अस्त्र से अपने प्राण त्याग दूंगा। इतना कहकर उपमन्यु मरने-मारने पर तैयार हो गए। उसने भगवान सदाशिव की ओर आग्नेय अस्त्र फेंका। भगवान सदाशिव के संकेत से नन्दीश्वर ने वह अस्त्र बीच में ही पकड़ लिया। और अपना वास्तविक रूप धारण कर लिया और उपमन्यु के सामने दूध, दही, घृत, फल और भोजन की स्वादिष्ट सामग्री के ढेर उपस्थित कर दिये। और उपमन्यु को अपनी गोद में ले लिया और श्री पार्वतीजी से कहा—हे देवी! यह तुम्हारा पुत्र है इसे प्यार करो। यह कहकर उन्होंने उपमन्यु को श्री पार्वतीजी की गोद में दे दिया। भगवती ने बालक उपमन्यु को अक्षत आयु होने का वरदान दिया। उसके साथ ही कभी नष्ट न होने वाली ऋद्धि-सिद्धि उनको प्रदान की। फिर उन्हें परम तपस्वी मानकर पाशुपत व्रत के योग का तत्व उपदेश का प्रचारक तथा कुमार अवस्था में रहने का वर यह सभी उसे प्रदान किये। भगवान उपमन्यु ने भगवान सदाशिव से कहा—प्रभो! आप मुझे कभी नष्ट न होने वाली भक्ति का वर प्रदान कीजिये। मुझे ऐसी शक्ति दीजिए जिससे कि मैं अपने सम्बन्धियों को आपका भक्त बनाऊं और मेरी आपके भक्तों के साथ प्रीति हो। भगवान सदाशिव ने कहा—हे उपमन्यु! मैंने प्रसन्न होकर तुम्हें सब कुछ दे दिया है। क्योंकि तुम [illegible] अन्यन्य भक्त हो। तुम सर्वदा अजर, अमर, यशस्वी, तेजस्वी [illegible]र दिव्य ज्ञानी बनकर रहोगे। तुम्हारा वंश बन्धु-बांधव और गोत्र सदा अटल रहेगा। वायुदेव बोले—हे मुनियो! इस प्रकार उपमन्यु को वर देकर श्री पार्वतीजी के साथ भगवान सदाशिव अन्तर्ध्यान हो गए। उपमन्यु भी अपने घर को वापिस लौट आये।

॥ इति श्री शिवमहापुराणस्य वायवीय संहिता सम्पूर्णम् ॥

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिव महापुराण

(भाषा)

वायवीय संहिता खण्ड

पहला अध्याय

(भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज को श्री उपमन्यु का पाशुपत ज्ञान का उपदेश देना। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज का बारह महीने के लिए पाशुपत व्रत धारण करना। बारह महीने के बाद उनको पार्वती सहित भगवान सदाशिव ने दर्शन देना। भगवान सदाशिव की कृपा से भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी को पुत्र की प्राप्ति।)

श्री वायुदेव ने मुनीश्वरों से कहा—हे मुनियो! मैंने आपको उपमन्यु की कथा सुनाई है जिन्होंने दुग्धपान के लिए, तपस्या करके भगवान सदाशिव को प्रसन्न किया था। अब आप मुझे बताइये कि अब आप और क्या सुनना चाहते हैं। उत्तर में ऋषियों ने कहा—हे वायुदेव भगवान! श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने उपमन्यु के दर्शन करके पाशुपत व्रत का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त किया था? श्री वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने अपनी इच्छा से अवतार लिया था। उन्होंने मनुष्य देह की निन्दा करते हुए अपने शरीर की शुद्धि के लिए, तथा पुत्र की प्राप्ति के लिए मुनियों के आश्रम पर तप करने का निश्चय किया। वहां जाकर उन्[illegible] त्रिपुण्ड लगाये और जटाजूट धारण किये हुए तेजस्वी उपमन्यु के दर्शन किये। उनको प्रणाम किया, उनकी परिक्रमा की। तपस्वी उपमन्यु के केवल दर्शनों से ही उनके शरीर का माया-जनित मैल दूर हो गया। उपमन्यु ने भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को निर्मल जानकर 'व्यायुष्यं जमग्नेः' इस मंत्र द्वारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उनकी देह को भस्म से भूषित किया। इसके साथ ही उनको ज्ञान का उपदेश भी दिया। उसके बाद उनसे उन्होंने बारह महीनों का पाशुपत व्रत करवाया। एक वर्ष के पश्चात श्री पार्वती सहित, भगवान सदाशिव ने उनके तप से प्रसन्न होकर उनको दर्शन दिए। तब भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज ने उनको प्रणाम किया और उनकी स्तुति की। इस पर भगवान सदाशिव ने प्रसन्न होकर उनको साम्ब नामक पुत्र की प्राप्ति का वर प्रदान किया। फलतः भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज को उनकी धर्मपत्नी जाम्बवती द्वारा साम्ब नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। हे मुनीश्वरो! इस प्रकार भगवान श्रीकृष्णचंद्र जी महाराज को श्री उपमन्यु से ज्ञान और भगवान सदाशिव के वर से पुत्र की प्राप्ति हुई।

दूसरा अध्याय

(वायुदेव का मुनीश्वरों को बताना कि सभी प्राणी ब्रह्मा से स्थावर पर्यन्त भगवान सदाशिव के पशु हैं। भगवान सदाशिव उन सबके स्वामी हैं। इसीलिए भगवान सदाशिव को पशुपति कहा जाता है। भगवान सदाशिव प्राणियों को मल माया आदि दृढ़ रस्सियों से बांधे रहते हैं। जब उनकी भक्ति उपासना दृढ़ देखते हैं तो उन माया-रूपी रस्सियों को खोल देते हैं।)

मुनीश्वरों ने कहा—हे वायुदेव! आप जैसा उत्तम वक्ता दूसरा नहीं है। अतः आप कृपया हमें यह बतायें कि ज्ञान किस प्रकार का है? भगवान सदाशिव का नाम पशुपति कैसे हुआ? भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज ने उपमन्यु से कौन-कौन से प्रश्न किये थे? श्री वायुदेव बोले—हे मुनीश्वरो! जो पाशुपत व्रत की-विधि कभी भगवान सदाशिव ने माता पार्वती जी को सुनाई थी। वही विधि श्री उपमन्यु ने भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को सुनाई थी। अब वही कथा मैं आपको सुना-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

ऊंगा। ध्यानपूर्वक सुनिये। उपमन्यु ने कहा था—हे श्री कृष्णजी! ब्रह्मा से स्थावर तक सभी प्राणी भगवान सदाशिव के पशु हैं। भगवान सदाशिव चूंकि उन पशुओं के स्वामी हैं इसलिए पशुपति कहलाते हैं। वह मल माया आदि पाशों से प्राणियों को बांधे रहते हैं। जब ब्रह्मा आदि समस्त जीव उनकी भक्ति करते हैं तो भगवान सदाशिव उनको माया-पाश से मुक्त कर देते हैं। चौबीस तत्वों के विषयों को ही पाश (रस्सी) कहते हैं। यह सब तत्व भगवान सदाशिव के आदेश से ही अपना-अपना कार्य किया करते हैं। भगवान सदाशिव की आज्ञा की अवहेलना कोई भी तो नहीं कर सकता। ब्रह्मा, विष्णु रुद्र और पंचभूत यथा समय अपना-अपना कार्य करते रहते हैं। उन्हीं भगवान सदाशिव के अनुशासन से यह आकाश सर्वव्यापक है। वायु प्राण आदि नामों से आकर सारे जगत का भीतर बाहर से पालन करता है। हव्य-कव्य भी ग्रहण कर लेता है। जल रूपी जगत में जीवन भर देता है। फिर पृथ्वी जगत को धारण करती है। देवादिकों का पालन तथा दानवों का संहार करने वाले भगवान सदाशिव ही हैं। उनके अनुशासन से ही इन्द्र तीनों लोकों की रक्षा करते हैं। उन्होंने ही वरुण देव को जमें का आधिपत्य दिया है। समस्त जगत उनके ही नियन्त्रण ल रहता है।

तीसरा अध्याय

(श्री उपमन्यु का भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को बतलाना कि भगवान सदाशिव अपनी मूर्तियों द्वारा ही समस्त जगत में व्याप्त हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश और सदाशिव उनकी मूर्तियां हैं। इसके अतिरिक्त ईशान, पुरुष, अघोर, वाम और सद्य नाम की उनकी पांच और मूर्तियां भी हैं। अपना कल्याण चाहने वाले भक्त को नित्य प्रति उपासना करनी चाहिए। जिस प्रकार पुत्र पौत्रादि पाकर पिता प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार भगवान सदाशिव भी अपने भक्त की उपासना से प्रसन्न हो जाते हैं।)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्ण ! भगवान शंकर ही अपनी मूर्तियों द्वारा ब्रह्माण्ड में व्यापक हो रहे हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेशान, सदाशिव ये सभी उनकी प्रतिमायें हैं जिनमें सारा जगत् व्याप्त हो रहा है, इस प्रकार और भी पांच मूर्तियां ईशन पुरुष, अघोर, वामदेव, सद्योजात आदि प्रसिद्ध हैं। ईशान तो सबमें मुख्य है। यही मूर्ति क्षेत्रज्ञ है मूर्तिमान स्थाणु मूर्ति पुरुष है बुद्धि तत्व का आश्रय लिए अघोर मूर्ति है। श्री महादेव जी के अहंकार की अधिष्ठानी वामदेव नामक मूर्ति है। शंकर जी के हृदय में निवास करने वाली सद्योजात मूर्ति है। ईशानी मूर्ति श्री त्रिवाणी शब्द आकाश की अधिष्ठात्री है ईश्वरीय मूर्ति तात्विक हस्त, स्पर्श वायु की अधिष्ठात्री है। अघोर मूर्ति नेत्र, चरण, रूप अग्नि की अधिष्ठात्री है। वामदेव मूर्ति रसना वायु, रस, एवं जल की अधिष्ठात्री है। सद्योजात प्रतिमा घ्राण उपस्थ, गन्ध पृथ्वी की अधिष्ठात्री है। इस प्रकार शंकरजी की आठ प्रतिमा हैं। सूत्र में जैसे मणियां ग्रथित रहती हैं उसी प्रकार इन मूर्तियों में संसार ग्रथित है। वे आठ मूर्तियां—शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, महादेव इत्यादि पृथ्वी, जल, तेज, पवन, आकाश, क्षेत्रज्ञ, यहां से सूर्य चन्द्र आदि को धारे हुए है विश्वधारिका शिव की शार्वी जल जीविनी वायिका भावी मूर्ति हैं जगत के अन्दर बाहर विचरने वाली तेजोस्वी रौद्री मूर्ति है जगत की संचालिका पवन मूर्ति है आकाशत्मिका भीमा मूर्ति सारे विश्व में व्याप्त है। पाशुपति मूर्ति पाशुपाश छेदन करने वाली सर्व क्षेत्रों में निवास करने वाली सभी आत्माओं की अधिष्ठात्री है ईशानी मूर्ति सूर्य रूप होकर जगत को प्रकाश देने वाली है। महादेव मूर्ति, चन्द्रमा रूप द्वारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

किरणों से जगत को तृप्त करती है। आठवी मूर्ति तो सर्व व्यापक है इसी कारण सारा जगत् शिव रूप है। अतएव शिव की आराधना ही अभय अनुग्रह दायक होकर उपकार करने वाली है। जिस प्रकार पुत्र पौत्रादिक पाकर पिता प्रसन्न होता है उसी प्रकार भगवान शंकर भी इस विस्तार से जटाधारी हो प्रसन्न होते हैं।

चौथा अध्याय

(श्री उपमन्यु का भगवान श्रीकृष्ण को बताना कि स्त्री-पुरुष भगवान सदाशिव की विभूतियां हैं। श्री सदाशिव शक्तिमान हैं और शिवा उनकी शक्ति है और यह चराचर जगत उनकी विभूति का लेशमात्र है। चित्त और अचित्त, शुद्ध और अशुद्ध पर और अपर एवं चित्त चक्र और अचित्त चक्र यह सब शिव और शिवानी के ही रूप हैं।)

श्री कृष्ण बोले—हे महर्षि! यह सारा विश्व इस प्रकार शिवजी की आठ मूर्तियों से व्याप्त हो रहा है। यह तो आपने सुना दिया। अब कृपा करके यह कहें कि स्त्री पुरुष द्वारा यह विश्व किस प्रकार अधिष्ठित है? यह सुनकर उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्ण अब मैं इस विभूति का वर्णन करता हूं स्त्री पुरुष श्री महादेव जी की ही विभूति कही जाती हैं। श्री महादेव शक्तिमान हैं और महादेवी उनकी शक्ति हैं और यह चराचर विश्व उनकी विभूति का लेशमात्र ही है। जो कुछ भी चेतन जड़ है शुद्ध है अथवा अशुद्ध है पर तथा अपर है और जो भी उचित चक्र है उसके साथ-साथ चेतन चक्र चलता है वह अपर अशुद्ध पर शुद्ध है यह दोनों ही चिदचित स्वरूप शिव भवानी के स्वाभाविक एक ही रूप हैं शिव भवानी के वश में तो यह संसार है, स्वयं इसके वश में नहीं। तभी तो वह विश्वेश्वर हैं। शिवा शक्ति के द्वारा ही शंकर सभी प्राणियों को भुक्ति-मुक्ति देते हैं। किन्तु वह शक्ति उनके ही आश्रय में रहती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

है। शिव समान ही धर्म वाली वह शक्ति है। यही एक चिद्रूपा शक्ति विश्व को विभक्ति करती है। सारा विश्व ही उस पार्वती शक्ति से विस्तार को प्राप्त है। उसी शक्तिमान से क्रियात्मक शक्ति होती हैं। फिर वह क्षोभ को पाकर प्रथम नाद को पैदा करती है नाद से विन्दु, विन्दु से सदाशिव देव, उससे परमेश्वर महेश्वर से युद्ध विद्या पैदा हो जाती है। यह ईश्वर की वाणी शक्ति ही है फिर वर्ण तथा रूप द्वारा मातृका कहाती है। जंगम स्थान संसार को रचने वाली शक्ति ही है। यही निश्चयात्मक ज्ञान है। ज्ञान तथा क्रिया की अभिलाषा वाली तीन शक्तियों द्वारा ईश्वर शक्तिमान है। जगत् भर में स्त्री पुरुषों की विभूति शिव भवानी से आश्रित हैं। जैसे माता-पिता बिना पुत्र का जन्म नहीं हो सकता। उसी प्रकार भव-भवानी के बिना चराचर जगत उत्पन्न नहीं हो सकता। संसार स्त्री और पुरुष से उत्पन्न हुआ है। अतः यह जगत तद रूप ही है। प्रत्येक देव के साथ शक्ति है। ज्यादा क्या कहूं। सदाशिव दिन हैं तो शिवा रात हैं। सदाशिव आकाश हैं तो शिवा पृथ्वी हैं। सदाशिव समुद्र हैं तो बेला शिवा हैं। सदाशिव वृक्ष हैं तो शिवा लता हैं। भगवान सदाशिव पुरुषवाची और शिवा स्त्रीवाचिनी हैं। भगवती शब्द रूप और सदाशिव अर्ध रूप हैं। हे श्री कृष्णजी! जैसे जलते हुए दीपक की ज्वाला सारे घर को चमका देती है। इसलिए यह शिव और शिवा दोनों पूजा के योग्य हैं और उपासना के योग्य हैं। अतः आप इनकी आराधना में संलग्न रहिये। यह परमेश की विभूति है, यही सर्वस्व है। यह संजीवनी औषधि है। यह संसार के बन्धन से छुड़ाती है। आप यह वृतान्त किसी अधिकारी को सुना सकते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पांचवां अध्याय

(उपमन्यु का भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को बताना कि यह समस्त संसार भगवान श्री सदाशिव का शरीर है, किन्तु मायापाश के कारण मनुष्य इस भेद को समझ नहीं पाता। जो अपनी भक्ति द्वारा सदाशिव के दर्शन पा लेता है वह शिव के समान ही हो जाता है।)

उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्ण जी! यह सारा ब्रह्माण्ड भगवान सदाशिव का ही स्वरूप है। सभी चराचर जीव माया पाश के कारण इस भेद को जान नहीं पाते। ऋषि-मुनि भी इनको अनेक भावों से जनता के सन्मुख रखते हैं। उनमें से कई तो उन्हें अपर ब्रह्म, पर ब्रह्म कहते हैं और उनमें से कई उन्हें अनादि अनन्त कहते हैं। कोई विद्या और अविद्या मानते हैं। कई सत और असत्य कहते हैं। कई क्षर और अक्षर कहते हैं। कई व्यक्त और अव्यक्त कहते हैं। कई समष्टि और व्यष्टि कहते हैं। कई प्रधान पुरुष कहते हैं और कई काल कहते हैं। कई उन्हें काल का प्रवर्तक और कई निवर्तक कहते हैं। उन्हें विराट, हिरण्यगर्भ, प्राज्ञ, तेजस और विश्वात्मा कहते हैं। कई उन्हें संसारी और असंसारी, निर्गुण और सगुण, स्वतन्त्र और परतन्त्र, घोर और अघोर, सक्रिय और निष्क्रिय, रागी और बैरागी, ध्रुव और अध्रुव, रूपी और अरूपी दृश्य और अदृश्ययुक्त और चिंतारहित और कई उन्हें ज्ञेय और अज्ञेय कहते हैं। इस प्रकार अनेकों ज्ञानी महात्मा अपनी बुद्धि के अनुसार विरोधाभासों से ब्रह्म को अनेकों प्रकार से प्रतिपादन करते रहते हैं किन्तु उनकी यथार्थता को वह नहीं जान पाते। वह पुरुष जो अपनी भक्ति द्वारा भगवान सदाशिव का दर्शन पा लेता है, वह पुण्य पापों से मुक्त होकर शिव के समान ही हो जाता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

छटवां अध्याय

(उपमन्यु का भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज को बताना कि भगवान सदाशिव बन्धन रहित हैं। प्रकृति, माया, बुद्धि, अहंकार आदि में से उनको कोई भी बांध नहीं सकता। उनमें वासना, मोह अथवा भोगों के संस्कार नहीं हैं। उनका कोई भाई प्रेरक, गुरू, रक्षक और पति नहीं है। काल, कला, विद्या, भाग्य, राग-द्वेष आदि सभी उनसे डरते हैं।)

उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्णजी! भगवान सदाशिव बन्धन-रहित हैं। वह मन और इन्द्रियों के बन्धन आदि से दूर हैं। उनका कोई भाई, प्रेरक, गुरु, रक्षक और पति नहीं है। उसे काल, कला, विद्या, राग-द्वेष सभी डरते हैं। श्री सदाशिव पर उनमें से किसी का भी अधिकार नहीं है। वह जन्म-मरण से रहित हैं। याद रहे कि उनका कभी अकल्याण नहीं होता। वह सदा कल्याणमय हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण जगत में व्यापक रूप सदाशिव को जिसने जान लिया है वह कभी मोह को प्राप्त नहीं होता। भगवान सदाशिव को बारम्बार नमस्कार हो। वह हिरण्यबाहु भी शिवरूप से काल के अग्रभाग जितना है। हृदय के मध्य में उनका ध्यान करना चाहिए। प्रणव शब्द में चार मात्रायें हैं—अकार, उकार, मकार और नाद। अकार ऋगवेद, उकार युजर्वेद, मकार सामवेद और नाद अथर्व वेद है। अकार ब्रह्मा, उकार विष्णु, मकार रुद्र, और नाद परम पुरुष निष्क्रय सदाशिव हैं। इन तीनों मात्राओं ने भगवान सदाशिव का साक्षात रूप धारण कर लिया है। प्रणव मन्त्र के जपने से भगवान सदाशिव के रूप का बोध होने लगता है। उनको छोड़कर कोई भी महान-से-महान लघुतम और ज्येष्ठतम नहीं है। वह वृक्ष की भांति स्थिर होकर आकाश में विद्यमान हैं। सभी चराचर विश्व को उसी पुरुष ने पा लिया है जोकि भगवान सदाशिव का सच्चा भक्त है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सातवां अध्याय

(शिव-तत्व-व्याख्या)

उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्ण ! भगवान सदाशिव की विद्या और अविद्या के लक्षण वाली शक्ति स्वाभाविक है। वह एक होती हुई भी अनेक है और सूर्य की तेजमयी किरणों के समान सर्वत्र फैली हुई है। उसी से विश्वेश्वर सदाशिव आदि पुरुष हुए हैं। प्रकृति महत्व से लेकर विशेष तक और प्रजा आदि सभी शक्ति की ही मूर्तियां हैं। जो कुछ जगत में संचालित होता है वह सब कार्य शक्ति का ही है। शक्ति, सर्व व्यापक, सूक्ष्म और आनन्द ज्ञान रूप है। भगवान सदाशिव को शक्तिमान कहा जाता है। अतः शिव और शिवा को जानना चाहिए। देखिये कृष्णजी ! विद्या, प्रज्ञा, श्रुति, स्मृति, धृति, स्थिति, निष्ठा, यह सभी शक्ति के रूप हैं। यह शक्ति विश्व भर की विमोहिका है। यह सत्ताईस प्रकार वाली माया है।

जो मनुष्य—साधक शक्ति के साथ भगवान सदाशिव के स्वरूप को अपने हृदय में ध्यान द्वारा देख लेता है, उसको परम शान्ति की प्राप्ति होती है। तभी तो दोनों का तादात्म्य सम्बन्ध है। शिव और शक्ति का कभी व्योग नहीं होता। वह दोनों एक रूप ही हैं। उन दोनों की कृपा से ही, भक्तों को उनके दर्शनों की प्राप्ति होती है। मुक्ति की प्राप्ति के लिए ज्ञान तथा कर्म आवश्यक नहीं हैं, शिव-शिवा के प्रसन्न होते ही, मुक्ति अपने आप प्राप्त हो जाती है। भक्ति द्वारा शिव शिवा प्रसन्न हो जाते हैं उनके प्रसन्न होने से मोक्ष तथा आनन्द प्राप्त होता है। जो मनुष्य भगवान सदाशिव की अपने अन्दर थोड़ी सी भावना भी रखता है, उसको तीन जन्म के बाद अपने आप मोक्ष की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्राप्ति हो जाती है। सेवा भक्ति दो प्रकार की है। एक सांग, दूसरी अनंग, ऐसा होने पर फिर वह मन, वाणी, तथा साधन द्वारा तीन प्रकार की हो जाती है—चिन्तन करना मानसी सेवा, जप-भजन करना वाणी सेवा और कर्म अनुष्ठान करना कायिकी सेवा। तप, कर्म, जप, ज्ञान, ध्यान, चन्द्रायण आदि व्रत तप हैं। शिवलिंग की पूजा पूजन कर्म है। शिव नाम का जाप अभ्यास जपन है, शिव-चिन्तन ध्यान है। शिव शास्त्रों में हमें इसी प्रकार की शिक्षा मिलती है।

हे कृष्णजी! भगवान सदाशिव ने शिव शास्त्र का यह वर्णन स्वयं भगवती शिवा को सुनाया था। अतः यह आवश्यक है कि भक्तजन भगवान शिव एवं शिव की भक्ति को उत्तरोत्तर बढ़ायें।

आठवां अध्याय

(शिव ज्ञान—वेदों का सार, पूजा और पूजा के अधिकारी।)

भगवान श्री कृष्णचन्द्र महाराज ने कहा—हे ब्राह्मण! अब मैं आपसे वेदों का सार रूप ज्ञान सुनना चाहता हूं। यह परम ज्ञान भगवान सदाशिव ने किस प्रकार कहा था जो कि छः अंगों के साथ वेद सांख्य आदि शास्त्रों से निकला है, यह भी बतलाइये कि पूजन करने का अधिकार किसको है? श्री उपमन्यु बोले—हे कृष्णजी! सुनिये, भगवान सदाशिव ने यह पवित्र ज्ञान शास्त्र संक्षेप में वर्णन किया है इसके पढ़ने से शीघ्र ही ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। जब सथाणु रूप भगवान सदाशिव ने सृष्टि की तो उस समय वह स्वयं ही प्रकट हो गए। इसके बाद उन्होंने श्री ब्रह्माजी को पैदा किया। फिर उन्होंने श्री ब्रह्माजी को सृष्टि रचने के लिए आदेश दिया। फिर ब्रह्माजी ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

संसार रचा और वर्ण आश्रम आदि की व्यवस्था की। फिर उन्होंने यज्ञ के लिए सोम उत्पन्न किया। सोम द्वारा स्वर्ग बन गया। फिर पृथ्वी, अनल, सूर्य, यज्ञ, विष्णु, इन्द्र आदि सभी देवताओं ने आपकी स्तुति की। तब परमेश ने उनका ज्ञान अपहरण कर लिया। चुनाचि देवता माया से मोहित होकर उनसे पूछने लगे कि आप कौन हैं? तब रुद्र ने अपना पूर्ण परिचय देते हुए कहा—मेरे समान दूसरा देवता और कोई नहीं है। मैं पुराण पुरुष, त्रिकाल बाधित, भूत, भविष्य, वर्तमान में रहने वाला हूं। मुझसे अतिरिक्त एवं परे और कोई भी नहीं है। मैं ही सबका नियता हूं। इतना कहकर रुद्र अन्तर्ध्यान हो गए। जब देवताओं ने उनको न देखा तो फिर साम वेद के मन्त्रों द्वारा उनकी स्तुति करने लगे। पाश व्रत करके शरीर पर भस्म रमाई तब प्रसन्न होकर भगवान सदाशिव पार्वती सहित वहां पर प्रकट हो गए। देवताओं ने उनके दर्शन करके फिर स्तुतियां कीं। भगवान सदाशिव ने कहा—हे देवताओ! आप सब आदित्य रूप शिवजी की नित्य पूजा किया करें। तीनों वर्णों के मनुष्य शिव-शिवा के पूजन के अधिकारी हैं। इतना कहकर भगवान सदाशिव अन्तर्ध्यान हो गए। बस इस प्रकार देवताओं को ज्ञान हुआ कि शिव पूजन का तीनों वर्णों को अधिकार है। ऐसा जानकर सभी देवता स्वर्ग को चले गए। कुछ दिनों बाद शिव-शास्त्र लुप्त हो गया तो शिवा ने शास्त्रों के बारे में पूछा उसी क्षण भगवान सदाशिव ने हाथ ऊंचा करके शास्त्रों का वर्णन कर दिया। अगस्त्य, बृहस्पति, दधीचि इन तीनों महर्षियों ने उसका विस्तार किया। भगवान सदाशिव भी प्रत्येक युग में अवतार लेते हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

नवां अध्याय

(योगाचार्यों का वर्णन)

भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज बोले—हे ब्राह्मण! अब आप भगवान सदाशिव के अवतारों तथा उनके शिष्यों का वर्णन कीजिये। श्री उपमन्यु ने कहा—हे कृष्णजी! सुनिये मैं अब योगावतारों का वर्णन करता हूं। वित, मदन, सुनेत्र, कंका, लौगभि, लौगाक्षि, जैगीषव्यद, धिवाह, ऋषभ, उग्र, अत्रि, सुपालक, गौतम, वेदशिरा, गोकर्ण, गृहावासी, शिखण्डी, जटा-माली, दारुक, लांगुली, महाकाल, शूली, दण्डी, मुण्डीश, सहिष्णु, सोमशर्मा, नकुलीश्वर ये अट्ठाईस योगाचार्य हुए जो कि वाहार कल्प में सातवें वैवस्वत मन्वन्तर में पैदा हुए थे। उन सबके चार-चार शिष्य हुए। उनके नाम श्वेत, श्वेतकेतु, प्रवेत शिक्षा, श्वेताश्व, श्वेत लोहित, दुन्दुभि, शतरूप, ऋषीक, केतुमान, विकोश, वियाश, पाप नाशन, सुमुख, दुर्मुख, दुर्गभ, दुरितिक्रम, सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन, सधामा आदि-आदि ये संख्या में एक सौ बारह होते हैं। तभी शिव-भक्त भस्मधारी, वेद शास्त्र ज्ञाता, जितेन्द्रिय शिव ध्यान कर्ता हुए हैं। इन्हें अपना आचार्य समझते शिव पूजन करने वाले पुरुष को निश्चय शिवलोक प्राप्त होता है।

दसवां अध्याय

(शिवोपासना रहस्य)

भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज ने श्री उपमन्यु से पूछा—हे ब्राह्मण! स्वामी के अंक में स्थित श्री पार्वतीजी ने कौन सा प्रश्न किया था? श्री उपमन्युजी ने कहा—हे कृष्णजी! एक समय मन्दराचल पर्वत के उत्तम शिखर पर भगवान सदाशिव

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

श्री पार्वती के साथ गहन ध्यान में मग्न थे। उसी समय भगवती पार्वती की सखी शुभावती ने सुन्दर सुगन्धित और विकसित पुष्प भगवान सदाशिव को भेंट किये और उन्होंने स्वयं अपने पवित्र कर कमलों से भगवती का उन पुष्पों से शृंगार किया। रनवास की महिलाओं ने और अन्तरंग गणों ने अपने हाथों में चौर लेकर भगवान तथा भगवती की सेवा की और उनको प्रसन्न करने के हेतु प्रिय और उत्तम कथायें कहीं। सुअवसर देखकर भगवती पार्वती ने भगवान सदाशिव से पूछा—आप कृपा करके मुझे यह बतलाइये कि आप मन्द बुद्धि वाले मूर्ख मनुष्यों की थोड़ी-सी भक्ति से कैसे प्रसन्न हो जाते हैं? कैसे उनके वश में हो जाते हैं? भगवान सदाशिव ने कहा—हे देवी! मैं कर्म, जप, यज्ञ, समाधि आदि से उतना प्रसन्न नहीं होता जितना कि केवल श्रद्धा द्वारा प्रसन्न होता हूं। श्रद्धा ही मेरी प्राप्ति का विशेष साधन है। जो मनुष्य अपने आश्रम के अनुकूल आचरण करने वाला होता है उसकी श्रद्धा मुझ में अधिक होती है। यदि चाण्डाल भी अपने धर्म के अनुसार तीनों वर्णों की सेवा करता है तो वह भी मेरा प्रिय भक्त है। हे देवी! इसके अतिरिक्त मेरे जो भक्त अपनी इन्द्रियों को संशय में रखकर फल की इच्छा न रखकर मेरी भक्ति करते हैं और मेरी पूजा में संलग्न रहते हैं उनको अवश्यमेव मेरा लोक प्राप्त होता है। हे सुरेश्वरी! और सुनो पतिव्रता स्त्रियां अपने पति की आज्ञा से ही मेरी पूजा की अधिकारिणी होती हैं। विधवा स्त्रियों के व्रत, दान, तप, संशय और पूर्णिमा एकादशी के व्रत करने से ही उनकी सदगति हो जाती है और जन्म जन्मान्तर में उनको पति का विछोह नहीं होता। हे प्रिये! मैं केवल अपने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

भक्तों के द्वारा श्रद्धा से दिये हुए पत्र, फल, फूल और जल से प्रसन्न हो जाता हूं। उनकी सदभावना ही मेरी प्रसन्नता का साधन है। इसीलिए तो सारा संसार मुझे भक्त वत्सल मानकर मेरी भक्ति में लवलीन रहता है।

ग्यारहवां अध्याय

(ब्राह्मण-कर्म-निरूपण)

भगवान सदाशिव बोले—हे देवी! अब मैं विद्वान ब्राह्मणों तथा अन्य धर्म वालों का कर्म कहता हूं ध्यानपूर्वक सुनिये—विद्वान ब्राह्मण को तीन बार स्नान, हवन, पूजन, दया, सत्य, सन्तोष, अहिंसा, श्रद्धा पढ़ना-पढ़ाना, दान देना और लेना आदि विधियों का पालन करना चाहिए। यह सब उनका वर्ण धर्म है। दूषित वस्तु कभी भूलकर भी मुझको अर्पण नहीं करनी चाहिए। योगियों एवं ब्रह्मचारियों को दिन में भोजन नहीं करना चाहिए। ब्रह्मचारी को ब्रह्मचर्य की रक्षा करते हुए सदा सत्य भावना व श्रद्धा के साथ मेरी भक्ति करनी चाहिए। क्षत्रियों के लिए दान लेना निषिद्ध है। उन्हें न तो किसी को पढ़ाना ही चाहिए और न ही आचार्य बनकर यज्ञ ही कराना चाहिए। सभी वर्णों की रक्षा करनी चाहिए। संग्राम में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। दुष्टों पर अपना आतंक रखना चाहिए। सेना की रक्षा करनी चाहिए। गुप्तचरों द्वारा देश की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। भस्म धारण करनी चाहिए और प्रेम से मेरा ध्यान लगाना चाहिए। मेरे वैश्य भक्त को गौ की रक्षा करनी चाहिए। व्यापार तथा खेती आदि करना और उसके साथ-ही-साथ मेरा पूजन करना चाहिए यही उसका धर्म है। शूद्र का धर्म है कि वह तीनों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वर्णों की सेवा करता हुआ मेरा पूजन करता रहे। गृहस्थियों के लिए केवल अपनी धर्म पत्नी का सेवन करना ही धर्म है। ब्रह्मचारियों का धर्म है ब्रह्मचर्य का पालन करना। नारियों का धर्म है अपने पति की सेवा करना। पति की आज्ञा के बिना मेरा पूजन करने वाली स्त्री सीधी नरक को जाती है। अतः स्त्रियों को मेरा पूजन अपने पति की आज्ञा लेकर ही करना चाहिए। स्त्रियों का धर्म है व्रत, दान, तप, शौच, भूमि शयन रात्रि में भोजन करना, ब्रह्मचर्य से रहना एवं भस्म तथा जल से स्नान करना, शान्ति, मौन, क्षमा, दुष्टों से दूर रहना, अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णमासी एवं एकादशी तिथियों में निराहार व्रत, मेरा पूजन इत्यादि-इत्यादि। हे कल्याणी! सब धर्मों का सार तो सदा मेरा ध्यान तथा "ओं नमः शिवाय" इस मन्त्र का जाप करना है। मेरा ध्यान तथा मेरे मन्त्र का जप करने से सब सिद्धियों की प्राप्ति होती है।

बारहवां अध्याय

(पंचाक्षर मन्त्र की महिमा)

भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ने श्री उपमन्यु से कहा—प्रभु! मैं अब आपसे पंचाक्षर मन्त्र की महिमा सुनना चाहता हूं। श्री उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्ण! इस मन्त्र की महिमा का वर्णन करना बड़ा कठिन है। मैं केवल संक्षेप में ही कहूंगा। वेदों में तथा दिव्य शास्त्रों में इस मन्त्र की महिमा आई है। इसमें अल्प अक्षर हैं और इसका अर्थ विशेष है। यह मन्त्र भक्तों की सभी कामनाएं पूर्ण करता है। इसका उच्चारण बड़ी सरलता से हो जाता है। सभी विद्याओं का बीज तथा सबसे मुख्य यही एक मन्त्र है। केवल प्रणव मन्त्र में भगवान

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

सदाशिव सर्व व्यापक रूप से स्थित हैं पर छः अक्षर वाले 'ॐ नमः शिवाय' इस मन्त्र में शिवजी पंच ब्रह्म शरीर धारी होकर स्थित हैं। इसके अतिरिक्त भगवान सदाशिव इस मन्त्र में वाच्य और वाचक रूप से भी स्थित हैं। वाच्य भगवान सदाशिव हैं और वाचक मन्त्र है। भगवान सदाशिव अनादि और सर्वज्ञ हैं। यही संसार के आदि रचयिता हैं। यही जगत के दोषों को दूर करने वाले हैं। इनके बिना जगत में अंधेरा-ही-अंधेरा है। यही चेतन हैं। प्रकृति और पुरुष, अचेतन और अज्ञ हैं। रोगों के दूर करने को औषधि है। जिस प्रकार वैद्य ही रोग के निवारण के लिए, औषधि देकर, मनुष्य को प्रसन्न करता है, उसी प्रकार सर्वज्ञ सदाशिव भी भक्तों को मन्त्र रूपी औषधि देकर उन्हें प्रसन्न रखते हैं। मन्त्र का चमत्कार तभी प्राप्त होता है जब भक्त एकाग्र चित्त होकर उसका जाप करता है। सम्पूर्ण शिव का ज्ञान तथा सभी विद्याओं के तत्व इसी षड़ाक्षर मन्त्र के भाष्य बन रहे हैं। अन्य बहुत-से शास्त्रों की उस पुरुष को कोई भी आवश्यकता नहीं है, जिसने 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र को हृदयंगम कर लिया है।

तेरहवां अध्याय

(भगवान सदाशिव का भगवती पार्वती जी को बतलाना कि कलियुग में मेरे पंचाक्षर मन्त्र के द्वारा भक्ति करने वाले मनुष्य को अवश्यमेव मुक्ति प्राप्त हो जाती है महापापी, निर्दयी तथा कुटिलात्मा मनुष्य भी केवल मेरे पंचाक्षर मन्त्र के द्वारा शीघ्र ही भवसागर से तर जाते हैं। मुझ में चित्त लगाकर क्रम अथवा अक्रम से इस मन्त्र का जप करने वाला मनुष्य भी मुझे परम प्रिय है।)

श्री पार्वतीजी ने भगवान सदाशिव से कहा—हे प्राणनाथ! समस्त युगों में कलियुग बड़ा ही दूषित युग है। इसके आने से चहूं ओर पाप का अन्धकार फैल जाता है। प्रजा धर्म से विमुख

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो जाती है! वेदों और शास्त्रों की मर्यादा भी जाती रहती है। गुरु और शिष्य का व्यवहार भी नष्ट-सा हो जाता है। ऐसा हो जाने पर आपके भक्तों की गति क्या होगी? यह मैं जानना चाहती हूं। भगवान सदाशिव ने कहा—हे देवी! सुनो! तुम्हें सम्भवतः मालूम नहीं कि कलियुग में मेरा पंचाक्षर मन्त्र ही पर्याप्त है। उसी के जप से कलयुगी मनुष्यों का उद्धार होता है कैसा ही पापी तथा कपटी मनुष्य क्यों न हो केवल मेरे पंचाक्षर मन्त्र से शीघ्र ही भवसागर से तर जाते हैं। श्री पार्वतीजी बोलीं—हे नाथ! यह आप क्या कह रहे हैं? जब मनुष्य पाप करता है तो उसे अवश्यमेव नरक भोगना होगा। फिर आपका यह मन्त्र उस पतित का भला किस प्रकार उद्धार कर देगा? भगवान सदाशिव ने कहा—हे कल्याणी! तुम्हारा कहना सत्य है वह इसलिए कि तुम इस रहस्य से अज्ञात हो और इस रहस्य को मैंने गुप्त रख छोड़ा है। सुनो! महापापी भी यदि पंचाक्षर मन्त्र को छोड़कर अन्य मन्त्रों द्वारा मेरा पूजन करता है तो भी उसे नरक में जाना पड़ता है। पानी और पवन के आहार से अपने शरीर को निर्बल करने वाले तपस्वियों तथा अन्य प्रकार के व्रत करने वालों को मेरा लोक प्राप्त नहीं होता। पंचाक्षर मन्त्र में बड़ा चमत्कार है। यदि भक्ति द्वारा मनुष्य केवल एक बार भी इस पंचाक्षर मन्त्र का जप कर लेता है तो उसको अवश्य ही शिवलोक की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र के सामने तप, व्रत, और यज्ञ अपना कुछ भी मूल्य नहीं रखते। सभी भक्त इस मन्त्र के अधिकारी हैं। हे कल्याणी! प्रलय काल में केवल मैं ही रहता हूं। समस्त वेद शास्त्र इस पंचाक्षर मन्त्र में लीन हो जाते हैं। मेरी शक्ति से इनका नाश नहीं होता।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, New Delhi. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

प्रकृति और पुरुष के भेद से मेरे द्वारा फिर सृष्टि चल पड़ी। भगवान विष्णु माया की देह धर कर शेष-शय्या पर जा सोये। तब उनकी नाभि से पंचमुख ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। वह तीनों लोकों की रचना में असहाय थे। अतः उन्होंने दस ऋषियों को उत्पन्न किया। इसके बाद श्री ब्रह्माजी ने मुझ से दस पुत्रों के देने के लिए प्रार्थना की। तब मैंने पांच मुख धारण किये और उन पांच मुखों से पांच अक्षर क्रम से कहे। श्री ब्रह्माजी ने उन पांच अक्षरों को ग्रहण किया। उसी मन्त्र के प्रभाव से ऋषियों ने देव मानव सबकी सृष्टि रच ली। हे कल्याणी! अब मैं तुमको परम विद्या का स्वरूप बतलाता हूं। इस मन्त्र में प्रथम नमः रखिये। उसके बाद शिवाय रखिये। तब यह पंचाक्षरी मन्त्र होता है। यह सब मन्त्रों का बीज है क्योंकि यह मेरे मुख से निकला है। हे देवी! मुझ में चित्त लगाकर क्रम अथवा अक्रम से भी इस मन्त्र का जप करने वाला मुझे परम प्रिय है। कलियुग में केवल एक यही मन्त्र तारने वाला है। क्रम से जपने वाले भक्तों के लिए इसके जपने के नियम शास्त्रों में वर्णित हैं। अब मैं इस मन्त्र के ग्रहण करने की विधि भी तुमको सुनाता हूं।

चौदहवां अध्याय

(मन्त्र-दीक्षा-विधि)

भगवान सदाशिव बोले—हे कल्याणी! वही जपन सफल समझा जाता है, जो कि श्रद्धा, क्रिया, आज्ञा और दक्षिणा के द्वारा सिद्ध है। वह जप जो क्रिया से हीन हो, श्रद्धा से रहित हो, वह निष्फल है। मन्त्र की दीक्षा लेने वाले शिष्य को चाहिये कि वह आचार्य के पास जाकर उन्हें सब प्रकार से सन्तुष्ट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करे। शरीर, मन, वाणी द्वारा उनका पूजन करे। यदि, धनवान हो तो हाथी, घोड़े, आदि उत्तम वस्तुयें भेंट करे। इन वस्तुओं को भेंट करने में किसी प्रकार का संकोच न करना चाहिए। शिष्य की परीक्षा, गुरू को एक वर्ष तक करनी चाहिए। जब गुरु यह देखें कि शिष्य बिल्कुल पवित्र है तथा अभिमान रहित हो चुका है तो फिर वह उसे घृत से स्नान करावें। जल में पवित्र औषधियां मिलाकर स्नान करावें। स्नान के समय ब्राह्मण पुण्याहवाचन और शान्तिपाठ करें। शिष्य श्रद्धा के साथ गुरु पूजन करे। गुरू पुण्य स्थान में जाकर, विधि पूर्वक, मेरे ज्ञान का उपदेश करे। शिष्य आयु पर्यन्त मन्त्र का जप करता रहे, इससे उसे परमगति प्राप्त हो जाती है शब्द और अर्थ का विचार करके जिस मन्त्र का जाप किया जाता है वह मानस जप उत्तम है और वह जप जिसमें कि जबान हिलती रहे, धीरे से बोला जाए, जिससे कि दूसरे सुन न पायें, वह उपांशु मध्यम जप कहलाता है। जो मन्त्र प्राणायाम के साथ जपा जाता है, वह सगर्भ जप कहलाता है। जो बिना प्राणायाम के जपा जाता है वह अगर्भ जप कहलाता है। इन पांच विधियों में से केवल एक विधि अपनानी चाहिए। जप सदा-सदैव देवालय, गौशाला तीर्थ स्थान और सूर्य आदि के सन्मुख बैठ कर करना चाहिए। जप वशीकरण में पूर्वमुख, घात करने में दक्षिणमुख, धन प्राप्ति के लिए पश्चिम मुख तथा शान्ति पाने के लिए उत्तरमुख होकर करना चाहिए। यदि जप के समय श्वान या चाण्डाल दिखाई दे जायें तो तुरन्त आचमन कर लें। जपी के लिए सदाचार रखना परम धर्म है। जो जपी आचार की रक्षा नहीं करते वह निन्दनीय हैं। हे प्रिय! यह पंचाक्षरी मन्त्र पतित से भी पतित

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

का उद्धार करने वाला है, किन्तु अधिकारी के बिना जैसे नास्तिक, द्वेषी और ईर्ष्यालु के सामने नहीं कहना चाहिए। अधिक क्या कहूं 'नमः शिवाय' सर्वोत्तम मन्त्र है। केवल इस एक मन्त्र की सिद्धि से सभी मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं।

पन्द्रहवां अध्याय

(शिव सस्कार यानि दीक्षा विधि का वर्णन)

भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज ने कहा—हे उपमन्यु जी! आपने पंचाक्षर का माहात्म्य व प्रयोग सुना अब मैं आपसे शिव संस्कार सुनना चाहता हूं। उपमन्यु बोले अच्छा मैं भगवान सदाशिव द्वारा कहे गए संस्कार आपको सुनाता हूं। ध्यानपूर्वक सुनिये—छः मार्ग शुद्ध कर लेने को संस्कार कहते हैं। जिससे ज्ञान की प्राप्ति और पाश बन्धन से मुक्ति हो वह संस्कार-दीक्षा कहलाती है। यह दीक्षा तीन प्रकार की होती है—शाम्भवी शाक्ती एवं मांत्री। शाम्भवी दीक्षा गुरु दर्शन से गुरु के चरण स्पर्श तथा सम्भाषण आदि से पाप विनाशिनी होती है। यह शाम्भवी दीक्षा भी दो प्रकार की है तीव्रा और अत्यन्त तीव्रा तथा जिसके द्वारा शीघ्रातिशीघ्र आनन्द की प्राप्ति हो वह अत्यन्त तीव्रा (तीव्रतरा) दीक्षा है। गुरु देव शिष्य के शरीर में प्रविष्ट होकर उसे जो ज्ञान प्रदान करते हैं वह शाक्ती दीक्षा है। कुण्ड मण्डल के साथ-साथ जो क्रिया वाली दीक्षा दी जाती है वह मांत्री दीक्षा है। गुरु को चाहिए कि वह शिष्य की परीक्षा करके ही उसे दीक्षा दें। शिष्य भी गुरु के सहयोग में रहकर उनसे ज्ञान की प्राप्ति करे और इस प्रकार अपने गुरु का गौरव बढ़ाने की चेष्टा करे। भगवान सदाशिव ही गुरु हैं और गुरु भगवान सदाशिव हैं इसमें कभी भिन्नता नहीं समझनी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चाहिए। शिष्य को चाहिए कि कभी भूलकर भी गुरु के सामने आसन पर न बैठे। शिष्य के लिए गुरु के विरुद्ध बोलना भी महापाप है। ऐसा करने वाला रौरव नरक में जाता है। गुरु यदि तत्व ज्ञाता है और शिव भक्त है तो शिष्य को शीघ्र ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। गुरु ब्राह्मण शिष्य को एक वर्ष तक, क्षत्रिय शिष्य को दो वर्षों तक और वैश्य शिष्य को तीन वर्ष तक अपने घर में रखकर उनका परीक्षण करे। जिन शिष्यों को गुरु फटकारें या जिनको ताड़ा जाये और वह मौन धारकर सब कुछ सहन कर जाये और दुःख को अनुभव न करे वही शिष्य सतपात्र एवं दीक्षा के योग्य है। स्त्रियों को शिव संस्कार ग्रहण करने का अधिकार नहीं है। वह केवल पति की आज्ञा से ही शिव-पूजन कर सकती हैं। विधवा स्त्री अपने पुत्र देवर अथवा जेठ की आज्ञा पाकर ही शिव पूजा कर सकती हैं। कन्या को अपने पिता की आज्ञा पाकर ही शिव संस्कार ग्रहण करना चाहिए।

सोलहवां अध्याय

(श्री उपमन्यु का भगवान श्री कृष्ण चन्द्रजी महाराज के सामने शिव भक्ति का वर्णन करना।)

श्री उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्णजी! गुरु को शिष्य को दीक्षा देने से पूर्व मण्डप की भूमि की परीक्षा करनी चाहिए। उत्तम भूमि पर मण्डप तथा वेदी की रचना करनी चाहिए वेदी के ठीक बीचों बीच मण्डप होना चाहिए। आठ दिशाओं में विशाल कुण्ड बनाने चाहिएं। एक बड़ा कुण्ड पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए। यह प्रधान कुण्ड है। यदि आठ कुण्ड न बना सकें तो फिर अत्यन्त सुन्दर एक ही कुण्ड

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बना लेना चाहिए। मण्डप को चन्दोवा, ध्वजा, पताका, पुष्प मालाओं से सुसज्जित करना चाहिए। शिष्य की आर्थिक दशा यदि अच्छी हो तो उसे चाहिये कि सोने, चांदी, तांबे व पीतल के बनाकर वहां पर स्थापित करे। फिर श्रद्धा के साथ भगवान सदाशिव की पूजा करनी चाहिये। साथ ही स्थापित देवताओं की पूजा करनी चाहिये। आचार्य को शिष्य के हित के लिए प्रार्थना करनी चाहिये। दीक्षा लेने के समय शिष्य को व्रत रखना चाहिये। गुरु को चाहिये कि वह उसे प्रधान द्वार से मण्डप के अन्दर ले आयें। उसके बाद उसे कुशासन पर बिठा कर और भगवान सदाशिव का ध्यान व पूजन करवा कर पंचाक्षरी विद्या का उपदेश उसे देवें। शिष्य को चाहिये कि वह गुरुदेव के प्रदान किये हुए मन्त्र को पांच बार जपे। उसको मन्त्र कंठस्थ हो जाना चाहिये शिव-मन्त्र की दीक्षा प्राप्त करने के बाद शिष्य का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह भगवान सदाशिव की पूजा करने के पश्चात ही भोजन करे। इस प्रकार से विधिपूर्वक पूजन करने वाला शिष्य समय-समय पर गुरुदेव की आज्ञा पालने का अधिकार पा लेता है। इसके बाद गुरुदेव करन्यास आदि करके हाथ से भस्म लेकर शिष्य को देवें, अभिमन्त्रित रुद्राक्ष भी देवें। भगवान सदाशिव की मूर्ति भी देवें। हवन, पूजन, ध्यान आदि साधन उसे समझा देवें। शिष्य को चाहिये कि वह गुरुदेव से यह सब वस्तुएं आदर के साथ ग्रहण करे।

सत्रहवां अध्याय

(शिव दीक्षा विधि)

उपमन्यु ने कहा—हे श्री कृष्णजी! गुरुदेव शिष्य की

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

योग्यता देखकर उसे छः मार्ग बतलाए। जिससे कि वह सब बन्धनों से मुक्त हो जावे। यह छः मार्ग हैं—कला, तत्व, भुवन वर्ण, पद और मन्त्र। यह षड़ध्व कहलाते हैं। (१) निवृति, प्रतिष्ठा, विद्या, शांति, अतीत यह पांच कलाध्वा हैं। (२) शिव तत्व से लेकर भूमि तक को तत्वाध्या कहते हैं। शुद्ध और अशुद्ध दो भेदों तत्वाध्य छब्बीस प्रकार का है। (३) आधार से लेकर उन्मना तक भुवनाध्वा कहलाता है। यह आठ प्रकार का है। (४) रुद्ररूप वर्ण पचास के होने से वर्णाध्वा कहलाते हैं। (५) पदाध्वा अगणित भेदों वाला है। उसके अनन्त भेद हैं। (६) समस्त उपमन्त्रों से व्याप्त को मन्त्राध्वा कहते हैं। भगवान सदाशिव तत्वों के नायक हैं। उनके तत्वों की गणना असंख्य है और पंचाक्षर मन्त्र सब मन्त्रों का नायक है। शिष्य को सर्व प्रथम मार्ग स्वरूप का ज्ञान होना चाहिए। फिर उसका अध्वविशोधन करना चाहिए। ऊपर कहे गए मंडप में दो हाथ का कलश-मण्डप भी बनाना चाहिए। फिर गुरू तथा शिष्य को स्नान करके मण्डप में प्रविष्ट होना चाहिए और भगवान सदाशिव की पूजा करनी चाहिए। चार सेर चावलों की खीर बनाकर उसमें दो सेर भगवान सदाशिव को समर्पण करे और शेष दो सेर हवन के लिए रख लेनी चाहिए। मण्डप के समीप पाँच कलशों की स्थापना करनी चाहिए। उनके ऊपर 'नमः शिवाय' पांच अक्षर क्रम से लिख देने चाहिएं—ईशान, पुरुष, अघोर, एद्योजात और वामदेव। इन नामों से प्रत्येक कलश का पूजन करना चाहिए। हवन, तर्पण, तथा पूर्ण आहूति यह सब विधियां क्रम से करनी चाहियें। खीर का बचा हुआ भाग प्रसाद के रूप में ग्रहण करना चाहिए। ब्राह्मण बालिका

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

के कते हुए धागे को शिष्य के हाथ में बांधना चाहिए। शिष्य को, रात को बिना भोजन किये ही सो जाना चाहिए। फिर उसको रात को जो स्वप्न दिखाई दे वह उसे गुरु को सुना देना चाहिए।

अठारहवां अध्याय

(उपमन्यु जी का भगवान श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज को छः मार्गों का शोधन निरूपण बतलाना।)

श्री उपमन्यु जी ने कहा—हे श्री कृष्ण! पहले शिष्य स्नान आदि सभी नित्य कर्म पूरे करके भगवान सदाशिव का ध्यान करते हुए उनको हाथ जोड़कर गुरु को प्रणाम करे और गुरु उसकी आंखों पर पट्टी बांधकर उससे भूमि पर पुष्प फिकवाये और शिष्य भूमि पर गिरते हुए फूलों के नाम बोलता जाये। फिर मण्डल में आकर निर्मालय स्वीकार करे। ईशान देव का पूजन करे। हवन करे। यदि उसने रात को कोई दुःस्वप्न देखा हो तो उसकी शान्ति के लिए अग्नि कुण्ड में पचास या सौ आहुतियां देवे फिर वागीश्वरी और वागीश्वर का सविधि पूजन करे। उस समय वागीश्वर को प्रणाम करके मण्डल में देव पूजन करे। बाद में वागीश्वरी में अपने आपको निविष्ट कर देवे। गुरु को चाहिये कि मन्त्रों द्वारा शिष्य को शुद्ध कर देवे और उसके द्वारा पूर्ण आहुति डलवाये। उसके पश्चात शिष्य ब्राह्मण पूजन करे और फिर तीन आहुतियां डालकर भगवान सदाशिव का स्मरण करे। उसके बाद नील रुद्र वागीश्वरी तेजस्विनी शिव शक्ति का चिन्तन करे। अब गुरु शिष्य को सामने बिठाकर शुद्ध की हुई कैंची के साथ शिष्य की सूत्र सहित शिखा छेदन कर डाले। उसे गोबर में स्थापित करके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अग्नि में हवन कर दे। फिर मण्डल में विराजमान भगवान सदाशिव तथा पार्वतीजी का ध्यान करे और प्रार्थना करे—हे भगवन और मां भगवती! आप दोनों की कृपा से ही परम छः मार्गों का शोधन हुआ है। फिर नाड़ियों के साथ-साथ पंच भूतों की शुद्धि करे और अग्नि में तीन आहुतियां देवे। अणिमा आदि गुणों का निरूपण करे। उसके बाद गुरु शिष्य से कहलवाये कि मैंने भगवान सदाशिव तथा माता पार्वती की जो पूजा की है उससे वह दोनों प्रसन्न हों और अभीष्ट कार्य को सफल करें। फिर गुरु शिष्य के साथ भूमि माता को प्रणाम करके सब देवताओं का विसर्जन कर दे।

उन्नीसवां अध्याय

(साधन—भेद—निरूपण)

उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्णजी! अब हम मन्त्र साधने का प्रकार निरूपण करते हैं। मण्डप के मध्य में शिव पूजन करके कलश स्थापन करे हवन करे। फिर सिर खोलते हुए शिष्य को मण्डप में बिठा देवे। उसके बाद एक सौ आहुतियों का हवन करे पुष्प मिले जल से अभिषेक करे। फिर शिव सम्बन्धिनी विद्या प्रदान करे तदनन्तर शिष्य को साधन की रीति बतावे। इस प्रकार शिष्य साधन उपदेश को ग्रहण करके गुरुदेव के सामने ही मन्त्र साधे। यह साधन आराधरा पूर्ण हो जाये तब सुन्दर स्वादिस्ट खीर निवेदन करे, प्रणाम करे फिर एक करोड़ अथवा आधा करोड़ जपन करे इतना भी न हो सके तो बीस अथवा दस लाख जप अवश्य करे। इसके बाद नमक के बिना भोजन अथवा खीर का भोजन करे। हे श्री कृष्णजी! इस प्रकार मन्त्र साधने वाले पुरुष को इस लोक तथा परलोक में कुछ भी असाध्य नहीं है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बीसवां अध्याय

(अभिषेक प्रकार)

उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्णजी! शिष्य जब इस प्रकार मन्त्र साध चुके तो फिर पाशुपति व्रत धारण करे। फिर उसे गुरुदेव योग्य समझते और उसका अभिषेक करे। पहले कहे विधान से शिव पूजन करे। शिष्य को अभिषेक करने के लिए आसन पर बिठा दे। पंच कलाओं से परिपूर्ण कलश शिवजी के लिए स्थापित करे उनका पूजन करे तब मध्य के कलश का जल लेकर शिष्य का अभिषेक करे। फिर भगवान शंकरजी को वस्त्रोंलंकारों से सुशोभित करके शिव मंडल में आराधना करे। फिर एक सौ आहुतियों से हवन करके पूर्णाहुति देवे। शिष्य को भी साथ-साथ समझाता जाये फिर मंडल से शिवजी को उठा ले, शिव घट तथा अग्नि का पूजन करे। शिवजी के सदस्य भी पूजे। अध्वशोधन की भांति सभी क्रियायें करे। इस प्रकार शिव शास्त्र ज्ञाता विद्वान ज्ञानी ही शिव मन्त्र को दुर्लभ समझ कर संस्कार का निरुपण करते हैं।

इक्कीसवां अध्याय

(नित्य नैमित्तिक कर्म निरूपण)

श्री कृष्णजी बोले—हे महर्षि! अब मैं शिव शास्त्र के अनुसार कर्म कर्ता पुरुषों के नित्य नैमित्तिक कर्म सुनना चाहता हूं। अब कृपा करके यही निरूपण करें। उपमन्यु बोले—सुनिये! जब प्रातः काल ब्रह्म मुर्हूत लगे तभी उठ बैठना चाहिये। उस समय शिव पार्वती का ध्यान करे और अपने दैनिक कार्य का विचार कर ले। फिर अरुणोदय होते-होते घर से बाहर निकल जाये जहां कोई विघ्न-बाधा न हो ऐसे स्थान पर जाकर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विधि के साथ शौच आदि करके दांतुन करे। फिर आचमन आदि करके नदी तालाब आदि अथवा घर पर आकर स्नान करे। नये शुद्ध वस्त्र धारण करे। विधवा, ब्रह्मचारी, तपस्वी इन जनों को दांतुन तथा सुगन्धित वस्तुओं से नहाना उचित नहीं, फिर जल मध्य में तीन मंडलों की कल्पना करके यथा शक्ति शिव मन्त्र जपे। फिर घुटनों से पृथ्वी पर बैठकर प्रणाम करके अर्घ्य पात्र माथे पर चढ़ाकर शंकरजी को अर्घ्य देवे अथवा मूल विद्या द्वारा कुश मिले जल से अर्घ्य दे उसके बाद पहली विधि से भस्म धारे। मस्तक, दोनों भुजा और छाती पर त्रिपुण्ड लगावे। इस प्रकार रुद्राक्ष भी मस्तक, कंठ, कान एवं हाथों में धार ले फिर ब्राह्मणों को सफेद, लाल पीत, रंगीन नूतन वस्त्र धारण करावे। इस प्रकार सभी कार्य करके पूजन स्नान पर जाकर पूर्व अथवा उत्तर मुख बैठकर शंकरजी का ध्यान करे। श्वेत आदि से आरम्भ करके नकुल शतक तक फिर शिष्य गुरु को प्रणाम करे। शंकरजी को प्रणाम करके नामाष्टक पढ़े।

बाईसवां अध्याय

(पूजन-न्यास-वर्णन)

श्री उपमन्यु ने कहा—हे श्री कृष्णजी। स्थिति, उत्पत्ति और संहार के भेद से न्यास भी तीन प्रकार का होता है। स्थिति न्यास गृहस्थियों के लिए है। उत्पत्ति न्यास ब्रह्मचारियों के लिए है। लय न्यास सन्यासियों के लिये है। बनवासियों तथा विधवाओं के लिए भी न्यास विधि है। अंगूठे से लेकर कनिष्टका तक स्थिति-न्यास कहलाता है। दायें अंगूठे से लेकर बांये अंगूठे तक उत्पत्ति-न्यास है और लय न्यास दांये अंगूठे से लेकर बांये

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अंगूठे तक है। इस प्रकार बिन्दु के साथ-साथ नकारादि वर्णों का क्रमशः न्यास कीजिये। तल एवं अनामिका में भगवान सदाशिव का न्यास कीजिये। दसों दिशाओं में पंचाक्षर मन्त्र द्वारा न्यास करे। सारी देह को, न्यास से पवित्र करके, भगवान सदाशिव तथा माता पार्वतीजी का पूजन-ध्यान करें। शिव के सभी उपासक आकर मस्तक पर, ईं ईं, नेत्रों में, ऊं उं, कानों में, ऋं ॠं गालों पर, ऌं ॡं दोनों नासिकाओं में, ऐं ऐं ओठों में, ओं औं दन्तावलि में, अं को जिह्वा तथा तालू में इस प्रकार न्यास करना उचित है। इसके अतिरिक्त भक्तजनों को कवर्ण दक्षिण हाथ की पांचों संधियों में, च वर्ग बायें हस्त की पांचों संधियों में, ट वर्ग तथा त वर्ग दोनों पैरों की संधियों में य एवं फ दोनों पसलियों में, न भ नाभि में, हृदय में मकार न्यास करना चाहिए। त्वचा से लेकर सातों धातुओं में, मकार से सकार तक वर्ण न्यास करे। हकार-हृदय में, क्षकार भृकुटि मध्य में, हे कृष्णजी! इस प्रकार पचास वर्गों का व्यास रुद्र मार्ग द्वारा करना चाहिये। भगवान सदाशिव साक्षात जीव आत्मा के रूप में मनुष्य के शरीर में स्थित हैं। उनका पूजन ध्यानादि नित्य करते रहना चाहिए। ज्ञान और ध्यान द्वारा ही शिव भक्त को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

तेईसवां अध्याय

(मानसिक पूजन-विधि)

उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्ण जी! पार्वती जी के लिए जैसा कि शंकर जी ने शिव शास्त्रों में वर्णन किया है उसी के अनुसार मैं पूजा विधि का निरूपण करता हूं अंग न्यास आदि कृत्य तक पूर्ण करे। उसके बाद अपने मन द्वारा पूजन सामग्री की कल्पना

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करे उससे विधि पूर्वक गणेश पूजन करके दक्षिण तथा उत्तर में नन्दीश तथा सुभद्रा को पूजे। फिर निर्मल कमलासन की भावना करे उस पर शिव पार्वती जी की स्थापना करे ध्यान करे भावनामय सामग्री साधन से भक्ति के साथ पूजन करे। भावनामय पुष्प चढ़ावे फिर प्रथम कथित विधान से मूर्ति में न्यासादि करे वाह्य क्रम से ध्यान करके पूजे उसके बाद भावनामय समिधा घृत आदि द्वारा परमेश्वर की नाभि में होम करे। फिर भृकुटि मध्य में परम पवित्र द्वीप ज्योति के आकार वाले शंकर का ध्यान करें। इस प्रकार अपने सभी अंगों में अग्नि कर्म पर्यन्त विधि करता जाय। यही मानसिक भावनामय आराधना है इसे पूर्ण करके फिर देव का अग्नि या स्थंडिल अथवा लिंग में पूजन करे।

चौबीसवां अध्याय

(पूजन-विधान)

उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्णजी! पूजा स्थान की पवित्रता का अर्थ गन्ध चन्दन तथा पुष्प जल से मूल मंत्र से पोक्षण करे। अस्त्रों द्वारा विघ्नों का निवारण करके कवच द्वारा अवगुंठन करके सारी दिशाओं का अस्त्र न्यास करके पूजा स्थल की कल्पना करे। प्रथम कुशा बिछा दे उसे जल से मार्जित करे। पोक्षणी पात्र अर्घ्य मात्र पाद्य आचमन आदि सभी चार पात्रों की शुद्ध करके उनमें जल भरे। चार पात्रों के अभाव में एक प्रोक्षणी पात्र से पूजा का सब कार्य किया जाता है। फिर विनायक देव के सामने स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ रक्खे और उनका पूजन करे। फिर नन्दीश्वर व उनकी पत्नी का पूजन करे। फिर परमेष्ठी के भवन में चलकर उनका पूजन करे। निर्मालय

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हटाकर उनके सिर पर धुले हुए फूल चढ़ावे। ईशान दिशा में चण्ड की, आधार शक्ति पर श्यामा की, अनन्त सर्प की, धर्म, ज्ञान, वैराग्य और ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञाना अवैराग्य और अनैश्वर्य आदि सभी का पूजन करे। फिर भगवान सदाशिव और श्री पार्वती जी का भक्ति भावना से पूजन करे। इस पूजन में किसी प्रकार की कमी न रहनी चाहिए। रत्न जड़ित मुकुट आभूषण अनेकों प्रकार के पुष्प, छत्र, चंवर, ताल, व्यंजन, दर्पण आदि सभी वस्तुएं उपहार के रूप में देवे। आरती और पुष्पांजलि करे। जय जय की ध्वनि से देव मन्दिर को गूँजित कर दे। अर्पित वस्तुएं किसी योग्य विद्वान ब्राह्मण को समर्पित कर दे। यह वस्तुएं किसी पात्र को देने में ही लाभ है अन्यथा नहीं।

पच्चीसवां अध्याय

(नित्य कृत्य विधि निरूपण)

श्री उपमन्यु ने कहा—हे श्री कृष्णजी! दीपदान कर लेने के अनन्तर और हवि दान देने से पूर्व, आरती के समय आवरण का पूजन भी अवश्यमेव होना चाहिए। ईशान देव से लेकर सद्योजात तक और रुद्र से लेकर अस्त्र तक भगवान सदाशिव और शिवा का पूजन पहिले आवरण में होना चाहिये। फिर चारों दिशाओं में भगवान सदाशिव और भगवती पार्वती का मध्य आवरण में पूजन करना चाहिये। फिर हृदय से लेकर अस्त्र न्यास तक पूजन करना चाहिये। इसके बाद पूर्व में इन्द्र, दक्षिण में यम, पश्चिम में वरुण और उत्तर में कुबेर का पूजन करना चाहिये। फिर अग्निकोण अग्नि, नैऋत्य में निऋति, वायव्य में वायु और ईशान में ईश का पूजन करना चाहिये। फिर आठों लोकपालों का पूजन करके देव और देवी का दर्शन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Library BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

करके उसके साथ ही आवरण देव का सम्मान करे। नैवेद्य पूर्ण श्रद्धा के अनुसार होना चाहिये। उसके कपूर, कंकोल, जावित्री, कस्तूरी, केसर, मृगमद, सुगन्धित पुष्प इत्यादि-इत्यादि देवताओं को अर्पण करने चाहिएं। भक्त को सदा भगवान सदाशिव के सन्मुख घृत का दीप जलाना चाहिये। फिर चंवर, छत्र, भेरी और मृदंग आदि वस्तुओं को भगवान सदाशिव तथा भगवती पार्वती को अर्पण करना चाहिये। हे श्री कृष्णजी! सब से विशेष बात तो यह है कि भगवान सदाशिव और भगवती पार्वती में अत्यन्त भक्ति रखने से सच्चा उपासक मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

छब्बीसवां अध्याय

(संयोगपांग अर्चन-विधि)

श्री उपमन्यु ने कहा—हे श्री कृष्णचन्द्र जी! भगवान सदाशिव और शिवा की महिमा का क्या वर्णन करें। शिव-पूजन तो परम फलदायक है। देखिये, पतित-से-पतित ब्रह्म हत्यारे, मद्यप, चोर, गुरु पत्नी की ओर कुदृष्टि से देखने वाले व्यभिचारी पुरुष भी, यदि, बिना मन्त्र के भी भगवान सदाशिव का पूजन करें तो उनका भी तुरन्त उद्धार हो जाता है। इसलिए पापियों एवं दुष्टों को भगवान सदाशिव का पूजन अवश्यमेव करना चाहिये। हे श्री कृष्णचन्द्रजी! जो व्यक्ति भीख मांग कर अपना निर्वाह करता है, यदि वह भी भगवान सदाशिव के पंचाक्षर मन्त्र का जाप करे तो उसका उद्धार हो जाता है। शिवलोक प्राप्त करने के लिए जलाहार पवनाहार या पत्ते चबाने की आवश्यकता नहीं है। केवल पंचाक्षर मन्त्र को श्रद्धा व भक्ति के साथ जपता हुआ प्राणी शिवलोक को प्राप्त हो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

जाता है। अधिक क्या कहू, पूजन अर्चन करने वालों का ही जन्म सफल है। अतः शिवपूजन भक्ति प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है। इसके समान कोई भी धर्म नहीं है। शिव भक्तों को चाहिए कि शिव पूजन के अनन्तर अपने परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य जीवों में भी प्रसाद बांटें।

सत्ताईसवां अध्याय

अग्नि कृत्य विधान

भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज की विशेष जिज्ञासा देखकर श्री उपमन्यु बोले—हे कृष्णजी अब मैं अग्नि कृत्य के बारे में विस्तार पूर्वक बतलाऊंगा, तनिक ध्यानपूर्वक सुनिये! साधक को अग्नि कुण्ड की स्थापना कुण्ड में स्थंडिल में वेदी पर लोहे के पात्र अथवा मिट्टी के पात्र में करनी चाहिए। यदि पात्र लोहे अथवा मिट्टी का हो तो एकदम नवीन होना चाहिए। कुण्ड के चहुं ओर तीन मेखला होनी चाहियें। पीपल के पत्ते के समान या हाथी के होंठ की भांति कुण्ड में योनि की रचना करें। फिर कुण्ड को मिट्टी व गोबर से लीपे। पात्र को मांजकर अग्नि में तपा लेना चाहिए। हवन के पात्र तथा सामग्री सब चीजें साफ सुथरी होनी चाहिए। मणि द्वारा उत्पन्न की हुई अथवा काष्ठ से उत्पन्न की हुई या किसी ब्राह्मण के घर से लाई गई अग्नि की स्थापना कुण्ड की योनि द्वारा होनी चाहिए। फिर साधक को तीन बार परिक्रमा करके अग्नि का बीज मन्त्र बोलते हुए योनि मार्ग द्वारा कुण्ड में अग्नि की स्थापना करनी चाहिए। सब कार्य योनि द्वारा ही होने चाहिएं। हवन जिस सूत्र के आधार पर किया जाए उसका नाम कुण्ड पर लिख देना चाहिए। पंच भू संस्कार के पश्चात आचार्य को अग्नि की स्थापना करनी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चाहिए। फिर उसे घृत द्वारा सुरक्षित करना चाहिए। शुचि, स्रुवा सभी यज्ञ के पात्र मार्जन द्वारा शुद्ध कर लेने चाहियें संस्कार की पवित्रता के लिए सात बीज मन्त्रों द्वारा हवन करना चाहिए। इससे शिव अग्नि सिद्ध होती है। वहां पर भगवान सदाशिव के आसन की कल्पना करनी चाहिए और उसी में अर्धनारीश्वर भगवान सदाशिव का आह्वान करके पूजन करना चाहिए। फिर दीपक तक का सिंचन कर और समिधाओं द्वारा हवन करना चाहिए। समिधाएं बारह अंगुल की तथा ढाक की होनी चाहिए। खील, जौ, सरसों तथा तिल इन्हें घृत में मिलाकर हवन करना चाहिए। सामग्री को हाथ से चढ़ाना चाहिए और घृत को स्रुवा से छोड़ना चाहिए। तीन आहुतियां प्रायश्चित की देनी चाहिएं। उसके बाद घृत को स्रुवा में भरकर और उसके ऊपर एक फूल रखकर, वैषट तक घृत की धारा देनी चाहिए। फिर देवताओं का विसर्जन करना चाहिए। हवन की भस्म को सुरक्षित रखना चाहिये। यह भस्म चण्ड कहलाती है। इसके बाद बलि कर्म करना चाहिये। फिर विद्या, कन्या एवं गुरुदेव का पूजन करना चाहिये। फिर ब्राह्मणों को भोजन करवाना चाहिये। द्वार पर आये हुये निर्धनों को भी भोजन खिलाना चाहिये। उसके बाद स्वयं भोजन करना चाहिये। भोजन के बाद आचमन करना चाहिए और तत्पश्चात भगवान सदाशिव का ध्यान करके उनके मन्त्र का जाप करना चाहिए।

अट्ठाईसवां अध्याय

(श्री उपमन्यु का भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी को नैमित्तिक पूजन विधि बतलाना।)

श्री उपमन्यु बोले—हे कृष्णचन्द्र जी! अब आप नैमित्तिक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection, Jammu

कर्म सुनिये—सभी महीनों के दोनों पक्षों की अष्टमी चतुर्दशी के बिन उत्तरायन में संक्रांति आने पर, ग्रहण काल में शिव भक्त को भगवान सदाशिव की पूजा विशेष रूप से करनी चाहिए उत्तरायन के प्रत्येक मास में, पंचगव्य को शुद्ध करके उससे भगवान सदाशिव को स्नान कराना चाहिए। बचे हुए पंचगव्य को सब्ब भी लेना चाहिए। इसके पीने से उपासक के सभी पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं। पौष में पुष्य नक्षत्र में भगवान सदाशिव की आरती उतारनी चाहिए। माघ महीने में, मघा नक्षत्र में उपासक को चाहिए कि ऊनी कम्बल तथा घृत का दान करे। फाल्गुन महीने में उत्तरा फालगुनी नक्षत्र को महान उत्सव मनाना चाहिए। चैत्र को, चित्र पूर्णिमा के दिन ढोला उत्सव मनाना चाहिए। विशाख के विशाखा नक्षत्र में फूल मण्डली का उत्सव मनाना चाहिए। जेठ महीने के जेठा नक्षत्र तथा मूल नक्षत्र में जल से भरे हुए घड़ों का दान करना चाहिए। आषाढ़ के उत्तराषाढ़ में पवित्र व्रत धारण करना चाहिए। श्रावण के श्रवण नक्षत्र में भगवान श्री सदाशिव का प्राकृत प्रकार के सभी मण्डल बनाकर पूजन करना चाहिए। भादों के उत्तरा भाद्र नक्षत्र आने पर भगवान सदाशिव का प्रोक्षण करना चाहिए। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जल क्रीड़ा करनी चाहिए। क्वार-असौज के महीने में खीर का दान करना चाहिये और खीर का ही भोजन करना चाहिए। शतभिषा नक्षत्र में लोहे की अंगीठी दान करना चाहिये। कार्तिक के महीने में कार्तिका नक्षत्र में सहस्र बत्ती का दीपक जलाकर दान करना चाहिये। मृगशिर महीने में उपासक को आर्द्रा नक्षत्र में भगवान सदाशिव को घृत से स्नान करवाना चाहिए। उपासक यदि दान करने की शक्ति न रखता।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

हो तो उसे भगवान सदाशिव का पूजन अवश्य करना चाहिये और उनका उत्सव भी मनाना चाहिए। यदि उपासक को शुभ कार्य करते हुए कोई बाधा आती हुई दिखाई दे, चित्त क्षोभ को पावे, दुराचार में लगने लगे, कोई दुष्ट पुरुष दिखाई पड़े। कोई कुस्वप्न दिखाई दे जाए, कोई उपद्रव हो या स्वयं ही रोग ग्रस्त हो जाये तो उसे स्नान, पूजा, जप, हवन आदि कार्य, पुरश्चरण प्रायश्चित से कर लेने चाहिए। उसके बाद उसे शिराग्नि के समीप जाकर कार्य कर लेना चाहिए। इस प्रकार जो भक्त शिवजी की उपासना करता रहता है, वह एक ही जन्म में मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

उन्तीसवां अध्याय

(काम्य कर्म निरूपण)

भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज बोले—हे ब्राह्मण! आप के श्री मुख से मैं नित्य नैमित्तिक कार्यों की विधि सुन चुका हूं। अब आप कृपा करके धर्म के अधिकारी मनुष्यों का कर्त्तव्य कर्म निरूपण करें। उपमन्यु ने कहा—हे माधव! ऐहिक और आयुस्मिक भेद से कर्म दो प्रकार के हैं। फिर वह आयुस्मिक कर्म पांच प्रकार के हैं—क्रियामय, तपोमय, जपोमय, ध्यानमय और सर्वमय। क्रियामय कर्म वह है जिसमें हवन, दान, पूजा आदि किये जायें। यह कर्म शक्तिशाली मनुष्यों के द्वारा ही सम्पन्न होते हैं और यह शक्ति भगवान शंकर की आज्ञा से ही मुख्य है। शिव आज्ञा पालक पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह काम्य कर्म करे। काम्य कर्म दोनों लोकों में फल देने वाले हैं। भगवान सदाशिव और महेश्वर एक ही हैं शिवजी के भक्त ज्ञान तथा यज्ञ में लीन रहते हैं और महेश्वर के भक्त कर्म यज्ञ में लीन रहते हैं। अतः

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

आभ्यंतर कर्म शैव तथा बाह्य कर्म महेश्वर हैं। गन्ध रस वर्ण आदि द्वारा भूमि परीक्षा करके मन चाहे विधान पूर्ति के लिये पृथ्वी के पृष्ठ पर प्रथम पूर्व दिशा की उत्पत्ति करे वहां पर एक हाथ अथवा दो हाथ मण्डल रचे। फिर पहिले की विधि से महेश्वर को पूजे। उसके बाद तीन तत्व से युक्त साक्षात विद्या मूर्ति सदाशिव की परम शक्ति द्वारा आह्वाहन करके पांच उपकरणों के साथ-साथ पूजन करे। उसके बाद पांच आवरणों का पूजन आरम्भ करे।

तीसवां अध्याय

(उपमन्यु का भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी महाराज को आवरण पूजा का विधान बतलाना और यह बतलाना कि यही योगेश्वर योग है और इसके तुल्य कोई दूसरा योग नहीं है। यह चिन्तामणि के समान मनोवांछित वस्तुएं देता है।)

उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्णजी! सबसे पहिले भगत भगवान सदाशिव की दांई ओर गणेशजी और उनकी बांई ओर षड़ानन का पूजन करे। फिर चहूं ओर ईशान से लेकर, सद्योजात तक देवों की अर्चना करे। दूसरे आवरण में पूर्व दिशा के पत्र में बायें भाग में, अनन्त दाएं भाग में उसकी शक्ति, शक्ति के साथ सूक्ष्म तत्व, पश्चिम की ओर शक्ति सहित भगवान सदाशिव, उत्तर दिशा में एक नेत्र, ईशान कोण के एक दल में, शक्ति के साथ-साथ रुद्र की पूजा करनी चाहिए। तीसरे आवरण में भव, शर्व, ईशान, रुद्र, पशुपति, उग्र, भीम और महादेव इन आठों का पूजन करे। फिर शक्तियों के साथ ग्यारह मूर्तियों का पूजन करे। उसके बाद पूर्व पत्र में देव-देव का अग्निकोण में ईशान का इन दोनों के मध्य में भवोद्भव को और फिर कपलीश का पूजन करे। इसी आवरण में वृसेन्द्र का पूजन करे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

दक्षिण में नन्दी का, उत्तर में महाकाल का, अग्निकोण में शास्त्रों का और दक्षिण दिशा में मातृकाओं का पूजन करे। उसके पश्चात नैऋत्य कोण में गणेशजी का, पश्चिम में स्वामी कार्तिक का, वायव्य में ज्येष्ठा का, उत्तर में भगवती पार्वती का और ईषाण कोण में चण्ड का पूजन करे। चौथे आवरण में सबसे पहिले भगवान सदाशिव का ध्यान करे। फिर पूर्व में सूर्य, दक्षिण में ब्रह्मा, पश्चिम में रुद्र तथा उत्तर में भगवान विष्णु का पूजन करे। दूसरे आवरण में भी चारों देवों का पूजन करे। आदित्य, भास्कर भानु रात्रि इनका भी पूर्व आदि के क्रम से पूजन करे। बाद में आठों ग्रहों—चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहू और केतु का, तीसरे आवरण में पूजन करे। चौथे आवरण में श्री ब्रह्माजी का पूजन करे। फिर दक्षिण तथा पश्चिम आवरण में रुद्र का पूजन करे। फिर क्रम से हर एक देवता, आचार्य और गुरु आदि का पूजन करे। पाँचवें आवरण में देव योनियों का पूजन करे और इस प्रकार देव-देवियों को आवर्ण पूर्वक पूज कर, विघ्नों के निवारण के लिए फिर देवेश का पूजन करे। पूजन के समय निरन्तर पंचाक्षर मन्त्र का जाप करते रहना चाहिये। उसके बाद भगवान सदाशिव तथा पार्वतीजी को उपहार के रूप में उत्तम नैवेद्य अर्पण करे। स्तोत्रों का पाठ करे। भजन गावे तथा पंचाक्षरी मन्त्र का जाप करे। उपस्थित सज्जनों का सम्मान करे। तत्पश्चात देवों का विसर्जन करे और आचार्य को पूजा की सामग्री अर्पित करे। हे माधव! इस आवरण पूजा को योगेश्वर योग कहते हैं। इसके तुल्य कोई भी योग नहीं है। यह चिन्तामणि के समान मनोवांछित वस्तुएं प्रदान करता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इकत्तीसवां अध्याय

(श्री उपमन्यु ने भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज को शिव-स्तोत्र सुनाना और बतलाना कि इस स्तोत्र का नित्य कीर्तन करने वाला व श्रवण करने वाला शिव भक्त सब पापों से छूटकर शिवलोक को प्राप्त करता है।)

श्री उपमन्यु ने भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज से कहा—हे कृष्ण! अब हम आपको वह पवित्र स्तोत्र सुनाते हैं जिसमें कि पंचावरण वर्णित हैं। ध्यानपूर्वक सुनिये—हे जगत के स्वामी! जन्म से सुन्दर नित्य चैतन्यरूप भगवान! आपकी सदा जय हो सदा जय हो! सर्व शक्तियों से परिपूर्ण पुरुषोत्तम आपकी जय हो! हे मंगल मूर्ति देवादिदेव! आपको कोटिशः प्रणाम है। हे प्रभो! यह सम्पूर्ण विश्व आपके वश में है। आप कृपा करके अपने भक्त की कामनाएं पूर्ण करें। हे जगत मातेश्वरी! आप हमारे मनोरथ पूरे करें। हे गणेशजी! हे स्कन्द! आप दोनों शिव शिवा की आज्ञा का पालन करते हैं। शिव रूप, ज्ञान रूप अमृत का भी पान करते हैं, आपसे प्रार्थना है कि आप भक्त जनों की रक्षा करें। हे पांचों कलाओं से पूर्ण शिवजी! आप मेरी कामनाओं को पूर्ण कीजिये। हे ब्राह्मण! शिव के चरण-कमलों के सेवक आप मेरी इच्छाएं पूर्ण कीजिये। हे आठ प्रकार की शक्तियों! हे सातों लोकों की माताओ! आप भगवान सदाशिव से आज्ञा लेकर मेरी प्रार्थना सुनें और उसे पूर्ण करें। हे गणेशजी! आप सब विघ्नों को दूर करें। पंचावरण द्वारा संसार को आवरणित करने वाले भगवान सदाशिव! आपको नमस्कार है। हे श्री कृष्णजी! यह आवरण स्तोत्र है। इसका नित्य कीर्तन तथा पाठ करने वाला सब पापों से छूट कर शिवसायुज्य प्राप्त करता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

बत्तीसवां अध्याय

(श्री उपमन्यु का भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज के सन्मुख उन कर्मों के सम्बन्ध में बतलाना जिनके करने से शिव भक्तों को पूजन, हवन, जप, दान, तप, ध्यान आदि का फल शीघ्र प्राप्त हो जाता है। इन कर्मों के करने से अपूज्य पूज्य हो जाता है, कुरूप सुन्दर हो जाता है, बूढ़ा युवक बन जाता है। आठों सिद्धियों के प्र..ा से सभी वस्तुएं अपने अनुकूल हो जाती हैं।)

उपमन्यु ने भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज से कहा—हे श्री कृष्णजी! भगवान सदाशिव के भक्तों को पूजन, जप, दान, तप, हवन और ध्यान आदि का फल शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है। शिव भक्तों को जिन मन्त्रों तथा मन्त्रों का अर्थ कण्ठस्थ हो उनको ही पहिले सिद्ध करना चाहिये अन्य मन्त्रों अथवा यन्त्रों को नहीं। यदि मन्त्रों में किसी प्रकार का विघ्न पड़ने लगे तो पहले उसे दूर करने का उपाय करना चाहिये। और यदि यह उपाय मन्त्र सिद्धि से पहिले ही कर लिया जावे तो और भी उत्तम है। उस दशा में मन्त्र यन्त्र अवश्यमेव सफल होते हैं। यदि कोई कर्म विफल हो जाये तो उसके विफल होने में देव का नहीं बल्कि कर्त्ता का अपराध होता है। सिद्धि प्राप्ति के लिए शिव भक्त के लिए ब्रह्मचर्य धारण करना भी आवश्यक है। उसको हल्का भोजन करना चाहिए, वह भी दिन में केवल एक बार। शरीर में भस्म रमाकर पवित्र रहना चाहिए। मन और शरीर से पवित्र रहना चाहिये। इसके बाद पवित्र स्थान पर जाकर हाथ भर भूमि को गोबर से लीपे। उस पर आठ दलों वाला कमल बनावे। एक-एक दल में आठों सिद्धियों की कल्पना करे। वहां फिर स्वर्ण की, रत्नों की अथवा स्फटिक का शिवलिंग बनाकर उसकी स्थापना करे। फिर भगवान सदाशिव और भगवती पार्वती का आवाहन करे। साधक यदि बेल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पत्रों द्वारा हवन करे तो अवश्यमेव सिद्धि को प्राप्त होता है। शान्ति के लिए खेर ढाक आदि के पत्तों द्वारा आहुतियां देवे। युद्ध में कनेर, आक, कटेरी की समिधायें होनी चाहियें इससे युद्ध में विजय की प्राप्ति होती है। कठोर एवं दुष्ट मनुष्य अभिचार कर्म करे। निर्धन बाण लिंग का पूजन करे तो धनी हो जाये। महर्षि द्वारा स्थापित अथवा स्वनिर्मित लिंग का पूजन स्वर्ण अथवा रत्नों द्वारा करे। यदि सामर्थ्य न हो तो मन में सोने आदि धातुओं की कल्पना करके पूजन कर लेवे। पूजन की सामग्री अपने गुरु को अर्पित कर देवे। यदि वह स्वीकार न करे तो वह शिव भक्तों में बांट देवे किन्तु प्रधान दक्षिणा गुरु को ही देनी चाहिये। उपरोक्त पूजन के द्वारा रोगी अथवा शत्रुओं से घिरा हुआ मनुष्य भी मुक्त हो जाता है। अपूज्य भी पूज्य हो जाता है। निर्धन धनी, भिखारी राजा, कुरूप उत्तम रूप वाला और वृद्ध युवा बन जाता है। इस कर्म द्वारा सभी बातें अनुकूल हो जाती हैं।

तेतीसवां अध्याय

(श्री उपमन्यु का भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज को परलोक में सुख पहुंचाने वाली कर्म विधियों का बतलाना। त्रिलोकी के निवासियों ने इन विधियों का आश्रय लेकर अपने-अपने पदों के अनुसार सुख शान्ति और राज्य प्राप्त किया है। इस प्रकार का पूजन करने वाला भक्त अवश्यमेव शिव-लोक को प्राप्त होता है।)

श्री उपमन्यु ने कहा—यह विधि सभी विधियों से उत्तम है। साधक भगवान सदाशिव तथा भगवती पार्वतीजी को श्वेत चन्दन के जल से स्नान करावे। फिर खिले हुए श्वेत चन्दन के फूलों से उनका पूजन करे। बाद में उनको श्वेत कमल के फूलों पर विराजमान करे प्रणाम करे। शिवलिंग अंगुष्ठ प्रमाण का हो, उसे कमल के दाईं ओर स्थापित करके बेलपत्रों द्वारा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

पूजे। लिंग की बाईं ओर अगर पश्चिम में मैनसिल, उत्तर में चन्दन, पूर्व में हड़ताल लगावे। फिर सुगन्धित पुष्पों द्वारा पूजे। लिंग के चारों ओर काले रंग की अगर और गुग्गल का धूप जोड़े। बहुत पतले नवीन-नवीन मनोहर वस्त्र अर्पण करे। घी से तर हुआ खीर का नैवेद्य रखे। दीपक घृत का होना चाहिये। सभी कुछ मन्त्रों द्वारा करके परिक्रमा करे। भक्ति पूर्वक प्रणाम आदि करके अपराध क्षमा करावे। प्रार्थना करे। पंच गन्धपूर्वक इस प्रकार की नित्य पूजा करने वाला पुरुष पापों से विमुक्त हो शिवधाम को निस्सन्देह प्राप्त कर लेता है।

चौंतीसवां अध्याय

(भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज का श्री उपमन्यु से पूछना कि लिंग क्या वस्तु है? श्री महादेवजी को लिंग क्यों कहा जाता है? लिंग में शिव पूजन क्यों होता है? श्री उपमन्युजी का भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज की सभी संकायें निवृत्त करना।)

श्री उपमन्यु जी ने कहा—हे माधव! मैंने नैमित्तिक और काम्य आदि जितनी भी सिद्धियां आपसे कही हैं वह सब लिंग और घेर की स्थापना से तत्काल ही सिद्ध हो जाती हैं। यह सारा ब्रह्माण्ड एक लिंग ही में समाया हुआ है। लिंग की प्रतिष्ठा होने पर सबकी प्रतिष्ठा हो जाती है। अधिक क्या कहूं? जब तक लिंग की प्रतिष्ठा न हो जाये, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र आदि देवता अपने-अपने पद पर स्थिर नहीं हो सकते। भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज बोले—हे ब्राह्मण! आप मुझे यह बतलाइये कि लिंग क्या वस्तु है? भगवान महादेव को लिंग क्यों कहा जाता है? उनमें लिंग किस प्रकार आ जाता है? फिर लिंग में शिव पूजन क्यों किया जाता है? आप मेरी इन सब शंकाओं को दूर कीजिए। श्री उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्ण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चन्द्रजी ! सुनिये लिंग तीनों गुणों को उत्पन्न करने का प्रधान कारण है। यह अनादि है, अनन्त है। यही मूल प्रकृति माया है। इसी के द्वारा चर और अचर जगत की उत्पत्ति हुई है। शुद्ध, अशुद्ध, शुद्धाशुद्ध भेदों से तीन प्रकार का है। समस्त देव इसी से पैदा होते हैं और इसी में लीन हो जाते हैं। तभी तो सदाशिव लिंगी हैं, उनकी आज्ञा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता और सुनिये त्रिलोकी की प्रलय होने पर भगवान विष्णु जल में शेष शैय्या पर सो गए। अचानक ही उनके नाभिकमल से श्री ब्रह्माजी की उत्पत्ति हुई। भगवान सदाशिव की माया से मोहित होकर श्री ब्रह्माजी भगवान विष्णु के समीप गए और उनसे पूछा कि तुम कौन हो ? बोलते-बोलते उन्होंने हाथ के प्रहार से उन्हें उठा दिया। भगवान विष्णु ने श्री ब्रह्माजी को देखा और पूछा—हे पुत्र ! तू कौन है और कहां से आया है। तू क्यों इतना दुखित है ? भगवान विष्णु की बात सुनकर श्री ब्रह्मा जी को क्रोध आ गया उन्होंने कहा—अरे तू मुझे पुत्र कहता है। क्या तू नहीं जानता कि मैं ही इस संसार की उत्पत्ति, रक्षा व संहार करने वाला हूं। श्री ब्रह्माजी के वचन सुनकर भगवान श्री विष्णु ने कहा—जगत का रचयिता तो केवल मैं हूं। क्या तुम इस बात को भूल गए हो कि तुम मेरे नाभिकमल से उत्पन्न हुए हो ? मैं नारायण हूं और तुम्हारा पिता हूं। तुम अपने पिता का ही अपमान कर रहे हो ? यह सुनकर श्री ब्रह्माजी और भी अधिक भड़क उठे और दोनों में युद्ध छिड़ गया। दोनों ओर से मुक्के चलने लगे। दोनों क्रोध व अभिमान में चूर थे। उन दोनों का अभिमान चूर-चूर करने के लिये भगवान श्री सदा-शिव को वहां पर लिंग के रूप में प्रकट होना पड़ा। सहस्रों

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अग्नि ज्वालाओं की भांति प्रकाशमान लिंग को देखकर श्री ब्रह्मा और भगवान विष्णु दोनों आश्चर्य में पड़ गए। यह कौन है यह जानने के लिये दोनों उसके आदि और अन्त की खोज के लिये चल दिये। ब्रह्माजी हंस का रूप धार कर वायु के समान ऊपर को गये। भगवान विष्णु बाराह का रूप धार कर नीचे को गये और इस प्रकार एक हजार वर्ष बीत गये पर उन दोनों में से कोई भी तो उस लिंग के आदि अन्त का पता न पा सका। इस प्रकार भटकने के बाद जब वह आपस में मिले तो उनको बड़ी लज्जा हुई। निश्चय किया कि यह आत्मा होगी। दोनों खड़े होकर प्रकाश युक्त लिंग को प्रणाम करने लगे।

पैंतीसवां अध्याय

(ब्रह्मा और विष्णु का मोह)

श्री उपमन्यु ने कहा—हे माधव! उस समय शुद्ध स्वरूप ब्रह्म का प्रतिपादक ओंकार का नाद होने लगा किन्तु उस नाद को उन दोनों में से कोई भी न समझ पाया। वह इसलिए कि श्री ब्रह्माजी के हृदय को रजोगुण और भगवान विष्णु के हृदय को सत्वगुण ने घेर रखा था। उस समय वह एक अक्षर चारों ओर बंट गया। "ओ३म" अकार लिंग के दाईं ओर उकार लिंग के उत्तर की ओर और इसी तरह मकार मध्य में स्थिर हो गया। अर्ध मात्रा रूप नाद लिंग के मस्तक पर जा पहुंचा। इस प्रकार ओम शब्द के विभाग हो जाने पर भी श्री ब्रह्मा और भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज उसको समझ नहीं पाये। अब प्रणव ने अपना रूप दिखाया। उससे चार वेद प्रगट हुए। अकार से ऋग वेद, उकार से यजुर्वेद, मकार से सामवेद एवं नाद से अथर्व वेद प्रकट हुए। सर्वप्रथम ऋग्वेद ने

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अपने संक्षिप्त तत्व की स्थापना की। जिसमें कि रजोगुण से सम्बन्धित श्री ब्रह्माजी की मूर्ति थी। इसके अलावा लोकों में सृष्टि, तत्वों में पृथ्वी अव्यय आत्मा, काल, निवृत्ति चौंसठ गुण तथा ऐश्वर्य आदि यह सब ऋग्वेद से प्राप्त हुए। यजुर्वेद से दस गुणों की प्राप्ति हुई। सत्वगुण द्वारा विष्णु, विष्णु से लोक स्थित, अन्तरिक्ष। तीन तत्वों में विद्या आदि ये सभी यजुर्वेदीय विश्व हुआ। फिर सामवेद द्वारा भी दस तत्व हुए। तमोगुणी रुद्र मूर्ति आद्या, त्रिलोकी का संहार आदि सामवेदीय जगत् उत्पन्न हुआ, अथर्ववेद ने अपनी निगुण आत्मा का ऐश्वर्य निरुपण किया। साक्षात् सदाशिव महेश्वरी मूर्ति निष्क्रिय आत्माओं की क्रियाओं में स्थित आदि अथर्व वेदमय जगत् उत्पन्न हुआ। उस समय अथर्व बोला—इस प्रकार मैंने तुरीयातीत अवस्था निरुपण कर दी। इसी कारण मैं अध्वातीत हूं। नाम तो मेरी आत्मा है। इस समय अर्थ की स्वतन्त्रता होने के कारण प्रधान परमेश्वर गुण प्रधान के योग से विराजमान हैं। समस्त अथवा व्यस्त सारा विश्व ही ओंकार का अर्थ है। तभी तो ओंकार का अर्थ हैं तभी तो ओंकार एक ही अक्षर सर्व[illegible] वाचक हुआ। प्रणव शिव है। सृष्टि कर्ता ब्रह्मा, पालन कर्ता विष्णु, संहर्ता रुद्र हैं। अतः इनमें रुद्र ही दोनों को अपने नियन्त्रण में रखते हैं। इसलिए भगवान सदाशिव ही सब कारणों के कारण हैं। तुम दोनों इस रहस्य को नहीं समझते। व्यर्थ ही आपस में लड़ते हो। मैं तुम दोनों को समझाने के लिए तुम्हारे बीच इस समय लिंग रूप में उपस्थित हूं। भगवान सदाशिव के वचन सुनते के साथ ही श्री ब्रह्माजी और भगवान विष्णु का मोह जाता रहा। वह दोनों भयभीत होकर कुछ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

क्षणों तक चुपचाप खड़े रहे। फिर हाथ जोड़कर दोनों ने भगवान सदाशिव की स्तुति की—प्रभो! हम मूर्ख अथवा विद्वान जो कुछ भी हैं आपके ही बनाये हुए हैं। माया जनित अभिमान के कारण हम आपको भूल गये थे, यह नहीं जानते कि इसमें किसका अपराध है। अब आप जब हमारे पास मौजूद हैं तो यह निर्णय कौन कर सकता है? हमारे विवाद में भी यह अच्छा हुआ जो हमें आपके चरणारविंदों में प्रणाम करने का सौभाग्य प्राप्त तो हुआ।

इस प्रकार उनकी स्तुति सुनकर महादेवजी प्रसन्न होकर बोले—हे ब्रह्माजी! तथा विष्णुजी! तुम दोनों मेरी माया द्वारा मोहित हुए तभी तो तुम अपने आपको ईश्वर मान रहे हो। इस अज्ञान से ही तुम्हारी सृष्टि नष्ट हो गई है। मैं लिंग रूप से तुम्हारे अभिमान को नष्ट करने हेतु प्रकट हुआ हूं। यह मेरी लीला है। अब परस्पर का विवाद एवं लज्जा त्याग दो। अपने-अपने कार्य में लग जाओ। यह सुनकर दोनों ने प्रणाम किया। भय निवृत्त हो गया। तत्काल महेश्वर जी का लिंग अन्तर्ध्यान हो गया।

छत्तीसवां अध्याय

(लिंग प्रतिष्ठा विधान)

भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज ने कहा—हे उपमन्यु! अब मैं आपसे लिंग प्रतिष्ठा विधि सुनना चाहता हूं। कृपा करके सुनाइये। श्री उपमन्यु बोले—हे माधव! सुनिये, महीने में शुक्ल पक्ष के किसी दिन अपने अनुकूल लिंग का निर्माण करवाना चाहिए। फिर पवित्र स्थान देखकर भूमि की परीक्षा करके देश के अनुकूल उपचार करना चाहिए। फिर गणेश पूजन करके

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

शुद्ध स्नान आदि करके लिंग को स्नान करने के लिए स्नानालय में ले जाना चाहिये। उसके बाद शिला शास्त्र की मर्यादा से वेद मन्त्रों के साथ लिंग का जल में अधिवास करके मूर्ति को सुन्दर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित करके सविधि उनका पूजन करना चाहिये। फिर चौकी पर रखकर शयन कराना चाहिए। पूर्व दिशा में तो मस्तक हो और पश्चिम में पिण्डी रखकर पूजन करना चाहिए। फिर पहले की भांति शोधन करके शयन गृह में ले जाना चाहिए। वहां पर शुद्ध तथा पवित्र जल से स्नान करवाना चाहिए फिर पूजन करना चाहिए। वेदी की भूमि पर ईशान कोण में कमल लिखना चाहिये। शिव कुम्भ में भगवान सदाशिव का आह्वान तथा पूजन करना चाहिए। वेदी के पश्चिम की ओर चंडिका कमल लिखना चाहिये और उस पर पुष्प चढ़ाने चाहिये। मांगलीक गीतों द्वारा वहां पर लिंग रखना चाहिये। उसे नये वस्त्रों में लपेटना चाहिये। उसके आगे फिर कमल लिखना चाहिये और उस पर विद्येश कुम्भ की स्थापना करनी चाहिये और उनके मध्य में विधि पूर्वक श्वेत कमल बनाना चाहिये। वहां पर वर्धिनी-शैवी की स्थापना करनी चाहिये। फिर पूर्व आदि दिशाओं में श्राद्ध मूर्तियों की कल्पना करनी चाहिए। उन मूर्तियों के चार ब्राह्मण मन्त्र उच्चारण भी करें एवं हवन भी करें। आचार्य का आसन ईशान या पश्चिम दिशा में होना चाहिए। प्रथम पूर्णाहुति होम करके फिर एक सौ आठ घृत की आहुतियां डालनी चाहियें। आचार्य को मूल मन्त्र के साथ शिवलिंग के मस्तक पर हाथ रखना चाहिए। देखिए माधव जी! गुरु शिष्य को मिलाकर सात द्रव्यों को हवन सामग्री में मिलाकर सौ अथवा पचास आहुतियां हवन-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

कुण्ड में डालनी चाहिएं। सब तरह से हवन होने के बाद पूर्णाहुति की योजना करनी चाहिये। फिर महा पूजन आरम्भ करना चाहिए। दस कलशों का पूजन करना चाहिए। शिव कलश के जल में शिव मन्त्र पढ़कर अंगूठे और अनामिका द्वारा मिट्टी लेकर मन्त्र का जाप करना चाहिए। आचार्य को लिंग के मध्य में विद्या का न्यास करना चाहिए। फिर शिव घट के जल से मूर्ति का पुनः अभिषेक करना चाहिए। आसन की कल्पना करके पंचन्यास कला द्वारा दीप्त मूर्ति का स्मरण करना चाहिए। फिर हाथ जोड़कर शिव-शिवा को स्तुति के साथ बुलाना चाहिए। आह्वान के बाद उनका पूजन-ध्यान करना चाहिए। पंचोपचार से उनका पूजन करना चाहिए। अन्य मूर्तियों का पूजन भी लिंग के पूजन के समान ही करना चाहिए। पंचोपचार से बढ़कर अन्य कोई भी पूजन लिंग की प्रतिष्ठा का नहीं है। देखिये कृष्णजी! जल अधिवासन की शय्या पर मूर्तियों को नीचे की ओर मुख करके सुलाना चाहिए साथ ही साधक को अपने अन्तःकरण में उस मूर्ति को स्थापन करना चाहिए। शक्तिशाली मनुष्यों को नवीन मन्दिर बनवा कर उसमें शिव परिवार की स्थापना करनी चाहिए। अन्य देवताओं की स्थापना का विधान भी इसी भांति है। हे कृष्ण जी! बेर नाम का लिंग लघुकाय होता है। उसका पूजन विधान भी ठीक उसी प्रकार होता है जैसा कि नर्मदेश्वर आदि का होता है। देखिये सब कर्मों के सुसम्पन्न होने के बाद आचार्य ब्रह्मा होय और जपकों को यथावत दक्षिणा देनी चाहिए। यजमान को उनको दायें हाथ से दक्षिणा देनी चाहिए। मैंने आपको लिंग प्रतिष्ठा विधान सुना दिया है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mockup ITS (Retd) Collection Jammu

सैंतीसवां अध्याय

(योग निरूपण)

भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी महाराज ने श्री उपमन्यु से कहा—अब कृपा करके आप मुझे योग-विधि बतलाइये। श्री उपमन्यु प्रसन्न होते हुए बोले—हे माधव! आप सावधान होकर सुनिये। परम योग उसे कहते हैं, जिसके द्वारा सभी विषयों से निवृत्ति हो जाये और अन्तःकरण की सब वृत्तियां भगवान सदाशिव की निश्चल भक्ति में लग जायें। यह योग शास्त्र के अनुसार पांच प्रकार का है। (१) मन्त्र योग, (२) स्पर्शयोग, (३) भावयोग, (४) अभावयोग (५) महायोग। (१) मन्त्रों का पूर्ण अभ्यास, अर्थ ज्ञान, उससे मन की स्थिरता का होना मन्त्रयोग कहलाता है। (२) यदि मन्त्रयोग को प्राणायाम द्वारा सिद्ध किया जाये तो वह स्पर्शयोग, (३)यदि मन्त्र रहित हो तो भावयोग है। (४) जिसमें समस्त संसार का प्रलय के समय सम्बन्ध विचार हो वह अभावयोग है (५) जिसमें भगवान सदाशिव में साधक की मानसिक वृत्तियां जुड़ जायें वह महायोग है। इस योग का केवल वही अधिकारी है जिसका मन सांसारिक सुख वासना तथा वेदोक्त स्वर्ग आदि फल कामनाओं से विरक्त हो चुका हो। वैराग्य भी भगवान सदाशिव के निरन्तर चिन्तन से प्राप्त होता है। शरीर में स्थित वायु को प्राण कहते हैं। उसकी गति का अवरोध प्राणायाम है। प्राणायाम रेचक, पूरक और कुम्भक तीन प्रकार का होता है। (१) उंगली द्वारा नासिका के एक पुट को दबाकर दूसरे पुट द्वारा वायु निकालने को रेचक कहते हैं (२) लुहार की धौंकनी के समान बाहर की वायु को भीतर भर लेना पूरक कहलाता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

(३) भीतर की वायु को छोड़े नहीं और बाहर की वायु को भीतर न जाने दे यह कुम्भक प्राणायाम कहलाता है। देखिये! माधव! योग के साधक को इन तीनों का ही धीरे-धीरे अभ्यास करना चाहिए। अभ्यास द्वारा ही शरीर की नाड़ियों की शुद्धि होती है। प्राणायाम सगर्भ और अगर्भ भेद से दो प्रकार का होता है। जप और ध्यान वाला प्राणायाम सगर्भ कहलाता है और जिस प्राणायाम में जप और ध्यान का अभ्यास न हो उसे अगर्भ प्राणायाम कहते हैं। सगर्भ प्राणायाम अगर्भ प्राणायाम से उत्तम है। योगी लोग सगर्भ प्राणायाम ही करते हैं। योगी जब प्राणवायु पर विजय प्राप्त कर लेता है तब सभी वायुएं उसके अधिकार में आ जाती हैं। क्रमानुसार किया गया प्राणायाम शरीर को पुष्ट, स्वस्थ और निरोग बनाता है। शरीर की रक्षा करता है जब प्राण वायु पर जय हो जाती है तो यह सभी लक्षण दृष्टिगोचर होने लगते हैं। प्राणायाम के अभ्यास से कफ, मूत्र, पुरीष आदि सभी अल्प मात्रा में हो जाते हैं। प्राणायाम के बाद प्रत्याहार की गणना है। सभी इन्द्रियां विषयों में संलग्न हुआ करती हैं। विषयों से उन्हें खींचकर वश में कर लेने का नाम प्रत्याहार है। इन्द्रियों को वश में रखने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है और उसके विपरीत चलने से नरक मिलता है। चित्त को एकाग्र रखना धारणा कहलाता है। भगवान सदाशिव के ध्यान में ही चित्त को लगाये रखना योगी का कल्याण है। हे केशव! इस इन्द्रिय रूप घोड़े को वश में करके आत्मा का उद्धार करना चाहिए।

———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

अड़तीसवां अध्याय

(योग गति में विघ्न)

उपमन्यु बोले—देखिये श्रीकृष्णचन्द्र जी! अब मैं योग में पड़ने वाले विघ्नों के बारे में कहूंगा। ध्यानपूर्वक सुनिये—योग में प्रायः दस प्रकार के विघ्न उपस्थित हुआ करते हैं—आलस्य, रोग, प्रमाद, सन्देह, मन की अस्थिरता, अश्रद्धा, भ्रामकता, दुःख, दुर्मना रहना और विषय की ओर लोलुपता। योगी को चाहिए कि वह इन विघ्नों को सदा शान्त करता रहे। शान्त जाने पर सिद्धि सूचक छः उपसर्ग दृष्टिगोचर होते हैं। वस्तुओं तथा दूर की वस्तुओं में जो अर्थ का आभास होत वह प्रतिभा कहलाता है। यत्न के बिना सभी शब्द सुना यह श्रवण है। सभी मनुष्यों की बात समझ लेने को वार्ता कहते हैं। प्रयत्न के बिना सभी पदार्थ दिखाई देने लग जायें उसे 'दर्शन' कहते हैं। दिव्य पदार्थों के स्वाद का नाम 'आस्वाद' है। सभी प्रकार के स्पर्शों का ज्ञान 'वेदना' है। इसी प्रकार से छः उप प्राप्त करके योगी सिद्ध होता है। सिद्ध योगी को ब्रह्मले स्वामी रत्नमणि भेंट करते हैं। उसके मुख से मधुर-मधुर निकलते हैं। उसे देवांगनायें भी प्रणाम करती हैं। उसे औषधि रसायन सभी प्राप्त हैं। मोक्ष चाहने वाला तो इन सिद्धियों को देखकर ही मोहित हो जाता है। अब आप योग का प्रयोग सुनिये—कहां पर बैठकर योग करना चाहिए और कहां न करना चाहिये—समुद्र, नद-नदी के तट पर, अग्नि हिंसक पशुओं वाले स्थानों पर तथा दूषित, दुर्ग पर योग का अभ्यास कभी न करना चाहिए। स जी के मन्दिर में या एकान्त पवित्र स्थ

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

वृक्षों की छाया में योग साधन करना चाहिए। थोड़ा भोजन, र्मों में थोड़ा पड़ना, थोड़ा बोलना, थोड़ा सोना, शीघ्र जागना, भी परिश्रमों से रहित रहना इत्यादि बातें सोचकर योगाभ्यास करना चाहिए। बैठने का आसन कोमल होना चाहिए। सिर ंचा करके बैठना चाहिए। पालती मार कर बैठना चाहिए। पनी देह के भीतर, हृदय कमल में भगवान सदाशिव और गवती पार्वती का ध्यान पूजन करे। धीरता के साथ शिव- वा का ध्यान पूजन व मनन करता रहे। यदि योग द्वारा धक पृथ्वी आदि तत्वों पर विजय पानी चाहे तो साधक को हिले कही गई, भगवान सदाशिव की आठों मूर्तियों का ध्यान रना चाहिए। घोर, मिश्र और प्रशान्त यह तीन प्रकार की र्तियां हैं। प्रशान्त देवी के ध्यान से बुद्धि पुनीत होती है। घोर सेवन से पाप और रोग नष्ट होते हैं। मिश्रित मूर्ति का ध्यान धिक काल में फल देता है।

उन्तालीसवां अध्याय

(श्री उपमन्यु जी का भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को भगवान सदाशिव के बारे में बतलाना। उन्होंने कहा कि यदि श्रद्धा पूर्वक एक क्षण भी भगवान में का ध्यान लग जाये तो सभी पाप तत्काल नष्ट हो जाते हैं। मुक्ति में विश्वास, र्ण ऐश्वर्य, अणिमा आदि सिद्धियां यह सब शिव ध्यान से प्राप्त होती हैं।)

उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्णजी! महादेवजी का योगी जन व ध्यान किया करते हैं। इन्हीं के ध्यान तथा स्मरण से सभी द्धियां प्राप्त होती हैं, शिव ध्यान से सिद्धि होती है। जहां ो रहा हो वहां बार-बार ध्यान करे। वह पहिला आत्मा क होता है। उसके बाद यही निर्विषय हो जाता है। सिद्धान्त है कि निर्विषय मन कभी ध्यान नहीं ध्यानी लोग तो कठिनता से बुद्धि के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

विस्तार का ध्यान करते हैं। निर्विषय ब्रह्म में निर्विषय बुद्धि का प्रवेश होता है। इसी कारण सविषय ध्यान सूर्य किरणों के आश्रय वाला समझे। शान्ति, प्रशान्ति, दीप्ति, प्रसाद ये दिव्य सिद्धियां देवी ध्यान में प्राणायाम द्वारा सिद्ध होती हैं। सभी आपत्तियों का नाश शान्ति है। वाह्य आभ्यंतर अन्धकार विनाश प्रशान्ति हैं। वाह्य आभ्यंतर प्रकाश को दीप्ति कहते हैं। बुद्धि का स्वस्थ हो जाना प्रसाद है। जब बुद्धि का प्रसाद हो जाता है। तब बाहर भीतर के समस्त कार्य पूर्ण हो जाते हैं ईश्वर का मन से ध्यान करने वाले को ध्याता कहते हैं। भ वान सदाशिव और भगवती पार्वती ही ध्यय हैं। परमात्मा मन से चिन्तन को ध्यान कहते हैं। ऐश्वर्य और अणिमा सिद्धियों को प्राप्त करना ही ध्यान का साधन है। शिव ध्यान से सुख तथा मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है। ज्ञानी व ध्यानी मनुष्य ही इस संसार सागर से पार उतर सकता है। अतः ध्यान आवश्यक है। ज्ञान योग की इच्छा ही अनेक यज्ञों से बढ़कर फल देती है। योगी-योग सिद्ध होकर अपनी इच्छा से इस लोक में लोक हित के लिए योग प्राप्त करके भ्रमण करते हैं। योगी भगवान सदाशिव को अधिक प्यारे हैं। योगी बाधा में फंसकर भी अपने उद्योग से शिवलोक प्राप्त कर लेते हैं। वहां आनन्द भोगकर फिर योगियों के घर में जन्म लेते हैं। कुछ योगी वैराग्य के कारण सभी कार्यों से मुक्त हो जाते हैं अथवा अनशन से अथवा शिवाग्नि से अपनी देह का हवन कर वह भी मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं। शिव निन्दकों को वाले या उनके हाथों मरने वाले मनुष्य भी इस जन्म चक्र से छूट जाते हैं।

CC-0. Vasant Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

चालीसवां अध्याय

(मुनीश्वरों का सरस्वती नदी में स्नान करना। वहां से काशी धाम के लिए जाना। काशी धाम से श्री ब्रह्माजी के दर्शनों के लिए जाना।)

श्री सूतजी बोले–हे मुनीश्वरो! महर्षि उपमन्यु ने श्री वायुदेव को ज्ञानयोग समझाया और वायुदेव ने उसी ज्ञान योग को ऋषियों-महर्षियों को सुनाया। वह प्रसन्न हुए और वायुदेव को बार-बार प्रणाम किया। फिर प्रातः सभी ऋषि-महर्षि सरस्वती स्नान के लिए परम पवित्र नदी को ढूँढने के लिए चल दिये। उसी समय श्री ब्रह्माजी के आदेश से वहां पर पुनीत सरस्वती नदी बहने लगी। सब मुनीश्वरों ने उसमें स्नान किया। फिर सन्ध्या आदि कर्मों से निवृत्त होकर वह सब श्री ब्रह्माजी की आज्ञानुसार काशी धाम को चल दिये। वहां पर उन्होंने भागीरथी में स्नान आदि किया। वह श्री विश्वनाथजी के दर्शन, पूजन, ध्यान करके आनन्द को प्राप्त हुए। मार्ग में उनको एक परम दिव्य एवं अद्भुत-सा प्रकाश दिखाई दिया। उस तेज में सारों पाशुपत की सिद्धियां प्राप्त, भस्मधारी ऋषि-मुनि लीन हो रहे थे। तेज शीघ्र ही छिप गया। सभी ऋषि-मुनी विस्मित हो, श्री ब्रह्माजी के समीप गए। उधर तुम्बरू और नारदजी भी अपनी-अपनी विशेषता के मद से उन्मत हो श्री ब्रह्माजी की सभा में पहुंचे। दोनों ने अपना-अपना विवाद श्री ब्रह्माजी के सन्मुख न्याय के लिए रक्खा। ठीक उसी समय नैमिषारण्य के [illegible] भी वहां आन पहुंचे। श्री ब्रह्माजी ने सभा के एक [illegible] इन दोनों की परीक्षा ली। दोनों को समझाया और [illegible] दोनों आपस में मिल-जुलकर रहें। इसी में हित है। [illegible] अब श्री ब्रह्माजी ने निमिष वन के

CC-O. Nanaji Deshmukh Libr[illegible] Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

निवासियों से पूछा—सुनाइये आप लोग आनन्द मंगल से तो हैं ना ! मैंने आप लोगों का वृत्तान्त वायुदेव द्वारा सुन लिया है। यह सुनकर मुनि बोले—प्रभो ! वायुदेव के चले जाने पर हमने यज्ञान्त स्नान किया। वहां से काशी आए, श्री भागीरथी में स्नान किया। फिर विश्वनाथ जी का दर्शन, पूजन, ध्यान आदि किए। उसी समय हमें बड़ा विलक्षण तेज दिखाई दिया। हम सब आश्चर्य में पड़ गए। श्री ब्रह्माजी ने कहा यह सब शुभ लक्षण हैं। आप सबको शीघ्रातिशीघ्र दिव्यलोक की प्राप्ति होने वाली है। आप सबसे भगवान सदाशिव बहुत प्रसन्न हैं। आप सब सुमेरु पर्वत पर जाकर पाशुपत व्रत धारण करो और सुनो मेरा पुत्र सनत्कुमार अपने आपको बहुत बड़ा योगीराज समझ रहा है वह भगवान सदाशिव की प्रतीक्षा में था। उसने भगवान का कोई सम्मान नहीं किया। भगवान सदाशिव के पार्षद नन्दीजी ने उसको शाप दिया है कि तुम ऊंट की योनि प्राप्त करोगे। इस शाप से मुझे बड़ी चिन्ता हुई, मैंने उसी समय भगवती पार्वती की आराधना की। इससे सनत्कुमार ऊंट की योनि से तो मुक्त हो गया। भगवान सदाशिव ने नन्दी से कहा, सनत्कुमार को दण्ड तो मिल गया है अब तुम उसे ऐसा उपदेश दो जिससे कि वह मेरे स्वरूप को समझ सके। यह ब्रह्मा का जेठा पुत्र है। इसलिए इसे परम ज्ञान होना चाहिए। नन्दी ने भगवान सदाशिव की बात मान ली। उधर सनत्कुमार नन्दी को प्रसन्न करने के लिए सुमेरु पर्वत पर जाकर तप करने लगे। हे मुनिश्वरो ! तुम सब वहां जाओ, नन्दी के दर्शन करो।

CC-0. Kanak Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

इकतालीसवां अध्याय

(श्री सनत्कुमार जी का भगवान सदाशिव को मुनिश्वरों के दस हजार वर्ष तक तप करने के बारे में बतलाना। भगवान सदाशिव का मुनियों को मुक्ति प्रदान करना। श्री सूतजी का मुनियों को बतलाना कि मनुष्य के शिव पुराण की कथा सुनने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। दो बार सुनने से शिव भक्त हो जाता है और तीन बार सुनने से मोक्ष पद पा लेता है।)

सूतजी बोले—हे मुनिजन! ब्रह्माजी के वचन सुनते ही वे उनको प्रणाम करके श्री सनत्कुमार जी के निकट पहुंचने के लिए सुमेरु पर्वत पर पहुंच गए। उसके शिखर पर एक सुन्दर तालाब के समीप ही बहुत से मुनिजन तपस्या कर रहे थे। उस तालाब के उत्तर की ओर मृगछाला बिछाये श्री सनत्कुमार जी अखंड समाधि में निश्चय होकर तपस्या में संलग्न थे। फिर अपने नेत्र खोलकर श्री सनत्कुमार जी ने ऋषियों को देखा और कहा—आप लोग कहां से आ रहे हो? इतना सुनकर मुनिजनों ने अपना उद्देश्यपूर्ण समाचार सुनाया। श्रीनन्दीजी ने अपने आसन से उठकर बड़ी श्रद्धा से उन्हें प्रणाम किया और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे। फिर उनसे कहा कि इन नैमिषारण्य निवासी मुनिश्वरों ने दस हजार वर्ष तक बड़ा भारी यज्ञ किया है। यज्ञ की समाप्ति हो जाने पर अब यह यहां आये हैं, आप इन पर कृपा करें और इनका कल्याण करें। श्रीसूतजी बोले—श्री सनत्कुमार जी के वचन सुनकर फिर नन्दीश्वर जी ने उन मुनिश्वरों की ओर देखा। देखने के बाद उन सबको संसार के बन्धनों से मुक्ति दिलवाई।

❀ इति शुभम् ❀

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

रतन एण्ड को० दरीबा गंज दिल्ली-२

मुद्रक पूजा प्रेस एण्ड प्रकाशन प्रा० लि० नई दिल्ली-110020

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Mookerji IFS (Retd) Collection Jammu

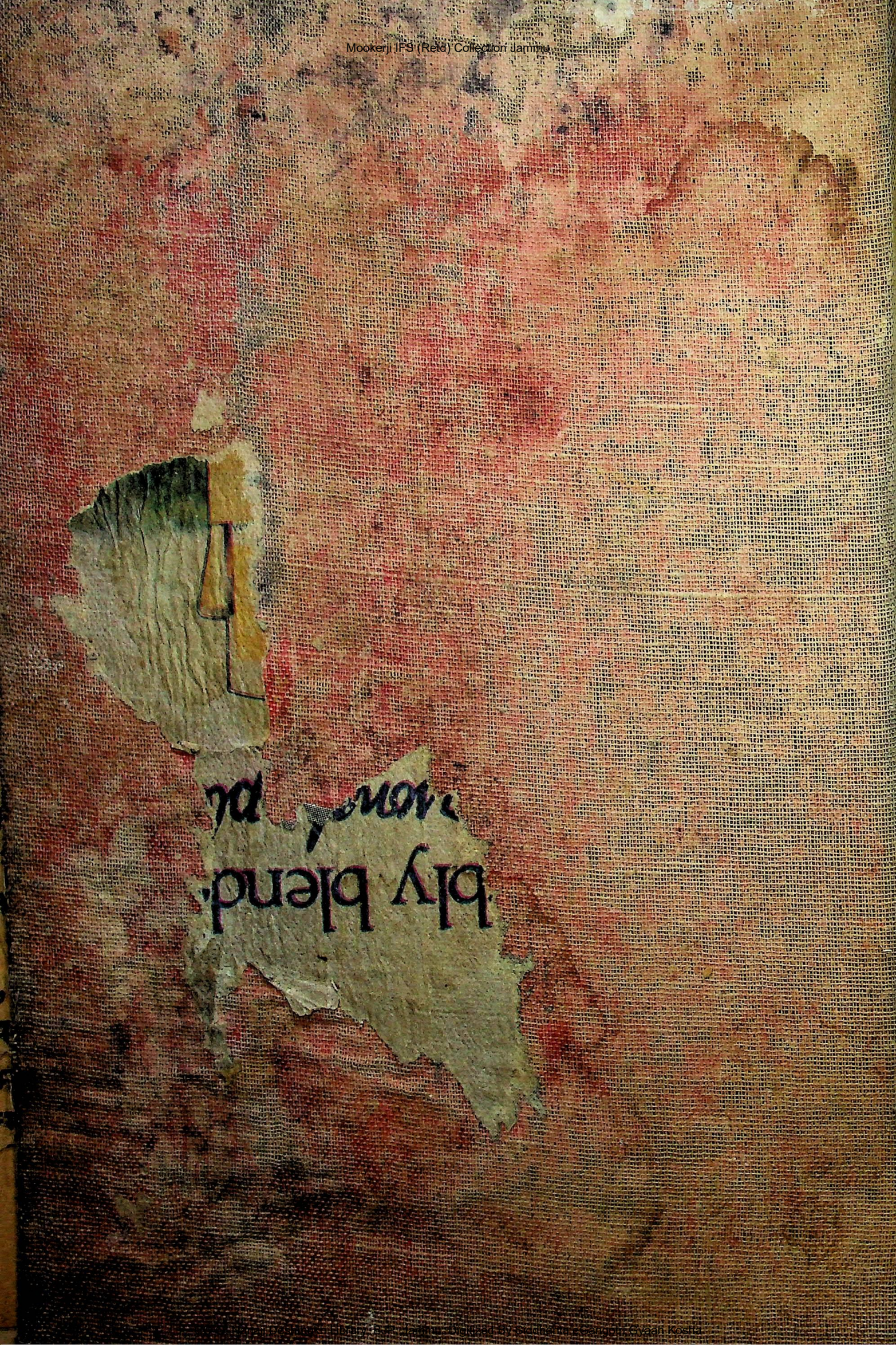

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha